81

आकाशी कौंसिल का विचार सं. २०४२ वि. (सन् १९८५-८६)

विश्व की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति पर ग्रहजन्य प्रभाव का सर्वेक्षण

★ चैत्र से भाद्रपद (मार्च से अगस्त तक) एवं माघ से चैत्र तक (जन '८६ से मार्च '८६ तक) विश्व के अनेक राष्ट्रों में अघटित ऐतिहासिक घटनाओं का क्रम जारी रहेगा।

★ मध्य एशिया एवं योरुप के देश विश्व में युद्धाग्नि भड़काने की ओर गतिशील, पश्चिमी योरुप में भारी विनाश।

★ परमाणु शस्त्रों की होड़, निरस्त्रीकरण की योजना असफल, विश्व में अशान्ति बढ़ेगी। रुद्रविंशति में कुछ देश विनाश की ओर।

★ भारत का पूर्वोत्तरी क्षेत्र एव दक्षिण-पश्चिम में समुद्रतटवर्ती क्षेत्र दुर्भिक्ष, समुद्री तूफान, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से प्रभावित।

★ भारत को अनुभवी नेतृत्व का संरक्षण, विश्व शान्ति के प्रयासों में भारत की भूमिका प्रशंसनीय, लोक-सभा निर्वाचनों में इंका को बहुमत, विपक्ष में सार्वभौम-नेतृत्व का अभाव।

★ संवत् के आरम्भ से अगस्त तक एवं जन.'८६ से मार्च तक भारत को पड़ोसी देशों के कुटिल इरादों से सावधान। कहीं अकाल, भूकम्प, तूफान से हानि।

★ मुस्लिम राष्ट्रों में कहीं रक्त क्रान्ति, सत्ता परिवर्तन, भूकम्प एवं अन्यविध-प्राकृतिक-प्रकोप से हानि, किंवा युद्धजन्य-विनाश।

★ आगामी पांच वर्षों में भारत के संविधान में अभूतपूर्व संशोधन एवं संवर्धन का योग, भारतीय शासन पद्धति में स्थिरता लाने के लिए प्रभावी कार्यक्रम।

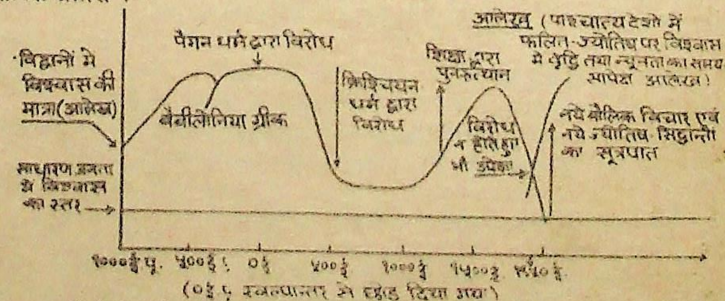
★ भारतीय रक्षा योजनाएं सुदृढ़, भारत आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रेसर।

★ आगामी दशक में भारत विश्व के प्रमुख राष्ट्रों की श्रेणी में, भारत का महान् राष्ट्र के रूप में अभ्युदय।

पाश्चात्य देशों में भी फलित ज्योतिष की वैज्ञानिकता में आस्था

भारतीय जनता त्रिस्कन्ध ज्योतिष के प्रति प्राचीन काल से ही दृढ़ आस्था लिए हुए है और यह आस्था उत्तरोत्तर बलवती एवं शाश्वत होती जा रही है। भारत में काल-विधानशास्त्र (ज्योतिष) के निर्देश के विपरीत आचरण श्रेयस्कर नहीं माना जाता। लेकिन विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ फलितशास्त्र की गरिमा से अनभिज्ञ कुछ लोग ज्योतिषशास्त्र को शंका की दृष्टि से भी देखते हैं; उन्हें यह बात सुनिश्चित समझ लेनी चाहिए कि विज्ञान की दृष्टि से अग्रेसर अनेकों पाश्चात्य देश इस बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भौतिक ज्योतिष के अनेक महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर शोध करवा रहे हैं, जिनके आधार पर फलितशास्त्र की सत्यता के बारे में ठोस प्रमाण मिले हैं। वैज्ञानिकों के परीक्षणों से वनस्पति आदि पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट अनुभव हुआ है चन्द्र के भ्रमणकाल का स्त्री के ऋतुधर्म से सम्बन्ध स्पष्ट रूप से जातक के गुण कर्म स्वभाव को प्रभावित करता है। स्पष्ट है, कि निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक सरलता से जान पाए हैं। सूर्य कलंक चक्रों, चन्द्रमा एवं ज्वार-भाटा सम्बन्धी सिद्धान्तों के परिशीलन तथा ग्रहों की आकर्षण-विकर्षण प्रक्रिया के आधार पर अध्ययन करने से प्राणीशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र एवं प्रकृति के प्रत्येक पहलू पर ग्रहों का प्रभाव सत्य सिद्ध हो चुका है। यही कारण है, कि आजकल के वैज्ञानिक-युग में पाश्चात्य एवं पूर्वीय सभी देशों में इस शास्त्र के प्रति आस्था अहर्निश बढ़ती ही जा रही है।

पाश्चात्य देशों में फलित-ज्योतिष पर विश्वास में वृद्धि तथा न्यूनता का समय सापेक्ष-आलेख :—



मिन्नेसोटा विश्वविद्यालय (अमेरिका) ने इस आलेख द्वारा फलितशास्त्र पर विद्वानों की आस्था में वृद्धि एवं ह्रास का परिचय दिया है। आलेख में स्पष्ट है, कि ईसापूर्व कुछ शताब्दियों में अफीकन पैगान धर्म द्वारा फलितशास्त्र का विरोध होने पर भी फलितशास्त्र पर विद्वानों की निष्ठा यथावत् बनी रही। पांचवीं शती में क्रिश्चियन धर्म के विरोध से फलित ज्योतिष पर आस्था में भारी ह्रास हुआ। ज्यों ही शिक्षा का क्षेत्र बढ़ा; १५०० ई. के लगभग फिर से फलितशास्त्र पर निष्ठा में वृद्धि हुई, स्थिति पूर्ववत् बन गई। १७वीं शताब्दी से १९वीं शती तक भारी विरोध न होने पर भी एकमात्र उपेक्षा के कारण लोगों

की आस्था में कुछ कमी आई थी लेकिन आज विज्ञान की प्रगति के साथ ही साथ नए मौलिक विचार एवं नए-नए ज्योतिष सिद्धान्तों के सूत्रपात से पुनः फलितशास्त्र पर जनता की आस्था बढ़ती ही जा रही है और भविष्य में फलितशास्त्र पर हो रहे शोधकार्य से आश्चर्यजनक परिणाम सामने आने वाले हैं—यह आशा है। भारत में तो फलितशास्त्र पर जनता की निष्ठा शाश्वतरूप से बनी रही है, विशेष वृद्धि ह्रास नहीं हुए। आज बीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में भी भारत में पाश्चात्य देशों की भांति फलित ज्योतिष पर लोगों की आस्था अहर्निश बढ़ती ही जा रही है।

ज्योतिषशास्त्र के सत्य सिद्धान्तों का पालन करता हुआ आपका लोकप्रिय यह पंचाङ्ग प्रतिवर्ष घटित होने वाली सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं प्राकृतिक उलटफेर तथा अन्यविध घटनाओं को लेकर ५८ वर्षों से निरन्तर आपके समक्ष उपस्थित होता आ रहा है। फलितशास्त्र एवं सिद्धान्त ज्योतिष पर निष्ठावान् प्रत्येक व्यक्ति इस पंचांग में आकाशीय ग्रहगतिजन्य आकर्षण-विकर्षण युति-प्रतियुति के आधार पर की गई अव्यभिचरित-भविष्यवाणियों से एवं शोधपूर्ण लेखों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा है। हमें प्राप्त असंख्य पत्र इसका प्रमाण हैं। सर्वसाधारण व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्री जवाहर लाल नेहरू जी जैसे महान् ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि के कारण तथा भारत एवं विदेश के विद्वद्वर्ग एवं सर्वोच्च धर्माचार्यों के आशीर्वाद के रूप में जो श्रेय सम्मान इस पंचांग को उपलब्ध हुआ है, वह हम सभी पंचांग प्रेमियों के लिए गौरव का विषय है, भारत के सभी विद्वानों का एवं धर्माचार्यों का आशीर्वाद (जो कि पंचांग की स्तुति के रूप में हमें उपलब्ध होता आ रहा है) हमारे लिए भारी उपलब्धि है; ईश्वर से प्रार्थना है कि भविष्य में भी विद्वानों-धर्माचार्यों का वरदहाथ शाश्वत बना रहे।

सं. २०४२ की ग्रहस्थिति पर विचार करने से पहले हम गतवर्षों की भविष्यवाणियों की सफलता की संक्षिप्त चर्चा कर देना उचित समझते हैं :—

भारत के स्वतन्त्र होने की घोषणा, श्री महात्मा गांधी एवं श्री नेहरू के निधन की भविष्यवाणी, रूस के बुल्गानिन-ख्रुश्चेव के अपदस्थ होने की भविष्यवाणी, चीन में चाऊ माऊ युगान्त घोषणा, श्री रीगन की सफलता, पाक के विभाजन की भविष्यवाणी एवं समयानुसार सत्ता परिवर्तन की घोषणा, कांग्रेस का विभाजन, जनतापार्टी की विजय एवं पतन की आश्चर्यजनक भविष्यवाणी तथा पुनः श्रीमती गान्धी के नेतृत्व की घोषणा, ईरान-ईराक युद्ध एवं ऐतिहासिक-भूकम्पों की भविष्यवाणी इसके अतिरिक्त भारत एवं अन्य देशों में घटित होने वाली असंख्य सफल भविष्य वाणियां करने का गौरव आपके इस पञ्चाङ्ग को प्राप्त हो चुका है। स्थानाभाव के कारण यद्यपि सभी भविष्यवाणियों को यहां अंकित करना संभव नहीं; पुनरपि नमूने के तौर पर कुछ एक आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियां सं. २०४१ वि. के पंचांग से यहां अंकित कर देना उचित समझते हैं :—

(१) सं. २०४१ में पृष्ठ ३७, कालम २ में 'भारत और भारत सरकार' शीर्षक के अन्तर्गत की गई भविष्यवाणी की सफलता फलित ज्योतिष की सत्यता का ज्वलन्त उदाहरण है :—

"३७वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार अगस्त से पूर्व का समय भारत के लिए अग्नि परीक्षा का है। ५ अगस्त तक भारत के समक्ष राजनैतिक उलझनें विषमरूपेण चिन्तनीय होंगी। संवत् के आरम्भ से अगस्त तक की अवधि में प्रान्तीय-साम्प्रदायिकता का उन्माद भी विकट रूप धारण करेगा। प्रान्तीय समस्याओं को सफलता पूर्वक सुलझाने में शासन विचलित सा मालूम देगा। कुछ प्रान्तों में कलह से अधुरता एवं अराजकता का सा वातावरण बन सकता है। अतः इस अवधि में राष्ट्रनायकों को विवेक पूर्ण सन्तुलन प्रज्ञा से काम लेना होगा। विशेषतः १६ जून तक के समय में भारत को अपने सैन्यबल को सीमा प्रान्तों पर सचेत बनाना पड़ेगा। कहीं किसी पड़ौसी देश की कुनीति से सीमा प्रान्तों पर शान्ति भंग होने का योग है। ३७वें वर्ष में काल सर्पयोग भारत के शासकों के लिए अग्नि परीक्षा का है। अतः इस अवधि में थोड़ी भूल भी हानिकारक होगी।"

गत वर्ष की इस उल्लिखित भविष्यवाणी की सत्यता से समस्त विश्व परिचित है। सीमा प्रान्त पंजाब में साम्प्रदायिक हत्याओं से अराजकता रही, अन्ततः सैन्यबल का सहारा लेना पड़ा, शासकों के लिए पंजाब की घटना से बड़ा अग्नि परीक्षा का अवसर कोई नहीं कहा जा सकता।

(२) संवत् २०४१ में भारतीय गणतन्त्र कुण्डली पर विचार करते हुए पृ. ३८ पर स्पष्ट लिखा गया था—

"देश के सर्वोच्च नेता के लिए अग्नि परीक्षा का समय है; देश की आन्तरिक समस्याएं इस तरह पेचीदा बनेंगी कि उन्हें सहज में सुलझाना संभव न होगा।"

सभी सर्वोच्च नेताओं के समक्ष महाराष्ट्र, आन्ध्र, पंजाब आदि प्रान्तीय समस्याएं प्रश्नचिन्ह थीं; वस्तुतः यह अग्नि परीक्षा का समय था, जिसे हमारा कुशल नेतृत्व अभी सुलझाने में लगा है।

(३) पृष्ठ ३८ पर 'भारत की जलवायु और वर्षा' शीर्षक के अन्दर लिखा था—

"वर्षा ऋतु में शनि-मंगल का योग ५ अगस्त तक रहता है। यह स्थिति भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं भयंकर सूखा या कहीं भयंकर वर्षा से बाढ़ आदि का संकेत देती है।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता समाचार पत्रों से स्पष्ट हो गई थी दक्षिण भारत के अनेक प्रान्तों में भयंकर वर्षा से जन-धन की असह्य क्षति हुई है। उत्तर भारत के कुछ प्रान्तों में अनेकत्र सूखा से कुछ क्षेत्र अकाल ग्रस्त भी घोषित करने पड़े हैं।

(४) भारत के प्रमुख प्रान्तों की चर्चा करते हुए 'पंजाब' शीर्ष के अन्दर पृ. ३८ पर लिखा था—

"जब तक शनि वृश्चिक राशि में प्रवेश नहीं करता, तब तक यहां की स्थिति चिन्तनीय रहेगी। शासन को यहां शान्ति स्थापना करने के लिए यहां के विशिष्ट व्यक्तियों का विश्वास प्राप्त करना होगा। अन्यथा केन्द्र से वैमत्य बना रहेगा, स्थिति और विषम बन सकती है। अगस्त तक का समय तथा दिसम्बर-जनवरी तक का समय केन्द्र के लिए चिन्तनीय है।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता अक्षरशः सत्य सिद्ध हो रही है।

(५) काश्मीर में सत्ता परिवर्तन की भविष्यवाणी इस प्रकार की गई थी—

"सत्तारूढ़ पार्टी के अन्दरूनी मामले उलझेंगे, प्रधान नेता उलझन में पड़ेंगे। मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन होगा।

(६) 'रूस' शीर्षक के अन्तर्गत भारत-रूस सहयोग से अन्तरिक्ष में भारतीय मानव की अन्तरिक्ष यात्रा का संकेत इस तरह लिखा था—

"सन् १९८४ में अन्तरिक्ष यात्रा में (रूस) भारत की सहायता करेगा।"

इस अन्तरिक्ष यात्रा से भारत को जो गौरव मिला है वह ऐतिहासिक है!

(७) 'उत्तर प्रदेश' शीर्षक के अन्तर्गत वहां के मन्त्रिमंडल में नाटकीय परिवर्तन की भविष्यवाणी इन शब्दों में की थी—

"वहां के मन्त्रिमण्डल में अचानक कुछ आवश्यक परिवर्तन होंगे।"

तदनुसार श्री तिवारी जी का कुशल नेतृत्व उ. प्र. को प्राप्त हुआ।

पाठकों! सम्पूर्ण भविष्यवाणियों की सफलता को अंकित करना तो स्थानाभाव के कारण यहां सम्भव नहीं। इन सफल भविष्यवाणियों का श्रेय हमारे सम्पूर्ण विद्वान् पाठकों एवं उस जगन्नियन्ता प्रभु को ही है जो ग्रह गति के आधार पर कुछ लिखने को प्रेरित कर देता है।

सं. २०४२ की ग्रह स्थिति का विश्व पर प्रभाव

इस वर्ष ग्रह परिषद् के निर्वाचन में प्रधान पद दैत्य-गुरु शुक्र को एवं मन्त्री का पद युद्ध-प्रिय मंगल को प्राप्त हुआ है। ग्रह परिषद् के चुनाव में कुल आठ स्थान क्रूर ग्रहों को तथा दो स्थान शुभ ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। पद विभाजन में चार पदों पर शुक्र का पूर्णाधिकार है तथा दो पद मंगल के अधीन हैं।

इस प्रकार पद विभाजन को देखने पर यह निर्विवाद स्पष्ट हो जाता है, कि पद विभाजन में ग्रह स्थितिजन्य सन्तुलन नहीं है; सौम्यग्रहों का प्रभाव नगण्य रहेगा। पाठक नोट कर लें कि यह वर्ष विश्व के पश्चिमी राष्ट्रों एवं पश्चिमी प्रान्तों के लिए अग्नि परीक्षा का सिद्ध होगा। विश्व में तनाव बढ़ेगा। नई समस्याएं नए झगड़ों को जन्म देंगी। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में हथियार खरीदने की दौड़ लगी रहेगी; विश्व परमाणु युद्ध की ओर सरकता जाएगा। दक्षिण, दक्षिण-पूर्व और मध्य एशिया के देशों में दो बड़ी शक्तियों के बीच अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने की होड़ लग जाएगी, जिसका दुःखद परिणाम संवत् २०५५ से सं. २०५६ के मध्य स्पष्ट देखा जा सकेगा। इस समयावधि में गुरु-शनि-मंगल का योग विश्व में विनाश की स्थिति पैदा करेगा; बड़े-बड़े राष्ट्रों का मान मर्दन का समय है। इससे पूर्व विश्व युद्ध की कोई संभावना नहीं बनती। इस समय भारत सर्वोच्च राष्ट्र के रूप में विश्व का पथ दर्शक बनेगा।

इस वर्ष की ग्रह स्थिति के अनुसार ईरान-ईराक युद्ध से मध्य और पूर्वी एशिया का क्षेत्र तनाव ग्रस्त रहेगा; अमेरिका आदि महाशक्तियों की महत्त्वाकांक्षा विश्व को विनाश के कगार पर ले जाएगी।

संवत् के प्रारम्भ में ही चल रहा राहु-मंगल का राशि सम्बन्ध कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति को जन्म देगा। अप्रैल से मई तक वक्री शनि एवं मंगल का समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध मुस्लिम-राष्ट्रों में भयंकर-युद्धमय वातावरण को जन्म देने वाला है, कुछ राष्ट्रों के मंत्रिमंडलों में आश्चर्यजनक उलटफेर किंवा परिवर्तन इस संवत् में दिखाई देंगे।

इस वर्ष विश्व में बढ़ रही परमाणु शस्त्रों की होड़ के प्रतिरोध के लिए उठाए जाने वाले पग असफल रहेंगे। परमाणु-परीक्षणों से नई भयानक घातक बीमारियों का जन्म होगा, जिससे कुछ देश महामारी की चपेट में आ जाएंगे। ३१ मई को शनि तुला राशि में आकर केतु के साथ सम्बन्ध करेगा, शनि वक्री है। यह ग्रहस्थिति सितम्बर मध्य तक चलेगी। इस अवधि में पश्चिमी देशों में भयानक-विस्फोट किंवा भयंकर अग्निकाण्ड की घटनाएं सामने आएंगी। विश्व मंहगाई की चपेट में आ जाएगा। जनजीवनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में अप्रत्याशित वृद्धि से साधारणवर्ग में असन्तोष भड़केगा जिससे कुछ देशों की राजनीति भी प्रभावित होगी। मई से सितम्बर तक के समय में विश्व के कुछ देशों में समुद्री तूफान, कहीं बर्फानी तूफान, यान दुर्घटना, अग्निकाण्ड वा महामारी से भीषण जनधन हानि होगी। सितम्बर तक किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। इसी बीच तुला राशि के वक्री शनि का मंगल के साथ अगस्त तक रहने वाला दृष्टि सम्बन्ध एवं मंगलवारी कर्क संक्रान्ति का होना कहीं गृहयुद्ध की चिंगारी को जन्म देगा। किसी देश विशेष की राज्यसत्ता में परिवर्तन का योग है।

इस वर्ष 'श्रावण अधिकमास' है, अतः कहीं दुर्भिक्ष, तथा शान्ति-सुरक्षा को व्यवस्थित करने के लिए शासकों को कठोर पग उठाने पड़ेंगे।

श्रावणद्वये तु दुर्भिक्षं स्वल्पवृष्टिर्महद्भयम्।
पापबुद्धिरता लोकाः राजानः क्रूरशासनाः॥

अक्तूबर में शनि अनुराधा नक्षत्र में आकर संवत् के अन्त तक अनुराधा नक्षत्र में ही रहेगा। पश्चिमी देशों में पनप रही युद्धाग्नि की ज्वाला को तीव्र होगी—"अनुराधायां गतः सौरिः ज्येष्ठायां परिवर्तते। पश्चिमे दारुणो घोरः संहारस्तत्र जायते।" इस अवधि में बन रहा खप्पर योग, एवं २२ जनवरी १९८६ ई. से १६ मार्च तक शनि-मंगल का योग विश्व में अघटित-घटनाओं को जन्म देगा। विश्व का कोई विशेष-राजनीतिज्ञ कालकवलित होगा। कहीं गृहयुद्ध, कहीं रक्तक्रान्ति से सत्ता परिवर्तन का योग है। ऐतिहासिक घटनाएं इस समय होंगी। जनवरी'८६ से मार्च तक प्राकृतिक प्रकोप, बर्फानी तूफान, अनावर्षण, यानदुर्घटना आदि में भी विशेष जनधन हानि का योग बनता है। इस अवधि में सीमा के अतिक्रमण से दो देश युद्धक्षेत्र में उतर सकते हैं—ईश्वर राष्ट्रनायकों को सद्बुद्धि दे। शान्त्यर्थ शतचण्डी का विधान श्रेयस्कर रहेगा। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं, कि यह संवत् विश्व के लिए विशेष कष्टप्रद एवं ऐतिहासिक घटनापूर्ण रहेगा।

विश्व में भयरोगोपद्रव कारक ग्रहस्थिति

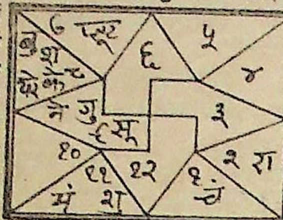
संवत् के आरम्भ से मई तक की ग्रहस्थिति विश्व के समक्ष नानाविध ऐतिहासिक घटनाओं को जन्म देने वाली है। इस अवधि में राहु-मंगल का राशि-सम्बन्ध एवं आगे शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध कहीं चक्रवात, तूफान, भूकम्प, भयंकर अग्निकाण्ड व आन्तरिक क्रान्ति किंवा पड़ोसी देश से उलझने से जनधन हानि की सूचना देता है। इस अवधि में अग्निकाण्ड एवं यानदुर्घटनाओं में विशेष जनधन हानि होगी।

३१ मई से तुला राशि का शनि-केतु के साथ दृष्टि सम्बन्ध करेगा, सितम्बर मध्य तक शनि-केतु का सम्बन्ध कारखानेदार, धनिक वर्ग एवं कृषक वर्ग के लिए चिन्ता का कारण बनेगा। घेराव, हड़ताल, आगजनी की घटनाओं से भारी नुकसान होगा। वर्षा की कमी से मंहगाई उच्चशिखर पर पहुंच जाएगी; जिससे साधारणवर्ग में शासन के प्रति आक्रोश बढ़ेगा, विश्व के बाजारों में रिकार्डतोड़ तेजी से आश्चर्य होगा, कई देशों की मुद्रा का अवमूल्यन होगा विश्व बैंक से कर्जा अधिक देश लेंगे। इस अवधि में कुछ देशों में प्राकृतिक प्रकोप किंवा राजनैतिक विप्लव से अशान्ति बढ़ेगी। हथियारों की होड़ तथा अन्तर्राष्ट्रीय तनाव बढ़ने से तथा परमाणु शक्ति सम्पन्न देशों के बीच ठोस क्रियात्मक बातचीत न होने से भविष्य में परमाणु युद्ध का खतरा बढ़ जाएगा, जिससे सम्पूर्ण विश्व चिन्तित होगा। मई से ग्रहों के अतिचार आदि का विचार करने से पर्यन्त तक किसी राजनैतिक व्यक्ति के देहावसान, किंवा पदत्याग का संकेत देता है। ३१ अगस्त तक शनि-मंगल का

दृष्टि सम्बन्ध विश्व में युद्ध विभीषिका को जन्म देगा। कुछ देश परस्पर सीमा प्रान्तों का अतिक्रमण करके शान्ति भंग करेंगे। किसी मुस्लिम देश के कट्टर शासक का पद रिक्त होगा।

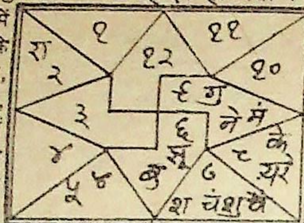
२१ अक्तूबर को अनुराधा-नक्षत्र का शनि पश्चिमी देशों में कहीं भयंकर-संग्राम की सूचना देता है। इस वर्ष वर्षा की कमी एवं कहीं भयंकर बाढ़ से प्रलय का दृश्य उपस्थित होगा। जैसाकि हम पहले भी लिखते रहे हैं कि विश्वमहायुद्ध की संभावना अभी बहुत दूर है, जनता इस विषय में भयभीत न हो, सन् १९९९ से पूर्व अणुयुद्ध की सम्भावना नहीं। छोटे-मोटे जंग तो कुछ देशों की पारस्परिक कुनीति के परिणामस्वरूप सम्भव है। ईश्वर समृद्ध देशों के शासकों को सद्‌बुद्धि दे, ताकि मनुष्य जीवन की रक्षा हो सके।

यूरोप के देश—यूरोपीय देशों की ग्रहस्थिति के अनुसार सारे ग्रह कुण्डली में बाईं तरफ ही आ गए हैं। यूरोप के कुछ शक्ति सम्पन्न देशों में पारस्परिक तनाव से विश्व की राजनीति चिन्ता में पड़ जाएगी। तृतीय भावस्थ शनि-केतु-यूरेनस यूरोप के देशों को आधुनीकरण की ओर बढ़ने को प्रेरित करेंगे। यूरोपीय देशों में मंहगाई बढ़ेगी। कुछ देशों में आन्तरिक असन्तोष बढ़ेगा। कहीं आन्तरिक क्रान्ति से स्वतन्त्रता को बल मिलेगा। कहीं आवासित समस्या विकट रूप धारण करेगी। अगस्त के अन्त तक शनि-केतु का सम्बन्ध एवं ३१ अगस्त तक शनि-मंगल का सम्बन्ध कहीं भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से वा पारस्परिक संघर्ष से जनधन हानि का सूचक है। यूरोप के कुछ देशों में प्रधानपद रिक्त होगा। कहीं शोक समाचार से क्षोभ का वातावरण बने। अर्जेण्टाइना, रोडेशिया, आयरलैण्ड आदि में शासन के विरुद्ध बगावत से अशान्ति का वातावरण पैदा होगा। औद्योगिक संकट बढ़ेगा, असन्तुष्ट तत्त्व जोर पकड़ेंगे। ब्रिटेन में राजनैतिक-गतिविधि में गतिरोध, शनि-मंगल का योग अशान्तिप्रद रहेगा। स्वीडन, जापान, इजराइल, फ्रांस, इटली आदि देश परमाणु संपन्न उद्योग में प्रगति करेंगे।



पश्चिमी एशिया में प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने वाली महाशक्तियों की होड़ लगेगी। अर्जेण्टाइना, न्यूजीलैण्ड, डैन्मार्क, इंडोनेशिया, कांगो, टांगानिका, ब्राजील, ब्रिटेन एवं द. अफ्रीका आदि में अशान्ति का वातावरण बनेगा। क्यूबा, इथोपिया, जिम्बावे, रोडेशिया, कम्पूचिया, चीन, ताइवान, इण्डोनेशिया, आयरलैण्ड आदि में विवाद के कारण बनेंगे, अन्दरूनी झगड़े बढ़ेंगे।

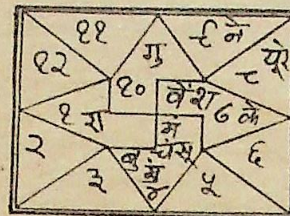
मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली—मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली में सारे ग्रह एक ही दिशा में आ गए हैं। कुण्डली में सभी ग्रह ७, ८, ९, १० भावों में एकत्रित हैं। अगस्त के अन्त तक की गोचरस्थ ग्रहस्थिति के आधार पर यह स्पष्ट मालूम देता है, कि यह वर्ष बंगलादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, पश्चिमी बेरुत, फिलस्तीन, सीरिया में घोर अशान्ति रहेगी। कहीं सत्ता संघर्ष, कहीं आन्तरिक रक्तक्रान्ति, कहीं शासित-शासक में विरोध विकट रूप धारण करेगा। सीरिया और इजराइल में टकराव समाप्त न होगा। लेबनान में अरब गणराज्य कायम करने का स्वप्न पूरा न होगा। लेबनान, बेरुत, इजराइल का मामला और उलझनपूर्ण होगा। इन देशों में राजनैतिक हत्याकाण्ड अधिक होंगे। ३१ अगस्त तक का समय पावन राष्ट्रों के लिए ऐतिहासिक घटनाओं वाला होगा।



फरवरी मास के लगभग आकाश में धूम्रकेतु का उदय होगा। यह धूम्रकेतु मुस्लिम देशों के शासकों के लिए नेष्टफलप्रद सिद्ध होगा। नोट—करें कि २२ जनवरी '८६ से १६ मार्च तक का समय मुस्लिम देशों के लिए अकल्पित घटनाओं वाला रहेगा। पाक, आदि में सत्ता का हस्तान्तरण किंवा प्रधान नेता का पद रिक्त होगा। ईरान के प्रधानशासक का युगान्त भी इसी वर्ष हो जाए तो कोई आश्चर्य नहीं।

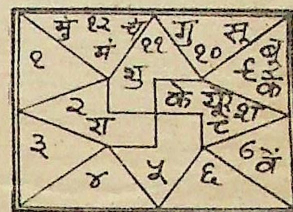
भारत और भारत सरकार

स्वतन्त्र भारत का ३९वां वर्ष लग्न



(१५ अगस्त १९८५)

भारतीय गणतन्त्र का ३६वां वर्ष लग्न



देहली लग्नानुसार (इष्ट ६।४०)

इससे पहिले कि हम भारत के ३९वें वर्ष की कुण्डली का परिशीलन करें हमें ३८वें वर्षलग्न पर ध्यान देना होगा। १५ अगस्त १९८४ से १४ अगस्त १९८५ ई. तक की ग्रहगति का अध्ययन ३८वें वर्ष की कुण्डली से ही संभव है।

३८वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार उच्च शनि एवं वेंकटेश लग्न में है, लग्नस्थ शनि की सप्तम (विदेश नीति से सम्बन्धित) भाव पर नीच दृष्टि है। सप्तम भाव शत्रु देशों से भी सम्बन्ध रखता है, अतः भारत की विदेश नीति में आश्चर्यजनक परिवर्तन संभव हैं। वर्ष कुण्डली में अष्टम भाव में स्थित राहु पर मंगल की सप्तम दृष्टि गुप्तशत्रु से भयकारक है लेकिन कुण्डली में नवमेश-दशमेश के विचार से यह बात स्पष्ट हो जाती है; कि भारत की प्रतिष्ठा उत्तरोत्तर बढ़ेगी, शत्रु देश की कुचाल विफल होगी, भारत की सेना का मनोबल प्रबल रहेगा, विजयश्री सदा भारत के साथ रहेगी। नई प्रगतिप्रद योजनाएं बनेंगी, एवं सफलता भी मिलेगी।

गोचरस्थ ग्रहगति के अनुसार वर्षारम्भ से ही राहु और मंगल का राशि सम्बन्ध तत्पश्चात् अप्रैल से मई तक शनि-मंगल का समसप्तक भारत के राजनीतिज्ञों के समक्ष विषम समस्याओं को जन्म देगा। भारतीय राजनीति में विक्षेप परिवर्तन एवं संशोधन का योग है। राजनीतिज्ञों को जनता का विश्वास पाने में कठिनाई आएगी। इस अवधि से

पूर्व निर्वाचन होने पर भारी बहुमत प्राप्त करने में सत्तारूढ़ पार्टी को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। दक्षिण में इंका को भले ही बहुमत न मिले लेकिन निर्वाचन का सामूहिक दृष्टि से मूल्यांकन होने पर इंका पुनः सत्ता में आजाएगी, विरोधी दलों के संयुक्त-घोषणापत्र अभी इंका को अपदस्थ कर पूर्णरूपेण सत्ता पा लेने में सशक्त नहीं ऐसा ग्रहस्थिति से ज्ञात होता है।

३१ मई से शनि तुला में आकर केतु के साथ राशि सम्बन्ध करेगा; शनि-केतु का यह राशि सम्बन्ध १६ सितम्बर तक चलेगा। मई से सितम्बर तक की अवधि में १५ जुलाई से ३१ अगस्त तक शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध भारत के लिए अग्निपरीक्षा का है प्रधान नेता को देश की नई समस्याओं एवं चुनौती का सामना करना पड़ेगा। इस अवधि में आन्तरिक समस्याओं, प्रान्तीय उलझनों एवं शत्रुदेश की कुनीति का सामना करने के लिए सेना के मनोबल को ऊँचा रखना होगा। भारत के नायकों को विवेक एवं सन्तुलित प्रज्ञा से काम लेना होगा। इस वर्ष भारत की पश्चिमोत्तरी एवं पूर्वी सीमा पर शत्रुदेश की चाल से सावधान रहना होगा। पश्चिम में राजस्थान, उत्तर में पंजाब काश्मीर, पंजाब में मेघालय, मणिपुर, उड़ीसा, असम एवं समुद्र के तटवर्ती क्षेत्र क्षुब्ध रहेंगे, देशद्रोही तत्वों की सक्रियता से शासन सावधान रहे। दक्षिण के कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष एवं प्राकृतिक-प्रकोप से कहीं जनधन हानि होगी।

भारत की ३९वें वर्ष की ग्रहस्थित के अनुसार सप्तम भाव में मं.-बु.-सू.-चं. एवं मुंथा हैं। इस ग्रहगति के आधार पर ज्ञात होता है; कि विदेश में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। बृहस्पति की सप्तमेश पर पूर्णदृष्टि भारत के नेताओं की प्रतिष्ठा को ऊँचा करेगी। हाँ, भारत की राजनीति में स्थायित्व एवं देश की प्रगति के लिए, आने वाले दो वर्षों में ही भारतीय संविधान में विशिष्ट नेताओं के अधिकारों के परिसीमन किंवा परिवर्धन का ऐतिहासिक कार्यक्रम बनेगा, देश की शासन प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन होने का योग है।

३९वीं वर्ष कुण्डली में ऊच्च शनि, एवं वेंकटेश-केतु की दशम भाव में उपस्थिति राजनीति में कहीं गतिरोध का कारण बनेगी। शासकों को कठोरता से व्यवहार करना पड़ेगा।

सितम्बर मध्य के बाद वृश्चिक राशि के शनि में कहीं भयंकर अशान्ति का वातावरण बन सकता है; विशेषतः राजनैतिक उलझन से प्रधान नेताओं में गतिरोध बनेगा। विशेष दुर्घटना के समाचार से शोक व्याप्त हो। देहली प्रान्त के लिए वृश्चिक का शनि चिन्ताकारक है। २१ अक्तूबर से अनुराधा नक्षत्र का शनि एवं नवम्बर से बन रहा खप्पर योग, तथा २२ जनवरी'८६ से १६ मार्च तक वृश्चिक राशि में शनि-मंगल का सम्बन्ध, इसी मध्य १७ फरवरी को शनि-मंगल की युति तथा ११ फरवरी को गुरु-शुक्र का युद्ध भारत के लिए, भारत के विशिष्ट नेताओं के लिए विशेष घटना पूर्ण होगा। तूफान, यान दुर्घटना, दुर्भिक्ष किंवा बीमारी से हानि होगी।

फरवरी मास के पूर्वार्ध में हैले धूम्रकेतु का उदय कहीं नेतृत्व में परिवर्तन एवं किसी विशिष्ट व्यक्ति के पदरिक्त होने की सूचना देता है। नोट करें, कि इस वर्ष का उत्तरार्ध सीमावर्ती देश की कुचाल से सावधानी का है, कभी भी भारत को कठिन स्थिति का सामना करना पड़ सकता है; भारत को अपने सीमा प्रान्तों पर सैन्यबल को दृढ़ करना होगा। भारत विजयश्री प्राप्त करेगा। इस वर्ष के उत्तरार्ध में साम्प्रदायिक एवं राजनैतिक हत्याएं अधिक होंगी। पाक द्वारा शस्त्रास्त्रों की होड़ एवं हिन्द महासागर के तेजी से सैन्यीकरण से भारत को चिन्ता होगी। लेकिन भारत आत्म-निर्भरता की ओर बढ़ता जाएगा। आगे भारत का यश अक्षुण्ण एवं उत्तरोत्तर बढ़ेगा। १९८६ में भारत को अन्तरिक्ष विज्ञान में अधिक सम्मान प्राप्त होने का योग है। परमाणु निरस्त्रीकरण किंवा परमाणु युद्ध से विश्व को बचाने के लिए भारत की भूमिका प्रशंसनीय रहेगी, जिससे भारत के विशिष्ट नेता को विशेष सम्मान प्राप्त होने का योग बनता है। वर्ष के उत्तरार्ध में केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में विशेष उलटफेर होंगे, जिससे शासन तन्त्र में सुधार होगा।

भारत का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार—वर्ष कुण्डली में कर्मक्षेत्र में शनि-प्लूटो एवं केतु का योग अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में विशेष प्रगतिप्रद है। फ्रांस, रूस, पश्चिमी जर्मनी, इटली, सीरिया, स्वीडन, हालैण्ड, जापान और कनाडा के साथ विशेष व्यावसायिक सम्बन्ध बनेंगे। इंजनीयरिंग का सामान, जूट, कपड़ा, अनाज एवं स्वयं चालित स्कूटर आदि के निर्यात से भारत का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में नाम ऊँचा होगा।

भारत का वायुमण्डल व वर्षा—इस वर्ष मेष संक्रान्ति एवं अमावस दोनों शनिवार को हैं एवं अप्रैल से मई तक शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध भारत के कुछ प्रान्तों में वर्षा के अभाव से दुर्भिक्ष की स्थिति बना देगा। कुछ प्रान्तों में वर्षा सामान्यतः पर्याप्त होगी। ३१ मई को शनि-केतु का सम्बन्ध एवं १५ जुलाई से तुलास्थ शनि का मंगल के साथ दृष्टि सम्बन्ध ३१ अगस्त तक देश में कुछ प्रान्तों में वर्षा की भारी कमी एवं कुछ प्रान्तों में जल-थल एक होने से विनाशलीला का दृश्य उपस्थित करेगा। विद्युत संकट बढ़ेगा। आगे वर्षा का योग सामान्यतः ठीक रहेगा। इस वर्ष वृश्चिक-धनु-मकर संक्रान्तियां क्रमशः शनि-रवि-मंगलवार को होने से विशेष प्रकार का खप्पर योग बनता है जिससे भारत का जलवायु प्रभावित होगा। मंहगाई बढ़ेगी।

२२ जनवरी'८६ से १६ मार्च तक पर्वतीय-भू-भाग पर कहीं बर्फानी तूफान से हानि एवं असामयिक वर्षा पानी से कृषकों में चिन्ता, कहीं वर्षा के अभाव से हानि होगी। प्रतिदिन की जलवायु का विचार पाक्षिक फलादेश में "आकाश लक्षण" शीर्षक में दे दिया गया है, वहां पढ़ें।

(शेष ११ का)

मंगली दोष का यथार्थ रूप में शास्त्रोक्त विधि से निर्णय करने के लिए दैवज्ञ को काफी लम्बी जटिल गणित प्रक्रिया में से गुजरना पड़ता है—यह उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है। इस श्रमसाध्य प्रक्रिया से बचने के लिए उसे ऐसे कोष्ठकों (सारणियों) की अपेक्षा होगी, जिनकी सहायता से मिलान की यह जटिल प्रक्रिया सरल हो जाए। दैवज्ञ की मिलान-सम्बन्धी इस समस्या के समाधान के लिए हमने "ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन" नामक पुस्तक की रचना की है यह ("मंगली दोष का यथार्थ निर्णय") लेख इसी पुस्तक में दिए गए विस्तृत विवेचन का एक संक्षिप्त रूप है। इस पुस्तक में द्वितीयभाव-द्वितीयेश, सप्तमभाव-सप्तमेश, अष्टमभाव-अष्टमेश एवम् शुक्र का केशवीय जातक पद्धति के अनुसार बलाबल (दृष्टिबल, युतिबल, भावबल आदि) बतलाने वाली अनेकों विलक्षण सारणियां दी गई हैं, जिनके प्रयोग से दैवज्ञ को मिलान की उपरोक्त जटिल गणित प्रक्रिया से सर्वथा मुक्ति मिल जाएगी और वह उनकी सहायता से मंगली दोष का निर्णय नितान्त सूक्ष्मता पूर्वक बिना किसी प्रकार की गणित के ही मिनटों में कर लेगा। इस पुस्तक का विज्ञापन इसी पंचांग में दिया गया है, उसे पढ़िए।

अंग-स्फुरण-फलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फड़कना) स्त्री पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	पीवाग्र:	बन्धुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	बस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व-बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी उक्तोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल वा खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पात-फल-चक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध महर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा का भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदलीकेपगृहो	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिन अंधेरा	प्रजाक्षय	गहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्रमंद पड़ें	देश क्षय	वनपशुगांव बसे	मनु. शून्य
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्ण मंडल	राज नाश	घर उल्लू बोले	गृह शून्य
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	जंगली कबूतर	गहस्वा. ना.
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमीगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	रोगभय
स्त्री वध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देख पड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वनाश	सबवस्तु महंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिन का पक्ष	प्रजानाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं-विधिश्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वारा:
तापम्:	सुकान्ति	मृति	श्री:	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्प	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पाननम्

तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि

रेखी चीथ अलीनाते संक्रांती वैधृतावपि। पाठ्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।

विशेष—यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काक-स्पर्शादी फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इष्टकार्य नाश करता है। विशेषकर दक्षिण दिशा में कुयोग के समय इसके दोष को दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मय पात्र में स्थापना कर उड़द, चावल, घी, मीठा, नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध पुष्प, धूप, चतुर्मुख दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करादे)। घृतच्छाया पात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे, यह विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

काकविष्ठा विचार—शिरसि—मृत्यु: वा कष्टम्। स्कन्धयो:-रोग:। भुजयो:—प्रियार्ति:। उदरे-शोक:। गुह्ये-सन्तान-कष्टम्। जंघयो:—बाहुलपीड़ा। पादयो:-प्रवास:।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ, या पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किये किसी के ऊपर काली बीठ कर देवे तो अशुभ जानो। यदि किसी हरे भरे या फूले फले या पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ करदे तो शुभ जानो।

घर में उल्लू आदि—घर में उल्लू गिरे तो स्थान, मान, आयु की हानि हो। जंगली कबूतर घर में बसे-यह भी अशुभ है। शान्त्यर्थं हवन पूजन जप-दान आदि करना चाहिए।

अंकप्रश्न तथा फल वर्णन—प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।६।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे। यदि ४।५।८।१० बचे तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि २ बचने से वृद्धि. ३।९।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई बातों को स्वप्न में देखना), चतुर्थ प्रार्थित (जा तावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ट भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण), सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से 'दृष्ट श्रुत, अनुभूत प्रार्थित, कल्पित' ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि—बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। शुभ स्वप्न देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प दक्षिणा रखे. स्वस्थचित्त से स्वप्न का वर्णन करे, शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न—राजा हाथी, गौ, बैल, विप्र, देवता, अनेक बालक, वृद्ध, गुरु, श्वेत-वस्त्र वाली स्त्री, रत्न, इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल पर्वत, सिंह, अश्व एवं अन्न की ढेरी पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान रथ शय्यादि का ज्वलन; स्व-शिर का छेदन, स्व-रुदन, अपना मरण, वेद-ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण, प्राप्ति दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्रधनुष का देखना, छाछ, अस्थि कपास, नमक, इन चार वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों या बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश या तरक्की मिलेगी।

दर्पण में मुख देखें तो प्रेमी से मिलाप हो। यदि स्वप्न में फल-पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट जाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छु, या सर्प के जल में पैर पर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेतवस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूता व खड़ाऊ छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखे तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्यलाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगला, मुर्गी, कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ, क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कोष्ट-शुद्धि करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दरफल संयुक्त देखना पिछड़े काम सिद्ध होंगे, ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न में देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसका समझ लेना चाहिए कि रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ा है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जाएगा और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी।

शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न—लालवस्त्र पहिनना, सूर्य-चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का चढ़ना अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, भस्म, तेल, लोहा मिलना या देखना इससे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्टों को सूचित करना है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग संकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फसना, ऊंट, गधे, भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह-गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बन्दर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूतप्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्यु कारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ, रीछ गीदड़ बिलाव, भैंस, सर्प मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़ी महल-ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इन के सिवा सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवा स्त्री" यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा। यदि स्वप्न में कोई कुत्ता प्रेम से आपके साथ खेलता दिखाई दे तो लाभ हो। यदि अपने को कैद में देखे तो दुःख से छूटे। बकरी को चरती देखे तो शुभ दिन नजदीक समझें। तूफान देखे तो दुःख के अन्त की सूचना समझें। घर में आग लगी देखे तो जीवन में कोई विशेष परिवर्तन हो। स्वप्न में बिडाल (बिल्ला) दिखाई दे तो किसी से ठगा जाए। दीपक बहुत टिमटिमाता दिखाई दे तो नीरोग व्यक्ति के लिए रोग की सूचना तथा रोगी व्यक्ति के लिए मृत्यु की सूचना देता है। मुण्डित-केश नर, भिक्षुक तथा सूखी-नदी, सूखा पेड़ आदि का दिखाई देना भी रोग कष्ट एवं मृत्यु सूचक है।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। अथवा—रात्रि में जिस समय स्वप्न दिखाई दे, उस समय से जितनी घड़ी रात्रिशेष रहे, उस घटी को चार से गुणा करे, जितनी संख्या हो उतने ही दिनों में स्वप्नफल मिलेगा।

अशुभस्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थ-पूजन, विष्णुसहस्र नाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

प्रसूति-लग्न विचार

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत-स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ६० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राम्ल भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवायें। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिन्ह, देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों में प्रवेशसमय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना-कल्याणप्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलीन सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्य नारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी-चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया। घर के नैऋत कोण में सूतिका-स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका-स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, छींक भी किया, दीर्घकेश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया, और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था। जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण या कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ६० वर्ष जीवे।

मीन—माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे, कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें-वही बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

सुता जन्म सिंहराशि में, धन-मृग जन्मे बाल। अर्ध-शब्द शिशुकरत भयो भाषत बुद्धि रसाल॥

पितृपरोक्ष ज्ञान—(१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन चार योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शैय्या तहां भय जहां कुज होय। रविस्थान में दीप कही शनी लोह कही सोय?

जन्म कुण्डली में दिशा ज्ञान—प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय, तृतीय—ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम, षष्ठ—वायव्य। सप्तम—पश्चिम। अष्टम, नवम—नैऋत। दशम—दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

प्रसूति-स्थान से पाकशालादि विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और

भूमि से अशुभ (पीड़ा) स्थान जानना चाहिए। दोहा—लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा की द्वार। या लग्नर्ष दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार ॥ केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का) केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा-लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत।

चन्द्रात्तैल-ज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना। सो० तनुस्थान शशि आई, वा शशि षष्टे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कहि दीपक तैल नहिं। सित शनिदशमें धाम, पंचम तनुर्थ चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब याम, दीपक तैल सों युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्ति-ज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हो तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नान्तर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसारउपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों, तो उसकी गणना करें अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हों और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्नचन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि स्वनवांश स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इस में भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रांतर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिका ग्रह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभ-ग्रह हों वहां धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों में विधवा व दुश्चरित्रा कहें।

शय्या—शिर व पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषड्भान्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रह युक्त हो वहां सूतिका के पलंग का पाया फटा टूटा समझना।

दो०—मीन-मिथुन-सिंह-तुला, मेष होय तत्काल। अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल ॥

अथ चिह्नज्ञानम्—दोहा षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण ॥ भानु तथा सौरी तनधन कुज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम भावे राह। वाम कर्ण या मस्तके अवश चिह्न दरशाह ॥ सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ नौमें पांचे भृगु बसे तनु. का चौथे मन्द। मृत्यु आवे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल में पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनि देकर कटि में बांधे और साथ ही "ओंमुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा ॥" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर चलता कर लेवें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०-द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहे शशी जो खीन। कण्टक शुभ जनना बसै, वेगि ताहि यमलीन। बसै चन्द्रा द्वादसैं अष्ट भवन २ पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव ॥

अथ काणयोगा—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय ॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रियाँघर नाथ ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान ॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान ॥

मूकयोगा—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय ॥ शुक्र त्रिके गुर्लसह अब. दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।

दुःखयोगा—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तन सुख विश्वावीस ॥ पापग्रहयुत लग्नपति परे लग्न में आय। वीर्य्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजनाय ॥

बन्धनयोगा—क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार ॥

सर्पवेष्टितयोगा—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्मयोगा—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९. स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु-समय-विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हों, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा—जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है, तब मरण कहना। अथवा, वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

सुखयोगा:—अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह २ परे तो जानो सुख संग॥ जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि ता पर परे सर्व सुखी नर होय॥

क्लीब (नपुंसक) योगा:—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्र भवन ते रिष्फ पट बसे विलब भानु॥

कुष्ठयोगा:—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त या केतु। श्वेत कुष्ठ को योग यह बरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंडे कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनु नाथ॥ आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। बमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।

केमद्रुम:—आगे पीछे चन्द्र के जो न परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन हारे सोय॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न ब्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशमे बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूर युक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहे पति को तजे तमारि॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटकं शुभ सो ीन ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय वा तीन॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम॥ पाप ग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नाशै कुल दुबो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसै बुधजन कहत विचारि॥

वैधव्य विषकन्यायोगा:—चौ० रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय॥१॥ कृत्तिका होय शनिश्चर वार॥ साते तिथि का करो विचार॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय॥४॥ जन्मलग्न है शुभग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय॥५॥ शत्रु क्षेत्र में है ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय॥ मन्दवार युत लीजो जोय॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार॥८॥ रविवार द्वादशी को होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय॥९॥ ऐसो योग जबी जो परे। तो कन्या को विधवा करे॥१०॥ दो०—सदन में भूमिसुत चन्द्र भवन शनि धाम। सूर्य होत सुत सदन में कन्या विधवा मान॥११॥

वैधव्य विषकन्याभंगयोगा:—जन्मलग्न वा चन्द्र से शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादियोग:—शे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कविष्टये वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोगा:—चौपाई-केन्द्रयात नभगा शुभ होई। मरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होई है सुत वाके—चन्द्रमा तुंग बसै तनु जाई। लाभ धन गुरु आवे धाई॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जन विख्यात होय सुकुमारी॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्र भवन में होई॥ ऐसे योग जन्म सुकुमारी॥ रानी होय सदन धनधारी॥ दोहा......कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताकों पति नृप शूर॥ लाभ भवन सित चन्द्र औ सौमज सप्तम भौम। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचार:—पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत॥

अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी वा घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता वा घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन में घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे, कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है, प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ है।

त्रिखलजन्म फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हों तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करे तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (चांदी, सोना, तांबा) दान करे।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हों तो माता-पिता, को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, पड़ोसियों को एवं टेवा बनाने वाले ज्योतिषी को भी भय होता है। ऊपर की प्रथम पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, अतः शान्ति करे। पहिले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, ७वें में पितृसुख, ८वें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में धनी।

अर्थैकनक्षत्रजनन-फलम्:—वृद्धगर्ग कहते हैं कि यदि भ्राताओं या पिता पुत्र माता या कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्म-कुण्डली से विशेष विचार

लघु-भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जो जोड़ें राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश तृतीयस्थग्रह तृतीयस्थ राशि की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(३) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावे—(यथा)—ल० तृ० से०। शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम इन चारों स्पष्टों को जोड़ कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचरस्थ शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।

(५) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृ कष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुह्ये	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशु ना	धन ना	धन ला	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा
फलम्	(१।२।३च.) श्वसुरहानि	(२।३।४च.) सास नाश	ज्येष्ठ नाश	(४च) देवर नाश

सुतः सुता वा नियतं श्वसुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथा श्लेषाद्यपादजः।

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो-दो घड़ी तिथि गण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म यात्रा विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूल नक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

[illegible] २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करने चाहिए, तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद फल		आश्लेषा पाद फल	
चरण	फल	चरण	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

मूलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वो.	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वो	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातः संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तद्वद् गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि॥ बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृतं स्यान्मांगलं ध्रुवम्॥ विदधायथवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अभुक्तमूलविचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष बाधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग करदे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शान्तिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति वाभुक्तर्क्षे विशेषतः॥

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू० ज्ये० पिता को भय	मू० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर भय	पशु हानि	फल

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठांत्यपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान दूसरे में मन्त्री या मुक्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह-फलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	सिरअंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पतिवान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	योगी	शरीरपी	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुत	तेजस्वी	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	हृद्दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	कोपिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुत्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	अरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्त्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना-	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	कोपिनी	हीनांगी	[illegible]	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढ़ा	दुष्टा	रोगिणी

अथ मातृसुखनाश योगाः—(१) पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो, इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए।

पितृनाश योगाः—(१) सूर्य मंगल दशवें वा नवमे गये हो (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो, (३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो, इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाश योगाः—भ्रातृ ग्रह को ईश जो भौम संगत्रिक होय।
जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय॥

सन्तानसुख नाशयोगाः—गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा यो जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे, त्रिक थान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोगा :—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहु संग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।

जारज योगाः—भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है परपुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु [illegible] पसार॥

गोचर-ग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

ग्रह.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थानना.	भय	श्री:	मानभग	दैन्य	विजय:	मार्ग:	पीड़ा	सुकृना.	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्र:	अन्नला:	धननाश	सुखं	रोग:	कार्यनाश	धनला.	स्त्रीला.	रोग:	धर्मला.	सौख्य	धनलाभ	धनना.
भौम:	शत्रुभी:	धननाश	धनलाभ	शत्रुभी:	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभी.	शत्रुभी.	शोक:	धनलाभ	धनना.
बुध:	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभी.	पशुलाभ	सुखं	स्थानला.	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्य	धनलाभ	धनना.
गुरु:	भयं	धनलाभ	क्लेश	धननाश:	सुखं	शोक:	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र:	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोक;	धनला.	वस्त्रला.	दुःख	धनलाभ	धनला.
शनि:	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभी:	पुत्रनाश:	धनला.	दोष:	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनलाभ	धनना.
राहु:	हानि:	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक:	श्री:	कलह:	मृत्यु	दुःख	वैर	सुखं	शोक:
केतु:	रोग:	वैर	सुखं	भय	सुखं	धनला.	कलह:	रोग:	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश आदि से लेकर अग्रिम राशिके उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों के अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है। केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

अथ ग्रहाणामेकर्क्षे योगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा के	ग्रहा:
मा. १	दि. २।	मा १॥	मा १	मा १२	मा. १	मा ३०	मा १८	एकार्थयोग
आदौ.	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमय:
दि. ५	घ. ३	दि. ८	दि. ७	मा. १	दि. ७	मा. ६	मा. ६	गंतव्यराशे: प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थं धारणाय मण्य:

सू.	चं.	मं	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवाल:	पन्ना	म पुष्परागा	हीरा	नीलम्	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफल	लोहम्	वैडूर्यम्	लाजवर्त:	लाजवर्त:

पूतनाग्रसित लक्षण एवं शान्ति

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से बच्चा होता है। जब कभी बच्चा बैठे २ गिर पड़े, या यों मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि उसे महापूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लोभादि के वश में आकर वनदेवता या नगरदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्रता में ही बालक के साथ सो जावे तो बालभंजा नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूल माला पहिना कर बाहर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर जूंठे मूठे बालक को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता २ गिर जाय अथवा उसे उल्टी हो या हाथ-पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मलमूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्य कर्म संध्या बंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते है जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

चेष्टा—जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन को उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम्—दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे ग्रह रोग दूर होगा।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दानं निवासश्च तत्र रात्रौ—ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव॥ इत्यस्य जपः ततोऽनेनैव मन्त्रेण संदीपदधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः॥

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे)

यदि दुष्ट दृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाय तो—ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षति त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥१॥ कृष्ण! रक्ष शिशुं शङ्ख मधुकैटभ-मर्दनः। प्रातः सङ्गव मध्याह्ने सायाह्ने सुच सन्ध्ययोः ॥२॥ महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्ट निषूदनः। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ॥३॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरेनित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ॥४॥

इन चार मंत्रों से अभिमन्त्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है ?	मूर्ति निर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चन्दन तिलक, श्वेत पुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना ।	ओं ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दी वै श्रवणस्तथा । रक्षन्तु त्वरितं बाल मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब-पत्र, गौघृत
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झण्डी, पुष्प चावलों के आटे के सतिये १०	भात एक सेर आटे के पूड़े मत्स्य व बकरे का मांस, संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखना ।	ओं नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रांह्रां ह्रीं ह्रीं हुं हुं दुष्टाग्रहा गच्छ-न्त्वितः स्थानाद्राशया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चन्दन, रक्त पुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १० ।	एक सेर लाल भात, आधे सेर पूर्ण पोली, (सुहाली) पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे ।	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गौशृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुष्प और बिल्ली के बाल गौघृत
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुख मंडिका	तिल-चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प श्वेत ध्वजा ५, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प	भात, सेर आटे के पूड़े आध सेर पूर्ण पोली, साय, पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे ।	सुनन्दना विधानोक्त	
पञ्चम दिन मास वर्ष में, बिडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये ।	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे	ओं भगवती ह्रींह्रीं हुं हुं मुञ्च रक्षा कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्णस्व ठःठः चामुंडे सर्वार चण्डिकेठःठः स्वाहा ।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में, बट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५ ।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७पूड़ियां, १ प्रहर दिनचढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत ।
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	चावलों का आटा एक सेर	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५ ।	भात, ७ पूड़ियां साय काल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर	बिडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चन्दन ५, रंग की झण्डी५ दीपक ५ ।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग छाग मांस संध्या में चौरास्ते पर	बिडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में, मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प ५ दीपक, ५ रंग की झण्डी ५ ।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर	ओं नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडल बलिमादाय हन २ हुंफट्स्वाहा	
दशम दिन मास वर्ष में, रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये ।	गुड़ के घी भुने चावल, गौ घृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर	ओं नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हु फट् स्वाहा	गौशृंग, लहसुन, सांप की कांचली, निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गौघृत
एकादश दिन मास वर्ष में, सुर्दशना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये ।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर	ओं नमो भगवते रावणाय चन्द्र हास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ओं ह्रीं फट् स्वाहा	
द्वादश दिन मास वर्ष में, अश्वृता	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के ।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर ।	ओं नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ ओं हुं हन २ दुष्टानां ह्रांह्रं स्वाहा	

अथ बाल पूतना विधान—आगे लिखे बाल कष्टावली चक्रोक्त हुए एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान-स्पर्श निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान विधि तीन दिन निरन्तर करें । चौथे दिन पलास, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ, इनके पत्रों को उबाल कर बालक को मन्त्र पाठपूर्वक स्नान कराना तदन्तर कल्याणार्थ यथा शक्ति भिक्षुकों तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान्न भोजन कराना ॥ तदनन्तर ओं द्यौशांतिरन्तरिक्ष ऽऽ इत्यादि शांति मन्त्रों व मार्जन द मन्त्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखा-स्थान-स्पर्श पूर्वक यह मन्त्र पढ़े—ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर ! ग्रहस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ ओं सर्वमातरः इमं ग्रहं बहरन्तु हुं रादय२ स्फोटय २ स्वाहा । गर्ज २ के २ गृह्ण २ मारय २, हिम २, हवः एवं सिद्धि कुरो आपय स्वाहा ॥ इति रक्षा मन्त्रः ॥

अथ नक्षत्र-कष्टावली

रोग नक्षत्र	रोगशांत्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोग दिनसंख्या १च	२च	३च	४च	रोगशांत्यर्थ जपनीयमन्त्राः	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
अश्विनी	भोजनदानम्	९	११	१	२५	मृत्युञ्जयमन्त्र जपः	घोड़ी के मुख में सात बाँहो धान्य देवे।
भरणी	गो-अन्नादिदान	०	८०	४०	११	यमायत्वेति मन्त्रः	हाथी के मुख में तिल चावल
कृत्तिका	स्वर्णदानम्	९	११	१६	२७	अग्निर्मूर्धेति मन्त्रः	कछुए के मुख में घी दें
रोहिणी	घृतदानम्	३	९	१८	३०	ब्रह्मयेति मन्त्रः	सर्प को दूध दही खिलावे
मृगशिरा	तिलदानम्	९	५	७	१०	इमं देवेति मन्त्रः	खरगोश को दूध पिलावे
आर्द्रा	गोदान	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्रेति मन्त्रः	बकरी के मुख में रक्त डालें
पुनर्वसु	पीतलदानम्	७	१४	२	२१	अदितिर्द्यौ रितिमन्त्रः	सूअर को धान्य खिलावे
पुष्य	तैलान्नदानम्	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डाले
आश्लेषा	गोऽन्नादिदानम्	०	०	४१	०	नमोऽस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
मघा	वस्त्राज्यदानम्	१५	७	१७	२०	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलावे
पू. फा.	भोजनदानम्	०	१५	०	३०	भगप्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दे
उ. फा.	अन्नदानम्	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलावे
हस्त	तैलदानम्	१५	१७	१५	०	उदुत्यंजातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलावे
चित्रा	दुग्धदानम्	११	९	९	१६	त्वष्टा तुरीगति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर व धतूरे के फूल वन में रखे
स्वाती	गोघृतदानम्	६०	१७	३०	०	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़ चावल खिलावे
विशाखा	गोस्वर्णदानम्	१५	०	४	१३	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़ भात की बलि दे
अनुराधा	गोघृतदानम्.	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुलथी सहित भात गुड़ दे
ज्येष्ठा	तिलदानम्	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमितिमन्त्रः	बन्दरों को गुड़ तिल डाले
मूल	रौप्यपात्रदा	०	९	१५	६	मातापुत्रेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
पू. षा.	गोमुक्तादानम्	०	१५	२४	१०	आपो धर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोते की बलि दे
उ. षा.	भोजनदानम्	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डाले
श्रवण	श्रीफलदानम्	६०	२४	६	९	विष्णोरर रा. मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त मीठा की बलि दे
धनिष्ठा	अश्वान्नदानम्	१५	४	२०	२१	वसोःपवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दही अन्न की बलि दे
शतभिषा	भोजनान्नदानम्	४	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलावे
पू. भा.	भोजनदानम्	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि दे
उ. भा.	अन्नदानम्	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलावे
रेवती	फल दा. कन्यापू.	१८	१०	९	२०	पूषन्तवेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि दे

जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है उसे यहां कष्टावली में 'रोग नक्षत्र' का नाम दिया है। रोग नक्षत्र को जानकर इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्यर्थ बलिदान'—वाले कालम में घोड़ी हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलीद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें—ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	८	९	१०
नक्षत्र	मूल	भ.	कृ.	रो.	श्लेषा

जन्मै सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गये गए ना बहुरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) च० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश को दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर व गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) सा० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना—(१) गुलिक स्पष्ट से सूर्य-स्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट—

इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मन्त्र पृथक् पृथक् लिखा है वह न कर सके तो महामृत्युञ्जय ही करे। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है उस चरणानुसार कष्ट दिन जाने, शून्य से विशेष भय जाने, दान जप करे।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) रोग के शुरु दिन में जन्मराशि नक्षत्र लग्न में वा राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता ४।९।१४ आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पू.षा. या हस्त व पू.भा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि, भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परन्तु जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल.	श्रवण	पू.भा.	अश्वि	रो	मध्या
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पूषा	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हो तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसंदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोगत्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०—१८वां, नक्षत्र दंष्ट्रा (दादढ़ा) होती है। काल के मुख दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि	बलि	दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	पिण्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली यन्त्रम्

वा.	वारेश	क. दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
च.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
वृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधु बलि शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांग चक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अङ्ग विशेष में पीड़ा कष्ट घाव फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु—विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो दैवज्ञ तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर निम्नलिखित कालांग चक्र में दिए भावों के अनुसार उस 'पीड़ित-भाव' को देखे। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की सम्भावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति करावे। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभ ग्रह दृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांक चक्र

भाव→	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अङ्ग→	सिर	मुख	भुजाएँ	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति (मूत्राशय)	लिङ्ग गुदा	जंघाएँ	घुटने	पिण्डलियां	पाद-युगल

कुछ दैवज्ञ यहां भावों की जगह मेषादि राशियों की कल्पना करके इसी तरह से विचार करते हैं।

बाल-रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिलका, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल अगर, गाय का घी, इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खूं खुर्दनं खं हुं फट् स्वाहा"—इस मन्त्र का उच्चारण करे।

ग्रहगोचरादौ कष्टार्थग्रहकृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रह -दान-पदार्थाः												जप संख्या	जपनीय-मंत्राः	दानसमय	हवन-समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरीरक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर शस्त्र	फल	१६०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक घोड़ा	पीतफल	१६०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उदड़	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल घोड़ा	शप्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नम	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मसरी श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति को कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि—सूर्य का व्रत रविवार को करे। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्ष पर्यन्त तीस या कम से कम १२ व्रत करे। उस रोज केवल गेहूं की रोटी घी लाल खाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डाल कर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिलकुल न खावें। भोजन से पूर्व हो सके ता लाल वस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज-मन्त्र की पांच माला जप करे। तन्दनतर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्प-दूर्वायुक्त आर्घ प्रदान करे। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण भोजन करावे। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परणित हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्र रोग, चर्म रोग एव अन्य शारीरिक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्य शान्ति का सरल उपचार :—लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग जैसे चादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार केव्रत की विधि—चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्र-लिखित बीज-मन्त्र को ११ माला या ३ माला जप करे। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करे। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही—चावल, घी-खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावे। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्धयर्थ भी पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्र शान्ति का सरल उपचार :—सफेद जुराब, रूमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दही का उपयोग, चांदी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिए। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करे। नमक सेवन न करे, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करे और स्वयं भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति—सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करे। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावे।

मंगल शान्ति का सरल उपचार :—लाल रंग की वस्तुओं का उपयोग रात को लाल वस्त्र पहनें, तांबे के बर्तन, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठे) से प्रारम्भ करें। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खाण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करे। फिर तीन तुलसीदल, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावे। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या-धन-लाभ, व्यापार से तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रह जन्म नेष्ट फल से मुक्ति मिलती है।

बुध शान्ति का सरल उपचार :—हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं हरा रूमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरुवार व्रत करें। उस दिन पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खाण्ड से बनी मिठाई लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करे। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू भोजन करावे। स्वर्ण पीत-वस्त्र चने की दान आदि का दान करे। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धि कर है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पति शान्ति का सरल उपचार :—पीले वस्त्र रूमाल आदि पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करे। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करे। यही पदार्थ यथाशक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावे। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करे। इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्र शान्ति का सरल उपचार :-सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल आदि सफेद फूल, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिव पूजन।

शनि के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से आरम्भ करे : व्रत ५१ या १९ करने चाहिए। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की १९ या तीन माला का जप करे। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग) गङ्गाजल तथा शक्कर थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दे। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पञ्जीरी कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दे तथा तैलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करे। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करे। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक हैरानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनि शान्ति का सरल उपचार :—घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रूमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु केतु के व्रत की विधि—शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरु करना चाहिए। यह व्रत १८ करे। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीजमन्त्र की माला जपे। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डाले। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करे और यही दान में भी दे। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दे। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु, केतु शान्ति का सरल उपचार :-नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पेन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्यर्थं स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति ॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी-कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारु, मुलेठी, लाल फूल, केसर, गर्म पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलेठी श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमलबेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबाल कर स्नान करे, तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट—स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले, उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधि स्नानम्

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल एवं से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरु, वचन, देवता ब्राह्मणों की वेदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

शनिविचार—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वा रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः बन्धु-विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं वैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नि भयं लोहं शस्त्रभयं सदैवासुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत्-कल्याणी (साढेसाती) फलम्...राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत् ॥ हानिः स्यान्मरणं विदेश-गमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा ॥२॥

सप्तधान्य—उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४.जौ ५. धान्य (तंदुल) ६. कंगनी ७. अष्टगंध—अंगर, कस्तूरी, कुकुम कपूंर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन देवदारु।

अष्टगंध धूप—अगर, छरीला, जटामासी, कपूंर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोघृत सफेद चन्दन।

नक्षत्र-राशिज्ञान चक्र

राशिज्ञाने विशेष:—
नक्षत्र वा राशि में श और स में, ब और व में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोग बाक्षरे 'नाम्नि ग्राह्य तत्रादिमाक्षरम्)

राशय:	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डा

राशय:	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो		भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गी	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	य		ध	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू.	०	दी	ञ	चि

ध्यान दें,—नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा तो ङ की जगह घ, ञ की जगह दु तथा ण की जगह पू से नाम प्रारम्भ करें। ऐसा करने से नक्षत्र भेद नहीं होता।

॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्गो या मात्रा स स्वर एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशि-नामराश्यो : प्रधानता निर्णीयते—विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाह घटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णय—वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करो। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण १-१ चरण मानो। इस प्रकार को प्रायः सामान्य गणक नहीं जानते, एतदर्थ यहां लिखा गया है।

राशि ज्ञानम्—चूल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम् ॥
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो प ण ठ पो कन्या ॥
राते तुला तो ना यू वृश्चिक ये धफढभे धनुः।
भोजा खागी मकरः गूसद कुम्भः दीथझञची मीनः ॥

उपरोक्त राशि-ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर लिया है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह भी ले लिया गया है। जैसे—मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रह होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृत्तिका के प्रथम चरण इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

टिप्पणी—(१) जओर्जः यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकर-राशिः। कष-संयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं ज्ञानारामस्य कुम्भराशि। (२) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेयं च निष्क्रम-प्राशने क्रमात्। चूडोपनयनं वेदव्रतानां च चतुष्टयम्। गोदान-मेखलोन्मोक्षौ विवाहः षोडशी क्रिया ॥

नोट—चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभीता रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म के समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनपति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वार भाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक (Tide Factor) सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन-फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है। चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी का महत्त्व है।

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं गुरु-राहु का गोचरफल विचार

जन्म कुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अन्तर शुभ चल रहा हो, तो ढैय्या और साढ़ेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र-शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढ़ेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धन हानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु-पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्म कुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश भी हो तो ढैय्या-साढ़ेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में लग्नेश पंचमेश, नवमेश होकर ३।६।११वें स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि अष्टवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित देता है। शान्त्यर्थ शनिवार के दिन सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए, या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्टान्न, गुलगुले आदि बनाकर गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें, या बन्दरों को गुड़-चने डालते रहें। अष्टगंध से शुभ-मुहूर्त में बना हुआ शनियन्त्र धारण करना विशेष शान्तिप्रद है।

साढ़ेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है

मेष राशि वालों को बीच के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहले अढ़ाई वर्ष खराब हैं। मिथुन को अन्त के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। कर्क को बीच के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। सिंह को पहले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष विशेष खराब हैं। कन्या को पहले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। वृश्चिक को अन्तिम ५ वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी बीच के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारम्भ के अढ़ाई वर्ष खराब हैं। मकर को पहले ५ वर्ष, उसमें भी पहले अढ़ाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुम्भ को आदि-अन्त के अढ़ाई-अढ़ाई वर्ष, विशेषतया अन्त के अढ़ाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढ़े सात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ फल वाले होते हैं। २१ दिसं. १९८४ ई. को वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय शनि वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होता है तत्पश्चात् १ जून सन् १९८५ ई. को शनि वक्री होकर तुलास्थ चन्द्र के समय तुला राशि में प्रविष्ट होगा। पुनः १६ सितं. १९८५ ई. को कन्या के चन्द्र के समय शनि वृश्चिक राशि में आ जाता है।

वर्षारम्भ से ३१ मई १९८५ ई. तक वृश्चिक राशिस्थ शनि का शुभाशुभ फल

सिंह—(ढैय्या), लोहे के पाए, कष्टप्रद हैं, रोगभय, क्लेश, राजभय रहे।
तुला—(साढ़ेसाती), चांदी के पाए, शुभ हैं, प्रभाव बढ़े, लाभ, सफलता मिले।
वृश्चिक—(साढ़ेसाती), सोने के पाए, हानिप्रद हैं। कुटुम्ब कष्ट, रोग, धन हानि हो।
धनु—(साढ़ेसाती), लोहे के पाए कष्टप्रद हैं। रोग, व्यर्थ के झंझट, राजभय रहे।
मेष—(ढैय्या), लोहे के पाए कष्टप्रद हैं। कष्ट, रोगभय, कुटुम्ब कलेश, धन हानि हो।

१ जून से १५ सितं. १९८५ तक तुलास्थ शनि का फल

कर्क—(ढैय्या), लोहे के पाए, शरीर पीड़ा, रक्त विकार, स्त्री-पुत्र कष्ट, व्यापार हानि, राजभय आदि से नेष्ट है।

कन्या—(साढ़ेसाती), चांदी के पाए, प्रभाव बढ़े, व्यापार में लाभ, मंगलकार्य, राज्य पक्ष शुभ रहेगा।

तुला—(साढ़ेसाती), सुवर्णपाद, रोगभय, स्त्री पक्ष नेष्ट, क्लेष, धन हानि आदि फल मिलेगा।

वृश्चिक—(साढ़ेसाती), लौहपाद, चर्म रोग, शारीरिक कष्ट, प्रिय वियोग, राजभय से नेष्ट हैं।

मीन—(ढैय्या), लौहपाद, कष्ट, राजभय, रक्त विकार, स्त्री-पुत्र पशु पीड़ा से नेष्ट हैं।

१६ सितम्बर से वर्षान्त तक वृश्चिकस्थ शनि का फल

सिंह—(ढैय्या), चांदी के पाए, प्रभाव बढ़ेगा, लाभ एवं सफलता आदि शुभ फल रहे।
तुला—(साढ़ेसाती), लौहपाद, रोग भय, क्लेश, राज्यपक्ष से भय आदि अशुभफल हो।
वृश्चिक—(साढ़ेसाती), सुवर्णपाद, रोग, क्लेश, स्त्री पक्ष से कष्ट, धन हानि से नेष्ट हैं।
धनु—(साढ़ेसाती), ताम्रपाद, अच्छा लाभ, स्त्री-पुत्र सुख, प्रभाव क्षेत्र बढ़े।
मेष—(ढैय्या), सुवर्ण पाद, रोग, राजभय, क्लेश, धन आदि से नेष्ट है।

गोचरस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

१० जनवरी सन् १९८५ ई. से गुरु मकर राशि में चल रहा है तथा २५ जनवरी १९८६ ई. को यह कुम्भ राशि मे आकर संवतान्त तक कुम्भ में ही रहेगा।

मकरस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ

कुम्भ राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ

गुरु का विशेष फल :—गुरु जब तक जिस राशि को शुभ फलप्रद होता है तब तक उस राशि वालों को विद्या व सन्तति की ओर से सुख, मित्र बन्धु मिलाप, मान वृद्धि, खुशी, धनलाभ व शुभ यात्रादि अच्छे फल प्रदान करता है, और जिन राशि वालों को अशुभ फलप्रद होता है, उन्हें धन-मान-हानि व सन्तति की ओर से चिन्ता, वृथा यात्रा, शारीरिक कष्ट, बड़ों से वैमनस्य आदि अशुभ फलप्रद होता है।

शान्त्यर्थ गुरुवार का व्रत करें, जप-दान करें, चिड़िया आदि पक्षियों को हल्दी से पीले किए हुए चावल डालें। गुरुशान्तियन्त्र धारण करें।

राहु का शुभाशुभ फल

२९ जनवरी सन् १९८५ ई. से राहु मेष में चल रहा है। वि. स. २०४२ के अन्त तक राहु मेष राशि में ही चलेगा। मेष राशि के राहु का शुभाशुभ फल—

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अशुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	अशुभ

राहु का विशेष फल :—राहु जब जिस राशि को शुभ फलप्रद होता है तब तक उस राशि वाले व्यक्ति को प्रिय मिलन, द्रव्यलाभ, स्वास्थ्यसुख, घर में सन्तोष, कुटुम्ब में वृद्धि आदि शुभफल देता है। जिन राशि वालों को मध्यम होता है, उन्हें यदाकदा किंचित् शत्रुभय, कुछ हानि, लाभ कम, वृथा कलह, द्रव्यचिन्ता आदि फल देता है और जिन राशि वालों का अशुभ होता है, उन्हें अकस्मात् हानि, चोर-रोगभय, खर्च आधिक, मित्र-बन्धु-वियोग, गृह-कलह, अशुभ विचारों की ओर मन की दौड़ इत्यादि फल देता है।

शान्त्यर्थ प्रत्येक मास के पहले बुधवार की रात को तैलपक्व भोज्य गरीबों को दें, या कुत्तों को डालें, दुर्गापाठ करें। राहुशान्ति यन्त्र धारण करें।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं० २०४२ वि०)

	वैशाख (१३ अप्रैल से १३ मई तक)	ज्येष्ठ (१४ मई से १३ जून तक)	आषाढ़ (१४ जून से १५ जुलाई तक)
मेष	सेहत ठीक, उत्साह बढ़े, शत्रु भय, सन्तति से सुख, स्त्री चिन्ता, कारोबार ठीक, आय से व्यय अधिक। अप्रै. १७, १८, २७, २८, मई ५, ६ अशुभ।	उदर विकार, कारोबार ढीला, व्यय विशेष, कारोबार पूर्ववत्, शिर-नेत्र कष्ट, राहुदान से लाभ। मई १४, १५, २४, २५, जून १, २, १०, ११, १२ अशुभ।	कुटुम्ब क्लेश, स्त्री कष्ट, कार्यान्तिर से लाभ, मन चंचल, कारोबार में रुकावट, शरीर में वायु विकार। जून २०, २१, २९, ३०, जुला. ८, ९ अशुभ।
वृष	मन खिन्न, निजीजनों से मदद, विद्या में सफलता, भाग्य साथ देगा, नेत्र व शिर पीड़ा, शुभ में व्यय होगा। अप्रै. १९, २०, २१, २९, ३०, मई ७, ८ अशुभ।	रक्त-पित्त विकार, कष्टप्रद यात्रा, वृथा विवाद से बचें, घरेलू झंझट, इज्जत बनी रहेगी, शनि-मंगल का दान करें। मई-१६, १७, १८, २६, २७, जून ३, ४, ५, १३ अशुभ।	स्वतन्त्र कारोबार में हानि, शिर व नेत्र कष्ट, निजी कारोबार ढीला, विद्या में परिश्रम के अनुरूप सफलता न मिले। जून १४, २२, २३, २४, जुला. १, २, १० ११, १२ अशुभ।
मिथुन	वृथा विवाद से सावधान, प्रिय वियोग, बने हुए काम में रुकावट, रोगभय, कारोबार में लाभ रहे। अप्रै. १३, २२, २३, मई १, २, ९, १० अशुभ।	निजीजनों से मनमुटाव, सन्तान हेतु विशेष व्यय, स्त्री सुख, गुप्तचिन्ता, भाग्य साथ देगा, आय का साधन बने, खर्च विशेष। मई १९, २०, २८, २९, जून ६, ७ अशुभ।	कष्टप्रद यात्रा, जगह तबदीली का विचार, राज्य पक्ष अशुभ, नई योजना हानिप्रद, धन हानि भय, सन्तान से चिन्ता। जून १५, १६, १७, २५, २६, जुला. ३, ४, १३,१४ अशुभ।
कर्क	लाभ अच्छा, सुखद समाचार, सम्पत्ति विवाद, सन्तति पक्ष से चिन्ता, व्यापार व कारोबार में तरक्की। अप्रै. १४, १५, १६, २४, २५, २६, मई ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।	आमदन से खर्च अधिक, मित्रों से अनबन, विद्यार्थियों के लिए समय उलझनपूर्ण, भाग्य साथ देगा, चिड़ियों को चावल डालें। मई २१, २२, २३, ३०, ३१, जून ८, ९ अशुभ।	बन्धुवर्ग से असन्तोष, उद्योग से लाभ कम, विवाद भय, पशु हानि, शरीर में वायु विकार, इज्जत बनी रहेगी। जून १८, १९, २७, २८, जुला. ५, ६, ७ अशुभ।
सिंह	उत्साह बढ़े, मित्र-बन्धु से अनबन, गुप्त चिन्ता, अचानक खर्च, लाभ भी हो, इज्जत बनी रहे, गुप्त शत्रु से सावधान। अप्रै. १७, १८, २७, २८, मई ५, ६ अशुभ।	रक्तपित्त विकार, जमीन जायदाद सम्बन्धी विवाद, विरोधी हतप्रभ, लाभ होकर हाथ न लगे। कारोबार में बाधाएं। मई १४, १५, २४, २५, जून १, २, १०, ११, १२ अशुभ।	उत्साह बना रहे, निजी जनों से विवाद, कारोबार पूर्ववत्, कोष में कमी, विरोधी पक्ष प्रबल, परिश्रम के अनुरूप लाभ न हो। जून २०, २१, २९, ३०, जुला. ८, ९ अशुभ।
कन्या	विरोधी प्रबल, उत्साह बना रहे, विद्या-बुद्धि अच्छे, नई योजना, स्त्री सुख, क्रोध बढ़े, विरोधी हतप्रभ हों। अप्रै. १९, २०, २१, २९, ३०, मई ७, ८ अशुभ।	सफल योजना, सन्तति पक्ष शुभ, बन्धुजन वैमनस्य, व्यर्थ खर्च, मन प्रसन्न रहे, राहुदान से शुभ। मई १६ १७, १८, २६, २७, जून ३, ४, ५, १३ अशुभ।	शिर व नेत्र कष्ट, सन्तान से असन्तोष, चोट भय, कारोबार कमजोर, दुर्गापाठ से श्रेय होगा। जून १४, २२, २३, २४, जुला. १, २, १०, ११, १२ अशुभ।
तुला	उदर विकार, कोष में कमी, मित्र-बन्धु से मेल हो, विरोधी पक्ष प्रबल, क्रोधी प्रकृति, मंगलदान से लाभ। कारोबार ठीक। अप्रै. १३, २२, २३, मई १, २, ९, १० अशुभ।	आर्थिक स्थिति चिन्ताजनक, गुप्त चिन्ता, मित्रों से सहयोग, स्त्रीकष्ट, निजी सेहत का ध्यान रखें। मई १९, २०, २८, २९, जून ६, ७ अशुभ।	गुप्त शत्रु से सावधान, शनि-केतु कष्टप्रद, प्रत्येक कार्य में विवेक से काम लें हानिभय है, यात्रा में कष्ट, गुप्तचिन्ता। जून १५, १६, १७, २५, २६, जुला. ३, ४, १३, १४ अशुभ।
वृश्चिक	सेहत बिगड़े, राजभय, निजीजन से मदद, शत्रु हतप्रभ हो, सन्तति सुख, वृथा व्यय, शनिदान से सुख। अप्रै. १४, १५, १६, २४, २५, २६, मई ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।	चोरभय, क्रोधी प्रकृति, हाथ तंग, झगड़े से बचें हानिभय है, लाल-काली चीज का दान शुभ, मन अशान्त, शिव पूजन से कल्याण। मई २१, २२, २३, ३०, ३१, जून ८, ९ अशुभ।	निजीजनों से मेल, पैर में चोट भय, रक्त-पित्त विकार, कारोबार ढीला, शनि-बुध को तेलदान से शुभ। जून १८, १९, २७, २८, जुला. ५, ६, ७ अशुभ।
धनु	लाभ व्यय बराबर, सत्पुरुष से मेल, सन्तान के लिए व्यय, मासान्त में वृथा व्यय, लाभप्रद योजना बने। अप्रै. १७, १८, २७, २८, मई ५, ६ अशुभ।	अच्छा धनलाभ, रोगभय, यात्रा कष्टप्रद, नेत्र-शिर कष्ट, पीले चावल पक्षियों को डालें, कारोबार कुछ ठीक। मई १४, १५, २४, २५, जून १, २, १०, ११, १२ अशुभ।	लाभ होकर हाथ न लगे, शुभ कार्य की चिन्ता, स्त्री कष्ट, कारोबार सम्बन्धी कोई विवाद खड़ा होगा, सूर्य-मं. दान करें। जून २०, २१, २९, ३०, जुला. ८, ९, अशुभ।
मकर	कष्टभय, सुख-धन लाभ, निजी लोगों से मनमुटाव, मानसिक सन्तोष, कारोबार में अचानक हानिभय। अप्रै. १९, २०, २१, २९, ३०, मई ७, ८ अशुभ।	मन अशांत, अर्थ लाभ होकर हानि हो, कारोबार में रुकावट, कार्यान्तिर की असफल योजना, शिव पूजन से कल्याण। मई १६, १७, १८, २६, २७, जून ३, ४, ५, १३ अशुभ।	अरिष्टभय, अचानक यात्रा, शत्रु पक्ष हतप्रभ, कार्यान्तिर, से लाभ, शिव पूजन एवं वृहस्पति के दान से कल्याण हो। जून १४, २२, २३, २४, जुला. १, २, १०; ११, १२ अशुभ।
कुंभ	अच्छा लाभ हो, पराक्रम बढ़े, स्थानान्तर व कार्यान्तिर का विचार, मासान्त में हानिभय, सेहत बिगड़े। अप्रै. १३, २२, २३, मई १, २, ९, १० अशुभ।	सेहत ठीक, लाभ अच्छा हो, विरोधी हतप्रभ, सम्पत्ति-विवाद, कारोबार में हानि भय, चावल पक्षियों को डालें। मई १९, २०, २८, २९, जून ६, ७ अशुभ।	मासारंभ लाभप्रद, विरोधी पक्ष से सावधान, कारोबार कमजोर, प्रिय कष्ट, असफल योजना, पढ़ाई में मन न लगे। जून १५, १६, १७, २५, २६, जुला. ३, ४, १३, १४ अशुभ।
मीन	इज्जत बढ़े, सुखलाभ, राजपक्ष से भय, अर्थ लाभ-व्यय विशेष, कारोबार कुछ कमजोर। अप्रै. १४, १५, १६, २४, २५, २६, मई ३, ४, ११, १२, १३ अशुभ।	विरोधी पक्ष कमजोर, आत्मबल प्रबल, कोष में कमी, उलझे काम बनें, निजी लोगों से अनबन, पीले चावल पक्षियों को डालें। मई २१, २२, २३, ३०, ३१, जून ८, ९ अशुभ।	वायु विकार, यात्रा में कष्ट, चोर उचक्कों से सावधान, आय से व्यय विशेष हो, नीच से अपमान भय। जून १८, १९, २७, २८, जुला. ५, ६, ७ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं० २०४२ वि०)

राशि	श्रावण (१६ जुलाई से १५ अगस्त तक)	भाद्रपद (१६ अग. से १५ सितं. तक)	आश्विन (१६ सितं. से १६ अक्तू. तक)
मेष	सन्तति व गृह चिन्ता, लाभ उत्तम, कारोबार प्रायः ठीक रहे, बन्धुओं से अनबन रहे। जुला. १७, १८, १६, २६, २७, अग. ४, ५, १४, १५ अशुभ।	उदर विकार, लाभ-खर्च बराबर, गृह भूमि आदि की चिन्ता, वायु विकार, स्त्री कष्ट। अग. २२, २३, ३१, सितं. १, २, १०, ११ अशुभ।	हानि भय, धन लाभ, रोग भय कष्टप्रद समाचार, शत्रु कमजोर, स्त्री कष्ट, कारोबार पूर्ववत्। सितं. १८, १६, २०, २७, २८, २६, अक्तू. ७, ८, ९, १६ अशुभ।
वृष	मित्र मिलाप, कारोबार में गड़बड़ी, शत्रु परास्त, सिर व नेत्र पीड़ा, बनते काम में रुकावट। जुला. २०, २१, २८ २६, अग. ६, ७, ८ अशुभ।	आमदन अच्छी, उत्साह बना रहे, निजी जनों से अनबन, दोस्तों से मेल, शत्रु कमजोर, कारोबार ठीक। अग. १६, १७, २४, २५, २६, सितं. ३, ४, १२, १३ अशुभ।	धन लाभ, शत्रु भय, बनते काम में रुकावट, मनोबल प्रबल, कारोबार में मन न लगे, खर्च अधिक। सितं. २१, २२, ३०, अक्तू. १, २, १०, ११ अशुभ।
मिथुन	लाभ ठीक, भाग्य वृद्धि, उत्साह बढ़े, सन्तति कष्ट, विरोधी प्रबल, कारोबार ठीक। जुला. २२, २३, ३०, ३१, अग. १, ९, १० अशुभ।	सेहत गड़बड़, आमदन से खर्च ज्यादा हो, सन्तति हेतु विशेष खर्च, कारोबार कुछ कमजोर, फिजूल खर्च हो। अग. १८, १६, २७, २८, सितं. ५, ६, ७, १४, १५ अशुभ।	सुख धन लाभ, गुप्त शत्रु से भय, अपमान भय, सन्तति कष्ट, कारोबार कुछ कमजोर, फिजूल खर्च। सितं. २३, २४, अक्तू. ३, ४, १२, १३ अशुभ।
कर्क	रक्तपित्त विकार, घरेलू झंझट, कार्यसिद्धि में विघ्न, स्त्री चिन्ता, वृथा विवाद से बचें। जुला. १५, १६, २४, २५, अग. २, ३, ११, १२, १३ अशुभ।	रक्त पित्त विकार, आमदन अच्छी, गुप्त शत्रु से सावधान, मन अशान्त, मंगल गुरु दान से शान्ति। अग. २०, २१, २६, ३०, सितं. ८, ९, अशुभ।	सेहत कमजोर, कोष में कमी, अचानक लाभ योग, विवाद से दूर रहें, अपमान भय है—सावधान रहें। सितं १६, १७, २५, २६, अक्तू. ५, ६, १४, १५ अशुभ।
सिंह	निजी जनों से अनबन, लाभ से खर्च अधिक, शत्रु वृद्धि, कारोबार ठीक, कोष में कमी। जुला. १७, १८, १६, २६, २७, अग. ४, ५, १४, १५ अशुभ।	प्रभाव बना रहे, निजी लोगों से अनबन हो, कारोबार ठीक, मास का पूर्वार्ध नेष्ट, नई योजना बने। अग. २२, २३, ३१, सितं. १, २, १०, ११ अशुभ।	आग व पानी से भय, क्रोध बढ़े, स्वतन्त्र व्यापार में हानि, निजी लोगों से मनमुटाव, शिव पूजन से कल्याण। सितं. १८, १६, २०, २७, २८, २६, अक्तू. ७, ८, ९, १६ अशुभ।
कन्या	नेत्र व सिर कष्ट, मित्र मिलाप, शत्रु हतप्रभ, वृथा व्यय, स्त्री चिन्ता, कारोबार से लाभ कम। जुला. २०, २१ २८, २६, अग. ६, ७, ८ अशुभ।	फिजूल खर्च अधिक हो, रोग भय, विद्या में विघ्न, कारोबार कमजोर, कार्यान्तिर से लाभ। अग. १६, १७, २४, २५, २६, सितं. ३, ४, १२, १३, अशुभ।	स्थानान्तर व कार्यान्तिर का विचार, धन हानि भय, शुभ समाचार, शरीर कष्ट, मासान्त में लाभ हो। वृथा विवाद से बचें। सितं. २१, २२, ३०, अक्तू. १, २, १०, ११ अशुभ।
तुला	सेहत गड़बड़, निजी जनों से अनबन, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक, कार्यान्तिर व देशान्तर का विचार। शिवार्चन से कल्याण। जुला. २२, २३, ३०, ३१, अग. १, ९, १० अशुभ।	उदर विकार, सत्पुरुष से मिलाप, मन अशान्त, स्त्री कष्ट, कारोबार में लाभ होकर हाथ न लगे। अग. १८, १६, २७, २८, सितं. ५, ६, ७, १४, १५ अशुभ।	रोगभय, मन अशान्त, कार्यान्तिर से लाभ, आय से व्यय अधिक, निजी जनों से असन्तोष, चोर-उचक्कों से सावधान। सितं. २३, २४, अक्तू. ३, ४, १२, १३ अशुभ।
वृश्चिक	स्त्री सुख, निजी जनों से लाभ, सेहत कमजोर, बनते काम में बाधा, आमदन से खर्च अधिक। जुला. १५, १६, २४, २५, अग. २, ३, ११, १२, १३ अशुभ।	शरीर में कष्ट, दिल कमजोर, कारोबार प्रायः ठीक, लेकिन फिजूल खर्च ज्यादा हो, मासान्त में खर्च विशेष हो। अग. २०, २१, २६, ३०, सित ८, ९ अशुभ।	वायुजन्य कष्ट, अर्थ लाभ, परिश्रम के अनुरूप सफलता न मिले, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। मास का उत्तरार्ध शुभ। सितं. १६, १७, २५, २६, अक्तू. ५, ६, १४, १५ अशुभ।
धनु	दोस्तों से अनबन, कार्यान्तिर से लाभ, सन्तति कष्ट, शत्रु वृद्धि, मंगल का दान करें, शिव पूजन से श्रेय। जुला. १७, १८, १६, २६, २७, अग. ४, ५, १४, १५ अशुभ।	निजी जनों से सहयोग मिले, स्त्री सुख, हाथ कुछ तंग रहे, सन्तति की तरफ से चिन्ता। पीले चावल पक्षियों को डालें। अग. २२, २३, ३१, सितं. १, २, १०, ११ अशुभ।	धन लाभ, इज्जत बढ़े, अचानक चिन्ता, मास मध्य में रोग-भय, धन हानि भय, मासान्त में कारोबार में वृद्धि। सितं. १८, १६, २०, २६, २७, २६, अक्तू. ७, ८, ९, १६ अशुभ
मकर	स्त्री चिन्ता, अकारण मन खिन्न, हाथ तंग रहे, कारोबार में विशेष लाभ न हो, शिव पूजन करावें। जुला. २०, २१ २८, २६, अग. ६, ७, ८ अशुभ।	वायु विकार, स्त्री व गुप्त चिन्ता से मुक्ति, कारोबार ठीक, जमीन-जायदाद सम्बन्धी विवाद न उलझें। अग. १६, १७, २४, २५, २६, सितं. ३, ४, १२, १३ अशुभ।	अरिष्ट भय, रोग-शोक भय, पाप में मन लगे, धन लाभ राज भय, निजी लोगों से मनमुटाव, शिवार्चन से कल्याण सितं. २१, २२, ३०, अक्तू. १, २, १०, ११ अशुभ।
कुंभ	भाग्य साथ देगा, उत्साह बना रहे, निजी जनों से मेल, शत्रु परास्त, कारोबार ढीला रहे। जुला. २२, २३, ३०, ३१, अग. १, ९, १० अशुभ।	पित्त विकार, पराक्रम बना रहे, सन्तान के लिए खर्च, कारोबार में रुकावट, कार्यान्तिर व स्थानान्तर का विचार। अग. १८, १६, २७, २८, सितं. ५, ६, ७, १४, १५ अशुभ।	हिम्मत बढ़े, धन लाभ, बीमारी में खर्च हो, काम में रुकावट, आर्थिक स्थिति कमजोर, देह पीड़ा। सितं. २३, २४, अक्तू. ३, ४, १२, १३ अशुभ।
मीन	वायु विकार, हाथ बहुत तंग रहेगा, वृथा विवाद से बचें, नयी योजना असफल, लाभ होकर हाथ न लगे। जुला. १५, १६, २४, २५, अग. २, ३, ११, १२, १३ अशुभ।	वृथा व्यय, सन्तति कष्ट, शत्रु प्रबल, चोटभय, सुखद यात्रा, इज्जत बनी रहे। अग. २०, २१, २६, ३०, सितं. ८, ९ अशुभ।	कोष में कमी, वंश वृद्धि, लाभ होकर हाथ न लगे, कष्ट प्रद यात्रा, वृथा व्यय। सितं. १६, १७, २५, २६, अक्तू. ५, ६, १४, १५ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं० २०४२ वि०)

राशि	कार्तिक (१७ अक्तूबर से १५ नवम्बर तक)	मार्गशीर्ष (१६ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक)	पौष (१५ दिसम्बर से १३ जनवरी ८६ तक)
मेष	उदर विकार, रोग भय, अचानक खर्चा आ पड़े, शत्रु वृद्धि, यात्रा में वृथा व्यय, श. रा. का दान करें। अक्तू. १७, २५, २६, नवं. ४, ५, १२, १३ अशुभ।	वायु विकार, स्त्री-सुख, अचानक शारीरिक कष्ट से परेशानी, कारोबार प्रायः ठीक, रा. मं. दान से कल्याण। नव. २१, २२, दिसं. १, २, १०, ११ अशुभ।	स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, धन लाभ होकर हाथ न लगे, संतति कष्ट, मास के उत्तरार्ध में लाभ, ऐशोइशरत में मन लगे। दिसं. १८, १९, २०, २८, २९, ३०, जन. ६, ७ अशुभ।
वृष	शत्रु भय, वंश वृद्धि, शत्रु परास्त, धन लाभ, गृह कलह, बनते काम में बाधा। अक्तू. १८, १९, २७, २८, २९, नवं. ६, ७, १४, १५ अशुभ।	नई योजना, पढ़ाई में मन न लगे, विरोधी पक्ष प्रबल, अचानक यात्रा में हानि भय, गुप्त चिन्ता, श. सू. दान से कल्याण। नवं. २३, २४, २५, दिसं. ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।	सेहत गड़बड़, बन्धु-कष्ट, स्त्री-सुख, अशुभ समाचार, कोष में कमी, धन हानि भय, मन अशान्त। पीले चावल पक्षियों को डालें। दिसं. २१, २२, ३१, जन. १, ८, ९ अशुभ।
मिथुन	धन लाभ, अचानक अच्छा धन लाभ हो, मासान्त में शरीर कष्ट, एवं खर्च विशेष हो। अक्तू. २०, २१, ३०, ३१, नवं. ८, ९ अशुभ।	स्त्री-सुख, निजी जनों से अनबन, सन्तति-सुख, शत्रु हतप्रभ, मासान्त में लाभ अच्छा रहेगा, कारोबार में रुकावट। नवं. १६, १७, १८, २६, २७, २८, दिसं. ६, ७, १४ अशुभ।	भ्रातृ कष्ट, रोग भय, पाप बुद्धि, कारोबार पूर्ववत्, मासांत में लाभ हो, शुभ में व्यय। दिसं. १५, २३, २४, २५, जन. २, ३, १०, ११ अशुभ।
कर्क	नेत्र कष्ट, धन हानि, मान हानि भय, सन्तान की तरफ से चिन्ता, मन प्रबल रहे, कारोबार ठीक। अक्तू. २२, २३, २४, नवं. १, २, ३, १०, ११ अशुभ।	सुख, धन लाभ, सन्तति-कष्ट, कार्यान्तर का विचार, वृथा विवाद से बचें, गु. चं. दान से कल्याण। नवं. १९, २०, २९, ३०, दिसं. ८, ९ अशुभ।	कफ-वायु विकार, धन हानि भय, घरेलू झंझट, भाग्य साथ न दे, आर्थिक लाभ हो, व्यय अधिक रहे। पीले चावल पक्षियों को डालें। दिसं १६, १७, २६, २७, जन. ४, ५, १२, १३ अशुभ।
सिंह	रक्त पित्त विकार, धन लाभ अच्छा हो, शत्रु वृद्धि, रोग भय, पाप में मन लगे, मं. सू. का दान करें। अक्तू. १७, २५, २६, नवं. ४, ५, १२, १३ अशुभ।	आय से खर्च अधिक, दोस्तों से मेल-मिलाप, कष्टप्रद यात्रा, सन्तान सुख, रोग भय, कारोबार ठीक। नवं. २१, २२, दिसं. १, २, १०, ११, अशुभ।	उत्साह बना रहे, शत्रु पक्ष कमजोर, निजी जनों से अनबन, अर्थ लाभ, कार्यान्तर में लाभ,। दिस. १८, १९, २०, २८, २९, ३०, जन. ६, ७ अशुभ।
कन्या	शत्रु हतोत्साह, कोष में कमी, अपमान भय, सुख लाभ, रोग भय। अक्तू. १८, १९, २६, २८, २९, नवं. ६, ७, १४, १५ अशुभ।	भय पीड़ा, धन लाभ होकर हाथ न लगे, निजी जनों से सहायता, बनते कार्य में रुकावट, सन्तति चिन्ता। नवं. २३, २४, २५ दिसं. ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।	धन हानि भय, नेत्र कष्ट, भाईयों से मनमुटाव, जायदाद सम्बन्धी चिन्ता, चोटभय, कारोबार में हानि भय। दिस. २१, २२, ३१, जन. १, ८, ९ अशुभ।
तुला	स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, धन हानि का योग है, गृह कलह, मासांत में लाभ, ऐश्वर्य में मन लगे। अक्तू. २०, २१, ३०, ३१, नवं. ८, ९ अशुभ।	शत्रु परास्त, धन हानि भय, शिर-नेत्र पीड़ा, स्वतन्त्र व्यापार में हानि भय, सत्पुरुष मेल, स्त्री-सुख, व्यय विशेष। नव. १६, १७, १८, २६, २७, २८, दिसं. ६, ७, १४ अशुभ।	उदर-विकार, चोरों से हानि भय, यात्रा में कष्ट, गुप्त चिन्ता, वृथा-व्यय अधिक हो। दिसं. १५, २३, २४, २५, जन. २, ३, १०, ११ अशुभ।
वृश्चिक	मन अशान्त, आर्थिक स्थिति कमजोर, बुरा समाचार, मासान्त में लाभ, शरीर पीड़ा। अक्तू. २२, २३, २४, नवं. १, २, ३, १०, ११ अशुभ।	जगह तबदीली का योग, कष्ट योग है, आर्थिक परेशानी, स्त्री पक्ष अशुभ, शनि का यन्त्र धारण करें, कारोबार में तरक्की हो। नवं. १९, २०, २९, ३०, दिसं. ८, ९ अशुभ।	मानसिक अशान्ति, निजी जन चिन्ता, पैर में चोटभय, गुप्त-शत्रु से सावधान, शनिवार को तैल पक्व वस्तु दान करें। दिस. १६, १७, २६, २७, जन. ४, ५, १२, १३ अशुभ।
धनु	धन लाभ, सन्तान हेतु खर्च विशेष, रोग भय, धर्म-कर्म में मन लगे, यश लाभ, घरेलू झंझट। अक्तू. १७, २५, २६, नवं. ४, ५, १२, १३ अशुभ।	वृथा व्यय, धन लाभ, नई योजना में असफलता, यश-लाभ, नेत्र कष्ट, सूर्य-शनि दान से कल्याण। नव. २१, २२, दिस. १, २, १०, ११ अशुभ।	जगह तबदीली का योग है, धन हानि भय, मनोबल गिरे, निजी जन विरोध, शिवपूजन से कल्याण, सन्तान कष्ट। दिसं. १८, १९, २०, २८, २९, ३०, जन. ६, ७ अशुभ।
मकर	वायु विकार, शत्रु वृद्धि, गुप्त शत्रु भय, मन काम में न लगे, दोस्तों से अनबन, कारोबार ठीक। अक्तू. १८, १९, २७, २८, २९, नवं. ६, ७, १४, १५ अशुभ।	अकस्मात् कष्ट योग, सम्पत्ति विवाद, नए कार्य या अन्य साधन से भी लाभ हो, आय से व्यय अधिक। नवं. २३, २४, २५, दिसं. ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।	मन प्रसन्न, मास में कफ-वायु पीड़ा, बन्धु-कष्ट, नेष्ट समाचार, मासान्त में लाभ अच्छा हो, अकस्मात् खर्चा आ पड़े। दिसं. २१, २२, ३१, जन. १, ८, ९ अशुभ।
कुंभ	निजी लोगों से अनबन, स्त्री के लिए खर्च, अचानक कोई परेशानी पैदा हो, राज्य पक्ष अशुभ, चं. श. दान। अक्तू. २०, २१, ३०, ३१, नवं. ८, ९ अशुभ।	कारोबार में गिरावट, मन में उत्साह रहे, वंश वृद्धि, स्त्री पक्ष शुभ, कोष में कमी, मासांत ठीक, कारोबार यथावत्। नवं. १६, १७, १८, २६, २७, २८, दिसं. ६, ७, १४ अशुभ।	हाथ तंग रहे, स्त्री से सुख, उत्साह वृद्धि, रोगभय, कारोबार कमजोर, गुरु-चन्द्र दान से कल्याण। दिसं. १५, २३, २४, २५, जन. २, ३, १०, ११ अशुभ।
मीन	नेत्र व शिर कष्ट, शत्रु कमजोर, रोग भय, शिव पूजन से कल्याण, यात्रा में कष्ट भय। अक्तू. २२, २३, २४, नवं. १, २, ३, १०, ११ अशुभ।	क्रोध बढ़े, चोरों व ठगों से सावधान, स्त्री-कष्ट, शत्रु वृद्धि, भाग्योदय में बाधा, कारोबार ढीला। नव. १९, २०, २९, ३०, दिसं. ८, ९ अशुभ।	वृथा विवाद से बचें, घरेलू झगड़ों से मन खिन्न, भाग्य साथ न दे, कारोबार में उलझनें, लाभ-हानि बराबर। दिसं १६, १७, २६, २७, जन. ४, ५, १२, १३ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं० २०४२ वि०)

राशि	माघ (१४ जनवरी से ११ फरवरी तक)	फाल्गुन (१२ फरवरी से १३ मार्च तक)	चैत्र (१४ मार्च से १२ अप्रैल तक)
मेष	उदर विकार, स्त्री कष्ट, मन अशान्त, निजी लोगों से वैमनस्य, कमरतोड़ खर्च, मंगल यन्त्र से कल्याण। जन. १५, १६, २४, २५, २६, फर. २, ३, ४, ११ अशुभ।	वृथा कलह में बचें, चोट भय है, गुप्त शत्रु से सावधान, मास के उत्तरार्ध में अच्छा लाभ, शनि-मंगल दान से शुभ। फर. १२, २१, २२, मार्च २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।	शरीर अस्वस्थ, मन उदास, दुर्घटना भय, यात्रा में सावधान, नेत्र कष्ट, कारोबार यथावत्। मार्च २०, २१, २२, २९, ३०, अप्रै. ७, ८ अशुभ।
वृष	अकस्मात् परेशानी, धन हानि, घरेलू झंझट, इज्जत बनी रहे, विचार निकृष्ट, शनिवार को तेल दान करें। जन. १७, १८, १९, २७, २८, फर. ५, ६, अशुभ।	उत्साह वृद्धि, स्त्री पक्ष से चिन्ता-परेशानी, मित्र लाभ, कारोबार में तरक्की की योजना, मासान्त में अचानक खर्च विशेष। फर. १३, १४, १५, २३, २४, मार्च ४, ५, १३ अशुभ।	पैर में चोट भय, स्त्री पक्ष नेष्ट, कारोबार ठीक, आमदन ठीक, मसान्त में दिल परेशान। मार्च १४, २३, २४, ३१, अप्रै. १, ९, १०, ११ अशुभ।
मिथुन	असफल योजना, सन्तति कष्ट, शत्रु परास्त, स्त्री सुख, रोग भय, कष्ट, कारोबार ढीला। जन. २०, २१, २९, ३०, फर. ७, ८ अशुभ।	सन्तान से परेशानी, शत्रु हतप्रभ, स्त्री सुख, भाग्य साथ दे, कारोबार में तरक्की, व्यय अधिक। फर. १६, १७, २५, २६, २७, मार्च ६, ७ अशुभ।	सुखार्थ लाभ, कारोबार पूर्ववत् ठीक, भाग्य साथ देगा, काम बढ़ायें, यात्रा में चोट भय। मार्च १५, १६, १७, २५, २६, अप्रै. २, ३, १२ अशुभ।
कर्क	बन्धुओं से अनबन, सन्तान हेतु व्यय, शत्रु वृद्धि, लाभ हाथ न लगे, यात्रा में कष्ट, चन्द्र दान से शुभ। जन. १४, २२, २३, ३१, फर. १, ९, १० अशुभ।	पशु हानि, विद्या में असफलता, असफल योजना, रोग भय, कार्यान्तर से लाभ, दुर्गापाठ से शुभ। फर. १८, १९, २०, २८, मार्च १, ८, ९ अशुभ।	बन्धु कष्ट, सन्तानार्थ धन व्यय विशेष, पाप में मन लगे, दुर्गा पाठ से कल्याण, आय से व्यय अधिक। मार्च १८, १९, २७, २८, अप्रै. ४, ५, ६ अशुभ।
सिंह	प्रभाव बढ़े, स्थायी सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद, वंश वृद्धि, शत्रु परास्त, द्रव्य लाभ, सूर्य पूजा से कल्याण। जन. १५, १६, २४, २५, २६, फर. २, ३, ४, ११ अशुभ।	उत्साह वृद्धि, जमीन-जायदाद सम्बन्धी उलझन आए, स्त्री कष्ट, घरेलू झंझट, शनिवार-मंगलवार को हानि भय। फर. १२, २१, २२, मार्च २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।	भुजा पर चोट भय, दुर्घटना से सावधान, धन लाभ, रोग भय, राज्य पक्ष से भय, दुर्गा पाठ से कल्याण। मार्च २०, २१, २२, २९, ३०, अप्रै. ७, ८ अशुभ।
कन्या	कोष में कमी, कोई विवाद हल हो, मनोबल प्रबल, विरोधी पक्ष कमजोर, स्वास्थ्य लाभार्थ व्यय। जन. १७, १८, १९, २७, २८, फर. ५, ६ अशुभ।	निजी जनों से विरोध, शत्रु बढ़ें, मासांत में विरोधी कमजोर, स्त्री सुख, चोट भय, कारोबार में अलाभ स्थिति। फर. १३, १४, १५, २३, २४, मार्च ४, ५, १३ अशुभ।	शिर व नेत्र कष्ट, धन लाभ, सुख, उत्साह वृद्धि, यात्रा में वृथा व्यय, वृथा विवाद से दूर रहें। मार्च १४, २३, २४, ३१, अप्रै. १, ९, १०, ११ अशुभ।
तुला	क्रोध बढ़े, वृथा विवाद से बचें, बन्धु से मदद, सन्तति सुख, स्त्री कष्ट, राहु-मंगल दान से कल्याण। जन. २०, २१, २९, ३०, फर. ७, ८।	उदर विकार, कर्जा सिर चढ़े, सन्तति पक्ष से कष्ट, गुप्त शत्रु भय, बुधवार को तैल दान से कल्याण। फर. १६, १७, २५, २६, २७, मार्च ६, ७ अशुभ।	रोग भय, कोष में कमी, खर्च अत्याधिक, मन निरुत्साह, सन्तान से सुख, विरोधी पक्ष कमजोर। मार्च १५, १६, १७, २५, २६, अप्रै. २, ३, १२ अशुभ।
वृश्चिक	सेहत गड़बड़, धन लाभ, नेत्र कष्ट, शत्रु से हानि भय, शनि-चन्द्र दान से शुभ, पांव पर चोट भय, । जन. १४, २२, २३, ३१, फर. १, ९, १० अशुभ।	लड़ाई-झगड़े से हानि भय, पशु लाभ, बन्धु सुख, बनते काम में बाधा, आय से व्यय अधिक। फर. १८, १९, २०, २८, मार्च १, ८, ९ अशुभ।	नीच से अपमान भय, शनि-मंगलवार को झगड़े एवं लम्बे सफर में सावधान, बन्धु सुख, वंश वृद्धि, लाभ अच्छा। मार्च १८, १९, २७, २८, अप्रै. ४, ५, ६ अशुभ।
धनु	बन्धन भय शत्रु से सावधान, स्वतन्त्र कारोबार में हानि भय, निजी जन विरोध करें। जन. १५, १६, २४, २५, २६, फर० २, ३, ४, ११ अशुभ।	लाभ हो, शत्रु से हानि भय, कफ-वायु विकार, पैर में चोट भय, अशुभ किंवा वृथा कार्यों पर व्यय विशेष। फर. १२, २१, २२, मार्च २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।	रोग भय, धन लाभ ठीक, मान हानि भय, कार्य में बाधा, कारोबार में मन न लगे, मासान्त में विशेष खर्च। मार्च २०, २१, २२, २९, ३०, अप्रै. ७, ८ अशुभ।
मकर	स्थानांतर व कार्यान्तर का विचार, वृथा व्यय से हाथ तंग, निजी जनों से विरोध, कारोबार में हानि, सूर्य-शनि दान करें। जन १७, १८, १९, २७, २८, फर. ५, ६ अशुभ।	अच्छा धन लाभ होकर कुछ हानि भय, शत्रु सिर उठावें, अशुभ समाचार, कारोबार कमजोर, कर्जा चढ़े। फर. १३, १४, १५, २२, २३, २४, मार्च ४, ५, १३ अशुभ।	बीमारी पर खर्च हो, निजी जनों से मदद, शत्रु बढ़ें, नई योजना वा विद्या में सफलता, फिजूल खर्ची अधिक, आय से व्यय अधिक मार्च १४, २३, २४, ३१, अप्रै. १, ९, १०, ११ अशुभ।
कुंभ	पुष्टि, लाभ, भाई से अनबन, भाग्य साथ न दे, कारोबार ढीला, शिवार्चन से कल्याण। जन. २०, २१, २९, ३०, फर. ७, ८ अशुभ।	स्थान हानि एवं मन चिन्तित, मनोबल फिर भी बना रहे, व्यवसाय में सांझेदारी किंवा अन्य उलझनें, कार्यान्तर का विचार। फर. १६, १७, २५, २६, २७, मार्च ६, ७ अशुभ।	अकस्मात् कष्ट योग, स्वतन्त्र कार्य में लाभ होकर हानि हो, भ्रातृ सुख, व्यवसाय में विवाद से हानि, यात्रा में चोट कष्ट। मार्च १५, १६, १७, २५, २६, अप्रै. २, ३, १२ अशुभ।
मीन	आर्थिक परेशानी रहे, पाप वृद्धि, कर्जा उठाना पड़े, मासान्त शुभ, पीले चावल डालें। जन. १४, २२, ३१, फर. १, ९, १० अशुभ।	आर्थिक स्थिति कुछ ठीक, वृथा व्यय से बचें, बनते काम में बाधा, झगड़ा-कलह से परेशानी, पीले चावल डालें। फर. १८, १९, २०, २८, मार्च १, ८, ९ अशुभ।	विरोधी पक्ष कमजोर, धन लाभ होकर हाथ न लगे, मास का उत्तरार्ध कष्टप्रद, कारोबार ठप्प, भाग्य साथ न दें। मार्च १८, १९, २७, २८, अप्रै. ४, ५, ६ अशुभ।

नोट—यह राशि फलादेश सामूहिकरूप में स्थूमान से मिलता है। सूक्ष्म मासिक फलादेश के लिए वर्षफल बनवावें।

अथ वर्षराजादि फल-विचार (सं० २०४२ वि०)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९०८६, सृष्टि संवत् १९५५८८५०८६, श्री विक्रमी संवत् २०४२, शक संवत् १९०७, श्रीकृष्ण जन्म संवत् ५२२१, कलि संवत् ५०८६, श्रीमहावीर जैन निर्वाण संवत् २५१०-२५११, श्रीबुद्ध संवत् २६०८-२६०९, हिजरी सन् १४०६-१४०७, फसली सन् १३९२-१३९३, ईस्वी सन् १९८५-१९८६।

वर्षारम्भ में गुरुमान से प्रभवादि संवत्सरों में "बहुधान्य" नामक संवत्सर है। फल इस प्रकार है—

"बहुधा जायते वृष्टिः बहुधान्याख्य वत्सरे।
विविधैः धान्य निचयैः सम्पूर्णा चाखिला धरा॥"

अर्थात्—वर्षा अधिक हो, अनाज पर्याप्त मात्रा में सुलभ हों।

किञ्च—बहुधान्ये केतुः स्वामी, पुरुषा निर्वीर्याः, पश्चिमायां सुभिक्षम्, परम् सौख्यं सर्वदेशमध्ये, दक्षिणस्यां विग्रहः, परं महाभयं, उत्तरापथे सर्वदेशेषु पीड़ा, पूर्वस्यां सुभिक्षं, धन संग्रहः, चैत्र वैशाखयोरन्ने किञ्चिन्महर्घता, ज्येष्ठे चतुर्गुणो माघः, श्रावणाषाढयोर्मेघः, अन्नं सर्वत्र महर्घम्, षड्गुणो लाभः, भाद्रपदेऽत्यन्त मेघः, सर्वधान्य समर्घता, आश्विने मेघः, कनक धाराभिः, कार्तिकादि मासचतुष्टये समता।

इस वर्ष का राजा (ग्रह परिषद् के प्रधान) शुक्र एवं मन्त्री शनि है। इसवर्ष सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) मंगल, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) सूर्य, मेघेश (वर्षा पानी के स्वामी) शुक्र, रसेश (गुड़, खांड, रस कस आदि के स्वामी) गुरु, नीरसेश (सर्वविध धातु तथा व्यापार आदि के स्वामी) मंगल, फलेश (फल-फूल आदि के स्वामी) शुक्र, धनेश (खजाना के स्वामी) चन्द्र, दुर्गेश (सुरक्षा प्रतिरक्षा आदि के स्वामी) शुक्र हैं।

प्रत्येक पदाधिकारी का व्यक्तिगत फल निम्नांकित है—

राजा शुक्र का फल—सस्य निष्पत्ति (जौ, गेहूं आदि) पर्याप्त मात्रा में हो, नदियों में जल तीव्र गति एवं अधिक मात्रा में हो। फल-फूल अधिक एवं शासकों में सौख्यभाव बना रहे।

मन्त्री शनि का फल—शासक कठोरता से व्यवहार करें, प्रजा में अशांति एवं असन्तोष बढ़े, कुछ प्रान्तों में वातावरण क्षुब्ध, अशान्त रहे। जनता का आर्थिक स्तर गिरेगा।

सस्येश मंगल का फल—पशुओं में रोग से चिन्ता बढ़े, वर्षा कहीं बहुत कम, कहीं आवश्यकता से अधिक हो, जौ, गेहूं, चावल आदि की फसल नष्ट हो।

धान्येश सूर्य का फल—मूंग, मोठ, बाजरा आदि की फसल को भारी हानि होगी, शासकों में परस्पर मतभेद किंवा कहीं विग्रह की ज्वाला भड़के, धान्य मंहगे, प्रजा में रोग व्यापें।

मेघेश शुक्र का फल—वर्षा काफी हो, प्रजा में धन धान्य समृद्धि एवं शासक जनता के कल्याण में लगे रहें।

रसेश गुरु का फल—प्रजा में आनन्द मंगल रहे, धन धान्य पर्याप्त हों, शासकों का वैभव बढ़े।

नीरसेश मंगल का फल—माणिक्य, मोती, मूंगा आदि रत्न, वस्त्र तथा तांबा, सोना आदि धातु मंहगे हों।

फलेश शुक्र का फल—पृथ्वी पर हरितक्रांति आए, फल-फूल ज्यादा हों, प्रजा कर्त्तव्य परायण रहे।

धनेश चन्द्र का फल—गुड़, खांड आदि रस पदार्थों के व्यापार में विशेष लाभ हो, धान, घी, तेल आदि सुलभ रहें।

दुर्गेश शुक्र का फल—लोगों में एकता की भावना के प्रयत्न हों, सुख समृद्धि रहे।

सूचना—यद्यपि वर्ष के इन दस अधिकारियों का साधारण फल तो सर्वत्र ही होता है, किन्तु विशेषकर राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में, मन्त्री का फल आन्ध्र, बाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में सस्येश पौण्ड्र-विदर्भ में, धान्येश गुजरात, नर्मदा के निकटवर्ती प्रदेशों एवं मध्य प्रदेश में मेघेश का मगध एवं बंगाल में, रसेश का कोंकण व गोआ में, नीरसेश का मालवा व बिहार में, धनेश का राजस्थान एवं मारवाड़ में, फलेश-दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

नवमेघों में 'आवर्त' नामक मेघ का फल—"आवर्ते मन्दतोयं च", कुछ क्षेत्रों में वर्षा कम हो, जौ, चना, चावल, गेहूं, घी, कपास की फसल को हानि हो।

द्वादशनागों में 'सुबुद्ध' नामक नाग का फल—शासकों में विवेक रहे, वर्षा मध्यम, शुभ फलप्रद है।

रोहिणी का वास तट पर है—"तटे वृष्टिः सुशोभना"; अधिक जल चाहने वाले अनाज, चावल आदि की फसल उत्तम रहेगी। अल्प वर्षा क्षेत्र राजस्थान के बागड़ आदि क्षेत्रों में भी वर्षा से कृषक लोगों को लाभ होगा।

संवत्सर का वास धोबी के घर है—"रजके वृष्टिरुत्तमा" वर्षा उत्तम होगी।

संवत्सर का वाहन दर्दुर (मेंढक) है—वर्षा अधिक होगी, कुछ प्रान्तों में वर्षा से हानि भी होगी।

शनि की दृष्टि—वर्षारम्भ से अन्त तक शनि की दृष्टि पश्चिम में रहेगी। फल—यह संवत् पश्चिमी राष्ट्रों के लिए विशेष भयावह है; पश्चिमी राष्ट्रों में प्राकृतिक-प्रकोप, रोगोपद्रव एवं अकालादि से भी जन-धन हानि होगी। भारत को पश्चिमी-सीमा प्रान्तों पर शत्रु देश की गतिविधि से भय है, सावधान!

इस वर्ष 'श्रावण' अधिमास है, फल—"दुर्भिक्षं श्रावणे युग्मे पृथ्वीनाशः प्रजाक्षयः।"—कहीं दुर्भिक्ष, कहीं रोगोपद्रव से जन-धन हानि हो। इसवर्ष आश्विन एवं फाल्गुन में सोमवती अमावस दो हैं। आषाढ़ एवं कार्तिक में भौमवती अमावस भी दो ही हैं। वैशाख कृ., भाद्रपद कृ. एवं माघ कृ. में शनैश्चरी अमावस्याएं तीन हैं। आषाढ़ शु., प्र० श्रावण कृ., कार्तिक कृ., फाल्गुन शु. एवं चैत्र कृ. में बुधाष्टमियां पांच हैं।

वर्षा आदि के विश्वाबाल—वर्षा विश्वा ९, धान्य ७, तृण ५, शीत ९, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा १३, तृषा ७, निद्रा ३, आलस्य ५, उद्यम ३, शान्ति ७, क्रोध ९, दम्भ १५, लोभ १३, मैथुन १५, रसनिष्पत्ति ११, फलनिष्पत्ति ३, उत्साह ३, उग्रता ३, पाप १३, पुण्य १३, व्याधि ७, व्याधिनाश १७, आचार १३, अनाचार १५, मृत्यु ९, जन्म १५, देशोपद्रव १, देशस्वास्थ्य ३, चौरभय ७,

चौरभास १५, अग्निभय ११, अग्निशांति १३, उद्भिज्ज ५, जरायुज ३, अण्डज १५, स्वेदज १२, तोता ११, मूषक १७, ताम्बा ६, स्वचक्र १७, परचक्र १५, वृष्टि १३, वृष्टिनाश १७, संवद् विश्वा ८।

वर्ष के चार स्तम्भ—

१. जल स्तम्भ (चैत्र शु. १ को रेवती नक्षत्र) २४ प्रतिशत है।
२. वायु स्तम्भ (ज्येष्ठ शु. १ को मृग. नक्षत्र) का अभाव है।
३. तृण स्तम्भ (वैशाख शु. १ को भरणी नक्षत्र) ४५ प्रतिशत है।
४. अन्न स्तम्भ (आषाढ़ शु. को पुन. नक्षत्र) का अभाव है।

फल—वर्षा कम, चारा पर्याप्त हो, अनाज की फसल को हानि पहुंचे। वर्षस्तम्भ विचार से यह वर्ष शुभ नहीं।

आर्वमान विचार (वर्ष रक्षा के लिए ४ दुर्ग)—

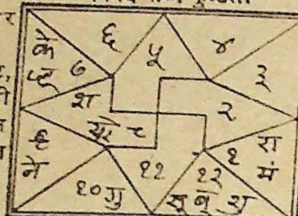
१. प्रथम आर्व (अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) ४० प्रतिशत है।
२. द्वितीय आर्व (सवत् २०४१ में पौष अमा. को मूल नक्षत्र) ५५ प्रतिशत है।
३. तृतीय आर्व (श्रावण शु. १५ को श्रवण नक्षत्र) का अभाव है।
४. चतुर्थ आर्व (कार्तिक शु. १५ को कृत्तिका नक्षत्र) ६१ प्रतिशत है।

फल—आर्वमान विचार से यह वर्ष अच्छा रहेगा। श्रावण के लगभग किसी भाग में अकाल की स्थिति बनेगी।

"अखं तीज रोहिणी नहीं होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणों हीन विचारो, कार्तिक पुण्या कृत्तिका टारो।
महीमांह खलबली प्रकाशे, कहे भड्डली साख बिनाशे।"

नववर्ष प्रवेश—वि. सं. २०४१ में चैत्र कृष्ण ३० गुरुवार (२१ मार्च १९८५ ई०) को २७ घटी ३० पल पर सिंह लग्न में नववर्ष प्रवेश होगा।

नववर्ष लग्न कुण्डली



फल—दक्षिण में बाढ़ व अन्य रोगोपद्रव से कष्ट, अनाज महंगे। पश्चिम में धातु एवं अन्य वस्तुओं में तेजी हो, उत्तर में महावृष्टि भय, पूर्व में खड़ी फसल को हानि हो। मध्य प्रदेश में पाँच मास तक राजनैतिक अस्थिरता रहे। वर्ष का पूर्वार्ध ऐतिहासिक घटना वाला होगा।

वर्षेश (जगत्) लग्न—सं. २०४२ वि. में वैशाख कृष्ण ६ शनिवार (१३ अप्रैल १९८५ ई०) को ३५।५८ इष्ट पर तुला लग्न में सूर्य मेष राशि में प्रवेश करेगा।

वर्षेश (जगत्) लग्न कुण्डली

फल—विश्व की आर्थिक स्थिति बिगड़े, खड़ी फसल को हानि पहुंचेगी। पश्चिमी राष्ट्रों में अशान्ति का वातावरण रहेगा। दुर्भिक्ष से प्रजा में कहीं परेशानी रहे।

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार—जन्म-कुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्म-लग्न से, चन्द्र बलवान् हो तो जन्मराशि से, जगल्लग्न जिस स्थान में आए, वह भाव शुभ या स्वामी ग्रहों से युक्त दृष्ट और बलवान् हो तो वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापी ग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि और अपने वर्षप्रवेश लग्न से वर्षेश लग्न (जगल्लग्न) आठवें-बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होता। इसी प्रकार देश और ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए देश, ग्राम या नगर की जो राशि हो, उससे जगल्लग्न आठवें या बारहवें हो तो उस देश, ग्राम व नगर के लिए वह वर्ष हानिप्रद समझना चाहिए।

जन्म लग्न से जगल्लग्न का फल—१. देहसुख, २. धनलाभ, ३. कुटुम्बवृद्धि, ४. मित्र सौख्य, ५. पुत्र सौख्य, ६. शत्रुजय, ७. स्त्री सुख, ८. रोगभय, ९. धर्मलाभ, १०. धनलाभ, ११. लाभसुख, १२. व्यय दुःख।

आर्द्रा प्रवेश कुंडली

आर्द्रा प्रवेश—आषाढ़ शु. ३ शुक्रवार २१ जून, १९८५ ई. को ४७।७ इष्ट पर मीन लग्न में सूर्य आर्द्रा में प्रविष्ट होगा।

फल—टिड्डी, चूहा, अतिवृष्टि किंवा अनावृष्टि से फसल को हानि हो, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने।

ग्रीष्मसस्य जातक—कुण्डली के अनुसार जौ, गेहूं, चना आदि की फसल को हानि पहुंचेगी, अनाजों में तेजी का रुख रहेगा।

शरत्सस्य जातक—कुंडली के अनुसार मूंग, मोठ, बाजरा आदि की फसल को अवर्षणादि से हानि होगी।

सुर्रा फल—गत सं. २०४१ में आश्विन शु. ३ गुरुवार (२७ सितंबर १९८४ ई.) से हिजरी सन् १४०५ चल रहा है। फल—फसल अच्छी होगी, भयरोग, उपद्रवों में कमी आए। स्त्रियों में कुच सम्बन्धी रोग से कष्ट हो। बच्चों में रोग विशेष से परेशानी हो।

१७ सितम्बर १९८५ (भाद्र शु. ३ मंगलवार) को हिजरी सन् १४०६ शुरू होगा।

फल—मंगलवार को हिजरी सन् का आरम्भ होने से कहीं अकाल पड़े, समय पर वर्षा की कमी अनुभव हो। कहीं युद्ध भय व्यापे। गुड़, शक्कर, कपास, खांड, तिल तेल, गेहूं मंहगे हों।

लाभ-व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११

लाभ-व्यय देखने की रीति—अपनी राशि के लाभ-व्यय अंकों को जोड़ कर उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ, ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

'इतीदं वत्सर-फलं वत्सरादि-तिथौ शुभम्। यः शृणोति नरो नवत्या स सुखी वत्सरं नयेत्॥

सन्दिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था (सं० २०४२ वि०)

लेखक :— प्रियव्रत शर्मा

१. श्रीराम नवमी :—मध्याह्न व्यापिनी चैत्र शुक्ल नवमी के दिन श्रीराम नवमी का व्रत किया जाता है—यह सामान्य नियम है। दोनों दिन यदि नवमी मध्याह्न व्यापिनी हो तो दूसरे दिन यह व्रत किया जाता है, क्योंकि अष्टमी विद्धा नवमी इस व्रत के लिए वर्जित है। यदि नवमी दूसरे दिन सूर्योदय के बाद कम से कम तीन मुहूर्त्त तक हो तो वैष्णव सम्प्रदाय वाले लोग उसी दिन रामनवमी व्रत करते हैं। इस स्थिति में वे पहले दिन मध्याह्न व्यापिनी नवमी को भी छोड़ देते हैं, 'धर्मसिंधु' कार का वचन है—"वैष्णवैः त्रिमुहूर्त्तं युता परैवोपोष्या।"

इस उपरोक्त नियम के अनुसार इस वर्ष वैष्णव लोग ३१ मार्च (१९८५ ई०) को ही रामनवमी व्रत करेंगे, क्योंकि इस दिन नवमी तीन मुहूर्त्त से भी अधिक है। स्मार्त लोग तो ३० मार्च को ही यह व्रत करेंगे, क्योंकि इस दिन नवमी मध्याह्न व्यापिनी है। इस दिन मध्याह्न के समय पुनर्वसु नक्षत्र भी है। मध्याह्न के समय नवमी और पुनर्वसु का योग इस व्रत के लिए विशेष माहात्म्य रखता है।

२. श्री परशुराम जयन्ती :—रात्रि के प्रथम प्रहर में व्याप्त होने वाली वैशाख शुक्ल तृतीया में ही श्री परशुराम जयन्ती मनाई जाती है क्योंकि रात्रि के पहले प्रहर में वैशाख शुक्ल तृतीया के समय ही श्री परशुराम का आविर्भाव हुआ था—यह 'भविष्य पुराण' आदि में स्पष्ट लिखा है (इससे सम्बद्ध उद्धरण आदि विगत वर्ष के मार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग के पृष्ठ ५६ पर देखें)। इस वर्ष २२ अप्रैल को ही वैशाख शुक्ल तृतीया रात्रि के प्रथम प्रहर में विद्यमान है, अतः इसी दिन श्री परशुराम जयन्ती होगी।

ध्यान रहे—कुछ भ्रान्त लोग अक्षय तृतीया वाले दिन ही श्री परशुराम जयन्ती मानते हैं, यह गलत है, क्योंकि श्री परशुराम जयन्ती और अक्षय तृतीया दोनों सर्वथा पृथक्-पृथक् पर्व हैं।

३. रम्भा तृतीया :—ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया के दिन रम्भा व्रत किया जाता है। इस व्रत में चतुर्थी विद्धा तृतीया वर्जित है। इस वर्ष २२ मई '८५ को ही यह व्रत होगा। यद्यपि २३ मई को तृतीया तीन मुहूर्त्त से कम होने से चतुर्थी से विद्ध नहीं मानी जा सकती, फिर भी वह (तृतीया) तीन मुहूर्त्त से अल्प होने के कारण इस दिन साकल्यापादिता तिथि नहीं है। अतः २२ मई को ही (जहां वह सूर्यास्त से पूर्व तीन मुहूर्त्त से कहीं अधिक व्याप्त होने से साकल्यापादिता है) रम्भा व्रत मनाना शास्त्र सम्मत है।

४. बहुला चतुर्थी :—चन्द्रोदय व्यापिनी भाद्र कृष्ण चतुर्थी के दिन बहुला चतुर्थी व्रत किया जाता है। यदि दो दिन चतुर्थी चन्द्रोदय व्यापिनी हो तो पहले दिन ही यह व्रत किया जाता है, क्योंकि गणेश चतुर्थी हमेशा तृतीया विद्धा लेनी चाहिए—ऐसा शास्त्रों का निर्देश है—"चतुर्थी गणनाथस्य मातृ विद्धा प्रशस्यते।" धर्मसिंधु का भी वाक्य है—"उभय दिने चन्द्रोदय व्याप्तित्वे तृतीयायुतैव ग्राह्या।"

ध्यान रहे—बहुला चतुर्थी गणेश चतुर्थी ही है। इस वर्ष २ और ३ सितम्बर '८५ को दोनों दिन चतुर्थी चन्द्रोदय के समय व्याप्त है अतः उपरोक्त नियमानुसार बहुला चतुर्थी २ सितम्बर को ही मनाई जाएगी।

५. ऋषि पंचमी :—मध्याह्न व्यापिनी भाद्र शुक्ल पंचमी के दिन ऋषि पंचमी मनाई जाती है ("भाद्र शु. पञ्चमी ऋषि पंचमी। सा मध्याह्न व्यापिनी ग्राह्या"—धर्मसिंधु)। इस वर्ष पंचमी १८ सितम्बर '८५ को ही मध्याह्न व्यापिनी है अतः इसी दिन यह पर्व होगा।

६. साम उपाकर्म :—सिंहस्थ सूर्य के काल में हस्त नक्षत्र में सामवेदी उपाकर्म करते हैं। इस वर्ष १६ सितम्बर '८५ को सिंहस्थ सूर्य में हस्त नक्षत्र आता है, लेकिन इस दिन सूर्य सक्रान्ति होने से उपाकर्म नहीं हो सकता। धर्मसिन्धु आदि के अनुसार इस स्थिति में सामवेदी लोग उपाकर्म द्वि० श्रावण पूर्णिमा (३० अगस्त) को करेंगे।

७. दूर्वाष्टमी व्रत :—रोहिण (नवम) मुहूर्त्त व्यापिनी भाद्र शुक्ल अष्टमी के दिन स्त्रियां दूर्वा व्रत करती हैं। सिंह राशि में सूर्य तथा अगस्त्य तारा के अस्त काल में यह व्रत किया जाता है। अगस्त्य के उदय काल में तो इस व्रत का सर्वथा निषेध है। ("सिंहार्के एवं कर्त्तव्या न कन्यार्के कदाचन। ......नागस्त्य उदिते जातु पूजयेदमृतोद्भवाम् ॥") यदि भाद्र शुक्ल अष्टमी को अगस्त्य उदित हो तो धर्मशास्त्रों का आदेश है कि तब यह व्रत भाद्र कृष्ण अष्टमी के दिन किया जाये। यदि भाद्र कृष्ण अष्टमी के दिन भी अगस्त्य उदय हो तब इस व्रत को श्रावण शुक्ल अष्टमी के दिन करने के लिए शास्त्राज्ञा है। इस वर्ष भाद्र शुक्ल और कृष्ण अष्टमी को अगस्त्य उदय है अतः इस पर्व को द्वि. श्रावण शुक्ल अष्टमी शुक्रवार के दिन (२३ अगस्त '८५ को) मनाया जायेगा।

८. श्री महालक्ष्मी व्रतारम्भ :—भाद्र शुक्ल अष्टमी के दिन श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ करके आश्विन कृष्ण अष्टमी के दिन कन्यार्क में इसका विसर्जन किया जाता है। सिंहार्क में इस व्रत को प्रारम्भ करना चाहिए, कन्यार्क में इसे प्रारम्भ करना निषिद्ध है। ("श्रियोऽर्चनं भाद्रपदे सिताष्टमी प्रारभ्य कन्यागते च सूर्ये"—पुराण समुच्चय।) लेकिन यह नियम इस व्रत का प्रथम प्रारम्भ (जीवन में पहली बार प्रारम्भ) करने वालों के लिए है—ऐसा निबन्धकारों का मत है। उनका कहना है कि अनेक बार भाद्र शुक्ल अष्टमी से पहले ही सूर्य कन्या में आ जाता है, ऐसी स्थिति में महालक्ष्मी व्रत का त्याग नहीं किया जा सकता ("........अन्यथा (कन्यार्कादौ महालक्ष्मी व्रत-आरम्भस्य सर्वथा निषेधे) षोडश. वर्ष-साध्य व्रतस्य मध्ये दोष-सम्भवे अकरणं स्यात्"—पुरुषार्थ चिन्तामणिः)। इसी सिद्धान्त के अनुसार इस वर्ष भाद्र शुक्ल अष्टमी के दिन (२१ सितम्बर '८५ को) कन्यार्क होने पर भी 'महालक्ष्मी व्रतारम्भ' लिखा गया है।

ध्यान रहे—इस वर्ष २१ सितम्बर '८५ के दिन महालक्ष्मी व्रत का प्रारम्भ वे लोग नहीं करेंगे जो इसे जीवन में पहली बार करने जा रहे हैं।

९. अमा-चतुर्दशी-सर्वपितृ श्राद्ध :—आश्विन कृष्ण पक्ष में किये जाने वाले लगभग सभी श्राद्ध 'पार्वण श्राद्ध' कहलाते हैं। पार्वण श्राद्ध अपराह्न व्यापिनी तिथि में किया जाता है (पार्वणं त्वपराह्णके)। इस वर्ष आश्विन कृष्ण चतुर्दशी (रविवार) के दिन (१३ अक्टूबर) को ही चतुर्दशी और अमावस—दोनों अपराह्न व्यापिनी हैं, अतः "शस्त्र, विष आदि से मरने वालों" का श्राद्ध, जो चतुर्दशी को किया जाता है एवं अमा. का श्राद्ध—दोनों १३ अक्टूबर को ही किए जायेंगे। पूर्णिमा का श्राद्ध भी इसी दिन होगा। क्योंकि इस (पूर्णिमा) तिथि का श्राद्ध भी अमावस्या श्राद्ध के साथ ही किया जाता है। किञ्च सर्वपितृ श्राद्ध भी अमावस्या के श्राद्ध के साथ ही किया जाता है अतः यह भी इसी दिन होगा। १३ अक्टूबर को अपराह्न काल दिन के १ बजकर १६ मिनट से ३ बज कर ३६ मिनट तक है।

१०. मातामह (नाना) का श्राद्ध :—आश्विन शुक्ल प्रतिपदा जिस दिन अपराह्न में व्याप्त हो उस दिन दौहित्र (दोहते) द्वारा नाना का श्राद्ध किया जाता है। इस वर्ष १४ अक्टूबर '८५ के दिन ही आश्विन शुक्ल प्रतिपदा अपराह्न व्यापिनी है, अतः यह श्राद्ध इसी दिन करना होगा।

११. शारद नवरात्र प्रारम्भ :— सूर्योदय के बाद जिस दिन त्रिमुहूर्त व्यापिनी प्रतिपदा हो उस दिन नवरात्र प्रारम्भ-कलश स्थापन किया जाता है। प्रतिपदा त्रिमुहूर्त-व्यापिनी न हो तो कुछ आचार्यों का मत है कि दो या एक मुहूर्त व्यापिनी प्रतिपदा में भी नवरात्रारम्भ कर लेना चाहिए। अमावस्या के दिन नवरात्रारम्भ का निषेध है। यदि प्रतिपदा एक मुहूर्त से कम हो या वह सूर्योदय से पहले ही समाप्त हो गई हो (अर्थात् प्रतिपदा का क्षय हो गया हो) तो सभी शास्त्र अमावस्या के दिन ही नवरात्रारम्भ करने का आदेश देते हैं। ("मुहूर्त न्यूनव्याप्तौ सूर्योदयाऽस्पर्शे वा दर्शयुतापि ग्राह्या"—धर्मसिन्धु)।

इस वर्ष आश्विन शुक्ल प्रतिपदा का क्षय है अतः नवरात्रारम्भ १४ अक्टू. '८५ को (आश्विन कृष्ण अमावस्या के दिन) ही होगा।

ध्यान रहे—यद्यपि चित्रा नक्षत्र में घटस्थापन सामान्य रूप से निषिद्ध है, लेकिन शास्त्रकारों का निर्णय है कि यदि चित्रा का पूर्वार्ध पूर्वाह्न से पहले ही समाप्त हो जाए तो उसके (चित्रा पूर्वार्ध के) बाद ही घटस्थापन करना चाहिए, अन्यथा चित्रा के पूर्वार्ध में भी पूर्वाह्न में घटस्थापन करने में कोई दोष नहीं है। इस वर्ष चित्रा का पूर्वार्ध १४ अक्टूबर को पूर्वाह्न के बाद ही समाप्त होता है अतः इस दिन पूर्वाह्न में घटस्थापन करना शास्त्र विहित है।

१२. सरस्वती आवाहन :— आश्विन शुक्ल में मूल नक्षत्र के प्रथम पाद में सायाह्न के समय सरस्वती का आवाहन किया जाता है ("तत्रमूलस्य प्रथमे पादे सूर्यास्तात् प्राक् त्रिमुहूर्त व्यापिनि सरस्वत्यावाहनम्"—धर्मसिन्धु)। यदि मूल नक्षत्र सूर्यास्त से पहले तीन मुहूर्त से कम हो या उसका प्रथम पाद रात्रि के समय पड़े तो सरस्वती आवाहन दूसरे ही दिन करने की शास्त्राज्ञा है ("त्रिमुहूर्त न्यूनत्वे रात्रौ वा प्रथम पाद सत्वे तस्य विशेष वचनं बिना ग्राह्यत्वाभावात् द्वितीयादि पादे पर दिन एवान्वाहनम्"—धर्मसिन्धु)।

इस वर्ष १८ अक्टूबर '८५ को मूल नक्षत्र सूर्यास्त से पूर्व तीन मुहूर्त तक व्याप्त है, अतः सरस्वती आवाहन इसी दिन होगा।

१३. विजयादशमी (दशहरा) :— विजयादशमी के लिए अपराह्न काल मुख्य काल है, प्रदोष काल गौण। यदि आश्विन शुक्ल दशमी दोनों दिन अपराह्न व्यापिनी हो तो जिस दिन अपराह्न में श्रवण नक्षत्र हो उसी दिन दशहरा (अपराजिता) पूजन करना चाहिए—ऐसी शास्त्रों की आज्ञा है ("दिनद्वयेऽपराह्न व्याप्त्यव्याप्त्योः एकतरदिने श्रवण योगे यद्दिने श्रवण योगः सैव ग्राह्या"—धर्मसिन्धु)। यहां दोनों दिन श्रवण योग न हो तो पहले दिन ही अपराजिता पूजन करने का विधान है क्योंकि उस दिन दशमी प्रदोष काल (दशहरा के लिए गौण काल) को भी व्याप्त कर रही होती है। इस वर्ष २२ और २३ अक्टूबर दोनों दिन दशमी अपराह्न में व्याप्त है, लेकिन श्रवण का योग २२ अक्टूबर को ही है, किन्च इसी दिन दशमी प्रदोष में भी व्याप्त है, अतः दशहरा—अपराजिता पूजन इसी दिन होगा। यह भी ध्यान देने योग्य है कि अपराजिता पुजन के लिए नवमी विद्धा ही दशमी ग्राह्य है ("या पूर्वा नवमी-युक्ता तस्यां पूज्याऽपराजिता"—स्कन्द पुराण)। इसके अनुसार भी इस वर्ष २२ अक्टूबर को ही विजया दशमी मनाना युक्ति-युक्त है।

१४. होलिका दहन :— इस वर्ष २५ मार्च '८६ के दिन ही फाल्गुन पूर्णिमा प्रदोष व्यापिनी है अतः इसी दिन होलिका दहन होगा। क्योंकि इस दिन प्रदोष के समय भद्रा विद्यमान है और वह अर्ध-रात्रि से पहले ही रात्रि के ६ बजकर ४० मिनट पर समाप्त हो जाती है अतः होलिका रात्रि के ६ बज कर ४० मिनट के बाद ही जलाई जाएगी। (यहां प्रमाणार्थ शास्त्र वाक्य सं० २०४१ के मार्तण्ड पञ्चांग के पृ० ६० पर देखें।)

(पृ० १२ का)

शुक्र भ्रमण का फल

जन्मकुण्डली में पापग्रह जिस-जिस राशि पर बैठे हों और इनकी जिस-जिस स्थान पर पूर्ण दृष्टि हो, उस-उस स्थान पर राशिचार से शुक्र का भ्रमण हो और गोचर भ्रमण से पापग्रह की दृष्टि भी हो तब स्त्री विषयक चिन्ता, स्त्रीकष्ट तथा धातु, मूत्र रोगादि कष्ट की सभावना बलवती रहती है। यदि उपरोक्त स्थान पर शुक्र का गोचर में भ्रमण हो किन्तु राशिचार भ्रमण से मित्रग्रह बुध और शुभग्रह की दृष्टि भी हो तो मिश्रफल होता है। यदि शुक्र पर गुरु की त्रिकोण दृष्टि हो तो शुक्र शुभ फलप्रद होगा।

शुक्र और गुरु में से एक लग्नेश हो और दूसरा ३।६।८।१२ स्थान का स्वामी हो इनकी परस्पर सम-सप्तक दृष्टि हो तो अशुभफल होता है। जन्म समय के शुभग्रह की स्थिति या दृष्टि जिस स्थान पर हो उस स्थान पर शुक्र का भ्रमण सदैव सुख लाभ तथा स्त्री से सुख देता है। पापग्रहों के भ्रमण से स्त्री कष्ट, मान-हानि, लांछन आदि से मानसिक क्लेश होता है।

जन्मकाल के अशुभ योग पर गोचर के अशुभ योग का दृष्टि वा स्थान सम्बन्ध जब हो तब उस भाव से सम्बन्धित अशुभफल होता है। ऐसे ही जन्मकाल के शुभयोग पर गोचर के शुभयोग का दृष्टि वा स्थान सम्बन्ध हो तब उस भाव से सम्बन्धित शुभफल की वृद्धि एवं सुखोपलब्धि होती है। अर्थात्—जन्मकुण्डली में कारक ग्रह से जो शुभाशुभ योग बना हो तो उसी योगायोग से सम्बन्धित स्थान पर गोचर भ्रमण के शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि अथवा उसी स्थान पर शुभाशुभ ग्रहों के भ्रमण से शुभाशुभ फल का विचार करें।

जन्म समय में जन्म कुण्डली के ग्रह जिस-जिस राशि-अंश में हैं उनसे गोचर भ्रमण के ग्रह का परस्पर योग उतने ही अंशों पर बने तभी उन योगों के शुभाशुभ परिणाम का फल ग्रहों के धर्म के अनुसार कार्य की लाभ हानि समझना चाहिए। कदाचित् पापग्रह भी बली हों या केन्द्र-कोण के स्वामी हों तो गोचर राशिचार के समय भी शुभ स्थान में हो तो द्रव्य लाभादि शुभफल होता है।

शनि

गोचरस्थ शनि जब जन्मकालिक या चन्द्र राशिचार के पाप शत्रु ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तब महान् क्लेश देता है। शुभ या मित्र दृष्ट शनि मिश्रितफल देता है। शनि के भ्रमण स्थान से जन्मकाल के जिस-जिस ग्रह पर शनि की दृष्टि हो अथवा जिस-जिस ग्रह की स्थिति पर आता है तब उसी ग्रह के फल की हानि करता है। साढ़ेसाती (वृहत्कल्याणी) के अतिरिक्त समय पर मित्र ग्रह या शुभ ग्रह से दृष्ट किंवा युक्त शनि भाग्योदयादि शुभ फल करता है, साढ़ेसाती हो तो मिश्रफल करेगा।

राहु—जन्मराशि से ३, ६, ११वें राहु का भ्रमण शुभफल देता है। २।४।८।१२ भावों में राहु नेष्ट फलप्रद होता है। एवं १।५।७।६।१०वें घर में राहु मध्यम फलप्रद रहता है। किन्तु राहु अशुभ स्थानस्थ शुभफल देता है। राहु के भ्रमणफल के सदृश ही केतु का फल होता है। राहु का विचार पूर्णतया शनि की तरह विचारें।

हर्षल—जन्मलग्न या चन्द्र से १।७।१०।४ स्थान में हर्षल नेष्ट फलप्रद है। २।६।८।१२वें भाव में भी पारिवारिक दुःख का योग बनता है। वायु राशि ३।७।११वें भाव में हर्षल उत्तम फलप्रद रहता है। अग्निराशि १।५।६ में प्रायः हानि करता है। जलराशि ४।८।१२ में मिश्रफल करता है। शुभ से दृष्ट या युक्त हर्षल शुभ है तथा अशुभ से युक्त दृष्ट यह नेष्टफल प्रद है। हर्षल शुभाशुभ युतिवशात् अकस्मात् घटना दिखाता है जैसे—यात्रा में अकस्मात् निधन, लाटरी से अचानक लाभ आदि आश्चर्यकारक फल दिखाता है।

श्री वि. सं. २०४२, शाके १९०७, चैत्र शुक्ल पक्ष १ — तारीख — चन्द्र — भा.स्टै.टा. — उदय-कालिक (२२ मार्च से ५ अप्रै., सन् १९८५ ई०) उ.अ., उ.गो., वसन्त ऋतु

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीख प.	अं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन—बुध २६ मार्च को एवं शुक्र २ अप्रै. को पश्चिम में अस्त होगा। प्रातः गुरु को पूर्वकपाल में एवं शनि को पश्चिमकपाल में देख सकेंगे। मंगल को सूर्यास्त बाद पश्चिम में देखें।
३०	३	१	शु.	३३	३८	उ.भा.	१५	५५	ब्र.	५५	५८	कि.	०	३१	९	२२	१	२९	मीन	६	२८	६	३०	११	७	४१	२३	यूरेनस वक्री, नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन, चान्द्र संवत्सर प्रा., A
३०	१२	२	श.	४०	११	रे.	२३	४	ऐं.	५८	४१	बा.	६	५५	१०	२३	२	३०	मे. २३। ४	६	२७	६	३१	११	८	४१	५२	चन्द्रदर्शन मु. ३०, पंचक समाप्त २३।४, चन्द्र व्रत, दमनकेन B
३०	१६	३	र.	४६	५५	अ.	३०	५९	वै.	६०	०	तै.	१३	३३	११	२४	३	१	मेष	६	२५	६	३२	११	९	४१	२०	मंगल भरणी में २५।३२, बुध वक्री ३२।३२, गौरी तृतीया C
३०	२०	४	च.	५३	३०	भ.	३८	५०	वैं.	१	२३	ब.	२०	१२	१२	२५	४	२	वृ. ५५।४०	६	२४	६	३२	११	१०	४०	४५	भ. २०।१५ उ., ५३।३० या.,
३०	२४	५	मं.	५९	२५	कृ.	४६	९	वि.	३	५२	ब	२६	२८	१३	२६	५	३	वृष	६	२३	६	३३	११	११	४०	१०	बुध पश्चिम में अस्त १२।१०, श्री लक्ष्मी पंचमी
३०	२८	६	बु.	६०	०	रो	५२	३१	प्री.	५	४७	कौ.	३१	५२	१४	२७	६	४	वृष	६	२२	६	३४	११	१२	३९	३२	श्री स्कन्द षष्ठी F — वर्षारंभ में बार्हस्पत्यमान से 'बहुधान्य'
३०	३२	६	गु.	४	१८	मृ.	५७	२८	आ.	६	५२	तै.	४	१८	१५	२८	७	५	मि. २५। ०	६	२०	६	३४	११	१३	३८	५१	गुरु श्रव. ३ में १२।१२, — नामक संवत्सर है, अतः वर्षांत तक
३०	३६	७	शु.	७	३३	आ.	६०	०	सौ.	६	४३	व.	७	३३	१६	२९	८	६	मिथुन	६	१९	६	३५	११	१४	३८	८	भ. ७।३३ उ., ३८।१२ या., — संकल्प में इसे ही प्रयुक्त करें।
३०	४०	८	श.	८	५०	आ.	०	३७	शो.	५	५	ब.	८	५०	१७	३०	९	७	क. ४६।२७	६	१८	६	३५	११	१५	३७	२४	शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ १५।५, श्रीदुर्गाष्टमी, मेला श्रीमनसा देवी D
३०	४६	९	र.	८	३	पुन.	१	४३	अ.	१ / ४९	५१ / ३०	कौ.	८	३	१८	३१	१०	८	कर्क	६	१७	६	३६	११	१६	३६	३५	सूर्य रेव. में ३।३०, श्रीरामनवमी व्रत वैष्णव (देखें पृ. ५९/६०)
३०	५०	१०	च.	५	७	पु.	० / ५७	४३ / ३५	धृ.	५०	१६	ग.	५	७	१९	अ.	११	९	सि. ५७।३५	६	१६	६	३७	११	१७	३५	४६	भ. ३२।३९ उ., कामदा एकादशी व्रत स्मार्त, अप्रैल प्रारम्भ
३०	५५	११	मं.	०	१०	श्ले	५२	५८	शू.	४२	१६	वि.	०	१०	२०	२	१२	१०	सिंह	६	१४	६	३७	११	१८	३४	५४	भ. ०।१० या., शुक्र पश्चिम में अस्त १५।१५, कामदा एकादशी व्रत E
अवम		१२	मं.	५२	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथि क्षय,
३१	०	१३	बु.	४५	३०	पू.फा	४६	५५	गं.	३३	६	कौ.	१८	५२	२१	३	१३	११	सिंह	६	१३	६	३८	११	१९	३३	५८	प्रदोष व्र., अनङ्ग त्रयोदशी, श्रीजैन महावीर जयन्ती, — शुक्र अस्त
३१	६	१४	गु.	३६	३३	उ.फा.	३९	५५	वृ.	२३	३	ग.	११	२	२२	४	१४	१२	कं. ०।१०	६	१२	६	३९	११	२०	३३	२	भ. ३६।३३ उ., नेपच्यून व., दमनक चतुर्दशी, — (२ अप्रैल)
३१	१२	१५	शु.	२७	८	ह	३०	७	ध्रु.	१२	३०	वि.	१	५१	२३	५	१५	१३	तु. ५८।४३	६	११	६	३९	११	२१	३२	४	भ. १।५१ या., श्री सत्य व्र. वैशाख स्नान प्रारम्भ,

A वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यङ्ग, प्रपादान, शक चैत्र प्रारम्भ, B गौरी-शिव पूजनम्, C (गणगौर), आन्दोलन व्रत प्रारम्भ, श्रीरामदोलोत्सव प्रा., श्रीमत्स्य जयन्ती, रजब मु. प्रारम्भ, F देखें पृष्ठ ५९/६०) D (चण्डीगढ़), श्रीरामनवमी व्रत, स्मार्त (पुन. योग), नवरात्र समाप्त, E वैष्णव, राहु भर. ४ में, केतु विशाखा ३. में १७।२०, वेंकटेश चक्री,

चैत्र शु. ८ शनि, इष्ट ५८।०,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	११	९	११	७	०	६
१६	१७	२२	१७	२२	४	२६	२६
३४	४३	४७	७	५२	१	४७	४७
४०	३५	५१	५९	५६	३९	३२	३२
५९	४२	४१	१०	३६	२	३	३
१४	५४	११	१३	३५	१९	११	११
	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.भा. ४	भर. २	रेवती २	श्रव. ३	रेवती २	अनु. १	कृत्ति. १	विशा. ३

कुं. सूर्योदये

रा १ मं १२ ११ गु २ सू शु बु १० ३ ९ चं ४ ८ श ५ ६ ७ के

लोक भविष्य—संवत् का राजा शुक्र पक्षान्त में अस्त हो रहा है, राहु क्रूर मंगल से युत है, कृषक वर्ग चिन्तित रहे, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति से चिन्ता व्याप्त होगी। विश्व के कुछ देशों में कहीं महामारी से जनता क्षुब्ध रहेगी। अग्निकाण्ड व अन्य प्राकृतिक-प्रकोप से जन-धन हानि का भी योग है। पश्चिमी राष्ट्रों में कहीं युद्ध ज्वाला आगे भयंकर रूप धारण करेगी। ग्रहचाल और बाजार का रुख—२४ मार्च के लगभग तिल, तेल, सरसों, रुई और चांदी में अच्छी तेजी आयेगी, घी, गुड़, खांड, शक्कर में भी तेजी का रुख रहेगा। १ अप्रैल के लगभग बाजार का रुख देखकर काम करें, अचानक मन्दे का रुख बन सकता है। आकाश लक्षण—मार्च २४, २६ के लगभग भारत के कुछ प्रांतों में बादल चाल एवं हवा का जोर रहेगा, उत्तर भारत में कहीं बूंदाबांदी भी हो। पक्ष मध्य में ३०, ३१ मार्च के लगभग तथा २ अप्रैल के लगभग हवा के जोर के साथ छींटाकशी, वर्षा भी होगी। दक्षिण में प्राकृतिक-प्रकोप से हानि भय है। शकुन विचार—यदि चैत्र शु. पंचमी को दक्षिण-पूर्व की हवा चले और वर्षा भी हो तो आगे अनाजों में जबरदस्त तेजी आती है।

●चन्द्रमा की गति परमाधिक होने से यहां चन्द्र ने ४७ घं. २३ मि. बाद ही राशि बदली है। यह स्थिति क्वचानुसार कभी-कभी आती है; पाठक भ्रम में न पड़ें। वि० सं० २०३४ में भी मार्गशीर्ष कृष्णा १४ एवं अमावस को भी ऐसी ही स्थिति उत्पन्न हुई थी।

कुं. सूर्योदये

रा १ मं १२ ११ गु २ सू शु बु १० ३ ९ चं ४ ८ श ५ ६ ७ के

चैत्र शु. १५ शुक्र, इष्ट ५८।१८

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	११	९	११	७	०	६
२२	२२	१८	१८	१९	३	२६	२६
२९	०	१०	७	८	४६	२८	२८
२५	१४	२	३६	३	२७	२८	२८
५९	४२	४६	९	३६	२	३	३
०	३७	४९	३३	५८	४९	११	११
	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
रेवती २	भर. ३	रेवती १	श्रव. ३	रेवती १	अनु. १	भर. ४	विशा. ३

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, बैशाख कृष्ण पक्ष २ (६ से २० अप्रैल, सन् १९८५ ई.), उ. अ., उ. गो., वसन्त ऋतु

ग्रह-दर्शन—बुध ११ तथा शुक्र ६ अप्रैल को पूर्व में उदित होकर प्रातः दीखने लगेंगे। सूर्योदय से पूर्व गुरु पूर्वकपाल में तथा शनि पश्चिमकपाल में होगा। सूर्यास्त बाद मंगल पश्चिम में दीखेगा।

ति. मा. घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अ.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	भा.स्टैं.टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३१।१५	१	श.	१७	३९	चि.	२४	५९	व्या.	५५	३६	कौ.	१७	३९	२४	६	१६	१४	तुला	६	१०	६	४०	११	२२	३१	२	शुक्र पूर्व में उदित ३०।३८
३१।२०	२	र.	८	३२	स्वा	१७	५८	व.	४१	२०	ग.	८	३२	२५	७	१७	१५	वृ. ५८।२१	६	८	६	४१	११	२३	२९	५९	भ. २४।२३ उ., व. बुध उ.भा. में ५६।३७,
३१।२४	३	च.	०	१४	वि.	११	४९	सि	३२	१५	वि.	०	१४	२६	८	१८	१६	वृश्चिक	६	७	६	४१	११	२४	२८	५५	भ. ०।१४ या., श्रीगणेश चतुर्थी व्र.,
अवम	४	च.	५३	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय, A वेंकटेश स्वाती १ में, मेला बैशाखी (पं.),
३१।३०	५	मं.	४७	१४	अनु.	६	५२	व्य.	२४	१४	कौ.	२०	३२	२७	९	१९	१७	वृश्चिक	६	६	६	४२	११	२५	२७	४७	शुक्र बाल्य समाप्त ३०।४८,
३१।३२	६	बु.	४३	८	ज्ये.	३	२३	व.	१७	३०	ग.	१५	११	२८	१०	२०	१८	ध. ३।२३	६	५	६	४२	११	२६	२६	३८	भ. ४३।८ उ., वक्री शुक्र उ.भा. में ९।१५,
३१।३६	७	गु.	४०	५१	मू.	१	३९	प.	१२	१२	वि.	१२	०	२९	११	२१	१९	धनु	६	४	६	४३	११	२७	२५	२७	भ. ११।५९ या., बुध पूर्व में उदित १९।३०,
३१।४०	८	शु.	४०	१९	पूषा.	१	४०	शि.	८	२०	बा.	१०	३५	३०	१२	२२	२०	म. १७। ६	६	३	६	४४	११	२८	२४	१५	मंगल कृत्ति. में ३३।४०, B ४ में ३०।०
३१।४४	९	श.	४१	३२	उषा.	३	२५	सि.	५	५२	तै.	१०	५६	बै.	१३	२३	२१	मकर	६	१	६	४४	११	२९	२२	०	सं. सूर्य अश्वि. मेष में ३५।५८, मु. ३०, पुण्य १९।५८ बाद, वक्री A
३१।४९	१०	र.	४४	२०	श्र.	६	५०	सा.	४	४३	व.	१२	५६	२	१४	२४	२२	कुं. ३९।१५	६	०	६	४५	०	०	२१	४५	भ. १२।५६ उ., ४४।२० या., पंचक प्रा. ३९।१५, व. शनि विशा. B
३१।५४	११	च.	४८	२४	ध	११	३९	शु.	४	४२	ब.	१६	२२	३	१५	२५	२३	कुम्भ	५	५९	६	४६	०	१	२०	२९	वरूथिनी एकादशी व्र., श्री वल्लभाचार्य जयन्ती,
३१।५८	१२	मं.	५३	३३	श.	१७	३६	शु.	५	३६	कौ.	२०	५८	४	१६	२६	२४	कुम्भ	५	५८	६	४६	०	२	१९	९	D पिंजौर (हरियाणा)
३२। २	१३	बु.	५९	२७	पूभा.	२४	२७	ब्र.	७	१९	ग.	२६	३०	५	१७	२७	२५	मी. ७।४४	५	५७	६	४७	०	३	१७	४८	भ. ५९।२७ उ., मंगल वृष में १७।५८, बुध मार्गी ३३।५२, प्रदोष व्रत,
३२। ६	१४	गु.	६०	०	उभा.	३१	५३	ऐं.	९	२७	वि.	३२	३९	६	१८	२८	२६	मीन	५	५६	६	४८	०	४	१६	२७	भ. ३२।३९ या., गुरु श्रवण ४ में ४३।४२,
३२।११	१४	शु.	५	५१	रे.	३९	४१	वै.	११	५९	श.	५	५१	७	१९	२९	२७	मे. ३९।४१	५	५५	६	४८	०	५	१५	३	पंचक स. ३९।४१,
३२।१५	३०	श.	१२	२६	अ.	४७	३१	वि.	१४	३९	ना.	१२	२६	८	२०	३०	२८	मेष	५	५४	६	४९	०	६	१३	३७	सूर्य सा. वृष में ७।४७, ग्रीष्म ऋतु प्रा., शनैश्चरी अमावस, मेला D

शुक्र उदित (६ अप्रैल)

बैशाख कृ. ८ शुक्र, इष्ट ५८।३८,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	११	९	११	७	०	६
२९	२६	१३	१९	१५	३	२६	२६
२१	५७	५१	११	१३	२५	६	६
४४	३७	१८	५२	३६	७	१२	१२
५८	४२	१९	८	२७	३	३	३
४७	१८	२९	४२	२	२०	११	११
	मा	व	मा	व	व	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
रेवती ४	कृत्ति. १	उ.भा. ४	श्रवण ३	उ.भा. ४	अनु. १	भर. ४	चित्रा. २

कुं. सूर्योदये

म १ रा, १२, ११ बु, २, बु सू शु, च, १० गु, ३, ९, ४, ८ श, ५, ६, ७ के

लोक भविष्य—इस मास में ५ शनिवार है। पक्षान्त में शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध विश्व में युद्ध भय का सूचक है। आयरलैण्ड, ब्रिटेन, लंका, चीन, जापान में कहीं राजनैतिक हलचल व कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से जन-धन हानि होगी। पश्चिमी देशों में अराजकता बढ़ेगी। वायुयान आदि दुर्घटना में भी जन-हानि का योग है। मेष संक्रान्ति तथा अमावस दोनों शनिवारी हैं, उपभोग्य वस्तुओं में मंहगाई से जनमानस में रोष व्याप्त होगा।

ग्रह चाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में ही रुई में मन्दी, चांदी में घटा-बढ़ी के बाद तेजी होगी। लगभग ११ अप्रैल से चावल, चांदी, रुई, गेहूं, चना, मूंग, मोठ, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी में तेजी बनेगी। १७ अप्रैल को बाजार का रुख देखकर काम करें, लाईन बदल सकती है। गुड़, लाल मिर्च एवं सोना, चांदी, चावल में अच्छी तेजी का योग है।

कुं. सूर्योदये

म २, १, १२ शु, ३, सू च बु, ११, ४, रा, १० गु, के, ५, ९, ६, ७, ८, श

बैशाख कृ. ३० शनि, ५९।०,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	११	९	११	७	०	६
७	२	१३	२०	१२	२	२५	२५
११	३४	४०	१७	४०	५६	४०	४०
१५	५४	३६	४१	२६	३६	४६	४६
५८	४१	२०	७	८	३	३	३
३२	५७	५९	३७	२१	५०	११	११
	मा	मा	मा	व	व	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
अश्वि. ३	कृत्ति. २	उ.भा. ४	श्रवण ४	उ.भा. ३	विशा. ४	भर. ४	चित्रा. २

आकाश लक्षण—५, ६, ७, ११ से १४, १७ एवं २० अप्रैल को उत्तरी भारत के किसी भाग में तथा बंगाल आदि में किंवा दक्षिण में कहीं बादल चाल व वर्षा होगी। बुध-शुक्र मीन में होने से इन दिनों किसी भाग में वर्षा से हानि भय भी है।

शकुन विचार—यदि मेष राशि के सूर्य में अमावस के दिन कोई प्राकृतिक प्रकोप घटित हो तो गेहूं, जौ, चना आदि के स्टाक से आगे चार मास में उत्तम लाभ मिलेगा।

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, वैशाख शुक्ल पक्ष ३ — (२१ अप्रैल से ४ मई १९८५ ई०), उ. अयन, उ. गोल, ग्रीष्मऋतु

बि.मा. घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें अ. वैशा	अं. अप्रैल	श. वैशा.	म. रज्जब	चन्द्र संचार घ. प.	भा.स्टैं.टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३२|२०	१	र.	१८	५६	भ.	५५	१२	प्री.	१७	१६	ब.	१८	५६	९	२१	१	२९	मष	५	५३	६	५०	०	७	१२	१०	चन्द्रदर्शन मु. १५, अगस्त्य अस्त, शक वैशाख प्रा.,
३२|२५	२	च.	२५	६	कृ.	६०	०	आ.	१९	४१	कौ.	२५	६	१०	२२	२	शा	वृ. १२।१	५	५२	६	५०	०	८	१०	४०	श्री परशुराम जयन्ती, श्री शिवाजी जयन्ती, शाबान मु. प्रा.,
३२|२९	३	मं.	३०	४२	कृ.	२	२८	सौ.	२१	३७	ग.	३०	४२	११	२३	३	२	वृष	५	५१	६	५१	०	९	९	९	अक्षय तृतीया, [वि.मु. रोहि.]
३२|३३	४	बु.	३५	२१	रो.	८	५४	शो.	२२	५३	व.	३	२	१२	२४	४	३	मि. ४१।३६	५	५०	६	५२	०	१०	७	३६	भ. ३।२ उ., ३५।२१ या., शुक्र मार्गी ५३।५२, [वि.मु.मृग.]
३२|३७	५	गु.	३८	४८	मृ.	१४	१९	अ.	२३	१८	ब.	७	५	१३	२५	५	४	मिथुन	५	४९	६	५२	०	११	६	१	आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जयन्ती,
३२|४१	६	शु.	४०	४३	आ.	१८	२२	सु.	२२	३६	कौ.	९	४६	१४	२६	६	५	मिथुन	५	४८	६	५३	०	१२	४	२३	बुध रेव. में ४४।३२ श्री रामानुजाचार्य जयन्ती,
३२|४५	७	श.	४०	५७	पुन.	२०	४९	धृ.	२०	३७	ग.	१०	५०	१५	२७	७	६	क. ५।२२	५	४७	६	५४	०	१३	२	४४	भ. ४०।५७ उ., सूर्य भर. में १७।४५, श्री गंगाजन्म,
३२|४९	८	र.	३९	२३	पु.	२१	३८	शू.	१७	१५	वि.	१०	१०	१६	२८	८	७	कर्क	५	४६	६	५४	०	१४	१	२	भ. १०।१० या.,
३२|५५	९	च.	३५	५९	आश्ले.	२०	३०	ग.	१२	२५	बा.	७	४१	१७	२९	९	८	सि. २०।३०	५	४५	६	५५	०	१४	५९	१८	श्री जानकी जयन्ती, [वि.मु. मघा]
३२|५९	१०	मं.	३०	५२	म.	१७	४२	वृ.	५८	१२	तै.	३	२६	१८	३०	१०	९	सिंह	५	४४	६	५६	०	१५	५७	३३	भ. ५७।३४ उ., [वि.मु. मघा]
३३|३	११	बु.	२४	१५	पू.फा.	१३	२१	व्या.	४९	५१	वि.	२४	१५	१९	मा १	११	१०	क. २६।५९	५	४३	६	५६	०	१६	५५	४५	भ. २४।१५ या., मगल रोहि. में ३९।१०, मोहिनी एकादशी व्र., मई प्रा., [वि.मु. उ.फा.]
३३|८	१२	गु.	१६	२५	उ.फा.	७	४२	ह.	४०	१९	बा.	१६	२५	२०	२	१२	११	कन्या	५	४२	६	५७	०	१७	५३	५५	प्रदोष व्रत,
३३|१२	१३	शु.	७	४५	ह.	२३	५९	व.	३०	११	तै.	७	४५	२१	३	१३	१२	तु. २७।३४	५	४१	६	५८	०	१८	५२	४	भ. ५८।३५ उ., श्री नृसिंह जयन्ती,
क्षय	१४	शु.	५८	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३३|१६	१५	श.	४९	१५	स्वा.	४६	४५	सि.	१९	४९	वि.	२३	५५	२२	४	१४	१३	तुला	५	४०	६	५८	०	१९	५०	१०	भ. २३।५५ या., खग्रास चन्द्रग्रहण, श्री सत्य व्र., श्री बुद्ध जयन्ती, वैशाख स्नान समाप्त. कूर्म जयन्ती

ग्रह-दर्शन—पक्षारम्भ में ही सुदूर दक्षिण में दृश्य अगस्त्य तारा अस्त हो जाएगा। प्रातः बुध-शुक्र पूर्व में, गुरु खमध्य की ओर तथा शनि को पश्चि. में देखें। सूर्यास्त बाद मंगल को भी पश्चिम में देखें।

वैशाख शु. ८ रवि, इष्ट ५१।२०,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	११	९	११	७	०	६
१४	८	१८	२१	१२	२	२५	२५
५८	९	२४	१४	३९	२४	१५	१५
४३	२२	१०	३१	५०	३५	२०	२०
५८	४१	५२	६	१०	४	३	३
१७	३६	३	२६	९	११	११	११
	मा	मा	मा	मा	व	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

लोक भविष्य—शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध चल रहा है, गत पक्ष में मेष संक्रान्ति एवं अमावस शनिवारी होने से, बन रहे खप्पर योग का प्रभाव इस पक्ष में अधिक स्पष्ट होगा। मंहगाई जोर पकड़ेगी। हड़ताल, घेराव, चोरी आदि की घटनाएं अधिक होंगी। किसी बड़े व्यक्ति का पद रिक्त हो। पंजाब, हरियाणा आदि में जनता में कुछ अशान्ति का कारण बने। यान दुर्घटना में जन-धन हानि तथा अग्निकाण्ड से हानि भी हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—२४ अप्रैल को घी, तेल, गुड़, खांड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि में तेजी आ सकती है। लेकिन बाजार के रुख के खिलाफ काम न करें, हानि भय है। पक्षान्त में ग्रहण का प्रभाव रुई, कपास, सूत, गेहूं, अलसी पर तेजी का रहे। ५-६ मास बाद अनाजों में भारी तेजी आएगी।

आकाश लक्षण—अप्रैल २१, २४, २५, मई १, ४ के लगभग बादल चाल एवं बूंदाबांदी का योग है। इन दिनों सिक्किम, आसाम, बिहार, बम्बई में वर्षा के योग हैं। गर्मी बढ़ने लगेगी।

कुं सूर्योदये

वै. शु. १५ शनि, इष्ट ५९।३५,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	११	९	११	७	०	६
२०	१२	२४	२१	१४	१	२४	२४
४७	१८	२१	५०	११	५८	५६	५६
५१	२०	४२	४५	१	५७	१५	१५
५८	४१	६९	५	२१	४	३	३
६	२१	२६	३०	५२	२३	११	११
	मा	मा	मा	मा	व	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शकुन विचार—वैशाख शुक्ल पंचमी को यदि दिन भर बादल रहें, गरजें तो भाद्रपद में धान्य मंहगे होंगे, स्टाक निकाल दें।

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४ (५ से १९ मई १९८५ ई०), उ. अयन, उ. गोल, ग्रीष्मऋतु

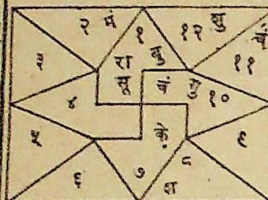
वि. बा. घ.	वि. बा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	प.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	तारीखें श्रं.	तारीखें श.	तारीखें मु.	चन्द्र संचार घ. प.	भा.स्टैं.टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	सू. उ. मि.	सू. अ. घ.	सू. अ. मि	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन
३३	१६	१	र.	४०	१८	वि.	३६	४६	व्य.	६/५६	२६/६०	बा.	१४	४६	२३	५	१५	१४	वृ. २६।३५	५	४०	६	५६	०	२०	४८	१४	
३३	२२	२	च	३२	५	अनु.	३३	३७	प.	५०	१८	तै.	६	११	२४	६	१६	१५	वृश्चिक	५	३९	७	०	०	२१	४६	१८	भ. ५८।३१ उ.,
३३	२६	३	म.	२४	५६	ज्ये.	२८	३०	शि.	४२	५	वि.	२४	५६	२५	७	१७	१६	ध. २८।३०	५	३८	७	०	०	२२	४४	१९	भ. २४।५६ या., श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, जन्म श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर,
३३	३०	४	बु.	१९	१२	मू.	२४	५१	सि.	३५	९	बा.	१९	१२	२६	८	१८	१७	धनु	५	३७	७	१	०	२३	४२	१८	
३३	३४	५	गु.	१५	१४	पू.षा	२२	५८	सा	२९	४२	तै.	१५	१४	२७	९	१९	१८	म. ३७।५८	५	३६	७	२	०	२४	४०	१७	बुध प्रवि. मेष में २९।४०,
३३	३८	६	शु.	१३	१०	उ.षा	२२	५८	शु.	२५	४७	व.	१३	१०	२८	१०	२०	१९	मकर	५	३६	७	२	०	२५	३८	१४	भ. १३।१० उ., ४३।६ या., शुक्र रेवती में ४५।४०, A
३३	४२	७	श.	१३	३	श्र.	२४	५४	शु.	२३	२६	ब.	१३	६	२९	११	२१	२०	कुं. ५६।४९	५	३५	७	३	०	२६	३६	९	पंचक प्रा. ५६।४९, सूर्य कृत्ति. में ४।०, [वि.बु. म., व.]
३३	४५	८	र.	१४	५४	ध.	२८	४४	ब्र.	२२	३६	कौ.	१४	५४	३०	१२	२२	२१	कुम्भ	५	३४	७	४	०	२७	३४	४	व. यूरेनस ज्येष्ठा २ में,
३३	४८	९	चं.	१८	२७	श.	३४	७	ऐं.	२३	४	ग.	१८	२७	३१	१३	२३	२२	कुम्भ	५	३४	७	४	०	२८	३१	५७	भ. ५०।५५ उ.,
३३	५१	१०	मं.	२३	२३	पू.भा	४०	४६	वै.	२४	३४	वि.	२३	२३	ज्ये.	१४	२४	२३	मी. २४।६	५	३३	७	५	०	२९	२९	४९	भ. २३।२३ या., सं. सूर्य वृष में ३१।१८, मु. ३०, पुण्य १५।१८ बाद,
३४	५४	११	बु.	२९	१९	उ.भा	४८	१६	वि.	२६	५०	बा.	२९	१९	२	१५	२५	२४	मीन	५	३२	७	६	१	०	२७	४१	अपरा एकादशी व्रत, श्री भद्रकाली एकादशी (पंजाब), [वि.मु.उ.भा.]
३३	५९	१२	गु.	३५	४५	रे.	५६	७	प्री.	२९	२९	कौ.	२	३२	३	१६	२६	२५	मे. ५६।७	५	३२	७	६	१	१	२५	३०	पञ्चक स. ५६।७,
३४	०	१३	शु.	४२	१८	अ.	६०	०	आ.	३२	१५	ग.	९	२	४	१७	२७	२६	मेष	५	३१	७	७	१	२	२३	१९	भ: ४२।१८ उ., प्रदोष व्रत,
३४	३	१४	श.	४८	३५	अ.	४	०	सौ.	३४	५३	वि.	१५	२६	५	१८	२८	२७	मेष	५	३०	७	८	१	३	२१	७	भ. १५।२६ या., बुध भर. में ३०।४५,
३४	६	३०	र.	५४	१५	भ.	११	३०	शो.	३७	४	च.	२१	२५	६	१९	२९	२८	वृ. २८।१२	५	३०	७	८	१	४	१८	५४	भावुका अमावस, वटसावित्री व्रत,

ग्रह-दर्शन—प्रात: शुक्र-बुध पूर्व में, गुरु समध्यासन्न होगा। शनि सूर्यास्त समय पूर्व में उदित होकर सारी रात दीखेगा। सायं रक्तवर्ण मंगल पश्चिम में दीखेगा।

ज्येष्ठ कृ. ८ रवि, इष्ट ५९।५०,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	०	९	११	७	०	९
२८	१७	४	२२	१७	१	२४	२४
३१	४९	४५	२९	५१	२३	३०	३०
४८	५६	२३	५८	१५	२७	४९	४९
५७	४१	८८	४	३४	४	३	३
५४	१	२२	७	१०	२९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
कृत्ति. १	रोहि. ३	अश्वि. २	श्रव. ४	रेव. २	विशा. ४	भर. ४	विशा. २

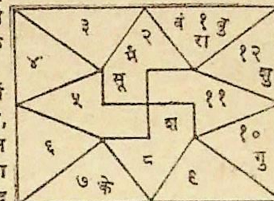
कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—इस मास में ५ रविवार एवं ५ सोमवार हैं, ९ मई को सूर्य एवं राहु की अंशयुति भी होगी। मंहगाई बढ़े, बीमारी एवं नेष्ट घटनाओं से चिन्ता व्याप्त हो। पश्चिमी भू-भाग पर प्राकृतिक-प्रकोप से हानिभय है। कहीं आन्तरिक अशान्ति से प्रधान शासक को कठिनाई का सामना करना पड़े।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—९ मई को बुध मेष राशि में आकर राहु से मेल करेगा। गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, चना, मूंग, अलसी, मोठ में तेजी, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल में कुछ मन्दे का रुख बने। चांदी में झटके के साथ मन्दा बन सकता है। इस पक्ष में विशेषतया बाजारों में साधारण तेजी के बाद मन्दी प्रधान रहेगी।

कुं. सूर्योदये



ज्येष्ठ कृ. ३० रवि, इष्ट ०।०,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	०	९	११	६	०	६
४	२१	१४	२२	२१	०	२४	२४
१८	५३	८	५२	३४	५६	११	११
५४	३५	२२	७	३२	२९	४४	४४
५७	४०	१०२	३	४१	५	३	३
४६	४८	२३	४	९	२९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
कृत्ति. ३	रोहि. ४	भर. १	श्रव. ४	रेव. २	विशा. ४	भर. ४	विशा. २

आकाश लक्षण—मई ९, १०, १४ के लगभग भूटान, सिक्किम, आसाम, बिहार, पंजाब, हरियाणा, हि. प्र. में कहीं खण्डवृष्टि व बूंदाबांदी हो।

शकुन विचार—यदि ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को दक्षिण की हवा चले तो घी, तिल, तेल का स्टाक करने से आगे आश्विन में लाभ मिलेगा। ज्येष्ठ में यदि दक्षिण दिशा में मेघ गरजें तो तेलबीया के स्टाक से आगे चार मास में उत्तम लाभ होगा।

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टैं.टा. | उदय-कालिक | (२० मई से ३ जून १९८५ ई०), उ. अयन. उ. गोल, ग्रीष्मऋतु.

दि. मा. घ	प	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	ध.	श.	म	चन्द्र संचार घ. प.	चन्द्रोदय सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	६	१	चं.	२६	८	कृ.	१८	१६	अ.	३८	४२	कि.	२६	४२	७	२०	३०	२९	वृष	५	२९	७	९	१	५	१६	३६	
३४	१०	२	मं.	३०	०	रो.	२४	१६	सु.	३६	३६	बा.	३१	५	८	२१	३१	३०	मि. ५६।४८	५	२९	७	१०	१	६	१४	२२	चन्द्रदर्शन मु. ३०, सूर्य सायन मिथुन में ८।२, मंगल मृग. में A
३४	१५	२	बु.	३	३	मृ	२६	१८	धृ.	३६	४४	कौ.	३	३	९	२२	ज्ये.	१	मिथुन	५	२८	७	१०	१	७	१२	६	रम्भाव्रत, शक ज्येष्ठ प्रा., रमजान मु.प्रा., [वि.मु. मृग.]
३४	१८	३	गु.	५	४८	आ	३३	१०	शू.	३८	५६	ग.	५	४८	१०	२३	२	२	मिथुन	५	२८	७	११	१	८	९	४८	भ. ३६।२५ उ., उमापूजन व्रत, श्री प्रताप जयन्ती (राज.)
३४	२१	४	शु.	७	२३	पुन	३५	५१	गं.	३७	१०	वि.	७	२३	११	२४	३	३	क. २०।११	५	२७	७	११	१	९	७	२७	भ. ७।२३ या., सूर्य रोहि. में ५७।४२, बलि. दिन श्रीगुरु अर्जुनदेव जी,
३४	२४	५	श.	७	४१	पु.	३७	१४	वृ.	३४	२०	बा.	७	४१	१२	२५	४	४	कर्क	५	२७	७	१२	१	१०	५	६	बुध कृति. में ५८।२५,
३४	२६	६	र.	६	३६	आश्ले	३७	१७	ध्रु.	३०	२७	तै.	६	३६	१३	२६	५	५	सि. ३७।१७	५	२७	७	१३	१	११	२	४४	श्री विन्ध्यवासिनी पूजा,
३४	२८	७	चं.	४	१३	म.	३६	२	व्या	२५	३०	व.	४	१३	१४	२७	६	६	सिंह	५	२६	७	१३	१	१२	०	१८	भ. ४।१३ उ., ३२।२१ या., बुध वृष में ४०।५८, बुध पूर्व में अस्त B
३४	३०	८	मं.	०	२६	पू.फा.	३३	२७	ह	१९	२८	व.	०	२६	१५	२८	७	७	कं. ४७।३१	५	२६	७	१४	१	१२	५७	५३	मेला क्षीरभवानी (काश्मीर), [वि.मु. उ.फा.]
अवम		९	मं.	५५	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथि क्षय,
३४	३३	१०	बु.	४९	१९	उ.फा.	२६	४१	व.	१२	२५	तै.	२२	१४	१६	२९	८	८	कन्या	५	२६	७	१४	१	१३	५५	२६	श्री गंगादशहरा [वि.मु. उ.फा., ह.]
३४	३५	११	गु.	४२	१५	ह.	२४	५५	सि	[illegible]	[illegible]	व.	१५	४७	१७	३०	९	९	तु. ५२।८	५	२५	७	१५	१	१४	५२	५६	भ. १५।४७ उ., ४२।१५ या., मंगल मिथुन में ५९।१७, शुक्र C
३४	३७	१२	शु	३४	२६	चित्रा	१६	२१	व.	४६	४०	ब.	८	२०	१८	३१	१०	१०	तुला	५	२५	७	१६	१	१५	५०	२६	व. शनि विशा. ३ तुला में ५४।४५, प्रदोष व्रत, चम्पक द्वादशी, D
३४	४०	१३	श.	२६	१३	स्वा	१३	१५	प.	२७	१२	कौ.	०	२०	१९	जू	११	११	वृ. ५३।४३	५	२५	७	१६	१	१६	४७	५६	बुध रोहि. में ३३।८, जून प्रारम्भ,
३४	४२	१४	र.	१७	५४	वि	९	५६	शि.	२७	४२	व.	१७	५४	२०	२	१२	१२	वृश्चिक	५	२५	७	१७	१	१७	४५	२७	भ. १७।५४ उ., ४३।५२ या., श्री सत्य व्रत,
३४	४३	१५	चं.	९	५१	अनु.	[illegible]	[illegible]	सि.	१८	२६	व.	९	५१	२१	३	१३	१३	ध. ५५।२६	५	२४	७	१७	१	१८	४३	४६	

ग्रह-दर्शन :— बुध २७ मई को अस्त हो जाएगा। मंगल २१ मई को अस्त होगा। प्रातः बुध-शुक्र पूर्व में, गुरु खमध्य से पश्चिम की ओर नत दीखेगा। सायं शनि को पूर्व में देखें।

A ७।१२, मंगल अस्त २।५० [वि.मु. रोहि., मृग.] B २१।७, C अश्वि. मेष में ४।१५, निर्जला एकादशी व्रत, D [वि.मु. चि.]

ज्येष्ठ शु. ८ मंगल, इष्ट ०।१०,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	१	९	११	७	०	६
१२	२७	०	२३	२८	०	२३	२३
५८	५९	३७	१३	१८	१६	४३	४३
२	२८	५३	९	२	४०	७	७
५७	४०	[illegible]	१	४८	४	३	३
३८	२७	२०	२४	५६	१९	११	११
	मा	मा.	मा.	मा.	व	व.	व.
	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रोहि.	मृग.	रोहि.	श्रव.	रेवती	विशा.	भर.	विशा.

कुं. सूर्योदये

२ मं कु सू — ३ — १ रा — शु १२ — ४ — ५ च — ११ — गु १० — ६ — ८ श — ७ के — ९

लोक भविष्य— बुध अतिचारी है, सू.-म.-बु. पर शनि की दृष्टि है; किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होगा; आकस्मिक घटना क्रम से जनता को आश्चर्य हो।

"यदा शुभ ग्रहः कश्चिदतिचारं करोति च।
तदा नृपाः क्षय यान्ति दुर्भिक्षं तत्र दारुणम् ॥"

कहीं अकाल की स्थिति बनेगी। प्राकृतिक प्रकोप से खड़ी फसल को हानि होगी।

ग्रह चाल और बाजार का रुख— २१ मई के लगभग रुई में मन्दी, अनाज एवं वायदा व्यापारिक चीजों में तेजी बनेगी। पक्ष मध्य में गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, रुई, सूत, कपास, तिल तेल में अच्छी तेजी आएगी। इस तेजी में सट्टा के व्यापारी लाभ ले सकेंगे। ३० मई के लगभग चांदी, सोना, रुई, चावल एवं गुड, खांड, शक्कर में अच्छी तेजी का झटका आएगा। इस तेजी में सोना, चांदी, गुड, खाण्ड, शक्कर एवं लाल मिर्च के व्यापारी विशेष लाभ ले सकेंगे।

आकाश लक्षण— इस पक्ष में मई २१, २७, ३०, ३१ को हि० प्र०, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली में बादल चाल होगी, वायु के जोर के साथ कहीं छोटाकशी भी होगी।

शकुन विचार —यदि ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी को बादल गरजें किंवा दक्षिण की वायु चले तो तिल तेल का स्टाक करने से कातिक में लाभ होता है।

कुं. सूर्योदये

३ मं — २ — रा १ शु — बु — ४ — १२ — सू — ५ — ११ — गु १० — ६ — चं ८ — श ७ के — ९

ज्येष्ठ शु. १५ चन्द्र, इष्ट ०।१५,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	१	९	०	६	०	६
१८	२	१३	२३	३	२९	२३	२३
४३	१	६	१८	२१	५१	२४	२४
२	३१	२	४०	३१	१८	२	२
५७	४०	[illegible]	०	५२	४	३	३
२६	१४	४८	१५	४७	६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा	व	व.	व.
	ध	ध	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रोहि.	मृग.	रोहि.	श्रव.	अश्वि.	विशा.	भर.	विशा.

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६ | **(४ से १८ जून, सन् १९८५ ई.), उ. अ., उ. गो., ग्रीष्म ऋतु**

ग्रह-दर्शन —मंगल अस्त है, बुध १८ जून को सायं पश्चिम में देखा जा सकेगा। प्रातः गुरु को पश्चिमकपाल में एवं शुक्र को पूर्वकपाल में देखें। सायं शनि पूर्व में होगा।

दि. मा. घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अ. रा.		मु.	चन्द्र संचार घ. प.	भा.स्टैं.टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४ ४५	१	मं.	२	२७	मू.	५०	५३	सा.	६	५२	कौ.	[illegible]	२७	२२	४	१४	१४	धनु	५	२४	७	१८	१	१६	४०	१४	गुरु वक्री ४६।२५, राहु भर. ३ में केतु विशा. १ में १६।२८, C
अवम	२	मं.	५६	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
३४ ४७	३	बु.	५१	०	पूषा.	४७	४०	शु.	[illegible]	[illegible]	ब.	२३	४०	२३	५	१५	१५	धनु	५	२४	७	१८	१	२०	३७	३८	भ. २३।४० उ., ५१।० या.,
३४ ४६	४	गु.	४७	३६	उषा.	४६	७	ब.	५०	२०	ब.	१६	२०	२४	६	१६	१६	म. २१।२७	५	२४	७	१९	१	२१	३५	२	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, [वि. मु. श्र.]
३४ ५०	५	शु.	४६	१२	श्र.	५६	२८	ऐं.	४६	४२	कौ.	१६	५६	२५	७	१७	१७	मकर	५	२४	७	१९	१	२२	३२	२४	सूर्य मृग. में ४६।४५, बुध मृग. में ४१।१०, [वि. मु. श्र.]
३४ ५२	६	श.	४६	४४	ध.	४८	५५	वै.	४४	३७	ग.	१६	२८	२६	८	१८	१८	कुं. १७।३६	५	२४	७	२०	१	२३	२६	४६	भ. ४६।४४ उ., पंचक प्रा. १७।३६,
३४ ५३	७	र.	४६	१३	श.	५२	५७	वि.	४४	४	वि.	१७	५८	२७	९	१९	१९	कुम्भ	५	२४	७	२०	१	२४	२७	६	भ. १७।५८ या., मंगल आर्द्रा में ५६।४०,
३४ ५४	८	च.	५३	२६	पूभा.	५८	४७	प्री.	४४	५४	बा.	२१	१९	२८	१०	२०	२०	मी. ४२।१९	५	२४	७	२०	१	२५	२४	३०	बुध मिथुन में ४३।२५,
३४ ५५	९	मं.	५८	५३	उभा.	६०	०	आ.	४६	४३	तै.	२६	९	२९	११	२१	२१	मीन	५	२४	७	२१	१	२६	२१	५०	[वि. मु. उ. भा.]
३४ ५६	१०	बु.	६०	०	उभा.	५	४३	सौ.	४९	१४	ब.	३२	१	३०	१२	२२	२२	मीन	५	२४	७	२१	१	२७	१९	११	भ. ३२।१ उ. [वि. मु. रे.]
३४ ५७	१०	गु.	५	९	रे.	१३	३१	शो.	५२	१	वि.	५	६	३१	१३	२३	२३	मे. १३।३१	५	२४	७	२२	१	२८	१६	३१	भ. ५।६ या., पंचक स. १३।३१, बुध आर्द्रा में ४६।७, शुक्र भर. A
३४ ५६	११	शु.	११	३९	अ.	२१	२०	अ.	५४	३६	बा.	११	३६	आ	१४	२४	२४	मेष	५	२४	७	२२	१	२९	१३	५१	सं. सूर्य मिथुन में ४८।१८, मु. १५, पुण्य अगले दिन मध्याह्न से B
३५ ०	१२	श.	१७	४०	भ.	२८	४५	सु.	५६	४४	तै.	१७	४०	२	१५	२५	२५	वृ. ४५।२४	५	२४	७	२२	२	०	११	१२	शनि प्रदोष व्रत,
३५ १	१३	र.	२३	०	कृ.	३५	२३	धृ.	५८	८	व.	२३	०	३	१६	२६	२६	वृष	५	२४	७	२३	२	१	८	३१	भ. २३।० उ. ५५।७ या.,
३५ १	१४	च.	२७	१४	रो.	४०	५४	शू.	५८	३४	श.	२७	१४	४	१७	२७	२७	वृष	५	२४	७	२३	२	२	५	५०	
३५ १	३०	मं.	३०	१४	मृ.	४५	१४	ग.	५८	४	ना.	३०	१४	५	१८	२८	२८	मि. १३। ५	५	२४	७	२३	२	३	३	९	बुध पश्चिम में उदित ४४।४५, भौमवती अमावस

A में ४६।४०, B पूर्व, योगिनी एकादशी व्रत, C [वि. मु. मू.]

आषा. कृ. ८ चन्द्र, इष्ट ०।१५, **कुं. सूर्योदये**

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	१	९	०	६	०	६
२५	६	२८	२३	९	२६	२३	२३
२४	४२	२५	१६	४२	२३	१	१
४५	२३	४५	२६	७	३५	४७	४७
५७	४०	७०	१	५६	३	३	३
२१	०	५९	५	२१	४५	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	ब	अ	उ	उ	उ	अ	अ
मृग. ३	आर्द्रा १	मृग. २	श्रवण ४	अश्वि. ३	विशा. ३	भर. ३	विशा. १

मं ३, रा १ शु, ४, २, १२, सू. बु, च ११, ५, गु १०, ६, श ७ के, ८, ९

लोक भविष्य—इस मास में ५ मंगलवार हैं। मकरस्थ बृहस्पति वक्री हो रहा है—"मकरस्थो यदा जीवः करोति वक्रगामिताम्। धान्यं कुरुते, धान्यं समर्घं नात्र संशयः॥" रोगभय न रहे, छोटे-मोटे अनाज एवं जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में मंहगाई होने से प्रजा में रोष हो। दक्षिणी-पश्चिमी सीमा प्रान्तों पर हलचल एवं कहीं शासक के विरुद्ध आवाज उठेगी। ७ एवं १५ जून को सूर्य-बुध एवं मंगल-बुध युति भी खड़ी फसल की हानि करेगी।

ग्रह चाल और बाजार का रुख—पक्षारंभ में ही सोना, चांदी आदि धातु व ऊनी वस्त्र तेज होंगे। गेहूं, जौ, चना, चावल आदि अनाज में अच्छी तेजी बनेगी। अलसी एवं घी में कुछ मन्दा रहे। पक्ष मध्य में बाजार के रुख के अनुसार काम करें। १४ जून से भी अनाजों एवं धातुओं में अच्छी तेजी बनेगी।

आकाश लक्षण—जून ४, ५, ६, १०, १३, १४ को पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, बम्बई, शिलांग में वर्षा के योग हैं। १८, १९ जून को वायु का जोर रहे।

शकुन विचार— यदि आषाढ़ कृ. ४ को दिन भर आकाश मेघाच्छन्न रहे, तो आगे वर्षा ऋतु में उत्तम वर्षा हो, अन्न मन्दा हो, यदि आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को बिजली व मेघ गरजें व वर्षा हो तो दो मास तक वर्षा की कमी से अनाजों में तेजी हो।

कुं. सूर्योदये आषा. कृ. ३० मंगल, इष्ट ०।१५,

४, च २, मं ३, रा १ शु, ५, सू बु, १२, ६, ७ के श, ११, ९, ८, गु १०

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	२	९	०	६	०	६
३	१२	१५	२३	१७	२८	२२	२२
३	१	१७	२	२४	५५	३६	३६
२३	३०	५९	३३	४१	९	२१	२१
५७	३९	[illegible]	२	५९	३	३	३
१८	४४	४८	३६	३२	१६	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
मृग. ३	आर्द्रा २	आर्द्रा ३	श्रवण ४	भर. २	विशा. ३	भर. ३	विशा. १

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७ (१९ जून से २ जु. १९८५ ई.), उ. द. अयन, उ. गो., ग्रीष्म-वर्षाऋतु

वि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ	प	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ	प	तारीखें प्र. आषा.	अं. जून	रा. [illegible]	मु. रम.	चन्द्र संचार घ प	भा.स्टैं.टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३५	१	१	बु.	३१	५९	आ.	४८	२१	वृ.	५९	३५	कि.	१	६	६	१९	२९	२९	मिथुन	५ २४	७ २३	२	४	०	२७
३५	१	२	गु.	३०	२९	पुन.	५०	१५	ध्रु.	५४	८	बा.	२	१४	७	२०	३०	श.¹	क. ३४।४७	५ २४	७ २४	२	४	५७	४५
३५	१	३	शु.	३१	५०	पु.	५१	५	व्या.	५०	४९	तै.	२	[illegible]	८	२१	३१	२	कर्क	५ २४	७ २४	२	५	५५	२
३५	१	४	श.	३०	११	आश्ले.	५०	५६	ह.	४९	४३	व.	१	१	९	२२	श्रा¹	३	सि. ५०।५६	५ २५	७ २४	२	६	५२	१९
३५	१	५	र.	२७	३३	म.	४९	५१	व.	४१	५०	बा.	२७	३३	१०	२३	२	४	सिंह	५ २५	७ २४	२	७	४९	३६
३५	१	६	च.	२४	४	पू.फा.	४७	५८	सि.	३६	१८	तै.	२४	४	११	२४	३	५	सिंह	५ २५	७ २५	२	८	४६	५१
३५	१	७	मं.	१९	४९	उ.फा.	४५	२०	व्य.	३०	९	व.	१९	४९	१२	२५	४	६	क. २१।१८	५ २५	७ २५	२	९	४४	५
३५	०	८	बु.	१४	५०	ह.	४२	०	व.	२३	२३	ब.	१४	५०	१३	२६	५	७	कन्या	५ २६	७ २५	२	१०	४१	२०
३५	०	९	गु.	९	१२	चि.	३८	४	प.	१६	७	कौ.	९	१२	१४	२७	६	८	तु. १०।२	५ २६	७ २५	२	११	३८	३४
३५	०	१०	शु.	३	२	स्वा.	३३	४१	शि.	८	२६	ग.	३	२	१५	२८	७	९	तुला	५ २६	७ २५	२	१२	३५	४६
अवम		११	शु.	५६	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	०	०	०	०
३४	५९	१२	श.	४९	४०	वि.	२८	५७	सि.	[illegible]	[illegible]	ब.	२३	१०	१६	२९	८	१०	वृ. १५।८	५ २७	७ २५	२	१३	३२	५९
३४	५८	१३	र.	४२	५३	अनु.	२४	८	शु.	४४	३	कौ.	१६	१३	१७	३०	९	११	वृश्चिक	५ २७	७ २५	२	१४	३०	१०
३४	५७	१४	च.	३६	२८	ज्ये.	१९	३२	शु.	३६	७	ग.	९	३८	१८	जु.¹	१०	१२	ध. १९।३२	५ २७	७ २५	२	१५	२७	२३
३४	५६	१५	मं.	३०	२९	मू.	१५	२९	ऐ.	२८	४१	वि.	३	२६	१९	२	११	१३	धनु	५ २८	७ २५	२	१६	२४	३५

ग्रह-दर्शन—मंगल अस्त है। प्रात: गुरु पश्चिमकपाल में तथा शुक्र पूर्वकपाल में होगा। सायं बुध को पश्चिम तथा शनि को पूर्वकपाल में देखें।

1. चन्द्रदर्शन मु. १५,
2. बुध पुन. में २४।३५, श्रीजगदीश रथ उत्सव (रथ यात्रा), शव्वाल A
3. सूर्य आर्द्रा में ४७।७, सूर्य सायन कर्क में २७।३८, दक्षिणायन, B
4. मं. ११ उ., ३०।११ या., शक आषाढ़ प्रारम्भ
5. [वि. मु. म.]
6.
7. भ. १९।४९ उ. ४७।२० या., बुध कर्क में ५५।३८,
8. [वि. मु. वि.]
9. बुध पुष्य में ५५।१८, शुक्र कृत्ति. में ८।१०, [वि. मु. वि.]
10. भ. २९।५१ उ. ५६।४० या., हरिशयनी एकादशी व्रत स्मार्त, C
11. एकादशी तिथि क्षय
12. हरिशयनी एकादशी व्रत वैष्णव,
13. मंगल पुन. में ५।३५, शुक्र वृष में २०।५, प्रदोष व्रत,
14. भ. ३६।२४ उ., शिवशयनोत्सव, जुलाई प्रारम्भ
15. भ. ३।२६ या., श्रीसत्य व्रत, गुरु पूर्णिमा, गुरु व्यास पूजा, E

A मु. प्रारम्भ B वर्षा ऋतु प्रारम्भ C चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ, E सन्यासियों का चातुर्मास्य व्रत नियम प्रा., कोकिला व्रत, साय वायु परीक्षा

आषाढ़ शु. ८ बुध, इष्ट ०।१०,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	३	३	९	०	६	०	६
१०	१७	०	२२	२४	२०	२२	२२
४१	१८	७	३६	२६	३१	१०	१०
३०	३७	५५	४६	४३	[illegible]	५४	५४
५७	३९	[illegible]	४	६१	[illegible]	३	३
१३	३०	११	०	५६	४०	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
आर्द्रा ४	आर्द्रा ४	पुन. ४	श्रव. ४	भर. ४	विशा. ३	भर. ३	विशा. ३

कुं. सूर्योदये

बु ४ | ५ | ३ | मं | सू | २ | रा १ शु | ६ | चं | १२ | ७ के | श | ८ | ९ | १० गु | ११

लोक भविष्य—२३ जून को शुक्र-राहु का युद्ध कहीं सूखा, कहीं वर्षा से हानि करेगा। कहीं रोग विशेष से जनता में कष्ट हो। राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश, मद्रास में कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से जन- धन हानि हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में गुड़, खांड, रुई, सूत व धातुओं में तेजी के बाद शीघ्र ही चांदी, रुई, कपास, सूत, सण में झटके से मन्दा बनेगा। २५ जून के लगभग सभी चीजों में कुछ तेजी के बाद मन्दा प्रधान रहेगा। ३० जून के लगभग रुई, कपास में अच्छी मन्दी आएगी, सोना, चांदी में घटा-बढ़ी के बाद तेजी आएगी।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में भारत के अनेक प्रान्तों में अच्छी वर्षा के योग हैं। सूर्य-मंगल कहीं बिजली गर्जन एवं बिजली गिरने से हानि की सूचना देते हैं। इस पक्ष में सूर्य पीछे एवं मंगल आगे चलने से कुछ प्रान्तों में वर्षा की भारी कमी भी रहेगी।

शकुन विचार—यदि आषाढ़ शुक्ल ५ को पश्चिमी वायु चले, बादल गरजे, वर्षा हो या इन्द्र धनुष दिखाई दे तो अन्न संग्रह से आगे उत्तम लाभ मिलेगा। यदि आषाढ़ी पूर्णिमा को वर्षा हो तो एक मास तक अनाजों में अच्छी तेजी आए। आषाढ़ी पूर्णिमा को वायु परीक्षा करें।

कुं सूर्योदये

बु ४ | शु २ | ५ | ३ | सू | चं | १ रा | ६ | १२ | ७ श | के | चं ८ | ९ | १० गु | ११

आषाढ़ शु. १५ मंगल, इष्ट ०।५,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	३	९	१	६	०	६
१६	२१	९	२२	१	२८	२१	२१
२४	१५	४०	१०	४५	१६	५१	५१
४०	९	५०	१९	१०	१४	५०	५०
५७	३९	८७	४	६३	२	३	३
९	११	२२	५८	२३	११	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
आर्द्रा ३	पुन. १	पुष्य १	श्रव. ४	कृत्ति. २	विशा. ३	भर. ३	विशा. १

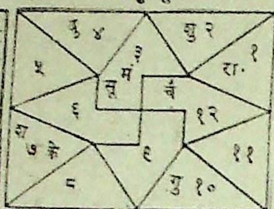
श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, प्र० श्रावण कृष्ण पक्ष ८ (३ से १७ जुलाई, सन् १९८५ ई.), द. अयन, उ. गो., वर्षा ऋतु

वि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अ.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	भा.स्टैं.टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन—मंगल अस्त है। प्रातः गुरु पश्चिम में तथा शुक्र पूर्व में होगा। सायं बुध पश्चिम में तथा शनि खमध्य से पूर्व की ओर नत दीखेगा।
३४	५५	१	बु.	२५	३०	पूषा.	१२	६	ऐं.	२२	०	कौ.	२५	३०	२०	३	१२	१४	म. २६।३८	५	२८	७	२५	२	१७	२१	४५	अशून्य शयन व्रत, [वि. मु. उ. षा.]
३४	५४	२	गु.	२१	५०	उषा.	१०	५	वै.	१६	२२	ग.	२१	५०	२१	४	१३	१५	मकर	५	२९	७	२५	२	१८	१८	५७	भ. ५०।४७ उ.,
३४	५३	३	शु.	१९	४४	श्र.	९	३२	वि.	११	५९	वि.	१९	४४	२२	५	१४	१६	कुं. ४०। ७	५	२९	७	२५	२	१९	१६	९	भ. १९।४४ या., पंचक प्रारम्भ ४०।७, सूर्य पुन. में ४६।२, A
३४	५२	४	श.	१९	२४	ध.	१०	४२	प्री.	९	०	बा.	१९	२४	२३	६	१५	१७	कुम्भ	५	२९	७	२५	२	२०	१३	१९	
३४	५०	५	र.	२१	०	श.	१३	४५	आ.	७	३२	तै.	२१	०	२४	७	१६	१८	कुम्भ	५	३०	७	२५	२	२१	१०	३१	बुध आश्ले. में ४।५२,
३४	४८	६	च.	२४	२२	पूभा.	१८	३२	सौ.	७	३०	व.	२४	२२	२५	८	१७	१९	मी. २।२०	५	३०	७	२४	२	२२	७	४४	भ. २४।२२ उ., ५६।४८ या., [वि. मु. उ. भा.]
३४	४६	७	मं.	२९	१३	उभा.	२४	४८	शो.	८	४०	ब.	२९	१३	२६	९	१८	२०	मीन	५	३१	७	२४	२	२३	४	५०	शुक्र रोहि. में ४२।५७, [वि. मु. उ. भा., रे.]
३४	४४	८	बु.	३५	९	रे.	३२	८	अ.	१०	४८	बा.	२	११	२७	१०	१९	२१	मे. ३२। ८	५	३१	७	२४	२	२४	२	९	पंचक समाप्त ३२।८, [वि. मु. रे., अ.]
३४	४२	९	गु.	४१	२७	अ.	३९	५०	सु.	१३	२५	तै.	८	१८	२८	११	२०	२२	मेष	५	३२	७	२४	२	२४	५९	२४	[वि. मु. अ.]
३४	४०	१०	शु.	४७	३२	भ.	४७	२२	धृ.	१६	२	व.	१४	२९	२९	१२	२१	२३	मेष	५	३२	७	२४	२	२५	५९	३८	भ. १४।२९ उ., ४७।३२ या., वेंकटेश मार्गी,
३४	३८	११	श.	५२	४९	कृ.	५४	७	शू.	१८	१५	ब.	२०	१०	३०	१३	२२	२४	वृ. ४।३	५	३३	७	२३	२	२६	५३	५३	कामदा एकादशी व्रत,
३४	३६	१२	र.	५६	४८	रो.	५९	३७	ग.	१९	४०	कौ.	२४	४८	३१	१४	२३	२५	वृष	५	३३	७	२३	२	२७	५१	९	
३४	३४	१३	च.	५९	२०	मृ.	६०	०	वृ.	१९	५९	ग.	२८	४	३२	१५	२४	२६	मि. ३१।३६	५	३४	७	२३	२	२८	४८	२५	भ. ५९।२० उ., मंगल कर्क में २३।५०, सोम प्रदोष व्रत,
३४	३२	१४	मं.	६०	०	मृ.	३	३९	ध्रु.	१९	८	वि.	२९	४८	श्रा	१६	२५	२७	मिथुन	५	३५	७	२२	२	२९	४५	४१	भ. २९।४८ या., संक्रांति सूर्य कर्क में १५।१०, मु. १५, B
३४	३०	१४	बु.	०	१५	आ.	६	११	व्या.	१७	१	श.	०	१५	२	१७	२६	२८	क. ५२। ७	५	३५	७	२२	३	०	४२	५८	हरियाली अमावस,
अवम		३०	बु.	५९	८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस तिथि क्षय

A श्रीगणेश चतुर्थी व्रत [वि. मु. ध.]   B पुष्य ३१।० तक,

प्र० श्राव. कृ. ८ बुध, इष्ट ५९।५८,   कुं. सूर्योदये

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	३	९	१	६	०	६
२४	२७	२१	२१	११	२७	२१	२१
५९	८	१९	२०	२३	५९	२३	२३
१९	७	१४	१९	२८	४९	१३	१३
५७	३९	६४	६	६५	१	३	३
१३	६	३३	१४	१६	२२	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पूषा. २	पुन. ३	आश्ले. २	श्रवण ४	रोहि. ४	विशा. ३	भर. ३	विशा. १



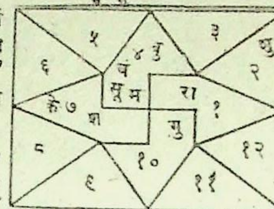
लोक भविष्य—इस पक्ष में मंगलवारी कर्क संक्रांति जनता में रोगभय, किंवा अशांति की सूचक है—"यदा कर्कस्य संक्रांतिरथवा मकरस्य वा। भवत्यर्कीक-भौमानां वारे दुःखप्रदा मता॥" पक्षान्त में अमावस के दिन सूर्य-मंगल की युति प्राकृतिक-प्रकोप से कहीं जन-धन हानि की सूचक है।

ग्रह चाल और बाजार का रुख—८ जुलाई तक रुई, सोना, चांदी, चावल, गुड़, खांड, कपास, बिनौला, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा एवं उड़द में तेजी का वातावरण रहेगा, उसके बाद पक्ष के अन्त तक साधारण तेजी के बाद मन्दा प्रधान रहेगा।

आकाश लक्षण—जुलाई ३ से ६ तक गर्मी का जोर रहे, जुलाई ७, ८, १४, १५ को बादल वर्षा का योग है, पक्षान्त में बिजली कड़के, कहीं हानि हो।

शकुन विचार—श्रावण में यदि कृत्तिका नक्षत्र में वर्षा हो तो आगे चौमासे में अच्छी वर्षा हो। यदि श्रावण कृष्ण चतुर्थी या पंचमी को बादल गरजें, बिजली चमके, किंवा वर्षा हो तो आगे सुभिक्ष रहे।

कुं. सूर्योदये   प्र० श्राव. कृ. १४ बुध, इष्ट ५९।४८,



सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	९	१	६	०	६
१	१	२७	२०	१९	२७	२१	२१
४०	४१	४७	३४	४	५२	०	०
३	२१	४	९	०	११	५७	५७
५७	३८	४२	७	६६	०	३	३
१७	५७	४	०	२७	४२	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुन. ४	पुन. ४	आश्ले. ४	श्रवण ४	रोहि. ३	विशा. ३	भर. ३	विशा. १

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, प्र. (अधि.) श्राव. शुक्ल पक्ष ९ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टें.टा. | उदय-कालिक (१८ से ३१ जुलाई सन् १९८५ ई०), द. अयन, उ. गोल, वर्षाऋतु,

ग्रह-दर्शन :—मंगल अस्त है। प्रातः गुरु को पश्चिम क्षितिज की ओर जाते हुए तथा शुक्र को पूर्व में देखें। सूर्यास्त बाद बुध पश्चिम में तथा शनि समध्यासन्न होगा।

ति. मा. घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. श्रावण	प्र. जुलाई	श. आषाढ़	मु. जिलका	चन्द्र संचार घ. प.	सू. उ. घ.	सू. उ. मि	सू. अ. घ.	सू. अ. मि	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४।२७	१	गु.	५७	४८	पुन.	७	१३	ह.	१३	४४	कि.	२८	२८	३	१८	२७	२९	कर्क	५	३६	७	२२	३	१	४०	१७	मलमास प्रारम्भ,
३४।२५	२	शु.	५४	४८	पु	७	०	व.	९	२८	बा.	२६	१८	४	१९	२८	३०	कर्क	५	३६	७	२१	३	२	३७	३५	चन्द्रदर्शन मु. १५, सूर्य पुष्य में ४४।२८,
३४।२२	३	श.	५१	१	आश्ले.	५	४६	सि.	५८	३६	तै.	२२	५४	५	२०	२९	जि	सि. ५।४४	५	३७	७	२१	३	३	३४	५३	मंगल पुष्य में ३१।४५, जिल्काद मु. प्रारम्भ,
३४।२०	४	र.	४६	३७	म.	३	४३	व.	५२	२५	ब.	१८	४६	६	२१	३०	२	सिंह	५	३७	७	२०	३	४	३२	१३	भ. १८।४८ उ., ४६।३७ या., बुध मघा सिंह में ३५।३०, A
३४।१७	५	चं.	४१	४७	पू.फा.	५७	४२	ध.	४५	५१	ब.	१४	१२	७	२२	३१	३	क. १५।१८	५	३८	७	२०	३	५	२९	३२	सूर्य सायन सिंह में ५३।५०, वक्री गुरु श्रवण ३ में ४५।३८,
३४।१४	६	मं.	३६	४१	ह.	५५	०	शि.	३९	५	कौ.	६	१६	८	२३	आ	४	कन्या	५	३९	७	१९	३	६	२६	५१	शक श्रावण प्रारंभ,
३४।११	७	बु.	३१	२६	चित्रा	५१	४१	सि.	३२	१२	ग.	४	४	९	२४	२	५	तु. २३।२१	५	३९	७	१९	३	७	२४	११	भ. ३१।२६ उ., ५८।४५ या.,
३४। ८	८	गु.	२६	४	स्वा	४८	१४	सा.	२५	१३	ब.	२६	४	१०	२५	३	६	तुला	५	४०	७	१८	३	८	२१	३१	शनि मार्गी ३६।३५,
३४। ६	९	शु	२०	३९	वि.	४४	४२	शु.	१८	११	कौ.	२०	३९	११	२६	४	७	वृ. ३०।४०	५	४०	७	१८	३	९	१८	५१	
३४। ३	१०	श.	१५	१७	अनु.	४१	२८	शु.	११	१२	ग.	१५	१७	१२	२७	५	८	वृश्चिक	५	४१	७	१७	३	१०	१६	१२	भ. ४२।३६ उ., शुक्र मिथुन में ४६।१५,
३४। ०	११	र.	१०	२	ज्ये.	३८	१५	ब्र.	४५	१५	वि.	१०	२	१३	२८	६	९	ध. ३८।१५	५	४२	७	१६	३	११	१३	३३	भ. १०।२ या., बुध वक्री २।४०, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत स.
३३।५७	१२	चं.	५	१	मू.	३५	२४	ऐं.	५१	१४	बा.	५	१	१४	२९	७	१०	धनु	५	४२	७	१६	३	१२	१०	५४	सोम प्रदोष व्रत,
३३।५४	१३	मं.	०	२८	पू.षा	३३	८	वि.	४५	२३	तै.	०	२८	१५	३०	८	११	म. ४७।४५	५	४३	७	१५	३	१३	८	१७	भ. ५६।४० उ.,
अवम	१४	मं.	५६	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३३।५०	१५	बु.	५२	३९	उ.षा.	३१	३९	प्री.	४०	१३	वि.	२५	१०	१६	३१	९	१२	मकर	५	४४	७	१४	३	१४	५	४०	भ. २५।१९ या., श्री सत्य व्रत

A शुक्र मृग. में ५०।१५,

प्र. (अधि.) श्रा. शु. ८ गुरु, इष्ट ५६।३५, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	४	९	१	६	०	६
९	६	१	१९	२७	२७	२०	२०
१८	५२	२९	३५	५६	४९	२५	२५
२६	१४	४४	५४	४३	१३	३१	३१
५७	३७	७	७	६७	०	३	३
२०	४६	३८	३५	३६	४	११	११
	मा	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुष्य	पुष्य	मघा	श्रव.	[illegible]	विशाखा	[illegible]	विशाखा

लोक भविष्य—पक्षारंभ में ही सूर्य-मंगल की अंशयुति होगी। पक्ष मध्य में शनि मार्गी हो जाता है, राजनैतिक दृष्टि से समय ठीक है लेकिन जनता में त्वचा रोग एवं कहीं आगजनी की घटना व अन्य प्राकृतिक प्रकोप से हानि भय है। यान दुर्घटना का भी योग है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—१९ जुलाई के लगभग तिल, तेल, सरसों, चावल, गेहूं, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गल तेज हों, सोने में विशेष तेजी का झटका आए। २२ जुलाई के लगभग गुड़, खांड, दबकर मन्दे हों। २५ जुलाई के लगभग लाईन बदलेगी। तिल तेल, सरसों, रुई, घी, गुड़, खांड तेज होंगे। २५ जुलाई को बाजार का रुख देखकर काम करें। २७ जुलाई के लगभग रुई, कपास, तिल तेल, सरसों में काफी मन्दी रहे।

आकाश लक्षण—जुलाई १९, २१, २३ से ३० तक व्यापक वर्षा के योग हैं। बिजली की कड़क के साथ कहीं हानि होगी।

शकुन विचार—यदि टटीहरी पक्षी सूखे गोबर, सूखा घास, बाड़ या हड्डियों के ढेर पर अपने अण्डे दे तो चौपाए पशुओं का नाश हो। अकाल, दुर्भिक्ष तथा महामारी आदि रोगों से प्रजा को कष्ट हो।

कुं. सूर्योदये प्र. (अधि.) श्रा. शु. १५ बुध, इष्ट ५९।२५,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	४	९	२	६	०	६
१५	१०	०	१८	४	२७	२०	२०
२	४४	५९	४९	४७	५१	१६	१६
२८	२६	४५	५२	७	५	२६	२६
५७	३८	२२	७	६८	०	३	३
२३	३८	४१	४७	२१	३९	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुष्य	पुष्य	मघा	श्रव.	मृग.	विशाखा	[illegible]	विशाखा

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, द्वि. (अधि.) श्राव. कृष्ण पक्ष १० | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टैं.टा. | उदय-कालिक | (१ से १६ अगस्त १९८५ ई.), द. अयन, उ. गो., वर्षाऋतु

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	मं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन—मंगल अस्त है। बुध ३ अगस्त को पश्चिम में अस्त होगा। प्रातः शुक्र पूर्व में दीखेगा। सायं गुरु पूर्व क्षितिजासन्न तथा शनि समध्यासन्न दीखेगा।
३३	४७	१	गु.	५१	५४	श्र.	३१	१६	आ.	३५	५६	बा.	२२	४६	१७	१	१०	१३	मकर	५	४४	७	१४	३	१५	३	२	अगस्त प्रारम्भ,
३३	४४	२	शु.	५१	३७	ध.	३२	१६	सौ.	३२	५३	तै.	२१	४६	१८	२	११	१४	कुं. १।४६	५	४५	७	१३	३	१६	०	२६	पंचक प्रारम्भ १।४६, सूर्य आश्ले. में ४१।२०, शुक्र आर्द्रा में ३८।२५,
३३	४१	३	श.	५२	५५	श.	३४	४६	शो.	३१	०	व.	२२	१६	१९	३	१२	१५	कुम्भ	५	४५	७	१२	३	१६	५७	५२	भ. २२।१६ उ., ५२।५५ या., वक्री बुध आश्ले. कर्क में १७।१७, A
३३	३७	४	र.	५५	५३	पू.भा.	३८	५३	अ.	३०	२५	ब.	२४	२४	२०	४	१३	१६	मी. २२।५०	५	४६	७	१२	३	१७	५५	१७	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३३	३३	५	चं.	६०	०	उ.भा.	४४	३३	सु.	३१	६	कौ.	२८	७	२१	५	१४	१७	मीन	५	४७	७	११	३	१८	५२	४५	
३३	३०	५	मं.	०	२१	रे.	५१	२३	धृ.	३२	४६	तै.	०	२१	२२	६	१५	१८	मे. ५१।२३	५	४७	७	१०	३	१९	५०	१३	पंचक समाप्त ५१।२३, राहु भरणी २ में केतु स्वाती ४ में ९।२८,
३३	२६	६	बु.	५	५६	अ.	५८	५६	शू.	३५	६	व.	५	५६	२३	७	१६	१९	मेष	५	४८	७	९	३	२०	४७	४२	भ. ५।५६ उ., ३६।१८ या.,
३३	२३	७	गु.	१२	१७	भ.	६०	०	गं.	३७	४९	ब.	१२	१७	२४	८	१७	२०	मेष	५	४९	७	८	३	२१	४५	१४	
३३	२०	८	शु.	१८	३३	भ.	६	४१	वृ.	४०	१५	कौ.	१८	३३	२५	९	१८	२१	वृ. २३।२८	५	४९	७	७	३	२२	४२	४६	
३३	१६	९	श.	२४	७	कृ.	१३	५०	ध्रु.	४२	२	ग.	२४	७	२६	१०	१९	२२	वृष	५	५०	७	७	३	२३	४०	२०	भ. ५६।१८ उ., मंगल आश्ले. में १२।२८,
३३	११	१०	र.	२८	२६	रो.	१६	५३	व्या.	४२	४५	वि.	२८	२६	२७	११	२०	२३	मि. ५२। ७	५	५०	७	६	३	२४	३७	५६	भ. २८।२६ या.,
३३	७	११	चं.	३१	९	मृ.	२४	२२	ह.	४२	६	बा.	३१	९	२८	१२	२१	२४	मिथुन	५	५१	७	५	३	२५	३५	३२	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत,
३३	३	१२	मं.	३१	५९	आ.	२७	३	व.	४०	१	कौ.	१	३४	२९	१३	२२	२५	मिथुन	५	५२	७	४	३	२६	३३	११	भौम प्रदोष व्रत,
३२	५९	१३	बु.	३०	५९	पुन.	२७	५७	सि.	३६	२६	ग.	१	२६	३०	१४	२३	२६	क. १२।४४	५	५२	७	३	३	२७	३०	५२	भ. ३०।५९ उ., ५९।३८ या., शुक्र पुन. में १२।१५,
३२	५५	१४	गु.	२८	१८	पु.	२७	९	व्य.	३१	३७	श.	२८	१८	३१	१५	२४	२७	कर्क	५	५३	७	२	३	२८	२८	३३	भारत स्वतन्त्रता दिवस,
३२	४९	३०	शु.	२४	१३	आश्ले.	२४	५८	व.	२५	३७	ना	२४	१३	आ	१६	२५	२८	सिं. २४।५८	५	५४	७	१	३	२९	२६	१५	संक्रांति सूर्य मघा सिंह में ३५।५, मु. ३०, पुण्य १९।५ बाद, B

A बुध पश्चिम में अस्त ७।२८, B मलमास समाप्त

द्वि० (अधि.) श्राव कृ. ८ शुक्र, इष्ट ५६।१३, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	९	२	६	०	६
२३	१६	२५	१७	१५	२८	१९	१९
३९	३१	१७	३९	६	०	४७	४७
३२	२८	१८	४८	२६	२६	४९	४९
५७	३७	४८	७	६९	१	३	३
३५	२९	१६	४३	२४	३१	११	११
—	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	अ	अ	उ	उ	उ	अ	प
आश्ले. ३	पुष्य ४	आश्ले. ३	श्रव. ३	आर्द्रा ३	विशा. ३	भर. २	स्वाती ४

५ सू ४ बु शु ३
६ म रा चं १ २
के ७ श गु
८ १२
९ १० ११

लोक भविष्य—श्रावण अधिक मास है, इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार है :—"श्रावणे द्वये तु दुर्भिक्षं स्वल्पवृष्टिर्भयं तथा। पापबुद्धिरता लोकाः राजानः क्रूरशासनाः॥" कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने। वर्षा कम हो, अनैतिक घटनाएं अधिक हों, शासक एवं शासित में परस्पर प्रेमभाव न रहे। पश्चिमी देशों में आन्तरिक उलझनें विषम हों। किसी मुस्लिम देश में विशेष अशान्ति व्याप्त हो।

वस्तुकाल और बाजार का रुख—३ अगस्त के लगभग तिलहन, गुड़, खांड में तेजी आती है। रुई में मन्दी, चांदी तेज हो। १० अगस्त से रुई, चांदी में मन्दा बनेगा। पक्षान्त में बाजारों में तेजी का रुख रहेगा।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में १२ अगस्त तक बादल चाल रहे, वायुवेग के साथ अनेकत्र वर्षा होगी। १३ अगस्त से पक्षान्त तक कहीं बादल चाल रहे, गर्मी का प्रकोप रहे।

शकुन विचार—टटीहरी पक्षी यदि अपने अण्डे ऊंची भूमि पर धरे तो बहुत वर्षा हो, नीची भूमि पर दे तो वर्षा बहुत कम हो, यदि अण्डे नदी, तालाब, जल के किनारे धरे तो बिल्कुल वर्षा न हो। यदि सूखे नदी, तालाब आदि में धरे तो जब तक बच्चे न निकलें तब तक वर्षा न हो।

कुं सूर्योदये द्वि०(अधि.) श्राव. कृ. ३०, शुक्र इष्ट ५९।०

श ७ के ६ ५ सू चं ४ मं शु ३
८ २
९ रा १
१० गु ११ १२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	३	३	९	२	६	०	६
०	२१	२०	१६	२३	२८	१९	१९
२३	०	२९	४६	१४	१३	२५	२५
१	३२	७	४५	२६	४	३४	३४
५७	३८	२३	७	७०	२	३	३
४५	२२	५५	२०	७	११	११	११
—	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
—	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
मघा १	आश्ले. २	आश्ले. २	श्रव. ३	पुन. २	विशा. ३	भर. २	स्वाती ४

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, द्वि. (शुद्ध) श्राव. शुक्ल पक्ष ११ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टैं.टा. | उदय-कालिक | (१७ से ३० अगस्त १९८५ ई.), द. अयन, उ. गो., वर्षा-शरद्-ऋतु

ग्रह-दर्शन —मंगल अस्त है। बुध १९अगस्त से पूर्व में उदित होकर प्रातः दिखाई देगा। उषः काल में शुक्र पूर्व में दीखेगा। सूर्यास्त बाद गुरु पूर्व में तथा शनि पश्चिमकपाल में होगा।

वि. भा. घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	शं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३२ ४५	१	श.	१६	५	म.	२१	४५	प.	१८	४३	ब.	१६	५	२	१७	२६	२१	सिंह	५	५४	७	०	४	०	२३	५६	चन्द्रदर्शन मु. ३०, वक्री गुरु श्रव. २ में ५४।२, नक्तव्रत प्रारम्भ,
३२ ४१	२	र.	१३	१३	पू.फा.	१७	४८	शि.	११	२०	कौ.	१३	१३	३	१८	२७	जि	क. ३१।४२	५	५५	६	५९	४	१	२१	४४	जिल्हिज मु. प्रा.,
३२ ३७	३	चं.	६	५६	उ.फा.	१३	२८	सि.	३/५४	३३/३८	ग.	६	५६	४	१९	२८	२	कन्या	५	५५	६	५८	४	२	१९	३०	भ. ३३।४६ उ., बुध पूर्व में उदित २४।२८, सन्धारा तीज, A
३२ ३४	४	मं.	०	३५	ह.	९	५	शु.	४७	५३	वि.	०	३५	५	२०	२९	३	तु. ३६।५८	५	५६	६	५७	४	३	१७	१८	भ. ०।३५ या., नाग पंचमी,
अवम	५	मं.	५४	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथिक्षय,
३२ ३०	६	बु.	४८	२६	चि.	४	५२	शु.	४०	१९	कौ.	२१	२५	६	२१	३०	४	तुला	५	५७	६	५६	४	४	१५	६	बुध मार्गी २५।१०, श्री कल्कि जयन्ती,
३२ २५	७	गु.	४२	५६	स्वा.	०/५७	३९/३३	ब्र.	३३	५	ग.	१५	४१	७	२२	३१	५	बृ. ४३।२२	५	५७	६	५५	४	५	१२	५६	भ. ४२।५६ उ., शुक्र कर्क में ४४।४८, श्री तुलसीदास जयन्ती,
३२ २२	८	शु.	३७	५८	अनु.	५४	३७	ऐं	२६	१७	वि.	१०	२७	८	२३	भा	६	वृश्चिक	५	५८	६	५४	४	६	१०	४७	भ. १०।२७ या., सूर्य सा. कन्या में १०।३०, शरद् ऋतु प्रारम्भ B
३२ १८	९	श.	३३	३०	ज्ये.	५२	१३	वै.	१९	५४	बा.	५	४४	९	२४	२	७	ध. ५२।१३	५	५८	६	५३	४	७	८	३८	
३२ १३	१०	र.	२९	३८	मू.	५०	२८	वि.	१३	५८	तै.	१	३४	१०	२५	३	८	धनु	५	५९	६	५१	४	८	६	३१	भ. ५८।२ उ., शुक्र पुष्य में ३४।२०,
३२ ५	११	चं.	२६	२७	पू.षा.	४९	२३	प्री.	८	३५	वि.	२६	२	११	२६	४	९	धनु	६	०	६	५०	४	९	४	२४	भ. २६।२७ या., पवित्रा एकादशी व्रत,
३२ ३	१२	मं.	२३	५८	उ.षा.	४९	२	आ.	३/२६	६४/३५	बा.	२३	५८	१२	२७	५	१०	म. ४।१९	६	०	६	४९	४	१०	२	२०	भौम प्रदोष व्रत,
३१ ५९	१३	बु.	२२	२१	श्र.	४९	३६	शो.	५६	१३	तै.	२२	२१	१३	२८	६	११	मकर	६	१	६	४८	४	११	०	१६	ऋग्वेदियों का उपाकर्म (श्रावणी)
३१ ५५	१४	गु.	२१	४५	ध.	५१	१५	अ.	५३	३५	व.	२१	४५	१४	२९	७	१२	कुं. २०।२६	६	१	६	४७	४	११	५८	१३	भ. २१।४५ उ., ५२।२ या., पंचक प्रा. २०।२६, यूरेनस मार्गी, C
३१ ५०	१५	शु.	२२	१८	श.	५४	३	सु.	५१	५७	ब.	२२	१८	१५	३०	८	१३	कुम्भ	६	२	६	४६	४	१२	५६	१३	सूर्य पू. फा. में २४।३८, रक्षा बन्धन (राखी), शुक्ल-कृष्ण D

A हरियाली तीज, मधुस्रवा तृतीया B श्री दुर्गाष्टमी, दूर्वाष्टमी व्रत, (देखें पृष्ठ ५९/६०), शक भाद्रपद प्रारम्भ, मेला श्री नयनादेवी व चिन्त पूरणी (हि. प्र.) C श्री सत्य व्रत
D यजुर्वेदियों एवं सामवेदियों का उपाकर्म, ऋषितर्पणी, मेला श्री अमरनाथ (काश्मीर)

द्वि० श्राव शु. ८ शुक्र, इष्ट ५८।५०, कुं. सूर्योदये

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	शं.	रा.	के.
४	३	३	९	३	६	०	६
७	२५	२०	१५	१	२८	१९	१९
७	२८	९	५७	२७	३०	३	३
२९	४८	४७	५	१५	१४	१८	१८
५७	३८	२७	६	७०	२	३	३
५२	१९	३५	४३	४७	४९	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मघा ३	आश्ले. ३	आश्ले. २	श्र. २	पुन. ४	विशा. ३	भर. २	स्वाती ४

श ६ | ५ | म ४ बु शु | ७ के | सू | ३ | ८ | चं | २ | ९ | ११ | १ रा | १० गु | १२

लोक भविष्य—शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध बना हुआ है, चीन, जापान, भारत के देहली, काश्मीर, गुजरात, राजस्थान में राजनैतिक गतिविधियां तीव्र रहेंगी। अफ्रीकी देशों में अशान्ति रहे। सीमा प्रान्तों पर हलचल रहे। बृहस्पति की कर्क राशि पर दृष्टि शुभ है, भारत की कोई समस्या सुलझेगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, चांदी, सोना, सरसों में तेजी के बाद शीघ्र ही मन्दी आएगी। गेहूं, चना, तिल, घी, पाट, लालमिर्च तेज हो। २२ अगस्त से रुई में पहले अच्छी मन्दी बाद में तेजी आती है। तेलबीया, गुड़, खांड, शक्कर में तथा चांदी, चावल में भी तेजी आती है। ३० अगस्त के लगभग जीरा, सरसों, तिल, तेल आदि में तेजी बनेगी।

आकाश लक्षण—१८ अगस्त से २५ अगस्त तक वायुवेग के साथ बादल चाल, वृष्टि होगी। २२ अगस्त के बाद कुछ प्रान्तों में अच्छी वर्षा का भी योग बनता है। तत्पश्चात् मौसम में कुछ परिवर्तन होने लगेगा।

शकुन विचार—यदि श्रावण शुक्ल पंचमी से दो दिन लगातार वर्षा हो, दक्षिण-पश्चिम की वायु चले तो अन्न तेज और दुर्भिक्ष की स्थिति बने। आकाश निर्मल रहे तो गेहूं, जौ, चना के स्टाक में आगे लाभ निश्चित होगा।

कुं सूर्योदये द्वि० श्राव. शु. १५ शुक्र, इष्ट ४८।४०,

६ | ५ | म ४ बु शु | ७ श के | सू | ३ | ८ | २ | चं | ९ | ११ | रा १ | १० गु | १२

सू.	म.	बु.	गु	शु.	श.	रा.	के.
४	३	३	९	३	६	०	६
१३	२९	२५	१५	९	२८	१८	१८
५२	५६	५९	१२	४४	५१	४१	४१
५५	१८	४	२५	२४	४४	३	३
५७	३८	७७	५	७१	३	३	३
५९	९	४	५१	२०	१५	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पू.फा. १	आश्ले. ४	आश्ले. ३	श्र. २	पुष्य २	विशा. ३	भर. २	स्वाती ४

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १२ (३१ अग. से १४ सितं., १९८५ ई.), द. अयन, उ. गो., शरद् ऋतु

दि. मा. घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	बं.	म.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	भा.स्टैं.टा. सूर्योदय सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३१।४५	१	श.	२४	८	पूभा.	२८	११	धृ	५१	२४	कौ.	२४	८	१६	२१	९	१४	मी. ४२१ ९	६	३	६	४५	४	१३	५४	१८	मंगल मघा सिंह में ४।२८,
३१।४२	२	र.	२७	२२	उभा.	६०	०	शू.	५१	५३	ग.	२७	२२	१७	सि	१०	१५	मीन	६	३	६	४३	४	१४	५२	१५	भ. ५९।३७ उ., सितम्बर प्रारम्भ,
३१।३८	३	च.	३१	५२	उभा.	३	३६	ग.	५३	१७	वि.	३१	५२	१८	२	११	१६	मीन	६	४	६	४२	४	१५	५०	१९	भ. ३१।५२ या., बुध मघा सिंह में ५३।५२, बहुला चतुर्थी व्रत A
३१।३४	४	मं.	३७	२९	रे.	१०	१०	वृ.	५५	२८	ब.	४	४०	१९	३	१२	१७	मे. १०।१०	६	४	६	४१	४	१६	४८	२६	पंचक स. १०।१०
३१।३०	५	बु.	४३	४८	अ.	१७	३८	ध्रु.	५८	४	कौ.	१०	३८	२०	४	१३	१८	मेष	६	५	६	४०	४	१७	४६	३२	अगस्त्य उदित,
३१।२५	६	गु.	५०	२१	भ.	२५	२७	व्या.	६०	०	ग.	१७	५	२१	५	१४	१९	वृ. ४२।२२	६	६	६	३९	४	१८	४४	४३	भ. ५०।२१ उ., शुक्र आश्ले. में ४६।५५, चन्द्र षष्ठी व्रत,
३१।२०	७	शु.	५६	२८	कृ.	३३	८	व्या.	०	४४	वि.	२३	२४	२२	६	१५	२०	वृष	६	६	६	३७		१९	४२	५५	भ. २३।२४ या.,
३१।१६	८	श.	६०	०	रो.	३९	५७	ह.	२	०	बा.	२८	५८	२३	७	१६	२१	वृष	६	७	६	३६	४	२०	४१	८	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्म. श्री कृष्ण जयन्ती, (चन्द्रोदय B
३१।११	८	र.	१	२८	मृ.	४५	२७	व.	४	२३	कौ.	१	२८	२४	८	१७	२२	मि. १२।४२	६	७	६	३५	४	२१	३९	२५	बुध पूर्व में अस्त १०।२८, गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव),
३१।६	९	च.	४	५७	आ.	४९	११	सि.	४	३५	ग.	४	५७	२५	९	१८	२३	मिथुन	६	८	६	३४	४	२२	३७	४४	भ. ३५।४४ उ., मंगल उदित ७।४२, गुग्गा नवमी,
३१।१	१०	मं.	६	३१	पुन.	५०	५३	व्य.	३	१७	वि.	६	३१	२६	१०	१९	२४	क. ३५।३२	६	८	६	३२	४	२३	३६	३	भ. ६।३१ या., बुध पू.फा. में ३८।१०,
३०।५६	११	बु.	६	०	पु.	५०	३८	व.	[illegible]	[illegible]	बा.	६	०	२७	११	२०	२५	कर्क	६	९	६	३१	४	२४	३४	२६	नेपच्यून मार्गी, अजा एकादशी व्रत,
३०।५२	१२	गु.	३	३१	आश्ले.	४८	३३	शि.	४९	२३	तै.	३	३१	२८	१२	२१	२६	सि. ४८।३३	६	१०	६	३०	४	२५	३२	५०	भ. ५९।१५ उ., प्रदोष व्रत,
अवम	१३	गु.	५९	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
३०।४८	१४	शु.	५३	४०	म.	४४	५५	सि.	४२	३७	वि.	२६	२८	२९	१३	२२	२७	सिंह	६	१०	६	२९	४	२६	३१	१९	भ. २६।२८ या., सूर्य उ. फा. में ८।५८,
३०।४४	३०	श.	४६	३७	पू.फा.	४०	६	सा.	३४	२४	च.	२०	८	३०	१४	२३	२८	क. ५३।४४	६	११	६	२७	४	२७	२९	४५	शनैश्चरी अमावस, कुशोत्पाटिनी अमावस ('ॐ हूं फट्' मन्त्र से), ‡

ग्रह-दर्शन—४ सितम्बर को सुदूर दक्षिण में अगस्त्य तारा दिखाई देगा। ८ सित. को प्रातः पूर्व में बुधास्त होगा। ९ सित. को पूर्व में मंगल को देखें। प्रातः शुक्र पूर्व में, सायं गुरु पूर्वकपाल में तथा शनि पश्चिमकपाल में होंगे।

A (देखे पृ. ५९/६०) B रात्रि ११ बजकर १२ मि.), ‡ पिठोरी अमावस,

भाद्र. कृ. ८ शनि, इष्ट ५८।२८,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	४	९	३	६	०	६
२१	५	८	१४	१९	२९	१८	१८
३७	१	२७	२९	१७	२१	१५	१५
५४	१५	५	५२	३८	२१	३६	३६
५८	३८	'''	४	३२	४	३	३
१८	५	३६	३९	३	४	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व	व.
	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पू.फा.	मघा	मघा	श्रवण	आर्द्रा	विशा.	मू.	मृगशी ४

कुं. सूर्योदये

श ७ के, ६, ५ सू, ४ शु, ३, बु, म, च, ८, २, ९, रा, १, १० गु, ११, १२

लोक भविष्य—इस मास में पांच शनिवार हैं, नानाविध रोगों से परेशानी बढ़े। आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होने से जनता में रोष व्याप्त हो। पाँच सितम्बर को मंगल-बुध की युति एवं बुध का अतिचार श्रमिक वर्ग में असन्तोष पैदा करेगा।

ग्रह चाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में मूंग, मोठ, उड़द, तिल, सरसों, मूंगफली, राई, गेहूं, चना, जौ, सूती वस्त्र, रुई में तेजी बनेगी,। ६ सितम्बर से लगभग १२ सितम्बर तक बाजारों में सामान्यतया मन्दे का रुख रहेगा। पक्षान्त में १३, १४ सितम्बर को तेजी का वातावरण रहेगा।

आकाश लक्षण—अगस्त ३१ एवं सितम्बर २, ३, ७, ८, ९, ११ को आकाश में बादल, कहीं बूंदाबांदी, वायु का जोर व खण्ड वृष्टि संभव है। रात्रि में शीत बढ़ने लगेगी।

शकुन विचार— यदि भाद्रपद कृष्ण ३ को उत्तर में बादल चाल हो तो अन्न संग्रह से छठे मास लाभ हो।

कुं. सूर्योदये

७ के श, ६, चं मं बु, ५ सू, शु ४, ३, ८, २, ९, ११, रा १, १० गु, १२

भाद्र. कृ. ३० शनि, इष्ट ५८।१७,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	४	९	३	३	०	६
२८	९	२१	१४	२७	२९	१७	१७
२६	२७	३१	०	४३	५१	५३	५३
३५	३६	३	५४	३०	२३	२१	२१
५८	३८	'''	३	७२	४	३	३
३१	१	४०	२७	३४	३५	११	११
—	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.फा. १	मघा ३	पू.फा. ३	श्रवण २	आर्द्रा ४	विशा. ३	मू. ३	मृगशी ४

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, भाद्रपद शुक्ल पक्ष १३ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टैं.टा. | उदय-कालिक (१५ से २८ सितं. सन् १९८५ ई०) द.अयन, उ.-द. गो., शरद ऋतु

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	ग्रं.	स.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घ.	मि.	सू.अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह-दर्शन—बुध अस्त है। प्रातः पूर्व में मंगल-शुक्र परस्पर आसन्न होंगे। सायं गुरु को पूर्वकपाल में तथा शनि को पश्चिम-कपाल में देखें।
३०	४०	१	र.	२६	३	उ.फा.	३४	३३	शु.	२५	३१	कि.	१२	५०	३१	१५	२४	२६	कन्या	६	११	६	२६	४	२८	२८	१५	नक्तव्रत समाप्त,
३०	३५	२	च.	३१	०	ह.	२८	३७	शु.	१६	१६	बा	५	५	प्र.	१६	२५	३०	तु. ५५।३६	६	१२	६	२५	४	२९	२६	४८	चन्द्रदर्शन मु. ३०, सं. सूर्य कन्या में ३४।०, मु. ३० पुण्य १८।० A
३०	३०	३	मं.	२३	१४	चि.	२२	४१	ब	[illegible]	[illegible]	ग.	२३	१४	२	१७	२६	मु.	तुला	६	१२	६	२४	५	०	२५	२२	भ. ४६।३० उ., बुध उ.फा. में ४१।४८, कलंक चतुर्थी (चन्द्रास्त B
३०	२५	४	बु.	१५	४५	स्वा.	१७	१०	वै.	४६	१६	व.	१५	४५	३	१८	२७	२	वृ. ५८।२९	६	१३	६	२२	५	१	२३	५७	भ. १५।४५ वा., ऋषि पंचमी, विनायक सिद्धिव्रत,
३०	२०	५	गु	८	५३	वि.	१२	१६	वि.	४१	१६	बा.	८	५३	४	१९	२८	३	वृश्चिक	६	१३	६	२१	५	२	२२	३५	बुध कन्या में २८।३८, सूर्य षष्ठीव्रत,
३०	१५	६	शु.	२	५०	अनु	८	१२	प्री.	३४	७	तै.	२	५०	५	२०	२९	४	वृश्चिक	६	१४	६	२०	५	३	२१	१३	भ. ५७।३५ उ.,
अवम		७	शु.	५७	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय
३०	१०	८	श.	५३	५८	ज्ये	५	११	आ.	२७	४७	वि.	२५	४६	६	२१	३०	५	ध. ५।११	६	१५	६	१८	५	४	१९	५३	भ. २५।४६ वा., मंगल पू.फा. में ५।१८, श्री राधाष्टमी, श्री महा- C
३०	५	९	र.	५१	१०	मू.	३	१५	सौ.	२२	२०	बा.	२२	३४	७	२२	३१	६	धन	६	१५	६	१७	५	५	१८	३६	श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
३०	०	१०	च.	४६	३२	पू.षा	२	२५	शो.	१७	४८	तै.	२०	२१	८	२३	आ	७	म. १७।३०	६	१६	६	१६	५	६	१७	१९	सूर्य सायन तुला में ३।३५, दक्षिण गोल प्रा., विषुवदिन, शक D
२९	५६	११	मं.	४१	४	उ.षा	२	४५	अ	१४	१२	व.	१९	१८	९	२४	२	८	मकर	६	१६	६	१५	५	७	१६	४	भ. १९।१८ उ., ४१।४ वा., बुध हस्त में ५७।२२, पद्मा एकादशी E
२९	५१	१२	बु.	४६	४१	श्र.	४	११	सु.	११	२८	ब.	१९	२२	१०	२५	३	९	फ. ३५।२६	६	१७	६	१३	५	८	१४	५२	पंचक प्रा. ३५।२६, श्री वामन द्वादशी, श्रवण द्वादशी व्रत
२९	४६	१३	गु.	५१	२८	ध.	६	४१	धृ	६	३६	कौ.	२०	३४	११	२६	४	१०	कुम्भ	६	१७	६	१२	५	९	१३	४०	सूर्य हस्त में ४७।१८, प्रदोष व्रत
२९	४२	१४	शु.	५४	२२	श.	१०	२०	शू.	८	३९	ग.	२२	५५	१२	२७	५	११	मी. ५८।५१	६	१८	६	११	५	१०	१२	३०	भ. ५४।२२ उ., शुक्र पू.फा. में ४८।२०, अनन्त चतुर्दशी,
२९	३८	१५	श.	५८	१६	पू.भा.	१५	१	ग.	८	३१	वि.	२६	२०	१३	२८	६	१२	मीन	६	१९	६	१०	५	११	११	२३	भ. २६।२०, श्री सत्य व्रत, प्रोष्ठपदी पूर्णिमा,

A बाद, शुक्र मघा सिंह में ५१।५, शनि विशा. ४ वृश्चिक में ५०।१२, मेला बाबा गुसांईआणां (कुराली पंजाब), C लक्ष्मी व्र. प्रारंभ (देखें पृ. ५९/६०), D आश्विन प्रा., E व्रत
B रात्रि ८ घं. ११ मि.), श्री वराह जयन्ती, हरितालिका व्रत, मुहर्रम (हिजरी सन् १४०६) प्रारम्भ

भाद्र शु. ८ शनि, इष्ट ५८।७,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	५	९	४	७	०	६
५	१३	४	१३	६	०	१७	१७
१९	५३	३६	४०	१२	२४	३१	३१
४५	२५	७	४४	५०	५७	६	६
५८	३७	[illegible]	२	७३	५	३	३
४२	५५	१६	७	१	३	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

लोक भविष्य—इस पक्ष में शनि वृश्चिक राशि में प्रवेश करके पुनः शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध बना लेता है—

"यदा वृश्चिकगः सौरिः मेदिनी दुःखसंयुता।
वर्षमात्र भयो घोर्यं इन्द्रप्रस्थो विनश्यति॥"

देहली किंवा कुछ अन्य प्रान्तों में जनता में अशान्ति बढ़ेगी। कुछ अघटित घटनाएं ऐतहासिक रूप ले लेंगी। विशिष्ट प्रधान नेता के लिए समय उलझनपूर्ण है। सीमा प्रान्तों पर सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ बने। आगजनी किंवा अन्य दुर्घटना में हानि भय है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—१६ सितंबर के लगभग सोना, तांबा, जौ, चना, कालमिर्च, गुड़, खांड, शक्कर, गेहूं, मसूर, तिल, अजवायन, मेथी, रुई और चांदी में उत्तम तेजी बनेगी; फिर भी बाजार के रुख के विरुद्ध काम न करें।

आकाश लक्षण—सितं. १६, १७, १९, २१, २६ को कहीं बादल चाल, बूंदाबांदी हो, वायु का जोर रहे।

शकुन विचार—भाद्र शुक्ल पूर्णिमा को यदि आकाश निर्मल रहे तो गेहूं, जौ, चना, चावल का स्टाक करें आगे निश्चय ही लाभ हो, इस दिन अगर बादल हों तो धान का स्टाक तुरन्त ही निकालें, आगे निश्चय ही मंदा आएगा।

कुं. सूर्योदये

भाद्र शु. १५ शनि, इष्ट ५७।५८,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	५	९	४	७	०	६
१२	१८	१७	१३	१४	१	१७	१७
८	१८	२	२९	४५	१	८	८
१९	४०	६	५९	११	४३	५०	५०
५८	३७	[illegible]	०	७३	५	३	३
५४	५१	५५	४६	२६	३०	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, आश्विन कृष्ण पक्ष १४' | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टैं.टा. | उदय-कालिक (२९ सितं. से १४ अक्तू. सन् १९८५ ई०), द. अ., द. गोल, शरद् ऋतु,

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	रा.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२९	३३	१	र.	६०	०	उ.भा.	२०	४३	वृ.	९	१२	बा.	३०	४९	१४	२९	७	१३	मीन	६	१९	६	८	५	१२	१०	१३	महालय (श्राद्ध) प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध
२९	२९	१	चं.	३	१९	रे.	२७	२३	ध्रु.	१०	३९	कौ.	३	१९	१५	३०	८	१४	मे. २७।२३	६	२०	६	७	५	१३	९	१२	पञ्चक समाप्त २७।२३, द्वितीया का श्राद्ध
२९	२४	२	मं.	९	११	अ.	३४	४५	व्या.	१२	४४	ग.	९	११	१६	अ.	९	१५	मेष	६	२०	६	६	५	१४	८	११	भ. ४२।२४ उ., तृतीया का श्राद्ध, अक्तूबर प्रारम्भ
२९	१९	३	बु.	१५	३७	भ.	४२	३५	ह.	१५	१३	वि.	१५	३७	१७	२	१०	१६	वृ. ५९।३३	६	२१	६	४	५	१५	७	१२	भ. १५।३७ या., बुध चित्रा में ४०।५०, वेंकटेश स्वाती २ में, A
२९	१५	४	गु.	२२	२०	कृ.	५०	२८	व.	१७	५५	बा.	२२	२०	१८	३	११	१७	वृष	६	२२	६	३	५	१६	६	१४	गुरु मार्गी ३२।५०.
२९	११	५	शु.	२८	४७	रो.	५७	५३	सि.	२०	२५	तै.	२८	४७	१९	४	१२	१८	वृष	६	२२	६	२	५	१७	५	२०	पञ्चमी का श्राद्ध,
२९	७	६	श.	३४	२७	मृ.	६०	०	व्य.	२२	२४	ग.	१	३७	२०	५	१३	१९	मि. ३१। ७	६	२३	६	१	५	१८	४	२६	भ. ३४।२७ उ., षष्ठी का श्राद्ध,
२९	२	७	र.	३८	५३	मृ.	४	२१	व.	२३	३०	वि.	६	४०	२१	६	१४	२०	मिथुन	६	२३	६	०	५	१९	३	३७	भ. ६।४० या., बुध तुला में ४४।३५, सप्तमी का श्राद्ध.
२८	५७	८	चं.	४१	३४	आ.	९	२४	प.	२३	२०	बा.	१०	१४	२२	७	१५	२१	क. ५६।४९	६	२४	५	५८	५	२०	२	५०	श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त, अष्टमी का श्राद्ध,
२८	५३	९	मं.	४२	१८	पुन.	१२	३८	शि.	२१	४१	तै.	११	५६	२३	८	१६	२२	कर्क	६	२५	५	५७	५	२१	२	४	शुक्र उ.फा. में ३९।४५, राहु भर. १ में केतु स्वाती ३ में १।४५ B
२८	४८	१०	बु.	४०	५८	पु.	१३	५५	सि.	१८	२७	व.	११	३८	२४	९	१७	२३	कर्क	६	२५	५	५६	५	२२	१	२१	भ. ११।३८ उ., ४०।५८ या., दशमी का श्राद्ध
२८	४४	११	गु.	३७	३३	आश्ले.	१३	८	सा.	१३	३४	ब.	९	१६	२५	१०	१८	२४	सिं. १३। ८	६	२६	५	५५	५	२३	०	४१	सूर्य चित्रा में १९।३२, बुध स्वाती में ५६।३०, इन्दिरा एकादशी E
२८	४०	१२	शु.	३२	२०	म.	१०	२६	शु.	७/५९	५/५९	कौ.	४	५६	२६	११	१९	२५	सिंह	६	२७	५	५३	५	२४	०	३	शुक्र कन्या में २१।४८, बुध पश्चिम में उदित, ३५।५२ प्रदोष व्रत, F
२८	३५	१३	श.	२५	३६	पू.फा.	६	६	ब्र.	५०	१०	व.	२५	३६	२७	१२	२०	२६	कं. १९।३५	६	२७	५	५२	५	२४	५९	२७	भ. २५।३६ उ. ५१।३८ या., मंगल उ.फा. में १३।०८, त्रयोदशी ॐ
२८	३०	१४	र.	१७	४१	उ.फा.	०/५४	२५/४	ऐं.	४०	४१	श.	१७	४१	२८	१३	२१	२७	कन्या	६	२८	५	५१	५	२५	५८	५३	शस्त्र, विष आदि से मरे हुओं का श्राद्ध, चतुर्दशी, अमावस, पूर्णिमा G
२८	२५	३०	चं.	८	५९	चि.	४६	५५	वै.	३०	२८	ना.	८	५९	२९	१४	२२	२८	तु. २०।२८	६	२८	५	५०	५	२६	५८	२१	सोमवती अमावस, मातामह (नाना) का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, H

ग्रह-दर्शन—बुध ११ अक्तू. से सायं पश्चिम में देखा जा सकेगा। प्रातः पूर्व में मंगल एवं शुक्र आसन्न दीखेंगे। सायं गुरु पूर्वकपाल में तथा शनि पश्चिमकपाल में देखा जा सकता है।

A श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध, जन्म दिन महात्मा गांधी
B नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध
F द्वादशी का श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध
G का श्राद्ध. सर्वपितृ श्राद्ध (देखें पृ. ५९/६०)
E व्रत . एकादशी का श्राद्ध
H शारद नवरात्र प्रारम्भ, (देखें पृ. ५९/६०)
ॐ का श्राद्ध,

आश्विन कृष्ण ८ चन्द्र, इष्ट ५७।४५, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	६	९	४	७	०	६
२०	२३	१	१३	२५	१	१६	१६
५९	५९	५७	३०	४८	५३	४०	४०
४९	६	३६	१९	१०	१२	१३	१३
५९	३७	९५	१	७३	५	३	३
१५	४८	२८	१	५६	५९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	[illegible]	उ	उ	उ	अ	अ
हस्त. ४	पू.फा. ४	चित्रा ३	श्रव. २	पू.फा. ४	विशा. ४	भर. २	स्वा. ४

८ श | ७ बु के | ६ सू | मं ५ शु | ४ | ९ | ३ च | गु १० | १२ | २ | ११ | १ रा

लोक भविष्य—इस मास में ५ रविवार रोग, पीड़ाकारक है। फ्रांस, अफगानिस्तान, जर्मनी, जापान में कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से हानि होगी। ५ अक्तू. को मंगल-शुक्र युति वर्षा में अवरोधक है। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षमध्य में रुई, चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मन्दे का वातावरण रहे। गुड़, खांड, रस पदार्थ कुछ तेज रहेंगे। पक्षांत में बाजार मन्दे रहेंगे।

कुं. सूर्योदये आश्विन कृष्ण ३० चन्द्र, इष्ट ५७।३५,

के ७ बु | ५ मं | ८ श | शु ६ सू च | ४ | ९ | ३ | १० गु | १२ | २ | ११ | १ रा

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	६	९	५	७	०	६
२७	२८	१२	१३	४	२	१६	१६
५५	२३	५०	४१	२६	३६	१७	१७
२५	३०	४४	३६	४९	७	५७	५७
५९	३७	९०	१	७४	६	३	३
३१	४५	३१	२४	१८	१९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
चित्रा १	उ.फा. १	स्वा. १	श्रव. ३	उ.फा. ३	विशा. ४	भर. १	स्वा. ३

आकाश लक्षण—अक्तू. ३, ६, ८, ११, १२ को आसाम, हैदराबाद, शिलांग, सिक्किम में एवं पंजाब के कुछ भागों में बादलचाल के योग हैं।

शकुन विचार—आश्वि. कृ. दशमी से द्वादशी तक यदि मेघ गरजें, बिजली चमके तो गेहूं का भाव तेज होता है।

श्री वि. स. २०४२, शाक १९०७, आश्विन शुक्ल पक्ष १५ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टैं.टा. | उदय-कालिक (१५ से २८ अक्तू. १९८५ ई.), व. श्र. व. गो. शरद्-हेमन्त ऋतु,

ग्रह-दर्शन —प्रातः पूर्व में शुक्र एवं उससे ऊपर मंगल दीखेगा। सांय गुरु खमध्यासन्न, शनि पश्चिमकपाल में तथा बुध पश्चिम में दीखेगा।

वि. म. घ.	प	तिथि	वार	घ	प	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	प्र. आश्वि.	अं. अक्टू.	श. कार्ति.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	च.	५६	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय
२८	२०	२	चं.	५१	३०	स्वा.	३६	५१	वि.	२०	७	बा.	२५	४४	३०	१५	२३	२९	तुला	६	२९	५	४९	५	२७	५७	५१	चन्द्रदर्शन मु. १५,
२८	१५	३	बु.	४२	२८	वि.	३३	७	प्री.	६	५५	तै.	१६	५९	३१	१६	२४	स.	वृ. १६।४७	६	३०	५	४८	५	२८	५७	२४	सफर, मु. प्रा,
२८	१०	४	गु.	३४	४३	अनु.	२७	७	आ.	[illegible]	[illegible]	व.	८	३६	का.	१७	२५	२	वृश्चिक	६	३०	५	४६	५	२९	५६	५८	भ. ८।३६ उ., ३४।४३ या., सं. सूर्य तुला में ३।५, मु. ३०, पुण्य A
२८	६	५	शु.	२८	७	ज्ये.	२२	१३	सौ	४३	१५	ग.	१	५	२	१८	२६	३	ध. २२।१३	६	३१	५	४५	६	०	५६	३४	उपांग ललिता व्र., सरस्वती आवाहन,
२८	२	६	श.	२२	५१	मू.	१८	३८	अ.	३६	२४	तै.	२२	५१	३	१९	२७	४	धनु	६	३२	५	४४	६	१	५६	१२	बुध विशा. में ४६।१५, शुक्र शत. में २६।१८,
२७	५८	७	र.	१९	८	पू.षा.	१६	३४	सु.	३०	५१	व.	१९	८	४	२०	२८	५	म. ३१।२९	६	३३	५	४३	६	२	५५	५१	भ. १९।८ उ., ४८।६ या., सरस्वती पूजनम्, सरस्वती के लिए B
२७	५४	८	सं.	१७	५	उ.षा.	१६	९	धृ.	२६	३५	ब.	१७	५	५	२१	२९	६	मकर	६	३३	५	४२	६	३	५५	३१	शनि अनु. १ में ४६।५८, श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी, सरस्वती विसर्जन
२७	५०	९	मं.	१६	४१	श्रव.	१७	१९	शू.	२३	३८	कौ.	१६	४१	६	२२	३०	७	कुं. ४८।४१	६	३४	५	४१	६	४	५५	१४	पंचक प्रा. ४८।४१, विजयादशमी (दशहरा) (देखें पृ. ५९/६०), C
२७	४५	१०	बु.	१३	५४	ध.	२०	३	गं.	२१	५४	ग.	१३	५४	७	२३	का.	८	कुम्भ	६	३५	५	४०	६	५	५४	५८	भ. ४९।१२ उ., सूर्य स्वाती में ४५।१२, सूर्य सा. वृश्चिक में D
२७	४०	११	गु.	२०	३१	श.	२४	९	वृ.	२१	१५	वि.	२०	३१	८	२४	२	९	कुम्भ	६	३५	५	३९	६	६	५४	४४	भ. २०।३१ या., पापांकुशा एकादशी व्र.,
२७	३५	१२	शु.	२४	२३	पू.भा.	२९	२५	ध्रु.	२१	३१	बा.	२४	२३	९	२५	३	१०	मी. १३।६	६	३६	५	३८	६	७	५४	३१	
२७	३०	१३	श.	२९	१८	उ.भा.	३५	४०	व्या.	२२	३६	तै.	२९	१८	१०	२६	४	११	मीन	६	३७	५	३७	६	८	५४	२१	बुध वृश्चिक में ५०।३२, शनि प्रदोष व्रत,
२७	२६	१४	र.	३४	५९	रे.	४२	३८	ह.	२४	१७	व.	२	८	११	२७	५	१२	मे. ४२।३८	६	३७	५	३६	६	९	५४	१२	भ. ३४।५९ उ., पंचक स. ४२।३८, कोजागरी व्र.,
२७	२२	१५	चं.	४१	१२	अ.	५०	८	व.	२३	२४	वि.	८	८	१२	२८	६	१३	मेष	६	३८	५	३५	६	१०	५४	५	भ. ८।६ या., श्री सत्य व्र., खग्रास चन्द्रग्रहण, शरत्पूर्णिमा E

A १९।५ तक, मंगल कन्या में ३०।५७

B बलिदान

C नवरात्र समाप्त, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, शमी पूजा

D २५।५५, हेमन्त ऋतु प्रा., शक कार्तिक प्रा., भरत मिलाप,

E महर्षि श्री वाल्मीकि जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रारम्भ

आश्विन शुक्ल ८ चन्द्र, इष्ट ५७।२२, कुं. सूर्योदये

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	६	९	५	७	०	६
४	२	२३	१४	१३	३	१५	१५
५२	४७	९	२	७	२१	५५	५५
३५	२८	३७	२३	३५	८	४२	४२
५९	३७	८५	३	७४	६	३	३
४३	४०	३३	४३	३३	३५	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लोक भविष्य—पक्षमध्य में अनुराधा नक्षत्र को शनि पश्चिमी देशों में आगे कहीं भयंकर संग्राम की सूचना देता है, रक्तपात से पड़ोसी देश चिन्तित होंगे, कुछ समृद्ध देशों की कुनीति से स्थिति विषम हो सकती है—"अनुराधायां गतः सौरिः ज्येष्ठायां परिवर्तते। पश्चिमे दारुणो घोरः संग्रामस्तत्र जायते।

ग्रह चाल और बाजार का रुख—पक्षारंभ में रुई, चांदी में कुछ मन्दा आकर तेजी आएगी। सरसों, अलसी, तिल तेल, गेहूं, गुड़, शक्कर में अच्छी तेजी आएगी। १९ अक्तूबर के लगभग रुई, चांदी, चावल एवं अनाजों में झटके से मन्दा बन सकता है। पक्षान्त में बाजार कुछ तेज रहें।

आकाश लक्षण—अक्तूबर १७, १८, १९, २१, २१, २६ को बम्बई, गोवा, सूरत, आसाम, काठमाण्डू, सीलोन में वर्षा हो। उत्तरी भारत में कहीं बादलचाल हो, वर्षा की प्रायः कमी रहे। भारत में प्रायः वर्षा की कमी रहे।

शकुन विचार—यदि आश्वि. शु. १५ को बादल हों तो गेहूं, जौ, चना आदि का स्टाक करने से चैत्र में लाभ हो। तुला संक्रान्ति को वर्षा हो तो पौष में अनाज सस्ता हो।

कुं. सूर्योदये आश्विन शुक्ल १५ चन्द्र, इष्ट ५७।१०,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	७	९	५	७	०	६
११	७	२	१४	२१	४	१५	१५
५१	१०	५०	३२	५०	७	३३	३३
९	५६	३९	१७	४	५३	२६	२६
५९	३७	७८	५	७४	६	३	३
५४	३६	७	०	४५	४८	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, कार्तिक कृष्ण पक्ष १६

(२९ अक्तू. से १२ नवं.. १९८५ ई.), द. अयन, द. गो., हेमन्त ऋतु

ग्रह-दर्शन —६ नव. को शनि अस्त होगा। प्रातः पूर्व में शुक्र एवं उससे ऊपर मंगल को देखें। सायं गुरु खमध्यासन्न तथा बुध पश्चिम में होगा।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. कार्तिक	अ.म.		मु.	चन्द्र संचार घ. प.	भा.स्टैं.टा. सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा	अं	क	वि	
२७	१८	१	मं.	४७	५३	भ.	५७	५४	सि.	२८	५०	बा.	१४	३७	१३	२९	७	१४	मेष	६	३९	५	३४	६	११	५४	१	बुध अनु. में १९।२२,
२७	१४	२	बु.	५४	३०	कृ.	६०	०	व्य.	३१	२०	तै.	२१	१२	१४	३०	८	१५	वृ. १४।५०	६	४०	५	३३	६	१२	५३	५८	शुक्र चित्रा में ९।१५,
२७	१०	३	गु.	६०	०	कृ.	५	३७	व.	३३	४३	व.	२७	४१	१५	३१	९	१६	वृष	६	४१	५	३२	६	१३	५३	५६	भ. २७।४१ उ.,
२७	६	३	शु.	०	५३	रो.	१३	६	प.	३५	४६	वि.	०	५३	१६	न.	१०	१७	मि. ४६।३१	६	४१	५	३१	६	१४	५३	५८	भ. ०।५३ या., नवंबर प्रा., करक चतुर्थी (करवा चौथ), (चन्द्रोदय A
२७	२	४	श.	६	४१	मृ.	१९	५५	शि.	३७	१२	बा.	६	४१	१७	२	११	१८	मिथुन	६	४२	५	३०	६	१५	५४	२	मंगल हस्त में २६।५३,
२६	५८	५	र.	११	२९	आ.	२५	४५	सि.	३७	४८	तै.	११	२९	१८	३	१२	१९	मिथुन	६	४३	५	३०	६	१६	५४	७	
२६	५४	६	चं.	१५	२	पुन.	३०	१७	सा.	३७	१९	व.	१५	२	१९	४	१३	२०	क. १४। ९	६	४४	५	२९	६	१७	५४	१५	भ. १५।२ उ., ४५।५९ या., शुक्र तुला में २९।३८,
२६	५०	७	मं.	१६	५६	पु.	३३	१०	शु.	३५	३०	ब.	१६	५६	२०	५	१४	२१	कर्क	६	४४	५	२८	६	१८	५४	२६	अहोई अष्टमी (पंजाब),
२६	४५	८	बु.	१७	१	आश्ले.	३४	१६	शु.	३२	१४	कौ.	१७	१	२१	६	१५	२२	सि. ३४।१६	६	४५	५	२७	६	१९	५४	३७	सूर्य विशा. में ५।२२, शनि अस्त १२।५२,
२६	४०	९	गु.	१५	१२	म.	३३	३१	ब्र.	२७	३०	ग.	१५	१२	२२	७	१६	२३	सिंह	६	४६	५	२६	६	२०	५४	५२	भ. ४३।२१ उ.,
२६	३६	१०	शु.	११	२९	पू.फा.	३०	५५	ऐं.	२१	१४	वि.	११	२९	२३	८	१७	२४	क. ४४।५०	६	४७	५	२६	६	२१	५५	९	भ. ११।२९ या., रमा एकादशी व्र. स्मा.,
२६	३३	११	श.	६	१	उ.फा.	२६	३९	वै.	१३	३६	बा.	६	१	२४	९	१८	२५	कन्या	६	४८	५	२५	६	२२	५५	२६	बुध ज्येष्ठा में ४८।१०, शुक्र स्वाती में ४९।२०, रमा एकादशी व्र. B
अवम		१२	श.	५९	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२६	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
२६	२९	१३	र.	५०	४९	ह.	२१	२	वि.	४ / ५५	५८ / ५०	ग.	२४	५६	२५	१०	१९	०	तु. ४७।४२	६	४८	५	२४	६	२३	५५	४७	भ. ५०।४९ उ., प्रदोष व्र., धन त्रयोदशी, यम के लिए दीपदान,
२६	२५	१४	चं.	४१	५९	चि.	१४	२२	प्री.	४४	४०	वि.	१६	२४	२६	११	२०	२७	तुला	६	४९	५	२४	६	२४	५६	९	भ. १६।२४ या., रूप चतुर्दशी, नरक चतुर्दशी (पहले अरुणोदय C
२६	२२	३०	मं.	३२	३६	स्वा.	७ / ५६	२ / ३१	सौ.	३३	५५	च.	७	१८	२७	१२	२१	२८	वृ. ४६।२४	६	५०	५	२३	६	२५	५६	३३	श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, कौमुदी अमा. श्री महावीर जैन D

A सायं ७ घं ५० मि.), श्री गणेश चतुर्थी व्रत, B वैष्णव गोवत्स द्वादशी, C वाली), श्री हनुमान जयन्ती, D निर्वाण दिन

कार्तिक कृ. ८ बुध, इष्ट २६।५३, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	७	९	६	७	०	६
२०	१२	१३	१५	३	५	१५	१५
५१	४९	४८	२३	४	९	४	४
४१	६	४५	२५	५	५७	४९	४९
६०	३७	६२	९	७५	७	३	३
१५	३२	५४	३१	३	१	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
विशा. १	हस्त. १	अनु. ४	श्रवण २	चित्रा ४	अनु. १	भर. १	स्वाती ३

लोक भविष्य—इस पक्ष में ५ शनिवार हैं, ३० अक्तू. को बुध-शनि एवं १ नवं को सूर्य-केतु की युति जर्मनी, ब्रिटेन, श्रीलंका एवं कुछ पश्चिमी देशों में अशांति की सूचक हैं। दुर्घटना में जन-धन हानि का योग है। कहीं राजनैतिक उलटफेर हों। मंहगाई विशेष हो। रोग बढ़ेंगे।

ग्रह चाल और बाजार का रुख—नवम्बर के प्रथम सप्ताह में सभी अनाज, घी, गुड़, खांड, रुई, चांदी, तिल, तेल, चावल, सोना में विशेष तेजी आने का योग है। इस पक्ष में तेजी प्रधान रहेगी।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में नवं २, ४, ६ को कहीं बादलचाल होगी, शीत का प्रभाव बढ़ेगा।

शकुन विचार—यदि कार्तिक में मेघ गरजें तो आगे सभी अनाजों में तेजी आएगी।

कुं. सूर्योदये, कार्तिक कृ. ३० मंगल, इष्ट ५६।४०,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	७	९	६	७	०	६
२६	१९	१९	१६	१०	५	१४	१४
५३	३४	१२	४	३४	५२	४५	४५
३६	१०	१५	५६	४०	१३	४५	४५
६०	३७	३८	७	७५	७	३	३
२४	२९	२७	२७	१०	६	११	११
—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
विशा. ३	हस्त ३	ज्येष्ठा १	श्रवण २	स्वा. २	अनु. १	भर. १	स्वाती ३

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७ कार्तिक शुक्ल पक्ष १७ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टैं.टा. उदय-कालिक (१३ से २७ नवं. सन् १९८५ ई०.) ब. अ, द. गो, हेमन्त ऋतु

दि. मा. घ. प.	तिथि	वार	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	योग	घ. प.	करण	घ. प.	प्र. कार्तिक	अं. नवं.	श. कार्तिक	मु. सफर	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घ. मि.	सू. अ. घ. मि.	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	
२६।१६	१	बु.	२३।१८	अनु.	३८	शो.	२३।११	ब.	२३।१४	२८	१३	२२	२९	वृश्चिक	६।५१	५।२२	६।२६।५७।०	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बलिपूजा, गोक्रीड़ा
२६।१६	२	गु.	१४।१५	ज्ये.	५।३६	ध्रु.	१२।४७	कौ.	१४।१५	२९	१४	२३	३०	ध. ४५।३६	६।५२	५।२२	६।२७।५७।२६	चन्द्रदर्शन मु. १५, यमद्वितीया (भाईदूज), विश्वकर्मा पूजा, A
२६।१३	३	शु.	६।६	मू.	४०।२	सू.	२४।२०	ग.	६।६	३०	१५	२४	र.१	धनु	६।५३	५।२१	६।२८।५७।५५	भ. ३२।४० उ., ५९।१४ या., रबी उल-अव्वल मु. प्रा.,
अवम	४	शु.	५९।१५	०	०।०	०	०।०	०	०।०	०	०	०	०	० ०	०।०	०।०	०।०।०।०	चतुर्थी तिथिक्षय.
२६।१०	५	श.	५४।२५	पू.षा.	५५।५७	शू.	४६।५५	ब.	२६।५०	मा.१	१६	२५	२	म. ५०।२१	६।५४	५।२१	६।२९।५८।२६	सं. सूर्य वृश्चिक में १।३२. मु ३०, पुण्य १७।३२ तक,
२६।६	६	र.	५०।३०	उ.षा	३३।३४	गं.	४०।५४	कौ.	२२।२८	२	१७	२६	३	मकर	६।५४	५।२०	७।०।५८।५७	गुरु श्रव. ३ में २८।३८, बलिदान दिन श्री ला. लाजपतराय जी,
२६।३	७	चं.	४६।४	श्र.	३३।१०	वृ.	३६।२६	ग.	१६।४७	३	१८	२७	४	मकर	६।५५	५।२०	७।१।५९।२९	भ. ४९।४ उ., बुध वक्री १५।२८,
२५।५९	८	मं.	४१।४२	ध.	३४।४६	ध्रु.	३३।४०	वि.	१९।२३	४	१९	२८	५	कु. ३।५८	६।५६	५।१९	७।३।०।०	भ. १९।२३ या., पंचक प्रा. ३।५८, सूर्य अनु. में १९।४५, B
२५।५६	९	बु.	५२।१२	श.	३८।१३	व्या.	३२।२०	बा.	२०।५६	५	२०	२९	६	कुम्भ	६।५७	५।१९	७।४।०।३१	शुक्र विशा. में २७।२०, अक्षय ९, कूष्माण्ड ९, यूरेनस ज्येष्ठा ३ में,
२५।५४	१०	गु.	५६।२३	पू.भा.	४३।२०	ह.	३२।२०	तै.	२४।१८	६	२१	३०	७	मी. २७।३	६।५८	५।१९	७।५।१।२	
२५।५२	११	शु.	६०।०	उ.भा.	४९।४२	व.	३३।२२	व.	२९।४	७	२२	मा.१	८	मीन	६।५९	५।१९	७।६।१।३३	भ. २९।४ उ., सूर्य [illegible] अनु. में १८।३८, बुध पश्चिम में अस्त C
२५।४९	११	श.	१।४५	रे.	५६।५६	सि.	३५।११	वि.	१।४५	८	२३	२	९	मे. ५६।५६	७।०	५।१८	७।७।[illegible]	भ. १।४५ या., पंचक समाप्त ५६।५६, मंगल चित्रा में ४७।२ D
२५।४६	१२	र.	८।३	अ.	६०।०	व्यति.	३७।२६	बा.	८।३	९	२४	३	१०	मेष	७।०	५।१८	७।८।[illegible]	प्रदोष व्रत, प्रबोधोत्सव, तुलसी विवाह,
२५।४३	१३	चं.	१४।४५	भ.	४।४१	व.	३९।५६	तै.	१४।४५	१०	२५	४	११	मेष	७।१	५।१७	७।९।[illegible]	
२५।४०	१४	मं.	२१।२८	कृ.	१२।२८	प.	४२।१६	व.	२१।२८	११	२६	५	१२	वृ. २६।२३	७।२	५।१७	७।१०।[illegible]	भ. २१।२८ उ., ५४।४३ या., व. बुध अनु. में २।४२, वैकुण्ठ E
२५।३८	१५	बु.	२८।५८	कृ.	२०।५	शि.	४४।२८	ब.	२७।२८	१२	२७	६	१३	वृष	७।३	५।१[illegible]	७।११।५।१६	श्री [illegible] व., भीष्म पंचक समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त, श्री गुरु F

ग्रह-दर्शन– २२ नवं. को बुध पश्चिम में अस्त होगा। शनि अस्त है। प्रातः पूर्व में शुक्र, उससे काफी ऊपर मंगल दीखेगा। सांय गुरु को पश्चिमकपाल में देखें।

A बालदिवस, जन्मदिन श्री जवाहर लाल नेहरू, B शनि अनु. २ में ३६।२०, गोपाष्टमी C ४८।२२, भद्र मार्ग. प्रा. E चतुर्दशी (पहले अरुणोदय वाली)
D प्रबोधिनी एकादशी व्र., चातुर्मास्य व्रतनियमादि समाप्त, भीष्मपंचक प्रारंभ, F नानक जयन्ती मेला पुष्कर (राज), रामतीर्थ (पं.), कपालमोचन (हर.)

कार्तिक शु. ८ मंगल, इष्ट ५६।२५, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	७	९	६	७	०	६
३	२०	२१	१७	१९	६	१४	१४
५६	५६	१२	०	२१	४२	२३	२३
५९	१६	२४	१८	११	२	२९	२९
६०	३७	१८	८	७५	७	३	३
३४	२२	९	२६	१६	८	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लोक भविष्य– वृश्चिक संक्रान्ति शनिवारी है, १६ नवं. को शुक्र-केतु एवं २३ नवं. को सूर्य-शनि युति प्रजा में बीमारी से कष्ट के सूचक हैं, इस पक्ष में खप्पर योग बन रहा है, सीमावर्ती [illegible] पर विशेष सावधान रहना होगा, विस्थापितों की समस्या किंवा दुर्भिक्ष से किसी क्षेत्र में अशान्ति रहेगी। प्राकृतिक प्रकोप किंवा किसी राजनैतिक विप्लव से कहीं जन-धन हानि होगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख– नवं. मध्य बाद १९ नवं. तक तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, शक्कर, हल्दी, गुग्गुल, ऊनी वस्त्र, सण, रुई, घी, तेल में उत्तम-मध्यम रूप से तेजी बनेगी। विचार पूर्वक काम करें अच्छा लाभ ले सकेंगे।

आकाश लक्षण– इस पक्ष में कहीं बादलचाल रहें, प्रायः मौसम सूखा रहेगा। वर्षा की कमी अनुभव होगी।

शकुन विचार– यदि कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को सूर्य के चारों ओर परिवेष हो तो तिल तेल का स्टाक करें आगे तेजी से उत्तम लाभ होगा।

कुं. सूर्योदये कार्तिक शु. १५ बुध, इष्ट ५६।८,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	७	९	६	७	०	६
१२	२५	१४	१८	२९	७	१३	१३
२	५५	१२	११	२३	३९	५८	५८
६	०	४५	५९	४०	८	३	३
६०	३७	८२	९	७५	७	३	३
४८	१७	२७	३३	२२	७	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८ (२८ नवं. से ११ दिसं. सन् १९८५ ई०), द. अ., द. गो, हेमन्त ऋतु,

ग्रह-दर्शन—बुध प्रातः ४ दिस. से पूर्व में दीखने लगेगा। ९ दिस. को शनि उदित होगा। प्रातः शुक्र पूर्व क्षितिज से उठता हुआ और मंगल पूर्व कपाल में दीखेगा। सायं गुरु को पश्चिमकपाल में देखें।

वि. मा. घं.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. मार्ग.	अं. नवं.	श. मार्ग.	मु. रबीउ.	चन्द्र संचार घ. प.	भा.स्टैं.टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	३५	१	पु.	३३	३५	रो.	२७	१२	सि.	४६	६	बा.	०	४७	१३	२८	७	१४	वृष	७	१४	५	१७	७	१२	६	३	शुक्र वृश्चिक में २५।१०, [वि. मु. रो. मृ.]
२५	३३	२	शु.	३९	१०	मृ.	३३	४०	सा.	४७	१९	तै.	६	२२	१४	२९	८	१५	मि. ०।२६	७	५	५	१७	७	१३	६	४६	[वि. मु. मृ.]]
२५	३०	३	श.	४३	३५	आ.	३९	२१	शु.	४७	२०	व.	११	२३	१५	३०	९	१६	मिथुन	७	५	५	१७	७	१४	७	३८	भ. ११।२३ उ., ४३।३५ या.,
२५	२८	४	र.	४६	५५	पुन.	४४	२	शु.	४७	३१	व.	१५	१५	१६	दि. १	१०	१७	क. २७।५२	७	६	५	१६	७	१५	८	२६	शुक्र अनुराधा में ४।७, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत. दिसंबर प्रा,
२५	२६	५	चं.	४९	७	पु.	४७	३७	ब्र.	४६	२०	कौ.	१८	१	१७	२	११	१८	कर्क	७	७	५	१६	७	१६	९	१७	सूर्य ज्येष्ठा में ३०।१८,
२५	२४	६	मं.	४९	५७	आश्ले.	४९	५३	ऐं.	४४	६	ग.	१९	३२	१८	३	१२	१९	सिं. ४९।५३	७	८	५	१६	७	१७	१०	१०	भ. ४९।५७ उ.,
२५	२२	७	बु.	४९	२१	म.	५०	४६	वै.	४०	४७	वि.	१९	३९	१९	४	१३	२०	सिंह	७	९	५	१६	७	१८	११	३	भ. १९।३९ या., मंगल तुला में ३०।३२, बुध पूर्व में उदित ५९।१५,
२५	२०	८	गु.	४७	१४	पू.फा.	५०	१०	वि.	३६	१७	बा.	१८	१८	२०	५	१४	२१	सिंह	७	९	५	१६	७	१९	११	५८	श्री महाकाल भैरवाष्टमी, (कालाष्टमी), [वि. मु. मघा]
२५	१८	९	शु.	४३	३१	उ.फा.	४८	०	प्री.	३०	३१	तै.	१५	२२	२१	६	१५	२२	कं. ४।३७	७	१०	५	१६	७	२०	१२	५५	[वि. मु. उ. फा.]
२५	१६	१०	श.	३८	१९	ह.	४४	२५	आ.	२३	३४	व.	१०	५५	२२	७	१६	२३	कन्या	७	११	५	१७	७	२१	१३	५२	भ. १०।५५ उ., ३८।१९ या., [वि. मु. ह.],
२५	१४	११	र.	३१	४९	चि.	३९	३१	सौ.	१५	३०	व.	५	४	२३	८	१७	२४	तु. ११।५८	७	१२	५	१७	७	२२	१४	५१	गुरु श्रव. ४ में ३५।३२, बुध मार्गी ४७।२०, उत्पन्ना एकादशी व्रत, B
२५	१२	१२	चं.	२४	११	स्वा	३३	२३	शो.	[illegible]	[illegible]	तै.	२४	११	२४	९	१८	२५	तुला	७	१३	५	१७	७	२३	१५	५२	राहु अश्वि. ४ में, केतु स्वाती २ में ५३।४०, शनि उदित ४१।८, A
२५	१०	१३	म.	१५	४४	वि.	२६	५०	सु.	४६	३२	व.	१५	४४	२५	१०	१९	२६	वृ. १३।३१	७	१३	५	१७	७	२४	१६	५२	भ. १५।४४ उ., ४२।१९ या.,
२५	८	१४	बु.	६	५३	अनु.	१९	४८	धृ.	३६	३	श.	६	५३	२६	११	२०	२७	वृश्चिक	७	१४	५	१७	७	२५	१७	५४	शुक्र ज्येष्ठा में ४०।०, मेला पुरमण्डल, देविका स्नान (जम्मू),
अवम		३०	बु.	५७	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस तिथिक्षय,

A सोम प्रदोष व्रत B [वि. मु. वि.]

मार्गशीर्ष कृष्ण ८ गुरु, इष्ट ५५।५३, कुं. सूर्योदये

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	६	७	९	७	७	०	६
२०	०	५	१९	९	८	१३	१३
८	५२	३९	३१	२६	३५	३२	३२
४१	५५	४५	४७	५५	५२	३७	३७
६०	३७	९१	१०	७५	७	३	३
५४	१०	३५	३०	२५	०	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
ज्ये.	चित्रा	अनु.	श्रव.	अनु.	अनु.	भर.	स्वा.

९, ८ श बु सू, ७ के, ६, १० गु, ११ शु, चं, ५, १२, २, ४, १ रा, ३

लोक भविष्य—इस पक्ष में अमावस को पंचग्रही योग बन रहा है। मुस्लिम एवं अन्य पश्चिमी देशों में कहीं युद्धोन्माद प्रबल होगा, कहीं भारी जलप्लाव से खड़ी फसल को हानि व कहीं भयंकर सूखा से कृषक परेशान हों। शीत जोरों पर होगा। २ दिस. को बुध-शनि एवं ५ दिस. को शुक्र-शनि की अंशयुति कहीं अकाल की स्थिति एवं राजनैतिक अशान्ति, अप्रत्याशित मंहगाई की सूचक है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ से पक्ष मध्य तक गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा, रुई, कपास, मूंगफली में विशेष तेजी बनेगी। ९ दिसं. के लगभग सभी व्यापारिक वस्तुओं में पुनः जोरदार तेजी बनेगी।

आकाश लक्षण—नवं. २८, दिसं. ४, ५, ८, ९ को वर्षा के योग हैं। शीत लहर चलेगी।

शकुन विचार—यदि मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्दशी या अमावस के दिन सूर्य बादलों से ढका रहे तो अनाजों में शीघ्र ही तेजी आती है।

कुं. सूर्योदये मार्गशीर्ष कृष्ण १४ बुध, इष्ट ५५।४०,

गु १०, ९, श, शु ८ सू, बु, के ७ म, ६, ११, चं, ५, १२, २, ४, १ रा, ३

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	६	७	९	७	७	०	६
२६	४	६	२०	१६	९	१३	१३
१४	३५	५	३६	५९	१७	१३	१३
३१	४५	२९	२५	४८	५१	३२	३२
६१	३७	३५	११	७५	६	३	३
१	४	१९	८	२९	५६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
ज्ये. ३	चित्रा ४	अनु. ४	श्रव. ४	ज्ये. ४	अनु. २	अश्वि. ४	स्वा. २

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टैं.टा. | उदय-कालिक (१२ से २७ दिसं. १९८५ ई.), द. उ. अयन, व. गो. हेमन्त ऋतु,

वि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. मार्ग.	अं. दिसं.	रा. मार्ग.	मु. र.अ.	संचार घ. प.	चन्द्रोदय सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	७	१	गु.	४६	१६	ज्ये.	१२	४८	शू.	२५	४७	कि.	२२	३६	२७	१२	२१	२८	ध. १२।४८	७	१५	५	१७	७	२६	१८	५८	
२५	६	२	शु.	४१	४६	मू.	६	१६	गं.	१६	२	बा.	१५	३४	२८	१३	२२	२९	धनु	७	१५	५	१८	७	२७	२०	०	चंद्रदर्शन मु. ३०,
२५	५	३	श.	३५	२३	पू.षा.	४९	४२	वृ.	२९	२६	तै.	८	३६	२९	१४	२३	र.	मृ. १४।४७	७	१६	५	१८	७	२८	२१	५	रबी उस्सानी मु. प्रा.,
२५	४	४	र.	३०	३७	श्रव.	५४	४०	व्या.	५३	१०	व.	३	०	पौ.	१५	२४	२	मकर	७	१७	५	१८	७	२९	२२	१०	म. ३।० उ., ३०।३७ या., सं. सूर्य मूल धनु में ३७।१०, मु. ३०, A
२५	३	५	चं.	२७	५२	ध.	५४	८	ह.	४८	३७	बा.	२७	५२	२	१६	२५	३	कुं. २४।२४	७	१७	५	१९	८	०	२३	१४	पंचक प्रा. २४।२४, शहीदी दिन श्रीगुरु तेगबहादुर जी,
२५	२	६	मं.	२७	१५	श.	५५	५८	व.	४५	४२	तै.	२७	१५	३	१७	२६	४	कुम्भ	७	१८	५	१९	८	१	२४	१६	चम्पा षष्ठी, स्कन्द षष्ठी,
२५	१	७	बु.	२८	५१	पू.भा.	५९	५२	सि.	४४	२८	व.	२८	५१	४	१८	२७	५	मी. ४३।३८	७	१९	५	१९	८	२	२५	२५	म. २८।५० उ., शनि अनु. ३ में ३।५६, मित्र सप्तमी,
२५	०	८	गु.	३२	३०	उ.भा.	६०	०	व्य.	४४	४३	वि.	०	४०	५	१९	२८	६	मीन	७	१९	५	२०	८	३	२६	३१	म. ०।४० या.,
२४	५९	९	शु.	३७	४४	उ.भा.	५	३३	व.	४६	४	बा.	५	७	६	२०	२९	७	मीन	७	२०	५	२०	८	४	२७	३७	
२४	५९	१०	श.	४४	७	रे.	१२	३१	प.	४८	१४	तै.	१०	५६	७	२१	३०	८	मे. १२।३१	७	२०	५	२१	८	५	२८	४३	पंचक स. १२।३१, सूर्य सा. मकर में ५।१२, उत्तरायण शिशिर ऋतु प्रा.
२५	०	११	र.	५१	२	अ.	२०	१७	शि.	५०	४५	व.	१७	३४	८	२२	पौ.	९	मेष	७	२१	५	२१	८	६	२९	५०	म. १७।३४ उ., ५।१२ या., बुध ज्येष्ठा में ४३।२८, शुक्र मूल धनु B
२५	१	१२	चं.	५७	५१	भ.	२८	१३	सि.	५३	१२	ब.	२४	२६	९	२३	२	१०	वृ. ४५।७	७	२१	५	२२	८	७	३०	५७	शुक्र वार्धक्य प्रा. ०।१०,
२५	२	१३	मं.	६०	०	कृ.	३५	५०	सा.	५५	१८	कौ.	३१	०	१०	२४	३	११	वृष	७	२२	५	२२	८	८	३२	३	भौम प्रदोष व्रत
२५	३	१३	बु.	४	९	रो.	४२	४५	शु.	५६	४७	तै.	४	९	११	२५	४	१२	वृष	७	२२	५	२३	८	९	३३	११	गुरु धनि. १ में ५।१५, पिशाच मोचन श्राद्ध,
२५	४	१४	गु.	९	३७	मृ.	४८	४८	शु.	५६	४६	व.	९	३७	१२	२६	५	१३	मि. १५।४६	७	२३	५	२४	८	१०	३४	१८	म. ९।३७ उ., ४१।५२ या., शुक्र पूर्व में अस्त ०।५, श्री सत्य व्रत, C
२५	५	१५	शु.	१४	६	आ.	५३	२१	ब्र.	५७	३३	ब.	१४	६	१३	२७	६	१४	मिथुन	७	२३	५	२४	८	११	३५	२६	

ग्रह-दर्शन—शुक्र २६ दिसं. को पूर्व में अस्त होगा। प्रातः बुध-शनि पूर्व में एवं मंगल पूर्वकपाल में दीखेगा। सायं गुरु को पश्चिमकपाल में देखें।

शुक्र अस्त
२६ दिसं.

A पुष्य २१।१० बाद, मंगल स्वाती में १६।४२ , B में १५।३०, मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता जयन्ती, शाक पौष प्रा. C श्रीदत्त जयन्ती ,

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ गुरु, इष्ट ५५।२८, कुं. सूर्योदये

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	७	९	७	७	०	६
४	९	१३	२२	२७	१०	१२	१२
२२	३१	१५	८	३	१२	४८	४८
५८	५०	३५	१५	४१	३३	६	६
६१	३६	७०	११	७५	६	३	३
४	५५	५२	५४	३०	४३	११	११
	मा.	मा	मा	मा	मा	व.	व.
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१० गु, श शु ८ बु, के, ११, ९, म ७, सू, १२, चं, ६, १ रा, ५, ३, २, ४

लोक भविष्य—धनु संक्रान्ति रविवारी है, इससे पहले वृश्चिक संक्रान्ति शनिवारी थी, आगे मकर संक्रान्ति मंगलवारी होने से विशेष प्रकार का खप्पर योग बनता है। श्री लंका, इथोपिया, चीन एवं कुछ पश्चिमी देश भयंकर महंगाई एवं सूखे की चपेट में आजाएंगे। कुछ देशों में बेरोजगारी अशान्ति का कारण बनेगी। भारत में भी बेरोजगारी एवं महंगाई बढ़ेगी, मुद्रास्फीति पर नियन्त्रण का अभी योग नहीं।

ग्रह चाल और बाजार का रुख—१५ दिसं. से रुई, ऊनी वस्त्र, कपास, सूत, तिल तेल, सोना, चांदी, मिर्च, केसर, चन्दन, कपूर, घी, गुड़, खांड, चावल तेज रहेंगे। २६ दिसं. के लगभग बाजार का रुख देखकर काम करें।

आकाश लक्षण—दिसं. १५, १८, २१, २२, २३ को बादल चाल हो, कहीं खण्ड वृष्टि हो। कुछ प्रान्तों में शीत लहर से जन हानि हो।

शकुन विचार—यदि इस पक्ष में धनिष्ठा नक्षत्र में बादल गरजें तो जनता में रोग से हानि हो।

कुं. सूर्योदये मार्ग. शुक्ल १५ शुक्र, इष्ट ५५।१८,

१० गु, बु ८ श, के, ११, ९, ७ मं, सू शु, १२, ६, १ रा, चं, ५, ३, २, ४

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	७	९	८	७	०	६
१२	१४	२३	२३	७	११	१२	१२
३१	२६	३४	४५	७	५	२२	२२
४५	३२	५२	४४	३९	१४	३९	३९
६१	३६	८३	१२	७५	६	३	३
८	४४	३२	३२	२९	२५	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, पौष कृष्ण पक्ष २० | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टैं.टा. | उदय-कालिक | (२८ दिसं. ८५ से १० जन. सन् ८६ ई०), उ. श्र. व. गो, शिशिर ऋतु

दि.मा. घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	म.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घ.	मि.	सू.अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५ ६	१	श.	१७	३०	पुन.	५७	५६	ऐं.	५७	३२	कौ.	१७	३०	१४	२८	७	१५	क. ४१।५०	७	२३	५	२५	८	१२	३६	३४	सूर्य पू.षा. में ४२।४०,
२५ ७	२	र.	१९	४८	पु.	६०	०	वै.	५६	४०	ग.	१९	४८	१५	२९	८	१६	कर्क	७	२४	५	२५	८	१३	३७	४२	भ. ५०।२८ उ.,
२५ ८	३	च.	२१	८	पु.	०	४६	वि.	५२	४१	वि.	२१	८	१६	३०	९	१७	कर्क	७	२४	५	२६	८	१४	३८	५१	भ. २१।८ या., श्री गणेश चतुर्थी व्रत.,
२५ ९	४	मं.	२१	२७	आश्ले.	२	५३	प्री.	४९	३०	बा.	२१	२७	१७	३१	१०	१८	सिं. २।५३	७	२४	५	२७	८	१५	४०	१	सन् १९८५ ई. समाप्त,
२५ ११	५	बु.	२०	४६	म.	३	५७	आ.	४५	३६	तै.	२०	४६	१८	ज.१	११	१९	सिंह	७	२५	५	२८	८	१६	४१	१०	बुध मूल धनु में २६।५८, शुक्र पू.षा. में ५१।८, जनवरी A
२५ १२	६	गु.	१९	८	पू.फा.	४	७	सौ.	४०	५५	ग.	१९	८	१९	२	१२	२०	कं. १८।५४	७	२५	५	२८	८	१७	४२	१९	भ. १९।८ उ., ४७।४८ या.. नेपच्यून मूल ४ में,
२५ १३	७	शु.	१६	२७	उ.फा.	३	१६	शो.	३५	२३	व.	१६	२७	२०	३	१३	२१	कन्या	७	२५	५	२९	८	१८	४३	३०	वेंकटेश स्वाती ३ में,
२५ १४	८	श.	१२	४१	ह.	१/५८	३/७	अ.	२९	१	कौ.	१२	४१	२१	४	१४	२२	तु. २९।४५	७	२५	५	३०	८	१९	४४	४०	
२५ १५	९	र.	७	५५	स्वा	५४	३०	सु.	२१	५१	ग.	७	५५	२२	५	१५	२३	तुला	७	२६	५	३१	८	२०	४५	५०	भ. ३५।२ उ.,
२५ १६	१०	चं.	२	९	वि.	४९	४८	धृति	१३	५४	वि.	२	९	२३	६	१६	२४	वृ. ३५।५८	७	२६	५	३१	८	२१	४७	१	भ. २।९ या., मंगल विशा. में १।२०, सफला एकादशी व्र. स्मा.,
अवम	११	च.	५५	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
२५ १७	१२	म.	४८	५	अनु.	५४	२५	शू.	५/५६	१८/५६	कौ.	२१	४८	२४	७	१७	२५	वृश्चिक	७	२६	५	३२	८	२२	४८	११	सफला एकादशी व्र. वै., श्री बोधायनाचार्य जयन्ती (पिण्डोरी धाम, B
२५ १९	१३	बु.	४०	४७	ज्ये.	३८	४१	वृ.	४७	५६	ग.	१४	२६	२५	८	१८	२६	ध. ३८।४१	७	२६	५	३३	८	२३	४९	२१	भ. ४०।४७ उ., प्रदोष व्र.,
२५ २१	१४	गु.	३३	१३	मू.	३२	५५	ध्रु.	३७	४५	वि.	७	०	२६	९	१९	२७	धनु.	७	२६	५	३४	८	२४	५०	३२	भ. ७।० या.,
२५ २४	३०	शु.	२६	५	पू.षा.	२७	३५	व्या.	२८	५२	ना.	२६	५	२७	१०	२०	२८	म. ४१।२८	७	२६	५	३५	८	२५	५१	४२	सूर्य उ.षा. में ४७।२२ बुध पू.षा. में २४।५३, गुरु धनि. २ में C

ग्रह-दर्शन—शुक्रास्त है। बुध १० जन. को पूर्व में अस्त होगा। शनि एवं मंगल प्रातः पूर्वकपाल में दीखेंगे। सूर्यास्त बाद गुरु पश्चिम-कपाल में चमकता दीखेगा।

A (सन् १९८६ ई.) प्रारम्भ, B गुरदासपुर (पं.) C २१।३५, बुध पूर्व में अस्त १८।२५

पौष कृष्ण ८ शनि, इष्ट ५५।१२, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	८	९	८	७	०	६
२०	१९	५	२५	१७	११	११	११
४०	१९	४	२८	११	५५	५७	५७
५५	४२	३४	३	३९	२१	१३	१३
६१	३६	८९	१३	७५	६	३	३
११	३२	३	५	३०	४	११	११
	मा.	ना.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
पू.षा.	स्वा.	मूल	धनि.	पू.षा.	अनु.	अश्वि.	स्वा.

कुं. सूर्योदये (चक्र): १० गु; श ८; ९ बु; के ७ मं; ११; सू शु; १२; ६ चं; १ रा; २; ३; ४; ५

लोक भविष्य—इस मास में ५ शनिवार हैं। यूरोप एवं पाक के कुछ भाग में राजनैतिक उलझनें विशेष उपस्थित होंगी। भारत के सीमा प्रान्तों पर भी घुसपैठ होगी, विशेष सतर्क रहना होगा। आगजनी से कहीं हानि भय है, जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में विशेष तेजी से साधारण वर्ग में आक्रोश दिखाई देगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खांड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सण, चांदी तेज। जनवरी के आरम्भ में छोटे अनाजों में अस्थाई मन्दा बनेगा; ६ जनवरी से फिर तेजी का वातावरण बनेगा। पक्षान्त तक बाजार तेजी प्रधान रहेंगे।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में वायु का जोर रहेगा। कहीं धुन्ध पड़ेगी, कहीं बादलचाल व खण्ड वृष्टि हो।

शकुन विचार—पौष कृ. अष्टमी को अगर वर्षा हो या बादलचाल रहे तो आगे फरवरी में अनाज तेज होगा।

कुं. सूर्योदये पौष कृष्ण ३० शुक्र, इष्ट ५५।१०,

कुं. सूर्योदये (चक्र): १० गु; चं ९ बु; ८ श; के ७ मं; ११; सू शु; १२; ६; १ रा; २; ३; ४; ५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	८	९	८	७	०	६
२६	२२	१४	२६	२४	१२	११	११
४७	५८	६	४७	४४	३०	३८	३८
५६	२६	११	२९	३७	५४	८	८
६१	३६	९१	१३	७५	५	३	३
१०	२१	५७	२७	३०	४४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
उ.षा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	पू.षा.	अनु.	अश्वि.	स्वा.

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, पौष शुक्ल पक्ष २१ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टैं.टा. उदय-कालिक (११ से २५ जन. सन् १९८६ ई०) उ. अ., व. गो. शिशिर ऋतु

वि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. पौष	अं. जन.	रा. पौष	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	२६	१	श.	१६	४८	उ.षा.	२३	६	हृ.	२०	४३	ब.	१६	४८	२८	११	२१	२६	मकर	७	२६	५	३५	८	२६	५२	५१
२५	२८	२	र.	१४	४६	श्र.	१९	५१	व.	१३	३३	कौ.	१४	४६	२९	१२	२२	३०	कुं. ४९।३	७	२६	५	३६	८	२७	५४	१
२५	३०	३	चं.	११	२१	ध.	१८	१५	सि.	७	४०	ग.	११	२१	३०	१३	२३	ज.	कुम्भ	७	२६	५	३७	८	२८	५५	९
२५	३३	४	मं.	९	५४	श.	१८	३९	व्य.	३	२१	वि.	९	५४	मा.	१४	२४	२	कुम्भ	७	२६	५	३८	८	२९	५६	१७
२५	३६	५	बु.	१०	३४	पू.भा.	२०	५९	व.	[illegible]	[illegible]	बा.	१०	३४	२	१५	२५	३	मी. ५।२३	७	२६	५	३९	९	०	५७	२५
२५	३९	६	गु.	१३	१९	उ.भा.	२५	२१	शि.	५९	५५	तै.	१३	१९	३	१६	२६	४	मीन	७	२५	५	४०	९	१	५८	३१
२५	४२	७	शु.	१३	५३	रे.	३१	२७	सि.	६०	०	ब.	१७	५७	४	१७	२७	५	मे. ३१।२७	७	२५	५	४१	९	२	५९	३६
२५	४४	८	श.	२३	५६	अ.	३८	४३	सि.	१	२६	ब.	२३	५६	५	१८	२८	६	मेष	७	२५	५	४१	९	४	०	४१
२५	४६	९	र.	३०	४१	भ.	४६	३४	सा.	३	४०	कौ.	३०	४१	६	१९	२९	७	मेष	७	२५	५	४२	९	५	१	४५
२५	४८	१०	चं.	३७	३१	कृ.	५४	२०	शु.	६	११	तै.	४	६	७	२०	३०	८	वृ. ३।३१	७	२४	५	४३	९	६	२	४८
२५	५१	११	मं.	४८	४९	रो.	६०	०	शु.	८	२८	ब	१०	४०	८	२१	मा.	९	वृष.	७	२४	५	४४	९	७	३	५०
२५	५४	१२	बु.	४९	४	रो.	१	२९	ब.	१०	१२	ब.	१६	२६	९	२२	२	१०	मि. ३४।३१	७	२४	५	४५	९	८	४	५१
२५	५८	१३	गु.	५२	५७	मृ.	७	३३	ऐं.	११	३	कौ.	२१	१	१०	२३	३	११	मिथुन	७	२३	५	४६	९	९	५	५१
२६	१	१४	शु.	५५	२८	आ.	१२	१६	वै.	१०	५१	ग.	२४	१२	११	२४	४	१२	क. ५९।५१	७	२३	५	४७	९	१०	६	५१
२६	४	१५	श.	५९	३५	पुन.	१५	४१	वि.	९	३६	वि.	२६	२	१२	२५	५	१३	कर्क	७	२३	५	४८	९	११	७	४९

ग्रह-दर्शन—शुक्र-बुध अस्त हैं। प्रातः शनि एवं मंगल पूर्व-कपाल में होंगे। सूर्यास्त बाद गुरु पश्चिम में दीखेगा।

चन्द्रदर्शन मु. ३०, पंचक प्रा. ४९।३, शुक्र उ. षा. में २९।५२,
भ. ४०।३७ उ., लोहड़ी (पं., हि.प्र., जम्मू), जमदउल-अव्वल मु. प्रा.,
भ. ९।५४ या., सं. सूर्य मकर में ३।३८, मु. १५, पुण्य १९।३८ तक,
शुक्र मकर में ५।५२,

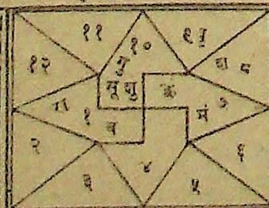
भ. १७।५७ उ., ५०।५६ या., पंचक स. ३१।२७, अवतार दिन A
बुध उ. षा. में ५८।१५,
शनि अनु. ४ में ५१।२०,
सूर्य सा. कुम्भ में १७।२८, सूर्य अभिजित् में ३५।४७,
भ. १०।४० उ., ४३।४८ या., बुध मकर में २।५८, पुत्रदा B
मंगल वृश्चिक में ३४।५५,
सूर्य श्रवण में ५३।१५, शुक्र श्रवण में ३।१८, प्रदोष व्र., जन्मदिन C
भ. ५५।२८ उ., सूर्य अभिजित् से निवृत्त ४५।२५, गुरु धनि. ३ D
भ. २९।२ या., श्री सत्य व्र., माघ स्नान प्रा.,

A श्री गुरु गोविन्द सिंह जी, B एकादशी व्र., शक माघ प्रा., C नेताजी श्री सुभाष, D कुम्भ में ५९।१८,

पौष शु. ८ शनि, इष्ट ५५।१२,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	८	९	९	७	०	६
४	२७	२६	२८	४	१३	११	११
५६	४८	३५	३६	४८	१५	१२	१२
५३	१२	१०	२१	१९	६	४२	४२
६१	३६	९५	१३	७५	५	३	३
३	३	५३	४८	२४	१४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये



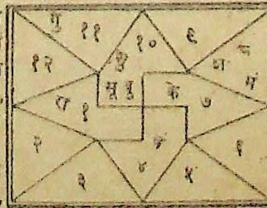
लोक भविष्य—बुध-शुक्र-सूर्य मकर में पक्षान्त में शनि-मंगल दोनों वृश्चिक राशि में हैं—ग्रह स्थिति जनहित में नहीं है। कहीं युद्धाग्नि प्रज्वलित होगी, विरोधी देश की गति विधि से अवगत रहना आवश्यक है, किसी प्रान्त में जल से तबाही, रोग से कष्ट, शीत से जन हानि किंवा खड़ी फसल को हानि एवं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। दुर्घटना में विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—१४ जन. १९८६ से पक्षान्त तक जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, कालीमिर्च, ज्वार-बाजरा, गेहूं, चावल, सरसों, तिल, तेल, मूंगफली, एरण्डी, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चान्दी, सोना, लालमिर्च तेज होंगे। २१ जन. के बाद तेजी और जोर पकड़ सकती है, तेजी में रहकर लाभ ले सकते हैं।

आकाश लक्षण—जन. ११ से १५ तथा २१ से २५ तक, कुछ प्रान्तों में बादल, खण्डवृष्टि हो, पर्वतीय भागों में भारी हिमपात होगा। शीत प्रकोप बढ़े। पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., म. प्र. में शीत का प्रकोप बढ़ेगा।

शकुन विचार—यदि पौष शुक्ल पूर्णिमा को आकाश में घने बादल हों, बिजली चमके तो अनाज की फसल अच्छी होती है।

कुं. सूर्योदये



पौष शु. १५ शनि, इष्ट ५५।१७,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	७	९	१०	९	७	०	६
१२	१	७	०	१३	१३	१०	१०
४	५९	५८	१३	३६	५०	५०	५०
१	४४	२७	४७	४	२२	२७	२७
६०	३५	१००	१४	७५	४	३	३
५८	४५	३	४	२३	४६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, माघ कृष्ण पक्ष २२ (२६ जन. से ८ फर. १९८६ ई.), उ. अ., द. गो., शिशिर ऋतु,

वि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. माघ	अं. जन.	श. माघ	मु. ज.	चन्द्र संचार घ. प.	भा.स्टैं.टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२६	७	१	र.	५६	२८	पु.	१७	४८	प्री.	७	१६	बा.	२६	३६	१३	२६	६	१४	कर्क	७	२२	५	४९	९	१२	८	४६	भारत गणतन्त्र दिवस,
२६	९	२	चं.	५६	३०	आश्ले.	१८	४७	आ.	४	६	तै.	२६	३४	१४	२७	७	१५	सि. १८।४७	७	२२	५	५०	९	१३	९	४३	बुध श्रवण में ८।८,
२६	१२	३	मं.	५५	२४	म.	१८	५२	सौ.	५५	५१	व.	२५	५७	१५	२८	८	१६	सिंह	७	२१	५	५०	९	१४	१०	४०	भ. २५।५७ उ., ५५।२४ या., मंगल अनु. में १०।१०, जन्मदिन A
२६	१५	४	बु.	५०	४३	पू.फा.	१८	१०	अ.	५०	३०	ब.	२३	४	१६	२९	९	१७	कं. ३२।५१	७	२१	५	५१	९	१५	११	३५	संकट चतुर्थी (संकट चौथ) [चन्द्रोदय सायं ९ घं. १९ मि.]
२६	१८	५	गु.	४७	२९	उ.फा.	१६	५१	सु.	४४	४१	कौ.	१९	६	१७	३०	१०	१८	कन्या	७	२०	५	५२	९	१६	१२	२९	यूरेनस ज्येष्ठा ३ में, निर्वाण दिन श्री महात्मा गांधी,
२६	२२	६	शु.	४३	४५	ह.	१५	१	धृ.	३८	४०	ग.	१५	३७	१८	३१	११	१९	तु. ४३।५२	७	२०	५	५३	९	१७	१३	२४	भ. ४३।४५ उ.,
२६	२५	७	श.	३९	२९	चि.	१२	४१	शू.	३२	१४	वि.	११	३७	१९	फ.	१२	२०	तुला	७	१९	५	५४	९	१८	१४	१७	भ. ११।३७ या., फरवरी प्रारम्भ, जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य B
२६	२८	८	र.	३४	४६	स्वा.	९	५२	गं.	२५	२६	बा.	७	८	२०	२	१३	२१	वृ. ५२।२६	७	१८	५	५५	९	१९	१५	८	शुक्र धनि. में ४०।३२
२६	३२	९	चं.	२९	३९	वि.	६	३८	वृ.	१८	१९	तै.	२	१२	२१	३	१४	२२	वृश्चिक	७	१८	५	५६	९	२०	१६	०	भ. ५६।५४ उ., बुध धनि. में ५३।४८,
२६	३५	१०	मं.	२४	८	अनु.	५९	३	ध्रु.	१०	५२	वि.	२४	८	२२	४	१५	२३	ध. ५९।३	७	१७	५	५७	९	२१	१६	५१	भ. २४।८ या.,
२६	३९	११	बु.	१८	२३	मू.	५५	५	व्या.	५५	५६	बा.	१८	२३	२३	५	१६	२४	धनु.	७	१६	५	५७	९	२२	१७	३९	गुरु वार्धक्य प्रा. ७।३०, षट्तिला एकादशी व्र. स.,
२६	४३	१२	गु.	१२	३८	पू.षा.	५१	८	व.	४७	५०	तै.	१२	३८	२४	६	१७	२५	धनु	७	१६	५	५८	९	२३	१८	२८	सूर्य धनि. में १।३०, प्रदोष व्रत,
२६	४७	१३	शु.	७	६	उ.षा.	४७	४०	सि.	४०	३३	व.	७	६	२५	७	१८	२६	म. ५।१६	७	१५	५	५९	९	२४	१९	१६	भ. ७।६ उ., ३४।६ या., बुध कुम्भ में ३८।२५, शुक्र कुम्भ में C
२६	५२	१४	श.	२	५	श्रव.	४५	१	व्य.	३३	५२	श.	२	५	२६	८	१९	२७	मकर	७	१४	६	०	९	२५	२०	१	गुरु अस्त ७।३५, गुरु धनि. ४ में १।३५, शनैश्चरी अमा, मौनी D
अवम		३०	श.	५७	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस तिथिक्षय

ग्रह-दर्शन—बुध-शुक्र अस्त हैं। गुरु ८ फरवरी को अस्त होगा। प्रातः शनि-मंगल पूर्वकपाल में परस्पर आसन्न होंगे। २७/२८ जन. को हैली धूम्रकेतु अस्त होगा।

गुरु अस्त ८ फर.

A ला. लाजपत राय, B जयन्ती, जन्मदिन श्री स्वामी विवेकानन्द जी, C ५९।२८, D अमावस,

माघ कृष्ण ८ रवि, इष्ट ५५।३०, कुं. सूर्योदये

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	७	९	१०	९	७	०	६
२०	६	२१	२	२३	१४	१०	१०
११	४४	२७	७	३८	२६	२५	२५
२७	३४	३४	३	४८	२०	०	०
६०	३५	१०८	१४	७५	४	३	३
५३	२४	२७	१७	१९	९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ	उ	अ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गु ११ | १० | ९ | म | श | ८ | १२ | शु | सू बु | के | ७ चं | १ रा | २ | ३ | ४ | ५ | ६

लोक भविष्य—शनि-मंगल वृश्चिक में हैं, पक्षान्त में पांच ग्रह अस्त हैं, अमावस शनिवार को है, प्रजा को रोग विशेष से परेशानी रहे। कहीं भयंकर वर्षा, बाढ़ से या अन्य प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। दक्षिण भारत में जनता को कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति का सामना करना पड़ेगा। खाद्य वस्तुओं में मंहगाई बढ़ेगी। अफगानिस्तान, फ्रांस, इटाली, रोम, ब्रिटेन, इरान, आयरलैण्ड में किसी समस्या को लेकर स्थिति उलझन पूर्ण बनेगी। कहीं शासन तन्त्र में परिवर्तन होगा।

कुं. सूर्योदये माघ कृष्ण १४ शनि, इष्ट ५५।४०,

बु ११ गु | शु | १० चं | ९ | ८ | श म | १२ | सू | के | १ रा | ७ | २ | ३ | ४ | ५ | ६

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	७	१०	१०	१०	७	०	६
२६	१०	२	३	१	१४	१०	१०
१६	१६	१९	३२	१०	४९	५	५
२५	५	१५	५६	२७	५८	५६	५६
६०	३५	१०४	१४	७५	३	३	३
४६	३	४४	२२	१६	३९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ	अ	अ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रह चाल और बाजार का रुख—६ फरवरी तक अनाजों में सामान्यतः तेजी का वातावरण बना रहेगा, तत्पश्चात् चावल, चांदी, सोना एवं अन्य व्यापारिक वस्तुओं में अचानक मन्दे के बाद तेजी का उछाला आएगा, मन्दे में खरीदकर तेजी में बेचने के सिद्धान्त से थोड़े दिनों में ही अच्छा लाभ मिलेगा।

आकाश लक्षण—इस पक्ष के आरंभ में हि. प्र. में अनेकत्र हिमपात होगा, शीत जोरों पर रहेगा। गु. बु. शु. वर्षा कारक हैं, ५, ७, ८ फरवरी को वर्षा एवं वायु का जोर रहेगा। कुछ स्थानों पर शीत से किंवा वर्षा की कमी से फसलों को हानि होगी।

शकुन विचार—यदि माघ कृ. २ को मेघ गरजें परन्तु वर्षा न हो तो गेहूं, जौ, चना का स्टाक करने से आगे लाभ मिलेगा।

श्री वि. सं. २०४२, शाके १९०७, माघ शुक्ल पक्ष २३ — (९ से २४ फर. सन् १९८६ ई०) उ. अ. द. गो. शिशिर ऋतु

ग्रह-दर्शन—१२ फरवरी शुक्र को तथा १७ फरवरी के बाद सायं बुध को पश्चिम में देखें। गुरु अस्त है। प्रातः शनि-मंगल पूर्वकपाल में परस्पर आसन्न होंगे।

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२६	५६	१	र.	५६	२०	ध.	४३	२६	व.	२८	५	कि.	२६	९	२७	९	२०	२८	कुं. २४।२५	७	१३	६	१	९	२६	२०	४६	पंचक प्रा. २४।२५,
२७	०	२	चं.	५३	४२	श.	४३	२२	प.	२३	२२	बा.	२४	१	२८	१०	२१	२९	कुम्भ	७	१२	६	२	९	२७	२१	३०	चन्द्रदर्शन मु. १५, राहु अश्वि. ३ में केतु स्वाती १ में ४७।३५,
२७	५	३	मं.	५४	७	पू.भा.	४४	५८	शि.	१९	५७	तै.	२३	५४	२९	११	२२	ज.१	मी. २९।३१	७	१२	६	२	९	२८	२२	१०	बुध शत. में १९।२२, जमद उस्सानी मु. प्रा.,
२७	९	४	बु.	५६	२४	उ.भा.	४८	२२	सि.	१७	५८	व.	२५	१६	फा.१	१२	२३	२	मीन	७	११	६	३	९	२९	२२	५१	भ. २५।२६ उ., ५६।२४ या., सं. सूर्य कुम्भ में ३६।४२, मु. ४५, A
२७	१३	५	गु.	६०	०	रे.	५३	२६	सा.	१७	२३	ब.	२८	२५	२	१३	२४	३	मे. ५३।२६	७	१०	६	४	१०	०	२३	३०	पंचक स. ५३।२६, शुक्र शत. में १८।४५, बसन्त पंचमी, श्री पंचमी,
२७	१८	५	शु.	०	२६	अ.	६०	०	शु.	१८	४	बा.	०	२६	३	१४	२५	४	मेष	७	९	६	५	१०	१	२४	९	शुक्र उदित १२ फर.
२७	२२	६	श.	५	५७	अ.	०	२	शु.	१९	४७	तै.	५	५७	४	१५	२६	५	मेष	७	८	६	६	१०	२	२४	४१	शुक्र बाल्य समाप्त २०।४२,
२७	२७	७	र.	१२	२३	भ.	७	३०	ब्र.	२२	६	व	१२	२३	५	१६	२७	६	वृ. २४।२७	७	७	६	६	१०	३	२५	१५	भ. १७।२३ उ., ४५।४४ या. रथ सप्तमी (पहले अरुणोदय B
२७	३१	८	चं.	१९	६	कृ.	१५	१८	ऐं.	२४	३३	ब.	१९	६	६	१७	२८	७	वृष	७	६	६	७	१०	४	२५	४६	बुध पश्चिम में उदित ३८।४२, श्री भीष्माष्टमी,
२७	३५	९	मं.	२५	२८	रो.	२२	४८	वै.	२६	४३	कौ.	२५	२८	७	१८	२९	८	मि. ५६। ४	७	५	६	८	१०	५	२६	१६	बुध पू. भा. में ४४।३२, सूर्य सा. मीन में ५४।२०, बसन्त ऋतु प्रा.,
२७	४०	१०	बु.	३०	४८	मृ.	२९	२०	वि.	२८	६	ग.	३०	४८	८	१९	३०	९	मिथुन	७	४	६	९	१०	६	२६	४४	सूर्य शत. में १३।१०, मंगल ज्येष्ठा में ५९।१८,
२७	४५	११	गु.	३४	४२	आ.	३४	३२	प्री.	२८	२५	व.	२	४५	९	२०	फा.१	१०	मिथुन	७	३	६	१०	१०	७	२७	१०	भ. २।४५ उ., ३४।४२ या., जया एकादशी व्र., शक फाल्गुन प्रा.,
२७	५०	१२	शु.	३६	५६	पुन.	३८	८	आ.	२७	३०	ब.	५	४९	१०	२१	२	११	क. २२।१६	७	२	६	१०	१०	८	२७	३५	गुरु शत. १ में ५५।३०, भीष्म द्वादशी,
२७	५४	१३	श.	३७	२५	पु.	४०	३	सौ.	२५	१४	कौ.	७	११	११	२२	३	१२	कर्क	७	१	६	११	१०	९	२७	५७	शनि प्रदोष व्रत,
२७	५९	१४	र.	३६	१९	आश्ले.	४०	२६	शो.	२१	४२	ग.	६	५२	१२	२३	४	१३	सिं. ४०।२६	७	०	६	१२	१०	१०	२८	१८	भ. ३६।१९ उ., शुक्र पू.भा. में ५८।३२,
२८	३	१५	चं.	३३	५२	म.	३९	३१	अ.	१७	५	वि.	५	६	१३	२४	५	१४	सिंह	६	५९	६	१३	१०	११	२८	३८	भ. ५।६ या., सत्य व्रत, माघस्नान समाप्त जन्मदिन श्री गुरु C

A पुष्य १७।४२ बाद, शुक्र पश्चिम में उदित २०।३५, तिल चतुर्थी, वरद चतुर्थी,

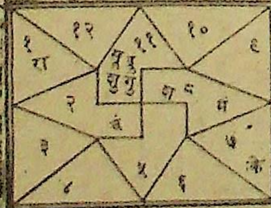
B वाली), आरोग्य सप्तमी,

C रविदास जी,

माघ शु. ८ चन्द्र, इष्ट ५६।०,

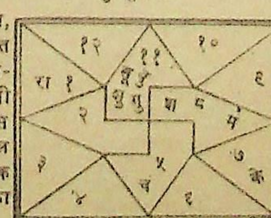
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	१०	१०	१०	७	०	६
५	१५	१८	५	१२	१५	९	९
२२	२९	३५	४२	२६	१९	३७	३७
१६	१८	२४	३१	५८	३८	१९	१९
६०	३४	[illegible]	१४	७५	२	३	३
३१	२९	४२	२५	५	५१	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—आकाश में एक विलक्षण धूम्रकेतु दिखाई देगा, जो कि पक्षारंभ में सूर्य के निकटतम होगा। विश्व के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए इस धूम्रकेतु का उदय शुभ नहीं। विश्व के गण्य-मान्य राजनीतिज्ञ स्व-स्वदेशीय समस्याओं में उलझेंगे। किसी राजनीतिज्ञ के निधन से आगामी ५ मासों में शोक व्याप्त होगा। इस पक्ष में गुरु-शुक्र का युद्ध एवं पक्ष मध्य में शनि-मंगल की समकाल युति भारत में ऐतिहासिक घटनाओं को जन्म देगी, प्रधान शासक के लिए समय नेष्ट है। युद्ध के वातावरण से शान्ति भंग होने का योग है।

कुं. सूर्योदये



माघ शु. १५ चन्द्र, इष्ट ५६।१७,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	१०	१०	१०	७	०	६
१२	१९	२९	७	२१	१५	९	९
२५	२६	४९	२३	१२	३७	१५	१५
१५	२	३८	२२	७	३४	३	३
६०	३३	७९	१४	७४	२	३	३
२०	५६	५७	२३	५८	११	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारंभ में छोटे-मोटे अनाजों में प्रायः साधारण मन्दे का रुख, रहेगा। १२ फर. से घी, खांड में मन्दी, रुई, सूत, वस्त्र सण, सोना, चांदी, तिल, चावल तेज होंगे। १७ फरवरी से वस्त्र, रुई, शेयर मन्दे होंगे।

आकाश लक्षण—९, १०, ११, १२, १७ को हि. प्र., पंजाब, हरियाणा आदि में बादलचाल एवं अन्यत्र भी साधारण वर्षा के योग है।

शकुन विचार—अगर कुम्भ संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो काले रंग की वस्तुओं के स्टाक से आगे अच्छा लाभ मिलेगा। माघी पूर्णिमा को बादल हों तो अन्न संग्रह से सातवें मास में लाभ होगा।

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४ — तारीखें — चन्द्र — भा.स्टैं.टा. — उदय-कालिक (२९ फर. से १० मार्च सन् १९८६ ई०) उ. अ., व. गो. वसन्त ऋतु

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. (फाल्गु.)	अं. (फर.)	श. (फाल्गु.)	मु. (ज.)	चन्द्र संचार घ. प.	सू.उ. घ.	मि.	सू.अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२८	७	१	म.	३०	१७	पू.फा.	३७	३२	सु.	११	३१	बा.	२	५	१४	२५	६	१५	क. ५१।५१	६	५८	६	१३	१०	१२	२८	५६
२८	१२	२	बु.	२५	५४	उ.फा.	३४	४८	धृ.	५ ४८	३ २७	ग.	२५	५४	१५	२६	७	१६	कन्या	६	५७	६	१४	१०	१३	२९	१३
२८	१७	३	गु.	२१	१	ह.	३१	३५	गं.	५१	२५	वि.	२१	१	१६	२७	८	१७	तु. ५६।५०	६	५६	६	१५	१०	१४	२९	२७
२८	२१	४	शु.	१५	४७	चि.	२८	५	वृ.	४४	१	बा.	१५	४७	१७	२८	९	१८	तुला	६	५५	६	१६	१०	१५	२९	४०
२८	२६	५	श.	१०	२६	स्वा	२४	३०	ध्रु.	३६	४३	तै.	१०	२६	१८	मा'	१०	१९	तुला	६	५४	६	१६	१०	१६	२९	५२
२८	३०	६	र.	५	७	वि.	२०	५९	व्या.	२९	२९	व	५	७	१९	२	११	२०	वृ. ६।५२	६	५२	६	१७	१०	१७	३०	२
क्षय		७	र.	५६	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	३५	८	सं.	५४	५२	अनु.	१७	३६	ह.	२२	२२	बा.	२७	२४	२०	३	१२	२१	वृश्चिक	६	५१	६	१८	१०	१८	३०	१०
२८	३९	९	मं.	५०	५	ज्ये.	१४	२४	व.	१५	२५	तै.	२२	२८	२१	४	१३	२२	ध. १४।२४	६	५०	६	१८	१०	१९	३०	१७
२८	४३	१०	बु.	४५	४३	मू.	११	३३	सि.	८	४५	व.	१७	५४	२२	५	१४	२३	धनु	६	४९	६	१९	१०	२०	३०	२२
२८	४८	११	गु.	४१	४६	पू.षा.	९	४	व्य.	२ ५९	२ २२	व.	१३	४५	२३	६	१५	२४	म. २३।३४	६	४८	६	२०	१०	२१	३०	२६
२८	५२	१२	शु.	३८	२८	उ.षा.	७	५	प.	५०	५५	कौ.	१०	७	२४	७	१६	२५	मकर	६	४७	६	२०	१०	२२	३०	२८
२८	५७	१३	श.	३५	५६	श्र.	५	४६	शि.	४६	८	ग.	७	१२	२५	८	१७	२६	कुं. ३५।३६	६	४५	६	२१	१०	२३	३०	२७
२९	२	१४	र.	३४	२४	ध.	५	२३	सि.	४२	११	वि.	५	१०	२६	९	१८	२७	कुम्भ	६	४४	६	२२	१०	२४	३०	२६
२९	६	३०	च.	३४	६	श.	६	४	सा.	२९	१२	च.	४	१५	२७	१०	१९	२८	मी. ५२।३०	६	४३	६	२२	१०	२५	३०	२३

ग्रह-दर्शन—बुध ६ मार्च को पश्चिम में अस्त होगा। प्रातः शनि-मंगल समध्यासन्न होंगे। सायं शुक्र को पश्चिम में देखें। मार्च के प्रारम्भ में सूर्योदय से पहिले पूर्व-दक्षिण कोण में धूम्रकेतु देखें।

बुध मीन में ४।७,
भ. ५३।२८ उ.,
भ. २१।१ या., श्री गणेश चतुर्थी व्र., बुध उ.भा. में ४६।३५,

मार्च प्रारंभ,
भ. ५।७ उ., ३२।३१ या.,
सप्तमी तिथिक्षय,
शुक्र मीन में ५९।३२,
सूर्य पू. भा. में २९।४०,
भ. १७।५४ उ. ४५।४३ या.,
शुक्र उ. भा. में ४०।५, विजया एकादशी व्र.,
गुरु शत. २ में ५३।५, बुध वक्री ३३।२२,
भ. ३५।५६ उ., पंचक प्रा. ३५।३६, शनि प्रदोष व्र., श्री महाशिव A
भ. ५।१० या., बुध पश्चिम में अस्त ७।०
सोमवती अमावस,

धूम्रकेतु दर्शन प्रातः (पूर्व-दक्षिण कोण में)

A रात्रि व्रत (शिवयोग) (देखें पृष्ठ ५९/६०)

फाल्गुन कृ. ८ चन्द्र, इष्ट ५६।३७,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	११	१०	१०	७	०	६
१९	२३	६	६	२९	१५	८	८
२६	२४	४४	३	५६	५०	५२	५२
५७	४०	३८	४६	२३	४८	४८	४८
६०	३३	२७	१४	३४	१	३	३
८	१९	४	१८	४८	३०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
शत. ४	ज्ये. ३	उ.भा. २	धनि. ४	पू.भा. ३	अनु. ४	अश्वि. ३	स्वा. १

कुं. सूर्योदये

१२ बु, रा १, शु ११, गु मु, चं श ८, १०, ९, २, म, ३, ४, ५, ६, ७ के

लोक भविष्य—बृहस्पति प्रतिचारी है, ६ मार्च को मंगल-युरेनस युति होगी। शासकों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी, विश्व शान्ति के लिए नए आयोजन होंगे। मीन राशि में बुध-शुक्र का योग कहीं जल से हानि भय बनाता है, खड़ी फसलों को हानि होगी। उ.भा. नक्षत्र का बुध निम्न श्रेणी के व्यक्तियों को विशेष अधिकार देता है। विश्व के विकासशील देशों में आर्थिक संकट आएगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारंभ से ६ मार्च तक रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अनाज, सरसों, तेल, अलसी, एरण्डी में मन्दे का वातावरण रहेगा, ध्यान दें—यदि इन दिनों बाजार मन्दे के हों तो जोरदार मन्दी आयेगी, अगर बाजारों का रुख तेजी की तरफ है तो जोरदार तेजी बनेगी, बाजार का रुख देखकर काम करें। ७ से ९ मार्च में कुछ तेजी बनेगी तत्पश्चात् मन्दा आएगा।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में बुध-शुक्र जन्मराशि मीन में है, अतः अनेकत्र, बादल, बूंदाबांदी व खण्डवृष्टि होगी।

शकुन विचार—यदि फाल्गुन में बादल हों परन्तु वर्षा न हो तो आगे वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है।

कुं. सूर्योदये

१२ बु, १ रा, शु, चं ११, १०, ९, गु सू, श ८, म, २, ३, ४, ५, ६, ७ के

फाल्गुन कृ. ३० चन्द्र, इष्ट ५६।५७,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	११	१०	११	७	०	६
२६	२७	६	१०	८	१५	८	८
२७	१५	४४	४३	३६	५६	३०	३०
१७	५५	१५	२७	३७	१०	३२	३२
५९	३२	३३	१४	३४	०	३	३
५६	३५	३७	८	४०	४७	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	अ	अ	उ	उ	अ.	अ.
पू.भा. २	ज्ये. ४	उ.भा. २	शत. २	उ.भा. २	अनु. ४	अश्वि. ३	स्वा. १

श्री वि. सं. २०४२, शाके १९०७, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५ | (११ से २६ मार्च सन् ८६ ई०), उ. श्र. व. उ. गो. वसन्त ऋतु

दि.मा. घ. प.	तिथि	वार	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	योग	घ. प.	करण	घ. प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	अ. मार्च	श. फाल्गुन	मु फ.उ.	चन्द्र संचार घ. प.	भा.स्टैं.टा. चण्डीगढ़ सू. उ. घ. मि	सू. अ. घ. मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२६ १०	१	मं.	३५ ७	पू.भा.	८ ०	शु.	३७ १६	कि.	४ ३६	२८	११	२०	२६	मीन	६ ४२	६ २३	१०	२६	३०	१६
२६ १५	२	बु.	३७ ३७	उ.भा	११ १७	शु.	३६ २८	बा.	६ २२	२९	१२	२१	३०	मीन	६ ४१	६ २४	१०	२७	३०	९
२६ २०	३	गु.	४१ ३४	रे	१६ २	ब्र.	३६ ४७	तै.	९ ३६	३०	१३	२२	र.	मे. १६।२	६ ३९	६ २४	१०	२८	२९	०
२६ २५	४	शु.	४६ ४६	अ	२२ ३	ऐं.	३८ ४	व.	१४ १०	चै.	१४	२३	२	मेष	६ ३८	६ २५	१०	२९	२९	४७
२६ ३०	५	श.	५२ ५६	भ.	२९ ६	वै.	४० ६	व.	१९ ५१	२	१५	२४	३	वृ. ४९।१	६ ३७	६ २६	११	०	२९	३३
२६ ३५	६	र.	५९ ३२	कृ.	३६ ४७	वि.	४२ ३५	कौ.	२६ १४	३	१६	२५	४	वृष	६ ३६	६ २६	११	१	२९	१८
२६ ४०	७	चं.	६० ०	रो.	४४ ३०	प्री	४५ १	ग.	३२ ४६	४	१७	२६	५	वृष	६ ३४	६ २७	११	२	२८	५८
२६ ४६	७	मं.	६ ०	मृग.	५१ ४१	आ.	४७ ४	व.	६ ०	५	१८	२७	६	मि. १८।६	६ ३३	६ २८	११	३	२८	३८
२६ ५१	८	बु.	११ ४१	आ.	५७ ४७	सौ.	४८ १७	व.	११ ४१	६	१९	२८	७	मिथुन	६ ३२	६ २८	११	४	२८	१९
२६ ५७	९	गु.	१६ ३	पुन.	६० ०	शो.	४८ १७	कौ.	१६ ३	७	२०	२९	८	क. ४९।१२	६ ३१	६ २९	११	५	२७	५१
३० २	१०	शु.	१८ ४१	पुन.	२ २२	अ.	४६ ५५	व.	१८ ४१	८	२१	३०	९	कर्क	६ २९	६ ३०	११	६	२७	२४
३० ७	११	श.	१९ २८	पु.	५ ८	सु.	४४ ५	बि.	१९ २८	९	२२	चै.	१०	कर्क	६ २८	६ ३०	११	७	२६	५५
३० १२	१२	र.	१८ १८	आश्ले.	६ २	धृ.	३९ ४५	बा.	१८ १८	१०	२३	२	११	सि. ६।२	६ २७	६ ३१	११	८	२६	२३
३० १७	१३	चं.	१५ २२	म.	५ ८	शू.	३४ ६	तै.	१५ २२	११	२४	३	१२	सिंह	६ २६	६ ३२	११	९	२५	४९
३० २०	१४	मं.	१० ५८	पू.फा.	[illegible]	गं.	२७ २०	व.	१० ५८	१२	२५	४	१३	कं. १९।५०	६ २४	६ ३२	११	१०	२५	१३
३० २४	१५	बु.	५ २१	उ.	५४ ३५	वृ.	१९ ३१	व.	५ २१	१३	२६	५	१४	कन्या	६ २३	६ ३३	११	११	२४	३७

ग्रह-दर्शन—२४ मार्च को बुध पूर्व में उदित होगा, ११ मार्च को गुरु उदित होगा। प्रातः शनि-मंगल को समध्यासन्न, गुरु को पूर्व में तथा शुक्र को पश्चिम में देखें।

गुरु उदित ११ मार्च

गुरु उदित १०।८,
चन्द्रदर्शन मु. ३०,
पंचक समाप्त १६।२, रजब मु. प्रा.,
भ. १४।१० उ. ४६।४६ या., सं. सूर्य मीन में ३०।१५, मु. १५, A
व. बुध पू.भा. में ३५।३०,
मंगल मूल धनु में १।३०,
सूर्य उ.भा. में ५१।१५, शुक्र रेवती में २३।४८,
भ. ६।० उ. ३८।५० या.,
व. बुध कुम्भ में ११।०, शनि वक्री २३।२५, होलाष्टक प्रा.,
सूर्य सा. मेष में ५३।१५, उ. गोल प्रा., महाविषुव दिन,
भ. ४९।५ उ., शक सम्वत् १९०७ समाप्त,
भ. १९।२८ या., गुरु शत. ३ में ९।४०, आमलकी एकादशी व्र. B
प्रदोष व्रत,
बुध पूर्व में उदित ४।८,
भ. १०।५८ उ. ३८।१९ या., श्री सत्य व्र., होलिका दहन (रात्रि C
धुलण्डी, होलाष्टक समाप्त, होला मेला श्री आनन्दपुर साहेब (पं.),

A पुण्य १४।१५ बाद, गुरु बाल्य. समाप्त १०।१८,

B समाप्त शक चैत्र (सं १९०८) प्रा.,

C ९ बजकर ४० मि. बाद,) होली

फाल्गुन शुक्ल ८ बुध, इष्ट ५७।२५, कुं. सूर्योदये

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१०	१०	११	७	०	६
५	२	२९	१२	१६	१६	८	८
२५	५	१७	४९	५०	२	१	१
[illegible]	१	४६	३५	३३	३८	५५	५५
५९	३१	५१	१३	७४	०	३	३
३६	२९	५४	५१	२३	७	११	११
	मा	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१ रा, बु गु ११, १२, २, १०, शु शै, च, ३, ९, मं, ४, श ८, ६, ५, के ७

लोक भविष्य—पक्षारंभ में गुरु अतिचारी है, जनता की आर्थिक स्थिति विषम होगी; देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए नई योजनाएं बनें, व्यापार पर भी आर्थिक-संकट का प्रभाव पड़ेगा। धनु राशि का मंगल जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी लाता है।—"धनुराशि गते भौमे मूल द्रव्य तृणानि च। काष्ठं च घृत कार्पासं महर्घं च चतुष्पदम्॥"

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारंभ में चांदी में तेजी एवं अनाजों में मन्दे का रुख रहेगा। १६ मार्च से कपास, घी, तेल, बिनौला, सरसों में तेजी बनेगी। २१ मार्च के लगभग विचार से काम करें, अचानक अच्छी तेजी आ जाने का योग बनता है। इस समय तेलबाना, अनाज, तेल, मशीनरी एवं अन्य चीजों में तेजी बनेगी।

आकाश लक्षण—मार्च ११, १६, २१, २६ को बादल हों, कहीं खण्डवृष्टि हो।

शकुन विचार——यदि मीन संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो तिल, घी, कपास के स्टाक से पांचवें मास अच्छा लाभ मिले। यदि फाल्गुनी पूर्णिमा को मेघ गरजें एवं वर्षा हो तो अन्न संग्रह से सातवें मास में लाभ हो।

कुं. सूर्योदये फाल्गुन शुक्ल १५ बुध, इष्ट ५७।४८

१ रा, गु ११ के, शु १२, २, १०, शु, ३, ९ म., ६, ४, चं, ८ श, ५, के ७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१०	१०	११	७	०	६
१२	५	२४	१४	२८	१५	७	७
[illegible]	४२	४८	२५	३०	५९	३९	३९
४८	२७	५१	३६	४४	४२	४०	४०
५९	३०	१९	१३	७४	०	३	३
२१	२७	४१	३२	१२	४९	११	११
	मा.	व	मा.	मा	व.	व.	व.
	उ	उ	उ.	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०४२, शाक १९०७, चैत्र कृष्ण पक्ष २९ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टैं.टा. | उदय-कालिक (२७ मार्च से ९ अप्रैल सन् १९८६ ई०) उ. भ., उ. गो. वसन्त ऋतु

वि.वा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	प्रं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घ.	मि.	सू. अ. घ.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
प्रथम		१	शु.	५८	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथि क्षय,
३०	२८	२	गु.	५१	४०	चि.	४६	२३	ध्रु.	११	२०	तै.	२५	१५	१४	२७	६	१५	तु. २१।५६	६	२२	६	३३	११	१२	२३	५७	
३०	३२	३	शु.	४४	३६	स्वा	४४	६	व्या.	[illegible]	[illegible]	व.	१८	८	१५	२८	७	१६	तुला	६	२१	६	३४	११	१३	२३	१५	भ. १८।८ उ., ४४।३६ या., शुक्र अश्वि. मेष में ११।१०,
३०	३६	४	श.	३७	२६	वि.	३८	५३	ह.	४५	१५	ब.	११	२	१६	२९	८	१७	वृ. २५।११	६	२०	६	३५	११	१४	२२	३२	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, श्रीभगवान् नारायण जय. (पिण्डोरी धाम †
३०	४०	५	र.	३०	४४	अनु.	३४	३	सि.	३६	५७	कौ.	४	६	१७	३०	९	१८	वृश्चिक	६	१८	६	३५	११	१५	२१	४७	बुध मार्गी ४२।५६
३०	४६	६	चं.	२४	३७	ज्ये.	२९	५१	व्य.	२९	१०	व.	२४	३७	१८	३१	१०	१९	ध. २९।५१	६	१७	६	३६	११	१६	२०	५९	भ. २४।३७ उ., ५१।५५ या., सूर्य रेव. में १९।१५,
३०	५०	७	मं.	१९	१३	मू.	२६	२३	व.	२१	५९	ब.	१९	१३	१९	अं'	११	२०	धनु	६	१६	६	३७	११	१७	२०	११	अप्रैल प्रारम्भ,
३०	५५	८	बु.	१४	४३	पू.षा.	२३	५०	प.	१५	३३	कौ.	१४	४३	२०	२	१२	२१	म. ३८।२७	६	१५	६	३७	११	१८	१९	२०	
३१	१	९	गु.	११	१५	उ.षा.	२२	१९	शि.	९	५७	ग.	११	१५	२१	३	१३	२२	मकर	६	१३	६	३८	११	१९	१८	२८	भ. ४०।३ उ., मेला शीतला माता (कुराली, पंजाब)
३१	६	१०	शु.	८	५१	श्र.	२१	५१	सि.	५	११	वि.	८	५१	२२	४	१४	२३	कुं. ५२।९	६	१२	६	३८	११	२०	१७	३४	भ. ८।५१ या., पंचक प्रा. ५२।९,
३१	१२	११	श.	७	३१	ध.	२२	२८	सा.	[illegible]	[illegible]	बा.	७	३१	२३	५	१५	२४	कुम्भ	६	११	६	३९	११	२१	१६	३७	पाप मोचिनी एकादशी व्रत
३१	१५	१२	र.	७	२३	श.	२४	१४	शु.	५६	१४	तै.	७	२३	२४	६	१६	२५	कुम्भ	६	१०	६	४०	११	२२	१५	३९	गुरु शत. ४ में ४।२५, प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व (प्रातः ९ घं. ७ मि. ‡
३१	२०	१३	चं.	८	२३	पू.भा.	२७	७	श.	५५	३	व.	८	२३	२५	७	१७	२६	मी. ११।२४	६	९	६	४०	११	२३	१४	४०	भ. ८।२३ उ., ३९।२८ या., शुक्र भर. में ५९।३, मेला पिहोवा ●
३१	२५	१४	मं.	१०	३२	उ.भा.	३१	८	ऐं.	५४	४८	श.	१०	३२	२६	८	१८	२७	मीन	६	७	६	४१	११	२४	१३	३८	
३१	२७	३०	बु.	१३	५२	रे.	३६	१५	वै.	५५	२४	ना.	१३	५२	२७	९	१९	२८	मे. ३६।१५	६	६	६	४२	११	२५	१२	३३	पंचक स. ३६।१५, चान्द्र संवत्सर २०४२ पूर्ण ●

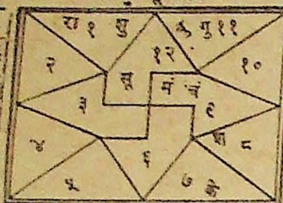
ग्रह-दर्शन—प्रातः बुध पूर्व में, मंगल खमध्यासन्न तथा शनि पश्चिमकपाल में होंगे । इस समय गुरु को पूर्व में देखें । मार्च के अन्त में धूम्रकेतु की पूंछ अधिकतम होगी ।

† गुरुदासपुर (पं०) ‡ से सायं ३ घं. ५२ मि. तक) ● (कुरुक्षेत्र)

चैत्र कृ. ८ बुध, इष्ट ५८।८,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१०	१०	०	७	०	६
१९	९	२४	१५	७	१५	७	७
१६	१२	५२	५६	९	५१	१७	१७
४०	८	४	२०	३१	५६	२४	२४
५९	२९	२१	१३	७४	१	३	३
१०	१५	४१	१०	०	२६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
रे.	मूल	पू.भा.	शत.	अश्वि.	अनु.	अश्वि.	स्वा.

कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—इस मास में ५ बुधवार प्रजा में कुशल-क्षेम सूचक हैं । वर्षा ठीक, सुभिक्ष रहे । धार्मिक क्रियाकलाप अधिक हों । भारत का प्रभाव क्षेत्र बढ़ेगा । राजस्थान में विशेष प्रगति-प्रद कार्यक्रम बनेंगे ।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—जौ, चना, गेहूं आदि अनाज, तेल तथा घी में तेजी हो, सोना, चाँदी में खास तेजी आयेगी । पक्षान्त तक उत्तम-मध्यम रूप से तेजी का वातावरण रहेगा ।

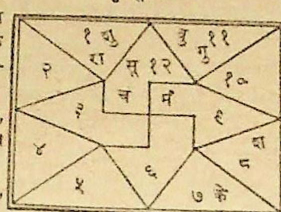
आकाश लक्षण—२८ से ३० अप्रैल तक सिक्किम, हि. प्र., बंगाल, बंगलादेश एवं लंका के पश्चिमी भाग पर बादल छाए रहें, कहीं खण्ड वृष्टि हो ।

शकुन विचार—चैत्र कृष्ण ७ को आकाश मेघाच्छन्न रहे तो गुड़, खांड, गेहूं, सोना, मसरी, लालमिर्च तेज होंगे ।

● विशेष सूचना—अगले वर्ष सं. २०४३ वि. में चैत्र शु. ४ रविवार (१३ अप्रैल '८६ ई०) को हरिद्वार में "कुम्भ महापर्व" का योग बन रहा है । इस कुम्भ पर्व के महत्त्वपूर्ण "कुछ स्नान इस वर्ष (सं० २०४२ वि०) में भी पड़ रहे हैं । २६ मार्च '८६ को पूर्णिमा, ५ अप्रैल '८६ को एकादशी के दिन और ६ अप्रैल '८६ को वारुणी पर्व (प्रातः ९ घं. ७ मि. से सायं ३ घं. ५२ मि. तक) गंगा स्नान से इस कुम्भ पर्व पर महापुण्य प्राप्त होगा । इसी प्रकार चैत्र कृ. अमा. बुधवार (९ अप्रैल '८६ ई.) को भी गंगा स्नान-दान विशेष पुण्यप्रद है । कुम्भ के स्नान-दिनों का विस्तृत विवरण स० २०४३ वि० के पंचांग में देंगे ।

"चन्द्रमौलि-शंकर चरण बार-बार सिरनाय । संवत् यह पूरण कियो गिरा-गणेश मनाय ॥"

कुं. सूर्योदये



चैत्र कृ. ३० बुध, इष्ट ५८।३०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१०	१०	०	७	०	६
२६	१२	२८	१७	१५	१५	६	६
१०	३२	५३	३०	४६	३९	५५	५५
२	४१	५६	१९	४९	३२	९	९
५८	२७	४९	१२	७३	२	३	३
५६	४९	४४	४४	४६	८	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ	उ	उ	उ	उ	अ.	अ.
रेव.	मूल	पू.भा.	शत.	भर.	अनु.	अश्वि.	स्वा.

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में दिएगए तिथि-नक्षत्र आदि को समझने के लिए आवश्यक निर्देश

क्योंकि घड़ी-पलों में दिएगए तिथि-नक्षत्र आदि के काल एक ही स्थान के सूर्योदय से सम्बन्ध रखते हैं, अतः वे देश में सर्वत्र ग्राह्य नहीं हो सकते। भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में यदि इन्हें दिया जाए तो ये भारत के किसी भी स्थान पर बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किये जा सकते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर हमने भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि-नक्षत्रों का समाप्ति-काल, चन्द्रमा का राशि प्रवेशकाल, ग्रहों के नक्षत्रराशि प्रवेश आदि का काल एवं भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल देना प्रारम्भ किया है। इन्हें समझने के लिये कुछ निर्देशन आवश्यक हैं, इन्हें पढ़ लेना चाहिए :—

दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः १३ से २४ तक के अंकों द्वारा प्रकट किया जाता है। अर्थात् दिन के १ बजे को १३ बजे, २ बजे को १४ बजे इत्यादि ढंग से लिखते हुए रात के १२ बजे को २४ बजे लिखा गया है। फिर रात्रि के १२ बजे (अर्थात् २४ बजे) के बाद सूर्योदय तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः २५, २६, २७, २८, २९, ३० एवं ३१ अंकों द्वारा प्रकट किया गया है। अर्थात् इस नियम के अनुसार रात के १ बजे को २५ बजे, २ बजे को २६ बजे इत्यादि लिखते हुए सूर्योदय से पहले बजने वाले ७ को ३१ बजे लिखा गया है। ध्यान रहे—सूर्योदय के बाद ५, ६, ७ घण्टों को ५, ६, ७ ही लिखा गया है। नीचे दिये गये उदाहरणों को पढ़ने से यह सब बिल्कुल स्पष्ट हो जायेगी :—

(१) १ अप्रैल (सन् १९८५ ई०) को चैत्र शुक्ल दशमी चन्द्रवार के सामने '८ घण्टा १८ मिनट' लिखा है। इसका अर्थ है, कि दशमी तिथि १ अप्रैल को प्रातः ८ बजकर १८ मिनट पर समाप्त होगी।

(२) ६ अप्रैल १९८५ ई. को वैशाख कृष्ण प्रतिपदा शनिवार के आगे '१३ घं. १३ मि.' लिखा है; इसका अर्थ है, कि इसदिन प्रतिपदा दिन के १ बजकर १३ मिनट पर समाप्त होगी।

(३) १९ अप्रैल १९८५ ई० को रेवती नक्षत्र के आगे २१ घं. ४७ मि. लिखा है। इसका अभिप्राय है, कि इसदिन रेवती नक्षत्र रात के ९ बजकर ४७ मिनट पर समाप्त होगा।

(४) ११ मई १९८५ ई० शनिवार को 'चन्द्रसंचार' वाले कालम में 'कुंभ २८।१८' लिखा है। इसका अर्थ है, कि चन्द्रमा ११ मई की समाप्ति के बाद रात के ४ बजकर १८ मिनट पर कुम्भ राशि में प्रविष्ट होगा। भारतीय ज्योतिष के अनुसार इस समय शनिवार ही माना जाएगा। क्योंकि भारतीय ज्योतिष के अनुसार वार सूर्योदय होने पर ही बदलता है। ध्यान रहे—पाश्चात्य (अंग्रेजी) पद्धति के अनुसार चन्द्रमा के कुम्भ राशि में प्रवेश के समय १२ मई और रविवार माना जाएगा; क्योंकि इस पद्धति के अनुसार रात के १२ बजते ही वार और तारीख दोनों बदल जाते हैं।

ऐसा ही एक उदाहरण और लीजिए—

(५) ५ सितम्बर १९८५ ई० गुरुवार के आगे भद्रा २६।१४ उ. लिखा है; इसका अर्थ है, भद्रा ६ सितम्बर की रात के २ बजकर १४ मिनट पर शुरू होगी। इस समय अंग्रेजी पद्धति से शुक्रवार माना जाएगा।

दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं, कि किसी तारीख के आगे लिखे घण्टे यदि २४ हों या २४ से अधिक हों तो वहां घण्टों में से २४ घटा दें और शेष घण्टा-मिनटों को अगली तारीख का (सूर्योदय से पहले का) टाईम समझें।

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४२)

मास पक्ष	तारीख १९८५	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
चैत्र शुक्ल पक्ष	२२ मार्च	१	शु.	१९।५५	उ.भा.	१२।५०	मीन	यूरेनस वक्री,
	२३	२	श.	२२।३१	रे.	१५।४०	मे. १५।४०	पंचक समाप्त १५।४०
	२४	३	र.	२५।११	अ.	१८।४९	मेष	मंगल भर. में २६।३८, बुध (A)
	२५	४	चं.	२७।४८	भ.	२१।५६	वृ. २८।४०	भ. १४।३० उ., २७।४८ या.,
	२६	५	मं.	३०। ९	कृ.	२४।५०	वृष	बुध पश्चिम में अस्त ११।१५,
	२७	६	बु.	— —	रो.	२७।२२	वृष	(A) वक्री १९।२६,
	२८	६	गु.	८। ४	मृ.	२९।२०	मि. १६।२१	गुरु श्रवण ३ में ११।१२,
	२९	७	शु.	९।२०	आ.	— —	मिथुन	भ. ९।२० उ. २१।३५ या.,
	३०	८	श.	९।५०	आ.	६।३३	क. २४।५२	शुक्र वार्धक्य प्रा. १२।२०,
	३१	९	र.	९।३०	पुन.	६।५८	कर्क	सूर्य रेवती में ७।४०,
	१ अप्रै.	१०	चं.	८।१८	पु.	६।३३ २९।१८	सिं. २९।१८	भ. १९।१८ उ.,
	२	११	मं.	६।१८ २६। ८	म.	२७।२५	सिंह	भ. ६।१८ या., राहु भ. ४ में (B) (B) केतु विशा. २ में १३।१० (C)
	३	१३	बु.	२४।२५	पू.फा.	२४।५९	सिंह	(C) शुक्र पश्चिम में अस्त १२।२०
	४	१४	गु.	२०।४९	उ.फा.	२२।१०	कं. ६।१७	भ. २०।४९ उ., नेप. वक्री,
	५	१५	शु.	१७। २	ह.	१९।१०	तु. २९।४०	भ. ६।५६ या.,
वैशाख कृष्ण पक्ष	६	१	श.	१३।१३	चि.	१६। ९	तुला	शुक्र पूर्व में उदित १८।२५
	७	२	र.	९।३३	स्वा.	१३।१९	वृ. २९।२८	भ. १९।५३ उ., व. बुध उ.भा. (D)
	८	३	चं.	६।१३ २७।३९	वि.	१०।५१	वृश्चिक	भ. ६।१३ या., (D) में २८।४७ (E) में ९।४७, (F) उदित १३।५२
	९	५	मं.	२५। ०	अनु.	८।५१	वृश्चिक	शुक्र बाल्य. समाप्त १८।२५
	१०	६	बु.	२३।२०	ज्ये.	७।२६	ध. ७।२६	भ. २३।२० उ., व. शुक्र उ.भा. (E)
	११	७	गु.	२२।२४	मू.	६।४३	धनु	भ. १०।५२ या. बुध पूर्व में (F)
	१२	८	शु.	२२।१०	पू.षा.	६।४३	म. १२।५३	मंगल कृत्ति. में १९।३१
	१३	९	श.	२२।३८	उ.षा.	७।२३	मकर	सं. सूर्य अ. मेष में २०।२४, वक्री (G)
	१४	१०	र.	२३।४४	श्र.	८।४४	कु. २१।४१	भ. ११।११ उ. २३।४४ या. (H)
	१५	११	चं.	२५।२१	ध.	१०।३९	कुम्भ	(H) पंचक. प्रा. २१।४१, वक्री (I)
	१६	१२	मं.	२७।२३	श.	१३। ०	कुम्भ	(I) शनि विशा. ४ में १८।०;
	१७	१३	बु.	२९।४३	पू.भा.	१५।४४	मी. ९। ३	भ. २९।४३ उ., मंगल वृषि. (J)
	१८	१४	गु.	— —	उ.भा.	१८।४१	मीन	भ. १८।५९ या., गुरु श्रव. ४ (K)
	१९	१४	शु.	८।१५	रे.	२१।४७	मे. २१।४७	पंच. स. २१।४७, (K) में २३।२५
	२०	३०	श.	१०।५२	अ.	२४।५४	मेष	सूर्य सा. वृष में ९।१, (G) वेंकटेश स्वा. १ में, (J) में १३।८, बुध मा. १९।३०

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि सं. २०४२

मास पक्ष	तारीख १९८५	तिथि	वार	घ. मि.	नक्षत्र	घ. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
वैशाख शुक्ल पक्ष	२१ अप्रै	१	र.	१३।०७	भ.	२७।५७	मेष	अगस्त्य अस्त,
	२२	२	च.	१५।५५	कृ.	— —	वृ. १०।४०	
	२३	३	मं.	१८। ८	कृ.	६।५०	वृष	
	२४	४	बु.	१९।५८	रो.	६।२३	मि. २२।२८	भ. ७।३ उ. १९।५८ या. शुक्र (A)
	२५	५	गु.	२१।२०	मृ.	११।३२	मिथुन	(A) मार्गी २७।२३,
	२६	६	शु.	२२। ५	आ.	१३। ८	मिथुन	बुध रेवती में २३।३७,
	२७	७	श.	२२। ९	पुन.	१४। ६	क. ७।५६	भ. २२।९ उ. सूर्य भर. में १२।५३
	२८	८	र.	२१।३१	पु.	१४।२४	कर्क	भ. ९।५० या.,
	२९	९	च.	२०। ८	आश्ले	१३।५७	सि. १३।५७	
	३०	१०	मं.	१८। ५	म.	१२।४९	सिंह	भ. २८।४५ उ.,
	१ मई	११	बु.	१५।२५	पू.फा.	११। ३	कं. १६।३१	भ. १५।२५ या., मंगल रोहि. (B)
	२	१२	गु.	१२।१६	उ.फा.	८।४७	कन्या	(B) में २१।२३,
	३	१३	शु.	८।४७ २८। ७	ह	५। ९ २७।१७	तु. १९।४३	भ. २८।७ उ.,
	४	१५	श.	२५।२२	स्वा.	२४।२३	तुला	भ. १५।१४ या.,
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	५	१	र.	२१।४७	वि.	२१।३५	वृ. १६।१८	
	६	२	च.	१८।२९	अनु.	१९। ६	वृश्चिक	भ. २९।२ उ.,
	७	३	मं.	१५।३६	ज्ये.	१७। २	ध. १७। २	भ. १५।३६ या.,
	८	४	बु.	१३।१८	मू.	१५।३४	धनु	
	९	५	गु.	११।४२	पू.षा.	१४।४८	म. २०।४७	बुध अश्वि. मेष में १७।२८,
	१०	६	शु.	१०।५२	उ.षा.	१४।४७	मकर	भ. १०।५२ उ., २२।५० या. (C)
	११	७	श.	१०।४८	श्र.	१५।२३	कुं. २८।१८	पंचक प्रा. २८।१८, सूर्य कृत्ति. (D)
	१२	८	र.	११।३२	ध.	१७। ४	कुंभ	व. यूरेनस ज्येष्ठा २ में,
	१३	९	च.	१२।५६	श.	१९।१२	कुंभ	भ. २५।५५ उ.,
	१४	१०	मं.	१४।५४	पू.भा.	२१।५१	मी. १५।११	भ. १४।५४ या., सं. सूर्य वृष (E)
	१५	११	बु.	१७।१६	उ.भा.	२४।५१	मीन	(E) में १८।४,
	१६	१२	गु.	१९।५०	रे.	२७।५८	मे. २७।५८	पंचक समाप्त २७।५८,
	१७	१३	शु.	२२।२६	अ.	— —	मेष	भ. २२।२६ उ.,
	१८	१४	श.	२४।५७	अ.	३। ७	मेष	भ. ११।४२ या., बुध भर. में (F)
	१९	३०	र.	२७।१२	भ	१०। ६	वृ. १६।४७	(F) १७।४८ (C) शुक्र रेवती में २३।५२, (D) में ७।११,

मास पक्ष	तारीख १९८५	तिथि	वार	घ. मि.	नक्षत्र	घ. मि.	चन्द्र-संचार घ. मि.	भद्रा आदि
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	२० मई	१	च.	२९। ६	कृ.	१२।४९	वृष	
	२१	२	मं.	— —	रो.	१५।१३	मि. २८।१२	मंगल मृ. में ८।२२, सूर्य.मा. (A)
	२२	२	बु.	६।४२	मृ.	१७।१२	मिथुन	(A) मिथुन में ८।४२, मंगल (B)
	२३	३	गु.	७।४७	आ.	१८।४४	मिथुन	भ. २०।६ उ.,
	२४	४	शु.	८।२५	पुन.	१९।४८	क. १३।३२	भ. ८।२५ या., सूर्य रो. में २७।२०,
	२५	५	श.	८।३१	पु.	२०।२१	कर्क	बुध कृत्ति. २८।४९,
	२६	६	र.	८। ५	आश्ले.	२०।२१	सि. २०।२१	(B) अस्त ९।३७,
	२७	७	च.	७। ७	म.	१९।५१	सिंह	भ. ७।७ उ. १८।२३ या. बुध (C)
	२८	८	मं.	५।३८ २७।२०	पू.फा.	१८।४९	कं. २४।२६	(C) वृष में २२।४९, बुध पूर्व (D) (D) में अस्त १३।५४,
	२९	१०	बु.	२५। ९	उ.फा.	१७।१८	कन्या	
	३०	११	गु.	२२।१९	ह.	१५।२४	तु. २६।१६	भ. ११।४४ उ., २२।१९ या., (E)
	३१	१२	शु.	१९।११	चि.	१३। ९	तुला	व. शनि विशा. ९ तुला में २७।१६,
	१ जून	१३	श.	१५।५४	स्वा.	१०।४३	वृ. २६।४४	बुध रोहि. में १८।४०,
	२	१४	र.	१२।३४	वि.	८।१२	वृश्चिक	भ. १२।३४ उ., २२।५८ या.,
	३	१५	च.	९।२१	अनु.	५।४६ २७।३४	ध. २७।३४	(E) मंगल मिथु. में २९।८, शुक्र (F) (F) अश्वि. मेष में ७।७
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	४	१	मं.	९।२३ २७।५६	मू.	२५।४५	धनु	राहु भर. ३ में केतु वि. १ में (G) (G) ११।५९, गुरु वक्री २३।५८,
	५	३	बु.	२५।४८	पू.षा.	२४।२८	धनु	भ. १४।५२ उ., २५।४८ या.,
	६	४	गु.	२४।२७	उ.षा.	२३।५१	म. ९।१६	
	७	५	शु.	२३।५३	श्र.	२३।५९	मकर	सूर्य मृग. में २५।१८, बुध मृग. (H)
	८	६	श.	२४। ५	ध.	२४।५४	कुं. १२।२६	भ. २४।५ उ., पंचक प्रा. १२।२६,
	९	७	र.	२५। ५	श.	२६।३४	कुम्भ	भ. १२।३५ या., मं. आर्द्रा में २८।४,
	१०	८	च.	२६।४६	पू.भा.	२८।५४	मी. २२।२०	बुध मिथुन में २२।४६,
	११	९	मं.	२८।५७	उ.भा.	— —	मीन	(H) में २१।५२
	१२	१०	बु.	— —	उ.भा.	७।४२	मीन	भ. १८।१२ उ.,
	१३	१०	गु.	७।२७	रे.	१०।४८	मे. १०।४८	भ. ७।२७ या., पंचक स. १०।४८ (I)
	१४	११	शु.	१०। २	अ.	१३।५६	मेष	सं. सूर्य मिथुन में २४।४३,
	१५	१२	श.	१२।२८	भ.	१६।५४	वृ. २३।३४	
	१६	१३	र.	१४।३६	कृ.	१९।३३	वृष	भ. १४।३६ उ., २७।२६ या.,
	१७	१४	च.	१६।१७	रो.	२१।४६	वृष	
	१८	३०	मं.	१७।१९	मृ.	२३।३०	मि. १०।३८	बुध पश्चिम में उदित २३।१८, (I) बुध आर्द्रा में २५।३, शुक्र (J) (J) भर. में २५।१६,

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि सं. २०४२

मास पक्ष	तारीख १९८५	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	१९ जून	१	बु.	१८।१२	आ.	२४।४५	मिथुन	
	२०	२	गु.	१८।२४	पुन.	२५।२०	क. १६।१९	बुध पुन. में १५।१४
	२१	३	शु.	१८। ८	पु.	२५।५१	कर्क	सूर्य आर्द्रा में २४।१५, सूर्य सा. (A)
	२२	४	श.	१७।२९	आश्ले	२५।४७	सि. २५।४७	भ. ५।४८ उ., १७।२९ या.,
	२३	५	र.	१६।२६	म.	२५।२१	सिंह	(A) कर्क में १६।२७,
	२४	६	चं.	१५। ३	पू.फा.	२४।३६	सिंह	
	२५	७	मं.	१३।२१	उ.फा.	२३।३४	कं. ६।२०	भ. १३।२१ उ., २४।२२ या.,(B)
	२६	८	बु.	११।२२	ह.	२२।१४	कन्या	(B) बुध कर्क में २७।४०,
	२७	९	गु.	९। ७	चि.	२०।४०	तु. ९।२७	बुध पुष्य में २७।३३, शुक्र (C)
	२८	१०	शु.	६।३९ / २८। ६	स्वा.	१८।५५	तुला	भ. १७।२२ उ., २८।६ या., (C) कृत्ति. में ८।४२,
	२९	१२	श.	२५।१९	वि.	१७। २	वृ. ११।३०	मंगल पुन. में ७।४१, शुक्र वृष (D)
	३०	१३	र.	२२।३६	अनु.	१५। ६	वृश्चिक	भ. २०।१ उ., (D) में १३।२९,
	१ जु.	१४	चं.	२०। १	ज्ये.	१३।१६	ध. १३।१६	भ. ६।५० या.,
	२	१५	मं.	१७।३९	मू.	११।३८	धनु	
प्र० श्रावण कृष्ण पक्ष	३	१	बु.	१५।४०	पू.षा.	१०।२०	म. १६। ७	
	४	२	गु.	२४।१३	उ.षा.	९।३१	मकर	भ. २५।४८ उ.,
	५	३	शु.	१३।२३	श्र.	९।१८	कुं. २१।३२	भ. १३।२३ या., पंचक प्रा. (E)
	६	४	श.	१३।१५	ध.	९।४६	कुंभ	(E) २१।३२, सूर्य पुन. में २३।५४,
	७	५	र.	१३।५४	श.	११। ०	कुंभ	बुध आश्ले. में ७।२७,
	८	६	चं.	१५।१५	पू.भा.	१२।५५	मी. ६।२६	भ. १५।१५ उ. २८।१४ या.,
	९	७	मं.	१७।१२	उ.भा.	१५।२६	मीन	शुक्र रोहि. में २२।४२,
	१०	८	बु.	१९।३५	रे.	१८।२२	मे. १८।२२	पंचक समाप्त १८।२२,
	११	९	गु.	२२। ७	अ.	२१।२८	मेष	
	१२	१०	शु.	२४।३३	भ.	२४।२९	मेष	भ. ११।२० उ. २४।३३ या., (F)
	१३	११	श.	२६।४१	कृ.	२७।१२	वृ. ७।१०	(F) वेंकटेश मार्गी,
	१४	१२	र.	२८।१७	रो.	२९।२४	वृष	
	१५	१३	चं.	२९।१८	मृ.	——	मि. १८।१३	भ. २९।१८ उ., मंगल कर्क में १५।१६,
	१६	१४	मं.	——	मृ.	७। २	मिथुन	भ. १७।३० या., स. सूर्य कर्क (G)
	१७	१४	बु.	५।४१ / २९।१४	आ.	८। ३	क. २६।२६	(G) में ११।३५,
प्र० (अधिक) श्रावण शुक्ल पक्ष	१८ जु.	१	गु.	२८।४३	पुन.	८।२६	कर्क	
	१९	२	शु.	२७।३२	पु.	८।२४	कर्क	सूर्य पुष्य में २३।२३
	२०	३	श.	२६। १	आश्ले.	७।५५	सि. ७।५५	मंगल पुष्य में १८।१९
	२१	४	र.	२४।१६	म.	७। ७	सिंह	भ. १३।१८ उ. २४।१६ या., बुध (A)
	२२	५	चं.	२२।२१	पू.फा.	६। ६ / २८।४४	कं. ११।४५	व. गुरु श्रव. ३ में २३।५३, सूर्य (C) (C) सायन सिंह में २७।१०,
	२३	६	मं.	२०।१९	ह.	२७।३९	कन्या	(A) मघा सिंह में १९।४९, (B)
	२४	७	बु.	१८।१४	चि.	२६।१९	तु. १४।५९	भ. १८।१४ उ. २९।१० या.,
	२५	८	गु.	१६। ५	स्वा.	२४।५८	तुला	शनि मार्गी २१।३०,
	२६	९	शु.	१३।५६	वि.	२३।३६	वृ. १७।५६	(B) शुक्र मृग. में २५।३९,
	२७	१०	श.	११।४८	अनु.	२२।१६	वृश्चिक	भ. २२।४६ उ., शु. मिथु. में २४।११,
	२८	११	र.	९।४३	ज्ये.	२१। ०	ध. २१। ०	भ. ९।४३ या., बुध वक्री ९।४६,
	२९	१२	चं.	७।४३	मू.	१९।५२	धनु	
	३०	१३	मं.	५।५४ / २८।२२	पू.षा.	१८।५८	म. २४।४९	भ. २८।२२ उ.,
	३१	१५	बु.	२७।११	उ.षा.	१८।२३	मकर	भ. १५।४७ या.,
द्वि० (अधिक) श्रावण कृष्ण पक्ष	१अग.	१	गु.	२६।३०	श्र.	१८।१५	मकर	
	२	२	शु.	२६।२४	ध.	१८।३९	कुं. ६।२७	पंचक प्रा. ६।२७, सूर्य आश्ले. (D)
	३	३	श.	२६।५५	श.	१९।४०	कुम्भ	भ. १४।३९ उ., भ. २६।५५ (E)
	४	४	र.	२८। ७	पू.भा.	२१।१९	मी. १४।५४	(E) या., व. बुध आश्ले. कर्क (F)
	५	५	चं.	——	उ.भा	२३।३६	मीन	(F) में १२।४०, बुध पश्चि. में (G)
	६	५	मं.	५।५६	रे.	२६।२१	मे. २६।२१	पंचक स. २६।२१, राहु भर. (H)
	७	६	बु.	८।११	अ.	२९।२४	मेष	भ. ८।११ उ. २१।२७ या.,
	८	७	गु.	१०।४३	भ.	——	मेष	(D) में २२।१७, शु. आर्द्रा में २१।७,
	९	८	शु.	१३।१४	भ.	८।३०	वृ. १५।१२	(H) २ में, केतु स्वा. ४ में ९।३४,
	१०	९	श.	१५।२९	कृ.	११।२२	वृष	भ. २८।२२ उ., मंगल आश्ले. (I)
	११	१०	र.	१७।१४	रो.	१३।४८	मि. २६।४१	भ. १७।१४ या., (I) में १०।४९,
	१२	११	चं.	१८।१६	मृ.	१५।३६	मिथुन	(G) अस्त ८।३४,
	१३	१२	मं.	१८।३९	आ.	१६।४१	मिथुन	
	१४	१३	बु.	१८।१६	पुन.	१७। ३	क. १०।५८	भ. १८।१६ उ. २९।४४ या., (J)
	१५	१४	गु.	१७।१२	पु.	१६।४५	कर्क	(J) शुक्र पुन. में १०।४६,
	१६	३०	शु.	१५।३५	आश्ले.	१५।५३	सि. १५।५३	सं. सूर्य मघा सिंह में १९।५६,

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४२).

मास पक्ष	तारीख १९८५	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
द्वि० (शुद्ध) श्रावण शुक्ल पक्ष	१७अग.	१	श.	१३।३२	म.	१४।३६	सिंह	व. गुरु श्रव. २ में २७।३१
	१८	२	र.	११।१२	पू.फा.	१३। २	कं. १८।३५	
	१९	३	च	८।४२	उ.फा.	११।१६	कन्या	भ. १९।२६ उ., बुध पू. में उ. १५।४२
	२०	४	म.	६।१० / २७।४२	ह	९।३४	तु. २०।४३	भ. ६-१० या.,
	२१	६	बु.	२५।१९	चि.	७।५३	तुला	बुध मार्गी १५।५६,
	२२	७	गु	२३। ८	स्वा.	६।२० / २८।५७	वृ. २३।१८	भ. २३।८ उ., शुक्र कर्क में २३।५२,
	२३	८	शु.	२१। ९	अनु.	२७।४९	वृश्चिक	भ. १०।९ या., सूर्य सा. कन्या (A)
	२४	९	श.	१९।२२	ज्ये.	२६।५२	ध. २६।५२	(A) में १०।१०,
	२५	१०	र.	१७।५०	मू.	२६।१०	धनु	भ. २६।१२ उ., शुक्र पुष्य में १९।४३
	२६	११	च.	१६।३४	पू.षा.	२५।४५	धनु	भ. १६।३४ या.,
	२७	१२	म.	१५।३६	उ.षा.	२५।३७	म. ७।४४	
	२८	१३	बु.	१४।५७	श्र.	२५।५१	मकर	
	२९	१४	गु.	१४।४४	ध.	२६।३१	कुं. १४।११	भ.१४।४४ उ., भ.२६।५० या., (B)
	३०	१५	शु.	१४।५७	श.	२७।३९	कुंभ	सूर्य पू.फा. में १५।५३, (B) पंच. प्रा. १४।११, यूरेनस मार्गी
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	३१अग.	१	श.	१५।४२	पू.भा.	२६।१९	मी. २२।५५	मंगल मघा सिंह में ७।५०,
	१सित.	२	र.	१७। ०	उ.भा.	— —	मीन	भ. २९।५४ उ.,
	२	३	च.	१८।४९	उ.भा.	७।३०	मीन	भ. १८।४९ या., बुध मघा (C)
	३	४	म.	२१। ४	रे.	१०। ८	मे. १०। ८	पचक समाप्त १०।८,
	४	५	बु.	२३।३६	अ.	१३। ८	मेष	अगस्त्य उ., (C) सिंह में २७।३७,
	५	६	गु.	२६।१४	भ.	१६।१६	वृ. २३। ३	भ. २६।१४ उ., शुक्र आश्ले. (D)
	६	७	शु.	२८।४१	कृ.	१९।२१	वृष	भ. १५।२७ या., (D) में २४।५२,
	७	८	श.	— —	रो.	२२। ६	वृष	
	८	८	र.	६।४२	मृ.	२४।१८	मि. ११।१२	बुध पूर्व में अस्त १०।१८,
	९	९	च.	८। ७	आ.	२५।४८	मिथुन	भ. २०।२६ उ., मंगल उ. ९।१३,
	१०	१०	म.	८।४५	पुन.	२६।३०	क. २०।२१	भ. ८।४५ या., बुध पू.फा. में (E)
	११	११	बु.	८।३३	पु.	२६।२४	कर्क	नेपच्यून मार्गी, (E) २१।२४,
	१२	१२	गु.	७।३४ / २९।५०	आश्ले	२५।३५	सि. २५।३५	भ. २९।५२ उ.,
	१३	१४	शु.	२७।३८	म.	२४। ८	सिंह	भ. १६।४५ या., सूर्य उ.फा. (F)
	१४	३०	श.	२४।४९	पू.फा.	२२।१३	क. २७।४१	(F) में ९।४५,

मास पक्ष	तारीख १९८५	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१५सित.	१	र	२२।४८	उ.फा.	२०। ०	कन्या	
	१६	२	च.	१८।३९	ह.	१७।३८	तु. २८।२८	सं. सूर्य कन्या में १९।४८, (A)
	१७	३	मं.	१५।३०	चि.	१५।१७	तुला	भ. २६।१ उ.; बु. उ.फा. में २२।५५,
	१८	४	बु.	१२।३१	स्वा.	१३। ५	वृ. २९।३७	भ. १२।३१ या.,
	१९	५	गु.	९।४७	वि.	११। ८	वृश्चिक	बुध कन्या में १७।४०,
	२०	६	शु.	७।२२ / २९।१६	अनु.	९।३१	वृश्चिक	भ. २९।१६ उ., (A) शु. मघा सिंह में २९।३८, (B)
	२१	८	श.	२७।५०	ज्ये.	८।१९	ध. ८।१९	भ. १६।३३ या., मंगल पू.फा. (C)
	२२	९	र.	२६।४३	मू.	७।३३	धनु	(B) शनि वि. ४ वृश्चि. में २६।१७,
	२३	१०	च.	२६। ५	पू.षा.	७।१४	म. १३।१६	सूर्य सा. तुला में ७।४२,
	२४	११	मं	२५।५४	उ.षा.	७।२२	मकर	भ. १४।० उ., भ. २५।५४ या., (D)
	२५	१२	बु.	२६। ९	श्र.	७।५७	कुं. २०।२७	पंचक प्रा. २०।२७,
	२६	१३	गु	२६।५३	ध.	८।५८	कुम्भ	सूर्य हस्त में २५।१२,
	२७	१४	शु.	२८। ३	श.	१०।२६	मी. २९।५०	भ. २८।३ उ., शुक्र पूफा. में २५।३८
	२८	१५	श.	२९।३८	पू.भा.	१२।१९	मीन	भ. १६।५१ या., (C) में ८।२२, (D) बुध हस्त में २९।१३,
आश्विन कृष्ण पक्ष	२९सित.	१	र.	— —	उ.भा.	१४।३६	मीन	
	३०	१	चं.	७।३९	रे.	१७।१७	मे. १७।१७	पचक समाप्त १७।१७,
	१अक्टू.	२	म.	१०। १	अ.	२०।१४	मेष	भ. २३।१८ उ.,
	२	३	बु.	१२।३६	भ.	२३।२३	वृ. ३०।१०	भ. १२।३६ या., बुध चित्रा में (E)
	३	४	गु.	१५।१८	कृ.	२६।३३	वृष	गुरु मार्गी १९।३०,
	४	५	शु.	१७।५३	रो.	२९।३१	वृष	(E) २२।४१, वेंकटेश स्वाती २ में,
	५	६	श	२०।१०	मृ.	— —	मि. १८।५०	भ. २०।१० उ.,
	६	७	र.	२१।५७	मृ.	८। ८	मिथुन	भ. ९।४ या., बुध तु. में २४।१३,
	७	८	चं	२३। २	आ.	१०।१०	क. २९। ८	
	८	९	म.	२३।२०	पुन.	११।२८	कर्क	शुक्र उ.फा. में २२।१९, राहु (F)
	९	१०	बु.	२२।४८	पु.	११।५९	कर्क	भ. ११।४ उ., २२।४८ या.,
	१०	११	गु.	२१।२७	आश्ले.	११।४१	सि. ११।४१	सूर्य चित्रा में १४।१५, बुध (G)
	११	१२	शु.	१९।२३	म.	१०।३७	सिंह	शुक्र कन्या में १५।१०. बुध (H)
	१२	१३	श.	१६।४२	पू.फा.	८।५४	कं. १४।१७	भ. १६।४२ उ., २७।७ (I)
	१३	१४	र.	१३।३२	उ.फा.	६।३९ / २८। ४	कन्या	(I) या., मंगल उ.फा. में ११।४२,
	१४	३०	च.	१०। ४ / ३०।२८	चि.	२५।१५	तु. १४।३९	(F) भर. १ में केतु. स्वा. ३ में ७।७, (G) स्वाती में २९।२, (H) पश्चिम में उदित १६।४८,

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि सं. २०४२

मास पक्ष	तारीख १९८५	तिथि	वार	घ. मि.	नक्षत्र	घ. मि.	चन्द्र-संचार घ. मि.	भद्रा आदि
आश्विन शुक्ल पक्ष	१५अक्टू.	१	म.	२७। ५	स्वा.	२२।२६	तुला	
	१६	३	बु.	२३।२६	वि.	१९।४४	वृ. १४।२५	
	१७	४	गु.	२०।२४	अनु.	१७।२१	वृश्चिक	भ. ९।५६ उ., भ. २०।४० या., (A)
	१८	५	शु.	१७।४६	ज्ये.	१५।२४	ध. १५।२४	(A) स. सूर्य तुला में ७।४४, (B)
	१९	६	श.	१५।४०	मू.	१३।५९	धनु	शुक्र हस्त में १७।३ बुध विशा. (C)
	२०	७	र.	१४।१२	पू.षा.	१३।१०	म. १९। १	भ. १४।१२ उ., २५।४८ या.,
	२१	८	च.	१३।२३	उ.षा.	१३। १	मकर	शनि अनु. १ में २५।२०,
	२२	९	म.	१३।१४	श्र.	१३।३०	कुं. २६। २	पंचक प्रा. २६।२,
	२३	१०	बु.	१३।४४	ध.	१४।३६	कुंभ	भ. २६।१६ उ., सूर्य स्वाती में (D)
	२४	११	गु.	१४।४८	श.	१६।१५	कुंभ	भ. १४।४८ या.,
	२५	१२	शु.	१६।२	पू.भा.	१८।२२	मी. ११।५०	(D) २४।४०, सूर्य सा. वृश्चि. (E)
	२६	१३	श.	१८।२०	उ.भा.	२०।५३	मीन	बुध वृश्चिक में २६।५०,
	२७	१४	र.	२०।३७	रे.	२३।४१	मे. २३।४१	भ. २०।३७ उ., पचक स. २३।४१,
	२८	१५	च.	२३। ७	अ.	२६।४१	मेष	भ. ९।५२ या.,
								(C) में २५।२,
								(B) मंगल कन्या में १८।५३,
								(E) में १९।५७
कार्तिक कृष्ण पक्ष	२९अक्टू.	१	म.	२५।४८	भ.	२६।४९	मेष	बुध धनु. म १४।२४,
	३०	२	बु.	२८।२८	कृ.	— —	वृ. १२।३६	शुक्र चित्रा में १०।२२,
	३१	३	गु.	— —	कृ.	८।५५	वृष	भ. १७।४५,
	१नवं.	३	शु.	७। २	रो.	११।५९	मि. २५।१७	भ. ७।२ या.,
	२	४	श.	९।२२	मृ.	१४।४०	मिथुन	मंगल हस्त में १७।२७,
	३	५	र.	११।११	आ.	१७। १	मिथुन	
	४	६	च.	१२।४४	पुन.	१८।५०	क. १२।२४	भ. १२।४४ उ., भ. २५।८ या., (F)
	५	७	म.	१३।३१	पु.	२०। १	कर्क	(F) शुक्र तुला में १८।३५,
	६	८	बु.	१३।३३	आश्ले	२०।२८	सि. २०।२८	सूर्य विशा. में ८।५४, शनि (G)
	७	९	गु.	१२।५१	म.	२०।१०	सिंह	भ. २४।७ उ., (G) अस्त ११।५४,
	८	१०	शु.	११।२३	पू.फा.	१९। ९	क. २४।४३	भ. ११।२३ या.,
	९	११	श.	{ ९।१३ { ३०।२६	उ.फा.	१७।२७	कन्या	बुध ज्ये. में २६।४, शुक्र स्वा. (H)
								(H) में २६।३२,
	१०	१३	र.	२७। ८	ह.	१५।१३	तु. २५।५३	भ. २७।८ उ.,
	११	१४	चं.	२३।३७	चि.	१२।३४	तुला	भ. १३।२२ या.,
	१२	३०	म.	१९।५३	स्वा.	{ ९।३९ { ३०।४०	वृ. २५।२४	

मास पक्ष	तारीख १९८५	तिथि	वार	घ. मि.	नक्षत्र	घ. मि.	चन्द्र-संचार घ. मि.	भद्रा आदि
कार्तिक शुक्ल पक्ष	१३नव.	१	बु.	१९। ९	अनु.	२७।५४	वृश्चिक	(A) ८।३१, सू. अनु. मे १४।५० (B)
	१४	२	गु.	१२।३४	ज्ये.	२५। ६	ध. २५। ६	(B) शनि अनु. २ में २२।४०,
	१५	३	शु.	{ ९।११ { ३०।३५	मू.	२२।५४	धनु	भ. १९।५७ उ., ३०।३५ या.,
	१६	५	श.	२८।४०	पू.षा.	२१।१६	म. २७। २	सं. सूर्य वृश्चिक में ७।३१,
	१७	६	र.	२७। ६	उ.षा.	२०।२०	मकर	गुरु श्रव. ३ में १८।२१,
	१८	७	च.	२६।३३	श्र.	२०।११	मकर	भ. २६।३३ उ., बुध वक्री १३।६,
	१९	८	म.	२६।४६	ध.	२०।५०	कुं. ८।३१	भ. १४।४१ या., पचक प्रा. (A)
	२०	९	बु.	२७।५०	श.	२२।१४	कुम्भ	शुक्र विशा. में १७।५३,
	२१	१०	गु.	२९।३१	पू.भा.	२४।१८	मी. १७।४७	(C) १४।२६, बुध प. में अ. २९।२०,
	२२	११	शु.	— —	उ.भा.	२९।५२	मीन	भ. १८।३६, सूर्य सा. धनु में (C)
	२३	११	श.	७।४२	रे.	२९।४७	मे. २९।४७	भ. ७।४२ या., पंचक समाप्त (D)
	२४	१२	र.	१०।१४	अ.	— —	मेष	(D) २९।४७, मंगल चित्रा में (E)
	२५	१३	च.	१२।५५	अ.	८।५३	मेष	(E) २५।४९,
	२६	१४	मं.	१५।३७	भ.	१२। १	वृ. १८।४७	भ. १५।३७ उ., भ. २८।५६ (F)
	२७	१५	बु.	१८।१४	कृ.	१५। ५	वृष	(F) या., वक्री बुध अनु. में ८।७,
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२८नव.	१	गु.	२०।३८	रो.	१७।५७	वृष	शुक्र वृश्चिक म १७।४,
	२९	२	शु.	२२।४५	मृ.	२०।३३	मि. ७।१५	
	३०	३	श.	२४।३१	आ.	२२।५०	मिथुन	भ. ११।२८ उ. २४।३१ या.,
	१दिस.	४	र.	२५।५२	पुन.	२४।४३	क. १८।१५	शुक्र अनु. में ८।४५,
	२	५	चं	२६।४६	पु.	२६।१०	कर्क	सूर्य ज्येष्ठा में १९।१४,
	३	६	म.	२७। ७	आश्ले.	२७। ५	सि. २७। ५	भ. २७।७,
	४	७	बु.	२६।५३	म.	२७।२७	सिंह	भ. १५।१० या., मंगल तुला में (G)
	५	८	गु.	२६। ३	पू.फा.	२७।१४	सिंह	(G) १९।२२, बुध पू. में उ. ३०।४७,
	६	९	शु.	२४।३४	उ.फा.	२६।२२	कं. ९। १	
	७	१०	श.	२२।३१	ह.	२४।५७	कन्या	भ. ११।३२ उ. २२।३१ या.,
	८	११	र.	१९।५५	चि.	२३। ०	तु. ११।५९	गुरु श्रवण ४ में २१।२५, बुध (H)
	९	१२	च.	१६।५३	स्वा.	२०।३८	तुला	राहु अश्वि. ४ में केतु स्वा. २ (I)
	१०	१३	म.	१३।३१	वि.	१७।५७	वृ. १२।३७	भ. १३।३१ उ. २३।४५ या.,
	११	१४	बु	{ ९।५९ { ३०।२६	अनु.	१५। ९	वृश्चिक	शुक्र ज्येष्ठा में २३।१४,
								(I) में २८।४१, शनि उ. २३।४०,
								(H) मार्गी २६।९,

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि सं. २०४२

मास पक्ष	तारीख १९८५	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	१२दिस.	१	गु.	२६।२६	ज्ये.	१२।२२	ध. १२।२२	
	१३	२	शु.	२३।५६	मू.	९।४७	धनु	(A) पं. सूर्य मूल धनु में २२।६,(B)
	१४	३	श.	२१।२५	पू.षा.	७।३६ २६।५८	म. १३।११	(B) मंगल स्वाती में १३।५८,
	१५	४	र.	१६।३२	श्र.	२६। ८	मकर	भ. ८।२८ उ., भ. १६।३२ या.,(A)
	१६	५	चं.	१८।२६	ध.	२८।५७	कुं. १७। ३	पंचक प्रा. १७।३,
	१७	६	मं.	१८।१२	श.	२६।४१	कुंभ	
	१८	७	बु.	१८।५१	पू.भा.	३१।१६	मी. २४।४६	भ. १८।५१ उ., शनि धनु. ३ (C)
	१९	८	गु.	२०।१६	उ.भा.	——	मीन	भ. ७।३५ या., (C) में ८।५४,
	२०	९	शु.	२२।२६	उ.भा.	९।३३	मीन	(D) मकर में २७।४५,
	२१	१०	श.	२४।५६	रे.	१२।२१	मे. १२।२१	पंचक स. १२।२१, सूर्य सा. (D)
	२२	११	र.	२७।४६	अ.	१५।२८	मेष	भ. १४।२२ उ., भ. २७।४६ (E)
	२३	१२	च.	३०।३०	भ.	१८।३८	वृ. २५।२४	शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ ७।२५,
	२४	१३	म.	——	कृ.	२१।४२	वृष	(G) या., शुक्र पूर्व में अस्त ७।२५,
	२५	१३	बु.	९। २	रो.	२४।२८	वृष	गुरु धनि. १ में २७।४८,
	२६	१४	गु.	११।१३	मृ.	२६।५४	मि. १३।४१	भ. ११।१३ उ., भ. २४।८ (G)
	२७	१५	शु.	१३। २	आ.	२८।५५	मिथुन	(E) या., बुध ज्ये. में २४।४४,(F) (F) शुक्र मूल धनु में १३।२३,
पौष कृष्ण पक्ष	२८दिस.	१	श.	१४।२३	पुन.	३०।३१	क. २४। ७	सूर्य पू.षा. म २४।२७,
	२९	२	र.	१५।१६	पु.	——	कर्क	भ. २७।३५ उ.,
	३०	३	चं.	१५।५१	पु.	७।४४	कर्क	भ. १५।५१ या.,
	३१	४	मं.	१५।५६	आश्ले	८।३४	सिं. ८।३४	
	१जन. १९८६	५	बु.	१५।४३	म.	९। ०	सिंह	बुध मूल धनु में १८।१२ शुक्र (H) (L) २ में १६।४, बुध पूर्व में (M)
	२	६	गु.	१५। ४	पू.फा.	९। ४	क. १४।५७	भ. १५।४ उ., भ. २६।३२ या.(I)
	३	७	शु.	१४। ०	उ.फा.	८।४३	कन्या	(I) नेपच्यून मूल ४ में,
	४	८	श.	१२।३०	ह.	७।५८ ३०।४०	तु. १९।१६	(H) पू.षा. में २७।५२,
	५	९	र.	१०।३६	स्वा.	२६।१४	तुला	भ. २१।२६ उ.,
	६	१०	च.	८।१७ २६।३९	वि.	२७।२१	वृ. २१।४९	भ. ८।१७ या., मंगल विशा. (J) (J) में ५।५८,
	७	१२	म.	२६।४६	अनु.	२५।१२	वृश्चिक	(M) अस्त १४।४८,
	८	१३	बु.	२३।४५	ज्ये.	२२।५४	ध. २२।५४	भ. २३।४५ उ.,
	९	१४	गु.	२०।४३	मू.	२०।३६	धनु	भ. १०।१४ या.,
	१०	३०	शु.	१७।५८	पू.षा.	१८।२८	म. २४। १	सूर्य उ.षा. में २६।२३, बुध (K) (K) पू.षा में १७।२३, गुरु धनि.(L)

मास पक्ष	तारीख १९८६	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
पौष शुक्ल पक्ष	११जन.	१	श.	१५।२१	उ.षा.	१६।४०	मकर	(D) सूर्य अभिजित् में २१।४३,
	१२	२	र.	१३।२०	श्र.	१५।२२	कुं. २७। ३	पंचक प्रा. २७।३, शुक्र उ.षा. (A)
	१३	३	चं.	११।५८	ध.	१४।४४	कुम्भ	भ. २३।४१ उ., (A) में १८।११,
	१४	४	मं	११।२३	श.	१४।५२	कुम्भ	भ. ११।२३ या., सं. सूर्य मकर (B)
	१५	५	बु.	११।३६	पू.भा.	१५।४६	मी. ९।३५	शुक्र मकर.में ९।४७, (B) में ८।५३,
	१६	६	गु.	१२।४५	उ.भा.	१७।३४	मीन	(C) या., पंचक समाप्त २०।१०,
	१७	७	शु.	१४।३६	रे.	२०। ०	मे. २०। ०	भ. १४।३६ उ., भ. २७।४८ (C)
	१८	८	श.	१७। ०	अ.	२२।५४	मेष	बुध उ.षा. में ३०।४३,
	१९	९	र.	१९।४१	भ.	२६। २	मेष	शनि धनु. ४ में २७।५७,
	२०	१०	च	२२।२५	कृ.	२९। ८	वृ. ८।४८	सूर्य सा. कुम्भ में १४।२३, (D)
	२१	११	मं.	२४।५५	रो.	——	वृष	भ. ११।४० उ., भ. २४।५५ (E)
	२२	१२	बु.	२७। १	रो.	७।५६	मि. २१।१२	मंगल वृश्चिक में २१।२२,
	२३	१३	गु.	२८।३४	मृ.	१०।२४	मिथुन	सूर्य श्रव. में २८।४१, शुक्र श्रव.(F)
	२४	१४	शु.	२९।३४	आ.	१२।१८	क. ३१।१९	भ. २९।३४ उ., गुरु धनि. ३ (G)
	२५	१५	श.	३०। १	पुन.	१३।३९	कर्क	भ. १७।४७ या., (F) में ८।४२, (E) या., बुध मकर में ८।३५, (G) कुंभ में २९।५४, सूर्य (H) (H) अभिजित से निवृत्त २५।३३,
माघ कृष्ण पक्ष	२६जन.	१	र.	३०। २	पु.	१४।२९	कर्क	
	२७	२	च	२९।५८	आश्ले.	१४।५३	सि. १४।५३	बुध श्रवण में १०।३७,
	२८	३	म	२९।३१	म.	१४।५४	सिंह	भ. १७।४५ उ., भ. २९।३१ (I)
	२९	४	बु.	२७।३८	पू.फा.	१४।३७	क. २०।२९	(I) या., मंगल धनु. में ११।२५,
	३०	५	गु.	२६।२०	उ.फा.	१४। ४	कन्या	यूरेनस ज्येष्ठा २ में,
	३१	६	शु.	२४।५०	ह.	१३।२०	तु. २४।५३	भ. २४।५० उ.,
	१फर.	७	श.	२३। ७	चि.	१२।२२	तुला	भ. ११।५८ या.,
	२	८	र.	२१।१३	स्वा.	११।१५	वृ. २८।१६	शुक्र धनि. में २३।३१,
	३	९	च	१९। ९	वि.	९।५७	वृश्चिक	भ. ३०।२ उ., बुध धनि. में (J)
	४	१०	म.	१६।५६	अनु.	८।२९ ३०।५४	ध. ३०।५४	भ. १६।५६ या., (J) २८।४९,
	५	११	बु.	१४।३७	मू.	२९।१८	धनु	गुरु वार्धक्य प्रा. १०।१६,
	६	१२	गु.	१२।१९	पू.षा.	२७।४३	धनु	सूर्य धनि. में ७।५२,
	७	१३	शु.	१०। ५	उ.षा.	२६।१९	म. ९।२१	भ. १०।५ उ., भ. २१।५ या. (K)
	८	१४	श	८। ४ ३०।२५	श्र.	२५।१४	मकर	गुरु धनि. ४ में ७।५२, गुरु (M) (M) अस्त १०।१६, (K) बुध कुम्भ में २३।३७, (L) (L) शुक्र कुम्भ में ३।१२,

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि सं. २०४२

मास पक्ष	तारीख १९८६.	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
माघ शुक्ल पक्ष	९ फर.	१	र.	२८।५७	ध.	२४।३७	कु. १२।५५	पंचक प्रारम्भ १२।५५
	१०	२	च.	२८।४१	श.	२४।३६	कुम्भ	राहु धनि.३ में केतु स्वा.१ में २६।१४
	११	३	म.	२८।३०	पू.भा.	२५।११	मी. १६। ४	बुध शत. में १४।५७,
	१२	४	बु.	२६।४४	उ.भा.	२६।३१	मीन	भ. १७।१७ उ., भ. २६।४४ या.,(A)
	१३	५	गु.	— —	रे.	२८।३२	मे. २८।३२	पंचक स. २८।३२ शुक्र शत. में १४।४०
	१४	५	शु.	७।१६	अ.	— —	मेष	(A) सं. सूर्य कुम्भ में २१।५२, (B)
	१५	६	श.	६।३१	अ.	७। ६	मेष	शुक्रबाल्य. समाप्त १५।२५,
	१६	७	र.	१२। ४	भ.	१०। ७	वृ. १६।५४	भ. १२।४ उ. २५।२५ या.,
	१७	८	च.	१४।४५	कृ.	१३।१३	वृष	बुध पश्चिम में उदित २२।३५,
	१८	९	म.	१७।१०	रो.	१६।१२	मि. २६।३१	बुध पू.भा. में २४।५४, सूर्य श. (C)
	१९	१०	बु.	१९।२२	मृ.	१८।४८	मिथुन	सूर्य शत. में १२।२०, मंगल ज्ये. (K)
	२०	११	गु.	२०।५६	आ.	२०।५२	मिथुन	भ. ८।१० उ., २०।५६ या.,
	२१	१२	शु.	२१।४६	पुन.	२२।१७	क. १५।५६	गुरु शत. १ में २६।१४,
	२२	१३	श.	२२।१५	पु.	२३। ०	कर्क	(B) शुक्र पश्चि. में उदित १५।२५,
	२३	१४	र.	२१।३२	आश्ले.	२३।११	सिं. २३।११	भ. २१।३२ उ., शुक्र पू.भा. (D)
	२४	१५	च.	२०।३२	म.	२२।४०	सिंह	भ. ९।२ या., (D) में ३०।२५ (C) मीन में २८।४६, (K) में ३०।४७,
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	२५ फर.	१	म.	१९। ४	पू.फा.	२२।५६	क. २७।४२	बुध मीन में ८।३७,
	२६	२	बु.	१७।१९	उ.फा.	२०।५२	कन्या	भ. २८।२० उ.,
	२७	३	गु.	१५।२०	ह.	१९।३४	तु. ३०।५२	भ. १५।२० या., बुध उ.भा. में (E) (E) २५।३४,
	२८	४	शु.	१३।१४	चित्रा	१८। ६	तुला	
	१ मार्च	५	श.	११। ४	स्वा.	१६।४०	तुला	
	२	६	र.	८।५५ ३०।४६	वि.	१५।१६	वृ. ६।३७	भ. ८।५५ उ., १९।५२ या.,
	३	८	च.	२८। ४	अनु.	१३।५२	वृश्चिक	शुक्र मीन में ३०।४०,
	४	९	म.	२६।५२	ज्ये.	१२।३६	ध. १२।३६	सूर्य पू.भा. में १८।४२,
	५	१०	बु.	२५। ६	मू.	११।२६	धनु	भ. १३।५६ उ., २५। ६ या.,
	६	११	गु.	२३।३०	पू.षा.	१०।२५	म. १६।१४	शुक्र उ.भा. में २२।५०,
	७	१२	शु.	२२।१०	उ.षा.	९।३७	मकर	गुरु शत. २ में २८।१, बुध (F)
	८	१३	श.	२१। ८	श्र.	९। ५	कुं. २०।५६	भ. २१।८ उ., पंचक प्रा. २०।५६,
	९	१४	र.	२०।३०	ध.	८।५३	कुम्भ	भ. ८।४९ या. बुध पश्चिम में (G) (G) अस्त ९।३२,
	१०	३०	च.	२०।२१	श.	९। ६	मी. २७।४३	(F) वक्री २०।८,

मास पक्ष	तारीख १९८६	तिथि	वार	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	११ मार्च	१	म.	२०।४५	पू.भा.	९।५८	मीन	गुरु उदित १०।४५,
	१२	२	बु.	२१।४३	उ.भा.	११।११	मीन	(A) सं. सूर्य मीन में १८।४५, (B)
	१३	३	गु.	२३।१७	रे.	१३। ४	मे. १३। ४	पंचक स. १३।४,
	१४	४	शु.	२५।२०	अ.	१५।२७	मेष	भ. १२।१८ उ. २५।२० या., (A)
	१५	५	श.	२७।४७	भ.	१८।१५	वृ. २५। १	बुध पू.भा. में २०।४६,
	१६	६	र.	३०।२५	कृ.	२१।१६	वृष	मंगल मूल धनु में ७।१२,
	१७	७	च.	— —	रो.	२४।२२	वृष	सूर्य उ.भा. में २७।५, शुक्र (C)
	१८	७	म.	८।५७	मृ.	२७।१४	मि. १३।४७	भ. ८।५७ उ. २२।५ या.,
	१९	८	बु.	११।१२	आ.	२९।३९	मिथुन	व. बुध कुम्भ में १०।५६, शनि (D)
	२०	९	गु.	१२।५६	पुन.	— —	क. २५। ०	सूर्य सा. मेष में २७।४३,
	२१	१०	शु.	१३।५८	पुन.	७।२६	कर्क	भ. २६।६ उ., (D) वक्री १९।५४,
	२२	११	श.	१४।१५	पु.	८।३१	कर्क	भ. १४।१५ या., गुरु शत. ३ (E)
	२३	१२	र.	१३।४६	आश्ले.	८।५२	सिं. ८।५२	(B) गुरु बाल्य. समाप्त १०।४५,
	२४	१३	च.	१२।३५	म.	८।२६	सिंह	बुध पूर्व में उदित ८।५,
	२५	१४	म.	१०।४८	पू.फा.	७।३० ३०। १	क. १३। ८	भ. १०।४८ उ. २१।४० या., (E) में १०।१०
	२६	१५	बु.	८।११ २९।५४	ह.	२८।१३	कन्या	(C) रेवती में १६।५,
चैत्र कृष्ण पक्ष	२७ मार्च	२	गु.	२७। २	चि.	२६। ७	तु. १५।१०	
	२८	३	शु.	२४।११	स्वा.	२३।५९	तुला	भ. १३।३६ उ., भ. २४।११ या., (F)
	२९	४	श.	२१।१९	वि.	२१।५३	वृ. १६।२४	(F) शुक्र अश्वि. मेष में १०।४९,
	३०	५	र.	१८।३६	अनु.	१९।५६	वृश्चिक	बुध मार्गी २३।३०,
	३१	६	च.	१६। ८	ज्ये.	१८।१३	ध. १८।१३	भ. १६।८ उ., भ. २७।२ या., (G)
	१ अप्रै.	७	म.	१३।५७	मू.	१६।४९	धनु	(G) सूर्य रेवती में १३।५६,
	२	८	बु.	१२। ८	पू.षा.	१५।४७	म. २१।३८	
	३	९	गु.	१०।४४	उ.षा.	१५। ९	मकर	भ. २२।१४ उ.,
	४	१०	शु.	९।४५	श्र.	१४।५७	कुं. २७। ४	भ. ९।४५ या., पंचक प्रा. २७।४,
	५	११	श.	९।१२	ध.	१५।१०	कुम्भ	
	६	१२	र.	९। ७	श.	१५।५२	कुम्भ	गुरु शत. ४ में ७।५६,
	७	१३	च.	९।३०	पू.भा.	१७। ०	मी. १०।४३	भ. ९।३० उ., भ. २१।५५ या., (H)
	८	१४	म.	१०।२०	उ.भा.	१८।३०	मीन	(H) शुक्र भरणी में २६।४६,
	९	३०	बु.	११।३९	रे.	२०।३६	मे. २०।३६	पंचक स. २०।३६,

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.), सन् १९८५ ई०

(२२ मार्च को अयनांश = २३°३८'४९", १ अप्रैल को अयनांश = २३°३८'५०")

तारीख सन् १९८५ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां अं. क.	चंद्र क्रां. अं. क.	चन्द्रशर अं. क.	तारीख सन् १९८५ ई.
मार्च २२	११ ७ ३९ ५८	११ १३ ८ २५	० ११ १५ २७	११ २४ ३० २१	९ १५ ३१ २९	११ २७ १५ ३९	७ ४ १८ ३१	० २७ १६ ९	० ३२	० २८	-३ २७	२२ मार्च
२३	११ ८ ३९ ३१	११ २४ ५९ ४२	० ११ ५८ ४५	११ २४ ४८ २४	९ १५ ४२ ३६	११ २६ ५४ १३	७ ४ १७ १	० २७ १२ ५९	० ५५	४ ५५	-२ ३६	२३
२४	११ ९ ३९ ३	० ६ ४७ ३३	० १२ ४२ २	११ २४ ५८ ३१	९ १५ ५३ ३७	११ २६ ३० ३९	७ ४ १५ २५	० २७ ९ ४८	१ १९	१० ७	-१ ३८	२४
२५	११ १० ३८ ३१	० १८ ३४ ५६	० १३ २५ १४	११ २५ ० ४४	९ १६ ४ ३२	११ २६ ४ ५४	७ ४ १३ ४४	० २७ ६ ३७	१ ४३	१४ ५७	-० ३६	२५
२६	११ ११ ३७ ५९	१ ० २४ ०	० १४ ८ २५	११ २४ ५५ १९	९ १६ १५ २२	११ २५ ३७ ८	७ ४ ११ ५७	० २७ ३ २६	२ ६	१९ १५	० २८	२६
२७	११ १२ ३७ २५	१ १२ १९ ३१	० १४ ५१ ३३	११ २४ ४२ ३२	९ १६ २६ ६	११ २५ ७ २७	७ ४ १० ४	० २७ ० १६	२ ३०	२२ ४९	१ ३२	२७
२८	११ १३ ३६ ४६	१ २४ २४ ५३	० १५ ३४ ३७	११ २४ २२ ४९	९ १६ ३६ ४३	११ २४ ३५ ५५	७ ४ ८ ९	० २६ ५७ ५	२ ५३	२५ २६	२ ३२	२८
२९	११ १४ ३६ ७	२ ६ ४५ १९	० १६ १७ ३९	११ २३ ५६ ४१	९ १६ ४७ १५	११ २४ २ ५५	७ ४ ६ २	० २६ ५३ ५४	३ १७	२६ ५३	३ २७	२९
३०	११ १५ ३५ २५	२ १९ २६ १४	० १७ ० ३९	११ २३ २४ ४८	९ १६ ५७ ४०	११ २३ २८ ३१	७ ४ ३ ५३	० २६ ५० ४३	३ ४०	२६ ५९	४ १३	३०
३१	११ १६ ३४ ४०	३ २ ३१ ४	० १७ ४३ ३५	११ २२ ४७ ५१	९ १७ ७ ५९	११ २२ ५२ ५६	७ ४ १ ३९	० २६ ४७ ३२	४ ३	२५ ३७	४ ४७	३१
अप्रैल १	११ १७ ३३ ५४	३ १६ ३ ४५	० १८ २६ २९	११ २२ ६ ४०	९ १७ १८ १२	११ २२ १६ २१	७ ३ ५९ २०	० २६ ४४ २२	४ २६	२२ ४४	५ ७	१ अप्रैल
२	११ १८ ३३ ५	४ ० ६ १८	० १९ ९ १९	११ २१ २२ १०	९ १७ २८ १८	११ २१ ३९ ८	७ ३ ५६ ५५	० २६ ४१ ११	४ ५०	१८ २८	५ १०	२
३	११ १९ ३२ १२	४ १४ ३६ १६	० १९ ५२ ७	११ २० ३५ १५	९ १७ ३८ १८	११ २१ १ २५	७ ३ ५४ २६	० २६ ३७ ०	५ १३	१३ ०	४ ५३	३
४	११ २० ३१ १९	४ २९ २९ ३५	० २० ३४ ५२	११ १९ ४६ ५९	९ १७ ४८ ११	११ २० २३ ३२	७ ३ ५१ ५१	० २६ ३४ ४९	५ ३६	६ ३९	४ १७	४
५	११ २१ ३० २४	५ १४ ३९ १६	० २१ १७ ३५	११ १८ ५८ १४	९ १७ ५७ ५७	११ १९ ४५ ४२	७ ३ ४९ १२	० २६ ३१ ३८	५ ५८	० १३	३ २२	५
६	११ २२ २९ २५	५ २९ ५४ १९	० २२ ० १४	११ १८ १० २	९ १८ ७ ३६	११ १९ ८ ३	७ ३ ४६ २७	० २६ २८ २८	६ २१	- ७ ७	२ १२	६
७	११ २३ २८ २५	६ १५ ५ ३९	० २२ ४२ ५१	११ १७ २३ १३	९ १८ १७ ९	११ १८ ३१ ५	७ ३ ४३ ३८	० २६ २५ १७	६ ४४	-१३ ३५	० ५३	७
८	११ २४ २७ २३	७ ० २ ४९	० २३ २५ २६	११ १६ ३८ ४०	९ १८ २६ ३४	११ १७ ५४ ५५	७ ३ ४० ४४	० २६ २२ ६	७ ६	-१९ १०	-० २९	८
९	११ २५ २६ १९	७ १४ ३९ ३३	० २४ ७ ५७	११ १५ ५७ २	९ १८ ३५ ५२	११ १७ १९ ४३	७ ३ ३७ ४६	० २६ १८ ५५	७ २९	-२३ २७	-१ ४७	९
१०	११ २६ २५ १३	७ २८ ५२ २१	० २४ ५० २५	११ १५ १९ ३	९ १८ ४५ ३	११ १६ ४५ ४७	७ ३ ३४ ४२	० २६ १५ ४५	७ ५१	-२६ १०	-२ ५६	१०
११	११ २७ २४ ५	८ १२ ३८ ४५	० २५ ३२ ५२	११ १४ ४५ १०	९ १८ ५४ ७	११ १६ १३ १९	७ ३ ३१ ३५	० २६ १२ ३४	८ १३	-२७ १०	-३ ५३	११
१२	११ २८ २२ ५६	८ २६ ० १२	० ५६ १५ १९	११ १४ १५ ४७	९ १९ ३ ४	११ १५ ४२ ३२	७ ३ २८ २३	० २६ ९ २३	८ ३५	-२६ ३३	-४ ३६	१२
१३	११ २९ २१ ४४	९ ८ ५९ ३५	० २६ ५७ ३७	११ १३ ५१ १८	९ १९ ११ ५२	११ १५ १३ ३६	७ ३ २५ ७	० २६ ६ १२	८ ५७	-२४ २८	-५ ३	१३
१४	० ० २० ३१	९ २१ ३८ ५९	० २७ ३९ ५५	११ १३ ३१ ४९	९ १९ २० ३४	११ १४ ४६ ३४	७ ३ २१ ४७	० २६ ३ १	९ १९	-२१ १४	-५ १४	१४
१५	० १ १९ १७	१० ४ २ २२	० २८ २२ ११	११ १३ १७ ३५	९ १९ २९ ७	११ १४ २१ ३५	७ ३ १८ २२	० २५ ५९ ५१	९ ४०	-१७ ७	-५ १०	१५
१६	० २ १८ १	१० १६ १३ ३५	० २९ ४ २५	११ १३ ८ ३४	९ १९ ३७ ३३	११ १३ ५८ ५३	७ ३ १४ ५४	० २५ ५६ ४०	१० २	-१२ २२	-४ ५३	१६
१७	० ३ १६ ४३	१० २८ १४ ४५	० २९ ४६ ३६	११ १३ ४ ४८	९ १९ ४५ ५१	११ १३ ३८ २४	७ ३ ११ २१	० २५ ५३ २९	१० २३	- ७ १३	-४ २२	१७
१८	० ४ १५ २४	११ १० ९ ३५	१ ० २८ ४४	११ १३ ६ १४	९ १९ ५४ ०	११ १३ २० १९	७ ३ ७ ४५	० २५ ५० १८	१० ४४	- १ ५१	-३ ४१	१८
१९	० ५ १४ २	११ २१ ५९ ३५	१ १ १० ५०	११ १३ १२ ४७	९ २० २ २	११ १३ ४ ३५	७ ३ ४ ६	० २५ ४७ ७	११ ५	३ ३३	-२ ५०	१९
२०	० ६ १२ ३९	० ३ ४७ २८	१ १ ५२ ५३	११ १३ २४ १६	९ २० ९ ५६	११ १२ ५१ १६	७ ३ ० २३	० २५ ४३ ५७	११ २६	८ ५०	-१ ५२	२०
२१	० ७ ११ १५	० १५ ३५ ४८	१ २ ३४ ५४	११ १३ ४० ३६	९ २० १७ ४१	११ १२ ४० २६	७ २ ५६ ३६	० २५ ४० ४६	११ ४६	१३ ४९	-० ४९	२१
२२	० ८ ९ ४७	० २७ २५ ४७	१ ३ १६ ५१	११ १४ १ ३५	९ २० २५ १८	११ १२ ३२ ५	७ २ ५२ ४६	० २५ ३७ ३५	१२ ६	१८ १८	० १६	२२
२३	० ९ ८ १८	१ ९ २० १६	१ ३ ५८ ४६	११ १४ २७ ३	९ २० ३२ ४६	११ १२ २६ ५	७ २ ४८ ५३	० २५ ३४ २४	१२ २७	२२ ६	१ २१	२३
२४	० १० ६ ४८	१ २१ २२ २२	१ ४ ४० ३९	११ १४ ५६ ५०	९ २० ४० ५	११ १२ २२ ३१	७ २ ४४ ५७	० २५ ३१ १४	१२ ४७	२४ ५९	२ २४	२४
२५	० ११ ५ १५	२ ३ ३४ ६	१ ५ २२ २९	११ १५ ३० ४३	९ २० ४७ १६	११ १२ २१ २४	७ २ ४० ५८	० २५ २८ ३	१३ ६	२६ ४५	३ २०	२५

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. [illegible]) सन् १९८५ ई०

१ मई को अयनांश = २३°३८'५४"

तारीख सन् १९८५ ई.	सूर्य रा. अ. क. वि.	चंद्र रा. अ. क. वि	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अ. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अ. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अ. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चन्द्र क्रां. अं. क.	चन्द्रशर अं. क	तारीख सन् १९८५ ई.
अप्रैल २६	० १२ ३ ४०	२ १५ ५९ १५	१ ६ ४ १६	११ १६ ८ ३४	९ २० ५४ १८	११ १२ २२ ३४	७ २ ३६ ५६	० २५ २४ ५२	१३ २६	२७ १३	४ ८	२६ अप्रैल
२७	० १३ २ ४	२ २८ ४१ ५१	१ ६ ४६ १	११ १६ ५० १२	९ २१ १ १२	११ १२ २६ ६	७ २ ३२ ५२	० २५ २१ ४१	१३ ४५	२६ १७	४ ४६	२७
२८	० १४ ० २४	३ ११ ४४ १९	१ ७ २७ ४३	११ १७ ३५ २८	९ २१ ७ ५६	११ १२ ३१ ५१	७ २ २८ ४५	० २५ १८ ३१	१४ ४	२३ ५५	५ ९	२८
२९	० १४ ५८ ४३	३ २५ १० ७	१ ८ ९ २२	११ १८ २४ १०	९ २१ १४ ३१	११ १२ ३९ ५०	७ २ २४ ३५	० २५ १५ २०	१४ २३	२० १२	५ १७	२९
३०	० १५ ५६ ०	४ ९ १ ४३	१ ८ ५० ५८	११ १९ १६ १३	९ २१ २० ५७	११ १२ ४९ ५९	७ २ २० २४	० २५ १२ ९	१४ ४२	१५ १७	५ ७	३०
मई १	० १६ ५५ १४	४ २२ १८ ७	१ ९ ३२ ३२	११ २० ११ २५	९ २१ २७ १४	११ १३ २ १३	७ २ १६ १०	० २५ ८ ५८	१५ ०	९ २५	४ ३८	१ मई
२	० १७ ५३ २६	५ ७ ५८ १०	१ १० १४ ३	११ २१ ९ ४१	९ २१ ३३ २१	११ १३ १६ २९	७ २ ११ ५५	० २५ ५ ४७	१५ १८	२ ५२	३ ५०	२
३	० १८ ५१ ३७	५ २२ ५५ ४१	१ १० ५५ ३२	११ २२ १० ५४	९ २१ ३९ १९	११ १३ ३२ ४७	७ २ ७ ३७	० २५ २ ३७	१५ ३६	– ३ ५८	२ ४६	३
४	० १९ ४९ ४५	६ ८ ३ ४८	१ ११ ३६ ५७	११ २३ १४ ५६	९ २१ ४५ ७	११ १३ ५० ५७	७ २ ३ १८	० २४ ५९ २६	१५ ५३	–१० ४०	१ ३०	४
५	० २० ४७ ५१	६ २३ १४ ६	१ १२ १८ २०	११ २४ २१ ४२	९ २१ ५० ४५	११ १४ ११ १	७ १ ५८ ५७	० २४ ५६ १५	१६ ११	–१६ ४६	० ७	५
६	० २१ ४५ ५७	७ ८ १५ ०	१ १२ ५९ ४१	११ २५ ३१ ८	९ २१ ५६ १५	११ १४ ३२ ५३	७ १ ५४ ३४	० २४ ५३ ४	१६ २८	–२१ ४७	–१ १६	६
७	० २२ ४३ ५९	७ २३ १ ४५	१ १३ ४० ५९	११ २६ ४३ ६	९ २२ १ ३४	११ १४ ५६ २६	७ १ ५० ११	० २४ ४९ ५३	१६ ४४	–२५ १८	–२ ३२	७
८	० २३ ४२ १	८ ७ २५ ४४	१ १४ २२ १५	११ २७ ५७ ३४	९ २२ ६ ४३	११ १५ २१ ४३	७ १ ४५ ४६	० २४ ४६ ४३	१७ १	–२७ ३	–३ ३६	८
९	० २४ ४० २	८ २१ २३ ९	१ १५ ३ २९	११ २९ १४ २८	९ २२ ११ ४२	११ १५ ४८ ३८	७ १ ४१ २०	० २४ ४३ ३२	१७ १७	–२७ ०	–४ २६	९
१०	० २५ ३७ ०	९ ४ ५३ ३०	१ १५ ४४ ४०	० ० ३३ ४५	९ २२ १६ ३१	११ १६ १७ ५	७ १ ३६ ५३	० २४ ४० २१	१७ ३३	–२५ २०	–४ ५९	१०
११	० २६ ३५ ५७	९ १७ ५८ ३८	१ १६ २५ ४८	० १ ५५ २०	९ २२ २१ १०	११ १६ ४७ २	७ १ ३२ २५	० २४ ३७ १०	१७ ४९	–२२ २०	–५ १६	११
१२	० २७ ३३ ५४	१० ० ४० १६	१ १७ ६ ५४	० ३ १९ १५	९ २२ २५ ३९	११ १७ १८ २८	७ १ २७ ५६	० २४ ३३ ५९	१८ ४	–१८ २२	–५ १६	१२
१३	० २८ ३१ ४८	१० १३ २ ४१	१ १७ ४७ ५९	० ४ ४५ २३	९ २२ २९ ५८	११ १७ ५१ १५	७ १ २३ २७	० २४ ३० ४९	१८ १९	–१३ ४२	–५ १	१३
१४	० २९ २९ ४२	१० २५ १० ३६	१ १८ २९ ०	० ६ १३ ४५	९ २२ ३४ ५	११ १८ २५ २५	७ १ १८ ५८	० २४ २७ ३८	१८ ३४	– ८ ३६	–४ ३३	१४
१५	१ ० २७ ३५	११ ७ ७ १७	१ १९ ९ ०	० ७ ४४ २०	९ २२ ३८ ३	११ १९ ० ५३	७ १ १४ २८	० २४ २४ २७	१८ ४८	– ३ १६	–३ ५४	१५
१६	१ १ २५ २६	११ १८ ५७ २०	१ १९ ५० ५७	० ९ १७ ५	९ २२ ४१ ५०	११ १९ ३७ ३२	७ १ ९ ५८	० २४ २१ १६	१९ २	२ ९	–३ ५	१६
१७	१ २ २३ १६	० ० ४४ ५६	१ २० ३१ ५२	० १० ५२ ०	९ २२ ४५ २६	११ २० १५ २४	७ १ ५ २८	० २४ १८ ६	१९ १६	७ २८	–२ ८	१७
१८	१ ३ २१ ६	० १२ ३२ २७	१ २१ १२ ४५	० १२ २९ ६	९ २२ ४८ ५२	११ २० ५४ २६	७ १ ० ५८	० २४ १४ ५५	१९ ३०	१३ ३३	–१ ६	१८
१९	१ ४ १८ ५४	० २४ २३ १५	१ २१ ५३ ३५	० १४ ८ २२	९ २२ ५२ ७	११ २१ ३४ ३२	७ ० ५६ २९	० २४ ११ ४४	१९ ४३	१७ १२	० १	१९
२०	१ ५ १६ ४०	१ ६ २० १२	१ २२ ३४ २३	० १५ ४९ ४५	९ २२ ५५ ११	११ २२ १५ ४१	७ ० ५१ ०	० २४ ८ ३३	१९ ५५	२१ १२	१ ५	२०
२१	१ ६ १४ २५	१ १८ २४ २५	१ २३ १५ ८	० १७ ३३ १९	९ २२ ५८ ४	११ २२ ५७ ५०	७ ० ४७ ३१	० २४ ५ २२	२० ८	२४ २२	२ ८	२१
२२	१ ७ १२ १०	२ ० ३८ १२	१ २३ ५५ ५२	० १९ १९ २	९ २३ ० ४६	११ २३ ४० ५९	७ ० ४३ ३	० २४ २ १२	२० २०	२६ २६	३ ७	२२
२३	१ ८ ९ ५३	२ १३ ३ ४४	१ २४ ३६ ३४	० २१ ६ ५५	९ २३ ३ १७	११ २४ २५ ४	७ ० ३८ ३६	० २३ ५९ १	२० ३२	२७ १३	३ ५७	२३
२४	१ ९ ७ ३३	२ २५ ४१ ३७	१ २५ १७ १२	० २२ ५६ ५३	९ २३ ५ ३७	११ २५ ९ ०	७ ० ३४ ११	० २३ ५५ ५०	२० ४३	२६ ३७	४ ३७	२४
२५	१ १० ५ १३	३ ८ ३४ १	१ २५ ५७ ४९	० २४ ४९ १	९ २३ ७ ४६	११ २५ ५५ ४९	७ ० २९ ४६	० २३ ५२ ३९	२० ५४	२४ ३६	५ ४	२५
२६	१ ११ २ ५२	३ २१ ४३ ५	१ २६ ३८ २३	० २६ ४३ १६	९ २३ ९ ४४	११ २६ ४२ २७	७ ० २५ २२	० २३ ४९ २९	२१ ५	२१ १५	५ १६	२६
२७	१ १२ ० ३०	४ ५ ९ १२	१ २७ १८ ५४	० २८ ३९ ३३	९ २३ ११ ३०	११ २७ २९ ५१	७ ० २१ १	० २३ ४६ १८	२१ १५	१६ ४४	५ ११	२७
२८	१ १२ ५८ २	४ १८ ५३ ५८	१ २७ ५९ २४	१ ० ३७ ५३	९ २३ १३ ६	११ २८ १८ २	७ ० १६ ४०	० २३ ४३ ७	२१ २५	११ १६	४ ४८	२८
२९	१ १३ ५५ ३६	५ २ ५८ १७	१ २८ ३९ ५१	१ २ ३८ १३	९ २३ १४ ३०	११ २९ ६ ५८	७ ० १२ २१	० २३ ३९ ५६	२१ ३५	५ ७	४ ७	२९
३०	१ १४ ५३ ७	५ १७ २० ४	१ २९ २० १५	१ ४ ४० २५	९ २३ १५ ४२	११ २९ ५६ ३३	७ ० ८ ५	० २३ ३६ ४५	२१ ४४	– १ २६	३ ११	३०

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.), सन् १९८५ ई०

(१ जून को अयनांश = २३°३८'५९")

तारीख सन् १९८५ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चंद्र क्रां. अं. क.	चन्द्रशर अं. क.	तारीख सन् १९८५ ई.
मई ३१	१ १५ ५० ३८	६ १ ५७ २०	२ ० ० ३८	१ ६ ४४ २६	९ २३ १६ ४४	० ० ४६ ५०	७ ० ३ ५०	० २३ ३३ ३५	२१ ५३	− ८ २	२ १	३१ मई
जून १	१ १६ ४८ ८	६ १६ ४६ १२	२ ० ४० ५८	१ ८ ५० ११	९ २३ १७ ३४	० १ ३७ ४७	६ २९ ५९ ३७	० २३ ३० २४	२२ १	−१४ १७	० ४२	१ जून
२	१ १७ ४५ ३५	७ १ ३९ १७	२ १ २१ १५	१ १० ५७ २३	९ २३ १८ १३	० २ २९ २०	६ २९ ५५ २७	० २३ २७ १३	२२ ९	−१९ ४४	−० ४०	२
३	१ १८ ४३ २	७ १६ ३० २१	२ २ १ ३१	१ १३ ६ २	९ २३ १८ ४०	० ३ २१ ३१	६ २९ ५१ १८	० २३ २४ २	२२ १७	−२३ ५६	−१ ५९	३
४	१ १९ ४० २८	८ १ १० ३०	२ २ ४१ ४५	१ १५ १५ ५०	९ २३ १८ ५५	० ४ १४ १८	६ २९ ४७ १२	० २३ २० ५२	२२ २४	−२६ २९	−३ ९	४
५	१ २० ३७ ५२	८ १५ ३३ २६	२ ३ २१ ५६	१ १७ २६ ३४	९ २३ १८ ०	० ५ ७ ३६	६ २९ ४३ ९	० २३ १७ ४१	२२ ३१	−२७ १२	−४ ५	५
६	१ २१ ३५ १६	८ २९ ३४ ३३	२ ४ २ ६	१ १९ ३८ २	९ २३ १८ ५२	० ६ १ २०	६ २९ ३९ ९	० २३ १४ ३०	२२ ३७	−२६ ७	−४ ४५	६
७	१ २२ ३२ ३९	९ १३ ९ ४८	२ ४ ४२ १३	१ २१ ४९ ५८	९ २३ १८ ३४	० ६ ५५ ५४	६ २९ ३५ ११	० २३ ११ १९	२२ ४४	−२३ ३१	−५ ८	७
८	१ २३ ३० १	९ २६ १९ २०	२ ५ २२ १८	१ २४ २ ३	९ २३ १८ ४	० ७ ५० ४८	६ २९ ३१ १६	० २३ ८ ८	२२ ४९	−१९ ४६	−५ १३	८
९	१ २४ २७ २४	१० ९ ५ १६	२ ६ २ २२	१ २६ १४ ६	९ २३ १७ २२	० ८ ४६ १४	६ २९ २७ २४	० २३ ४ ५८	२२ ५५	−१५ १२	−५ ३	९
१०	१ २५ २४ ४५	१० २१ २९ ५१	२ ६ ४२ २३	१ २८ २५ ४५	९ २३ १६ २९	० ९ ४२ ७	६ २९ २३ ३५	० २३ १ ४७	२२ ५९	−१० ७	−४ ३९	१०
११	१ २६ २२ ६	११ ३ ३७ ५१	२ ७ २२ २३	२ ० ३६ ४४	९ २३ १५ २४	० १० ३८ २८	६ २९ १९ ५०	० २२ ५८ ३६	२३ ४	− ४ ४६	−४ २	११
१२	१ २७ १९ २७	११ १५ ३४ ३३	२ ८ २ २१	२ २ ४६ ५५	९ २३ १४ ८	० ११ ३५ १७	६ २९ १६ ७	० २२ ५५ २५	२३ ८	० ४०	−३ १६	१२
१३	१ २८ १६ ४७	११ २७ २३ ५३	२ ८ ४२ १७	२ ४ ५५ ५७	९ २३ १२ ४०	० १२ ३२ ३१	६ २९ १२ २८	० २२ ५२ १४	२३ १२	६ २	−२ २१	१३
१४	१ २९ १४ ६	० ९ ११ ९	२ ९ २२ ११	२ ७ ३ ४०	९ २३ ११ १	० १३ ३० १०	६ २९ ८ ५३	० २२ ४९ ४	२३ १५	११ १२	−१ २१	१४
१५	२ ० ११ २७	० २१ १ ११	२ १० २ ३	२ ९ ९ ५३	९ २३ ९ ११	० १४ २८ १४	६ २९ ५ २१	० २२ ४५ ५३	२३ १८	१५ ५८	−० १७	१५
१६	२ १ ८ ४६	१ २ ५६ ५४	२ १० ४१ ५४	२ ११ १४ २६	९ २३ ७ १०	० १५ २६ ४१	६ २९ १ ५३	० २२ ४२ ४२	२३ २०	२० १०	० ४८	१६
१७	२ २ ६ ५	१ १५ १ ५६	२ ११ २१ ४३	२ १३ १७ १०	९ २३ ४ ५७	० १६ २५ ३१	६ २८ ५८ २९	० २२ ३९ ३१	२३ २२	२३ ३५	१ ५१	१७
१८	२ ३ ३ २३	१ २७ १९ ४	२ १२ १ ३०	२ १५ १७ ५९	९ २३ २ ३३	० १७ २४ ४१	६ २८ ५५ ९	० २२ ३६ २१	२३ २४	२५ ५८	२ ५०	१८
१९	२ ४ ० ४१	२ ९ ४८ ५१	२ १२ ४१ १४	२ १७ १६ ४७	९ २२ ५९ ५७	० १८ २४ १३	६ २८ ५१ ५३	० २२ ३३ १०	२३ २५	२७ ६	३ ४२	१९
२०	२ ४ ५७ ५९	२ २२ ३२ २६	२ १३ २० ५८	२ १९ १३ ३३	९ २२ ५७ ११	० १९ २४ ६	६ २८ ४८ ४१	० २२ २९ ५९	२३ २६	२६ ५०	४ २४	२०
२१	२ ५ ५५ १६	३ ५ ३० २५	२ १४ ० ३९	२ २१ ८ ७	९ २२ ५४ १४	० २० २४ १७	६ २८ ४५ ३४	० २२ २६ ४८	२३ २६	२५ ६	४ ५३	२१
२२	२ ६ ५२ ३१	३ १८ ४१ २३	२ १४ ४० १८	२ २३ ० ३१	९ २२ ५१ ६	० २१ २४ ४८	६ २८ ४२ ३०	० २२ २३ ३७	२३ २६	२२ १	५ ८	२२
२३	२ ७ ४९ ४८	४ २ ५ १४	२ १५ १९ ५६	२ २४ ५० ४५	९ २२ ४७ ४८	० २२ २५ ३७	६ २८ ३९ ३१	० २२ २० २७	२३ २६	१७ ४३	५ ६	२३
२४	२ ८ ४७ २	४ १५ ४१ ५४	२ १५ ५९ ३२	२ २६ ३८ ४२	९ २२ ४४ १९	० २३ २६ ४३	६ २८ ३६ ३७	० २२ १७ १६	२३ २५	१२ २८	४ ४६	२४
२५	२ ९ ४४ १६	४ २९ २९ ४३	२ १६ ३९ ५	२ २८ २४ २६	९ २२ ४० ३९	० २४ २८ ७	६ २८ ३३ ४७	० २२ १४ ५	२३ २४	६ ३३	४ १०	२५
२६	२ १० ४१ ३०	५ १३ २८ ४२	२ १७ १८ ३७	३ ० ७ ५५	९ २२ ३६ ४९	० २५ २९ ४७	६ २८ ३१ २	० २२ १० ५४	२३ २२	० १३	३ १९	२६
२७	२ ११ ३८ ४३	५ २७ ३८ ३८	२ १७ ५८ ७	३ १ ४९ ६	९ २२ ३२ ४९	० २६ ३१ ४३	६ २८ २८ २२	० २२ ७ ४३	२३ २०	− ६ १४	२ १५	२७
२८	२ १२ ३५ ५५	६ ११ ५७ ८	२ १८ ३७ ३५	३ ३ २८ १	९ २२ २८ ३९	० २७ ३३ ५५	६ २८ २५ ४६	० २२ ४ ३३	२३ १८	−१२ २५	१ २	२८
२९	२ १३ ३३ ७	६ २६ २२ ३३	२ १९ १७ १	३ ५ ४ ४१	९ २२ २४ १८	० २८ ३६ २२	६ २८ २३ १६	० २२ १ २२	२३ १५	−१८ ०	−० १६	२९
३०	२ १४ ३० १७	७ १० ५२ ६	२ १९ ५६ २५	३ ६ ३९ १	९ २२ १९ ४८	० २९ ३९ ३	६ २८ २० ५०	० २१ ५८ ११	२३ ११	−२२ ३४	−१ ३२	३०
जुलाई १	२ १५ २७ २९	७ २५ २० २	२ २० ३५ ४८	३ ८ ११ ५	९ २२ १५ ९	१ ० ४१ ५९	६ २८ १८ २९	० २१ ५५ ०	२३ ८	−२५ ४१	−२ ४३	१ जुलाई
२	२ १६ २४ ४०	८ ९ ४१ २६	२ २१ १५ ९	३ ९ ४० ५०	९ २२ १० १९	१ १ ४५ १०	६ २८ १६ १४	० २१ ५१ ५०	२३ ४	−२७ ६	−३ ४२	२
३	२ १७ २१ ४९	८ २३ ५१ ९	२ २१ ५४ २८	३ ११ ८ १२	९ २२ ५ २१	१ २ ४८ ३३	६ २८ १४ ३	० २१ ४८ ३९	२२ ५९	−२६ ४२	−४ २७	३
४	२ १८ १८ ०	९ ७ ४२ ५६	२ २२ ३३ ४६	३ १२ ३३ १५	९ २२ ० १३	१ ३ ५२ ११	६ २८ ११ ५८	० २१ ४५ २८	२२ ५४	−२४ ३९	−४ ५५	४

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.), सन् १९८५ ई०

१ जुलाई को अयनांश = २३°।३९'।४"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८५ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८५ ई.
जुलाई ५	२ १९ १६ ११	९ २१ १३ ४१	२ २३ १३ २	३ १३ ५५ ५५	९ २१ ५४ ५६	१ ४ ५६ २	६ २८ ९ ५८	० २१ ४२ १७	२२ ४९	−२१ १४	−५ ६	५ जुलाई
६	२ २० १३ २०	१० ४ २२ ११	२ २३ ५२ १६	३ १५ १६ ७	९ २१ ४९ ३१	१ ६ ० ५	६ २८ ८ ३	० २१ ३९ ६	२२ ४३	−१६ ५०	−५ ०	६
७	२ २१ १० ३१	१० १७ ७ ४३	२ २४ ३१ २२	३ १६ ३३ ५३	९ २१ ४३ ५६	१ ७ ४ २१	६ २८ ६ १३	० २१ ३५ ५६	२२ ३७	−११ ४९	−४ ३९	७
८	२ २२ ७ ४३	१० २९ ३२ ५९	२ २५ १० १४	३ १७ ४९ ६	९ २१ ३८ १४	१ ८ ८ ५१	६ २८ ४ २९	० २१ ३२ ४५	२२ ३०	− ६ २६	−४ ५	८
९	२ २३ ४ ५४	११ ११ ४२ ८	२ २५ ४९ ५१	३ १९ १ ५०	९ २१ ३२ २३	१ ९ १३ ३२	६ २८ २ ५०	० २१ २९ ३४	२२ २४	− ० ५६	−३ २१	९
१०	२ २४ २ ६	११ २३ ३८ ४७	२ २६ २८ ०	३ २० ११ ५२	९ २१ २६ २४	१ १० १८ २४	६ २८ १ १७	० २१ २६ २३	२२ १६	४ ३१	−२ २८	१०
११	२ २४ ५९ १९	० ५ २८ ३४	२ २७ ८ ७	३ २१ १९ १४	९ २१ २० १६	१ ११ २३ २८	६ २७ ५९ ४९	० २१ २३ १३	२२ ९	९ ४६	−१ ३०	११
१२	२ २५ ५६ ३२	० १७ १७ १८	२ २७ ४७ १३	३ २२ २३ ४७	९ २१ १४ २	१ १२ २८ ४४	६ २७ ५८ २७	० २१ २० २	२२ १	१४ ४०	−० २८	१२
१३	२ २६ ५३ ४६	० २९ ९ १३	२ २८ २६ १८	३ २३ २५ २८	९ २१ ७ ४०	१ १३ ३४ १०	६ २७ ५७ १०	० २१ १६ ५१	२१ ५२	१९ ३	० ३५	१३
१४	२ २७ ५१ १	१ ११ ९ ३४	२ २९ ५ २१	३ २४ २४ १२	९ २१ १ ११	१ १४ ३९ ४८	६ २७ ५५ ५९	० २१ १३ ४०	२१ ४३	२२ ४२	१ ३८	१४
१५	२ २८ ४८ १५	१ २३ २२ ५६	२ २९ ४४ २३	३ २५ १९ ५०	९ २० ५४ ३५	१ १५ ४५ ३६	६ २७ ५४ ५४	० २१ १० २९	२१ ३४	२५ २५	२ ३७	१५
१६	२ २९ ४५ ३०	२ ५ ५१ २५	३ ० २३ २४	३ २६ १२ १६	९ २० ४७ ५३	१ १६ ५१ ३३	६ २७ ५३ ५४	० २१ ७ १९	२१ २५	२६ ५६	३ २९	१६
१७	३ ० ४२ ४६	२ १८ ३७ १९	३ १ २ २३	३ २७ १ २३	९ २० ४१ ४	१ १७ ५७ ४१	६ २७ ५३ ०	० २१ ४ ८	२१ १५	२७ ४	४ १३	१७
१८	३ १ ४० ३	३ १ ४१ ३१	३ १ ४१ २१	३ २७ ४७ ४	९ २० ३४ ९	१ १९ ४ ०	६ २७ ५२ ११	० २१ ० ५७	२१ ४	२५ ४३	४ ४४	१८
१९	३ २ ३७ २०	३ १५ १ ५७	३ २ २० १८	३ २८ २९ ८	९ २० २७ ९	१ २० १० २७	६ २७ ५१ २९	० २० ५७ ४६	२० ५४	२२ ५४	५ ०	१९
२०	३ ३ ३४ ३७	३ २८ ३७ २८	३ २ ५९ १३	३ २९ ७ २७	९ २० २० ३	१ २१ १७ ३	६ २७ ५० ५२	० २० ५४ ३५	२० ४३	१८ ४८	५ ०	२०
२१	३ ४ ३१ ५५	४ १२ २४ ६	३ ३ ३८ ७	३ २९ ४१ ५३	९ २० १२ ५३	१ २२ २३ ४९	६ २७ ५० २१	० २० ५१ २५	२० ३१	१३ ३९	४ ४२	२१
२२	३ ५ २९ १२	४ २६ १९ १६	३ ४ १६ ५९	४ ० १२ १५	९ २० ५ ३७	१ २३ ३० ४३	६ २७ ४९ ५५	० २० ४८ १४	२० २०	७ ४६	४ ८	२२
२३	३ ६ २६ ३०	५ १० २० ४८	३ ४ ५५ ५०	४ ० ३८ २१	९ १९ ५८ १७	१ २४ ३७ ४६	६ २७ ४९ ३६	० २० ४५ ३	२० ८	१ २७	३ १९	२३
२४	३ ७ २३ ४९	५ २४ २५ २४	३ ५ ३४ ४०	४ १ ० ६	९ १९ ५० ५३	१ २५ ४४ ५७	६ २७ ४९ २२	० २० ४१ ५२	१९ ५५	− ४ ५९	२ १७	२४
२५	३ ८ २१ ७	६ ८ ३२ ८	३ ६ १३ २८	४ १ १७ १६	९ १९ ४३ २५	१ २६ ५२ १६	६ २७ ४९ १५	० २० ३८ ४२	१९ ४३	−११ १२	१ ७	२५
२६	३ ९ १८ २६	६ २२ ४० ३१	३ ६ ५२ १४	४ १ २९ ४४	९ १९ ३५ ५४	१ २७ ५९ ४३	६ २७ ४९ १३	० २० ३५ ३१	१९ ३०	−१६ ५१	−० ८	२६
२७	३ १० १५ ४६	७ ६ ४८ २२	३ ७ ३० ०	४ १ ३७ २२	९ १९ २८ १९	१ २९ ७ १९	६ २७ ४९ १७	० २० ३२ २०	१९ १६	−२१ ३५	−१ २१	२७
२८	३ ११ १३ ५	७ २० ५४ ४९	३ ८ ९ ४४	४ १ ४० २	९ १९ २० ४२	२ ० १५ १	६ २७ ४९ २७	० २० २९ ९	१९ ३	−२५ २	−२ ३०	२८
२९	३ १२ १० २५	८ ४ ५८ १७	३ ८ ४८ २६	४ १ ३७ ३८	९ १९ १३ ३	२ १ २२ ५१	६ २७ ४९ ४२	० २० २५ ५८	१८ ४९	−२६ ५५	−३ २९	२९
३०	३ १३ ७ ४६	८ १८ ५४ ४५	३ ९ २७ ८	४ १ ३० ७	९ १९ ५ २१	२ २ ३० ४९	६ २७ ५० ४	० २० २२ ४८	१८ ३५	−२७ ५	−४ १५	३०
३१	३ १४ ५ ७	९ २ ४१ १६	३ १० ५ ४८	४ १ १७ ३०	९ १८ ५७ ३७	२ ३ ३८ ५५	६ २७ ५० ३१	० २० १९ ३७	१८ २०	−२५ ३३	−४ ४६	३१
अगस्त १	३ १५ २ २८	९ १६ १४ ५०	३ १० ४४ २६	४ ० ५९ ४५	९ १८ ४९ ५२	२ ४ ४७ ७	६ २७ ५१ ५	० २० १६ २६	१८ ५	−२२ ३४	−५ ०	१ अगस्त
२	३ १५ ५९ ५१	९ २९ ३१ २०	३ ११ २३ ४	४ ० ३७ ४	९ १८ ४२ ५	२ ५ ५५ २८	६ २७ ५१ ४४	० २० १३ १५	१७ ५०	−१८ २७	−४ ५७	२
३	३ १६ ५७ १५	१० १२ २९ २५	३ १२ १ ४१	४ ० ९ ३३	९ १८ ३४ १७	२ ७ ३ ५६	६ २७ ५२ २९	० २० १० ५	१७ ३५	−१३ ३४	−४ ३९	३
४	३ १७ ५४ ३८	१० २५ ९ १३	३ १२ ४० १६	३ २९ ३७ ३२	९ १८ २६ ३०	२ ८ १२ २९	६ २७ ५३ २०	० २० ६ ५४	१७ १९	− ८ १२	−४ ७	४
५	३ १८ ५२ ५	११ ७ ३० ५२	३ १३ १८ ५१	३ २९ १ १९	९ १८ १८ ४१	२ ९ २१ १२	६ २७ ५४ १६	० २० ३ ४३	१७ ३	− २ ३९	−३ २४	५
६	३ १९ ४९ ३१	११ १९ ३७ ३५	३ १३ ५७ २४	३ २८ २१ २५	९ १८ १० ५३	२ १० ३० १	६ २७ ५५ १९	० २० ० ३२	१६ ४७	२ ५५	−२ ३३	६
७	३ २० ४६ ५९	० १ ३३ ४४	३ १४ ३५ ५६	३ २७ ३८ २१	९ १८ ३ ५	२ ११ ३८ ५६	६ २७ ५६ २७	० १९ ५७ २१	१६ ३०	८ १७	−१ ३५	७
८	३ २१ ४४ २९	० १३ २३ ५	३ १५ १४ २८	३ २६ ५२ ५०	९ १७ ५५ १८	२ १२ ४७ ०	६ २७ ५७ ४१	० १९ ५४ ११	१६ १३	१३ २०	−० ३४	८

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.), सन् १९८५ ई०

(१ अगस्त को अयनांश = २३°३९'१०")

तारीख सन् १९८५ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चन्द्र क्रां. अं. क.	चन्द्रशर अं. क.	तारीख सन् १९८५ ई.
अगस्त ९	३ २२ ४२ ०	० २५ ११ २३	३ १५ ५२ ५९	३ २६ ५ ३२	६ १७ ४७ ३२	२ १३ ५७ ९	६ २७ ५९ १	० १९ ५० ०	१५ ५६	१७ ५४	० २९	९ अगस्त
१०	३ २३ ३९ ३२	१ ७ ४ ३४	३ १६ ३१ २८	३ २५ १७ १८	६ १७ ३९ ४८	२ १५ ६ २६	६ २८ ० २६	० १९ ४७ ४९	१५ ३९	२१ ४७	१ ३१	१०
११	३ २४ ३७ ७	१ १९ ७ ३	३ १७ ९ ५७	३ २४ २९ २	६ १७ ३२ ५	२ १६ १५ ५०	६ २८ १ ५७	० १९ ४४ ३८	१५ २१	२४ ४८	२ २९	११
१२	३ २५ ३४ ४२	२ १ २४ १३	३ १७ ४८ २५	३ २३ ४१ ३४	६ १७ २४ २४	२ १७ २५ २०	६ २८ ३ ३४	० १९ ४१ २८	१५ ३	२६ ४३	३ २२	१२
१३	३ २६ ३२ १९	२ १४ ० ३७	३ १८ २६ ५२	३ २२ ५५ ५८	६ १७ १६ ४६	२ १८ ३४ ५६	६ २८ ५ १७	० १९ ३८ १७	१४ ४५	२७ १९	४ ६	१३
१४	३ २७ २९ ५८	२ २६ ५७ ५६	३ १९ ५ १९	३ २२ १३ २	६ १७ ९ १०	२ १९ ४४ ४०	६ २८ ७ ५	० १९ ३५ ६	१४ २७	२६ २७	४ ३९	१४
१५	३ २८ २७ ३७	३ १० १७ ३६	३ १९ ४३ ४४	३ २१ ३३ ४३	६ १७ १ ३८	२ २० ५४ २९	६ २८ ८ ५९	० १९ ३१ ५५	१४ ८	२४ ५	४ ५८	१५
१६	३ २९ २५ १८	३ २३ ५९ ४	३ २० २२ ८	३ २० ५८ ४८	६ १६ ५४ ९	२ २२ ४ २४	६ २८ १० ५९	० १९ २८ ४४	१३ ४९	२० १८	५ ०	१६
१७	४ ० २३ १	४ ७ ५८ ३	३ २१ ० ३२	३ २० २९ ७	६ १६ ४६ ४४	२ २३ १४ २६	६ २८ १३ ४	० १९ २५ ३४	१३ ३०	१५ १९	४ ४५	१७
१८	४ १ २० ४५	४ २२ १० २५	३ २१ ३८ ५४	३ २० ५ १२	६ १६ ३९ २४	२ २४ २४ ३३	६ २८ १५ १५	० १९ २२ २३	१३ ११	९ २७	४ १२	१८
१९	४ २ १८ २९	५ ६ ३१ १२	३ २२ १७ १५	३ १९ ४७ ४६	६ १६ ३२ ७	२ २५ ३४ ४६	६ २८ १७ ३१	० १९ १९ १२	१२ ५२	३ १	३ २३	१९
२०	४ ३ १६ १६	५ २० ५३ ५३	३ २२ ५५ ३६	३ १९ ३७ १२	६ १६ २४ ५६	२ २६ ४५ ६	६ २८ १९ ५३	० १९ १६ १	१२ ३२	– ३ ३५	२ २०	२०
२१	४ ४ १४ २	६ ५ १४ ३०	३ २३ ३३ ५६	३ १९ ३३ ५३	६ १६ १७ ५०	२ २७ ५५ ३०	६ २८ २२ २०	० १९ १२ ५१	१२ १२	–१० १	१ ९	२१
२२	४ ५ ११ ५०	६ १९ ३० २७	३ २४ १२ १४	३ १९ ३८ ७	६ १६ १० ४९	२ २९ ५ ५९	६ २८ २४ ५२	० १९ ९ ४०	११ ५२	–१५ ५४	–० ६	२२
२३	४ ६ ९ ४०	७ ३ ३८ ४१	३ २४ ५० ३२	३ १९ ५० ३	६ १६ ३ ५४	३ ० १६ ३५	६ २८ २७ ३०	० १९ ६ २९	११ ३२	–२० ५२	–१ २०	२३
२४	४ ७ ७ २९	७ १७ ३८ ४९	३ २५ २८ ४८	३ २० ९ ४७	६ १५ ५७ ५	३ १ २७ १५	६ २८ ३० १४	० १९ ३ १८	११ १२	–२४ ३६	–२ २९	२४
२५	४ ८ ५ २१	८ १ ३० ५९	३ २६ ७ ४	३ २० ३७ २२	६ १५ ५० २२	३ २ ३८ २	६ २८ ३३ ३	० १९ ० ७	१० ५१	–२६ ४९	–३ २८	२५
२६	४ ९ ३ १२	८ १५ १३ ३६	३ २६ ४५ १८	३ २१ १२ ४०	६ १५ ४३ ४७	३ ३ ४८ ५१	६ २८ ३५ ५७	० १८ ५६ ५७	१० ३०	–२७ २२	–४ १४	२६
२७	४ १० १ ७	८ २८ ४६ ३१	३ २७ २३ ३२	३ २१ ५५ ३८	६ १५ ३७ १७	३ ४ ५९ ४७	६ २८ ३८ ५६	० १८ ५३ ४६	१० ९	–२६ १६	–४ ४६	२७
२८	४ १० ५९ २	९ १२ ९ १०	३ २८ १ ४५	३ २२ ४६ २	६ १५ ३० ५५	३ ६ १० ५०	६ २८ ४२ ०	० १८ ५० ३५	९ ४८	–२३ ४०	–५ १	२८
२९	४ ११ ५६ ५७	९ २५ १९ ७	३ २८ ३९ ५६	३ २३ ४३ ३६	६ १५ २४ ४१	३ ७ २१ ५५	६ २८ ४५ १०	० १८ ४७ २४	९ २७	–१९ ५३	–५ ०	२९
३०	४ १२ ५४ ५५	१० ८ १५ ३५	३ २९ १८ ७	३ २४ ४८ ४	६ १५ १८ ३४	३ ८ ३३ ७	६ २८ ४८ २५	० १८ ४४ १३	९ ६	–१५ १२	–४ ४४	३०
३१	४ १३ ५२ ५५	१० २० ५८ १०	३ २९ ५६ १८	३ २५ ५९ ४	६ १५ १२ ३५	३ ९ ४४ २४	६ २८ ५१ ४४	० १८ ४१ ३	८ ४४	– ९ ५६	–४ १३	३१
सितम्बर १	४ १४ ५० ५४	११ ३ २५ ३८	४ ० ३४ २७	३ २७ १६ ८	६ १५ ६ ४४	३ १० ५५ ४४	६ २८ ५५ ९	० १८ ३७ ५२	८ २३	– ४ २३	–३ ३१	१ सितम्बर
२	४ १५ ४८ ५८	११ १५ ३९ १९	४ १ १२ ३६	३ २८ ३८ ५५	६ १५ १ २	३ १२ ७ १२	६ २८ ५८ ३९	० १८ ३४ ४१	८ १	१ १५	–२ ४०	२
३	४ १६ ४७ ३	११ २७ ४१ ३६	४ १ ५० ४४	४ ० ६ ५४	६ १४ ५५ २८	३ १३ १८ ४४	६ २९ २ १४	० १८ ३१ ३०	७ ३९	६ ४५	–१ ४२	३
४	४ १७ ४५ ८	० ९ ३४ २७	४ २ २८ ५१	४ १ ३९ ३३	६ १४ ५० २	३ १४ ३० १९	६ २९ ५ ५४	० १८ २८ २०	७ १७	११ ५८	–० ४०	४
५	४ १८ ४३ १७	० २१ २२ ४२	४ ३ ६ ५८	४ ३ १६ २७	६ १४ ४४ ४६	३ १५ ४२ ३	६ २९ ९ ३८	० १८ २५ ९	६ ५५	१६ ४३	० २३	५
६	४ १९ ४१ २८	१ ३ १० ०	४ ३ ४५ ५	४ ४ ५६ ०	६ १४ ३९ ३८	३ १६ ५३ ५०	६ २९ १३ २८	० १८ २१ ५८	६ ३३	२० ५०	१ २५	६
७	४ २० ३९ ३९	१ १५ १ ५५	४ ४ २३ १०	४ ६ ४० ४२	६ १४ ३४ ४१	३ १८ ५ ४१	६ २९ १७ २२	० १८ १८ ४७	६ १०	२४ ८	२ २४	७
८	४ २१ ३७ ५४	१ २७ ४ १४	४ ५ १ १५	४ ८ २७ ५	६ १४ २९ ५२	३ १९ १७ ३८	६ २९ २१ २१	० १८ १५ ३६	५ ४८	२६ २५	३ १८	८
९	४ २२ ३६ १२	२ ९ २१ १४	४ ५ ३९ २०	४ १० १५ ४१	६ १४ २५ १३	३ २० २९ ४१	६ २९ २५ २५	० १८ १२ २६	५ २५	२७ २८	४ ४	९
१०	४ २३ ३४ २९	२ २१ ५८ ८	४ ६ १७ २४	४ १२ ५ ५९	६ १४ २० ४४	३ २१ ४१ ४७	६ २९ २९ ३३	० १८ ९ १५	५ २	२७ ८	४ ३९	१०
११	४ २४ ३२ ५१	३ ४ ५९ १३	४ ६ ५५ २७	४ १३ ५७ ४१	६ १४ १६ २५	३ २२ ५३ ५९	६ २९ ३३ ४६	० १८ ६ ४	४ ४०	२५ २०	५ १	११
१२	४ २५ ३१ १४	३ १८ २५ ३३	४ ७ ३३ ३०	४ १५ ५० २०	६ १४ १२ १७	३ २४ ६ १५	६ २९ ३८ ४	० १८ २ ५३	४ १७	२२ ५	५ ७	१२

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.), सन् १९८५ ई०

(१ सितम्बर को अयनांश = २३°।३९'।१४")

तारीख सन् १९८५ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चंद्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चन्द्र क्रां. अं. क.	चन्द्रशर अं. क.	तारीख सन् १९८५ ई.
सितम्बर १३	४ २६ २९ ३९	४ २ १७ ३५	४ ८ ११ ३३	४ १७ ४३ ३८	९ १४ ८ १९	३ २५ १८ ३४	६ २९ ४२ २६	० १७ ५९ ४२	३ ५४	१७ ३०	४ ५६	१३ सितम्बर
१४	४ २७ २८ ६	४ १६ ३३ १७	४ ८ ४९ ३४	४ १९ ३७ १७	९ १४ ४ ३१	३ २६ ३१ १	६ २९ ४६ ५२	० १७ ५६ ३२	३ ३१	११ ५१	४ २७	१४
१५	४ २८ २६ ३५	५ १ ६ २६	४ ९ २७ ३६	४ २१ ३१ ३	९ १४ ० ५४	३ २७ ४३ ३०	६ २९ ५१ २३	० १७ ५३ २१	३ ८	५ २६	३ ४०	१५
१६	४ २९ २५ ६	५ १५ ५० ४०	४ १० ५ ३७	४ २३ २४ ४३	९ १३ ५७ २७	३ २८ ५६ ४	६ २९ ५५ ५८	० १७ ५० १०	२ ४५	– १ २२	२ ३७	१६
१७	५ ० २३ ३८	६ ० ३८ ५५	४ १० ४३ ३६	४ २५ १८ ३	९ १३ ५४ १२	४ ० ८ ४१	७ ० ० ३७	० १७ ४६ ५९	२ २२	– ८ ८	१ २४	१७
१८	५ १ २२ १२	६ १५ २२ ४३	४ ११ २१ ३५	४ २७ १० ५९	९ १३ ५१ ८	४ १ २१ २३	७ ० ५ २१	० १७ ४३ ४८	१ ५८	–१४ २६	० ५	१८
१९	५ २ २० ४९	६ २९ ५६ ४५	४ ११ ५९ ३४	४ २९ ३ २१	९ १३ ४८ १५	४ २ ३४ १०	७ ० १० ९	० १७ ४० ३८	१ ३५	–१९ ५२	–१ १३	१९
२०	५ ३ १९ २६	७ १४ १७ ३६	४ १२ ३७ ३१	५ ० ५५ २	९ १३ ४५ ३३	४ ३ ४६ ५९	७ ० १५ १	० १७ ३७ २७	१ १२	–२४ ३	–२ २६	२०
२१	५ ४ १८ ४	७ २८ २१ ५६	४ १३ १५ २९	५ २ ४५ ५८	९ १३ ४३ ३	४ ४ ५९ ५२	७ ० १९ ५७	० १७ ३४ १६	० ४९	–२६ ४०	–३ २९	२१
२२	५ ५ १६ ४५	८ १२ ९ ४७	४ १३ ५३ २५	५ ४ ३६ ७	९ १३ ४० ४४	४ ६ १२ ५०	७ ० २४ ५७	० १७ ३१ ६	० २५	–२७ ३६	–४ १७	२२
२३	५ ६ १५ २७	८ २५ ४२ २	४ १४ ३१ २०	५ ६ २५ २३	९ १३ ३८ ३७	४ ७ २५ ५१	७ ० ३० ०	० १७ २७ ५५	० २	–२६ ५०	–४ ५१	२३
२४	५ ७ १४ ११	९ ८ ५८ २९	४ १५ ९ १५	५ ८ १३ ४८	९ १३ ३६ ४१	४ ८ ३८ ५५	७ ० ३५ ८	० १७ २४ ४४	–० २२	–२४ ३४	–५ ८	२४
२५	५ ८ १२ ५७	९ २२ ० ३९	४ १५ ४७ १०	५ १० १ १८	९ १३ ३४ ५७	४ ९ ५२ ४	७ ० ४० २०	० १७ २१ ३३	–० ४५	–२१ ३	–५ ९	२५
२६	५ ९ ११ ४३	१० ४ ४९ ५७	४ १६ २५ ३	५ ११ ४७ ५२	९ १३ ३३ २५	४ ११ ५ १५	७ ० ४५ ३५	० १७ १८ २२	–१ ८	–१६ ३५	–४ ५४	२६
२७	५ १० १० ३२	१० १७ २६ ८	४ १७ २ ५६	५ १३ ३३ ३२	९ १३ ३२ ४	४ १२ १८ ३०	७ ० ५० ५४	० १७ १५ १२	–१ ३२	–११ २९	–४ २५	२७
२८	५ ११ ९ २३	१० २९ ५० २९	४ १७ ४० ४९	५ १५ १८ १७	९ १३ ३० ५६	४ १३ ३१ ५०	७ ० ५६ १७	० १७ १२ १	–१ ५५	– ६ ०	–३ ४४	२८
२९	५ १२ ८ १६	११ १२ ४ २२	४ १८ १८ ४०	५ १७ २ ६	९ १३ २९ ५९	४ १४ ४५ ११	७ १ १ ४३	० १७ ८ ५०	–२ १८	– ० २२	–२ ५३	२९
३०	५ १३ ७ १०	११ २४ ७ ५७	४ १८ ५६ ३१	५ १८ ४५ १	९ १३ २९ १३	४ १५ ५८ ३७	७ १ ७ १३	० १७ ५ ३९	–२ ४२	५ १३	–१ ५५	३०
अक्टूबर १	५ १४ ६ ८	० ६ ३ २५	४ १९ ३४ २३	५ २० २७ ३	९ १३ २८ ४०	४ १७ १२ ७	७ १ १२ ४६	० १७ २ २८	–३ ५	१० ३४	–० ५२	१ अक्टूबर
२	५ १५ ५ ६	० १७ ५३ २७	४ २० १२ १३	५ २२ ८ ११	९ १३ २८ १९	४ १८ २५ ४०	७ १ १८ २३	० १६ ५९ १८	–३ २८	१५ ३०	० १२	२
३	५ १६ ४ ७	० २९ ४० १	४ २० ५० २	५ २३ ४८ २९	९ १३ २८ ९	४ १९ ३९ १६	७ १ २४ ३	० १६ ५६ ७	–३ ५१	१९ ५०	१ १६	३
४	५ १७ ३ ११	१ ११ २७ ७	४ २१ २७ ५२	५ २५ २७ ५५	९ १३ २८ ११	४ २० ५२ ५६	७ १ २९ ४६	० १६ ५२ ५६	–४ १५	२३ २४	२ १७	४
५	५ १८ २ १६	१ २३ १९ १९	४ २२ ५ ४१	५ २७ ६ ३१	९ १३ २८ २५	४ २२ ६ ३८	७ १ ३५ ३३	० १६ ४९ ४५	–४ ३८	२६ ०	३ १२	५
६	५ १९ १ २५	२ ५ २० १४	४ २२ ४३ ३०	५ २८ ४४ २०	९ १३ २८ ५१	४ २३ २० २६	७ १ ४१ २३	० १६ ४६ ३४	–५ १	२७ २६	४ ०	६
७	५ २० ० ३६	२ १७ ३५ ७	४ २३ २१ १९	६ ० २१ २२	९ १३ २९ २९	४ २४ ३४ १७	७ १ ४७ १६	० १६ ४३ २४	–५ २४	२७ ३५	४ ३८	७
८	५ २० ५९ ४९	३ ० ९ १३	४ २३ ५९ ६	६ १ ५७ ३६	९ १३ ३० १९	४ २५ ४८ १०	७ १ ५३ १२	० १६ ४० १३	–५ ४७	२६ १९	५ ४	८
९	५ २१ ५९ ४	३ १३ ५ ४६	४ २४ ३६ ५४	६ ३ ३३ ४	९ १३ ३१ २०	४ २७ २ ६	७ १ ५९ ११	० १६ ३७ २	–६ १०	२३ ३९	५ १५	९
१०	५ २२ ५८ २३	३ २६ २८ २९	४ २५ १४ ४१	६ ५ ७ ४९	९ १३ ३२ ३३	४ २८ १६ ७	७ २ ५ १४	० १६ ३३ ५१	–६ ३२	१९ ३९	५ १०	१०
११	५ २३ ५७ ४३	४ १० १९ २७	४ २५ ५२ २८	६ ६ ४१ ४९	९ १३ ३३ ५९	४ २९ ३० ९	७ २ ११ १९	० १६ ३० ४१	–६ ५५	१४ २९	४ ४६	११
१२	५ २४ ५७ ५	४ २४ ३६ ४०	४ २६ ३० १४	६ ८ १५ ६	९ १३ ३५ ३५	५ ० ४४ १५	७ २ १७ २७	० १६ २७ ३०	–७ १८	८ २४	४ ५	१२
१३	५ २५ ५६ ३०	५ ९ १७ ५	४ २७ ८ ०	६ ९ ४७ ४१	९ १३ ३७ २४	५ १ ५८ २४	७ २ २३ ३८	० १६ २४ १९	–७ ४०	१ ४१	३ ७	१३
१४	५ २६ ५५ ५९	५ २४ १५ १	४ २७ ४५ ४५	६ ११ १९ ३४	९ १३ ३९ २४	५ ३ १२ ३६	७ २ २९ ५१	० १६ २१ ८	–८ ३	– ५ १६	१ ५५	१४
१५	५ २७ ५५ २५	६ ९ २० ५८	४ २८ २३ ३०	६ १२ ५० ४४	९ १३ ४१ ३६	५ ४ २६ ४९	७ २ ३६ ७	० १६ १७ ५७	–८ २५	–११ ५९	० ३४	१५
१६	५ २८ ५४ ५६	६ २४ २६ २०	४ २९ १ १५	६ १४ २१ १५	९ १३ ४३ ०	५ ५ ४१ ७	७ २ ४२ २६	० १६ १४ ४७	–८ ४७	–१८ १	–० ४९	१६
१७	५ २९ ५४ २८	७ ९ २३ ५	४ २९ ३८ ५८	६ १५ ५१ ४	९ १३ ४६ ३५	५ ६ ५५ २६	७ २ ४८ ४७	० १६ ११ ३६	–९ ९	–२२ ५२	–२ ८	१७

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घ. ३० मि., भा. स्टै. टा.), सन् १९८५ ई०

(१ अगस्त को अयनांश = २३।°३९'।१०")

तारीख सन् १९८५ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चन्द्र क्रां. अं. क.	चन्द्रशर अं. क.	तारीख सन् १९८५ ई.
अगस्त ९	३ २२ ४२ ०	० २५ ११ २३	३ १५ ५२ ५९	३ २६ ५ ३२	९ १७ ४७ ३२	२ १३ ५७ ९	६ २७ ५९ १	० १९ ५० ०	१५ ५६	१७ ५४	० २९	९ अगस्त
१०	३ २३ ३९ ३२	१ ७ ४ ३४	३ १६ ३१ २८	३ २५ १७ १८	९ १७ ३९ ४८	२ १५ ६ २६	६ २८ ० २६	० १९ ४७ ४९	१५ ३९	२१ ४७	१ ३१	१०
११	३ २४ ३७ ७	१ १९ ७ ३	३ १७ ९ ५७	३ २४ २९ २	९ १७ ३२ ५	२ १६ १५ ५०	६ २८ १ ५७	० १९ ४४ ३८	१५ २१	२४ ४८	२ २९	११
१२	३ २५ ३४ ४२	२ १ २४ १३	३ १७ ४८ २५	३ २३ ४१ ३४	९ १७ २४ २४	२ १७ २५ २०	६ २८ ३ ३४	० १९ ४१ २८	१५ ३	२६ ४३	३ २२	१२
१३	३ २६ ३२ १९	२ १४ ० ३७	३ १८ २६ ५२	३ २२ ५५ ५८	९ १७ १६ ४६	२ १८ ३४ ५६	६ २८ ५ १७	० १९ ३८ १७	१४ ४५	२७ १९	४ ६	१३
१४	३ २७ २९ ५८	२ २६ ५७ ५६	३ १९ ५ १९	३ २२ १३ २	९ १७ ९ १०	२ १९ ४४ ४०	६ २८ ७ ५	० १९ ३५ ६	१४ २७	२६ २७	४ ३९	१४
१५	३ २८ २७ ३७	३ १० १७ ३६	३ १९ ४३ ४४	३ २१ ३३ ४३	९ १७ १ ३८	२ २० ५४ २९	६ २८ ८ ५९	० १९ ३१ ५५	१४ ८	२४ ५	४ ५८	१५
१६	३ २९ २५ १८	३ २३ ५९ ४	३ २० २२ ८	३ २० ५८ ४८	९ १६ ५४ ९	२ २२ ४ २४	६ २८ १० ५९	० १९ २८ ४४	१३ ४९	२० १८	५ ०	१६
१७	४ ० २३ १	४ ७ ५८ ३	३ २१ ० ३२	३ २० २९ ७	९ १६ ४६ ४४	२ २३ १४ २६	६ २८ १३ ४	० १९ २५ ३४	१३ ३०	१५ १९	४ ४५	१७
१८	४ १ २० ४५	४ २२ १० २५	३ २१ ३८ ५४	३ २० ५ १२	९ १६ ३९ २४	२ २४ २४ ३३	६ २८ १५ १५	० १९ २२ २३	१३ ११	९ २७	४ १२	१८
१९	४ २ १८ २९	५ ६ ३१ १२	३ २२ १७ १५	३ १९ ४७ ४६	९ १६ ३२ ७	२ २५ ३४ ४६	६ २८ १७ ३१	० १९ १९ १२	१२ ५२	३ १	३ २३	१९
२०	४ ३ १६ १६	५ २० ५३ ५३	३ २२ ५५ ३६	३ १९ ३७ १२	९ १६ २४ ५६	२ २६ ४५ ६	६ २८ १९ ५३	० १९ १६ १	१२ ३२	– ३ ३५	२ २०	२०
२१	४ ४ १४ २	६ ५ १४ ३०	३ २३ ३३ ५६	३ १९ ३३ ५३	९ १६ १७ ५०	२ २७ ५५ ३०	६ २८ २२ २०	० १९ १२ ५१	१२ १२	–१० १	१ ९	२१
२२	४ ५ ११ ५०	६ १९ ३० २७	३ २४ १२ १४	३ १९ ३८ ७	९ १६ १० ४९	२ २९ ५ ५९	६ २८ २४ ५२	० १९ ९ ४०	११ ५२	–१५ ५४	–० ६	२२
२३	४ ६ ९ ४०	७ ३ ३८ ४१	३ २४ ५० ३२	३ १९ ५० ३	९ १६ ३ ५४	३ ० १६ ३५	६ २८ २७ ३०	० १९ ६ २९	११ ३२	–२० ५२	–१ २०	२३
२४	४ ७ ७ २९	७ १७ ३८ ४९	३ २५ २८ ४८	३ २० ९ ४७	९ १५ ५७ ५	३ १ २७ १५	६ २८ ३० १४	० १९ ३ १८	११ १२	–२४ ३६	–२ २९	२४
२५	४ ८ ५ २१	८ १ ३० ५९	३ २६ ७ ४	३ २० ३७ २२	९ १५ ५० २२	३ २ ३८ २	६ २८ ३३ ३	० १९ ० ७	१० ५१	–२६ ४९	–३ २८	२५
२६	४ ९ ३ १२	८ १५ १३ ३६	३ २६ ४५ १८	३ २१ १२ ४०	९ १५ ४३ ४७	३ ३ ४८ ५१	६ २८ ३५ ५७	० १८ ५६ ५७	१० ३०	–२७ २२	–४ १४	२६
२७	४ १० १ ७	८ २८ ४६ ३१	३ २७ २३ ३२	३ २१ ५५ ३८	९ १५ ३७ १७	३ ४ ५९ ४७	६ २८ ३८ ५६	० १८ ५३ ४६	१० ९	–२६ १६	–४ ४६	२७
२८	४ १० ५९ २	९ १२ ९ १०	३ २८ १ ४५	३ २२ ४६ २	९ १५ ३० ५५	३ ६ १० ५०	६ २८ ४२ ०	० १८ ५० ३५	९ ४८	–२३ ४०	–५ १	२८
२९	४ ११ ५६ ५७	९ २५ १९ ७	३ २८ ३९ ५६	३ २३ ४३ ३६	९ १५ २४ ४१	३ ७ २१ ५५	६ २८ ४५ १०	० १८ ४७ २४	९ २७	–१९ ५३	–५ ०	२९
३०	४ १२ ५४ ५५	१० ८ १५ ३५	३ २९ १८ ७	३ २४ ४८ ४	९ १५ १८ ३४	३ ८ ३३ ७	६ २८ ४८ २५	० १८ ४४ १३	९ ६	–१५ १२	–४ ४४	३०
३१	४ १३ ५२ ५५	१० २० ५८ १०	३ २९ ५६ १८	३ २५ ५९ ४	९ १५ १२ ३५	३ ९ ४४ २४	६ २८ ५१ ४४	० १८ ४१ ३	८ ४४	– ९ ५६	–४ १३	३१
सितम्बर १	४ १४ ५० ५४	११ ३ २५ ३८	४ ० ३४ २७	३ २७ १६ ८	९ १५ ६ ४४	३ १० ५५ ४४	६ २८ ५५ ९	० १८ ३७ ५२	८ २३	– ४ २३	–३ ३१	१ सितम्बर
२	४ १५ ४८ ५८	११ १५ ३९ १९	४ १ १२ ३६	३ २८ ३८ ५५	९ १५ १ २	३ १२ ७ १२	६ २८ ५८ ३९	० १८ ३४ ४१	८ १	१ १५	–२ ४०	२
३	४ १६ ४७ ३	११ २७ ४१ ३६	४ १ ५० ४४	४ ० ६ ५४	९ १४ ५५ २८	३ १३ १८ ४४	६ २९ २ १४	० १८ ३१ ३०	७ ३९	९ ४५	–१ ४२	३
४	४ १७ ४५ ८	० ९ ३४ २७	४ २ २८ ५१	४ १ ३९ ३३	९ १४ ५० २	३ १४ ३० १९	६ २९ ५ ५४	० १८ २८ २०	७ १७	११ ५८	–० ४०	४
५	४ १८ ४३ १७	० २१ २२ ४२	४ ३ ६ ५८	४ ३ १६ २७	९ १४ ४४ ४६	३ १५ ४२ ३	६ २९ ९ ३८	० १८ २५ ९	६ ५५	१६ ४३	० २३	५
६	४ १९ ४१ २८	१ ३ १० ०	४ ३ ४५ ५	४ ४ ५६ ०	९ १४ ३९ ३८	३ १६ ५३ ५०	६ २९ १३ २८	० १८ २१ ५८	६ ३३	२० ५०	१ २५	६
७	४ २० ३९ ३९	१ १५ १ ५५	४ ४ २३ १०	४ ६ ४० ४२	९ १४ ३४ ४१	३ १८ ५ ४१	६ २९ १७ २२	० १८ १८ ४७	६ १०	२४ ८	२ २४	७
८	४ २१ ३७ ५४	१ २७ ४ १४	४ ५ १ १५	४ ८ २७ ५	९ १४ २९ ५२	३ १९ १७ ३८	६ २९ २१ २१	० १८ १५ ३६	५ ४८	२६ २५	३ १८	८
९	४ २२ ३६ १२	२ ९ २१ १४	४ ५ ३९ २०	४ १० १५ ४१	९ १४ २५ १३	३ २० २९ ४१	६ २९ २५ २५	० १८ १२ २६	५ २५	२७ २८	४ ४	९
१०	४ २३ ३४ २९	२ २१ ५८ ८	४ ६ १७ २४	४ १२ ५ ५९	९ १४ २० ४४	३ २१ ४१ ४७	६ २९ २९ ३३	० १८ ९ १५	५ २	२७ ८	४ ३९	१०
११	४ २४ ३२ ५१	३ ४ ५९ १३	४ ६ ५५ २७	४ १३ ५७ ४१	९ १४ १६ २५	३ २२ ५३ ५९	६ २९ ३३ ४६	० १८ ६ ४	४ ४०	२५ २०	५ १	११
१२	४ २५ ३१ १४	३ १८ २५ ३३	४ ७ ३३ ३०	४ १५ ५० २०	९ १४ १२ १७	३ २४ ६ १५	६ २९ ३८ ४	० १८ ३ ५३	४ १७	२२ ५	५ ७	१२

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.), सन् १९८५ ई०

(१ सितम्बर को अयनांश = २३°३९'१४")

तारीख सन् १९८५ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चंद्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चन्द्र क्रां. अं. क.	चन्द्रशर अं. क.	तारीख सन् १९८५ ई.
सितम्बर १३	४ २६ २६ ३६	४ २ १७ ३५	४ ८ ११ ३३	४ १७ ४३ ३८	६ १४ ८ १६	३ २५ १८ ३४	६ २६ ४२ २६	० १७ ५६ ४२	३ ५४	१७ ३०	४ ५६	१३ सितम्बर
१४	४ २७ २८ ६	४ १६ ३३ १७	४ ८ ४६ ३४	४ १६ ३७ १७	६ १४ ४ ३१	३ २६ ३१ १	६ २६ ४६ ५२	० १७ ५६ ३२	३ ३१	११ ५१	४ २७	१४
१५	४ २८ २६ ३५	५ १ ६ २६	४ ६ २७ ३६	४ २१ ३१ ३	६ १४ ० ५४	३ २७ ४३ ३०	६ २६ ५१ २३	० १७ ५३ २१	३ ८	५ २६	३ ४०	१५
१६	४ २९ २५ ६	५ १५ ५० ४०	४ १० ५ ३७	४ २३ २४ ४३	६ १३ ५७ २७	३ २८ ५६ ४	६ २६ ५५ ५८	० १७ ५० १०	२ ४५	– १ २२	२ ३७	१६
१७	५ ० २३ ३८	६ ० ३८ ५५	४ १० ४३ ३६	४ २५ १८ ३	६ १३ ५४ १२	४ ० ८ ४१	७ ० ० ३७	० १७ ४६ ५६	२ २२	– ८ ८	१ २४	१७
१८	५ १ २२ १२	६ १५ २२ ४३	४ ११ २१ ३५	४ २७ १० ५६	६ १३ ५१ ८	४ १ २१ २३	७ ० ५ २१	० १७ ४३ ४८	१ ५८	–१४ २६	० ५	१८
१९	५ २ २० ४६	६ २६ ५६ ४५	४ ११ ५६ ३४	४ २६ ३ २१	६ १३ ४८ १५	४ २ ३४ १०	७ ० १० ६	० १७ ४० ३८	१ ३५	–१६ ५२	–१ १३	१९
२०	५ ३ १६ २६	७ १४ १७ ३६	४ १२ ३७ ३१	५ ० ५५ २	६ १३ ४५ ३३	४ ३ ४६ ५६	७ ० १५ १	० १७ ३७ २७	१ १२	–२४ ३	–२ २६	२०
२१	५ ४ १८ ४	७ २८ २१ ५६	४ १३ १५ २६	५ २ ४५ ५८	६ १३ ४३ ३	४ ४ ५६ ५२	७ ० १६ ५७	० १७ ३४ १६	० ४६	–२६ ४०	–३ २६	२१
२२	५ ५ १६ ४५	८ १२ ६ ४७	४ १३ ५३ २५	५ ४ ३६ ७	६ १३ ४० ४४	४ ६ १२ ५०	७ ० २४ ५७	० १७ ३१ ६	० २५	–२७ ३६	–४ १७	२२
२३	५ ६ १५ २७	८ २५ ४२ २	४ १४ ३१ २०	५ ६ २५ २३	६ १३ ३८ ३७	४ ७ २५ ५१	७ ० ३० ०	० १७ २७ ५५	० २	–२६ ५०	–४ ५१	२३
२४	५ ७ १४ ११	६ ८ ५८ २६	४ १५ ६ १५	५ ८ १३ ४८	६ १३ ३६ ४१	४ ८ ३८ ५५	७ ० ३५ ८	० १७ २४ ४४	–० २२	–२४ ३४	–५ ८	२४
२५	५ ८ १२ ५७	६ २२ ० ३६	४ १५ ४७ १०	५ १० १ १८	६ १३ ३४ ५७	४ ६ ५२ ४	७ ० ४० २०	० १७ २१ ३३	–० ४५	–२१ ३	–५ ६	२५
२६	५ ६ ११ ४३	१० ४ ४६ ५७	४ १६ २५ ३	५ ११ ४७ ५२	६ १३ ३३ २५	४ ११ ५ १५	७ ० ४५ ३५	० १७ १८ २२	–१ ८	–१६ ३५	–४ ५४	२६
२७	५ १० १० ३२	१० १७ २६ ८	४ १७ २ ५६	५ १३ ३३ ३२	६ १३ ३२ ४	४ १२ १८ ३०	७ ० ५० ५४	० १७ १५ १२	–१ ३२	–११ २६	–४ २५	२७
२८	५ ११ ६ २३	१० २६ ५० २६	४ १७ ४० ४६	५ १५ १८ १७	६ १३ ३० ५६	४ १३ ३१ ५०	७ ० ५६ १७	० १७ १२ १	–१ ५५	– ६ ०	–३ ४४	२८
२९	५ १२ ८ १६	११ १२ ४ २२	४ १८ १८ ४०	५ १७ २ ६	६ १३ २६ ५६	४ १४ ४५ ११	७ १ १ ४३	० १७ ८ ५०	–२ १८	– ० २२	–२ ५३	२९
३०	५ १३ ७ १०	११ २४ ७ ५७	४ १८ ५६ ३१	५ १८ ४५ १	६ १३ २६ १३	४ १५ ५८ ३७	७ १ ७ १३	० १७ ५ ३६	–२ ४२	५ १३	–१ ५५	३०
अक्टूबर १	५ १४ ६ ८	० ६ ३ २५	४ १६ ३४ २३	५ २० २७ ३	६ १३ २८ ४०	४ १७ १२ ७	७ १ १२ ४६	० १७ २ २८	–३ ५	१० ३४	–० ५२	१ अक्टूबर
२	५ १५ ५ ६	० १७ ५३ २७	४ २० १२ १३	५ २२ ८ ११	६ १३ २८ १६	४ १८ २५ ४०	७ १ १८ २३	० १६ ५६ १८	–३ २८	१५ ३०	० १२	२
३	५ १६ ४ ७	० २६ ४० १	४ २० ५० २	५ २३ ४८ २६	६ १३ २८ ६	४ १६ ३६ १६	७ १ २४ ३	० १६ ५६ ७	–३ ५१	१६ ५०	१ १६	३
४	५ १७ ३ ११	१ ११ २७ ७	४ २१ २७ ५२	५ २५ २७ ५५	६ १३ २८ ११	४ २० ५२ ५६	७ १ २६ ४६	० १६ ५२ ५६	–४ १५	२३ २४	२ १७	४
५	५ १८ २ १६	१ २३ १६ १६	४ २२ ५ ४१	५ २७ ६ ३१	६ १३ २८ २५	४ २२ ६ ३८	७ १ ३५ ३३	० १६ ४६ ४५	–४ ३८	२६ ०	३ १२	५
६	५ १६ १ २५	२ ५ २० १४	४ २२ ४३ ३०	५ २८ ४४ २०	६ १३ २८ ५१	४ २३ २० २६	७ १ ४१ २३	० १६ ४६ ३४	–५ १	२७ २६	४ ०	६
७	५ २० ० ३६	२ १७ ३५ ७	४ २३ २१ १६	६ ० २१ २२	६ १३ २६ २६	४ २४ ३४ १७	७ १ ४७ १६	० १६ ४३ २४	–५ २४	२७ ३५	४ ३८	७
८	५ २० ५६ ४६	३ ० ६ १३	४ २३ ५६ ६	६ १ ५७ ३६	६ १३ ३० १६	४ २५ ४८ १०	७ १ ५३ १२	० १६ ४० १३	–५ ४७	२६ १६	५ ४	८
९	५ २१ ५६ ४	३ १३ ५ ४६	४ २४ ३६ ५४	६ ३ ३३ ४	६ १३ ३१ २०	४ २७ २ ६	७ १ ५६ ११	० १६ ३७ २	–६ १०	२३ ३६	५ १५	९
१०	५ २२ ५८ २३	३ २६ २८ २६	४ २५ १४ ४१	६ ५ ७ ४६	६ १३ ३२ ३३	४ २८ १६ ७	७ २ ५ १४	० १६ ३३ ५१	–६ ३२	१६ ३६	५ १०	१०
११	५ २३ ५७ ४३	४ १० १६ २७	४ २५ ५२ २८	६ ६ ४१ ४६	६ १३ ३३ ५६	४ २६ ३० ६	७ २ ११ १६	० १६ ३० ४१	–६ ५५	१४ २६	४ ४६	११
१२	५ २४ ५७ ५	४ २४ ३६ ४०	४ २६ ३० १४	६ ८ १५ ६	६ १३ ३५ ३५	५ ० ४४ १५	७ २ १७ २७	० १६ २७ ३०	–७ १८	८ २४	४ ५	१२
१३	५ २५ ५६ ३०	५ ६ १७ ५	४ २७ ८ ०	६ ६ ४७ ४१	६ १३ ३७ २४	५ १ ५८ २४	७ २ २३ ३८	० १६ २४ १६	–७ ४०	१ ४१	३ ७	१३
१४	५ २६ ५५ ५६	५ २४ १५ १	४ २७ ४५ ४५	६ ११ १६ ३४	६ १३ ३६ २४	५ ३ १२ ३६	७ २ २६ ५१	० १६ २१ ८	–८ ३	– ५ १६	१ ५५	१४
१५	५ २७ ५५ २५	६ ६ २० ५८	४ २८ २३ ३०	६ १२ ५० ४४	६ १३ ४१ ३६	५ ४ २६ ४६	७ २ ३५ ७	० १६ १७ ५७	–८ २५	–११ ५६	० ३४	१५
१६	५ २८ ५४ ५६	६ २४ २६ २०	४ २६ १ १५	६ १४ २१ १५	६ १३ ४३ ०	५ ५ ४१ ७	७ २ ४२ २६	० १६ १४ ४७	–८ ४७	–१८ १	–० ४६	१६
१७	५ २६ ५४ २८	७ ६ २३ ५	४ २६ ३८ ५८	६ १५ ५१ ४	६ १३ ४६ ३५	५ ६ ५५ २६	७ २ ४८ ४७	० १६ ११ ३६	–६ ६	–२२ ५२	–२ ८	१७

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टै. टा.), सन् १९८५ ई०

(१ अक्टूबर को अयनांश = २३।°३९'।१७") (१ नवम्बर को अयनांश २३°।३९'।२१")

तारीख सन् १९८५ ई.	सूर्य रा. घं. क. वि.	चन्द्र रा. घं. क. वि.	मंगल रा. घं. क. वि.	बुध रा. घं. क. वि.	गुरु रा. घं. क. वि.	शुक्र रा. घ. क. वि.	शनि रा. घं. क. वि.	राहु रा. घं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चंद्र क्रां. अं. क.	चन्द्रशर अं. क.	तारीख सन् १९८५ ई.
अक्टूबर १८	६ ० ५४ २	७ २४ २ ५५	५ ० १६ ४१	६ १७ २० ११	९ १३ ४९ २२	५ ८ ९ ४७	७ २ ५५ ११	० १६ ८ २५	– ९ ३१	–२६ ९	–३ १८	१८ अक्टूबर
१९	६ १ ५३ ३८	८ ८ २१ ४६	५ ० ५४ २४	६ १८ ४८ ३७	९ १३ ५२ २०	५ ९ २४ ११	७ ३ १ ३७	० १६ ५ १४	– ९ ५३	–२७ ३८	–४ १३	१९
२०	६ २ ५३ १५	८ २२ १७ ५५	५ १ ३२ ६	६ २० १६ २०	९ १३ ५५ ३०	५ १० ३८ ३७	७ ३ ८ ५	० १६ २ ३	–१० १५	–२७ १८	–४ ५१	२०
२१	६ ३ ५२ ५४	९ ५ ५० १२	५ २ ९ ४७	६ २१ ४३ २०	९ १३ ५८ ५१	५ ११ ५३ ५	७ ३ १४ ३५	० १५ ५८ ५३	–१० ३६	–२५ २१	–५ १३	२१
२२	६ ४ ५२ ३५	९ १९ १ ११	५ २ ४७ २८	६ २३ ९ ३७	९ १४ २ २३	५ १३ ७ ३५	७ ३ २१ ८	० १५ ५५ ४२	–१० ५७	–२२ ३	–५ १७	२२
२३	६ ५ ५२ १८	१० १ ५२ १२	५ ३ २५ ८	६ २४ ३५ १०	९ १४ ६ ६	५ १४ २२ ८	७ ३ २७ ४३	० १५ ५२ ३१	–११ १९	–१७ ४७	–५ ४	२३
२४	६ ६ ५२ १	१० १४ २६ ३६	५ ४ २ ४८	६ २५ ५९ ५४	९ १४ १० १	५ १५ ३६ ४२	७ ३ ३४ २०	० १५ ४९ २०	–११ ४०	–१२ ४९	–४ ३८	२४
२५	६ ७ ५१ ४७	१० २६ ४७ ४३	५ ४ ४० २६	६ २७ २३ ५१	९ १४ १४ ६	५ १६ ५१ १९	७ ३ ४० ५९	० १५ ४६ १०	–१२ ०	– ७ २६	–३ ५९	२५
२६	६ ८ ५१ ३५	११ ८ ५७ १४	५ ५ १८ ५	६ २८ ४६ ५७	९ १४ १८ २३	५ १८ ५ ५७	७ ३ ४७ ३९	० १५ ४२ ५९	–१२ २१	– १ ५१	–३ ९	२६
२७	६ ९ ५१ २४	११ २० ५८ ४	५ ५ ५५ ४२	७ ० ९ ९	९ १४ २२ ५०	५ १९ २० ३७	७ ३ ५४ २२	० १५ ३९ ४८	–१२ ४१	३ ४५	–२ १२	२७
२८	६ १० ५१ १५	० २ ५२ ५७	५ ६ ३३ १९	७ १ ३० २४	९ १४ २७ २९	५ २० ३५ १९	७ ४ १ ७	० १५ ३६ ३७	–१३ २	९ १०	–१ ९	२८
२९	६ ११ ५१ ९	० १४ ४२ ०	५ ७ १० ५६	७ २ ५० ३९	९ १४ ३२ १७	५ २१ ५० ४	७ ४ ७ ५३	० १५ ३३ २६	–१३ २२	१४ १४	–० ४	२९
३०	६ १२ ५१ ३	० २६ ३० ४७	५ ७ ४८ ३२	७ ४ ९ ४६	९ १४ ३७ १७	५ २३ ४ ४९	७ ४ १४ ४१	० १५ ३० १६	–१३ ४२	१८ ४६	१ १	३०
३१	६ १३ ५१ ०	१ ८ १८ ५९	५ ८ २६ ८	७ ५ २७ ४३	९ १४ ४२ २७	५ २४ १९ ३७	७ ४ २१ ३०	० १५ २७ ५	–१४ १	२२ ३५	२ ४	३१
नवम्बर १	६ १४ ५१ ०	१ २० ९ ८	५ ९ ३ ४४	७ ६ ४४ २२	९ १४ ४७ ४७	५ २५ ३४ २७	७ ४ २८ २१	० १५ २३ ५४	–१४ २१	२५ २७	३ १	१ नवम्बर
२	६ १५ ५१ २	२ २ ४ २९	५ ९ ४१ १९	७ ७ ५९ ३७	९ १४ ५३ १८	५ २६ ४९ १९	७ ४ ३५ १४	० १५ २० ४३	–१४ ४०	२७ १३	३ ५१	२
३	६ १६ ५१ ४	२ १४ ८ ४६	५ १० १८ ५२	७ ९ १३ १७	९ १४ ५८ ०	५ २८ ४ १२	७ ४ ४२ ८	० १५ १७ ३२	–१४ ५९	२७ ४४	४ ३२	३
४	६ १७ ५१ ११	२ २६ २४ ३२	५ १० ५६ २६	७ १० २५ १५	९ १५ ४ ५१	५ २९ १९ ८	७ ४ ४९ ३	० १५ १४ २२	–१५ १७	२६ ५३	५ ०	४
५	६ १८ ५१ २०	३ ८ ५६ ४	५ ११ ३४ ०	७ ११ ३५ १८	९ १५ १० ५२	६ ० ३४ ६	७ ४ ५६ ०	० १५ ११ ११	–१५ ३६	२४ ४२	५ १६	५
६	६ १९ ५१ २८	३ २१ ४७ ४४	५ १२ ११ ३३	७ १२ ४३ १२	९ १५ १७ ४	६ १ ४९ ३	७ ५ २ ५८	० १५ ८ ०	–१५ ५४	२१ १३	५ १६	६
७	६ २० ५१ ४१	४ ५ १ ५५	५ १२ ४९ ६	७ १३ ४८ ४५	९ १५ २३ २५	६ ३ ४ ५	७ ५ ९ ५७	० १५ ४ ४९	–१६ १२	१६ ३६	५ ०	७
८	६ २१ ५१ ५६	४ १८ ४१ ४१	५ १३ २६ ३८	७ १४ ५१ ३९	९ १५ २९ ५६	६ ४ १९ ८	७ ५ १६ ५८	० १५ १ ३९	–१६ ३०	११ १	४ २६	८
९	६ २२ ५२ ११	५ २ ४८ ३७	५ १४ ४ ९	७ १५ ५१ ३२	९ १५ ३६ ३७	६ ५ ३४ १०	७ ५ २३ ५९	० १४ ५८ २८	–१६ ४७	४ ४२	३ ३६	९
१०	६ २३ ५२ ३०	५ १७ २० २०	५ १४ ४१ ४०	७ १६ ४८ ६	९ १५ ४३ २८	६ ६ ४९ १६	७ ५ ३१ १	० १४ ५५ १७	–१७ ४	– २ ३	२ ३०	१०
११	६ २४ ५२ ५०	६ २ १३ २८	५ १५ १९ ११	७ १७ ४० ५३	९ १५ ५० २८	६ ८ ४ २३	७ ५ ३८ ४	० १४ ५२ ६	–१७ २१	– ८ ५२	१ १३	११
१२	६ २५ ५३ ११	६ १७ २१ ०	५ १५ ५६ ४१	७ १८ २९ २६	९ १५ ५७ ३७	६ ९ १९ ३०	७ ५ ४५ ८	० १४ ४८ ५५	–१७ ३७	–१५ १८	–० १०	१२
१३	६ २६ ५३ ३६	७ २ ३५ ५२	५ १६ ३४ १०	७ १९ १३ १५	९ १६ ४ ५६	६ १० ३४ ४०	७ ५ ५२ १३	० १४ ४५ ४५	–१७ ५४	–२० ५०	–१ ३३	१३
१४	६ २७ ५४ ०	७ १७ ४५ ५०	५ १७ ११ ३९	७ १९ ५१ ४२	९ १६ १२ २३	६ ११ ४९ ५०	७ ५ ५९ १९	० १४ ४२ ३४	–१८ ९	–२४ ५७	–२ ४९	१४
१५	६ २८ ५४ २७	८ २ ४३ ५	५ १७ ४९ ६	७ २० २४ १३	९ १६ २० ०	६ १३ ५ १	७ ६ ६ २५	० १४ ३९ २३	–१८ २५	–२७ १६	–३ ५३	१५
१६	६ २९ ५४ ५५	८ १७ १८ ४३	५ १८ २६ ३४	७ २० ५० ५	९ १६ २७ ४६	६ १४ २० १४	७ ६ १३ ३२	० १४ ३६ १२	–१८ ४०	–२७ ३७	–४ ३९	१६
१७	७ ० ५५ २४	९ १ २८ २५	५ १९ ४ १	७ २१ ८ ३४	९ १६ ३५ ४१	६ १५ ३५ २७	७ ६ २० ३९	० १४ ३३ २	–१८ ५५	–२६ ८	–५ ७	१७
१८	७ १ ५५ ५४	९ १५ १० ४५	५ १९ ४१ २६	७ २१ १८ ५६	९ १६ ४३ ४५	६ १६ ५० ४०	७ ६ २७ ४६	० १४ २९ ५१	–१९ १०	–२३ ८	–५ १६	१८
१९	७ २ ५६ २७	९ २८ २५ १८	५ २० १८ ५१	७ २१ २० २७	९ १६ ५१ ५७	६ १८ ५ ५६	७ ६ ३४ ५४	० १४ २६ ४०	–१९ २४	–१९ ०	–५ ८	१९
२०	७ ३ ५६ ५९	१० ११ १५ १५	५ २० ५६ १६	७ २१ १२ २४	९ १७ ० १८	६ १९ २१ ११	७ ६ ४२ २	० १४ २३ २९	–१९ ३८	–१४ ७	–४ ४५	२०
२१	७ ४ ५७ ३३	१० २३ ४४ ५६	५ २१ ३३ ३८	७ २० ५४ १५	९ १७ ८ ४७	६ २० ३६ २७	७ ६ ४९ १०	० १४ २० १८	–१९ ५१	– ८ ४७	–४ ८	२१

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.), सन् १९८५ ई०

(१ दिसम्बर को अयनांश = २३°।३९'।२६")

तारीख सन् १९८५ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चंद्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चन्द्र क्रां. अं. क.	चन्द्रशर अं. क.	तारीख सन् १९८५ ई.
नवम्बर २२	७ ५५८ ९	११ ५५७४२	५२२११ १	७२०२५३२	९१७१७२५	६२१५१४५	७ ६५६१९	०१४१७ ८	−२० ४	− ३१३	−३२१	२२ नवम्बर
२३	७ ६५८४५	११ १७५८५३	५२२४८२३	७१९४६ ९	९१७२६१०	६२३ ७ २	७ ७ ३२७	०१४१३५७	−२० १७	२२२	−२२६	२३
२४	७ ७५९२३	११२९५१३६	५२३२५४४	७१८५६१६	९१७३५ ४	६२४२२३१	७ ७१०३५	०१४१०४६	−२० ३०	७४९	−१२५	२४
२५	७ ९ ० २	०११४० ०	५२४ ३ ४	७१७५६३६	९१७४४ ६	६२५३७४०	७ ७१७४४	०१४ ७३५	−२० ४२	१२५८	−० २१	२५
२६	७१० ०४२	०२३२७४१	५२४४०२३	७१६४८१४	९१७५३१६	६२६५२५९	७ ७२४५२	०१४ ४२५	−२० ५३	१७३९	०४४	२६
२७	७११ १२४	१ ५१६१९	५२५१७४२	७१५३२५२	९१८ २३४	६२८ ८२०	७ ७३१ ०	०१४ ११४	−२१ ५	२१४०	१४७	२७
२८	७१२ २ ६	११७ ८३०	५२५५४ ०	७१४१२४५	९१८११५९	६२९२३४०	७ ७३९ ८	०१३५८ ३	−२१ १५	२४४८	२४५	२८
२९	७१३ २५०	१२९ ६३६	५२६३२१७	७१२५०१८	९१८२१३२	७ ०३९ २	७ ७४६१५	०१३५४५२	−२१ २६	२६५१	३३७	२९
३०	७१४ ३३६	२११११७	५२७ ९३३	७११२८२६	९१८३११२	७ १५४२५	७ ७५३२२	०१३५१४१	−२१ ३६	२७४०	४१९	३०
दिसम्बर १	७१५ ४२२	२२३२४४४	५२७४६४८	७१० ९४८	९१८४० ०	७ ३ ९४७	७ ८ ०२८	०१३४८३१	−२१ ४६	२७·९	४५०	१ दिसम्बर
२	७१६ ५११	३ ५४९१८	५२८२४ ३	७ ८५७ ३	९१८५०५५	७ ४२५११	७ ८ ७३५	०१३४५२०	−२१ ५५	२५१७	५ ८	२
३	७१७ ६ २	३१८२६ ५	५२९ ११८	७ ७५२१६	९१९ ०५८	७ ५४०३७	७ ८१४४०	०१३४२ ९	−२२ ४	२२ ९	५१२	३
४	७१८ ६५२	४ ११८३०	५२९३८३०	७ ६५७ ९	९१९११ ७	७ ६५६ १	७ ८२१४५	०१३३८५८	−२२ १२	१७५४	५ ०	४
५	७१९ ७४६	४१४२८ ३	६ ०१५४३	७ ६१२४६	९१९२१२३	७ ८११२८	७ ८२८४९	०१३३५४७	−२२ २०	१२४३	४३२	५
६	७२० ८४१	४२७५७३८	६ ०५२५५	७ ५३९४५	९१९३१४७	७ ९२६५५	७ ८३५५२	०१३३२३७	−२२ २८	६४९	३४९	६
७	७२१ ९३५	५११४९४०	६ १३० ५	७ ५१८१०	९१९४२१७	७१०४२२०	७ ८४२५४	०१३२९२६	−२२ ३५	०२६	२५१	७
८	७२२१०३३	५२६ ३३७	६ २ ७१५	७ ५ ७४७	९१९५२५३	७११५७४८	७ ८४९५६	०१३२६१५	−२२ ४१	− ६ ९	१४१	८
९	७२३११३१	६१०३८४४	६ २४४२५	७ ५ ८ ५	९२० ३३७	७१३१३१८	७ ८५६५७	०१३२३ ४	−२२ ४८	−१२ ३५	०२४	९
१०	७२४१२२९	६२५३१५१	६ ३२१३२	७ ५१८१९	९२०१४२६	७१४२८४५	७ ९ ३५६	०१३१९५४	−२२ ५३	−१८ २७	−०५७	१०
११	७२५१३३०	७१०३५२२	६ ३५८३९	७ ५३७४५	९२०२५२३	७१५४४१४	७ ९१०५४	०१३१६४३	−२२ ५९	−२३ १२	−२१५	११
१२	७२६१४३१	७२५४१२४	६ ४३५४५	७ ६ ५२९	९२०३६२५	७१६५९४४	७ ९१७५१	०१३१३३२	−२३ ३	−२६ २३	−३२३	१२
१३	७२७१५३२	८१०४०५९	६ ५१२४९	७ ६४०४०	९२०४७३३	७१८१५१३	७ ९२४४७	०१३१०२१	−२३ ८	−२७ ३८	−४१६	१३
१४	७२८१६३५	८२५२३४७	६ ५४९५४	७ ७२२३२	९२०५८४८	७१९३०४३	७ ९३१४१	०१३ ७१०	−२३ १२	−२६ ५४	−४५२	१४
१५	७२९१७३८	९ ९४३४८	६ ६२६५६	७ ८१०१९	९२११० ८	७२०४६१३	७ ९३८३४	०१३ ३ ०	−२३ १५	−२४ २३	−५ ८	१५
१६	८ ०१८४१	९२३३५३०	६ ७ ३५८	७ ९ ३१६	९२१२१३५	७२२ १४३	७ ९४५२५	०१३ ०४९	−२३ १८	−२० ३०	−५ ५	१६
१७	८ ११९४५	१० ६५८१६	६ ७४०५८	७१० ०४८	९२१३३ ६	७२३१७१२	७ ९५२१५	०१२५७३८	−२३ २१	−१५ ४१	−४४५	१७
१८	८ २२०४८	१०१९५४ ७	६ ८१७५६	७११ २२२	९२१४४४४	७२४३२४२	७ ९५९ ३	०१२५४२७	−२३ २३	−१० १९	−४१२	१८
१९	८ ३२१५४	११ २२५३४	६ ८५४५४	७१२ ७२७	९२१५६२७	७२५४८१३	७१० ५४९	०१२५११६	−२३ २४	− ४४३	−३२७	१९
२०	८ ४२२५८	१११४३७५२	६ ९३१५०	७१३१५३५	९२२ ८१५	७२७ ३४१	७१०१२३३	०१२४८ ६	−२३ २६	०५७	−२३३	२०
२१	८ ५२४ २	११२६३६४८	६१० ८४५	७१४२६२७	९२२२० ९	७२८१९११	७१०१९१६	०१२४४५५	−२३ २६	६२८	−१३४	२१
२२	८ ६२५ ८	० ८२६४१	६१०४५३९	७१५३९४०	९२२३२ ८	७२९३४४१	७१०२५५६	०१२४१४४	−२३ २६	११४३	−०३२	२२
२३	८ ७२६१३	०२०१२५८	६११२२३१	७१६५४५७	९२२४४११	८ ०५०११	७१०३२३५	०१२३८३३	−२३ २६	१५३१	०३२	२३
२४	८ ८२७१९	१ २ ०३१	६११५९२२	७१८१२ ४	९२२५६२०	८ २ ५४०	७१०३९११	०१२३५२३	−२३ २५	२०४२	१·३४	२४
२५	८ ९२८२५	११३५२ ३	६१२३६१२	७१९३०४८	९२३ ८३४	८ ३२११०	७१०४५४५	०१२३२१२	−२३ २४	२४ ४	२३२	२५
२६	८१०२९३१	१२५५१२०	६१३१२ ०	७२०५०५६	९२३२०५३	८ ४३६४०	७१०५२१७	०१२२९ १	−२३ २३	२६२५	३२३	२६

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.), सन् १९८५–८६ ई०

(१ जनवरी को अयनांश = २३|°३९'१३२")

तारीख सन् १९८५ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चंद्र क्रां. अं. क.	चन्द्रशर अं. क.	तारीख सन् १९८५ ई.
दिसम्बर २७	८ ११ ३० ३८	२ ७ ५६ २४	६ १३ ४९ ४७	७ २२ १२ २०	९ २३ ३३ १६	८ ५ ५२ ९	७ १० ५८ ४७	० १२ २५ ५०	−२३ २०	२७ ३२	४ ७	२७ दिसम्बर
२८	८ १२ ३१ ४५	२ २० १७ ५५	६ १४ २६ ३२	७ २३ ३४ ५२	९ २३ ४५ ४४	८ ७ ७ ३९	७ ११ ५ १४	० १२ २२ ३९	−२३ १८	२७ २०	४ ३९	२८
२९	८ १३ ३२ ५३	३ २ ४७ ५७	६ १५ ३ १६	७ २४ ५८ २४	९ २३ ५८ १६	८ ८ २३ ८	७ ११ ११ ३९	० १२ १९ २९	−२३ १५	२५ ४४	४ ५८	२९
३०	८ १४ ३४ ०	३ १५ २८ ४१	६ १५ ३९ ५९	७ २६ २२ ५०	९ २४ १० ५३	८ ९ ३८ ३८	७ ११ १८ २	० १२ १६ १८	−२३ ११	२२ ५०	५ ३	३०
३१	८ १५ ३५ ९	३ २८ २० ४३	६ १६ १६ ४०	७ २७ ४८ ६	९ २४ २३ ३४	८ १० ५४ ९	७ ११ २४ २२	० १२ १३ ७	−२३ ७	१८ ४७	४ ५३	३१
जनवरी १	८ १६ ३६ १७	४ ११ २४ ५५	६ १६ ५३ १९	७ २९ १४ ६	९ २४ ३६ २०	८ १२ ९ ३८	७ ११ ३० ३९	० १२ ९ ५६	−२३ ३	१३ ४८	४ २८	१ जनवरी
(१९८६) २	८ १७ ३७ २६	४ २४ ४० ५१	६ १७ २९ ५७	८ ० ४० ४८	९ २४ ४९ ९	८ १३ २५ ८	७ ११ ३६ ५४	० १२ ६ ४५	−२२ ५८	८ ६	३ ४८	२ (१९८६)
३	८ १८ ३८ ३६	५ ८ १० ७	६ १८ ६ ३४	८ २ ८ ९	९ २५ २ ३	८ १४ ४० ३८	७ ११ ४३ ६	० १२ ३ ३५	−२२ ५२	१ ५६	२ ५४	३
४	८ १९ ३९ ४६	५ २१ ५४ २८	६ १८ ४३ ९	८ ३ ३६ ४	९ २५ १५ १	८ १५ ५६ ९	७ ११ ४९ १५	० १२ ० २४	−२२ ४६	− ४ २७	१ ५०	४
५	८ २० ४० ५५	६ ५ ५३ ४७	६ १९ १९ ४२	८ ५ ४ ३४	९ २५ २८ ३	८ १७ ११ ३९	७ ११ ५५ २१	० ११ ५७ १३	−२२ ४०	−१० ४४	० ३८	५
६	८ २१ ४२ ६	६ २० ८ ४२	६ १९ ५६ १४	८ ६ ३३ ३७	९ २५ ४१ ८	८ १८ २७ ९	७ १२ १ २५	० ११ ५४ २	−२२ ३३	−१६ ३५	−० ३८	६
७	८ २२ ४३ १६	७ ४ ३८ २६	६ २० ३२ ४४	८ ८ ३ ९	९ २५ ५४ १८	८ १९ ४२ ३८	७ १२ ७ २५	० ११ ५० ५२	−२२ २६	−२१ ३७	−१ ५२	७
८	८ २३ ४४ २६	७ १९ १८ २२	६ २१ ९ १२	८ ९ ३३ ११	९ २६ ७ ३०	८ २० ५८ ८	७ १२ १३ २२	० ११ ४७ ४१	−२२ १८	−२५ २०	−३ ०	८
९	८ २४ ४५ ३७	८ ४ ३ २७	६ २१ ४५ ३९	८ ११ ३ ४४	९ २६ २० ४७	८ २२ १३ ३९	७ १२ १९ १६	० ११ ४४ ३०	−२२ १०	−२७ २१	−३ ५६	९
१०	८ २५ ४६ ४६	८ १८ ४६ ५५	६ २२ २२ ४	८ १२ ३४ ४३	९ २६ ३४ ६	८ २३ २९ ९	७ १२ २५ ७	० ११ ४१ १९	−२२ २	−२७ २६	−४ ३६	१०
११	८ २६ ४७ ५६	९ ३ १९ ३३	६ २२ ५८ २६	८ १४ ६ ११	९ २६ ४७ २९	८ २४ ४४ ३७	७ १२ ३० ५४	० ११ ३८ ८	−२१ ५३	−२५ ३७	−४ ५८	११
१२	८ २७ ४९ ६	९ १७ ३४ ३४	६ २३ ३४ ४७	८ १५ ३८ ८	९ २७ ० ५६	८ २६ ० ७	७ १२ ३६ ३८	० ११ ३४ ५८	−२१ ४४	−२२ १२	−५ ०	१२
१३	८ २८ ५० १४	१० १ २६ ५८	६ २४ ११ ६	८ १७ १० ३२	९ २७ १४ २५	८ २७ १५ ३६	७ १२ ४२ १९	० ११ ३१ ४७	−२१ ३४	−१७ ३७	−४ ४५	१३
१४	८ २९ ५१ २२	१० १४ ५२ ४३	६ २४ ४७ २२	८ १८ ४३ २४	९ २७ २७ ५७	८ २८ ३१ ४	७ १२ ४७ ५६	० ११ २८ ३६	−२१ २३	−१२ १७	−४ १४	१४
१५	९ ० ५२ ३०	१० २७ ५२ १२	६ २५ २३ ३७	८ २० १६ ४६	९ २७ ४१ ३३	८ २९ ४६ ३२	७ १२ ५३ २९	० ११ २५ २५	−२१ १३	− ६ ३४	−३ ३०	१५
१६	९ १ ५३ ३७	११ १० २८ ७	६ २५ ५९ ४९	८ २१ ५० ३७	९ २७ ५५ ११	९ १ १ ५९	७ १२ ५८ ५९	० ११ २२ १४	−२१ २	− ० ४५	−२ ३७	१६
१७	९ २ ५४ ४३	११ २२ ४३ २५	६ २६ ३५ ५९	८ २३ २४ ५६	९ २८ ८ ५१	९ २ १७ २५	७ १३ ४ २५	० ११ १९ ४	−२० ५०	४ ५६	−१ ३९	१७
१८	९ ३ ५५ ४९	० ४ ४३ ४०	६ २७ १२ ७	८ २४ ५९ ४८	९ २८ २२ ३५	९ ३ ३२ ५३	७ १३ ९ ४८	० ११ १५ ५३	−२० ३९	१० २०	−० ३७	१८
१९	९ ४ ५६ ५३	० १६ ३४ ५४	६ २७ ४८ १२	८ २६ ३५ १०	९ २८ ३६ २१	९ ४ ४८ १९	७ १३ १५ ६	० ११ १२ ४२	−२० २६	१५ १९	० २६	१९
२०	९ ५ ५७ ५६	० २८ २१ ४९	६ २८ २४ १५	८ २८ ११ ३	९ २८ ५० ९	९ ६ ३ ४३	७ १३ २० २०	० ११ ९ ३१	−२० १४	१९ ४१	१ २७	२०
२१	९ ६ ५८ ०	१ १० १० ४१	६ २९ ० १७	८ २९ ४७ ३०	९ २९ ४ ०	९ ७ १९ ९	७ १३ २५ ३१	० ११ ६ २१	−२० १	२३ १८	२ २५	२१
२२	९ ८ ० १	१ २२ ५ १९	६ २९ ३६ १५	९ १ २४ ३१	९ २९ १७ ५३	९ ८ ३४ ३३	७ १३ ३० ३८	० ११ ३ १०	−१९ ४७	२५ ५६	३ १७	२२
२३	९ ९ १ २	२ ४ १० ८	७ ० १२ ११	९ ३ २ ५	९ २९ ३१ ४९	९ ९ ४९ ५६	७ १३ ३५ ४०	० १० ५९ ५९	−१९ ३४	२७ २५	४ ०	२३
२४	९ १० २ ३	२ १६ २८ २७	७ ० ४८ ५	९ ४ ४० १६	९ २९ ४५ ४६	९ ११ ५ २०	७ १३ ४० ३८	० १० ५६ ४८	−१९ २०	२७ ३५	४ ३३	२४
२५	९ ११ ३ ३	२ २९ ० ५७	७ १ २३ ५५	९ ६ १९ ४	९ २९ ५९ ४६	९ १२ २० ४३	७ १३ ४५ ३२	० १० ५३ ३७	−१९ ५	२६ २१	४ ५३	२५
२६	९ १२ ४ १	३ ११ ४८ ३०	७ १ ५९ ४४	९ ७ ५८ २७	१० ० १३ ४७	९ १३ ३६ ४	७ १३ ५० २२	० १० ५० २७	−१८ ५०	२३ ४४	५ ०	२६
२७	९ १३ ४ ५९	३ २४ ५० ५४	७ २ ३५ २९	९ ९ ३८ ३०	१० ० २७ ५१	९ १४ ५१ २७	७ १३ ५५ ८	० १० ४७ १६	−१८ ३५	१९ ५२	४ ५१	२७
२८	९ १४ ५ ५७	४ ८ ५ ३६	७ ३ ११ १३	९ ११ १९ १३	१० ० ४१ ५६	९ १६ ६ ४९	७ १३ ५९ ४९	० १० ४४ ५	−१८ २०	१४ ५९	४ २६	२८
२९	९ १५ ६ ५४	४ २१ ३१ १८	७ ३ ४६ ५३	९ १३ ० ३४	१० ० ५६ ३	९ १७ २२ ९	७ १४ ४ २५	० १० ४० ५४	−१८ ४	९ १८	३ ४६	२९
३०	९ १६ ७ ४९	५ ५ ६ ४८	७ ४ २२ ३१	९ १४ ४२ ३६	१० १ १० १२	९ १८ ३७ ३०	७ १४ ८ ५७	० १० ३७ ४३	−१७ ४८	३ ७	२ ५३	३०

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि.,भा. स्टैं. टा.),सन् १९८९ ई०

(१ फरवरी को अयनांश = २३°।३९'।३७")

तारीख सन् १९८९ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चंद्र रा. अं. क. वि	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चन्द्र क्रां. अं. क.	चन्द्रशर अं. क.	तारीख सन् १९८९ ई.
जनवरी ३१	९ १७ ८ ४६	५ १८ ४९ ४८	७ ४ ५८ ६	९ १६ २५ २०	१० १ २४ २३	९ १९ ५२ ५०	७ १४ १३ २५	० १० ३४ ३३	-१७ ३१	- ३ १६	१ ४९	३१ जनवरी
फरवरी १	९ १८ ९ ४१	६ २ ४० ९	७ ५ ३३ ३९	९ १८ ८ ४४	१० १ ३८ ३५	९ २१ ८ ११	७ १४ १७ ४८	० १० ३१ २२	-१७ १५	- ९ ३४	० ३८	१ फरवरी
२	९ १९ १० ३३	६ १६ ३८ १३	७ ६ ९ ७	९ १९ ५२ ४८	१० १ ५२ ४८	९ २२ २३ २९	७ १४ २२ ६	० १० २८ ११	-१६ ५७	-१५ २८	-० ३५	२
३	९ २० ११ २७	७ ० ४२ ४५	७ ६ ४४ ३४	९ २१ ३७ ३४	१० २ ७ ३	९ २३ ३८ ४८	७ १४ २६ २०	० १० २५ ०	-१६ ४०	-२० ३६	-१ ४७	३
४	९ २१ १२ २०	७ १४ ५३ ४३	७ ७ १९ ५८	९ २३ २३ १	१० २ २१ २०	९ २४ ५४ ७	७ १४ ३० २९	० १० २१ ५०	-१६ २२	-२४ ३६	-२ ५४	४
५	९ २२ १३ १०	७ २९ १० ८	७ ७ ५५ १७	९ २५ ९ ४	१० २ ३५ ३६	९ २६ ९ २४	७ १४ ३४ ३२	० १० १८ ३९	-१६ ४	-२७ ४	-३ ४९	५
६	९ २३ १४ १	८ १३ २७ ५६	७ ८ ३० ३४	९ २६ ५५ ४६	१० २ ४९ ५५	९ २७ २४ ४१	७ १४ ३८ ३१	० १० १५ २८	-१५ ४६	-२७ ४५	-४ ३१	६
७	९ २४ १४ ५१	८ २७ ४३ २७	७ ९ ५ ४८	९ २८ ४३ ६	१० ३ ४ १५	९ २८ ३९ ५८	७ १४ ४२ २६	० १० १२ १७	-१५ २८	-२६ ३५	-४ ५५	७
८	९ २५ १५ ३७	९ ११ ५२ २	७ ९ ४० ५८	१० ० ३० ५४	१० ३ १८ ३५	९ २९ ५५ १२	७ १४ ४६ १४	० १० ९ ६	-१५ ९	-२३ ४५	-५ १	८
९	९ २६ १६ २५	९ २५ ४७ ११	७ १० १६ ५	१० २ १९ १५	१० ३ ३२ ५६	१० १ १० २७	७ १४ ४९ ५८	० १० ५ ५६	-१४ ५०	-१९ ३३	-४ ४९	९
१०	९ २७ १७ ११	१० ९ २४ ५३	७ १० ५१ ८	१० ४ ७ ५९	१० ३ ४७ १८	१० २ २५ ४३	७ १४ ५३ ३७	० १० २ ४५	-१४ ३१	-१४ २५	-४ २१	१०
११	९ २८ १७ ५३	१० २२ ४२ ३४	७ ११ २६ ८	१० ५ ५६ ०	१० ४ १ ४१	१० ३ ४० ५४	७ १४ ५७ ११	० ९ ५९ ३४	-१४ ११	- ८ ४३	-३ ३८	११
१२	९ २९ १८ ३६	११ ५ ३७ ५९	७ १२ १ ४	१० ७ ४६ १४	१० ४ १६ ४	१० ४ ५६ ७	७ १५ ० ३९	० ९ ५६ २३	-१३ ५१	- २ ४८	-२ ४६	१२
१३	१० ० १९ १८	११ १८ १२ ३१	७ १२ ३५ ५६	१० ९ ३५ ३२	१० ४ ३० २८	१० ६ ११ १९	७ १५ ४ ३	० ९ ५३ १३	-१३ ३१	३ ४	-१ ४६	१३
१४	१० १ १९ ५६	० ० २९ १४	७ १३ १० ४४	१० ११ २४ ३९	१० ४ ४४ ५२	१० ७ २६ २८	७ १५ ७ २१	० ९ ५० २	-१३ ११	८ ४२	-० ४३	१४
१५	१० २ २० ३४	० १२ ३१ ७	७ १३ ४५ २९	१० १३ १३ ३०	१० ४ ५९ १६	१० ८ ४१ ३८	७ १५ १० ३३	० ९ ४६ ५१	-१२ ५१	१३ ५५	० २१	१५
१६	१० ३ २१ ९	० २४ २३ २९	७ १४ २० १०	१० १५ १ ४५	१० ५ १३ ४१	१० ९ ५६ ४५	७ १५ १३ ४०	० ९ ४३ ४०	-१२ ३०	१८ ३३	१ २३	१६
१७	१० ४ २१ ४३	१ ६ १२ १०	७ १४ ५४ ४६	१० १६ ४९ ८	१० ५ २८ ६	१० ११ ११ ५१	७ १५ १६ ४२	० ९ ४० २९	-१२ ९	२२ २६	२ २२	१७
१८	१० ५ २२ १६	१ १८ १ ४३	७ १५ २९ १८	१० १८ ३५ २४	१० ५ ४२ ३१	१० १२ २६ ५८	७ १५ १९ ३८	० ९ ३७ १९	-११ ४८	२५ २४	३ १४	१८
१९	१० ६ २२ ४७	१ २९ ५७ ५६	७ १६ ३ ४७	१० २० २० ९	१० ५ ५६ ५६	१० १३ ४२ ३	७ १५ २२ २९	० ९ ३४ ८	-११ २७	२७ १६	३ ५९	१९
२०	१० ७ २३ १५	२ १२ ६ ८	७ १६ ३८ १०	१० २२ २ ५०	१० ६ ११ २०	१० १४ ५७ ६	७ १५ २५ १४	० ९ ३० ५७	-११ ६	२७ ५२	४ ३३	२०
२१	१० ८ २३ ४३	२ २४ २९ २०	७ १७ १२ ३०	१० २३ ४३ ११	१० ६ २५ ४५	१० १६ १२ ८	७ १५ २७ ५३	० ९ २७ ४६	-१० ४४	२७ ६	४ ५६	२१
२२	१० ९ २४ ८	३ ७ १० ५०	७ १७ ४६ ४५	१० २५ २० ३५	१० ६ ४० १०	१० १७ २७ १०	७ १५ ३० २७	० ९ २४ ३६	-१० २३	२४ ५५	५ ५	२२
२३	१० १० २४ ३२	३ २० १२ २४	७ १८ २० ५५	१० २६ ५४ ३१	१० ६ ५४ ३४	१० १८ ४२ १०	७ १५ ३२ ५५	० ९ २१ २५	-१० १	२१ २४	४ ५८	२३
२४	१० ११ २४ ५५	४ ३ ३२ ३८	७ १८ ५५ १	१० २८ २४ २५	१० ७ ८ ५८	१० १९ ५७ ९	७ १५ ३५ १८	० ९ १८ १४	- ९ ३९	१६ ४४	४ ३५	२४
२५	१० १२ २५ १५	४ १७ १० ४	७ १९ २९ २	१० २९ ४९ ३८	१० ७ २३ २२	१० २१ १२ ७	७ १५ ३७ ३४	० ९ १५ ३	- ९ १७	११ ८	३ ५६	२५
२६	१० १३ २५ ३५	५ १ २ ५	७ २० २ ५८	११ १ ९ ३५	१० ७ ३७ ४५	१० २२ २७ ५	७ १५ ३९ ४५	० ९ ११ ५२	- ८ ५४	४ ५३	३ २	२६
२७	१० १४ २५ ५२	५ १५ ३ ४३	७ २० ३६ ४९	११ २ २३ ३५	१० ७ ५२ ७	१० २३ ४२ ०	७ १५ ४१ ५०	० ९ ८ ४२	- ८ ३२	- १ ४०	१ ५७	२७
२८	१० १५ २६ ७	५ २९ ११ ३७	७ २१ १० ३६	११ ३ ३१ ४	१० ८ ६ २९	१० २४ ५६ ५५	७ १५ ४३ ५०	० ९ ५ ३१	- ८ ९	- ८ १३	० ४४	२८
मार्च १	१० १६ २६ २३	६ १३ २२ ०	७ २१ ४४ १७	११ ४ ३१ २६	१० ८ २० ५०	१० २६ ११ ४९	७ १५ ४५ ४३	० ९ २ २०	- ७ ४७	-१४ २३	-० ३२	१ मार्च
२	१० १७ २६ ३५	६ २७ ३४ ३	७ २२ १७ ५२	११ ५ २४ ८	१० ८ ३५ ११	१० २७ २६ ४०	७ १५ ४७ ३१	० ८ ५९ ९	- ७ २४	-१९ ४७	-१ ४७	२
३	१० १८ २६ ४६	७ ११ ४३ २७	७ २२ ५१ २३	११ ६ ८ ४०	१० ८ ४९ ३०	१० २८ ४१ ३२	७ १५ ४९ १२	० ८ ५५ ५८	- ७ १	-२४ ४	-२ ५४	३
४	१० १९ २६ ५७	७ २५ ५० २५	७ २३ २४ ४७	११ ६ ४४ ३८	१० ९ ३ ४९	१० २९ ५६ २३	७ १५ ५० ४८	० ८ ५२ ४८	- ६ ३८	-२६ ५२	-३ ५१	४
५	१० २० २७ ५	८ ९ ५२ ३४	७ २३ ५८ ६	११ ७ ११ ४२	१० ९ १८ ७	११ १ ११ ११	७ १५ ५२ १८	० ८ ४९ ३७	- ६ १५	-२७ ५७	-४ ३४	५
६	१० २१ २७ ११	८ २३ ४९ ७	७ २४ ३१ १९	११ ७ २९ ३९	१० ९ ३२ २३	११ २ २५ ५९	७ १५ ५३ ४१	० ८ ४६ २६	- ५ ५२	-२७ १५	-५ ०	६

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.), सन् १९८६ ई०

(१ मार्च को अयनांश = २३°।३९'।४१", १ अप्रैल को अयनांश = २३°।३९'।४५")

तारीख	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	द्युज्ञशर	तारीख
सन् १९८६ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अ. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८६ ई.
मार्च ७	१० २२ २७ १६	९ ७ ३८ ५१	७ २५ ४ २७	११ ७ ३८ २३	१० ९ ४६ ३९	११ ३ ४० ४६	७ १५ ५४ ५९	० ८ ४३ १५	-५ २८	-२४ ५२	-५ ८	७ मार्च
८	१० २३ २७ १८	९ २१ १८ ३२	७ २५ ३७ २८	११ ७ ३७ ५६	१० १० ० ५३	११ ४ ५५ ३०	७ १५ ५६ ११	० ८ ४० ५	-५ ५	-२१ ६	-४ ५९	८
९	१० २४ २७ २०	१० ४ ४६ ५६	७ २६ १० २३	११ ७ २८ ३०	१० १० १५ ६	११ ६ १० १५	७ १५ ५७ १६	० ८ ३६ ५४	-४ ४२	-१६ १६	-४ ३३	९
१०	१० २५ २७ २०	१० १८ ० ४९	७ २६ ४३ १२	११ ७ १० २८	१० १० २९ १७	११ ७ २४ ५७	७ १५ ५८ १६	० ८ ३३ ४३	-४ १८	-१० ४६	-३ ५३	१०
११	१० २६ २७ १७	११ ० ५९ ८	७ २७ १५ ५५	११ ६ ४४ १५	१० १० ४३ २७	११ ८ ३९ ३७	७ १५ ५९ १०	० ८ ३० ३२	-३ ५५	- ४ ५४	-३ १	११
१२	१० २७ २७ १३	११ १३ ४१ ४२	७ २७ ४८ ३०	११ ६ १० ३८	१० १० ५७ ३५	११ ९ ५४ १७	७ १५ ५९ ५७	० ८ २७ २१	-३ ३१	१ ४	-२ ३	१२
१३	१० २८ २७ ७	११ २६ ७ ५३	७ २८ २० ०	११ ५ ३० २६	१० ११ ११ ४२	११ ११ ८ ५६	७ १६ ० ३८	० ८ २४ ११	-३ ७	६ ५२	-० ५७	१३
१४	१० २९ २६ ५७	० ८ १९ ४८	७ २८ ५३ २१	११ ४ ४४ ३४	१० ११ २५ ४७	११ १२ २३ ३०	७ १६ १ १४	० ८ २० ०	-२ ४४	१२ १९	० ९	१४
१५	११ ० २६ ४७	० २० २० ३८	७ २९ २५ ३६	११ ३ ५४ १६	१० ११ ३९ ५०	११ १३ ३८ ५	७ १६ १ ४३	० ८ १७ ४९	-२ २०	१७ १४	१ १४	१५
१६	११ १ २६ ३५	१ २ १३ ०	७ २९ ५७ ४५	११ ३ ० ३६	१० ११ ५३ ५१	११ १४ ५२ ३९	७ १६ २ ६	० ८ १४ ३८	-१ ५६	२१ २५	२ १५	१६
१७	११ २ २६ १८	१ १४ १ ४४	८ ० २९ ४४	११ २ ४ ५५	१० १२ ७ ५०	११ १६ ७ ९	७ १६ २ २३	० ८ ११ २७	-१ ३३	२४ ४३	३ १०	१७
१८	११ ३ २६ १	१ २५ ५२ ६	८ १ १ ३८	११ १ ८ २४	१० १२ २१ ४८	११ १७ २१ ३९	७ १६ २ ३५	० ८ ८ १७	-१ ९	२६ ५८	३ ५७	१८
१९	११ ४ २५ ४२	२ ७ ४८ ११	८ १ ३३ २३	११ ० १२ २०	१० १२ ३५ ४३	११ १८ ३६ ७	७ १६ २ ३९	० ८ ५ ६	-० ४५	२८ ०	४ ३४	१९
२०	११ ५ २५ २०	२ १९ ५५ ३०	८ २ ५ १	१० २९ १७ ४६	१० १२ ४९ ३५	११ १९ ५० ३३	७ १६ २ ३८	० ८ १ ५५	-० २२	२७ ४३	५ ०	२०
२१	११ ६ २४ ५६	३ २ १९ १४	८ २ ३६ ३०	१० २८ २५ ५२	१० १३ ३ २६	११ २१ ४ ५६	७ १६ २ ३१	० ७ ५८ ४४	० २	२६ ३	५ १२	२१
२२	११ ७ २४ ३१	३ १५ २ २१	८ ३ ७ ५१	१० २७ ३७ २४	१० १३ १७ १४	११ २२ १९ २०	७ १६ २ १८	० ७ ५५ ३४	० २६	२३ ३	५ १०	२२
२३	११ ८ २४ २	३ २८ ८ १	८ ३ ३९ ४	१० २६ ५३ १२	१० १३ ३० ०	११ २३ ३३ ४०	७ १६ १ ५९	० ७ ५२ २३	० ४९	१८ ५०	४ ५१	२३
२४	११ ९ २३ ३१	४ ११ ३७ ५१	८ ४ १० ८	१० २६ १३ ५१	१० १३ ४४ ४३	११ २४ ४७ ५८	७ १६ १ ३४	० ७ ४९ १२	१ १३	१३ ३२	४ १६	२४
२५	११ १० २२ ५९	४ २५ २९ ४६	८ ४ ४१ ३	१० २५ ३९ ४९	१० १३ ५८ २३	११ २६ २ १५	७ १६ १ ३	० ७ ४६ १	१ ३७	७ २६	३ २६	२५
२६	११ ११ २२ २५	५ ९ ४१ १८	८ ५ ११ ५०	१० २५ ११ २६	१० १४ १२ १	११ २७ १६ ३१	७ १६ ० २५	० ७ ४२ ५०	२ ०	० ४९	२ २१	२६
२७	११ १२ २१ ४८	५ २४ ८ १७	८ ५ ४२ २७	१० २४ ४८ ५१	१० १४ २५ ३६	११ २८ ३० ४४	७ १५ ५९ ४२	० ७ ३९ ४०	२ २४	- ५ ५८	१ ७	२७
२८	११ १३ २१ ९	६ ८ ४३ ४०	८ ६ १२ ५४	१० २४ ३२ १०	१० १४ ३९ ८	११ २९ ४४ ५६	७ १५ ५८ ५३	० ७ ३६ २९	२ ४७	-१२ ३१	० १३	२८
२९	११ १४ २० ३०	६ २३ २१ ४८	८ ६ ४३ १२	१० २४ २१ २४	१० १४ ५२ ३८	० ० ५९ ७	७ १५ ५७ ५८	० ७ ३३ १८	३ ११	-१८ २४	-१ ३२	२९
३०	११ १५ १९ ४७	७ ७ ५७ २९	८ ७ १३ २०	१० २४ १६ ३०	१० १५ ६ ४	० २ १३ १४	७ १५ ५६ ५८	० ७ ३० ७	३ ३४	-२३ १२	-२ ४६	३०
३१	११ १६ १९ ३	७ २२ २४ ४४	८ ७ ४३ १८	१० २४ १७ १६	१० १५ १९ २८	० ३ २७ २२	७ १५ ५५ ५१	० ७ २६ ५६	३ ५७	-२६ २९	-३ ४८	३१
अप्रैल १	११ १७ १८ १८	८ ६ ४० ४०	८ ८ १३ ६	१० २४ २३ ३७	१० १५ ३२ ४८	० ४ ४१ २७	७ १५ ५४ ३९	० ७ २३ ४६	४ २१	-२८ १	-४ ३५	१ अप्रैल
२	११ १८ १७ ३०	८ २० ४३ ३७	८ ८ ४२ ४२	१० २४ ३५ १७	१० १५ ४६ ६	० ५ ५५ २९	७ १५ ५३ २०	० ७ २० ३५	४ ४४	-२७ ४२	-५ ४	२
३	११ १९ १६ ४०	९ ४ ३१ २०	८ ९ १२ ८	१० २४ ५२ ४	१० १५ ५९ २०	० ७ ९ ३१	७ १५ ५१ ५६	० ७ १७ २४	५ ७	-२५ ४०	-५ १६	३
४	११ २० १५ ५०	९ १८ ४ ५	८ ९ ४१ २३	१० २५ १३ ४५	१० १६ १२ ३०	० ८ २३ ३१	७ १५ ५० २७	० ७ १४ १३	५ ३०	-२२ १३	-५ ९	४
५	११ २१ १४ ५६	१० १ २२ ३४	८ १० १० २६	१० २५ ४० ७	१० १६ २५ ३७	० ९ ३७ २८	७ १५ ४८ ५१	० ७ ११ ३	५ ५३	-१७ ४०	-४ ४६	५
६	११ २२ १४ १	१० १४ २६ ७	८ १० ३९ १८	१० २६ १० ५३	१० १६ ३८ ४१	० १० ५१ २४	७ १५ ४७ ११	० ७ ७ ५२	६ १६	-१२ २२	-४ ९	६
७	११ २३ १३ ५	१० २७ १५ ५२	८ ११ ७ ५८	१० २६ ४५ ५२	१० १६ ५१ ४१	० १२ ५ १८	७ १५ ४५ २४	० ७ ४ ४१	६ ३८	- ६ ३८	-३ १९	७
८	११ २४ १२ ६	११ ९ ५३ ०	८ ११ ३६ २४	१० २७ २४ ५०	१० १७ ४ ३७	० १३ १९ ९	७ १५ ४३ ३२	० ७ १ ३०	७ १	० ४४	-२ २१	८
९	११ २५ ११ ४	११ २२ १७ २१	८ १२ ४ ४०	१० २८ ७ ३५	१० १७ १७ ३०	० १४ ३३ ०	७ १५ ४१ ३५	० ६ ५८ १९	७ २३	५ ७	-१ १६	९
१०	११ २६ १० २	० ४ ३० ३२	८ १२ ३२ ४१	१० २८ ५३ ५६	१० १७ ३० १९	० १५ ४६ ४९	७ १५ ३९ ३२	० ६ ५५ ९	७ ४६	१० ४१	-० ९	१०

निरयण यूरे.-नेप. एवं वेंकटेश (घं.मि. ५।३०, भा.स्टं.टा.)

ग्रह → ता. १९८५		यूरेनस रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	वेंकटेश रा. अं. क.
मार्च	३१	७।२४। ८	८। ९।५८	९।१०।२०
अप्रै.	१०	७।२४।११	८। ९।५७	९।१०। १
	२०	७।२३।५९	८। ९।५४	९। ९।४८
	३०	७।२३।४४	८। ९।४८	९। ९।३१
मई	१०	७।२३।२५	८। ९।३९	९। ९।१५
	२०	७।२३। ३	८। ९।२७	९। ९। ०
	३१	७।२२।३७	८। ९।१२	९। ८।४४
जून	१०	७।२२।१२	८। ८।५७	९। ८।३५
	२०	७।२१।४८	८। ८।४१	९। ८।२५
	३०	७।२१।२५	८। ८।२५	९। ८।१९
जुला.	१०	७।२१। ४	८। ८। ९	९। ८।१७
	२०	७।२०।४७	८। ७।५५	९। ८।१७
	३१	७।२०।३२	८। ७।४०	९। ८।२२
अग.	१०	७।२०।२३	८। ७।२९	९। ८।३१
	२०	७।२०।१९	८। ७।२०	९। ८।४१
	३१	७।२०।२०	८। ७।१४	९। ८।५७
सित.	१०	७।२०।२७	८। ७।१२	९। ८।१५
	२०	७।२०।३९	८। ७।१२	९। ९।३४
	३०	७।२०।५५	८। ७।१७	९। ९।५६
अक्तू.	१०	७।२१।१७	८। ७।२७	९।१०।१९
	२०	७।२१।४२	८। ७।३५	९।१०।४२
	३१	७।२२।१४	८। ७।५०	९।११। ९
नव.	१०	७।२२।४६	८। ८। ७	९।११।३३
	२०	७।२३।२०	८। ८।२५	९।११।५७
	३०	७।२३।५५	८। ८।४५	९।१२।१९
दिसं.	१०	७।२४।३२	८। ९। ७	९।१२।३९
	२०	७।२५। ९	८। ९।२९	९।१२।५७
	३१	७।२५।४७	८। ९।५३	९।१३।१३
जन.	१०	७।२६।२१	८।१०।१६	९।१३।२६
(१९८६)	२०	७।२६।५३	८।१०।३७	९।१३।३५
	३१	७।२७।२४	८।११। ०	९।१३।४०
फर.	१०	७।२७।४९	८।११।१८	९।१३।४२
	२०	७।२८।१०	८।११।३४	९।१३।३९
	२८	७।२८।२२	८।११।४४	९।१३।३५
मार्च	१०	७।२८।३४	८।११।५५	९।१३।२७
	२०	७।२८।४१	८।१२। ३	९।१३।१६
	३१	७।२८।४२	८।१२। ८	९।१३। १
अप्रै.	१०	७।२८।३८	८।१२। ९	९।१२।४६

ग्रहों की समकल युतियां

युत ग्रह	युति की तारीखें
सू. मं.	१८- ७-८५
सू. बु.	७- ६-८५
सू. बु.	११- ८-८५
सू. बु.	२२- ९-८५
सू. बु.	२८-११-८५
सू. बु.	१- २-८६
सू. गु.	१८- २-८६
सू. शु.	२१- १-८६
सू. श.	२३-११-८५
सू. रा.	९- ५-८५
सू. के.	१-११-८५
सू. यूरे.	१०-१२-८५
सू. नेप.	२५-१२-८५
सू. प्लू.	२८-१०-८५
मं. व.	१५- ६-८५
मं. बु.	१६- ८-८५
मं. बु.	५- ९-८५
मं. शु.	५-१०-८५
मं. श.	१७- २-८६
मं. रा.	१२- ४-८५
मं. के.	२५-१२-८५
मं. यूरे.	६- ३-८६
मं. नेप.	३- ४-८६
मं. प्लू.	२७-१२-८५
बु. गु.	९- २-८६
बु. शु.	१०- ४-८५
बु. शु.	१८- ४-८५
बु. शु.	४-१२-८५
बु. शु.	५- २-८६
बु. शु.	१०- ३-८६
बु. श.	३०-१२-८५
बु. श.	२-१२-८५
बु. रा.	२४- ५-८५
बु. के.	१७-१२-८५
गु. शु.	११- २-८६
शु. श.	५-१२-८५
शु. रा.	२३- ६-८५
शु. के.	१६-११-८५

ग्रहों के उदयास्त

ग्रह का नाम	उदयास्त दिशा	उदयास्त तारीखें
मंगल	अस्त	२१- ५-८५
,,	उदित	९- ९-८५
बुध	प. अ.	२६- ३-८५
,,	पू. उ.	११- ४-८५
,,	पू. अ.	२७- ५-८५
,,	प. उ.	१८- ६-८५
,,	प. अ.	३- ८-८५
,,	पू. उ.	१९- ८-८५
,,	पू. अ.	८- ९-८५
,,	प. उ.	११-१०-८५
,,	प. अ.	२२-११-८५
,,	पू. उ.	४-१२-८५
,,	पू. अ.	१०- १-८६
,,	प. उ.	१७- २-८६
,,	प. अ.	९- ३-८६
,,	पू. उ.	२४- ३-८६
गुरु	अस्त	८- २-८६
,,	उदित	११- ३-८६
शुक्र	प. अ.	२- ४-८५
,,	पू. उ.	६- ४-८५
,,	पू. अ.	२६-१२-८५
,,	प. उ.	१२- २-८६
शनि	अस्त	६-११-८५
,,	उदित	९-१२-८५

उपर्यंकित कालम में—

पू.=पूर्व, प.=पश्चिम, उ.=उदय, अ.=अस्त समझें।

नोट—मंगल-गुरु एवं शनि का सूर्य केन्द्रिक उदय पूर्व में तथा अस्त पश्चिम में ही होता है।

ग्रहों के उदयास्त—ग्रहों के उदयास्त दो प्रकार के हैं। (१) दैनिक (क्षैतिज) उदयास्त, (२) सूर्य केन्द्रिक उदयास्त। दैनिक उदयास्त भू-भ्रमण के कारण होते हैं। पृथ्वी के अक्ष भ्रमण के कारण प्रत्येक ग्रह सूर्य-चन्द्र के समान प्रतिदिन उदित होकर अस्त होता है। सूर्य-चन्द्र के दैनिक उदयास्तकाल इस पंचांग में दिये रहते हैं। अन्य ग्रहों के दैनिक उदयास्त फलित एवं धार्मिक कृत्यों के निरुपयोगी होने से नहीं दिये जाते। सूर्य के समीप हो जाने से ग्रह कुछ दिनों के लिए अदृश्य (अस्त) हो जाता है एवं सूर्य से दूर हो जाने पर दृश्य (उदित) हो जाता है।

ग्रहों के वक्र-मार्ग

ग्रह नाम	वक्र-मार्ग	वक्र-मार्ग की तारीखें
(मंगल सारा वर्ष मार्गी रहेगा)		
बुध	वक्री	२४- ३-८५
,,	मार्गी	१७- ४-८५
,,	वक्री	२८- ७-८५
,,	मार्गी	२१- ८-८५
,,	वक्री	१८-११-८५
,,	मार्गी	८-१२-८५
,,	वक्री	७- ३-८६
,,	मार्गी	३०- ३-८६
गुरु	वक्री	४- ६-८५
,,	मार्गी	३-१०-८५
शुक्र	मार्गी	२४- ४-८५
शनि	मार्गी	२५- ७-८५
,,	वक्री	१९- ३-८६
यूरेनस	वक्री	२२- ३-८५
,,	मार्गी	२९- ८-८५
,,	वक्री	९- ४-८६
नेपच्यून	वक्री	४- ४-८५
,,	मार्गी	११- ९-८५
वेंकटेश	मार्गी	१२- ७-८५
,,	वक्री	११- २-८६

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्तिशर (५ घं. ३० मि., भा. स्टॅं. टा.), (स. २०४२ व.)

ग्रह→ तारीख १९८५ ई.		मंगल क्रान्ति अं. क.	मंगल शर अं. क.	बुध क्रान्ति अं. क.	बुध शर अं. क.	गुरु क्रान्ति अं. क.	गुरु शर अं. क.	शुक्र क्रान्ति अं. क.	शुक्र शर अं. क.	शनि क्रान्ति अं. क.	शनि शर अं. क.
मार्च	२७	१४।२२	०।१३	१०।२१	३।२४	−१८। ७	०।२५	१४।५२	८। ८	−१७।२५	२।१९
अप्रै.	२	१५।१७	०।१७	८।४१	३। ०	−१७।५१	०।२६	१३।१८	७।५४	−१७।२१	२।२०
	८	१७।१६	०।२०	५।३६	१।४२	−१७।३६	०।२७	११। ७	७। ७	−१७।१७	२।२०
	१४	१८।२९	०।२४	२।५६	०। ५	−१७।२२	०।२८	८।४८	५।५७	−१७।१२	२।२१
	२०	१९।३५	०।२८	१।३४	−१।२०	−१७। ९	०।२९	६।४७	४।३५	−१७। ७	२।२२
	२६	२०।३६	०।३१	१।४३	−२।२१	−१६।५७	०।३०	५।१९	३।१२	−१७। १	२।२२
मई	२	२१।२९	०।३४	३।१०	−२।५४	−१६।४७	०।३१	४।३०	१।५५	−१६।५५	२।२२
	८	२२।१५	०।३७	५।३६	−३। २	−१६।३८	०।३३	४।१८	०।४८	−१६।४९	२।२२
	१४	२२।५४	०।४०	८।४८	−२।४८	−१६।३१	०।३४	४।३८	०। ९	−१६।४३	२।२२
	२०	२३।२६	०।४३	१२।३२	−२।१४	−१६।२६	०।३५	५।२४	०।५६	−१६।३६	२।२२
	२६	२३।५०	०।४५	१६।३०	−१।२३	−१६।२३	०।३७	६।३१	−१।३४	−१६।३०	२।२१
जून	१	२४। ७	०।४८	२०।१९	०।२१	−१६।२२	०।३८	७।५२	−२। ३	−१६।२५	२।२१
	७	२४।१६	०।५०	२३।२०	०।४१	−१६।२३	०।४०	९।२५	−२।२५	−१६।१९	२।२०
	१३	२४।१७	०।५२	२४।५६	१।३०	−१६।२६	०।४१	११। ४	−२।४०	−१६।१५	२।१९
	१९	२४।११	०।५४	२४।५५	१।५६	−१६।३१	०।४२	१२।४७	−२।४९	−१६।११	२।१८
	२५	२३।५८	०।५६	२३।२१	१।५४	−१६।३८	०।४४	१४।२८	−२।५२	−१६। ७	२।१७
जुला.	१	२३।३८	०।५८	२१।१२	१।२९	−१६।४७	०।४५	१६। ६	−२।५१	−१६। ५	२।१५
	७	२३।११	१। ०	१८।२३	०।४३	−१६।५८	०।४६	१७।३६	−२।४६	−१६। ३	२।१४
	१३	२२।३८	१। १	१५।२५	०।१९	−१७।१०	०।४८	१८।५७	−२।३६	−१६। २	२।१३
	१९	२१।५९	१। ३	१२।३९	−१।२४	−१७।२३	०।४९	२०। ५	−२।२४	−१६। २	२।११
	२५	२१।१३	१। ४	१०।२८	−२।५५	−१७।३६	०।५०	२०।५७	−२। ९	−१६। ३	२।१०
	३१	२०।२२	१। ५	९।१९	−४। ८	−१७।५०	०।५१	२१।३३	−१।५२	−१६। ५	२। ८
अग.	६	१९।२६	१। ६	९।३५	−४।५१	−१८। ४	०।५२	२१।४९	−१।३४	−१६। ७	२। ७
	१२	१८।२५	१। ७	११।१४	−४।३७	−१८।१८	०।५२	२१।४५	−१।१४	−१६।११	२। ५
	१८	१७।२०	१। ८	१३।२७	−३।२३	−१८।३०	०।५३	२१।२०	०।५४	−१६।१५	२। ४
	२४	१६।११	१। ९	१५। ७	−१।३८	−१८।४२	०।५३	२०।३४	०।३३	−१६।२१	२। २
	३०	१४।५८	१।१०	१५।१९	०। १	−१८।५३	०।५३	१९।२७	०।१३	−१६।२७	२। १
सित.	५	१३।४२	१।११	१३।३६	१।११	−१९। १	०।५३	१८। १	०। ६	−१६।३३	१।५९
	११	१२।२३	१।११	१०।२०	१।४४	−१९। ९	०।५३	१६।१६	०।२४	−१६।४१	१।५८
	१७	११। १	१।१२	६। ०	१।४६	−१९।१४	०।५३	१४।१४	०।४१	−१६।४८	१।५७
	२३	९।३७	१।१२	१।१८	१।२७	−१९।१८	०।५३	११।५७	०।५५	−१६।५७	१।५५
	२९	८।११	१।१२	− ३।२४	०।५५	−१९।२०	०।५३	९।२८	१। ८	−१७। ५	१।५४
अक्टू.	५	६।४४	१।१२	− ७।५२	०।१६	−१९।२०	०।५२	६।४९	१।१८	−१७।१५	१।५३
	११	५।१५	१।१२	−१२। ०	०।२६	−१९।१८	०।५२	४। २	१।२६	−१७।२४	१।५२
	१७	३।४६	१।१२	−१५।४४	−१। ८	−१९।१५	०।५२	१।१०	१।३१	−१७।३३	१।५२
	२३	२।१६	१।१२	−१८।५७	−१।४६	−१९। ९	०।५१	− १।४५	१।३४	−१७।४३	१।५१
	२९	०।४६	१।१२	−२१।३६	−२।१८	−१९। २	०।५१	− ४।४०	१।३४	−१७।५३	१।५०
नवं.	४	०।४४	१।१२	−२३।३५	−२।४०	−१८।५३	०।५१	− ७।३२	१।३१	−१८। २	१।५०
	१०	−२।१३	१।११	−२२।४४	−२।४५	−१८।४३	०।५०	−१०।१८	१।२६	−१८।१२	१।४९
	१६	−३।४२	१।११	−२४।५३	−२।२१	−१८।३१	०।५०	−१२।५६	१।१९	−१८।२१	१।४९
	२२	−५। ९	१।१०	−२३।४१	−१।१२	−१८।१७	०।४९	−१५।२३	१। ९	−१८।३१	१।४८
	२८	−६।३५	१। ९	−२०।५५	०।४३	−१८। १	०।४९	−१७।३६	०।५८	−१८।४०	१।४८

ग्रह→ तारीख १९८५ ई.		मंगल क्रान्ति अं. क.	मंगल शर अं. क.	बुध क्रान्ति अं. क.	बुध शर अं. क.	गुरु क्रान्ति अं. क.	गुरु शर अं. क.	शुक्र क्रान्ति अं. क.	शुक्र शर अं. क.	शनि क्रान्ति अं. क.	शनि शर अं. क.
दिसं.	४	− ८। ०	१। ८	−१८। ०	२।२०	−१७।४४	०।४९	−१९।३२	०।४६	−१८।४८	१।४८
	१०	− ९।२२	१। ७	−१७।१५	२।४५	−१७।२६	०।४९	−२१। ८	०।३३	−१८।५६	१।४८
	१६	−१०।४१	१। ६	−१८।२४	२।२०	−१७। ६	०।४८	−२२।२२	०।१९	−१९। ४	१।४८
	२२	−११।५९	१। ५	−२०।१५	१।३७	−१६।४५	०।४८	−२३।१२	०। ४	−१९।१२	१।४८
	२८	−१३।१३	१। ३	−२२। १	०।४९	−१६।२३	०।४८	−२३।३७	०।१०	−१९।१९	१।४८
जन.	३	−१४।२४	१। १	−२३।२१	०। २	−१५।५९	०।४८	−२३।२५	०।२५	−१९।२५	१।४९
१९८६	९	−१५।३१	०।५९	−२४। २	०।४१	−१५।३४	०।४८	−२३। ७	०।३८	−१९।३१	१।४९
	१५	−१६।३४	०।५७	−२३।४९	−१।१६	−१५। ९	०।४८	−२२।१४	०।५०	−१९।३६	१।४९
	२१	−१७।३४	०।५४	−२३। ७	−१।४४	−१४।४२	०।४८	−२०।५६	−१। १	−१९।४१	१।५०
	२७	−१८।२९	०।५१	−२१।२३	−२। १	−१४।१५	०।४८	−१९।१६	−१।१०	−१९।४५	१।५१
फर.	२	−१९।२०	०।४८	−१८।४५	−२। ५	−१३।४६	०।४९	−१७।१६	−१।१८	−१९।४९	१।५१
	८	−२०। ६	०।४५	−१५।१४	−१।५२	−१३।१७	०।४९	−१४।५८	−१।२३	−१९।५२	१।५२
	१४	−२०।४७	०।४१	−१०।५३	−१।१९	−१२।४८	०।४९	−१२।२६	−१।२६	−१९।५५	१।५३
	२७	−२१।२४	०।३६	− ५।५९	०।२३	−१२।१८	०।५०	− ९।४१	−१।२७	−१९।५७	१।५४
	२६	−२१।५६	०।३२	− १।१२	०।५६	−११।४८	०।५०	− ६।४८	−१।२६	−१९।५८	१।५४
मार्च	४	−२२।२३	०।२६	२।२०	२।२०	−११।१७	०।५०	− ३।४८	१−।२२	−१९।५९	१।५५
	१०	−२२।४५	०।२०	३।२८	३।२५	−१०।४७	०।५१	०।४४	−१।१६	−१९।५९	१।५६
	१६	−२३। ४	०।१४	१।५४	३।३१	−१०।१६	०।५२	२।२१	−१। ८	−१९।५९	१।५७
	२२	−२३।१८	०। ६	− १। ७	२।३३	− ९।४६	०।५२	५।२४	०।५८	−१९।५८	१।५८
	२८	−२३।२८	०। २	− ३।४३	१। २	− ९।१६	०।५३	८।२३	०।४६	−१९।५७	१।५९
अप्रै.	३	−२३।३६	०।११	− ४।५५	०।२४	− ८।४७	०।५४	११।१५	०।३२	−१९।५५	१।५९
	९	−२३।४०	०।२१	− ४।४०	−१।३२	− ८।१८	०।५५	१३।५८	०।१८	−१९।५३	२। ०

यूरेनस नेपच्यून प्लूटो (वेंकटेश)के क्रान्तिशर वि. सं. २०४२) ५ घं. ३० मि. भा.स्टॅं.टा.

तारीख	यूरेनस क्रान्ति अं. क.	यूरेनस शर अं. क.	नेपच्यून क्रान्ति अं. क.	नेपच्यून शर अं. क.	वेंकटेश (प्लूटो) क्रान्ति अं. क.	वेंकटेश (प्लूटो) शर अं. क.
२२ मार्च '८५	−२२।५५	−०।१	−२२।१५	+१।१८	+३।२०	+१७।१२
२२ अप्रै.	२२।५३	०।१	२२।१५	१।१९	३।३८	१७।१७
२२ मई	२२।४८	०।२	२२।१५	१।१९	३।४९	१७। ८
२२ जून	२२।४०	०।२	२२।१६	१।१९	३।४८	१६।५९
२२ जुला.	२२।३४	०।२	२२।१७	१।१८	३।३४	१६।४२
२२ अग.	२२।३१	०।२	२२।१८	१।१८	३। ९	१६।२५
२२ सित	२२।३४	०।२	२२।२०	१।१७	२।३९	१६।१५
२२ अक्तू.	२२।४२	०।३	२२।२१	१।१५	२।११	१६। ६
२२ नवं.	२२।५२	०।३	२२।२१	१।१४	१।५०	१६।११
२२ दिस.	२३। २	०।३	२२।२०	१।१४	१।४०	१६।१७
२२ जन. '८६	२३।११	०।३	२२।१९	१।१४	१।४४	१६।३३
२२ फर.	२३।१६	०।४	२२।१६	१।१४	१।५६	१६।४८
२२ मार्च	२३।१८	०।४	२२।१४	१।१५	२।१७	१६।५७
२२ अप्रै.	−२३।१७	−०।५	−२२।१३	+१।१६	+२।३७	+१७। ६

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त (सं. २०४२ वि.)

(भा. स्टैं. टा.)

ता. १९८५	ति. चैत्र शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८५	ति. वै. कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८५	ति. वै. शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८५	ति. ज्ये. कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८५	ति. ज्ये. शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८५	ति. आ. कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८५	ति. आ. शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८५	ति. प्र. श्रा.	चन्द्रोदय घं. मि.
मार्च २२	१	१६।२३	अप्रैल ६	१	१६।५६	अप्रै. २१	१	२०। ०	मई ५	१	१६।५६	मई २०	१	१६।४६	जून ४	१	२१। २	जून १९	१	२०।३५	जुला. ३	कृ. १	२०।४२
२३	२	२०।१६	७	२	२१। ७	२२	२	२०।५७	६	२	२१। ८	२१	२	२०।४७	५	३	२२। ०	२०	२	२१।२५	४	२	२१।२७
२४	३	२१।१०	८	३	२२।२०	२३	३	२१।५४	७	३	२२।१७	२२	२	२१।४४	६	४	२२।५१	२१	३	२२।१०	५	३	२२। ५
२५	४	२२। ५	९	५	२३।३०	२४	४	२२।५२	८	४	२३।१९	२३	३	२२।३८	७	५	२३।३५	२२	४	२२।५०	६	४	२२।३९
२६	५	२३। २	१०	६	—	२५	५	२३।४७	९	५	—	२४	४	२३।२७	८	६	—	२३	५	२३।२६	७	५	२३। ९
२७	६	२३।५९	११	७	०।३४	२६	६	—	१०	६	०।१३	२५	५	—	९	७	०।१०	२४	६	२३।५९	८	६	२३।३६
२८	६	—	१२	८	१।३२	२७	७	०।४१	११	७	१। ०	२६	६	०।१०	१०	८	०।४१	२५	७	—	९	७	—
२९	७	०।५८	१३	९	२।२२	२८	८	१।२९	१२	८	१।३७	२७	७	०।४९	११	९	१। ८	२६	८	०।३०	१०	८	०। ०
३०	८	१।५३	१४	१०	३। २	२९	९	२।१२	१३	९	२।१०	२८	८	१।२५	१२	१०	१।३४	२७	९	१। ३	११	९	०।२८
३१	९	२।४५	१५	११	३।३८	३०	१०	२।५०	१४	१०	२।३९	२९	१०	१।५७	१३	१०	२। १	२८	१०	१।३७	१२	१०	०।५७
अप्रैल १	१०	३।३३	१६	१२	४। ८	मई १	११	३।२६	१५	११	३। ५	३०	११	२।२९	१४	११	२।२८	२९	१२	२।१४	१३	११	१।२८
२	११	४।१७	१७	१३	४।३५	२	१२	३।५९	१६	१२	३।३२	३१	१२	३। २	१५	१२	२।५७	३०	१३	२।५८	१४	१२	२। ३
३	१३	५।५४	१८	१४	५। १	३	१३	४।३२	१७	१३	३।५७	जून १	१३	३।३८	१६	१३	३।३०	जुला. १	१४	३।४७	१५	१३	२।४२
४	१४	५।३०	१९	१४	५।२८	४	१५	५। ८	१८	१४	४।२५	२	१४	४।१८	१७	१४	४। ७	२	१५	४।४५	१६	१४	३।३०
५	१५	६। ५	२०	३०	५।५४	—	—	—	१९	३०	४।५५	३	१५	५। ५	१८	३०	४।५०	—	—	—	१७	१४	४।२६
—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

ता. १९८५	ति. प्र.श्रा.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८५	ति. द्वि.श्रा.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८५	ति. द्वि.श्रा.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८५	ति. भा.कृ.	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८५	ति. भा.शु.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८५	ति. आश्वि	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९८५	ति. आश्वि.	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९८५	ति. कार्ति.	चन्द्रोदय घं. मि.
जु. १८	शु. १	२०। ८	अग. १	कृ. १	२०। २	अग.१७	शु. १	२०। १	अग. ३१	१	१९।३६	सितं.१५	१	१९। ३	सितं.२९	कृ. १	१८।३२	अक्टू.१५	शु. २	१८।४२	अक्टू.२९	कृ. १	१७।५८
१९	२	२०।५०	२	२	२०।३७	१८	२	२०।३३	सितं. १	२	२०। ३	१६	२	१९।३६	३०	१	१८।५९	१६	३	१९।२५	३०	२	१८।३०
२०	३	२१।२७	३	३	२१। ८	१९	३	२१। ५	२	३	२०।३०	१७	३	२०।११	अक्टू. १	२	१९।२६	१७	४	२०।१४	३१	३	१९। ७
२१	४	२२। १	४	४	२१।३६	२०	४	२१।३७	३	४	२०।५६	१८	४	२०।४९	२	३	१९।५६	१८	५	२१।१०	नवं. १	३	१९।५०
२२	५	२२।३३	५	५	२२। २	२१	६	२२।१२	४	५	२१।२४	१९	५	२१।३१	३	४	२०।३०	१९	६	२२।१०	२	४	२०।३८
२३	६	२३। ४	६	५	२२।२८	२२	७	२२।५१	५	६	२१।५६	२०	६	२२।२१	४	५	२१। ९	२०	७	२३।१४	३	५	२१।३२
२४	७	२३।३७	७	६	२२।५६	२३	८	२३।३५	६	७	२२।३२	२१	८	२३।१७	५	६	२१।५४	२१	८	—	४	६	२२।३०
२५	८	—	८	७	२३।२६	२४	९	—	७	८	२३।१२	२२	९	—	६	७	२२।४५	२२	९	०।१८	५	७	२३।३२
२६	९	०।१३	९	८	२३।५९	२५	१०	०।२२	८	८	—	२३	१०	०।२०	७	८	२३।४२	२३	१०	१।२०	६	८	—
२७	१०	१।५२	१०	९	—	२६	११	१।२४	९	९	०। १	२४	११	१।२३	८	९	—	२४	११	२।२०	७	९	०।२६
२८	११	१।३९	११	१०	०।३७	२७	१२	२।२६	१०	१०	०।५५	२५	१२	२।२६	९	१०	०।४३	२५	१२	३।१६	८	१०	१।४०
२९	१२	२।१२	१२	११	१।२२	२८	१३	३।३०	११	११	१।५७	२६	१३	३।२६	१०	११	१।४७	२६	१३	४।११	९	११	२।४६
३०	१३	३।३३	१३	१२	२।१४	२९	१४	४।३३	१२	१२	३। २	२७	१४	४।२६	११	१२	२।५४	२७	१४	५। ६	१०	१३	३।५३
३१	१५	४।३७	१४	१३	३।१२	३०	१५	५।३५	१३	१४	४। ९	२८	१५	५।२२	१२	१३	४। १	२८	१५	६। १	११	१४	५। ३
—	—	—	१५	१४	४।१६	—	—	—	१४	३०	५।१७	—	—	—	१३	१४	५। ८	—	—	—	१२	३०	६।१४
—	—	—	१६	३०	५।२३	—	—	—	—	—	—	—	—	—	१४	३०	६।१८	—	—	—	—	—	—

ध्यान दें—क्योंकि शुक्ल पक्ष में चन्द्रोदय और कृष्ण पक्ष में चन्द्रास्त-दोनों दिन के समय हुआ करते हैं अतः अनावश्यक समझकर इनका काल यहां नहीं दिया गया है।

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र-चरण-चार एवं वक्र मार्ग (सं. २०४२ वि.)

बुधचार								शुक्रचार						राहुचार	
तारीख सन् १९८५ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८६ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८६ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८५ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८५ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८५ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८६ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९८६ ई.	नक्षत्र चरण राशि
सितं. ३०	हस्त ४	जन. १	मूल १ धनु	मार्च १९	पुभा.३ कुंभ	मई १६	रेव. २	सितं. ४	पुन. ४	दिसं. ४	अनु. २	मार्च १	पू.भा. ३	फर. ११	३
अक्तू. २	चित्रा १	३	२	२३	२	२१	३	६	आश्ले. १	६	३	४	४ मीन	केतुचार	
४	२	६	३	३०	मार्गी	२६	४	८	२	९	४	७	उ.भा. १	अप्रै. २	विशा. २
६	३ तुला	८	४	अप्रै. ७	पू.भा. ३	३०	अश्वि. १मेष	११	३	११	ज्ये. १	९	२	(१९८५)	
९	४	१०	पू.षा. १	गुरुचार		जून ३	२	१४	४	१४	२	१२	३	जून ४	१
११	स्वा. १	१२	२	मार्च २८	श्रव. ३	६	३	१७	मघा. १ सिंह	१७	३	१५	४	अग. ६	स्वा. ४
१३	२	१५	३	(१९८५)		१०	४	१९	२	२०	४	१७	रेव. १	अक्तू. ८	३
१५	३	१७	४	अप्रै. १८	४	१४	भर. १	२२	३	२२	मूल. १ धनु	२०	२	दिसं. १०	२
१७	४	१९	उ.षा. १	जून ४	वक्री	१७	२	२५	४	२५	२	२३	३	फर. ११	१
२०	विशा. १	२१	उषा.२मकर	जुला. २२	श्रव. ३	२०	३	२८	पू.फा. १	२७	३	२५	४	(१९८६)	
२२	२	२३	३	अग. १८	२	२४	४	३०	२	३०	४	२८	अश्वि. १ मेष	यूरेनसचार	
२४	३	२५	४	अक्तू. ३	मार्गी	२७	कृत्ति. १	अक्तू. ३	३	जन. २	पू.षा. १	३१	२	मार्च २२	वक्री
२७	वृश्चि. ४	२७	श्रव. १	नव. १७	श्रव. ३	३०	२ वृष	६	४	(१९८६)		अप्रै. २	३	(१९८५)	
२९	अनु. १	२९	२	दिसं. ८	४	जुला. ३	३	८	उ.फा. १	४	२	५	४	मई १२	ज्ये. २
नवं. १	२	३१	३	२६	धनि. १	६	४	११	२ कन्या	७	३	८	भर. १	अग. ३०	मार्गी
३	३	फर. २	४	जन. १०	२	९	रो. १	१४	३	१०	४	शनिचार		नवं. २०	ज्ये. ३
६	४	४	धनि. १	(१९८६)		१३	२	१७	४	१२	उ.षा. १	अप्रै. १४	विशा. ४	जन. ३०	४
१०	ज्ये. १	६	२	२५	३	१६	३	१९	ह. १	१५	२ मकर	(१९८५)		(१९८६)	
१४	२	७	धनि ३ कुम्भ	फर. ८	४	१९	४	२२	२	१८	३	जून १	३ तुला	नेपच्यूनचार	
१८	वक्री	९	४	२२	शत. १	२२	मृ. १	२५	३	२०	४	जुला. २५	मार्गी	अप्रै. ४	वक्री
२२	ज्ये. १	११	शत. १	मार्च ८	२	२५	२	२७	४	२३	श्र. १	सितं. १७	विशा. ४वृ.	(१९८५)	
२६	अनु. ४	१३	२	२२	३	२८	३ मिथुन	३०	चि. १	२६	२	अक्तू. २२	अनु. १	सितं. ११	मार्गी
२८	३	१५	३	अप्रै. ६	४	३१	४	नवं. २	२	२८	३	नवं. १९	२	जन. २	मूल. ४
दिसं. १	२	१७	४	शुक्रचार		अग. ३	आर्द्रा १	४	३ तुला.	३१	४	दिसं. १८	३	(१९८६)	
४	१	१९	पू.भा. १	मार्च २४	रेव. ३	५	२	७	चित्रा ४	फर. २	धनि. १	जन. २०	४	वेंकटेशचार	
९	मार्गी	२१	२	(१९८५)		८	आर्द्रा ३	१०	स्वा. १	५	२	(१९८६)		अप्रै. २	वक्री
१३	अनु. २	२३	३	३०	२	११	४	१२	२	८	३ कुम्भ	मार्च १९	वक्री	(१९८५)	
१७	३	२५	पू.भा.४मीन	अप्रै. ४	१	१४	न. १	१५	३	१०	४	राहुचार		जुला. १२	मार्गी
२०	४	२८	उ.भा. १	१०	उ.भा. ४	१७	२	१८	४	१३	शत. १	अप्रै. २	भर. ४	अक्तू. २	स्वा. २
२३	ज्ये. १	मार्च ४	२	१८	३	२०	३	२०	वि. १	१६	२	(१९८५)		जन. ३	३
२५	२	७	वक्री	२५	मार्गी	२३	४ कर्क	२३	२	१८	३	जून ४	३	(१९८६)	
२८	३	११	उ.भा. १	मई २	उ.भा. ४	२५	१	२६	३	२१	४	अग. ६	२	फर. ११	वक्री
३०	४	१५	पू.भा. ४	११	रेव. १	२८	२	२८	४ वृश्चिक	२४	पू.भा. १	अक्तू. ८	१		
						३१	३	दिसं. १	अनु. १	२६	२	दिसं. १०	अश्वि. ४		

दैनिक लग्नसारणी से लग्न ज्ञान

वार्षिक संस्कार कोष्ठक

दैनिक लग्नसारणी से लग्न ज्ञान

आगे दी गई दैनिक लग्नसारणी में अंग्रेजी तारीख और प्रविष्टों के अनुसार चण्डीगढ़ (U.T.) में निरयण लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) दिया गया है। किसी अंग्रेजी तारीख या प्रविष्टे को कौन सा लग्न कब समाप्त होता है—यह इस सारणी से तुरन्त जाना जा सकता है। कई बार सारणी में दिए गए प्रविष्टे और अंग्रेजी तारीखों में परस्पर एक दिन का अन्तर पाया जाएगा, इससे गणक को भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए। अधिक सूक्ष्मता चाहने वाले गणक को इन सारणियों का प्रयोग अंग्रेजी तारीख के अनुसार ही करना चाहिए।

ध्यान रहे—लग्न सारणी में दुहरी लाइन से दाईं ओर छपे घं.मि. अगली अंग्रेजी तारीख के हैं। जैसे १३ अप्रैल के आगे धनु से मीन तक के घं.मि. १४ अप्रैल के हैं।

अयनचलन आदि के कारण दैनिक लग्न सारणी में दिए गए लग्न के समाप्ति कालों में प्रतिवर्ष थोड़ी-थोड़ी स्थूलता आती जाती है। इस स्थूलता को दूर करने के लिए यहां दाईं ओर एक कोष्ठक (वार्षिक संस्कार कोष्ठक) दिया गया है। अपने अभीष्ट ईस्वी सन् के अनुसार इस कोष्ठक से लिया गया संस्कार दैनिक सारणी के लग्नसमाप्तिकाल में देने पर लग्न की समाप्ति का काल पर्याप्त सूक्ष्मता से ज्ञात हो जाएगा। इस संस्कार के अनन्तर लग्न के समाप्तिकाल में एक मिनट से कम ही स्थूलता रहेगी। इस 'वार्षिक संस्कार कोष्ठक' में लीप इयर दो बार दिया गया है, एक के पहले ‡ ऐसा और दूसरे के पहले * ऐसा चिह्न लगाया गया है। ‡ इस चिह्न के आगे लिखा संस्कार १ जनवरी से २८ फरवरी तक के लिए तथा * इस चिह्न के आगे लिखा संस्कार २९ फरवरी से ३१ दिसम्बर तक के लिए है। २९ फरवरी के लिए दैनिक लग्न सारणी में २८ फरवरी को प्रयोग में लाइए।

यहां 'वार्षिकसंस्कार-कोष्ठक' द्वारा शुद्ध लग्न-समाप्तिकाल जानने के उदाहरण देते हैं—

(१) १३ अप्रैल सन् १९७५ को चण्डीगढ़ में मिथुन लग्न का प्रारम्भ काल (दूसरे शब्दों में वृष लग्न का समाप्ति काल) बतलाइए?—दैनिक लग्न सारणी में १३ अप्रैल को वृष का समाप्ति काल ९ घं. ३० मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७५ के आगे वृष के नीचे +२ मिनट लिखा है। अतः ९ घं. ३० मि. में २ मि. जोड़ने पर ९ घं ३२ मि. वृष लग्न का सूक्ष्म समाप्ति काल ज्ञात हो गया।

(२) सन् १९७२ की १ जनवरी को चण्डीगढ़ में मकर लग्न कब समाप्त हुआ?—दैनिक लग्न सारणी में १ जनवरी को मकर का समाप्ति काल ९ घं. ५७ मिनट लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७२ दो बार लिखा है। जैसा कि पहले बतलाया गया है कि ‡ इस चिह्न वाला संस्कार १ जनवरी से २८ फरवरी तक के लिए है। ‡ इस चिह्न वाले सन् १९७२ के आगे मकर के नीचे +३ मिनट दिए हैं। इन्हें चिह्नानुसार ९ घं. ५७ मिनट में जोड़ने पर १० घं ० मिनट मकर का सूक्ष्म समाप्ति काल हुआ।

(३) २९ फरवरी सन् १९७२ को चण्डीगढ़ में कुम्भ लग्न कब समाप्त हुआ?—दैनिक लग्न सारणी में २९ फरवरी नहीं है, इसके लिए २८ फरवरी को प्रयोग में लाएंगे। २८ फरवरी के आगे कुम्भ का समाप्ति काल ७ घं. ३४ मिनट लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में * इस चिह्न वाले सन् १९७२ के आगे कुम्भ के नीचे —१ मिनट लिखा है। इसे चिह्नानुसार ७ घं ३४ मि. में से घटाने पर ७ घं. ३३ मिनट कुम्भ का सूक्ष्म समाप्ति-काल हुआ।

वार्षिक संस्कार कोष्ठक

ईस्वी सन् ↓	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मीन मि.
‡ १९५६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९५६	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९५७	०	०	०	०	०	०	०
१९५८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९५९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६०	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६०	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६१	०	०	०	०	०	०	०
१९६२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९६३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६४	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६४	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६५	०	०	०	०	०	०	०
१९६६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९६७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६८	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६८	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६९	०	०	०	०	०	०	०
१९७०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९७१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२

ईस्वी सन् ↓	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मीन मि.
‡ १९७२	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९७२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९७३	०	०	०	०	०	०	०
१९७४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९७५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९७६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९७६	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९७७	०	०	०	०	०	०	०
१९७८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९७९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९८०	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९८०	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९८१	०	०	०	०	०	०	०
१९८२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९८३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९८४	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९८४	−१	−१	०	०	−१	−१	−१
१९८५	०	०	+१	+१	०	०	०
१९८६	+१	+१	+२	+२	+१	+१	+१
१९८७	+२	+२	+३	+३	+२	+२	+२

(यह "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" मेरे "गणकमार्तण्ड" के लग्न प्रकरण में दिए गए एक बड़े कोष्ठक का एक भाग है जिसमें सन् १९०० से सन् २२०० तक का सूक्ष्मतम वार्षिक संस्कार दिया गया है। दुनिया के किसी भी नगर में लग्नों का सूक्ष्म समाप्ति काल तुरन्त जानने के लिए "गणकमार्तण्ड" में एक अद्भुत सारणी दी गई है)।

यह दैनिक लग्नसारणी चण्डीगढ़ (U.T.) के लिए है। समस्त पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, दिल्ली, जम्मु-काश्मीर के किसी भी नगर में लग्नों का लगभग समाप्ति काल जानने के लिए इस सारणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसी पंचांग में आगे एक सारणी दी गई है उसकी सहायता से भारत के प्रसिद्ध ६५ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न का समाप्ति काल पर्याप्त सूक्ष्मता से जाना जा सकता है।

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

वैशाख

मास	अंग्रेजी तारीख	वैशाख प्रविष्टे	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७।३६	९।३०	११।४४	१४। ७	१६।२७	१८।४४	२१। ६	२३।२६	१।३१	३।१२	४।३७	५।५९
	१४	२	७।३२	९।२६	११।४०	१४। ३	१६।२३	१८।४०	२१। २	२३।२२	१।२७	३। ८	४।३३	५।५५
	१५	३	७।२८	९।२२	११।३६	१३।५९	१६।१९	१८।३६	२०।५८	२३।१८	१।२३	३। ४	४।२९	५।५१
	१६	४	७।२४	९।१८	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।३३	२०।५४	२३।१४	१।१९	३। ०	४।२५	५।४७
	१७	५	७।२०	९।१४	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।२९	२०।५०	२३।१०	१।१५	२।५६	४।२१	५।४३
	१८	६	७।१६	९।११	११।२५	१३।४७	१६। ७	१८।२५	२०।४६	२३। ६	१।११	२।५२	४।१७	५।३९
	१९	७	७।१२	९। ७	११।२१	१३।४३	१६। ३	१८।२१	२०।४२	२३। २	१। ७	२।४८	४।१३	५।३५
	२०	८	७। ८	९। ३	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।१७	२०।३८	२२।५८	१। ३	२।४४	४। ९	५।३१
	२१	९	७। ४	८।५९	११।१३	१३।३५	१५।५५	१८।१३	२०।३४	२२।५४	०।५९	२।४०	४। ५	५।२८
	२२	१०	७। ०	८।५५	११। ९	१३।३१	१५।५१	१८। ९	२०।३०	२२।५१	०।५५	२।३६	४। १	५।२४
	२३	११	६।५६	८।५१	११। ५	१३।२७	१५।४७	१८। ५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३२	३।५७	५।२०
	२४	१२	६।५२	८।४७	११। १	१३।२३	१५।४३	१८। १	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२८	३।५३	५।१६
	२५	१३	६।४८	८।४३	१०।५७	१३।१९	१५।३९	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२४	३।४९	५।१२
	२६	१४	६।४४	८।३९	१०।५३	१३।१६	१५।३६	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२०	३।४५	५। ८
	२७	१५	६।४१	८।३५	१०।४९	१३।१२	१५।३२	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१६	३।४२	५। ४
	२८	१६	६।३७	८।३१	१०।४५	१३। ८	१५।२८	१७।४५	२०। ७	२२।२७	०।३२	२।१३	३।३८	५। ०
	२९	१७	६।३३	८।२७	१०।४२	१३। ४	१५।२४	१७।४१	२०। ३	२२।२३	०।२८	२। ९	३।३४	४।५६
	३०	१८	६।२९	८।२३	१०।३८	१३। ०	१५।२०	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२४	२। ५	३।३०	४।५२
मई	१	१९	६।२५	८।२०	१०।३४	१२।५६	१५।१६	१७।३४	१९।५५	२२।१५	०।२०	२। १	३।२६	४।४८
	२	२०	६।२१	८।१६	१०।३०	१२।५२	१५।१२	१७।३०	१९।५१	२२।११	०।१६	१।५७	३।२२	४।४४
	३	२१	६।१७	८।१२	१०।२६	१२।४८	१५। ८	१७।२६	१९।४७	२२। ७	०।१२	१।५३	३।१८	४।४०
	४	२२	६।१३	८। ८	१०।२२	१२।४४	१५। ४	१७।२२	१९।४३	२२। ३	०। ८	१।४९	३।१४	४।३६
	५	२३	६। ९	८। ४	१०।१८	१२।४०	१५। ०	१७।१८	१९।३९	२१।५९	०। ४	१।४५	३।१०	४।३२
	६	२४	६। ५	८। ०	१०।१४	१२।३६	१४।५६	१७।१४	१९।३६	२१।५६	०। ०	१।४१	३। ६	४।२९
	७	२५	६। १	७।५६	१०।१०	१२।३२	१४।५२	१७।१०	१९।३२	२१।५२	२३।५६	१।३७	३। २	४।२५
	८	२६	५।५७	७।५२	१०। ६	१२।२८	१४।४८	१७। ६	१९।२८	२१।४८	२३।५२	१।३३	२।५८	४।२१
	९	२७	५।५३	७।४८	१०। २	१२।२४	१४।४४	१७। २	१९।२४	२१।४४	२३।४८	१।२९	२।५४	४।१७
	१०	२८	५।४९	७।४४	९।५८	१२।२०	१४।४०	१६।५८	१९।२०	२१।४०	२३।४४	१।२५	२।५०	४।१३
	११	२९	५।४६	७।४०	९।५४	१२।१७	१४।३६	१६।५४	१९।१६	२१।३६	२३।४०	१।२१	२।४६	४। ९
	१२	३०	५।४२	७।३६	९।५०	१२।१३	१४।३३	१६।५०	१९।१२	२१।३२	२३।३७	१।१८	२।४३	४। ५
	१३	३१	५।३८	७।३२	९।४६	१२। ९	१४।२९	१६।४६	१९। ८	२१।२८	२३।३३	१।१४	२।३९	४। १
	१४	[illegible]	५।३४											

ज्येष्ठ

मास	अंग्रेजी तारीख	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
मई	१४	१	७।२८	९।४३	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१९। ४	२१।२४	२३।२९	१।१०	२।३५	३।५७	५।३०
	१५	२	७।२४	९।३९	१२। १	१४।२१	१६।३८	१९। ०	२१।२०	२३।२५	१। ६	२।३१	३।५३	५।२६
	१६	३	७।२०	९।३५	११।५७	१४।१७	१६।३५	१८।५६	२१।१६	२३।२१	१। २	२।२७	३।४९	५।२२
	१७	४	७।१७	९।३१	११।५३	१४।१३	१६।३१	१८।५२	२१।१२	२३।१७	०।५८	२।२३	३।४५	५।१८
	१८	५	७।१३	९।२७	११।४९	१४। ९	१६।२७	१८।४८	२१। ८	२३।१३	०।५४	२।१९	३।४१	५।१४
	१९	६	७। ९	९।२३	११।४५	१४। ५	१६।२३	१८।४४	२१। ४	२३। ९	०।५०	२।१५	३।३७	५।१०
	२०	७	७। ५	९।१९	११।४१	१४। १	१६।१९	१८।४०	२१। १	२३। ५	०।४६	२।११	३।३४	५। ६
	२१	८	७। १	९।१५	११।३७	१३।५७	१६।१५	१८।३६	२०।५७	२३। १	०।४२	२। ७	३।३०	५। २
	२२	९	६।५७	९।११	११।३३	१३।५३	१६।११	१८।३३	२०।५३	२२।५७	०।३८	२। ३	३।२६	४।५८
	२३	१०	६।५३	९। ७	११।२९	१३।४९	१६। ७	१८।२९	२०।४९	२२।५३	०।३४	१।५९	३।२२	४।५४
	२४	११	६।४९	९। ३	११।२६	१३।४५	१६। ३	१८।२५	२०।४५	२२।४९	०।३०	१।५५	३।१८	४।५०
	२५	१२	६।४५	८।५९	११।२२	१३।४१	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२२।४५	०।२६	१।५१	३।१४	४।४७
	२६	१३	६।४१	८।५५	११।१८	१३।३८	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।४२	०।२२	१।४८	३।१०	४।४३
	२७	१४	६।३७	८।५१	११।१४	१३।३४	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।३८	०।१९	१।४४	३। ६	४।३९
	२८	१५	६।३३	८।४७	११।१०	१३।३०	१५।४७	१८। ९	२०।२९	२२।३४	०।१५	१।४०	३। २	४।३५
	२९	१६	६।२९	८।४३	११। ६	१३।२६	१५।४३	१८। ५	२०।२५	२२।३०	०।११	१।३६	२।५८	४।३१
	३०	१७	६।२५	८।४०	११। २	१३।२२	१५।४०	१८। १	२०।२१	२२।२६	०। ७	१।३२	२।५४	४।२७
	३१	१८	६।२२	८।३६	१०।५८	१३।१८	१५।३६	१७।५७	२०।१७	२२।२२	०। ३	१।२८	२।५०	४।२३
जून	१	१९	६।१८	८।३२	१०।५४	१३।१४	१५।३२	१७।५३	२०।१३	२२।१८	२३।५९	१।२४	२।४६	४।१९
	२	२०	६।१४	८।२८	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४९	२०। ९	२२।१४	२३।५५	१।२०	२।४२	४।१५
	३	२१	६।१०	८।२४	१०।४६	१३। ६	१५।२४	१७।४५	२०। ५	२२।१०	२३।५१	१।१६	२।३८	४।११
	४	२२	६। ६	८।२०	१०।४२	१३। २	१५।२०	१७।४१	२०। २	२२। ६	२३।४७	१।१२	२।३५	४। ७
	५	२३	६। २	८।१६	१०।३८	१२।५८	१५।१६	१७।३७	१९।५८	२२। २	२३।४३	१। ८	२।३१	४। ३
	६	२४	५।५८	८।१२	१०।३४	१२।५४	१५।१२	१७।३४	१९।५४	२१।५८	२३।३९	१। ४	२।२७	३।५९
	७	२५	५।५४	८। ८	१०।३०	१२।५०	१५। ८	१७।३०	१९।५०	२१।५४	२३।३५	१। ०	२।२३	३।५५
	८	२६	५।५०	८। ४	१०।२६	१२।४६	१५। ४	१७।२६	१९।४६	२१।५०	२३।३१	०।५६	२।१९	३।५१
	९	२७	५।४६	८। ०	१०।२३	१२।४३	१५। ०	१७।२२	१९।४२	२१।४६	२३।२७	०।५२	२।१५	३।४८
	१०	२८	५।४२	७।५६	१०।१९	१२।३९	१४।५६	१७।१८	१९।३८	२१।४३	२३।२३	०।४९	२।११	३।४४
	११	२९	५।३८	७।५२	१०।१५	१२।३५	१४।५२	१७।१४	१९।३४	२१।३९	२३।२०	०।४५	२। ७	३।४०
	१२	३०	५।३४	७।४८	१०।११	१२।३१	१४।४८	१७।१०	१९।३०	२१।३५	२३।१६	०।४१	२। ३	३।३६
	१३	३१	५।३०	७।४५	१०। ७	१२।२७	१४।४५	१७। ६	१९।२६	२१।३१	२३।१२	०।३७	१।५९	३।३२
	१४	आ० १	५।२६											

१९३० सिद्धान्तनिदान दो भाग १४–००
१९३१ सिद्धपरीक्षा पद्धति–प्रथम खण्ड कालेडा बोगला ८–००
१९३२ सिद्धभैषज्यसंग्रह–युगलकिशोर गुप्त ९–००
१९३३ सिद्धयोग संग्रह २–७५
१९३४ सिद्धरसायन—दूसरा १०–००
१९३५ सुलभ देहाती नुस्खे १–५०
१९३६ सुश्रुतसंहिता–मूलशास्त्र परिचायक परिशिष्ट १०–००
१९३७ सुश्रुतसंहिता–कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त कृत हिन्दी अनुवाद तथा पं. लालचन्दजी कृत परिवर्द्धित १८–००
१९३८ सुश्रुत-सूत्रनिदान–घाणेकर १२–००
१९३९ „ „ केवल सूत्र ९–००
१९४० सुश्रुतसंहिता–(शारीरस्थान) डा. जे. डी. शर्मा का विवेचनात्मक तथा पाश्चात्य मत से तुलनात्मक अति विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित सचित्र ५–००
१९४१ सुश्रुतसंहिता–केवल शारीरस्थान डा. घाणेकर १५–००
१९४२ सूचीवेध–राजकुमार २–५०
१९४३ सूचीवेध विज्ञान–आचार्य श्री रमेशचन्द्र इंजेक्शन के ऊपर इससे सरल तथा उपयोगी ग्रन्थ आज तक नहीं छपा। १००० से ऊपर इंजेक्शन परिवर्द्धित तथा संशोधित संस्करण ७–५०
१९४४ सोंठ ०–७५
१९४५ संक्षिप्त औषध परिचय १–२५
१९४६ सौंफ के गुण तथा उपयोग १–२५
१९४७ सौश्रुति–रामनाथ द्विवेदी १०–००
१९४८ स्वास्थ्य के लिये शाक तरकारियां २–००
१९४९ स्वास्थ्य विवेचन—शिवकुमार ५–००
१९५० स्वास्थ्य प्रदीपिका २–००
१९५१ स्वास्थ्य और सद्वृत्त २–००
१९५२ स्वाभाविक भोजन ०–७५
१९५३ स्टैथिस्कोपविज्ञान १–३७
१९५४ संक्षिप्त शल्य विज्ञान १२–००
१९५५ स्टैथस्कोप नाड़ी परीक्षा–जोशी ०–७५
१९५६ स्वप्नदोषविज्ञान–सरल हिन्दी २–००
१९५७ स्वर्णाक्षीरी ०–७५
१९५८ स्वस्थवृत्त समुच्चय–राजेश्वरदत्त हिन्दी टीका ७–००
१९५९ स्वास्थ्य रक्षा—ले. श्री हरिदास वैद्य ६–००
१९६० स्वास्थ्यविज्ञान–अजमेर १–२५
१९६१ स्वास्थ्य संहिता–श्री नानकचन्द हि. २–५०
१९६२ स्त्रीचिकित्सा–हिन्दी टीका सहित ०–७०
१९६३ स्त्रीरोग चिकित्सा—सुरेशप्रसाद ५–००
१९६४ स्त्री रोगों का इलाज
१९६५ स्त्री रोग विज्ञान–डा. रमानाथ ३–५०
१९६६ हमारे भोजन की समस्या–रामअवध १–५०
१९६७ हमारे भोजन की समस्या–अत्रिदेव १–७५
१९६८ हमारी आंखें —अग्रवाल ४–००
१९६९ हमें क्या खाना चाहिए १–२५
१९७० होमियो शिशु चिकित्सा ०–७५
१९७१ हल्दी के गुण तथा उपयोग ००–८
१९७२ हस्त्यायुर्वेद–पाल्काप्य मुनि विरचित ११–००
१९७३ हारीत संहिता–हिन्दी टीका ११–००
१९७४ होम्यो कम्पेरेटिव प्रिंस मैटीरिया मेडिका १०–००
१९७५ होमियो पारिवारिक चिकित्सा १०–००
१९७६ होम्योपैथिक मदर टीचर्स ३–५०
१९७७ होम्योपैथी चिकित्सा सिद्धान्त ५–००
१९७८ होम्यो पाकेट गाईड १–००
१९७९ होम्यो थाइसिस चिकित्सा ०–७०
१९८० होम्यो टाइफाइड चिकित्सा ०–७५
१९८१ होम्यो गृहचिकित्सा २–५०
१९८२ होम्योमैटीरिया मेडीका १५–०० ४–२५
१९८३ होम्यो इंजेक्शन चिकित्सा १–७५
१९८४ होमियो भैषज्यलक्षण संग्रह २५–००
१९८५ होम्योचिकित्साविज्ञान ३–५०
१९८६ होम्यो न्यूमोनिया चिकित्सा ०–७५
१९८७ होम्यो भैषज्यसार २–००
१९८८ हिन्दी मैटीरिया मेडिका होमियो दूसरा भाग १–८०
१९८९ हिक्मतप्रकाश ४–६०
१९९० हितोपदेश वैद्यक ४–००
१९९१ हैजा (विसूचिका) चिकित्सा ०–७५
१९९२ हींग के गुण ३–००
१९९३ हरीतक्यादिनिघंटु ८–००
१९९४ हृदय परीक्षा—डा. रमेशचन्द्र २–००
१९९५ त्रिदोष परिज्ञान ३–५०
१९९६ त्रिफला गुण १–००
१९९७ त्रिदोषविज्ञान–उपेन्द्रनाथ ४–००
१९९८ त्रिशति ३–००
१९९९ त्रिदोष संग्रह –धर्मदत्त ३–५०
२००० ज्ञानभैषज्यमंजरी ०–७५



इनके अतिरिक्त हर प्रकार के संस्कृत हिन्दी ग्रंथ हमारे यहां से मिलते हैं

१८३३	राष्ट्रीयचिकित्सा–सिद्धयोगसंग्रह	१–५०
१८३४	रीठा गुणविज्ञान	१–००
१८३५	रेपर्टरी––भट्टाचार्य	११–००
१८३६	रोगनामावली कोश––	३–५०
१८३७	रोगनिदान चिकित्सा	२–००
१८३८	रोगपरिचय शिवनाथ	१५–००
१८३९	रोगनिवारण	१५–००
१८४०	रोगों की सरल चिकित्सा–विट्ठलदास	५–००
१८४१	रोगीरोगविमर्श	२–००
१८४२	रोगी की सेवा और पथ्य–डा. सुरेश	३–००
१८४३	रोग परीक्षाविधि–श्री प्रियव्रत	६–००
१८४४	रोगी मृत्यु विज्ञान–पं. मथुराप्रसाद	१–५०
१८४५	रोगीपरीक्षा–शिवनाथ	६–००
१८४६	लहसुन के गुण उपयोग	०–६२
१८४७	लीडर्स इन होम्योपैथिक थैराप्युटिक्स	६–५०
१८४८	लोहसर्वस्व हि. टी.	२–००
१८४९	वनौषधि चन्द्रोदय–१० भाग	४०–००
१८५०	वनौषधिनिर्देशिका	१६–००
१८५१	वनौषधिदर्शिका	४–००
१८५२	वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा–घर बैठे डाक्टरी ज्ञान कराने वाली अपूर्व पुस्तक। ४०० रोगों का सफल निदान और सिद्ध चिकित्सा। वैद्यों हकीमों के लिये भी समान उपयोगी। डा. रामनाथ वर्मा की प्रशंसित कृति नया सं.	१२–००
१८५३	वसवराजीयम्–दो भाग भाषा	८–५०
१८५४	वाग्भट विवेचन–प्रियव्रत	२०–००
१८५५	वात गठिया, लकवा	१–००
१८५६	वादिखंड ऋद्धिखंड	३–००
१८५७	विजयीकल्प	०–४०
१८५८	विटेमिन्स	२–२५
१८५९	विषतन्त्रचिकित्सा प्रकाश–हि. टी.	२–२५
१८६०	विषविज्ञान–अगदतन्त्र	२–००
१८६१	वीरसिंहावलोक–मूलसंस्कृत	४–५५
१८६२	वोपदेवशतक	१–००
१८६२ (क)	वृन्दमाधव–सिद्धयोग कण्ठदत्त कृत संस्कृत व्याख्या	१००–००
१८६३	वृन्दवैद्यक–(वृन्द प्रणीत) हिन्दी टीका	९–१०
१८६४	वृषकल्पद्रुम अर्थात् पशुचिकित्सा	४–००
१८६५	वैदिक चिकित्सा––सातवलेकर	१–५०
१८६६	वैद्यक परिभाषा प्रदीप–भा. टी. बंबई	२–१०
१८६७	वैद्यकीयसुभाषित साहित्य	२५–००
१८६८	वैद्यकीय सुभाषितावली–डा. मेहता	२–००
१८६९	वैद्यकशब्दनिधि	१–००
१८७०	वैद्यजीवन–(लोलिबराज) हिन्दी टीका	१–२५
१८७१	वैद्य जीवन–संस्कृत तथा हिन्दी टीका बम्बई	३–२५
१८७२	वैद्यमनोत्सव–हिन्दी (नैनसुख)	०–६५
१८७३	वैद्यरहस्य–(विद्यापति) हिन्दी टीका	६–५०
१८७४	वैद्यवल्लभ–हस्तिरुचिकृत, भाषा टीका	१–२०
१८७५	वैद्यविनोदसंहिता–शंकरभट्ट	४–२५
१८७६	वैद्यचन्द्रोदय	१–५०
१८७७	वैद्यकलाधर	१–८०
१८७८	वैद्यावतंस भा. टी.	१–५०
१८७९	वैद्यसन्मित्र	२–००
१८८०	व्यापारिक फल और तरकारियां	२०–००
१८८१	व्यवहारायुर्वेद विषविज्ञान–युगलकिशोर	५–००
१८८२	व्याधिविज्ञान–डा. आशानन्द। रोगों के ज्ञान के लिये अत्युत्तम ग्रन्थ है। अनेकों चित्र सहित छठा संस्करण दो भाग	२२–००
१८८३	व्यायाम और शारीरिक विकास	२–५०
१८८४	व्रणशोथ चिकित्सा	३–००
१८८५	व्रणोपचारपद्धति	०–५०
१८८६	वृक्षविज्ञान चिकित्सा	२–२५
१८८७	शरीरप्रदीपिका:–डा. मुकुन्दस्वरूप	५–५०
१८८८	शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान	४–५०
१८८९	शरीरविद्या बंगाली में	१२–००
१८९०	शरभेन्द्र वैद्यरत्नावली	१०–६२
१८९१	शरीरपुष्टिविधान	०–७०
१८९२	शहद के गुण	०–७५
१८९३	शहतूत के गुण उपयोग	०–५०
१८९४	शर्बत विज्ञान	२–५०
१८९५	शल्यतन्त्र में रोगी परीक्षा	७–००
१८९६	शल्य प्रदीपिका डा. मुकुन्दस्वरूप	१५–००
१८९७	शार्ङ्गधरसंहितामूल अंजन निदानसहित गुटका	२–००
१८९८	शार्ङ्गधर संहिता–दो सं. व्याख्या	१०–००
१८९९	शार्ङ्गधर संहिता–श्यामा हिन्दी टीका	४–००
१९००	शार्ङ्गधर संहिता–भाषा टीका	८–००, ५–००
१९०१	,, ,, दुर्गादत्त	१०–००
१९०२	शालाक्य तंत्र श्री रमानाथ द्विवेदी	९–००
१९०३	शालिग्रामोषधि शब्दसागर	५–८५
१९०४	शालिहोत्र–संस्कृत भोजविरचित	८–००
१९०५	शिलाजीत विज्ञान	०–७५
१९०६	शिवनाथसागर हिन्दी–डा. शिवनाथ	९–१०
१९०७	शिशु संरक्षण	२–००
१९०८	शिशुपालन–बलवन्तसिंह	१–५०
१९०९	शीतला परिहार	३–२५
१९१०	शुसलर की १२ तन्तु औषधियां	७–००
१९११	शुभसन्ततियोग प्रकाश–हिन्दी टीका	३–२५
१९१२	संस्कार विधि विमर्श	३–००
१९१३	संक्रामक रोग विज्ञान	६–५०
१९१३ (क)	संक्रामक रोगों का उपचार	२–००
१९१४	सञ्ज्ञा पञ्चक विमर्श	३–००
१९१५	संकटकालीन प्राथमिक चिकित्सा	४–७५
१९१६	संतरा गुण उपयोग––हिन्दी	०–५०
१९१७	सन्यासी चिकित्सा शास्त्र–अथवा साधु की चुटकी	६–००
१९१८	सत्यानासी गुणविधान	०–७५
१९१९	सचित्र क्रियात्मक औषधि परिचय	१२–००
१९२०	सचित्र इंजेक्शनविज्ञान	८–००
१९२१	सचित्र क्लीनिकल पैथालोजी	१०–००
१९२२	सचित्र नेत्र रोग विज्ञान–डा. शिवदयाल	८–००
१९२३	सफल आधुनिक औषधियां	४–५०
१९२४	सरल प्राकृतिक चिकित्सा	३–००
१९२५	सरल शरीर विज्ञान	१–५०
१९२६	सरलचिकित्सा विज्ञान	३–२५
१९२७	सल्फोनामाइड और एण्टीवायटिक्स	२–५०
१९२७ (क)	सामान्य रोगों की रोकथाम	३–५०
१९२८	सामान्य शल्य विज्ञान	१२–००
१९२९	सेब के गुण उपयोग	०–५०

१७६१ मलेरिया और मोती झारा १-२५
१७६२ मलेरिया और कालाजार १--७५
१७६३ मवेशियों की घरेलू चिकित्सा १-५०
१७६४ महामारी विवेचन--हिन्दी टीका सहित ०--७०
१७६५ महिलाओं के रोग, निदान ४-५०
१७६६ माडर्न मैडिकल ट्रीटमेंट--डा. एम. ए. गुजराल हिन्दी अनुवाद एलोपैथिक चिकित्सा २०-००
१७६७ मानव शरीर दीपिका ६--००
१७६८ मानव शरीर रचना विज्ञान दो भाग १४--००
१७६९ मानव शरीर रचना प्रथम भाग (ग्रे एनाटमी के आधार पर) डा. मुकुन्द स्वरूप सचित्र २८--००
१७७० माधव निदान---सटिप्पण १-५०
१७७१ माधवनिदान--मधुकोष आतंकदर्पण ७--००
१७७२ माधवनिदान--मधुकोष सं. टीका तथामधुकोष का हिन्दी अनुवाद सहित पं. दीनानाथकृत संपूर्ण तथा प्रश्नपत्र सहित ३ भाग १८--००
१७७३ माधवनिदान--मधुकोष तथा विद्योतनी १४--००
१७७४ माधवनिदान--भा. टी. ६--००
१६७५ मानसिक आरोग्य ४--००
१७७६ मानवसंतति प्रसूतिशास्त्र--बलवन्त सिंह कृत २--२५
१७७७ मासिक विकार १--००
१७७८ मिक्सचर (एलोपैथिक) २--५०
१७७९ मिजानतिब्ब ४--२०
१७८० मिट्टी के गुण, उपयोग ०--७५
१७८१ मिट्टी चिकित्सा ०--५०
१७८२ मिडवाइफरी ४--००
१७८३ मोटापा दूर करने के उपाय १--००
१७८४ मुकलावा बहार ६--५०
१७८५ मूली के गुण. उपयोग ०--७०
१७८६ मूत्र के रोग--घाणेकर हिन्दी ६--००
१७८७ मेंहदी के गुण ०--७५
१७८८ मेघविनोद--श्रीमेघमुनिप्रणीत--सरल हिन्दी में। हर बीमारी का शर्तिया सरल इलाज--दवाइयां भी वह जो आसानी से बाजार में मिल सकें ६--००.
१७८९ यकृत के रोग और उनकी चिकित्सा हिन्दी २--००
१७९० यूनानी चिकित्सा विधि--अर्थात् यूनानी का फार्माकोपिया लेखक हकीम मन्साराम। हर रोग के लिये यूनानी इलाज किस प्रकार करना चाहिये उसी का पूरा तरीका दिया है। किस हालत में कौन दवाई देनी है। शरीर परिचय सहित हिन्दी ५--००
१७९१ यूनानी चिकित्सासागर--लेखक हकीम मन्साराम-- इसमें यूनानी के प्रायः सभी आजमाये हुए नुस्खे दिये हैं। जिस रोग पर काम आते हैं वह भी लिखा है। उनके बनाने के तरीके भी लिखे हैं। हर प्रकार के अर्क, शर्बत, माजून, चटनी इत्यादि कोई भी चीज छूटी नहीं है अर्थात् यूनानी में जो भी जानने योग्य नुस्खा है इसमें सब दिया है १०--००
१७९२ योगशतक ०--७०
१७९३ योगचिकित्सा--अत्रिदेव ३--५०
१७९४ योगचिकित्सा ०--५०
१७९५ योगचिन्तामणि--हिन्दी टीका सहित ५--२०
१७९६ योग रत्नाकर--मूल संस्कृत ६--००, ७--५०
१७९७ योगरत्नाकर भा. टी. १८--००
१७९८ योगतरंगिणी भा. टी. ७--८०
१७९९ रक्त के रोग---डा. घाणेकर हिन्दी १०--००
१८०० रक्तविक्षेप या ब्लड प्रैशर ०--७५
१८०१ रतिजरोग---सहगल सचित्र शीघ्र
१८०२ रतिमंजरी हिन्दी टीका ०--४०
१८०३ रतिरत्न प्रदीपिका ३--२५
१८०४ रसकौमुदी १--५०
१८०५ रसचिकित्सा ६--००
१८०६ रसतत्त्वविवेचन ३--५०
१८०७ रसतन्त्रसार व सिद्धयोग संग्रह---कालेडा बोगला वालों का प्र. भाग १०--००
१८०८ रसतरंगिणी--लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज नरेन्द्र नाथ जी के आदेशानुसार प्राणाचार्य श्री सदानन्द जी विरचित तथा श्री पं. हरिदत्तजी कृत संस्कृत टीका तथा कविराज श्री धर्मानन्द जी कृत रसविज्ञान नामक सरल हिन्दी टीका सहित। पुस्तक कितनी उपयोगी है इसी से सिद्ध है कि यह इसका पांचवां संस्करण है सफेद कागज पर छपा। इसमें केवल अनुभूत प्रयोग ही लिखे हैं। सभी जगह पाठ्य ग्रन्थ है १२--००
१८०९ रसमंजरी २--६०
१८१० रसयोगसागर
१८११ रसयोगशतक २--००
१८१२ रसशास्त्र--अत्रिदेव ७--००
१८१३ रसशास्त्रप्रवेशिका २--००
१८१४ रसहृदयतन्त्र---भाषा टीका ५--००
१८१५ रसरत्नसमुच्चय--मूल संस्कृत ३।) सटीक ३--७५
१८१६ रसरत्नसमुच्चय--पं. धर्मानन्द जी कृत अत्यन्त उपयोगी तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित १०-००
१८१७ रसराजमहोदधि---सम्पूर्ण पांचों भाग बंबई १०--४०
१८१८ रसादिपरिज्ञान--जगन्नाथ प्रसाद २--५०
१८१९ रसाध्याय--संस्कृत टीका सहित १--००
१८२० रसामृत--ले. व. यादव जी विक्रमजी आचार्य। आचार्य जी का यह जीवनपर्यन्त का रसशास्त्र सम्बन्धी अनुभव है। हिन्दी टीका सहित यह ग्रन्थ विद्यार्थियों को रसशास्त्र के पाठ्य ग्रन्थ के रूप में तथा चिकित्सकों को भस्म, पिष्टि, रस-योग आदि के ठीक निर्माण में उपयुक्त मार्गदर्शक हो इस दृष्टि से लिखा गया है। अभी अभी हाल में प्रकाशित हुआ है ५-००
१८२१ रसायनखंड--नित्यनाथसिद्ध कृत मूल ०--७५
१८२२ रसायन तंत्र ०--३०
१८२३ रसायन और वाजीकरण २--००
१८२४ रसार्णव--नाम रसतन्त्र--सटिप्पण ३--००
१८२५ रसोपनिषत् प्रथम भाग ५--००
१८२६ रसेन्द्रपुराण--पं. रामप्रसाद कृत ९--१०
१८२७ रसेन्द्रसारसंग्रह--भाषा टीका ३--००, ७--८०
१८२८ रसेन्द्र सारसंग्रह सं० टी० जीवानन्द ७--००
१८२९ राजवल्लभ निघंटु--हिन्दी टीका ३--२५
१८३० राजयक्ष्मा सी द्वारकानाथ १--००
१८३१ राजमार्तण्ड हि. टीका सहित २--५०
१८३२ राजमृगाङ्क २--६६

६७ पशुचिकित्सा—— २—४०, ३—९०
६८ पशुओं का घरेलू तथा डाक्टरी इलाज ६—००
६९ पाकप्रदीप और पुष्टि प्रकाश १—४०
७० पाकविज्ञान ४—००
७१ पाचन प्रणाली के रोग ——महेन्द्रनाथ २—२५
७२ पाश्चात्य द्रव्यगुण विज्ञान——डा. रामसुशीलसिंह प्रथम भाग बड़ा परिवर्धित होकर छपा है ३०—०
७३ पाश्चात्य द्रव्यगुण-विज्ञान—मैटीरिया मेडिका श्री राम सुशीलसिंह कृत दूसरा भाग ३०—००
७४ पीपल गुणविधान ०—७५, ०—५०
७५ पुरुष गुप्त रोग चिकित्सा ३—००, १—२५
७६ पुरुषविज्ञान——जगन्नाथ ७—००
७७ पेट और आंतों के रोग २—५०
७८ पेटन्ट प्रेस्काइबर—डा. रमानाथ हिन्दी ८—००
७९ पेटेन्ट अदवियात—बंसल ६—००
८० पैसे पैसे के चुटकले ८—००. ३—००
८१ प्रत्यक्ष शरीर कोष—श्री सेनगुप्त ८—००
८२ प्रमाणविज्ञान——जगन्नाथ २—५०
८३ प्रमेह विवेचन २—००
८४ प्राकृतिक चिकित्सा प्रश्नोत्तरी १—१२
८५ प्रत्यक्षशरीर हिन्दी दो भाग २५—००
८६ प्रयोग पुष्पावली १—२५
८७ प्रतापकंठाभरण १—५०
८८ प्रसूतितन्त्र——रामदयाल कपूर ५—७५
८९ प्रसूति विज्ञान——रमानाथ द्विवेदी हिन्दी १२—००
९० प्रारंभिक जीव विज्ञान—टंडन ४—४०
९१ प्राकृतिक चिकित्सा सूर्योदय १—००
९२ प्राकृतिक चिकित्सा ४—००
९३ प्रारम्भिक उपचार—गणेशदत्त १—०००
९४ प्रारंभिक उद्भिद्शास्त्र (वनस्पति) बलवन्तसिंह ४-५०
९५ प्रारम्भिक भौतिकी——निहालकरण हिन्दी ८—००
९६ प्रारम्भिक रसायन—बलदेवसहाय ४—५०
९७ प्राकृतिक चिकित्सा सागर ०—७५
९७अ प्राकृतिक चिकित्सासार ८—५०
९८ प्राकृतिक शिशु चिकित्सा २—००
९९ प्राकृतिक जीवन की ओर——मोदी ३—००
०० प्राचीन भारत में रसायन का विकास १४—००

१७०१ प्रारंभिक उपचार १—००
१७०२ प्रारंभिक स्वास्थ्य ०—३७
१७०३ प्रेमसूत्र ३—००
१७०४ प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा हिन्दी ०—६२, ०—३५
१७०५ फलसंरक्षण हिन्दी २—५० १—००
१७०६ फिटकरी २—५०
१७०७ फिटकरी गुण उपयाग २—५०
१७०८ बच्चों का पालन और रोगों की चिकित्सा १—५०
१७०९ बच्चों का स्वास्थ्य और उनके रोग ३—००
१७१० बबूल गुण उपयोग ०—३७, १—००
१७११ बरगद ०—८८
१७१२ बस्तिशलाका प्रवेश हिन्दी ०—४०
१७१३ बादाम के गुण उपयोग ०—७५
१७१४ बायोकेमिक चिकित्सा—सुरेश प्रसाद ४—५०
१७१५ बायोकेमिकचिकित्सा सार २—००
१७१६ बायोकेमिक पाकेट गाइड—डा. सुरेशप्रसाद हि. १—००
१७१७ बायोकेमिक रहस्य १—५०
१७१८ बायोकेमिक रिपर्टरी ५—००
१७१९ बांसा के गुण उपयोग १—२५
१७२० बायोकेमिक चिकित्सा विज्ञान ६—५०
१७२१ बालतन्त्र—(कल्याण वैद्य विरचित) ३—२५
१७२२ बालरोग चिकित्सा ५—००
१७२३ बोपदेव शतक १—००
१७२४ बीसवीं शताब्दी की औषधियां हिन्दी ८—००
१७२५ बुखार का अचूक इलाज १—२५, ०—७५
१७२६ ब्रह्मचर्य——सातवलेकर १—५०
१७२७ बुढ़ापा और उससे बचने के उपाय १—५०
१७२८ बृहद् बूटी प्रचार वैद्यक २—५०
१७२९ बृहन्निघंटुरत्नाकर प्रथम भाग ११—००
१७३० बृहन्निघंटुरत्नाकर हि. टी. चतुर्थ भाग १०—४०
१७३१ बृहन्निघटुरत्नाकर पंचम भाग २०—००
१७३२ „ छठा भाग १५—६०
१७३३ बृहद् पशुचिकित्सा ५—००
१७३४ बृहद्योगतरंगिणी त्रिमल्लभट्ट १६—२५
१७३५ बृहद् रसराज सुन्दर हिन्दी १२—००

१७३५क भारतीय औषधावली तथा होमियो पेटंट १—५०
१७३६ भारतीय जीवाणु विज्ञान २—५०
१७३७ भारतीय जड़ी-बूटी डा. गनपतसिंह ६—००
१७३८ भारतीय रस पद्धति—अत्रिदेव १—५०
१७३९ भारतीय जनता का स्वास्थ्य और आयुर्वेद हिन्दी ०—७५
१७४० भावप्रकाश—पं. लालचन्द्रजी कृत अद्वितीय हिन्दी टीका, विशेष वक्तव्य तथा यूनानी निघण्टु २५-००
१७४१ भावप्रकाशनिघण्टु —सटिप्पण मूल १—५०
१७४२ भावप्रकाशनिघण्टु—आचार्य श्रीविश्वनाथजी द्विवेदी कृत ललितार्थकरी अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित परिवर्धित ९—००
१७४३ भिन्न रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा १—००
१७४४ भिषक्कर्मसिद्धि हिन्दी २०—००
१७४५ भूलोक का अमृत हिन्दी ०—५०
१७४६ भेलसंहिता——मूल १०—००
१७४७ भैषज्यसंहिता अत्रिदेव हिन्दी ४—५०
१७४८ भैषज्यकल्पना—ले. श्री अत्रिदेव गुप्त हिन्दी १—७५
१७४९ भैषज्यकल्पना विज्ञान हिन्दी ५—००
१७५० भैषज्यरत्नावली——अनेक ग्रन्थो के सिद्धहस्त टीकाकार सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेवजी विद्यालंकार कृत अत्यन्त सरल तथा सब गूढ़ अर्थों को खोलने वाली हिन्दी टीका सहित जितने योग इस में हैं उतने आज तक किसी संस्करण में नहीं छपे। सातवां संस्करण बहुत परिवर्धित होकर ग्लेज कागज पर छपा है १२—००
१७५१ भोजन कुतूहल संस्कृत ४—००
१७५२ भारत भैषज्यरत्नाकर दूसरा, पांचवां १८—००
१७५३ मठा, उसके गुण तथा उपयोग १—००
१७५४ मदनपाल निघंटु—भाषा टीका बंबई ४—८०
१७५५ मधुचिकित्सा विधान ०—५०
१७५६ मधुगुण २—५०
१७५७ मधुमेह निदान उपचार २—००
१७५८ मर्मविज्ञान—ले. श्रीरामरक्ष पाठक हिन्दी ३—५०
१७५९ मल-मूत्र रक्तादि परीक्षा—एलोपैथिक ३—००
१७६० मलेरिया—श्री मनमोहन घप—मलेरिया पर इससे बढ़कर कोई पुस्तक नहीं छपी (एलोपैथिक) २—२५

१५७२ चिकित्सातत्त्व दीपिका महावीर प्रसाद पाण्डेय
दो भाग १८-५०
१५७३ चिकित्सातत्त्वप्रदीप–दो भाग २२-००
१५७४ चिकित्सांजन–हिन्दी १-६०
१५७५ चिकित्साव्यवहार विज्ञान ०-५०
१५७६ चिकित्सा विज्ञान कोष ७-५०
१५७७ चिकित्सातिलक श्रीनिवास संस्कृत ९-२५
१५७८ चिकित्सादर्श ३ भाग राजेश्वरदत्त १८-००
१५७९ चिकित्सा ज्ञान संग्रह ५-००
१५८० छाछ के गुण उपयोग ०-७५
१५८१ जटिल रोगों की सफल चिकित्सा २-००
१५८२ जननेन्द्रिय रोग चिकित्सा २-५०
१५८३ जन स्वास्थ्य विज्ञान ४-००
१५८४ जन्मनिरोध–सचित्र ६-००
१५८५ जल चिकित्सा ०-५०
१५८६ ज्वरचिकित्सा–श्रीमहेन्द्रनाथ २-७५
१५८७ ज्वरतिमिरनाशक–भाषा टीका २-१०
१५८८ ज्वरनिर्णय २-८०
१५८९ जीवनतत्त्व १-५०
१५९० जीवाणुविज्ञान—डा. घाणेकर हिन्दी १३-००
१५९१ ज्वरविज्ञान—(हि.) ३-५०
१५९२ ज्वरचिकित्सा—अयोध्यानाथ २-००
१५९३ जुकाम—महेन्द्रनाथ पाण्डेय १-७४
१५९४ टोटका चिकित्सा ०-७५
१५९५ डाक्टरी गाइड ४-००
१५९६ डाक्टरी चिकित्सार्णव बड़ा–(एलोपैथी तथा
होमियो) (हि.) ५-८५
१५९७ ढाक के गुण और उपयोग ०-७५
१५९८ तात्कालिक चिकित्सा १-२५
१५९९ तंदुरुस्त कैसे रहें ३-००
१६०० तापमान—राजकुमार हिन्दी ०-२५
१६०१ तीन महामारी १-५०
१६०२ तीमारदारी ०-७५
१६०३ तुलसी चिकित्सा विधान ०-३७
१६०४ तुलसी विज्ञान—सरल भाषा ०-७५

१६०५ तुलसी के गुण, उपयोग ३-००
१६०६ तरबूज के गुण उपयोग ०-६५
१६०७ दांतों का डाक्टर २-५०
१६०८ दही के गुण उपयोग २-५०
१६०९ दीर्घायु १-२५
१६१० दुग्ध गुण उपयोग २-००
१६११ दुग्धचिकित्सा ४-००
१६१२ दूध से सर्व रोगों के इलाज १-५०
१६१३ देहाती अनुभूत योग संग्रह— १३-००
१६१४ देहाती जड़ी-बूटियां ७-५०
१६१५ देहातियों की तन्दुरुस्ती—केदारनाथ ०-६५
१६१६ देहाती प्राकृतिक चिकित्सा ५-००
१६१७ दोषकारणत्वमीमांसा—श्रीप्रियव्रत हि.टी. १-५०
१६१८ द्रव्यगुण मंजूषा प्रथम भाग हिन्दी २-००
१६१९ द्रव्यगुण भा. टी. २-६०
१६२० द्रव्यगुणविज्ञान—ले. आचार्य यादवजी त्रिकमजी
पूर्वार्द्ध (द्रव्यगुण-रस-विपाक-वीर्य प्रभाव
विज्ञानात्मक) ४-००
१६२१ द्रव्यगुणविज्ञान–प्रियव्रत (३ भाग) २३-००
१६२२ धतूरा गुण विधान १-१२
१६२३ धनिया के गुण उपयोग ०-५०
१६२४ धात्री विज्ञान ३-४०
१६२५ धन्वन्तरी पूजा कथादर्श ०-७६
१६२६ धूप, हवा और सर्दी का इलाज १-००
१६२७ नपुंसक चिकित्सा व यौवन गुप्त ३-००
१६२८ नपुंसकामृतार्णव २-२५
१६२९ नमक के गुण उपयोग ०-५०
१६३० नवपरिभाषा—उपेन्द्रनाथदास १-७५
१६३१ नवीन चिकित्सा पद्धति १-२५
१६३२ नव्यचिकित्सा विज्ञान–डा. मु. स्वरूप १६-००
१६३३ नव्यजन स्वास्थ्यविज्ञान–ले० —डाक्टर मुकुन्द
स्वरूप शर्मा। स्वास्थ्य विज्ञान विषय पर
नवीनतम तथा अपटूडेट ग्रन्थ। अनेकों चित्र
देकर हर विषय को बड़ी सरलता से समझाया
है। विद्यार्थियों को तो इस विषय को समझने
के लिये अद्वितीय पुस्तक है। ८-००

१६३४ नव्यरोगनिदान माधवनिदान परि. ०-७५
१६३५ नाक, कान-गले की प्राकृतिक चिकित्सा ०-५०
१६३६ नाड़ीदर्शन—श्रीवैद्य ताराशङ्करजी कृत आधु-
निकतम आविष्कारों सहित सचित्र
अत्युपयोगी नया संस्करण ३-५०
१६३७ नाड़ी परीक्षा—हिन्दी टीका ०-५०, ०-३५
१६३८ नाड़ी रहस्य ०-७५
१६३९ नाड़ीविज्ञान—(कणादविरचित) हि. ०-३५
१६४० नाड़ीज्ञान दर्पण—हिन्दी टीका ०-५०
१६४१ नाड़ीचक्रम्—मूल ३-५०
१६४२ नागरसर्वस्व ५-५०
१६४३ नासा, गला एवं कर्णरोग चिकित्सा ३-५०
१६४४ निघंटु आदर्श—बापालाल प्रथम ३५-००
१६४५ निंबगुण उपयोग ०-७५
१६४६ नित्योपयोगी चूर्ण संग्रह १-२५
१६४७ नित्योपयोगी गुटिका संग्रह २-००
१६४८ नित्योपयोगी क्वाथसंग्रह १-२५
१६४९ निदान नवनीतचार्टस ८-००
१६५० निरोग कैसे रहें—महेन्द्रनाथ ०-६४
१६५१ नीम के गुण उपयोग १-२५
१६५२ नीम चिकित्सा ०-६२
१६५३ न्यायवैद्यक विषतंत्र अत्रिदेव ४-००
१६५४ नेत्ररोगचिकित्सा—जादवजी हंसराज ११-२५
१६५५ नेत्ररोग १-००
१६५६ नेत्ररोग विज्ञान १५-००
१६५७ नैसर्गिक आरोग्य २-००
१६५८ पंचविधकषाय कल्पना हिन्दी १-५०
१६५९ पंचभूत विज्ञान—उपेन्द्रनाथ दास हिन्दी ४-००
१६६० पंचसायक—ज्योतीश्वराचार्य १-००
१६६१ पथ्यापथ्य—हि० टी० २-००
१६६२ पदार्थविज्ञान—वागीश्वर हिन्दी ८-००
१६६३ पैर और आंतों के रोग— २-५०
१६६४ परिभाषा प्रबन्ध—जगन्नाथ प्रसाद हिन्दी २-५०
१६६५ पलाण्डुगुणविधान—हिन्दी ०-७५
१६६६ पर्यायमुक्तावली संस्कृत ५-५०

६७ पशुचिकित्सा— २-४०, ३-९०
६८ पशुओं को घरेलू तथा डाक्टरी इलाज ६-००
६९ पाकप्रदीप और पुष्टि प्रकाश १-४०
७० पाकविज्ञान ४-००
७१ पाचन प्रणाली के रोग —महेन्द्रनाथ २-२५
७२ पाश्चात्य द्रव्यगुण विज्ञान—डा. रामसुशीलसिंह प्रथम भाग बड़ा परिवर्धित होकर छपा है ३०-०
७३ पाश्चात्य द्रव्यगुण-विज्ञान—मैटीरिया मेडिका श्री राम सुशीलसिंह कृत दूसरा भाग ३०-००
७४ पीपल गुणविधान ०-७५, ०-५०
७५ पुरुष गुप्त रोग चिकित्सा ३-००, १-२५
७६ पुरुषविज्ञान—जगन्नाथ ७-००
७७ पेट और आंतों के रोग २-५०
६७८ पेटन्ट प्रेस्काइबर—डा. रमानाथ हिन्दी ८-००
६७९ पेटेन्ट अदवियात—बंसल ६-००
६८० पैसे पैसे के चुटकले ४-००. ३-००
६८१ प्रत्यक्ष शरीर कोष—श्री सेनगुप्त ८-००
६८२ प्रमाणविज्ञान—जगन्नाथ २-५०
६८३ प्रमेह विवेचन २-००
६८४ प्राकृतिक चिकित्सा प्रश्नोत्तरी १-१२
६८५ प्रत्यक्षशरीर हिन्दी दो भाग २५-००
६८६ प्रयोग पुष्पावली १-२५
६८७ प्रतापकंठाभरण १-५०
६८८ प्रसूतितन्त्र—रामदयाल कपूर ५-७५
६८९ प्रसूति विज्ञान—रमानाथ द्विवेदी हिन्दी १२-००
६९० प्रारंभिक जीव विज्ञान—टंडन ४-४०
६९१ प्राकृतिक चिकित्सा सूर्योदय १-००
६९२ प्राकृतिक चिकित्सा ४-००
६९३ प्रारम्भिक उपचार—गणेशदत्त १-०००
६९४ प्रारंभिक उद्भिद्‌शास्त्र (वनस्पति) बलवन्तसिंह ४-५०
६९५ प्रारम्भिक भौतिकी—निहालकरण हिन्दी ८-००
६९६ प्रारम्भिक रसायन—बलदेवसहाय ४-५०
६९७ प्राकृतिक चिकित्सा सागर ०-७५
६९७अ प्राकृतिक चिकित्सासार ८-५०
६९८ प्राकृतिक शिशु चिकित्सा २-००
६९९ प्राकृतिक जीवन की ओर—मोदी ३-००
७०० प्राचीन भारत में रसायन का विकास १४-००

१७०१ प्रारम्भिक उपचार १-००
१७०२ प्रारंभिक स्वास्थ्य ०-३७
१७०३ प्रेमसून ३-००
१७०४ प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा हिन्दी ०-६२, ०-३५
१७०५ फलसंरक्षण हिन्दी २-५० १-००
१७०६ फिटकरी २-५०
१७०७ फिटकरी गुण उपयोग २-५०
१७०८ बच्चों का पालन और रोगों की चिकित्सा १-५०
१७०९ बच्चों का स्वास्थ्य और उनके रोग ३-००
१७१० बबूल गुण उपयोग ०-३७, १-००
१७११ बरगद ०-८८
१७१२ बस्तिशलाका प्रवेश हिन्दी ०-४०
१७१३ बादाम के गुण उपयोग ०-७५
१७१४ बायोकेमिक चिकित्सा—सुरेश प्रसाद ४-५०
१७१५ बायोकेमिकचिकित्सा सार २-००
१७१६ बायोकेमिक पाकेट गाइड—डा. सुरेशप्रसाद हिं. १-००
१७१७ बायोकेमिक रहस्य १-५०
१७१८ बायोकेमिक रिपर्टरी ५-००
१७१९ बांसा के गुण उपयोग १-२५
१७२० बायोकेमिक चिकित्सा विज्ञान ६-५०
१७२१ बालतन्त्र—(कल्याण वैद्य विरचित) ३-२५
१७२२ बालरोग चिकित्सा ५-००
१७२३ बोपदेव शतक १-००
१७२४ बीसवीं शताब्दी की औषधियां हिन्दी ८-००
१७२५ बुखार का अचूक इलाज १-२५, ०-७५
१७२६ ब्रह्मचर्य—सातवलेकर १-५०
१७२७ बुढ़ापा और उससे बचने के उपाय १-५०
१७२८ बृहद् बूटी प्रचार वैद्यक २-५०
१७२९ बृहन्निघंटुरत्नाकर प्रथम भाग ११-००
१७३० बृहन्निघंटुरत्नाकर हिं. टी. चतुर्थ भाग १०-४०
१७३१ बृहन्निघंटुरत्नाकर पंचम भाग २०-००
१७३२ ,, ,, छठा भाग १५-६०
१७३३ बृहद् पशुचिकित्सा ५-००
१७३४ बृहद्योगतरंगिणी त्रिमल्लभट्ट १६-२५
१७३५ बृहद् रसराज सुन्दर हिन्दी १२-००

१७३५क भारतीय औषधावली तथा होमियो पेटंट १-५०
१७३६ भारतीय जीवाणु विज्ञान २-५०
१७३७ भारतीय जड़ी-बूटी डा. गनपतसिह ६-००
१७३८ भारतीय रस पद्धति—अत्रिदेव १-५०
१७३९ भारतीय जनता का स्वास्थ्य और आयुर्वेद हिन्दी ०-७५
१७४० भावप्रकाश—पं. लालचन्द्रजी कृत अद्वितीय हिन्दी टीका, विशेष वक्तव्य तथा यूनानी निघण्टु २५-००
१७४१ भावप्रकाशनिघण्टु —सटिप्पण मूल १-५०
१७४२ भावप्रकाशनिघण्टु—आचार्य श्रीविश्वनाथजी द्विवेदी कृत ललितार्थकरी अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित परिवर्धित ९-००
१७४३ भिन्न रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा १-००
१७४४ भिषक्कर्मसिद्धि हिन्दी २०-००
१७४५ भूलोक का अमृत हिन्दी ०-५०
१७४६ भेलसंहिता—मूल १०-००
१७४७ भैषज्यसंहिता अत्रिदेव हिन्दी ४-५०
१७४८ भैषज्यकल्पना—ले. श्री अत्रिदेव गुप्त हिन्दी १-७५
१७४९ भैषज्यकल्पना विज्ञान हिन्दी ५-००
१७५० भैषज्यरत्नावली—अनेक ग्रन्थों के सिद्धहस्त टीकाकार सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेवजी विद्यालंकार कृत अत्यन्त सरल तथा सब गूढ़ अर्थों को खोलने वाली हिन्दी टीका सहित जितने योग इस में हैं उतने आज तक किसी संस्करण में नहीं छपे। सातवां संस्करण बहुत परिवर्धित होकर ग्लेज कागज पर छपा है १२-००
१७५१ भोजन कुतूहल संस्कृत ४-००
१७५२ भारत भैषज्यरत्नाकर दूसरा, पांचवां १८-००
१७५३ मठा, उसके गुण तथा उपयोग १-००
१७५४ मदनपाल निघंटु—भाषा टीका बंबई ४-८०
१७५५ मधुचिकित्सा विधान ०-५०
१७५६ मधुगुण २-५०
१७५७ मधुमेह निदान उपचार २-००
१७५८ मर्मविज्ञान—ले. श्रीरामरक्ष पाठक हिन्दी ३-५०
१७५९ मल-मूत्र रक्तादि परीक्षा—एलोपैथिक ३-००
१७६० मलेरिया—श्री मनमोहन धुप—मलेरिया पर इससे बढ़कर कोई पुस्तक नहीं छपी (एलोपैथिक) २-२५

१५७२ चिकित्सातत्त्व दीपिका महावीर प्रसाद पाण्डेय दो भाग १८–५०
१५७३ चिकित्सातत्त्वप्रदीप–दो भाग २२–००
१५७४ चिकित्सांजन–हिन्दी १–६०
१५७५ चिकित्साव्यवहार विज्ञान ०–५०
१५७६ चिकित्साविज्ञान कोष ७–५०
१५७७ चिकित्सातिलक श्रीनिवास संस्कृत ९–२५
१५७८ चिकित्सादर्श ३ भाग राजेश्वरदत्त १८–००
१५७९ चिकित्सा ज्ञान संग्रह ५–००
१५८० छाछ के गुण उपयोग ०–७५
१५८१ जटिल रोगों की सफल चिकित्सा २–००
१५८२ जननेन्द्रिय रोग चिकित्सा २–५०
१५८३ जन स्वास्थ्य विज्ञान ४–००
१५८४ जन्मनिरोध–सचित्र ६–००
१५८५ जल चिकित्सा ०–५०
१५८६ ज्वरचिकित्सा–श्रीमहेन्द्रनाथ २–७५
१५८७ ज्वरतिमिरनाशक--भाषा टीका २–१०
१५८८ ज्वरनिर्णय २–८०
१५८९ जीवनतत्त्व १–५०
१५९० जीवाणुविज्ञान---डा. घाणेकर हिन्दी १३–००
१५९१ ज्वरविज्ञान--(हि.) ३–५०
१५९२ ज्वरचिकित्सा---अयोध्यानाथ २–००
१५९३ जुकाम---महेन्द्रनाथ पाण्डेय १–७४
१५९४ टोटका चिकित्सा ०–७५
१५९५ डाक्टरी गाइड ४–००
१५९६ डाक्टरी चिकित्सार्णव बड़ा–(एलोपैथी तथा होमियो) (हि) ५–८५
१५९७ ढाक के गुण और उपयोग ०–७५
१५९८ तात्कालिक चिकित्सा १–२५
१५९९ तंदुरुस्त कैसे रहें ३–००
१६०० तापमान---राजकुमार हिन्दी ०–२५
१६०१ तीन महामारी १–५०
१६०२ तीमारदारी ०–७५
१६०३ तुलसी चिकित्सा विधान ०–३७
१६०४ तुलसी विज्ञान---सरल भाषा ०–७५
१६०५ तुलसी के गुण, उपयोग ३–००
१६०६ तरबूज के गुण उपयोग ०–६५
१६०७ दाँतों का डाक्टर २–५०
१६०८ दही के गुण उपयोग २–५०
१६०९ दीर्घायु १–२५
१६१० दुग्ध गुण उपयोग २–००
१६११ दुग्धचिकित्सा ४–००
१६१२ दूध से सर्व रोगों के इलाज १–५०
१६१३ देहाती अनुभूत योग संग्रह-- १३–००
१६१४ देहाती जड़ी-बूटियां ७–५०
१६१५ देहातियों की तन्दुरुस्ती–केदारनाथ ०–६५
१६१६ देहाती प्राकृतिक चिकित्सा ५–००
१६१७ दोषकारणत्व मीमांसा---श्रीप्रियव्रत हि.टी. १–५०
१६१८ द्रव्यगुण मंजूषा प्रथम भाग हिन्दी २–००
१६१९ द्रव्यगुण भा. टी. २–६०
१६२० द्रव्यगुणविज्ञान--ले. आचार्य यादवजी त्रिकमजी पूर्वार्द्ध (द्रव्यगुण-रस-विपाक-वीर्य प्रभाव विज्ञानात्मक) ४–००
१६२१ द्रव्यगुणविज्ञान–प्रियव्रत (३ भाग) २३–००
१६२२ धतूरा गुण विधान १–१२
१६२३ धनिया के गुण उपयोग ०–५०
१६२४ धात्री विज्ञान ३–४०
१६२५ धन्वन्तरी पूजा कथादर्श ०–७५
१६२६ धूप, हवा और सर्दी का इलाज १–००
१६२७ नपुंसक चिकित्सा व यौवन गुप्त ३–००
१६२८ नपुंसकामृतार्णव २–२५
१६२९ नमक के गुण उपयोग ०–५०
१६३० नवपरिभाषा---उपेन्द्रनाथदास १–७५
१६३१ नवीन चिकित्सा पद्धति १–२५
१६३२ नव्यचिकित्सा विज्ञान–डा. मु. स्वरूप १६–००
१६३३ नव्यजन स्वास्थ्यविज्ञान–ले० –डाक्टर मुकुन्द स्वरूप शर्मा। स्वास्थ्य विज्ञान विषय पर नवीनतम तथा अपटूडेट ग्रन्थ। अनेकों चित्र देकर हर विषय को बड़ी सरलता से समझाया है। विद्यार्थियों को तो इस विषय को समझने के लिये अद्वितीय पुस्तक है। ८–००
१६३४ नव्यरोगनिदान माधवनिदान परि. ०–७५
१६३५ नाक, कान-गले की प्राकृतिक चिकित्सा २–५०
१६३६ नाड़ीदर्शन---श्रीवैद्य ताराशङ्करजी कृत आधुनिकतम आविष्कारों सहित सचित्र अत्युपयोगी नया संस्करण ३–५०
१६३७ नाड़ी परीक्षा---हिन्दी टीका ०–५०, ०–३५
१६३८ नाड़ी रहस्य ०–७५
१६३९ नाड़ीविज्ञान---(कणादविरचित) हि. ०–३५
१६४० नाड़ीज्ञान दर्पण---हिन्दी टीका ०–५०
१६४१ नाड़ीचक्रम्---मूल ३–५०
१६४२ नागरसर्वस्व ५–५०
१६४३ नासा, गला एवं कर्णरोग चिकित्सा ३–५०
१६४४ निघंटु आदर्श---बापालाल प्रथम ३५–००
१६४५ निंबूगुण उपयोग ०–७५
१६४६ नित्योपयोगी चूर्ण संग्रह १–२५
१६४७ नित्योपयोगी गुटिका संग्रह २–००
१६४८ नित्योपयोगी क्वाथसंग्रह १–२५
१६४९ निदान नवनीतचार्टस ८–००
१६५० निरोग कैसे रहें---महेन्द्रनाथ ०–६४
१६५१ नीम के गुण उपयोग १–२५
१६५२ नीम चिकित्सा ०–६२
१६५३ न्यायवैद्यक विषतंत्र अत्रिदेव ४–००
१६५४ नेत्ररोगचिकित्सा---जादवजी हंसराज ११–२५
१६५५ नेत्ररोग १–००
१६५६ नेत्ररोग विज्ञान १५–००
१६५७ नैसर्गिक आरोग्य २–००
१६५८ पंचविधकषाय कल्पना हिन्दी १–५०
१६५९ पंचभूत विज्ञान---उपेन्द्रनाथ दास हिन्दी ४–००
१६६० पंचसायक---ज्योतीश्वराचार्य १–००
१६६१ पथ्यापथ्य---हि० टी० २–००
१६६२ पदार्थविज्ञान---वागीश्वर हिन्दी ८–००
१६६३ पैर और आँतों के रोग--- २–५०
१६६४ परिभाषा प्रबन्ध---जगन्नाथ प्रसाद हिन्दी २–५०
१६६५ पलाण्डुगुणविधान---हिन्दी ०–७५
१६६६ पर्यायमुक्तावली संस्कृत ५–५०

१४८३ इंजेक्शन—डा. सुरेशप्रसाद १०—००
१४८४ इंजेक्शन—शिवनाथ खन्ना ११—००
१४८५ इंजेक्शन तत्त्व प्रदीप—गणपतिसिंह ६—००
१४८६ इन्द्रायणगुणविधान——हिन्दी १—००
१४८७ इन्फलुएन्जा ०—५०
१४८८ इलाजुलगुर्बा—यूनानी इलाज ३—९०
१४८९ उपवास के लाभ १—५०
१४९० एक औषधिगुण विधान—गणपति सिंह २—००
१४९१ एकौषधिचिकित्सा ४—००
१४९२ एनीमा और कथेटर—डा०सुरेशप्रसाद ०—५०
१४९३ एलन्स की नोटस ५—५०
१४९४ एलोपैथिक गाइड डा० रामनाथ वर्मा ऐसी उपयोगी पुस्तक एलोपैथिक संबन्धी आज तक नहीं छपी। यही कारण है कि यह इसका आठवां संस्करण अभी छपा है। परिवर्धित संस्करण १४—००
१४९५ एलोपैथिक चिकित्सा १३—००
१४९६ एलोपैथिक निघंटु मेटीरिया मेडिका—ले. डा. रामनाथ वर्मा परिवर्द्धित षष्ठ संस्करण १५—००
१४९७ एलोपथिक पाकेट गाईड—डा. सुरेश ३—००
१४९८ एलोपथिक पाकेट प्रेस्काइबर ५—००
१४९९ एलोपैथिक पेटेन्ट मेडिसिन—अयोध्यानाथपाठक ६-५०
१५०० एलोपैथिक पेटेंट चिकित्सा २—७५
१५०१ एलोपैथिक मेटीरिया मेडिका—शिवदयाल १३—००
१५०२ एलोपैथिक मिक्सचर २—५०
१५०३ एलोपैथिक योगरत्नाकर—डा. रामनाथ १३—००
१५०४ एलोपैथिक सफल औषधियां ४—००
१५०५ औपसर्गिक रोग दो भाग २२—००
१५०६ औषधगुण धर्म विवेचन ३—००
१५०७ औषधिगुणधर्म विवेचन—कालेडा बोगला ४—५०
१५०८ औषधप्रकाश १—३०
१५०९ कटेली के गुण ०—७५
१५१० कपड़े और तन्दरुस्ती ०—५६
१५११ कफ परीक्षा (कफ की परीक्षा पद्धतियों का वर्णन) डा. रमेशचन्द्र वर्मा कृत १—२५
१५१२ कब्ज और मलावरोध १—८०
१५१३ कब्ज का अचूक इलाज १—५०
१५१४ कब्ज या कोष्ठबद्धता १—००, ०—७५
१५१५ कल्पपंचकप्रयोग ०—३५
१५१६ कम्पाउण्डर्ज गाइड—द्वारकाप्रसाद ५—००
१५१७ रोगी परिचर्या ६—००
१५१८ कम्पाउन्डरी शिक्षा ५—००, ८—००
१५१९ करिकल्पलता—छन्दोबद्ध हाथियों की चिकित्सा ३—२५
१५२० कषाय कल्पना विज्ञान १—५०
१५२१ काकचण्डीश्वर कल्पतंत्र २—००
१५२२ कामकुञ्जलता—मूलमात्र २०—००
१५२३ कामरत्न—नित्यनाथ हिन्दी टीका ६—५०
१५२४ कामसूत्र—वात्स्यायन प्रणीत यशोधरकृत जयमंगला संस्कृत व्याख्या तथा पं० माधवाचार्य कृत मूल तथा संस्कृत टीका दोनों का हिन्दी २६—००
१५२५ कामसूत्र—भा. टी देवदत्त जयमंगला १६—००
१५२६ कद्दू के गुण उपयोग ०—६२
१५२७ कायचिकित्सा—गंगासहाय २५—००
१५२८ ,, रामरक्षपाठक २५—००
१५२९ कायचिकित्सा परिचय—द्वारकानाथ २०—००
१५३० कालज्ञान—हि. टी. ०—६५
१५३१ काश्यप संहिता—(वृ०) भा. टी. १६—०
१५३२ क्वाथमणिमाला १—५०
१५३३ किंगहोम्योमिक्सचर ९—००
१५३४ क्लिनिकल पैथोलोजी—शिवनाथ हिन्दी १२—००
१५३५ क्रियात्मक औषधि परिचय विज्ञान ,, १२—०
१५३६ कुमारतन्त्र १—००
१५३७ कुल्लियात—हकीम दलजीतसिंह १—२५
१५३८ केलिकुतूहल—मूल संस्कृत ले. म. म. पं. मथुरा प्रसाद दीक्षित कृत संस्कृत में २—००
१५३९ कोकसार—वैद्यक नारायण प्रसाद ६—५०
१५४० कौडी के गुण ०—७५
१५४१ कौमारभृत्य—रघुवीरप्रसाद हिन्दी ८—००
१५४२ क्लीनिकल मेडिसिन—एम. बी.बी. एस. तथा उसकी समकक्ष श्रेणियों के छात्रों को पूर्वी और पाश्चात्य निदान और चिकित्सा प्रणाली का सम्यक् ज्ञान कराने वाला हि. भा. में पहला और अद्वितीय ग्रन्थ अत्रिदेव गुप्त द्वारा, दो हजार पृष्ठ के लगभग संपूर्ण २ भाग २५—००
१५४३ गदनिग्रह दो भाग हिन्दी टी. ६५—००
१५४४ गर्भरक्षा तथा शिशु पालन—डा. मु. स्वरूप ४—५०
१५४५ गर्भसूत्र ३—००
१५४६ गाजर गुण उपयोग ०—७५
१५४७ गर्भस्थ शिशु की कहानी २—००
१५४८ गांव के पौधे १—००
१५४९ गांवों में औषधरत्न—३ भाग में १०—००
१५५० गुणविज्ञान जगन्नाथ २—५०
१५५१ गूलरगुण विकास (आरोग्यप्रकाश) हिन्दी १—००
१५५२ ग्रन्थि और ग्रन्थी प्रणाली के रोग—श्रीमहेन्द्रनाथ १—००
१५५३ गुलाब के गुण १-००
१५५४ गुणों की पिटारी—परमानन्द २—६०
१५५५ गृहस्थ सूत्र ६—००
१५५६ घर का वैद्य—अमोलकचन्द शुक्ल ७—५०
१५५७ घरेलू डाक्टर—चार डाक्टरों द्वारा ४—००
१५५८ घरेलू सस्ती दवाएं ३—००
१५५९ घीक्वार (गवार फल) के गुण उपयोग २—५०
१५६० घृत के गुण १—००
१५६१ चक्रदत्त हिन्दी टीका काशी १२—००
१५६२ चक्रदत्त—भा. टी. बम्बई ९—१०
१५६३ चर्याचन्द्रोदय—हिन्दी टीका ५—५५
१५६४ चरक—मूल बंबई ८—००
१५६५ चरकसंहिता—चक्रपाणिकृत आयुर्वेद दीपिका ३०—००
१५६६ चरकसंहिता—आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालंकार कृत सुविस्तृत विवेचनात्मक सरल हिंदी अनुवाद सम्पूर्ण दो बढ़िया जिल्दों में——इससे बढ़कर सरल हिन्दी अनुवाद आज तक नहीं छपा ३०—००
१५६७ चरक संहिता का अनुशीलन २—००
१५६८ चरक का निर्माण-काल २—००
१५६९ चर्मरोग चिकित्सा ३—००
१५७० चारुचिकित्सा—उत्तरार्द्ध २—५०
१५७१ चिकित्सा चन्द्रोदय—ले० हरिदास वैद्य सम्पूर्ण चिकित्सा सात भाग ५८—००

१३७९ सचित्रज्योतिष शिक्षा प्रथम ज्ञान खंड ९–००
१३८० ,, ,, द्वितीय गणित खंड २५–००
१३८१ सचित्र सामुद्रिक रहस्य ५–००
१३८१ (क) सम्राटसिद्धान्त ३ भाग २४०–००
१३८२ समरसार–सं. हिन्दी टीका २–१०
१३८३ सरलत्रिकोणमिति ५–००
१३८४ सर्वतोभद्रचक्र–भाषा टीका १–५०
१३८५ सर्वार्थचिन्तामणि–भाषा टीका ७–२०
१३८६ सामुद्रिक कुंजिका २–००
१३८७ सामुद्रिक लक्षण संस्कृत ६–९०
१३८८ सारावली भा. टी. ८–००
१३८९ सिद्धान्ततत्त्वविवेक १२–५०
१३९० सिद्धान्तदर्पण २–५०
१३९१ सिद्धान्तशिरोमणि–वासनाभाष्य समेत ३भाग ४५–०
१३९२ सिद्धान्त शिरोमणि–प्रभा-वासना प्रथम भाग ५–००
१३९३ सिद्धान्तशिरोमणि–ग्रहगणिताध्याय दो भाग ६–५०
१३९४ सिद्धान्त शिरोमणि–गोलाध्याय-वासना ८–७५
१३९५ सिद्धान्तशिरोमणि गोलाध्याय २–४०
१३९६ सुगम ज्योतिष–गोपेशकुमार ओझा ६–५०
१३९७ सुलभ ज्योतिष ज्ञान १२–००
१३९८ सुलभ भविष्य ज्ञान ०–७५
१३९९ सूर्यग्रहण—डा. कृष्णचन्द्र द्विवेदी १२–००
१४०० सूर्यसिद्धान्त—सटीक हि. टी. ६–००
१४०१ सूर्य सिद्धान्त सटीक ४–००
१४०२ स्त्रीजातक–हिन्दी टीका वृद्धयावनोक्त १–८०
१४०३ स्वप्नाध्याय ०–२५
१४०४ स्वप्नविचार ०–१५
१४०५ हनुमान ज्योतिष–भाषा टीका ०–७५
१४०६ हस्तरेखाविज्ञान गोपेश कुमार १२–००
१४०७ हस्तसामुद्रिक शास्त्र ६–००
१४०८ हायनबोध ०–७०
१४०९ हयतग्रन्थ ६–००
१४१० हायन चन्द्रोदय ०–६०
१४११ हायनरत्न–मूल खुला पत्रा ४–२०
१४१२ हिन्दुगणित शास्त्र का इतिहास ४–००
१४१३ होराभिप्राय निर्णय २–२५
१४१४ होराशास्त्र–प्रथम भाग (वाराहमिहिर) २५–००

चिकित्सा

१४१५ अंगूर के गुण उपयोग ०–७५
१४१६ अंग्रेजी हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी भट्टाचार्य १५–००
१४१७ अंग्रेजी हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी–डा. अग्निहोत्री २०–००
१४१८ अगदतन्त्र—रमानाथ द्विवेदी ०–७५
१४१९ अचार चटनी और मुरब्बा ४–५०
१४२० अजीर्णतिमिरभास्कर–हिन्दी ०–७०
१४२१ अञ्जननिदान हिन्दी टीका १–००
१४२२ अनुपानदर्पण–हिन्दी टीका १–८०
१४२३ अनुभूतयोगचिन्तामणि–डा. गणपतिसिंह ५–००
१४२४ अनुभूतयोगचिन्तामणि–अमोलकचन्द्र १२–००
१४२५ अनुभूतयोग पाँच भाग ५–००
१४२६ अनुभूतयोग प्रकाश–गणपति सिंह ६–२५
१४२७ अनुभूतयोगावली १–८५
१४२८ अनार के गुण ०–६२
१४२९ अपना इलाज आप करो १–२५
१४३० अभिनव विकृति विज्ञान–रघुवीर २२–००
१४३१ अ. शरीर क्रियाविज्ञान–प्रियव्रत शर्मा १०–००
१४३२ अभिनवशवच्छेदनविज्ञान–हरिस्वरूप १८–००
१४३३ अमृतसागर ११–००
१४३४ अरिष्टक (रीठा) गुणविधान ०–५०
१४३५ अरंड के गुण उपयोग १–२५
१४३६ अर्क प्रकाश–रावण भाषा टीका ३–००
१४३७ अष्टांगहृदय—अर्थप्रकाशिका १०–००
१४३८ अष्टांग संग्रह–(सूत्र स्थान) छांगाणी भा. टी. ८–००
१४३९ अष्टांग संग्रह–अत्रिदेव दो भाग हिन्दी ३८–५०
१४४० अष्टांगहृदय सूत्रस्थान भा.टी. ९–६०
१४४१ अष्टांगहृदय–मूल मोटा अक्षर ६–००
१४४२ अष्टांगहृदय–मूलगुटका काशी ४–००
१४४३ अष्टांगहृदय–हिन्दी टीका सहित पं. लालचंद १५–००
१४४४ अश्वशास्त्र ११–००
१४४५ आक गुण उपयोग हिन्दी २–५०
१४४६ आँख का अचूक इलाज ५–००
१४४७ आत्मसर्वस्व ६–३०
१४४८ आदर्श आहार–डा. एस. सी. दास १–२५
१४४९ आदर्श एलोपैथिक मैटेरिया मेडिका ७–५०
१४५० आधुनिक चिकित्सा विज्ञान–आशानन्द प्र. भाग १०–००
१४५१ आदिशास्त्र अर्थात् रतिशास्त्र १–८०
१४५२ आधुनिक चिकित्सा शास्त्र—श्री धर्मदत्तजी एलोपैथिक संपूर्ण चिकित्सा पर इससे बढ़िया ग्रन्थ आज तक नहीं छपा ३६–००
१४५३ आनन्दकंद संस्कृत १०–५०
१४५४ आपके बच्चे की खुराक ३–३७
१४५५ आपरेशन के दुष्परिणाम ०–५०
१४५६ आम्र के गुण १–५०
१४५७ आयुर्वेद इंजेक्शन चिकित्सा २–७५
१४५७ (क) आयुर्वेदीय विश्वकोष चौथा भाग ३०–००
१४५८ आयुर्वेद का इतिहास—सूरमचंद्र ८–००
१४५९ आयुर्वेद का इतिहास–अत्रिदेव छोटा ५–००
१४६० आयुर्वेद का बृहद् इतिहास—अत्रिदेव ११–००
१४६१ आयुर्वेद चिकित्सा मार्गदर्शिका—अत्रिदेव ५–००
१४६२ आयुर्वेद चिन्तामणि–(निघण्टु) ५–४०
१४६३ आयुर्वेद परिषद निबन्धावली ५–००
१४६४ आयुर्वेद प्रदीप–राजकुमार द्विवेदी १२–००
१४६५ आयुर्वेद विज्ञान—हिन्दी टीका २–००
१४६६ आयुर्वेद सूत्र १–८०
१४६७ आयुर्वेद प्रकाश भा. टी. १२–५०
१४६८ आयुर्वेदिक घरेलू चिकित्सा १–२५
१४६९ आयुर्वेदीय त्वचा रोग चिकित्सा १५–००
१४७० आयुर्वेदीय परिभाषा १–२५
१४७१ आयुर्वेदीय यंत्र शस्त्रपरिचय १–७५
१४७२ आयुर्वेदादर्शसंग्रह २–००
१४७३ आयुर्वेदमहोदधि १–२५
१४७४ आरोग्यचिन्तामणि ९–००
१४७५ आरोग्य प्रकाश रामनारायण ४–००
१४७६ आरोग्य लेखांजलि १–००
१४७७ आरोग्यविज्ञान २–००
१४७८ आरोग्यशिक्षा ०–६०
१४७९ आर्गेनन–हिन्दी ४–५०
१४८० आसन सातवलेकर २–५०
१४८१ आसवारिष्ट विज्ञान ३–००
१४८२ आहार ५–००

१२७५ प्रस्तारचक्र–भाषाटीक ०–१५
१२७६ फलित संग्रह–गमयत्न भाषाटीका १–००
१२७७ फलदीपिका––भावार्थ बोधिनी––पं. गोपेश कुमार ओझा कृत हिन्दी अनुवाद १५–००
१२७८ फलित मार्त्तण्ड–पं. मुकुन्दवल्लभ फलित के ऊपर महत्त्व का ग्रन्थ १२–००
१२७९ फलित सूत्र १–००
१२८० बीजगणित–संस्कृत-हिन्दी टीका ८–००
१२८१ बीजगणित–भास्करीय ३–००
१२८२ बीजपल्लवम् संस्कृत ३–७५
१२८३ बृहज्जातक–भाषा टीका ३–५०, ४–२०
१२८४ बृहज्ज्योतिषसार–भाषा टीका ६–००, ४–५०
१२८५ बृहत्पाराशरहोरा भा. टी. प. सीताराम २०–००
१२८६ बृहत्संहिता भाषा टीका ९–००
१२८७ बृहत्संहिता–भट्टोत्पली टीका सहित ३८–००
१२८८ बृहत्–होडाचक्रविवरण–भाषाटीका ०–७५
१२८९ बृहदवकहोडाचक्र भा. टी. वम्बई १–२०
१२९० बृहद्यवनजातक–भाषाटीका ३–००
१२९१ बृहद्वास्तुमाला ३–००
१२९१ (क) ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त ५०–००
१२९२ भङ्गीविभंगीकरण २–००
१२९३ भद्रबाहुसंहिता–मूलमात्र ५–७५ भा. टी. ८–००
१२९४ भविष्यफलभास्कर–भाषाटीका ४–२०
१२९५ भाग्य रहस्य–प्रद्युम्न नारायण १–५०
१२९६ भारतीय कुण्डली विज्ञान–हिन्दी ५–५०
१२९७ भारतीय ज्योतिष नेमीचन्द्र १२–००
१२९८ भारतीय ज्योतिष–(दीक्षित) मराठी का हिन्दी ८–००
१२९९ भावकुतुहल भा. टी. २–४०
१३०० भावप्रकाश–भाषा टीका १–२५
१३०१ भावफलाध्याय–भाषा टीका ०–५०
१२०२ भाभ्रमबोध ०–५०
१३०६ भृगुसंहिता फलित खंड १२–००
१३०४ भृगुसंहिता मूक प्रश्न १–५०
१३०५ भृगुसंहिता मेरठ वाली ५०–००
१३०६ भृगुसंहिता फलित प्रकाश ३१–००
१३०७ भृगुसंहिता––संतान उपाय खंड १०–००
१३०८ भृगुसंहिता सर्वारिष्ट निवारण खंड ६–००
१३०९ भृगुसंहिता स्त्रीखड ७–००
१३०९ (क) भृगुसंहिता कुंडली खंड १०–००
१३१० भृगुसूत्र ०–९०
१३११ भृगुसंहिता पद्धति भाषा १२–००
१३११ (क) मनुष्यजातक २–००
१३१२ महाभास्करीयम् (भास्कराचार्य) सव्याख्या २–००
१३१३ महाभास्करीयम् भास्कराचार्य सटीक ११–००
१३१४ मानसागरी–भाषा टीका १०–००, ९–००
१३१५ मुकन्दपद्धति २–००
१३१६ मुहूर्तकल्पद्रुम–विट्ठल दीक्षित २–००
१३१७ मुहूर्तचन्तामणि प्रमिताक्षरा सटीक ३–६०
१३१८ मुहूर्तचिन्तामणि–भाषा टीका ४–००, ३–००
१३१९ मुहूर्तम तंण्ड–भाषा टीका ३–००
१३२० मुहूर्तसंग्रहदर्पण–भाषा टीका ४–२०
१३२१ मेघमाला–भड्डली ०–६०
१३२२ यंत्रराजरचन्द्र १–७५
१३२३ यन्त्रराज–यनात्रशिरोमणि (महेन्द्र) २–५०
१३२४ याजुष ज्योतिष २–००
१३२५ योगिनी जातक–भाषा टीका ०–५०
१३२६ रत्नगर्भाचक्र–भाषा टीका ०–२०
१३२७ रत्नद्योत ०–७५
१३२८ रत्नदीपिका १–५०
१३२९ रत्नदीपिका–रत्नशास्त्र प्राचीन २–२५
१३३० रत्नपरीक्षादि सप्त संग्रह ९–२५
१३३१ रमल प्रश्नोत्तरी––दीवान रामचंद्र १–५०
१३३२ रमलमार्तण्ड ०–७०
१३३३ रमलगुलजार–केवल हिन्दी ४–८०
१३३४ रमलनवरत्न–भाषाटीका २–००, २–१०
१३३५ रमलरहस्य–संस्कृत मूल १०–८०
१३३६ रविसिद्धान्तमंजरी १–००
१३३७ राशिगोल स्फुट नीति २–५०
१३३८ राशिमाला ०–३०
१३३९ रेखा गणित सीताराम १–८०
१३४० लग्नचन्द्रिका–भाषा टीका १–८०
१३४१ लग्नजातक ०–४०
१३४२ लग्नरत्नाकर–भाषा टीका ०–४०
१३४३ लग्नवाराही–भाषा टीका ०–२०
१३४४ लघुजातक–भाषा टीका १–५०
१३४५ लघुपाराशरी–भाष्य दीवान रामचन्द्र कपूर कृत अनेक परिशिष्ट, व्याख्या सारणियां ८–००
१३४६ लघुपाराशरी–भा. टी. ०–७५, १–२५
१३४७ लघुभास्करीय–(भास्कराचार्य) सटीक २–००
१३४८ लघुभास्करीय–शंकर विवरण २–००
१३४९ लघुमानस–परमेश्वर व्याख्या ०–७५
१३५० लघुसंग्रह २–००
१३५१ लीलावती–विवरण व्याख्या दो भाग ४–७५
१३५२ लीलावती सटीक १४–००
१३५३ लोहगोलखंडन तथा लोहगोलसमर्थन २–००
१३५४ वटेश्वर सिद्धांत–भा. टी. ३०–००
१३५५ वनमाला–भाषा टीका ०–७५
१३५६ वर्षचन्द्रप्रकाश–चंद्रदत्त पन्त कृत १–००
१३५७ वर्षपद्धति २–००
१३५८ वर्षयोगसमूह–भा. टी. १–५०
१३५९ वास्तुमाणिक्यरत्नाकर ४–००
१३६० वास्तुरत्नाकर ४–००
१३६१ वास्तुरत्नावली–सं. हि. दोनों टीका २–५०
१३६२ वाक्यकरण––सटीक १३–५०
१३६३ वाराही (बृहत्) संहिता भा. टी. ९–६०
१३६४ विचित्ररहस्य २–००
१३६५ विमण्डलवक्रविचार ३–००
१३६६ विवाहवृन्दावन–सं. हिं. टीका ३–००
१३६७ विश्वकर्मविद्याप्रकाश ०–५०
१३६८ वङ्कटेश्वर शताब्दी पञ्चांग ४०–००
१३६९ वृन्दावली–भा. टी. ०–६०
१३७० व्यवहारिक ज्योतिषतत्व १०–००
१३७१ व्यवसाय का चुनाव और आपकी आर्थिक स्थिति ५–००
१३७२ शकुनविचार ०–२५
१३७३ शकुन विज्ञान–हीरालाल ५–००
१३७४ शिवजातक–भाषा टीका ०–२०
१३७५ शिशुबोध–भाषा टीका ०–७५
१३७६ शीघ्रबोध–भाषा टीका १–२०
१३७७ शुद्धिदीपिका–भाषा टीका ४–२०
१३७८ षटपंचाशिका–सं. हिं. टीका ०–५०

११७० केवल प्रश्नज्ञान चूडामणि ५–००
११७१ केशवीय जातक पद्धति–भाषा टीका ३–००
११७२ खेट कौतुक ०–२५
११७३ गणकतरंगिणी २–००
११७४ गणित का इतिहास–व्रजमोहन ९–५०
११७५ गणेशभविष्यफल २–००
११७६ गदावली—चक्रधर ३–००
११७७ गौरिकपत्राणि १–००
११७८ गोलतत्व प्रकाश २–१०
११७९ गोल परिभाषा ०–५०
११८० गोलप्रकाश १–५०
११८१ गोल दीपिका ३–७५
११८२ गोलीय रेखागणित १–५०
११८३ गोलाध्याय–भास्कराचार्य दो भाग पूर्ण ८–७५
११८४ गौरीजातक –भाषा टीका ०–३०
११८५ ग्रहगोचर–भाषा टीका ०–३०
११८६ ग्रहगणित मीमांसा ५–५०
११८७ ग्रहगणिताध्याय—भास्कराचार्य ६–५०
११८८ ग्रहचारनिबंध १–१२
११८९ ग्रहण न्याय दीपिका ७–००
११९० ग्रहण मण्डन परमेश्वर ५–००
११९१ ग्रहनक्षत्र–त्रिवेणीप्रसाद ४–२५
११९२ ग्रहरत्नभूषण १–२५
११९३ ग्रहलाघव–हिन्दी टीका ३–६०, ४–२०
११९४ ग्रहलाघव करण–मल्लारि सुधाकर द्वि. ६–००
११९५ ग्रहलाघवसारिणी २–१०
११९६ चंद्रहस्तविज्ञान–हस्तरेखा पर इससे बढ़िया ग्रन्थ आज तक नहीं छपा २०–००
११९७ चमत्कारचिन्तामणि–भाषा टीका ०–७५
११९८ चलनकलन प्रश्नोत्तर ०–७५
११९९ चलराशिकलन—दो भाग २–६२
१२०० चापीयत्रिकोणगणित–अच्युतानन्द १–५०
१२०१ चुने हुए ज्योतिष योग ५–००
१२०१क जन्मपत्र के फार्म (तीन का सेट) ०–१९
१२०२ जन्मपत्रिका बुक फार्म ०–६५
१२०३ जन्मपत्रदीपक १–५०
१२०४ जन्मपत्रव्यवस्था–भाषा टीका १–२५
१२०५ जयपाहुड–निमित्त शास्त्र-प्राकृत ६–६०
१२०६ जातकचंद्रिका भा. टी. १–५०
१२०७ जातकतत्व ८–५०
१२०८ जातक शिरोमणि–भाषा टीका ४–२०
१२०९ जातकसारदीप सटीक १४–००
१२१० जातकाभरण–भाषाटीका ६–००, ४–००
१२११ जातकालंकार–संस्कृत तथा हिन्दी टीका १–००, ०–७५
१२१२ जैन सामुद्रिक–चार ग्रन्थ २०–००
१२१३ जैमिनीय पद्यामृत १–५०
१२१४ जैमिनीय सूत्र–संस्कृत टीका २) हि. टी. १–५०
१२१५ ज्योतिष और रोग ५–००
१२१६ ज्योतिषकल्पद्रुमभाषा ३–२०
१२१७ ज्योतिष की पहुंच १०–००
१२१८ ज्योतिषजगत्–पं. दुर्गादत्त, ज्योतिष सीखने वालों के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ २–५०
१२१९ ज्योतिष गणित फलितज्ञान अजीतमल ३–५०
१२२० ज्योतिष प्रबोध–गणेशदत्त ०–३०
१२२१ ज्योतिषफल ज्ञानप्रदेश अजीतमल ३–२५
१२२२ ज्योतिषरत्नमाला—संस्कृत १२–००
१२२३ ज्योतिषरत्नाकर–देवकीनंदन प्रथम भागनद १२–००
१२२४ ज्योतिषविज्ञान–विशुद्धानन्द ६–००
१२२५ ज्योतिषविज्ञान १२–००
१२२६ ज्योतिष में स्वर-विज्ञान का महत्त्व–केदारदत्त ३–००
१२२७ ज्योतिषशास्त्रसोपान २–००
१२२८ ज्योतिष सर्वसंग्रह–भाषा टीका २–५०
१२२९ ज्योतिष सार ३–६०
१२३० ज्योतिष रहस्य (गणित खंड) गुप्त ५–००
१२३१ ज्योतिर्विज्ञानम्–संस्कृत ९–००
१२३२ ताजिकनीलकंठी–सं. टीका ३–००, २–५०
१२३३ ताजिक नीलकंठी–भाषा टीका ६–००
१२३४ तात्कालिक भृगु प्रश्न ३–००
१२३५ तिथि चिन्तामणि–भाषा टीका ०–५०
१२३६ तिथिचिन्तामणि–गणेशदैवज्ञ ०–८७
१२३७ तेजीमन्दी विचार–हिन्दी रतलाम १–५०
१२३८ दयाविलास–महन्त दयाराम जी ४–००
१२३९ दशाफल विचार जगजीवनराम १–५०
१२४० दशवर्षीय पंचांग २०२७ से २०३६ १२–००
१२४१ दीपिका–शुद्धदीपिका–भाषा टीका ४–२०
१२४२ देवकेरलम् ३ भाग संस्कृत २३–७५
१२४३ दैवज्ञवल्लभ–भाषा टीका १–०५
१२४४ दैवज्ञाभरणम्–संस्कृत ६–२५
१२४५ द्वात्रिंशद्योगावलीजातक–भा. टी. ०–१२
१२४६ दृक्सिद्ध पंचांग निर्माण पद्धति ६–००
१२४७ दृग्गणित (परमेश्वर) ६–००
१२४८ धराचक्र–भाषा टीका ०–३५
१२४९ धराभ्रम—सुधाकर द्वि. ०–३७
१२५० नरपतिजयचर्या सं. टीका ५–२५
१२५१ नन्हिदत्त पंचविंशतिका ०–१३
१२५२ नाड़ीमान विवाह पटल ०–५०
१२५३ नष्टजन्मांग १–५०
१२५४ पद्यकोश–भाषा टीका ०–५०
११५५ पद्यपंचाशिका ०–६०
११५६ परमसिद्धान्त ज्योतिष ८–४०
१२५७ पत्रीमार्ग प्रदीपिका—महादेव ३–००
१२५८ पत्रीमार्ग प्रदीपिका–वषदीपक २–७०
१२५९ परवलयक्षेत्र ०–५०
१२६० पल्लीपवन कारिका ०–२५
१२६१ पंचांग दर्पण ६–००
११६२ पंचांगमंजूषा–भाषा टीका १–००
१२६३ पंचांगविज्ञान ०–५०
१२६४ पंचवर्षीय मानवपंचांग ३–००
१२६५ पंचस्वरा १–७५
१२६६ प्रतिभाबोधक ०–६५
१२६७ प्रश्नकुतूहल १–००
१२६८ प्रश्नचन्द्रप्रकाश—चंद्रदत्त पंत ४–००
११६९ प्रश्नचण्डेश्वर–भाषा टीका १–५०
१२७० प्रश्नज्ञानप्रदीप–भाषा टीका १–८०
१२७१ प्रश्नभूषण–संस्कृत हिन्दी टीका ०–७५
११७२ प्रश्न वैष्णव–भाषा टीका १–२०
१२७३ प्रश्नशिरोमणि ४–२०
१२७४ प्रश्नांकचूड़ामणि ०–२५

१०७२ बृहत्स्तोत्र रत्नाकर मोटाअक्षर बम्बई ४–२०
१०७३ „ „ सचित्र गुटका ५–००
१०७४ भवानीसहस्रनाम –भुवनेश्वरी स्तोत्र ०–६५
१०७५ भीष्मस्तवराज ०–१५
१०७६ भुवनेश्वरी महास्तोत्र ३–७५
१०७७ मृत्युञ्जय स्तोत्र ०–१२
१०७८ महाकालशनिमृत्युञ्जय ०–२०
१०७९ महामृत्यंजयजप ०–२०
१०८० महालक्ष्मीस्तोत्र ०–५०, ०–२५
१०८० (क) महालक्ष्म्यष्टक ०–२५
१०८१ महालक्ष्मीकवच ०–१०
१०८२ महिम्नस्तोत्र–मधुसूदनी टीका ०–७५, ०–६०
१०८३ महासरस्वती चालीसा ०–१२
१०८४ राम महिम्न ०–२०
१०८५ राम सहस्रनाम ०–२५
१०८६ रामस्तवराज ०–४०
१०८७ रामरक्षास्तोत्र ०–१५
१०८८ रामपटल ०–७०, भा० टी० २–५०
१०८९ राधिकासहस्रनाम ०–१२
१०९० रेणुकासहस्रनाम ०–३५
१०९१ ललितासहस्रनाम स्तोत्र ०–७५, ०–५०
१०९२ ललितास्तवमणिमाला ०–५०
१०९३ लक्ष्मीनारायणहृदय ०–७५
१०९४ लक्ष्मीनृसिंह ०–२०
१०९५ लक्ष्मीस्तोत्र ०–१५
१०९६ लक्ष्मी सहस्रनाम ०–३५
१०९७ विष्णु सहस्रनाम मूल ०–१५, ०–६०, ०–४४
१०९८ „ नामावली ०–७०, ०–५०
१०९९ „ भा. टी. १–००
११०० विष्णुसहस्रनाम सातवलेकर १–५०
११०१ विष्णुसहस्रनाम शंकरभाष्य मैसूर ४–५०
११०२ वेंकटेश्वराष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र ०–१०
११०३ शनिस्तोत्र ०–१५
११०४ शिवकर्णामृत ०–७५
११०५ शिवचालीसा ०–२५
११०६ शिवकवच ०–४०
११०७ शिवस्तोत्र ०–१५

११०८ शिवस्तोत्रावली भा. टी. १०–००
११०९ शिवताण्डव स्तोत्र ०–२०
१११० शिवताण्डव भाषा टीका ०–२०
११११ शिवापराधक्षमापन स्तोत्र ०–२०
१११२ शिवमहिम्न स्तोत्र मूल ०–३०
१११३ „ „ भाषाटीका ०–५०, ०–२०
१११४ शिवसहस्रनाम मूल ०–५०, ०–६५
१११५ शिवसहस्रनाम भा. टी. ०–६०
१११६ शिवसहस्रनामावली ०–५०
१११७ शीतलाष्टक ०–१०
१११८ संतानगोपालस्तोत्र ०–२५
१११९ सिद्ध सरस्वती स्तोत्र ०–२५
११२० सीतासहस्रनाम ०–१०
११२१ सूर्यद्वादशस्तवी ०–२०
११२२ स्तोत्रार्णव मदरास २०–३०
११२३ स्तोत्ररत्नावली ०–५०
११२४ स्तवसार्वभौम ०–२५
११२५ स्तोत्रसमाहार ३–५०
११२६ स्तोत्र समुच्चय दो भाग ५०–००
११२७ सूर्यकवच ०–१२
११२८ सूयसहस्र नामावली ०–७५
११२९ हनुमत्कवच ०–२५
११३० हनुमान चालीसा ०–२०
११३१ हनुमत्सहस्रनाम ०–२०
११३२ हरिहरस्तोत्र २–००

अच्युत ग्रन्थमाला

११३३ अच्युत लेख माला—महात्माओं के सुन्दर लेख २–००
११३४ भगवन्नामकौमुदी–श्रीलक्ष्मीधर, अनन्तदेव सं. ०–७५
११३५ शुल्वसूत्र–(कात्यायनश्रौत का परिशिष्ट, ०–३७
११३६ खण्डन खण्ड खाद्य हिन्दी टीका सहित ८–००
११३७ प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणि–सदानन्द व्यास सटीक ५–००
११३८ तिथ्यर्क—तिथियों के निर्णय पर अपूर्व ग्रंथ २–००
११३९ परमार्थसार–सटीक ०–५०
११४० प्रेमपत्तन–श्री रसिकोत्तमकृत सटीक १–२५
११४१ काशीकेदारमाहात्म्य–ब्रह्मवैवर्तपुराणान्तगत ३–००
११४२ प्रकरणपञ्चक–श्री शंकराचार्य भा. टी. ०–७५
११४३ विवरण प्रमेय संग्रह–श्रीविद्यारण्यमुनि भा. टी. ६–५०
११४४ वेदान्तसिद्धान्तकल्पवल्ली–श्री सदाशिवेन्द्र ०–७५
११४५ वृहदारण्यकवार्तिकसार–दो भागों में भा.टी. १२–००
११४६ षट्सन्दर्भ–तत्त्वसन्दर्भ–व्याख्याद्वयोपेत १–५०
११४७ योगवासिष्ठ भा. टी. चतुर्थ १०–००, पंचम ८–००
११४८ भागवत एकादशस्कन्ध भा.टी. दो भाग ६–५०
११४९ शिवस्तुति–श्री गोकुलनाथ सटीक, हि. टी. ०–६२
११५० सिद्धान्तलेशसंग्रह–हिन्दी अनुवाद सहित ६–००
११५१ स्तुतिकुसुमांजलि–हिन्दी टीका सहित १५–००

ज्योतिष

११५२ अंकविद्या—श्रीगोपेशकुमार ओझा ४–००
११५२ (क) अखंडत्रिकालज्ञ ज्योतिष ४–५०
११५३ अखंडभाग्योदय दर्पण—भगवानदास ३–००
११५४ अंगविज्जा–प्राकृत भाषा में–मु. पुण्यविजय जीसं. २१-०
११५५ अर्घ मार्तण्ड–राज ज्योतिषी पं. मुकुन्दवल्लभ जी कुमाली वालों की अभूतपूर्व पुस्तक दूसरा संस्करण विशेष परिवर्द्धित १२–००
११५६ अर्घप्रकाश–भा. टी. ०–७५
११५७ अथर्ववेदीय ज्योतिष १–००
११५८ आर्यभट्टीय—सं. तथा हि. टीका ८–००
११५९ आर्या सप्तति–भट्टोत्पल ०–५०
११६० आशुबोध ज्योतिष ०–३८
११६१ अर्वाचीन ज्योतिर्विज्ञान १३–००
११६२ अहिबल चक्र–हिन्दी टीका सहित ०–३०
११६३ करण कौस्तुभ–कृष्णदेवज्ञ ०–७५
११६४ करणप्रकाश ३–००
११६५ करणोत्तम अच्युत संस्कृत २–२५
११६६ करलखण–सामुद्रिक–भाषा टीका १–५०
११६७ कर्मविपाक–नक्षत्रचरणगत भा० टी० ६–००
११६८ कालचक्र दी. रामचंद कपूर ३–००
११६९ कुट्टाकारशिरोमणि–(देवराज) सं. व्याख्या १–००

९६९ श्रीभुवनेश्वरीस्तव मंजरी ३—००
९७० श्रीललिता नित्यार्चन ४—००
९७१ श्रीविद्या वज्रमाला १।।) हि, टीका ४—००
९७२ श्रीविद्यास्तवमंजरी ४—५०
९७३ श्री विद्या नित्यार्चन ५—५०
९७४ श्री विद्यार्णव प्रथम भाग १५—००
९७५ श्रीश्यामापूजा पद्धति ३—००
९७६ श्रीश्यामासपर्यावासना ४—५०
९७७ श्रीत्रिपुरामहोपनिषद् १—५०
९७८ श्री षोडषी नित्यार्चन ४—००
९७९ सप्तशती मीमांसा २—५०
९८० सप्तशती रहस्य ३—५०
९८१ सविधिआपदुद्धार बटुक भैरव ०—७५
९८२ सविधि काली कर्पूरस्तव १—००
९८३ सात्वत तंत्र ३—००
९८४ सार्थ सौन्दर्य लहरी ५—५०
९८५ सावरि तन्त्र—(सेवड़े का जादू) भाषा ५—००
९८६ साख्यायनतन्त्र ३—००
९८७ साधक संवाद ४—५०
९८८ संतान सुख प्राप्ति के प्रयोग १—००
९८९ स्वच्छन्दतंत्र—क्षेमराज कृतव्याख्या सात ाग १६—५०
९९० सोमशम्भुपद्धति २५—००
९९१ सौन्दर्य लहरी—अंग्रेजी अनु.सचित्र अमरीका ५५—२४
९९२ सौन्दर्यलहरी पद्यात्मक २—००
९९३ सौन्दर्यलहरी (आनंद लहरी) २—२५
९९४ सौन्दर्यलहरी २—५०
९९५ सौभाग्य लक्ष्मी—भाषा टीका सहित १—३०
९९६ हि. कुलार्णव
९९७ हि. कौलावलीनिर्णय ५—००
९९८ हि. तन्त्रसार ३ भाग ८—००
९९९ ज्ञानार्णव तत्र—मूलमात्र पूना २—००
१००० ज्ञानसंकलिनी तंत्र १—५०
१००१ त्रिपुराभारती लघुस्तव ३—२५

स्तोत्र

१००२ अन्नपूर्णा स्तोत्र ०—१५
१००३ अपराजिता स्तोत्र ०—२०
१००४ अक्षरलहरी ०—५६
१००५ आदित्य हृदय ०—५० ०—६०
१००६ आदित्यहृदय —चक्रोधार सहित १—००
१००७ आदित्यहृदय—मोटा अक्षर सूर्यकवच ०—८०
१००८ आदित्यहृदय—छोटा अक्षर ०—३४
१००९ आदित्यहृदय—नवग्रहसहित ०—९०
१०१० आनन्दलहरी स्तोत्र—डिण्डिमभाष्य, सटीक २—२५
१०११ आपदुद्धारकबटुकभैरवस्तोत्र ०—५० ०—२०
१०१२ आरतीसंग्रह—भाषा ०—२५
१०१३ आलबंदार स्तोत्र ०—५० ०—१५
१०१४ एकमुखी हनुमत्कवच ०—१२
१०१५ ऋणमोचन मंगलस्तोत्र ०—१०
१०१६ इन्द्राक्षीस्तोत्र ०—१५
१०१७ ककारादि कृष्णसहस्रनाम ०—९०
१०१८ कपूरस्तवराज ०—४०
१०१९ कर्पूरस्तवराज—(महाकाल) सटीक ८—००
१०२० कंठाभरण हि. अनु. ०—५०
१०२१ कमलनेत्र स्तोत्र ०—१५
१०२२ कार्तवीर्य स्तोत्र ०—५०
१०२३ कालिकासहस्रनाम ०—६०
१०२४ कालीकवच ०—१०
१०२५ कुशपामार्जन स्तोत्र ०—२५
१०२६ कुञ्जिकास्तोत्र ०—४०
१०२७ गंगालहरी—मूल ०—२५, ०—४०, ०—१५
१०२८ गंगालहरी—पीयूषलहरी सं. टीका १—००
१०२९ गंगालहरी—भाषा टीका ०—५०, ०—४०
१०३० गजेन्द्रमोक्ष—भाषा टीका ०—२५
१०३१ गणपतिस्तोत्र—गणेशमहिम्न ०—२०
१०३२ गणेशस्तोत्र ०—१२
१०३३ गणेशकवच ०—२०
१०३४ गणेशमहिम्न स्तोत्र ०—१०
१०३५ गणेशसहस्रनाम मूल ०—१५ सटीक १—२५
१०३६ गणेशसहस्रनामावली ० ७५
१०३७ गणेशाष्टक ०—२०
१०३८ गायत्रीसहस्रनाम ०—१२
१०३९ गायत्री रामायण ०—१०
१०४० गायत्री स्तोत्र ०—१५
१०४१ गोपाल सहस्रनाम—मूल ०—५०, ०—७५
१०४२ गोपाल सहस्रनाम—भा. टी. १—००, १—५०
१०४३ गोपाल सहस्रनामावली ०—५०
१०४४ चर्पटपंजरी ०—१५, भा. टी. योगानन्द १—५०
१०४५ चतुःश्लोकी भागवत ०—१३
१०४६ तुलसी कवच ०—२०
१०४७ दत्तात्रेय सहस्रनामावली ०—६०
१०४८ दत्तात्रेयसहस्रनाम० ०—६०
१०४९ दत्तात्रयस्तोत्र ०—२०
१०५० दक्षिणामूर्तिस्तोत्र ०—१५
१०५१ देवीपुष्पांजली स्तोत्र १—००
१०५२ देवीस्तोत्र पंचक ०—२५
१०५३ देवीसहस्रनाम ०—५०
१०५४ देवी सहस्रनामावली ०—६०
१०५५ देव्यपराधक्षमापन स्तोत्र ०—१५
१०५६ दुर्गाकवच ०—३०, भा. टी. ०—६०
१०५७ दुर्गाचालीसा ०—२५
१०५८ नर्मदाष्टक ०—२०
१०५९ नवग्रह स्तोत्र ०—१०
१०६० नृसिंहसहस्र नाम ०—२५
१०६१ नवग्रहस्तोत्र—यन्त्रमन्त्र कवच आदि सहित ०—६०
१०६२ नारायण कवच ०—२५
१०६३ नारायणवर्म ०—३०
१०६४ पंचमुखीहनुमत्कवच ०—३०
१०६५ पुषोत्तम सहस्रनाम ०—५०
१०६६ प्रत्यंगिरास्तोत्र ०—४०
१०६७ बजरंगबाण ०—१०
१०६८ बगुलामुखी स्तोत्र ०—१०
१०६९ ब्रह्मज्ञानावली ०—१०
१०७० बटुक भैरव सहस्रनाम ०—५६
१०७१ बृहत्स्तोत्र रत्नाकर—मोटा अक्षर काशी ४-००,४—५०

८६१	तंत्रोपाख्यान	०-५०
८६२	तांत्रिक पंचांग	३-००
८६३	तारिणी पारिजात	४-००
८६४	तोडल तन्त्र	१-५०
८६५	त्रिपुरारहस्य—माहात्म्य खंड भाषा टीका	
८६६	त्रिपुरारहस्य ज्ञानखंड	९-००
८६७	त्रिपुरारहस्य ज्ञानखंड हि. टीका	१३-००
८६८	त्रिपुरासारसमुच्चय	
८६९	दकारादिदुर्गानाम सहस्र	०-७५
८७०	दत्तात्रेय तंत्र—भा. टी.	१-२०
८७१	दुर्गा पञ्चाङ्ग-मूल-मातृप्रसाद पाण्डेय	१-२५
८७२	दुर्गा पूजा श्यामा पूजा पद्धति	१-५०
८७३	दुर्गास्तव मंजरी	२-५०
८७४	दुर्गा सप्तशती-गुटका-मूल	०-७५
८७५	दुर्गा सप्तशती-गुटका निर्णयसागर	३-००
८७६	दुर्गा-गीता प्रेस भा. टी.	१-२५
८७७	दुर्गा सप्तशती-पत्रात्मक	२-७०
८७८	दुर्गा सप्तशती-मूल बम्बई खुला ३-५० जिल्द	४-००
८७९	दुर्गा सप्तशती-भाषा टीका सहित ३-००,	२-५०
८८०	दुर्गा सप्तशती-पंडित रामेश्वर भाषा टीका	२-४०
८८१	दुर्गा शान्तनवी सं. टीका खुला	३-६०
८८२	धनप्राप्ति के प्रयोग	१-५०
८८३	धन्वन्तरी तंत्रशिक्षा-हिन्दी टीका सहित	३-००
८८४	धर्ममार्ग पर	४-००
८८५	नित्यषोडशिकार्णव तंत्र दो व्याख्या	२५-००
८८६	निरुत्तरतंत्र	३-००
८८७	निर्वाण तंत्र	२-००
८८८	नीलतन्त्र	२-००
८८९	नेत्रतंत्र-क्षेमराज कृत व्याख्या दो भाग	६-५०
८९०	पञ्चदशीयतंत्र	०-५०
८९१	परमसंहिता	१५-००
८९२	परशुरामतंत्र	१-००
८९३	परातंत्र	२-००
८९४	परायणविधि	२-००
८९५	पुरश्चरणपद्धति	१-५०
८९६	प्रत्यंगिरापंचांग	२-१०
८९७	प्रपंचसार संग्रह दो भाग	३९-००
८९८	पंचमकार तथा भावत्रय	४-००
८९९	बगुलोपासना पद्धति	१-००
९००	बटुकभैरवोपासनाध्याय-मूल खुला पत्रा	३-६०
९०१	बृहत् इद्रजाल बड़ा १०-५० तथा	४-८०
९०२	बगुलामुखी रहस्य	४-५०
९०३	ब्रह्म संहिता	६-००
९०४	भगवती गीता	५-५०
९०५	भुवनेश्वरी रहस्य	३-००
९०६	भैरवीचक्र पूजन	१-००
९०७	भैरवोपदेश	३-५०
९०८	महाचीताचारसारतंत्र	
९०९	महामृत्युञ्जय जपविधि-भा. टी.	०-५०
९१०	महामृत्युञ्जय पञ्चाङ्ग-मातृप्रसाद पाण्डेय	१-२५
९११	महात्रिपुरासुन्दरीपूजाकल्प	१-२५
९१२	मातृ उपासना	२-५०
९१३	मातृका भेद	२-५०
९१४	मातृका भेद तंत्र संस्कृत	१२-००
९१५	मालिनी विजय तन्त्र-आगम शास्त्र	३-५०
९१६	माहेश्वर तन्त्र-श्री कृष्णप्रियाचार्य	९-००
९१७	माहेश्वरी तंत्र	०-५५
९१८	मंत्रकोश	२-००
९१९	मंत्रकौमुदी-देवनाथ मूल	६-००
९२०	मंत्रमहोदधि-सटीक खुला	१०-८०
९२१	मंत्ररामायण-सटीक	२-१०
९२२	मंत्र और मातृकाओं का रहस्य	१६-००
९२३	मंत्र सिद्धि का उपाय	२-५०
९२४	मुद्राएं एवं उपचार	२-००
९२५	मुमुक्षु मार्ग	६-००
९२६	मृगेन्द्रतन्त्र-विद्यापाद-योगपाद व्याख्या	३-००
९२७	मृगेन्द्रागम	१८-००
९२८	यंत्रचिन्तामणि	१-६०
९२९	योगिनीतन्त्र-हिन्दी टीका सहित	८-५०
९३०	योगिनीहृदय-दीपिका व्याख्या	१०-००
९३१	रौरव आगम	१८-००
९३२	रुद्रयामलतंत्र संस्कृत उत्तरभाग	६-५०
९३३	रुद्रयामलतंत्र	१-२०
९३४	ललिता सहस्रनाम-मूल मात्र बम्बई	०-५०
९३५	ललितस्तवमणिमाला-बम्बई	०-७५
९३६	लक्ष्मीतन्त्र-पाञ्चरात्र	३०-००
९३७	वन्देमातरम्	२-००
९३८	वंध्यातंत्र	०-५५
९३९	वामकेश्वरीमत विवरण-जयरथ कृत	१-००
९४०	वाममार्ग	४-००
९४१	वारिवास्य रहस्य	१५-००
९४२	वैदिक नवरात्र पूजापद्धति	१-००
९४३	वैदिक श्री बगुला पूजा पद्धति	२-००
९४४	शतचण्डीविधान	३-७५
९४५	शाक्तदर्शन	३-००
९४६	शाक्त धर्म क्या है	३-००
९४७	शाक्तानंद तरंगणी	३-५०
९४८	शारदा तिलक सटीक	१५-००
९४९	शैव मनोरंजनी	१-००
९५०	श्रीकमलास्तव मंजरी	२-००
९५१	श्री कल्प द्रुम	५-५०
९५२	श्री कमला नित्यार्चन	३-००
९५३	श्री काली नित्यार्चन	४-००
९५४	श्री काली स्वरूप तत्व	२-००
९५५	श्री काली स्तव मञ्जरी	३-५०
९५६	श्री छिन्नमस्ता नित्यार्चन	२-००
९४७	श्री तारा स्वरूप तत्व	२-००
९५८	श्री तारा नित्यार्चन	३-००
९५९	श्री तारास्तव मञ्जरी	२-५०
९६०	श्रीदुर्गा नित्यार्चन	३-००
९६१	श्रीदुर्गास्तव मंजरी	२-५०
९६२	श्रीनारायणस्वरूप तत्व	२-००
९६३	श्रीनाथादिगुरुत्रय	३-५०
९६४	श्रीबगुला नित्यार्चन	२-००
९६५	श्रीबाला नित्यार्चन	४-००
९६६	श्री वन दुर्गा	०-४०
९६७	श्रीबालास्तवमंजरी	२-५०
९६८	भुवनेश्वरी नित्यार्चन	४-००

७६० वेदान्त सूत्र मुक्तावलि—ब्रह्मानंद सरस्वती—पूना ३—५०
७६१ वेदान्त संज्ञा—भा. टी. १—००
७६२ वेदान्त संज्ञावली १—००
७६३ वेदान्तस्तोत्र संग्रह १—००
७६४ वैयासिक न्यायमाला ४—००
७६५ वृत्ति प्रभाकर—स्वा. आत्मानंदकृत सरल हिंदी ९—००
७६६ शंकरदिग्विजय भा. टी. १३—५०
७६७ शंकरदिग्विजय ४—००
७६८ शांकरग्रन्थावलि—६ भाग में (प्रकरण, लघुभाष्य, स्तोत्र, भगवद्गीता, उपनिषद्) हर एक का ६—५०
७६९ शांकरग्रन्थावलि—दशोपनिषद् ब्रह्मसूत्र तथा भगवद्गीता ३ भाग में ११—७५
७७० शांकर पादभूषण—रघुनाथ सूरि—दो भाग १२—५०
७७१ शंकराचार्यकृत—प्रकरण ग्रन्थ (संग्रह) ७० ग्रंथ १२—५०
७७२ शतश्लोकी—नाथूराम १—५०
७७३ शिवतत्त्वरत्नाकर बसवा विरचित ११—००
७७४ शुद्धाद्वैतमार्तण्ड ५—००
७७५ श्रीभाष्य—श्रुतप्रकाशिका सहित संपूर्ण १००—००
७७६ श्रीभाष्य—सटीक संपूर्ण २८—१२
७७७ श्रीभाष्य प्रकाशिका—श्री निवासाचार्य ६—५०
७७८ श्री सुबोधिनी—श्री वल्लभाचार्य ९—००
७७९ श्रुतिसिद्धान्तरत्नाकर ४—२०
७८० श्रुत्यन्त कल्पवल्ली—पुषोत्तमदास ६—००
७८१ श्रुत्यन्त सुरद्रुम—पुरुषोत्तम ९—००
७८२ संक्षेप शारीरिक—अन्वयार्थ व्याख्या १३—००
७८३ संक्षेप शारीरिक—सुबोधिनी तथा अन्वयार्थ १३—५०
७८४ संक्षेप शारीरिक हिन्दी सहित १०—००
७८५ सदाचार १—१२
७८६ सनत्सुजातीय—शंकर भगवत्पाद भाष्य सटीक २—००
७८७ सनत्सुजातीय भा. टी. २—५०
७८८ सन्तवचनामृत १—२५
७८९ साधनसम्पदा २—००
७९० साधन संग्राम—भागीरथ जी ६—५०
७९१ साधनापथ—शिवोमप्रकाश १—००
७९२ सत्संग के बिखरे मोती—भाषा ०—९०
७९३ सत्संगसुधा ०—६५
७९४ स्तुतिकुसुमांजलि भा. टी. १५—००
७९५ सारुक्तावली—(भाषा) ०—३५, ०—७५
७९६ सिद्धान्तकल्पवल्ली ०—७५
७९७ सिद्धान्तदर्शन—विश्वदेवाचार्यकृत निरञ्जन-भाष्य २—००
७९८ सिद्धान्त बिंदु—वासुदेव अभ्यंकर सं. टी. १५—००
७९९ सिद्धान्तसिद्धाञ्जन-रत्नतूलिका सहित १७—००
८०० सिद्धान्तलेशसंग्रह भा. टी. ६—००
८०१ सिद्धान्तलेशसंग्रह सटीक संपूर्ण ११—००
८०२ सिद्धान्ततत्त्वबिन्दु—मधुसूदन २—००
८०३ सुन्दर विलास बम्बई ३—२०
८०४ सूतसंहिता—तात्पर्य दीपिका सहित १०—००
८०५ सूतसंहिता ३ भाग १७—२५
८०६ सूत्रार्थामृतलहरी ३—२५
८०७ स्वानंदानुभव ०—६२
८०८ स्वानुभवादर्श ६—००
८०९ स्वराज्यसिद्धि भा. टी. १—८८
८१० हरिभक्ति रसामृतसिन्धु भा. टी. ९—५०
८११ हरिवाक्यसुधासिन्धु—हरिप्रकाश १५—००
८१२ हरिहराद्वैत भूषण ६—६२
८१३ हिन्दी खण्डनखण्डखाद्य भा. टी. २५—००
८१४ त्रिशश्लोकी ४—५०
८१५ ज्ञानमाला—भाषा ०—४०
८१६ ज्ञानविलास—चैतन्यानन्द ७—००
८१७ ज्ञान वैराग्यछन्दावली २—२५
८१८ ज्ञानवैराग्य प्रकाश—स्वा. परमानंद भाषा २—४०

तंत्र-मंत्र

८१९ अजितागम दो भाग ४१—००
८२० अघोरी का उपदेश १—००
८२१ अक्षयवट ०—५०
८२२ आनन्द लहरी २—२५
८२३ इन्द्रजाल विद्या संग्रह—संस्कृत ६—००
८२४ आसुरिकल्प ०—२५
८२५ आगम प्रामान्य १—२५
८२६ उच्छिष्ट गणपति २—१०
८२७ कौलकीर्तन १—२५
८२८ उड्डामरेश्वर तंत्र—मूल १—३५
८२९ उड्डीश तन्त्र—भाषा टीका १—००
८३० उपदेशमुक्तावली ६—५०
८३१ कर्पूरादिस्तोत्र—सटीक ८—००
८३२ ककारादि कालीसहस्रनाम १—००
८३३ कामधेनुतन्त्र २—५०
८३४ कालीकर्पूरस्तव १—००
८३५ कालीतन्त्र २—००
८३६ कुलार्णवतंत्र ३—५०
८३७ कुलार्णवतन्त्र प्रथम उल्लास ०—५०
८३८ कौलोपनिषद ४—५०
८३९ क्रमदीपिका—केशव भट्ट कृत काशी ९—००
८४० क्रियोड्डीशतंत्र १—५०
८४१ गायत्री तत्त्व विमर्श २—००
८४२ गायत्री तन्त्र—भाषाभाष्य समेत १—१०
८४३ गायत्रीरहस्य ४—५०
८४४ गायत्रीरहस्य अर्थात् गायत्री पंचांग ४—००
८४५ गायत्रीपुरश्चरण संस्कृत ४—००
८४६ गायत्रीपुरश्चरण विधि १—००
८४७ गायत्रीपूजापद्धति—(तान्त्रिकी) विभाकराचार्य ०—२५
८४८ चक्रपूजा के स्तोत्र १—५०
८४९ चण्डी का महात्म्य १—००
८५० जयाख्यसंहिता ५०—००
८५१ तत्त्वनिधि—कृष्ण राज संगृहीत बम्बई ८—४०
८५२ तंत्रकौमुदी देवनाथ ८—००
८५३ तंत्रमहाविज्ञान २ खंड १५—००
८५४ तन्त्रसार—कृष्णानन्द अपूर्ण संस्कृत ३—००
८५५ तंत्रसार संग्रह—(विषनारायणीय) सव्याख्या १५—२५
८५६ तंत्रसंग्रह नीलकण्ठ ३—४०
८५७ तंत्रसमुच्चय तीसरा भाग ५—००
८५८ तंत्रालोक—अभिनव गुप्त कृत १२ भाग में ३९—००
८५९ तारापुर का महामानव
८६० तांत्रिक आह्निक ४—५०

६५८ ब्रह्मवाद संग्रह—शुद्धाद्वैत भा. टी. २—००
६५९ ब्रह्म सिद्धान्त—पं. मधुसूदन १२—००
६६० ब्रह्मसिद्धि व्याख्या भावशुद्धि २४—००
६६१ ब्रह्मसूत्र—शांकरभाष्य ३—५०
६६२ ब्रह्मसूत्र-भामती कल्पतरु परिमल ३५—००
६६३ ब्रह्मसूत्रवृत्ति—मरीचिका ६—००
६६४ ब्रह्मसूत्र चतुस्सूत्री विश्वेश्वर ५—००
६६५ ब्रह्मसूत्र—देवाचार्य ९—००
६६६ ब्रह्मसूत्रीयवेदान्तवृत्ति—श्री रामानन्दप्रणीत १—२५
६६७ ब्रह्मसूत्रवृत्ति——मिताक्षरा ७—००
६६८ ब्रह्मसूत्रवृत्ति—शंकर प्रणीत अद्वैत मंजरी १—००
६६९ ब्रह्मसूत्र—शांकर भाष्यार्थरत्नमाला सुब्रह्मण्यकृत ६—७५
६७० ब्रह्मसूत्रवृत्ति—हरिदीक्षित कृत ३—७५
६७१ ब्रह्मसूत्र भा. टी. दो भाग हनुमानदास ३०—००
६७२ ब्रह्मसूत्र—शांकर भाष्य का केवल भाषानुवाद ९—००
६७३ ब्रह्मसूत्र—मराठी टीका सहित ३ भाग में ३६—००
६७४ ब्रह्मसूत्र—विद्योदय उदयवीर भा. टी. २०—००
६७५ ब्रह्मसूत्र शंकरभाष्यआनंदगिरिकेवलदूसराभाग ९—००
६७६ ब्रह्मसूत्र—शंकरभाष्य सत्यानन्द भा. टी. १६—००
६७७ ब्रह्मसूत्र दीपिका ६—००
६७८ ब्रह्मसूत्र—सुषमा हनुमानदास ४—००
६७९ ब्रह्मसूत्र द्वैताद्वैतदर्शन ९—००
६८० ब्रह्मसूत्र भूमिका श्री गोपीनाथ १—००
६८१ ब्रह्मसूत्र ब्रह्मामृतवर्षिणी ६—७५
६८२ ब्रह्मसूत्रों के वैष्णव भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन १०—००
६८३ ब्रह्मसूत्रसिद्धांतमुक्तावली ३—७५
६८३ (क) ब्रह्मसूत्र विद्यानन्द वृति ७—५०
६८४ ब्रह्मसंकीर्त्तन-डोगरीवेदान्त ८-२५
६८५ ब्रह्मज्ञान—आत्मदेव ६—००
६८६ बोधैक्यसिद्धि—अच्युतराय सटीक ६—००
६८७ भक्ति का विकास मुन्शीराम २०—००
६८८ भक्तिचन्द्रिका (शाण्डिल्यभक्तिसूत्र व्याख्या) १०—२४
६८८ (क) भक्तिदर्शन १—५०
६८९ भक्तिदर्शन—विशिष्टाद्वैत ६—५०
६९० भक्ति चन्द्रिका—भाषा पद्यात्मक—गणेशसिंह १—००
६९१ भक्तिप्रकाश—पौराणिक—भा. टी. गोपालदास २—४०
६९२ भक्त्यधिकरण माला—(नारायण तीर्थकृत) १—२५
६९३ भक्तिरत्नावली १५—००
६९४ भक्तिरसामृतसिन्धु—भा. टी. विश्वेश्वर २५—००
६९५ भक्ति रसायन भा. टी. ३—००
६९६ भगवान पर विश्वास ३—००
६९७ भवरोग की रामबाण दवा ०-३५
६९८ भगवच्चरणोत्प्रेक्षा २—००
६९९ भगवद्रामानुज ग्रन्थमाला २०—००
७०० भगवन्नाम कौमुदी—लक्ष्मीधर कृत—प्रकाशटीका ०—७५
७०१ भगवन्नाम माहात्म्य—(रघुनाथ यति) सटीक २—७५
७०२ भेदरत्न १—५०
७०३ मणिरत्नमाला भा. टी. ३—००
७०४ मध्वतन्त्र मुख मर्दन—अप्पय दीक्षित विरचित २—५०
७०५ मध्वतन्त्रमुखमर्दन अप्पय दीक्षित कृत १—५०
७०६ महावाक्यरत्नावली— ०—५०
७०७ महावाक्यविवरण—भा. टी. १—३५
७०८ यतीन्द्रमत दीपिका—श्रीनिवासदास प्रकाश व्या. स. २-०
७०९ यतीन्द्र दीपिका—सटिप्पण ०—५५
७०९ (क) युक्तिप्रकाश ३—००
७१० योगवासिष्ठ—भा. टी. चतुर्थं १०) पांचवां ८—००
७११ योगवासिष्ठ—मराठी प्रथम भाग ७—००
७१२ योगवासिष्ठ कथा १५—००
७१३ योग वसिष्ठ और उसके सिद्धान्त १०—००
७१४ योगानन्द सत्संग ग्रन्थ ३—६०
७१५ रासरहस्य—रासतत्वगवेषण २—००
७१५ (क) लावणीब्रह्मज्ञान ३—६०
७१६ लघुयोगवासिष्ठ—वासिष्ठ चन्द्रिका व्याख्या सहित १०-०
७१७ लोक परलोक सुधार—भाषा ५ भाग २—७०
७१८ वाक्यवृत्ति—शंकराचार्यप्रणीत—विश्वेश्वर टी. ०—७५
७१९ वाक्यवृत्ति भा. टी. १—१२
७२० वाक्यसुधा—भा. टी. १-५०
७२१ विचारचन्द्रोदय—पीताम्बरी भाषा बम्बई ३—६०
७२२ विचार माला—स्वा. गोविन्द दास सटीक २—४०
७२३ विचारसागर—निगमानन्द ७—५०
७२४ विचारसागर—संस्कृत में १५—००
७२५ विचारसागर—पीतांबरी १२—००
७२६ विचार सागर —हनुमानदास ३—००
७२७ विद्वन्मंडन ७—५०
७२८ विवरणप्रमेयसंग्रह—(विद्यारण्य) हिन्दी टीका ६—५०
७२९ विवरणोपन्यास—रामानन्द ६—००
७३० विवरणादि प्रस्थान विमर्श १—००
७३१ विवेकचूड़ामणि ०—४०
७३२ विवेक चिन्तामणि—मराठी ६—७५
७३३ विवेकमकरन्द—वासुदेव यतीन्द्र ३—००
७३४ विषवाक्य दीपिका ६—००
७३५ विशिष्टाद्वैतमतविजय ०—२५
७३६ विशिष्टाद्वैताधिकरण माला—पं. सुदर्शनाचार्य १—००
७३७ विष्णु तत्त्व दीपिका २—२५
७३८ वेदान्त कल्पलतिका १०—००
७३९ वेदान्त छन्दावली—५ भाग—भोले बाबा हिन्दी ३—५०
७४० वेदान्तदर्शन भा. टी. २—५०
७४१ वेदान्तदर्शन—भा. टी. श्रीराम शर्मा ४—००
७४२ वेदान्तदीपिका २—५०
७४३ वेदान्तदीप (भ. रामानुज) दो भाग १५—००
७४४ वेदान्तडिण्डिम ०—७५
७४५ वेदान्तदीप—रामानुजाचार्य ९—००
७४६ वेदान्त परिभाषा सटीक ३—००
७४७ वेदान्त परिभाषा—अर्थदीपिका तथा हिन्दी ४—००
७४८ वेदान्त परिभाषा—आनन्द झा कृत व्याख्या १४—५०
७४९ वेदान्तपरिभाषा—हिन्दी टीका १०—००
७५० वेदान्तबालबोधिनी ०—८८
७५१ वेदान्त प्रबोध २—००
७५२ वेदान्त रत्न मंजूषा—पुरुषोत्तमाचार्य ६—००
७५२ (क) वेदान्तरत्नावली भाषा ०—५०
७५३ वेदान्तरहस्य भाषा १—००
७५४ वेदान्त शास्त्र मकरन्द ४—००
७५५ वेदान्तसार—जयाख्य संस्कृत टीका तथा शिवकुमारदेव कृत हिन्दी टीका सहित २—५०
७५६ वेदान्तसार भा. टी. नरेन्द्र २—५०
७५७ वेदान्तसार रामानुज—सटिप्पण २—५०
७५८ वेदान्त सार —सत्यनारायण भा. टी. १०—००
७५९ वेदान्त सिद्धान्त संग्रह-बनमाली कृत ९—००

५५६	श्रावण मास माहात्म्य भा. टी.	४–००
५५७	शनैश्चर व्रत कथा	०–३०
५५८	सत्यनारायण पूजा कथा—मूल	०–५०
५५९	सत्यनारायण—व्रतकथासप्ताध्यायी भा. टी.	०–७५
५६०	सत्यनारायण—भा. टी. ५ अध्याय	०–६२
५६१	सत्यनारायण कथा—भाषा राधेश्याम	०–५०
५६२	सोमवती अमावस्या कथा—भा. टी.	०–५०
५६३	सोलह सोमवार कथा	०–६०
५६४	हरितालिकाव्रतकथा	०–५०
५६५	हलषष्ठी व्रतकथा	०–२५

वेदान्त

(शंकर, रामानुज, वल्लभाचार्य आदि)

५६६	अच्युत लेखमाला—विद्वानों के लेख हिन्दी	२–००
५६७	अद्वैत तत्त्वसुधा दो भाग	५५–००
५६८	अद्वैतदीपिका २ भाग	२५–००
५६९	अद्वैतरत्नरक्षण—मधुसूदन	०–७५
५७०	अद्वैतरत्नाकर	०–७०
५७०	(क) अद्वैत विद्यातिलक	१–२५
५७१	अद्वैत वेदान्तविद	२–००
५७२	अद्वैतसिद्धान्तसारसंग्रह	०–७५
५७३	अद्वैतसिद्धि–(मधुसूदन सरस्वती) सटीक	३०–००
५७४	अद्वैत सिद्धि गुरु चंद्रिका केवल दूसरा तीसरा	६–००
५७५	अद्वैतसिद्धि सिद्धान्तसार	९–००
५७६	अद्वैतामोद—वासुदेव शास्त्री प्रणीत	३–००
५७७	अध्यात्म प्रकाश—भाषा	०–४५
५७८	अध्यात्म विकास	१–५०
५७९	अध्यात्मविद्योपदेश	०–५०
५८०	अनुभवानन्दलहरी	५–००
५८१	अनुभव प्रकाश–(वनानाथकृत) हिन्दी पद्यों में	२–२५
५८२	अपरोक्षानुभूति–भा. टी. बम्बई	०–९०
५८३	अपरोक्षानुभूति–हिन्दी टीका सहित गोरखपुर	०–२५
५८४	अभिलाष सागर—भाषा	४–८०
५८५	आत्मतत्त्व विवेक नारायणी	१५–००
५८६	आत्मतत्त्वविवेक–शंकरमिश्र	१८–००
५८७	आत्मप्रबोध	१–५०
५८८	आत्म प्रबोधिनी	०–५०
५८९	आत्मबोध प्रकरण—दिनेशचन्द्र	५–६२
५९०	आत्मबोध–(शंकराचार्य) अन्वय–भाषार्थसहित	०–६०
५९१	आनन्दामृत वर्षिणी–स्वामी आनन्दगिरि भाषा	२-४०
५९२	आभोग-कल्पतरु व्याख्या	२०–००
५९३	ओंकारमहिमाप्रकाश–(ऊंकार सेवर्षाक्षर)	१–५०
५९४	उपदेश साहस्री–(शंकराचार्य प्रणीत) भा. टी	२–००
५९५	उपदेशसाहस्री सटीक	४–००
५९६	उपासना	०–७५
५९७	कायपरिशुद्धि–वासुदेव शास्त्री प्रणीत	२–००
५९८	कौशल्यगीतावली २ भाग	१–२५
५९९	क्रियासार—नीलकण्ठ ३ भाग	१८–५०
६००	खंडन खण्ड खाद्य—भा. टी.	८–००
६०१	ख्याले फकीर	१०–००
६०२	गुरु परम्परा	१–५०
६०३	गूढार्थ दीपिका	१२–००
६०४	गोविन्दाष्टक	०–३०
६०५	चैतन्य चरितावली–५ भाग सचित्र	५–६५
६०६	जयतीर्थस्तुति	१–७५
६०७	जीवन्मुक्तिविवेक—मराठी	८–००
६०८	ढाई हजार अनमोल मोल—हिन्दी	१–२०
६०९	तत्त्वचिन्तामणि–भा. टी. जयदयाल	६–७०
६१०	तत्त्वदीपन	२४–००
६११	तत्त्वप्रकाशिका व्याख्या	१५–००
६१२	तत्त्वबोध शंकराचार्य भा. टी.	०–६०
६१३	तत्त्व सन्दर्भ–भा. टी.	१–५०
६१४	तत्व संदर्भ	६–००
६१५	तत्त्वसार–सव्याख्या	६–००
६१६	तर्कताण्डव—व्यासतीर्थ	१२–००
६१७	दहरविद्याप्रकाश	०–७५
६१८	दासबोध—भाषा	४–००
६१९	दृष्टान्त महासागर ३–००,	२–५०
६२०	दृष्टान्त दीपक	२–००
६२१	दृष्टान्त मंजूषा–भाषा स्वा. परमानन्द	२–४०
६२२	दृष्टान्तसागर	१०–५०
६२३	द्वैतनिर्णय सिद्धान्तसंग्रह	१–००
६२४	नयद्युमणि मेघनादनी	९–७५
६२५	नवधा भक्ति–हिन्दी	०–१५
६२६	नारदभक्तिसूत्र	२–००
६२७	न्यायचंद्रिका–स्वरूपानन्द	१८–७५
६२८	नैष्कर्म्य सिद्धि—मराठी टीका	३–००
६२९	न्यायभास्करखंडन	३–००
६३०	न्यायरत्नदीपावली आनंदानुभव	११–२५
६३१	पंचकोशविवेक	१–५०
६३२	पंचदशी पीतांबरी भा. टी.	८–००
६३३	पंचदशी—सटीक ६–५०, गुटका	३–००
६३४	पंचपादिका विवरण सटीक	२८–७५
६३५	पंचप्रक्रिया—सर्वस्व	२–११
६३६	पंचीकरण सटीक	३–००
६३७	पंचीकरण—केवल भाषा	३–००
६३८	पद्यावली—रूपगोस्वामी	२–६०
६३९	परतत्त्वभ्रमनिरासनक्षत्रमाला	१–२५
६४०	परमार्थ भूषण	२५–००
६४१	परमार्थसार	०–५०
६४२	पक्षपात रहित–अनुभव प्रकाश स्वा. विशुद्धानन्द	९–६०
६४३	पूजातत्व—म. म. गोपीनाथ	४–००
६४३	(क) पूर्ण प्रज्ञदर्शन	३–००
६४४	प्रकरणपञ्चक–श्री शंकराचार्य भा. टी.	०–७५
६४५	प्रणवकल्प—(स्कन्दपुराणान्तर्गत)	३–००
६४६	प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणि–सदानन्द व्यासकृत	५–००
६४७	प्रपन्नपरिजात	३–४०
६४८	प्रपंचविवेक	२–१०
६४९	प्रश्नोत्तरसागर —योगानन्द	४–००
६५०	प्राणतत्त्व	१–५०
६५१	प्रेमपत्तन—चैतन्य सम्प्रदाय सव्याख्या	१–२५
६५२	प्रेमयोग—वियोगी हरि हिन्दी	१–९०
६५३	प्रेमदर्शन–भा. टी. (भक्तिसूत्र)	०–९०
६५४	बोधसार—नरहरि	३०–००
६५५	बोधसार—भाषा	१०–००
६५६	बृहदारण्यकवार्त्तिकसार—भा. टी. दो भाग	१२–००
६५७	ब्रह्ममीमांसाभाष्य–(निम्बार्काचार्य)	३–००

६५८ ब्रह्मवाद सग्रह—शुद्धाद्वैत भा. टी. २–००
६५९ ब्रह्म सिद्धान्त–पं. मधुसूदन १२–००
६६० ब्रह्मसिद्धि व्याख्या भावशुद्धि २४–००
६६१ ब्रह्मसूत्र—शांकरभाष्य ३–५०
६६२ ब्रह्मसूत्र-भामती कल्पतरु परिमल ३५–००
६६३ ब्रह्मसूत्रवृत्ति—मरीचिका ६–००
६६४ ब्रह्मसूत्र चतुस्सूत्री विश्वेश्वर ५–००
६६५ ब्रह्मसूत्र—देवाचार्य ९–००
६६६ ब्रह्मसूत्रीयवेदान्तवृत्ति–श्री रामानन्दप्रणीत १–२५
६६७ ब्रह्मसूत्रवृत्ति——मिताक्षरा ७–००
६६८ ब्रह्मसूत्रवृत्ति–शंकर प्रणीत अद्वैत मंजरी १–००
६६९ ब्रह्मसूत्र–शाकर भाष्यार्थरत्नमाला सुब्रह्मण्यकृत ६–७५
६७० ब्रह्मसूत्रवृत्ति—हरिदीक्षित कृत ३–७५
६७१ ब्रह्मसूत्र भा. टी. दो भाग हनुमानदास ३०–००
६७२ ब्रह्मसूत्र–शांकर भाष्य का केवल भाषानुवाद ९–००
६७३ ब्रह्मसूत्र–मराठी टीका सहित ३ भाग में ३६–००
६७४ ब्रह्मसूत्र—विद्योदय उदयवीर भा. टी. २०–००
६७५ ब्रह्मसूत्र शंकरभाष्यआनंदगिरिकेवलदूसराभाग ९-००
६७६ ब्रह्मसूत्र—शंकरभाष्य सत्यानन्द भा. टी. १६–००
६७७ ब्रह्मसूत्र दीपिका ६–००
६७८ ब्रह्मसूत्र—सुषमा हनुमानदास ४–००
६७९ ब्रह्मसूत्र द्वैताद्वैतदर्शन ९–००
६८० ब्रह्मसूत्र भूमिका श्री गोपीनाथ १–००
६८१ ब्रह्मसूत्र ब्रह्मामृतवर्षिणी ६–७५
६८२ ब्रह्मसूत्रों के वैष्णव भाष्यों का
तुलनात्मक अध्ययन १०–००
६८३ ब्रह्मसूत्रसिद्धांतमुक्तावली ३–७५
६८३ (क) ब्रह्मसूत्र विद्यानन्द वृति ७–५०
६८४ ब्रह्मसंकीर्त्तन-डोगरीवेदान्त ८-२५
६८५ ब्रह्मज्ञान—आत्मदेव ६–००
६८६ बोधैक्यसिद्धि—अच्युतराय सटीक ६–००
६८७ भक्ति का विकास मुन्शीराम २०–००
६८८ भक्तिचंद्रिका (शाण्डिल्यभक्तिसूत्र व्याख्या) १०–२४
६८८ (क) भक्तिदर्शन १–५०
६८९ भक्तिदर्शन—विशिष्टाद्वैत ६–५०
६९० भक्ति चन्द्रिका–भाषा पद्यात्मक–गणेशसिंह १–००
३९१ भक्तिप्रकाश–पौराणिक–भा. टी. गोपालदास २–४०
६९२ भक्त्यधिकरण माला–(नारायण तीर्थकृत) १–२५
६९३ भक्तिरत्नावली १५–००
६९४ भक्तिरसामृतसिन्धु–भा. टी. विश्वेश्वर २५–००
६९५ भक्ति रसायन भा. टी. ३–००
६९६ भगवान पर विश्वास ३–००
६९७ भवरोग की रामबाण दवा ०-३५
६९८ भगवच्चरणोत्प्रेक्षा २–००
६९९ भगवद्रामानुज ग्रन्थमाला २०–००
७०० भगवन्नाम कौमुदी–लक्ष्मीधर कृत–प्रकाशटीका ०–७५
७०१ भगवन्नाम माहात्म्य–(रघुनाथ यति) सटीक २–७५
७०२ भेदरत्न १–५०
७०३ मणिरत्नमाला भा. टी. ३–००
७०४ मध्वतन्त्र मुख मर्दन–अप्पय दीक्षित विरचित २–५०
७०५ मध्वतन्त्रमुखमर्दन अप्पय दीक्षित कृत १–५०
७०६ महावाक्यरत्नावली— ०–५०
६०७ महावाक्यविवरण–भा. टी. १–३५
७०८ यतीन्द्रमत दीपिका–श्रीनिवासदास प्रकाश व्या. स. २-०
७०९ यतीन्द्र दीपिका—सटिप्पण ०–५५
७०९ (क) युक्तिप्रकाश ३–००
७१० योगवासिष्ठ–भा. टी. चतुर्थ १०) पांचवां ८–००
७११ योगवासिष्ठ–मराठी प्रथम भाग ७–००
७१२ योगवासिष्ठ कथा १५–००
७१३ योग वसिष्ठ और उसके सिद्धान्त १०–००
७१४ योगानन्द सत्संग ग्रन्थ ३–६०
७१५ रासरहस्य—रासतत्वगवेषण २–००
७१५ (क) लावणीब्रह्मज्ञान ३–६०
७१६ लघुयोगवासिष्ठ–वासिष्ठ चन्द्रिका व्याख्या सहित १०-०
७१७ लोक परलोक सुधार–भाषा ५ भाग २–७०
७१८ वाक्यवृत्ति–शंकराचार्यप्रणीत–विश्वेश्वर टी. ०–७५
७१९ वाक्यवृत्ति भा. टी. १–१२
७२० वाक्यसुधा—भा. टी. १-५०
७२१ विचारचन्द्रोदय–पीताम्बरी भाषा बम्बई ३–६०
७२२ विचार माला–स्वा. गोविन्द दास सटीक २–४०
७२३ विचारसागर—निगमानन्द ७–५०
७२४ विचारसागर–संस्कृत में १५–००
७२५ विचारसागर–पीतांबरी १२–००
७२६ विचार सागर —हनुमानदास ३–००
७२७ विद्वन्मंडन ७–५०
७२८ विवरणप्रमेयसंग्रह–(विद्यारण्य) हिन्दी टीका ६–५०
७२९ विवरणोपन्यास—रामानन्द ६–००
७३० विवरणादि प्रस्थान विमर्श १–००
७३१ विवेकचूड़ामणि ०–४०
७३२ विवेक चिन्तामणि–मराठी ६–७५
७३३ विवेकमकरन्द–वासुदेव यतीन्द्र ३–००
७३४ विषवाक्य दीपिका ६–००
७३५ विशिष्टाद्वैतमतविजय ०–२५
७३६ विशिष्टाद्वैताधिकरण माला–पं. सुदर्शनाचार्य १–००
७३७ विष्णु तत्त्व दीपिका २–२५
७३८ वेदान्त कल्पलतिका १०–००
७३९ वेदान्त छन्दावली–५ भाग—भोले बाबा हिन्दी ३–५०
७४० वेदान्तदर्शन भा. टी. २–५०
७४१ वेदान्तदर्शन—भा. टी. श्रीराम शर्मा ४–००
७४२ वेदान्तदीपिका २–५०
७४३ वेदान्तदीप (भ. रामानुज) दो भाग १५–००
७४४ वेदान्तडिण्डिम ०–७५
७४५ वेदान्तदीप—रामानुजाचार्य ९–००
७४६ वेदान्त परिभाषा सटीक ३–००
७४७ वेदान्त परिभाषा—अर्थदीपिका तथा हिन्दी ४–००
७४८ वेदान्त परिभाषा—आनन्द झा कृत व्याख्या १४–५०
७४९ वेदान्तपरिभाषा—हिन्दी टीका १०–००
७५० वेदान्तबालबोधिनी ०–८८
७५१ वेदान्त प्रबोध २–००
७५२ वेदान्त रत्न मंजूषा—पुषोत्तमाचार्य ६–००
७५२ (क) वेदान्तरत्नावली भाषा ०–५०
७५३ वेदान्तरहस्य भाषा १–००
७५४ वेदान्त शास्त्र मकरन्द ४–००
७५५ वेदान्तसार–जयाख्य संस्कृत टीका तथा शिवकुमारदेव
कृत हिन्दी टीका सहित २–५०
७५६ वेदान्तसार भा. टी. नरेन्द्र २–५०
७५७ वेदान्तसार रामानुज—सटिप्पण २–५०
७५८ वेदान्त सार —सत्यनारायण भा. टी. १०–००
७५९ वेदान्त सिद्धान्त संग्रह-बनमाली कृत ९–००

५५६ श्रावण मास माहात्म्य भा. टी. ४-००
५५७ शनैश्चर व्रत कथा ०-३०
५५८ सत्यनारायण पूजा कथा—मूल ०-५०
५५९ सत्यनारायण—व्रतकथासप्ताध्यायी भा. टी. ०-७५
५६० सत्यनारायण—भा. टी. ५ अध्याय ०-६२
५६१ सत्यनारायण कथा—भाषा राधेश्याम ०-५०
५६२ सोमवती अमावस्या कथा—भा. टी. ०-५०
५६३ सोलह सोमवार कथा ०-६०
५६४ हरितालिकाव्रतकथा ०-५०
५६५ हलषष्ठी व्रतकथा ०-२५

वेदान्त

(शंकर, रामानुज, वल्लभाचार्य आदि)

५६६ अच्युत लेखमाला—विद्वानों के लेख हिन्दी २-००
५६७ अद्वैत तत्त्वसुधा दो भाग ५५-००
५६८ अद्वैतदीपिका २ भाग २५-००
५६९ अद्वैतरत्नरक्षण—मधुसूदन ०-७५
५७० अद्वैतरत्नाकर ०-७०
५७० (क) अद्वैत विद्यातिलक १-२५
५७१ अद्वैत वेदान्तविद २-००
५७२ अद्वैतसिद्धान्तसारसंग्रह ०-७५
५७३ अद्वैतसिद्धि—(मधुसूदन सरस्वती) सटीक ३०-००
५७४ अद्वैत सिद्धि गुरु चंद्रिका केवल दूसरा तीसरा ६-००
५७५ अद्वैतसिद्धि सिद्धान्तसार ९-००
५७६ अद्वैतामोद—वासुदेव शास्त्री प्रणीत ३-००
५७७ अध्यात्म प्रकाश—भाषा ०-४५
५७८ अध्यात्म विकास १-५०
५७९ अध्यात्मविद्योपदेश ०-५०
५८० अनुभवानन्दलहरी ५-००
५८१ अनुभव प्रकाश—(बनानाथकृत) हिन्दी पद्यों में २-२५
५८२ अपरोक्षानुभूति—भा. टी. बम्बई ०-९०
५८३ अपरोक्षानुभूति—हिन्दी टीका सहित गोरखपुर ०-२५
५८४ अभिलाष सागर—भाषा ४-८०
५८५ आत्मतत्त्व विवेक नारायणी १५-००
५८६ आत्मतत्त्वविवेक—शंकरमिश्र १८-००
५८७ आत्मप्रबोध १-५०
५८८ आत्म प्रबोधिनी ०-५०
५८९ आत्मबोध प्रकरण—दिनेशचन्द्र ५-६२
५९० आत्मबोध—(शंकराचार्य) अन्वय—भाषार्थसहित ०-६०
५९१ आनन्दामृत वर्षिणी—स्वामी आनन्दगिरि भाषा २-४०
५९२ आभोग-कल्पतरु व्याख्या २०-००
५९३ ओंकारमहिमाप्रकाश—(ऊंकार सेवर्षाक्षर) १-५०
५९४ उपदेश साहस्री—(शंकराचार्य प्रणीत) भा. टी. २-००
५९५ उपदेशसाहस्री सटीक ४-००
५९६ उपासना ०-७५
५९७ कायपरिशुद्धि—वासुदेव शास्त्री प्रणीत २-००
५९८ कौशल्यगीतावली २ भाग १-२५
५९९ क्रियासार—नीलकण्ठ ३ भाग १८-५०
६०० खंडन खण्ड खाद्य—भा. टी. ८-००
६०१ ख्याले फकीर १०-००
६०२ गुरु परम्परा १-५०
६०३ गूढार्थ दीपिका १२-००
६०४ गोविन्दाष्टक ०-३०
६०५ चैतन्य चरितावली—५ भाग सचित्र ५-६५
६०६ जयतीर्थस्तुति १-७५
६०७ जीवन्मुक्तिविवेक—मराठी ८-००
६०८ ढाई हजार अनमोल मोल—हिन्दी १-२०
६०९ तत्त्वचिन्तामणि—भा. टी. जयदयाल ६-७०
६१० तत्त्वदीपन २४-००
६११ तत्त्वप्रकाशिका व्याख्या १५-००
६१२ तत्त्वबोध शंकराचार्य भा. टी. ०-६०
६१३ तत्त्व सन्दर्भ—भा. टी. १-५०
६१४ तत्व संदर्भ ६-००
६१५ तत्त्वसार—सव्याख्या ६-००
६१६ तर्कताण्डव—व्यासतीर्थ १२-००
६१७ दहरविद्याप्रकाश ०-७५
६१८ दासबोध—भाषा ४-००
६१९ दृष्टान्त महासागर ३-००, २-५०
६२० दृष्टान्त दीपक २-००
६२१ दृष्टान्त मंजूषा—भाषा स्वा. परमानन्द २-४०
६२२ दृष्टान्तसागर १०-५०
६२३ द्वैतनिर्णय सिद्धान्तसंग्रह १-००
६२४ नयद्युमणि मेघनादनी १-७५
६२५ नवधा भक्ति—हिन्दी ०-१५
६२६ नारदभक्तिसूत्र २-००
६२७ न्यायचंद्रिका—स्वरूपानन्द १८-७५
६२८ नैष्कर्म्य सिद्धि—मराठी टीका ३-००
६२९ न्यायभास्करखंडन ३-००
६३० न्यायरत्नदीपावली आनंदानुभव ११-२५
६३१ पंचकोशविवेक १-५०
६३२ पंचदशी पीतांबरी भा. टी. ८-००
६३३ पंचदशी—सटीक ६-५०, गुटका ३-००
६३४ पंचपादिका विवरण सटीक २८-७५
६३५ पंचप्रक्रिया—सर्वस्व २-११
६३६ पंचीकरण सटीक ३-००
६३७ पंचीकरण—केवल भाषा ३-००
६३८ पद्यावली—रूपगोस्वामी २-६०
६३९ परतत्त्वभ्रमनिरासनक्षत्रमाला १-२५
६४० परमार्थ भूषण २५-००
६४१ परमार्थसार ०-५०
६४२ पक्षपात रहित—अनुभव प्रकाश स्वा. विशुद्धानन्द ९-६०
६४३ पूजातत्व—म. म. गोपीनाथ ४-००
६४३ (क) पूर्ण प्रज्ञदर्शन ३-००
६४४ प्रकरणपञ्चक—श्री शंकराचार्य भा. टी. ०-७५
६४५ प्रणवकल्प—(स्कन्दपुराणान्तर्गत) ३-००
६४६ प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणि—सदानन्द व्यासकृत ५-००
६४७ प्रपन्नपरिजात ३-४०
६४८ प्रपंचविवेक २-१०
६४९ प्रश्नोत्तरसागर—योगानन्द ४-००
६५० प्राणतत्त्व १-५०
६५१ प्रेमपत्तन—चैतन्य सम्प्रदाय सव्याख्या १-२५
६५२ प्रेमयोग—वियोगी हरि हिन्दी १-९०
६५३ प्रेमदर्शन—भा. टी. (भक्तिसूत्र) ०-९०
६५४ बोधसार—नरहरि ३०-००
६५५ बोधसार—भाषा १०-००
६५६ बृहदारण्यकवार्त्तिकसार—भा. टी. दो भाग १२-००
६५७ ब्रह्ममीमांसाभाष्य—(निम्बार्काचार्य) ३-००

४५९ महाभारत—सबलसिंह २०—००
४६० महाभारत नामानुक्रमणिका ३—५०
४६१ महाभारत कोष दो भाग ४०—००
४६२ मूल रामायण—शीलनिरूपणाध्याय सं. हि. ०—७५
४६३ राधामाधवचिन्तन ५—००
४६४ रामकथा—फा. बुलके, उत्पत्ति, विकास २०—००
४६५ रामचरितमानस मूल काशीराज ६—५०
४६६ रामचरितमानस मूल गुटका ०—९०
४६७ ,, भा. टी. गोरखपुर ८—५०, १७—००
४६८ रामचरितमानस भा. टीका विजया टीका ३०—००
४६९ रामचरितमानस की आध्यात्मिक राजनीति ५—००
४७० रामायणकालीन संस्कृति—हिन्दी ६—००
४७१ रामायण कालीन समाज—हिन्दी ६—००
४७२ रामायण समीक्षा ५—००
४७३ रामायण—तुलसी भा. टी. ज्वालाप्रसाद ३६—००
४७४ ,, , मध्यम २१—००
४७५ रामायण और महाभारत में प्रकृति १०—२५
४७६ रामाभ्युदय यात्रा ३—५०
४७७ रामाश्वमेध—मूल खुला पत्रा ५—१०
४७८ रामाश्वमेध—भा. टी खुला पत्रा बम्बई १३—२०
४७९ रामाश्वमेध—केवल भाषा वार्तिक ५—४०
४८० रंगनाथ रामायण ६—५०
४८१ रामायण बाल कांडकी समालोचना—सातवलेकर २—००
४८२ वाल्मीकि रामायण—मूल गुटका ९—६०
४८३ वाल्मीकिरामायण—मूल खुला मोटा अक्षर २०—४०
४८४ वाल्मीकि रामायण मूल ९—००
४८५ वाल्मीकि मामायण शुद्ध मूल बालकांड ५५—००
४८६ वाल्मीकि अरण्यकांड शुद्ध मूल ५५—००
४८७ ,, ,, अयोध्याकांड ११०—००
४८८ ,, ,, किष्किन्धाकांड ५५—००
४८९ वाल्मीकि रामायण सुन्दर कांड शुद्ध मूल ५५—००
४९० वाल्मीकि रामायण—गोविन्दराजीय, (भूषण रामानुजि ततनिश्लोकी माहेश्वर तीर्थीयाख्या) व्याख्या चतुष्टय सहित खुला पत्रा ७२—००
४९१ ,, बुक साइज ३ बड़ी जिल्दों में मोटा अक्षर ७२—००
४९२ वाल्मीकि रामायण—३ टीका सं. बारीक६कांड६५—००
४९३ वाल्मीकि रामायण—कतक व्या बाल, अयोध्या, किष्किन्धा, अरण्य कांड ६०—००
४९४ वाल्मीकि रामायण—पं. ज्वालाप्रसादकृदभा. टी. खुला बम्बई ४८—०० काशी पं. रामतेज ४०—००
४९५ वाल्मीकि रामायण—भाषा टीका द्वारका प्रसाद १० भाग २४—००
४९६ वाल्मीकि रामायण—बालकांड—पं. सातवलेकर १०—००
४९७ वाल्मीकि रामायण—किष्किन्धा सातवलेलेकर १०—००
४९८ वाल्मीकि रामायण—अरण्यकांड सातवलेकर १०—००
४९९ वाल्मीकि रामायण—युद्धकांड २ भाग सातवलेकर २०—००
५०० वाल्मीकि रामायण—उत्तरकांड सातवलेकर १०—००
५०१ वाल्मीकि रा०—सुन्दरकाण्ड—मूल गुटका २—५०
५०२ वाल्मीकि रामायण—सुन्दर कांड—मूल—खुला ५—४०
५०२(क) ,, ,, ,, भा. टी. ,, ५—५०
५०३ वाल्मीकि रामायण—केवल भाषा मोटा बम्बई ३०—००
५०४ वाल्मीकि रामायण कोष २०—००
५०५ वाल्मीकि रामायण एवं रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन १६—००
५०६ वाल्मीकि रामायण भा. टी. गीता प्रेस २०—००
५०७ विजयादशमी—सातवलेकर ०—५०
५०८ विश्राम सागर १६—००
५०९ ज्ञानदीपिका—भीष्म पर्व व्याख्या ५—००
५१० ज्ञानदीपिका—सभापर्व व्याख्या ५—००

व्रत, कथा, महात्म्य आदि

५११ अनन्त व्रत कथा—भा. टी. ०—५०
५१२ अन्नपूर्णा व्रत कथा—भा. टी. ०—४०
५१३ अक्षय नवमी व्रत कथा—भा. टी. ०—५०, ०—२०
५१४ ऋषि पञ्चमी व्रत कथा—भा. टी. ०—५०
५१५ एकादशी माहात्म्य—भा. टी. ४—०० ३—००
५१६ एकादशी माहात्म्य केवल भाषा २—००
५१७ एकादशी माहात्म्य भा. टी. बंबई ३—००, २—२५
५१८ एकादशी व्रत कथा ०—२५
५१९ कृष्ण जन्माष्टमी—भा. टी. ०—३५, ०—५०
५२० कार्तिक माहात्म्य—भा. टी. ४—००, ३—००
५२१ कार्तिक माहात्म्य—३५ अध्याय क्षेमंकरी ४—६५
५२२ कार्तिक माहात्म्य भाषा २—००
५२३ कार्तिक शुक्लरवि षष्ठी व्रतकथा ०—२५
५२४ काशी केदार माहात्म्य—भा. टी. ३—००
५२५ गणेश संकट चतुर्थी मूल ०—७५
५२६ गया माहात्म्य—गया पद्धति सहित हिन्दी टीका २—१०
५२७ गोत्रिरात्र व्रत कथा १—२०
५२८ चन्दनषष्ठी—सूर्यषष्ठी कथा हिन्दी टीका सहित ०—५०
५२९ चान्द्रायण व्रत कथा—हिन्दी टीका सहित ०—५०
५३० चित्रगुप्त व्रतकथा ०—५०
५३१ जीवत्पुत्रिका—व्रतकथा—भा. टी. ०—५०
५३२ ज्येष्ठमास माहात्म्य—भा. टी. ३—००
५३३ पञ्चभीष्मएकादशी ०—५०
५३४ पुरुषोत्तम माहात्म्य—भा. टी. अधिक मास ४—८०
५३५ पौषमाहात्म्य मूल ०—७५
५३६ फाल्गुणमाहात्म्य मूल १—५०
५३७ बुधाष्टमी व्रतकथा ०—३५
५३८ बहुलाव्रत कथा ०—५०
५३९ बृहस्पतिवारकथा ०—३५
५४० भाद्र गणेश चतुर्थी ०—२५
५४१ भीष्मपञ्चक कथा १—५०
५४२ मङ्गला गौरी व्रत कथा—भा. टी. ०—५०
५४३ महालक्ष्मी व्रतकथा—भा. टी. ०—५०
५४४ महाशिवरात्रि माहात्म्य—भा. टी. १—००
५४५ माघ माहात्म्य—भा. टी. ४—००
५४६ माघभादों गणेश चतुर्थी ०—५०
५४७ मुक्ताभरण सप्तमी—भा. टी. ०—५०
५४८ यमद्वितीया कथा ०—१०
५४९ रविषष्ठी व्रत कथा—भा. टी. ०—५०
५५० रामनवमी व्रतकथा ०—५०
५५१ वट सावित्री व्रत कथा—भा. टी. ०—५०
५५२ वामन द्वादशी व्रत कथा ०—५०
५५३ व्यतीपात कथा—भा. टी. ०—५०
५५४ वैशाख माहात्म्य—भा. टी. ४—००
५५५ सप्तवार व्रत कथा ०—५०

३६२ भागवत—दशमस्कन्ध भा. टी. खुला काशी ८-००
३६३ भागवत-एकादशस्कन्ध भा.टी. खुला ३-६०, ४-८०
३६४ भागवत-एकादश स्कन्ध प्रत्येक पद का हिन्दी ६-५०
३६५ भागवत—राधेश्याम तर्ज—श्रीलाल कृत १०-५०
३६६ भागवत कथा—पं. राममूर्ति १२-००
३६७ भागवत कथा —मेहता ४-००
३६८ भागवतामृत २-००
३६९ मल्ल पुराण १२-००
३७० मत्स्य पुराण मूल कलकत्ता १२-००
३७१ मत्स्यपुराण भा. टी. बरेली १५-००
३७२ मत्स्यपुराण—केवल हिन्दी— रामप्रताप २०-००
३७३ मार्कण्डेय पुराण मूल कलकत्ता ७-५०
३७४ मार्कण्डेय पुराण भा. टी. २ भाग बरेली १४-००
३७५ मार्कण्डेय पुराण भा. टी. खुला १८-००
३७६ „ एक अध्ययन ४-५०
३७७ „ सांस्कृतिक अध्ययन ८-५०
३७८ महाभागवत—देवी ५-००
३७९ युगपुराण २-००
३८० रामाभ्युदययात्रा २-५०
३८१ रामाश्वमेध—मूल (पद्मपुराण) मोटा अक्षर ५-१०
३८२ रामाश्वमेध—भाषा ५-५०
३८३ रामाश्वमेध—भा. टी. खुला पत्रा १३-२०
३८४ ललितोपाख्यान मूल खुला ४-२०
३८५ लिंग पुराण भा. टी. १४-००
३८६ लिंगपुराण भा. टी. बरेली १५-००
३८७ लिंग पुराण मूल कलकत्ता १२-५०
३८८ लेखसंग्रह—स्वा. जी पीतांबरा ४-००
३८९ वामनपुराण—संशोधित संस्करण मूल १२५-००
३९० वामन पुराण भा. टी. काशीराज ५०-००
३९१ वामन भ. टी. बरेली १५-००
३९२ वायुपुराण—खुला पत्रा, मोटा अक्षर १४-४०
३९३ वायुपुराण—केवल भाषा पं. रामप्रताप शास्त्री १२-००
३९४ वायुपुराण भा. टी. बरेली १४-००
३९५ विष्णुधर्मोत्तर पुराण—मूल खुला पत्रा २१-६०
३९६ विष्णुधर्मोत्तर—तीसरा कांड चित्र प्रकरण ४०-००
३९७ विष्णु पुराण सटीक कलकत्ता १६-००
३९८ विष्णुपुराण भा. टी. २ भाग बरेली १४-००
३९९ विष्णुपुराण—भा० टी० गोरखपुर ५-००
४०० विष्णु पुराण विषयसूची ५-००
४०१ शिवपुराण मूल सम्पूर्ण गुटका १०-००
४०२ शिवपुराण—केवल भाषा बम्बई २४-००
४०३ शिवपुराण मूल खुला पत्रा बंबई २१-६०
४०४ शिवपुराण भा. टी. गुटका बरेली १४-००
४०५ शिवपुराण भा. टी. बम्बई खुला पत्रा ६०-००
४०६ शिवपुराण केवल भाषा १०-००
४०७ शिवभारत—संस्कृत २-२५
४०८ श्री सुबोधिनी—श्री वल्लभाचार्य ९-००
४०९ सुखसागर—भाषा बड़ा अक्षर बंबई ३६-००
४१० शुकसुधा सागर गोरखपुर २५-००
४११ सुखसागर—मध्यम १६-००
४१२ सूरसागर—संपूर्ण १४-४०
४१३ सौर पुराण—मूल पूना ४-५०
४१४ स्कन्द महापुराण बुक साइज मूल (नागर और प्रभास खंड छोड़कर) ९०-००
४१५ स्कन्दपुराण भा. टी. बरेली १५-००
४१६ हरिवंशपुराण सटीक खुला २४-००
४१७ हरिवंश पुराण—भाषा टीका खुला काशी ३२-००
४१८ हरीवंश भा. टी. गोरखपुर १४-००
४१९ हरीवंश विशुद्धमूल भंडारकर प्रथम भाग ७५-००
४२० हरिवंश का सांस्कृतिक विवेचन ४-५०
४२१ हरिवंशपुराण भा. टी. बरेली १४-००
४२२ हरिवंश पुराण—भाषा बंबई १४-४०
४२३ हरीवंश सटीक बुक साइज ६०-००

रामायण-महाभारत

४२३ (क) अध्यात्मरामायण भा. टी. बम्बई १२-००
४२४ अध्यात्मरामायण भा. टी. गोरखपुर ४-००
४२४ (क) अनुराग पदावली—सूरदास १-२५
४२४ (ख) असली राधेश्याम रामायण (जगदीश) ९-००
४२४ (ग) आनंद रामायण भा. टी. १६-००
४२५ आर्य संगीत महाभारत ५-५०
४२६ आर्यसंगीत रामायण—भाषा ५-५०
४२७ इतिहास गुरु खालसा ६-००
४२८ कम्बर और तुलसी ६-७५
४२९ कम्ब रामायण दो भाग २०-५०
४३० गर्गसंहिता प्रथम भाग—बुक साइज १०-००
४३१ गर्ग संहिता—मूल —खुला १३-२०
४३२ जैमिनी अश्वमेध—मूल खुला ५-१०
४३३ जैमिनी अश्वमेध—भा. टी. खुला १३-२०
४३४ जैमिनी अश्वमेध—भाषा ४-२०
४३५ जैमिनी अश्वमेध भा. टी. गोरखपुर ६-००
४३६ नासिकेतोपाख्यान—हिन्दी टीका सहित १-५०
४३७ बालरामायण—संस्कृत ०-७५
४३८ ब्रजविहार ५-४०
४३९ ब्रजविलास ५-४०
४४० बृहदभजनरत्नावली भाषा ८-४०
४४१ भक्तमाला—भाषा ४-८०
४४२ भक्तमाला—संस्कृत खुला पत्रा १०-००
४४३ भक्तमाल रामरसिकावली ६-००
४४४ भक्तमाल—चतुरदास १४-४०
४४५ भजनरामायण ६-७५
४४६ भारत सार—केवल भाषा ०-५०
४४७ मन्त्र रामायण—सटीक गुटका ८-४०
४४८ महाभारत—मूल—संपूर्ण १८ पर्व ४ जिल्दों में २६-५०
४४९ महाभारत मूल गुटका मदरास १८ भाग ८०-००
४५० महाभारत—विशुद्ध संस्करण भंडारकर संपूर्ण १४००-००
४५१ महाभारत—शैलेन्द्र १२-००
४५२ महाभारत—शांति पर्व पूर्वार्द्ध—सातवलेकर १०-००
४५३ महाभारत भा. टी. सातवलेकर सभापर्व ६-५०
४५४ महाभारत भा. टी. सातवलेकर अभी ५ भाग छपे हैं २-७५
४५५ महाभारत भा. टीका गोरखपुर ९०-००
४५६ महाभारत—केवल हिन्दी छोटा टाइप १० भाग २०-००
४५७ महाभारत सटीक विराटपर्व १०-००
४५८ महाभारत—उद्योगपर्व सटीक २०-००

२५८ व्यवहार निर्णय—वरदराज सटिप्पण ३०–००
२५९ व्यवहारप्रकाश पृथिवीचन्द्र प्रथम भाग १२–००
२६० व्यवहार मयूख—(नीलकंठ) मूल २–५०
२६१ व्यवहारमयूख (श्रीनीलकंठ) पी.बी.काणे २५–००
२६२ व्यवहारमाला—पूना १–५०
२६३ व्रतकोश—जगन्नाथ शास्त्री संगृहीत १०–००
२६४ व्रतरत्नाकर ३–००
२६५ व्रतराज—हिन्दी टीका सहित सजिल्द १९–२०
२६६ व्रात्यताप्रायश्चित्तनिर्णय तथा व्रात्यता शुद्धि ३–००
२६७ शास्त्रतत्त्वनिर्णय—नीलकंठ कृत ५–००
२६८ शवसूतकोचक प्रकरण ५–६२
२६९ शुद्धिकौमुदी ३–७५
२७० शुद्धिमयूख—नीलकंठ—मूल २–७५
२७१ श्राद्धकल्पलता—नन्द पंडित ९–००
२७२ श्राद्धक्रियाकौमुदी—गोविन्दानन्द प्रणीत ५–२५
२७३ श्राद्ध चन्द्रिका—दिवाकर भट्ट ५–००
२७४ श्राद्धपारिजात—रुद्रदत्त ३–३५
२७५ श्राद्धप्रयोग दीपिका १–२५
२७६ श्राद्ध मयूख—नीलकंठ—मूल २–००
२७७ श्राद्धमञ्जरी—बापूभट्टविरचित ३–००
२७८ षडशीति-(आदित्याचार्य) शुद्धि चन्द्रिका ६–००
२७९ सत्यार्थ प्रकाश—स्वामी दयानन्द सरस्वती ४–००
२८० सनातन धर्मोद्धार—चार भागों में भा. टी. २०–००
२८१ सम्बन्ध निर्णय—गोपाल पंचानन १–२५
२८२ समय मयूख—नीलकंठ मूल ३–००
२८३ संस्कारपद्धति—पूना ३–७५
२८४ संस्कारमयूख २–००
२८५ संस्कार रत्नमाला–दो भाग संपूर्ण पूना १८–५०
२८६ संस्कार गणपति–श्री रामकृष्णप्रणीत २५–००
२८७ सर्वशिरोमणि सिद्धान्तसार ४–५०
२८८ सूरिसर्वस्व अपूर्ण २–२५
२८९ स्मृतिचंद्रिका—देवनभट्ट २५–००
२९० संक्षिप्त मनुस्मृति—देवदत्त ३–५०
२९१ स्मृति समुच्चय–(२७ स्मृतियों का संग्रह) ७–५०
२९२ स्मृत्यर्थसार—श्रीधराचार्य प्रणीत २–५०
२९३ स्मृतिसारोद्धार–श्री विश्वम्भरत्रिपाठीकृत १२–००

२९४ हारलता २–२५
२९५ हिन्दू संस्कार–(हिन्दी)–डा. राजबली पांडे १६–००
२९६ त्रिशच्छ्लोकी—शंकर शास्त्री विरचित ४–५०
२९७ त्रिस्थली सेतु—तीर्थेन्दु शेखर मोक्ष विचार १–५०
२९८ त्रिस्थली सेतु—नारायण भट्ट प्रणीत ५–५०

महापुराण-उपपुराण

२९९ अग्निपुराण मूल—उपाध्याय २०–००
३०० अग्निपुराण भाषाटीका २ भाग बरेली १४–००
३०१ अग्निपुराण—मूल मात्र संपूर्ण पूना १०–००
३०२ अग्निपुराण विशयानुक्रमणी—भट्टाचार्य ८–००
३०३ आदि पुराण भा. टी. खुला पत्रा बम्बई ५–४०
३०४ इतिहास पुराण का अनुशीलन–भट्टाचार्य १०–००
३०५ कल्कि पुराण—भा. टी. पुराना जीर्ण २–००
३०६ कल्किपुराण भा. टी. बरेली १५–००
३०७ काशीखंड भा. टी. २४–००
३०८ काशी खंड—संस्कृत टीका खुला पत्रा १८–००
३०९ काशीयात्रा ०–५०
३१० केदारकल्प ४–२०
३११ केदार खंड—मूल बम्बई १२–००
३१२ कृष्णस्य शांति प्रयास: २–००
३१३ कूर्मपुराण मूल काशी १०–००
३१४ कूर्मपुराण भा. टी. बरेली १५–००
३१५ गरुड़ पुराण—सम्पूर्ण मूल बुक साइज ४–००
३१६ गरुड पुराण मूल—भट्टाचार्य १०–००
३१७ गरुडपुराण भा. टी. बरेली १४–००
३१८ गरुड़ पुराण—१६ अध्याय भा. टी. खुला ३–५०
३१९ गरुड़पुराण—सारोद्धारसंस्कृत टीका ३–००
३२० देववाद का वैज्ञानिक स्वरूप १०–००
३२१ देवी भागवत मूल—गुटका ८–००
३२२ देवी भागवत—भा. टी. खुला पत्रा बम्बई ४८–००
३२३ देवी भागवत भा.टी. खुला–काशी ३२.००, ४५–००
३२४ देवीभागवत—भा०टी० बरेली १४–००
३२५ पद्म पुराण—मूल ४ भागों में सम्पूर्ण पूना ३०–००

३२६ पद्मपुराण भा० टी० बरेली १४–००
३२७ पुराण कथा कौमुदी भाषा १०–००
३२८ पुराण काव्यस्तोत्र संग्रह ५–००
३२९ पुराणेतिहाससंग्रह ७–५०
३३० पुराणदिग्दर्शन हिन्दी ११–००
३३१ पुराण विमर्श—बलदेव उपाध्याय हिन्दी २०–००
३३२ पुराणसंदर्भ कोश—पद्मिनी २५–००
३३३ पुराण संहिता—आलमंदार संहिता आदि १२–००
३३४ पुराण विषयानुक्रमणिका—राजनीति १५–००
३३५ पुराणविषयानुक्रमणिका विश्वेश्वरानंद ८–००
३३६ पुराणों में गुजरात—गुजराती ५–००
३३७ प्रेमसुधा सागर भागवत दशम स्कन्ध हिन्दी ४–५०
३३८ प्रेमसागर-भाषा ४–००
३३९ पौराणिक कथायें २–५०
३४० पौराणिक धर्म एवं समाज—सिद्धेश्वरी ३०–००
३४१ ब्रह्मवैवर्तपुराण—मूल बुक साइज पूना २ भाग १४–२५
३४२ " " कलकत्ता १७–००
३४३ ब्रह्मवैवर्त भा.टी. बरेली १५–००
३४४ ब्रह्मोत्तर खंड—भा. टी. ४–२०
३४५ भविष्य पुराण—मूल बुक साइज बंबई ३०–००
३४६ भविष्य पुराण भा. टी. बरेली १४–००
३४७ भागवत—गुटका निर्णय सागर बम्बई ९–००
३४८ भागवत मूल गुटका गोरखपुर४) स्थूलाक्षर ७–५०
३४९ भागवत मूल—गुटका दो भाग मद्रास १७–००
३५० भागवत-अन्वितार्थ प्रकाशिका काशी ४८–००
३५१ भागवत—सचूर्णिका सं. टीका बम्बई खुला ३०–००
३५२ भागवत—चूर्णिका संस्कृत टीका काशी २४–००
३५३ भागवत—श्रीधरी संस्कृत टीका खुला २४–००
३५४ भागवत—भाषा टीका सामयिकी पत्रात्मक २४–००
३५५ भागवत–सरस्वती भाषा टीका काशी ३५–००
३५६ „ भा. टी. खुला बंबई शालिग्राम
३५७ भागवत—भा. टी. बुक साइज दो भाग २०–००
३५८ भागवत १० टीका अभी पूरा छपा नहीं ३००–००
३५९ भागवत श्लोकानुक्रमणिका ७–००
३६० भागवत सुधा सागर—केवल भाषा १०–००
३६१ भागवत—दशमस्कन्ध भा. टी. खुला बम्बई १२–००

१५६ आपस्तम्बीयधर्मसूत्र–मूल, पाठभेद, टिप्पणी १०–००
१५७ आचारेन्दु—त्र्यम्बक विरचित ६–००
१५८ आधानपद्धति—वामन शास्त्री प्रणीत मूल ३–००
१५९ उद्वाहतत्त्व—रघुनन्दन ५–६२
१६० कर्मविपाक भाषाटीका ६–००
१६१ कालमाधवकारिका–(माधवाचार्य प्रणीत) ०–७५
१६१ (क) कात्यायनमतसंग्रह ३–००
१६२ कालमाधव—माधवाचार्य कृत सटिप्पण ३–६०
१६३ कुण्डमंडपसिद्धि ०–६०
१६४ कृत्यकल्पतरु–लक्ष्मीधर विरचित १० खंड १७१–०० ब्रह्मचारिकांड १५ रु० गृहस्थकांड १५ रु० नियतकाल २२ रु० श्राद्ध १८–०० व्रत २०–०० तीर्थ-विवेचन १२ रु० शुद्धि १२ रु० राजधर्म १५ रु० व्यवहार ३०–०० दानखंड १२ रु०
१६५ कृत्यरत्नाकर—श्री चण्डेश्वर ठक्कुर विरचित ६–००
१६६ क्यों (धर्मदिग्दर्शन) माधवाचार्य दो भाग २०–००
१६७ गौतम धर्मसूत्र—मिताक्षरा ४–५०
१६८ गौतम धर्मसूत्र भा. टी. १०–००
१६९ गौतम धर्मसूत्र-सटिप्पण १०–००
१७० गृहस्थ रत्नाकर—चण्डेश्वर ५–२५
१७१ चतुर्विंशतिमतसंग्रह-भट्टोजिदीक्षित संकलित ६–००
१७२ छान्दोगाह्निक ०–७५
१७३ जयसिंह कल्पद्रुम–मूलमात्र बम्बई १४–४०
१७४ टोडरानन्द–(सर्गसौख्य, अवतारसौख्य) प्रथम १०–००
१७५ तिथ्यर्क-दिवाकर-कृत–तिथियों के निर्णय आदि २–००
१७६ तिथिचिन्तामणि ०–७५
१७७ तिथिनिर्णय–भट्टोजि दीक्षित ३–००
१७८ तीर्थचिन्तामणि–वाचस्पति मिश्र ३–७५
१७९ दत्तकमीमांसा–नंद पण्डितकृत मंजरी व्याख्या ५–५०
१८० दर्शपूर्णमास प्रकाश–भाष्यवृत्ति दीपिका १०–००
१८१ दानक्रिया कौमुदी–गोविन्दानन्द २–२५
१८२ दानचंद्रिका–मूल १–३०
१८३ दानदीपिका—भाषाटीका ०–५०
१८४ दानमयूख—(नीलकंठ भट्ट) मूल ३–००
१८५ दानविवेक—मदनसिंह तीन भाग २७–००
१८६ दानसागर—(बल्लालसेन) ४ भागसम्पूर्ण ३०–००

१८७ दायभाग—भा. टी. (याज्ञवल्क्य) १–५०
१८८ दीक्षाप्रकाशिका–श्री विष्णुभट्ट विरचित १–००
१८९ धर्मकल्पद्रुम—स्वा. दयानन्दकृत सनातन धर्म का अत्युत्तम ग्रन्थ १ से ८ भाग तक ३२–५०
१९० धर्मकोश–व्यवहार कांड व्यवहार मातृका ८०–००
१९१ धर्म कोश संस्कारकाण्ड प्रथम भाग ४५–००
१९२ धर्मतत्त्व निर्णय–(वासुदेव शास्त्री) पूना १–००
१९३ धर्मतत्त्वनिर्णय परिशिष्ट–(वासुदेव शास्त्री) १–२५
१९४ धर्मप्रदीप—मूलमात्र २–४०
१९५ धर्मविज्ञान ३ भाग सनातन धर्म १९–५०
१९६ धर्मशास्त्र का इतिहास दू.-तीसरा-काणे हिन्दी ३३–००
१९७ धर्मशास्त्र व्याख्यान—श्रीधर ५–००
१९८ धर्मसिन्धु—हिन्दी टीका बम्बई १४–४०
१९९ धर्मसिन्धु भा. टी. काशी २५–००
२०० धर्मशास्त्रीय व्यवस्था पत्रसंग्रह १०–००
२०१ धर्मानुबन्धि श्लोकचतुर्दशी १–००
२०२ धार्मिक विमर्श समुच्चय–(नरहरि शास्त्री) ३–५०
२०३ नवरात्र प्रदीप—नंदपंडित २–००
२०४ नवीन आह्निक सूत्रावली ८–००
२०५ नारदस्मृति बंगला ४–००
२०६ निर्णयसिन्धु–मूलमात्र ६–०० टिप्पणी सहित १०–००
२०७ नित्याचार पद्धति ५–२५
२०८ नित्याचार प्रदीप १२–७५
२०९ नीतिमयूख—नीलकंठ भट्ट प्रणीत २–००
२१० नृसिंह प्रसाद दलपतिराज विरचित ४ भाग ११–००
२११ परमहंस धर्म मीमांसा २–००
२१२ पशवालम्भ मीमांसा—वामन शास्त्री १–००
२१३ पंचरात्ररक्षा—वेदान्तदेशिक २०–००
२१४ पाञ्चरात्र प्रसाधनम ४–००
२१५ पाराशर स्मृति–भा. टीका २–००
२१६ पुरुषार्थ चिन्तामणि–पूना ९–००, बम्बई ५–००
२१७ पुरुषार्थ सुधानिधि १४–००
२१८ प्रमुख स्मृतियों का अध्ययन ६–५०
२१९ प्रायश्चित कदम्ब–भा. टी. १–५०
२२० प्रायश्चित मयूख ३–००
२२१ प्रायश्चित प्रकाश बम्बई २–१०

२२२ प्रायश्चित्त प्रकरण १–००
२२३ प्रायश्चित्तेन्दुशेखर कुण्डार्कश्च–नागोजी भट्ट २–५०
२२४ बीस स्मृतियां भा. टी. १४–००
२२५ ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड–हिन्दी टीका सहित १२–००
२२६ भारतीय व्रतोत्सव ३–००
२२७ मदन महार्णव–(कर्मविपाक के ऊपर) २६–००
२२८ मदनरत्नप्रदीप–मदनसिंहकृत तीन भाग ६–५०
२२९ मनुस्मृति–हिन्दी टीका काशी ५–००, ६–००
२३० मनुस्मृति-हिन्दी टीका सहित १–४ अध्याय २–५०
२३१ मनुस्मृति–कुल्लूक सं. टीका तथा हिन्दी २०–००
२३२ मनुस्मृति—मेधातिथि बंगला में २४–५०
२३३ मनुस्मृति–(द्वितीयाध्याय) सं. हि. टीका ०–७५
२३४ यतिधर्म संग्रह–(विश्वेश्वर सरस्वती) २–७५
२३५ याज्ञवल्क्यस्मृति आचाराध्याय भा. टी. ४–००
२३६ याज्ञवल्क्यस्मृति–अपरार्कटीका १९–५०
२३७ याज्ञवल्क्य-स्मृति-मिताक्षरा हि. टीकासंपूर्ण २०–००
२३८ याज्ञवल्क्य स्मृति–मिताक्षरा टीका बंबई १०–००
२३९ याज्ञवल्क्यस्मृति–बालम्भट्टीव्यवहाराध्याय ३३–००
२४० राजधर्म कौस्तुभ–(अनन्तदेव) अंग्रेजी भूमिका २०–०
२४१ वर्षक्रियाकौमुदी ५–२५०
२४२ वसन्तोत्सवनिर्णय ०–२५
२४३ वाशिष्ठ धर्मशास्त्र–सटिप्पण ५–००
२४४ विधान पारिजात (अनन्तदेव) १५–००
२४५ विधानमाला—नृसिंह भट्ट शंकर ६–००
२४६ विवादचिन्तामणि—मूल ३–००
२४७ विवाद रत्नाकर—चंडेश्वर कृत ६–००
२४८ विष्णु स्मृति मूल १०–००
२४९ विष्णुस्मृति—सटीक दो भाग ६०–००
२५० वीरमित्रोदय–शुद्धिप्रकाश ९–००
२५१ वीरमित्रोदय—आह्निक प्रकाश २४–००
२५२ वीरमित्रोदय लक्षणप्रकाश २८–००
२५३ वीरमित्रोदय—तीर्थप्रकाश १८–००
२५४ वीरमित्रोदय—भक्ति प्रकाश ६–००
२५५ वीरमित्रोदय—राजनीति प्रकाश १५–००
२५६ वीरमित्रोदय—समय प्रकाश ९–००
२५७ वीरमित्रोदय—श्राद्धप्रकाश १२–००

५३ नूतनवास्तु प्रबंध ०–८०
५४ नित्यकर्म पद्धति–भाषाटीका ०–५०
५५ नित्यकर्मप्रयोग––गोरखपुर ०–५५
५६ नित्यकर्म प्रयोग माला––श्री चतुर्थीलाल २–४०
५७ नित्य-नैमित्तिक-कर्मसमुच्चय–(यजुर्वेदीय) ६–००
५८ पंचदान पद्धति ०–४०
५९ पंचदेवतापूजन ०–२०
६० पचनारायणबलि १–२५
६१ पंचमंगल ०–४०
६२ पंचरत्नविवाहपद्धति––फलाहारी २–००
६३ पञ्चयज्ञ––भाषा टीका समेत ०–६०
६४ पार्थिव पूजन विधान––भा. टी. ०–३५
६५ पितृकर्म निर्णय––पं. त्रिलोकनाथ ३–००
६६ पितृकर्म पद्धति ४–००
६७ पुत्तलविधान पद्धति––मूल ०–४०
६८ पूतना शांति––भा. टी. ०–६२
६९ पौरोहित्य कर्मसार १–६५
७० पौरोहित्य कर्म पद्धति १–२५
७१ प्रयोगरत्न––नारायण भट्ट––ऋग्वेदीय ३–५०
७२ प्रभुदिया प्रतिष्ठार्णव (सूर्यदेव प्रतिष्ठा) १२–००
७३ प्रतिष्ठाप्रभु दूसरा भाग केवल ४–००
७४ प्रेमनञ्जरी––भा. टी. २–५०, १–५०
७५ बगलोपासन पद्धति १–००
७६ बृहद् ब्रह्म नित्यकर्म समुच्चय ८–५०
७७ ब्रह्मकर्म समुच्चय––हिरण्यकेशीय (३८८) १०–००
७८ भारतीयव्रतोत्सव ३–००
७९ मंगलाष्टक शाखोच्चार ०–५०
८० महालक्ष्मी बसना पूजन ०–५०
८१ महालक्ष्मी पूजा पद्धति––भाषाटीका ०–५६, १–२५
८२ मूलशान्ति विधि ०–६०
८३ यज्ञोपवीत पद्धति––भा. टी. १–५०, ०–७५
८४ यजुः उपाकर्म पद्धति १–२५
८५ यजुःशाखीय कर्मकांड प्रदीप १०–००
८६ रामार्चन पद्धति ०–४०
८७ रामनवमी पूजा ०–४०
८८ लघुपूजानुष्ठान ०–५६
८९ लक्ष्मी पूजन प्रयोग १–००
९० वर्षकृत्य दो भाग रामचन्द्रझा ११–००
९१ वर्षकृत्यदीपक––पं० नित्यानन्द १०–००
९२ वर्षकृत्य––रुद्रधर ३–००
९३ वरदगणेशपूजा ०–३०
९४ वार्षिकव्रतरत्नावली ४–००
९५ वास्तु शान्ति प्रयोग ०–९०
९६ वास्तु प्रतिष्ठा संग्रह ३–००
९७ वास्तुरत्नावली २–५०
९८ वासिष्ठी हवन पद्धति––हिन्दी टीका ०–७५, ०–९०
९९ विजयादशमी पूजा ०–१५
१०० विनयगयपंचाशिका ०–५०
१०१ विनायक शान्ति ०–३०
१०२ विवाहपटल १–००
१०३ विवाह पद्धति––भैयाराम कृत भा. टी. २–००
१०४ विवाह पद्धति––आर्यसमाज ०–७५
१०५ विवाह पद्धति–वायुनंदन १–२५
१०६ विवाह पद्यावली––भाषा टीका सहित १–८०
१०७ विवाहसोपाङ्गविधि भा. टी ३–६०
१०८ विश्वकर्मापूजा ०–५०
१०९ विष्णु पूजा ०–३५
११० विज्ञप्ति रत्नावली––अन्वयार्थ सहित १–२०
१११ व्रतचंद्रिका २–००
११२ व्रत परिचय २–२५
११३ व्रतोद्यापन प्रकाश ४–५०
११४ वैदिक सन्ध्या ०–१५
११५ शांतिप्रकाश––चतुर्थीलाल ७–८०
११६ शिवार्चन पद्धति १–५०
११७ शिलान्यास पद्धति ०–८०
११८ शुद्धि प्रदीप-प्रायश्चित्त कृत्य ३–००
११९ शूद्रपार्वण श्राद्ध ०–२०
१२० शूद्रविवाह पद्धति ०–२५
१२१ श्राद्ध पद्धति––पं. रामचन्द्र झा ३–५०
१२२ श्राद्धप्रयोगदीपिका १–२५
१२३ श्राद्धविवेक––रुद्रधर २–५०
१२४ श्रावणीप्रयोग––वायुनंदन २–५०
१२५ षोडश-संस्कार-विधि––सनातन भाषाटीका ५–००
१२६ सनातन धर्म प्रश्नोत्तरी ०–२०
१२७ सन्ध्योपासन-सातवलेकर १–५०
१२८ सन्ध्या––यजुर्वेदीय मूल ६ पं. भा. टी. ०–१२
१२९ सन्ध्या–(शु. यजुर्वेदीय) तर्पण भा. टी ०–२५
१३० सन्ध्यादर्पण––देवीदत्त ४–००
१३१ संस्कारविधि (सनातन) श्रीकण्ठ उपाध्याय ६–००
१३२ संस्कार दीपक––हर्षनाथ ७–००
१३३ संस्कार दीपक–तीन भाग, नित्यानन्द पर्वतीय १८–००
१३४ संस्कारपद्धति–भास्कर शास्त्री संशोधित ३–७५
१३५ संस्कारविधि–श्री दयानन्द सरस्वती निर्मित २–००
१३६ सर्वदेवप्रतिष्ठा––गोपालदत्त १–००
१३७ सर्वपूजा ०–५०, ०–३१
१३८ सरस्वती पूजा ०–२५
१३९ संक्षिप्तदीक्षा पद्धति––तुलादान पद्धति सहित ०–२०
१४० स्वस्त्ययन कलश प्रतिष्ठा ०–२५
१४१ स्मार्त्तोल्लास–शिवप्रसाद २, ३ भाग ३–६२
१४२ स्मार्थप्रभु–प्रथम भाग ३–००
१४३ सामवेदोपाकर्मप्रयोग १–२५
१४४ सामवेद श्राद्धप्रयोग १–२५
१४५ हिन्दुओं के व्रतपर्व और त्योहार––रामप्रताप ७–००
१४६ हरदीमातृपूजा ०–२०
१४७ त्रिकाल संध्या–यजुर्वेदीय ०–१९ ऋग्वेदीय ०–३६
१४८ त्रिपिण्डी श्राद्धपद्धति––वायुनन्दन १–००

धर्मशास्त्र

१४९ अग्निहोत्रचन्द्रिका–वामन शास्त्री देवव्रातभाष्य ४–२५
१५० आङ्गिरस स्मृति–ए. एन. कृष्णा अयंगर १२–००
१५१ अश्विनौयान मीमांसा–श्री वेंकटाचल शास्त्री २–४०
१५२ अहिर्बुध्न्य संहिता २ भाग (पंचरात्र) ४०–००
१५३ अशौचनिर्णय ०–२५, ०–५०
१५४ आचारभूषण––(त्र्यम्बक) हिरण्यकेश्याह्निक ६–५०
१५५ आचारमयूख–(नीलकण्ठ भट्ट विरचित) २–००

मोतीलाल बनारसीदास

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता बंगलो रोड, जवाहर नगर दिल्ली-७

के यहाँ मिलने वाले संस्कृत-हिन्दी ग्रन्थ

पुस्तकें मंगाने से पहले नीचे लिखे नियम अवश्य पढ़ें।

१. अपना पता गांव डाकखाना आदि साफ अक्षरों में लिखें। २. पुस्तकें मंगाते समय मनीआर्डर से चौथाई रु० अवश्य पहले भेजें क्योंकि लोग पुस्तकें मंगाकर वी. पी. वापिस कर देते हैं इसलिए लाचारी ऐसा करना पड़ा है।
३. दो रु० से कम का वी. पी. नहीं भेजा जायेगा।

कर्मकाण्ड

क्रम सं०	पुस्तक का नाम	मूल्य—रु० पैसे
१	अर्कीविवाह—भाषाटीका	०–२५
२	अग्निष्टोम पद्धति–आध्वर्य पद्धति औदगात्र	९–००
३	अन्त्यकर्मदीपक—नित्यानन्द	४–००
४	आचारादर्श—यजुर्वेदियों के आह्निक	१–७५
५	आचारार्क (ऋग्वेदीय)—खुला पत्रा	२–०५
६	अपात्रिकपार्वण श्राद्ध	०–५५
७	आदर्श पूजा सरोज—जनार्दन शर्मा	३–५०
८	आधानपद्धति—वामन शास्त्री	३–००
९	आह्निक सूत्रावली (शुक्ल यजुर्वेदीय)	८–००, ६–००
१०	आर्याभिविनय—अजमेर	०–४०
११	उग्ररथ शांतिप्रयोग	५–००
१२	उपनयन पद्धति—भाषाटीका	१–८०
१३	उपनयन मार्तण्ड–भा. टी.–पं. विंध्याचल दत्त	०–७५
१४	उपाध्यायरत्नचन्द्रिका	१०–५०
१५	ऋग्वेदोक्त नित्यविधि—खुला पत्रा	२–००
१६	एकादशादि सपिण्डी भा. टी.	१–५०
१७	एकोद्दिष्ट श्राद्ध प्रयोग—(सांवत्सरिक)	०–५०
१८	और्ध्वदैहिक कर्मपद्धति	४–००
१९	कर्मठगुरु—राज. ज्योतिषी पं. मुकुन्दवल्लभ कृत। नित्यकर्म के लिए सबसे बढ़िया ग्रन्थ। पंडितजी के द्वारा अनुभूत अनेकों सिद्धिप्रद अनुष्ठान भी लिखे गये हैं–जैसे–सिद्धपुत्रेष्टि विधि। कर्मकाण्ड विषय का ऐसा ग्रन्थ आज तक नहीं छपा	६–००
२०	कर्मकाण्ड-प्रकाशिका–मूल–वैष्णवदास	०–७५
२१	कर्म मीमांसा दर्शन	४–५०
२२	कर्मप्रदीप—छान्दोग्य परिशिष्ट	५–००
२३	कलशप्रतिष्ठा—पूजाविधि	०–२५
२४	कातीय तर्पण पद्धति	०–३०
२५	कात्यायनी शान्ति	०–५०
२६	कृत्यशिरोमणि—तुफानी शर्मा	४–००
२७	कृतितत्वसंग्रह ,, ,,	८–००
२८	कृत्यसार समुच्चय–श्री अमतनाथ शर्मा	२–१०
२९	कृत्यसार समुच्चय (अमृतनाथ) पं. गंगाधर	५–००
३०	कुम्भ विवाह	०–२५
३१	कूपाराम मीमांसा भा. टी.	०–६४
३२	कूपोत्सर्ग	०–२५
३३	गणपति पूजा होम	०–२५
३४	गयाश्राद्धपद्धति—मूल ०–४० भा..टी.	१–००
३५	गायत्रीपूजा पद्धति	०–२५
३६	गोत्रावलि	०–४०
३७	गोदान पद्धति	०–२५
३८	गौडीय श्राद्धप्रकाश महानिबन्ध—खुला पत्रा	९–६०
३९	गौरीशंकर गुटका	३–५०
४०	ग्रहयज्ञप्रयोग	०–९०
४१	ग्रहशान्तिप्रयोग भा.टी. ३–५०,	५–००
४२	ग्रहशान्ति भा. टी. बम्बई	१–५०
४३	चूड़ाकरण पद्धति–(माध्यन्दिनी शाखा)	०–२५
४४	जन्मदिन पूजा पद्धति	०–२५
४५	तुलसीपूजा पद्धति	०–१५
४६	तुलसी सन्ध्या	०–२५
४७	दशकर्मपद्धति—भाषाटीका	२–४०
४८	दशकर्मपद्धति—कर्मकांड प्रदीप प. जनार्दन पांडे	८–००
४९	दानखण्डोक्त पुण्याहवाचन	०–३०
५०	देवर्षिपितृतर्पण	०–२५
५१	धनिष्ठापञ्चक शांति	०–५०
५२	नवग्रह विधान पद्धति	०–७५

पुस्तकें व्ही.पी.पी. द्वारा मंगाइये

हस्त रेखा विज्ञान की पुस्तकें वी॰पी॰पी॰ द्वारा मंगाइये

आपका हाथ : अंगूठा, उंगली, नाखून, हथेली तथा हाथ की सम्पूर्ण बनावट के आधार पर स्त्री-पुरुषों के चरित्र एवं स्वभाव का ज्ञान कराने वाली सैकड़ों चित्रों से युक्त अनुपम सजिल्द पुस्तक मू० १०॥) रु०।

जीवन रेखा (आयु रेखा) : आपकी आयु कितनी है, आप जीवन में कब-कब बीमार पड़ेंगे, आकस्मिक दुर्घटना, अपघात, मृत्यु, जीवन, स्वास्थ्य आपकी मृत्यु आपकी पत्नी से पहले होगी या बाद में आदि प्रत्येक जानकारी इस सचित्र पुस्तक से प्राप्त करें। मू० ७॥)

मस्तक रेखा (विद्या रेखा) : हथेली पर पाई जाने वाली मस्तक रेखा द्वारा विद्या-बुद्धि, व्यवसाय योग्यता आदि विषयों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जाती है। पुस्तक में सैकड़ों चित्र देकर विषय को विस्तार पूर्वक समझाया है। मू० ७॥) साढ़े सात रुपया।

भाग्य रेखा (धन रेखा) : आप धनी होंगे या निर्धन, कितने वर्ष की आयु में आपको भिन्न २ साधनों से कितना धन प्राप्त होगा, जमीन में गड़ा हुआ, सट्टे-लॉटरी आदि के द्वारा अचानक बहुत धन प्राप्त कर लेना, आपके पास में पैसा है या नहीं इसे जानने के लिए प्रस्तुत पुस्तक पढ़िये, सैकड़ों चित्र मू० ७॥)

हृदय रेखा : आपका हृदय कमजोर है या शक्तिशाली आपके शत्रु परास्त होंगे या आप पर छाये रहेंगे, आपको कोई दिल की बीमारी तो नहीं होगी आदि विषयों की जानकारी इस पुस्तक से प्राप्त कीजिये। मू० ७॥) साढ़े सात रुपया

सूर्य रेखा (सम्मान यश रेखा) : मान, प्रतिष्ठा, यश, अपयश की प्राप्ति अथवा हानि, दूसरों पर प्रभाव डालने की शक्ति और भाग्य को प्रबल बनाने सम्बंधी सब विषयों की जानकारी के लिये इस पुस्तक को पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। मू० ७॥) साढ़े सात रु.

विवाह रेखा (संतान रेखा सहित) : आपका विवाह होगा या नहीं, कब होगा, कैसे होगा, पत्नी कैसी मिलेगी एक से अधिक विवाह होंगे या नहीं, पत्नी की आयु आप से कम होगी या अधिक इन सब विषयों की जानकारी के लिये इस सचित्र पुस्तक का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है। मू० ७॥)

स्वास्थ्य रेखा : आपका शरीर स्वास्थ्य रहेगा या बीमार किस आयु में कौन सा रोग होगा। आकस्मिक दुर्घटना तथा जीवन सम्बन्धी अन्य विषयों का ज्ञान कराने वाली अनुपम पुस्तक, सैकड़ों चित्र मू० ७॥) रुपये।

प्रभाव रेखायें : स्त्री-पुरुष के किसी भी अंग पर पाये जाने वाले तिल, मस्सा, लहसन तथा अन्य चिह्नों का जीवन पर क्या-क्या प्रभाव पड़ता है, इन सब विषयों की जानकारी के लिये इस सचित्र पुस्तक का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है। मूल्य साढ़े दस रुपये।

हस्त चिह्न विचार : हथेली पर पाये जाने वाले त्रिकोण, क्रास, फल, द्वीप, नक्षत्र आदि के चिह्न मनुष्य के जीवन पर कैसा और कितना प्रभाव डालते है, इस विषय को इस पुस्तक में विस्तार पूर्वक समझाया गया है। मूल्य १०॥) साढ़े दस रुपये।

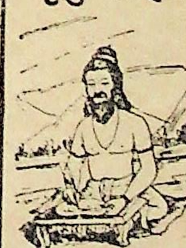
शरीर-लक्षण विज्ञान : मनुष्य के हाथ, पाव, नाक, मुंह, आंख, कान आकृति आदि की बनावट, रंग, बोली, लिखावट, चाल-ढाल, वेषभूषा, रुचियों आदि के द्वारा उसके जीवन का सम्पूर्ण वृत्तान्त बताने वाली अनुपम सचित्र पुस्तक। मूल्य १०॥) साढ़े दस रु०।

स्त्री-सामुद्रिक : शरीर के विभिन्न अंगों की बनावट, रूप, आकृति, रंग आदि के द्वारा स्त्री के स्वभाव, चरित्र, रुचि एवं जीवन में घटने वाली घटनाओं का ज्ञान कराने वाली सर्वश्रेष्ठ पुस्तक। हाथ की रेखाओं के विशिष्ट योगों सहित सैकड़ों चित्र मूल्य १०॥) रु०

पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

पृष्ठ सं० १२२४, फलित ज्योतिष-विद्या का अपूर्व ग्रंथ कु० १६३२

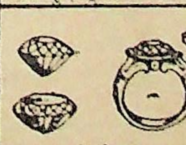
भृगु संहिता फलित-प्रकाश मूल ले०—महर्षि भृगु



इस एक ही पुस्तक की सहायता से संसार के प्रत्येक स्त्री-पुरुष की जन्मकुण्डलियों के फलादेश की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कौनसा ग्रह किस राशि तथा किस भाव में बैठकर क्या फल देता है? किस ग्रह की किस भाव पर कौनसी दृष्टि पड़ती है? दो-तीन, चार तथा अधिक ग्रह एक ही भाव में बैठे हों तो उनका क्या फल होता है? आदि विषयों के अतिरिक्त ग्रहों की महादशा का फलादेश तथा जन्म-कुण्डली देखने सम्बन्धी ऐसी अनेक आवश्यक जानकारियां इस पुस्तक में दी गयी हैं जो अन्यत्र देखने को नहीं मिलती। इस पुस्तक की सहायता से मामूली हिन्दी पढ़ा लिखा व्यक्ति भी जन्मकुण्डलियों के फलादेश को जान सकता है तथा गलत बनी हुई कुण्डली को ठीक कर सकता है। मू. 31/- इकत्तीस रुपया।

रत्न अंगूठी आपका भाग्य

लेखक—राजेश दीक्षित



खानों से निकाले हुए रत्न, नीलम, हीरे, मोती, पुखराज इत्यादि सुन्दर और आकर्षक होने के कारण आपके शरीर की शोभा तो बढ़ाते ही हैं लेकिन साथ-ही-साथ इनमें से ब्रह्माण्ड किरणें (Cosmic Rays) निकलती हैं जो आपको स्वस्थ और उत्साहित रखती हैं तथा आपके जीवन को सुखी और सौभाग्यशाली बनाती हैं। हमारी सचित्र पुस्तक में बताया गया है कि किस दिन अथवा किस मास में उत्पन्न हुए व्यक्ति को कौन-सा रत्न अंगूठी में धारण करना चाहिए जिससे वह समृद्धशाली बन सके तथा मन इच्छित फल प्राप्त कर सके। मूल्य 15/- पन्द्रह रुपया, पुस्तक आज ही मंगाकर अपनी मनोकामना सिद्ध करें।

लाट्री गाइड (मू. 8·25)





मेरी या मेरी धर्मपत्नि की या मेरे परिवार में किसी की भी लाट्री कब निकलेगी यह सोच आपको हर समय लगा रहता होगा। आपने किसी भी प्रांत (Province) की लाट्री टिकट क्यों न खरीदा हो, लाट्री आपके नाम निकल सकती है आशा और विश्वास पर दुनिया कायम है। इस पुस्तक में ऐसे-ऐसे उपाय बताए गए हैं जिनसे भगवान् चाहेगा तो भाग्य का पासा पलटकर आप लखपतियों की गिनती में आ सकते

सफलता आदि घटनाओं का वर्णन इतनी सरल भाषा में किया गया है कि साधारण साक्षर व्यक्ति भी इसको पढ़कर अच्छे-अच्छे ज्योतिषियों के समान भूत, भविष्य और वर्तमान सभी बातों को बता सकता है। इसमें १२०० चित्र प्रत्येक प्रकार की रेखाओं का यथेष्ट ज्ञान करा देते है। पुस्तक और हाथ खोल लीजिए। चित्र के अनुसार रेखाएं मिलाते चले जाएँ और सभी बाते सही-सही बताते जाएँ। इसमें उगली के पोरुओं और नाखूनों से लेकर हथेली सहित मणिबंध तक आनेवाले सभी रेखाओं के पर्वत चित्रों, बिन्दुओं, त्रिभुजों, वर्गों, जाल कन्दुक, पद्म, त्रिशूल, शख, चक्र आदि सभी का यथासम्भव वर्णन बड़े ही अनुभव के साथ किया गया है। हस्तरेखा पर हिन्दी में आज तक अन्य ऐसी कोई पुस्तक नहीं छपी है। पृष्ठ सं. १०००, चित्र स. लगभग १२००, मूल्य २०रु. मात्र

वर्ष चन्द्र प्रकाश

आयु, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, स्वास्थ्य, भाग्योदय आदि की जानकारी के लिए प्रत्येक मनुष्य को अपने वर्षफल का ज्ञान होना चाहिए जिससे वह लाभ के लिए प्रयत्न और हानि से बचाव कर सके। आधुनिक पंचांगों में वर्षफल बनाने का गणित मिलता है किन्तु वह अधूरा है क्योंकि केवल उसके सहारे कोई भी नवीन ज्योतिषी ध्रुवक आदि नहीं बना सकता। इस पुस्तक ने उक्त न्यूनता की पूर्ति की है। इस पुस्तक में ध्रुवक, वर्षेष्ट ध्रुवाङ्क सारिणी, वर्ष की महादशा, दशाओं के मास-दिवस, योगिनीदशा, उसके मास-दिवस आदि बनाने की शास्त्रीय पद्धति को सुगम तथा सरल रीति से समझाया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें वर्षफल बनाने के उपयोगी पञ्चवर्गी चक्र, त्रिपताकी चक्र, निसर्ग मैत्री शत्रु चक्र आदि कई चक्र भी दिए हैं। सूर्यादि ग्रहों का द्वादश भावगत शुभाशुभ फल भी दिया है। अन्त में वर्षफल जानने योग्य कुछ बातें दी गई हैं जो इसी पुस्तक में ही मिलती हैं। मूल्य सिर्फ १ रु०

प्रश्न चन्द्र प्रकाश

इस पुस्तक से प्रत्येक मनुष्य केवल वार्षिक ही नहीं बल्कि मासिक, साप्ताहिक, दैनिक दिन चर्या के साथ-साथ घन्टों, मिन्टों का भी भूत भविष्य तथा वर्तमान का हाल भी जान सकता है। इसके द्वारा नौकरी, सट्टा, व्यापार, लाटरी, रेस, चोरी गई वस्तु आदि का सभी हाल प्रश्न द्वारा पाने का यथोचित साधन है। किसी भी प्रश्नकर्ता को आता देखकर उसी समय प्रश्न कुण्डली तैयार करके विषय सूची के अनुसार पृष्ठ निकालो और तुरन्त प्रश्न बनाकर सही उत्तर देने में समर्थ हो जाओ और उसके मार्ग का विवरण बताकर उसे अवाक् कर दो। ताकि वह स्तब्ध ही खड़ा रह जावे। अपने प्रश्न का यथेष्ठ उत्तर पाकर वह आपकी प्रशंसा करता हुआ जाये। मूल्य केवल रु. ४.००

दीवान रामचन्द्र कपूर की पुस्तकें

लघुपाराशरी भाष्य

लघुपाराशरी भाष्य : डिमाई आक्टेवा : पृष्ठ स. ४०० । काल चक्र दशा सहित : भारतीय फलित ज्योतिष की विंशोत्तरी दशापद्धति के प्रामाणिक ग्रंथ उड्डदाय-प्रदीप का भाष्य है। इसमें श्लोकों का अनुवाद तो है ही पर बहुत-सी ऐसी सामग्री समाविष्ट की गई है जिससे विषय के समझने में पूर्ण सहायता प्राप्त होती है। आवश्यकतानुसार सारिणियां भी दी गई हैं जो श्लोकों के साथ ही साथ हैं जिससे अध्ययन के साथ ही सारिणियां भी उपलब्ध रहें। प्रस्तुत पुस्तक में ग्रहों का योगज फल दिया गया है और उसके जानने के लिए क्लिष्ट श्लोक हैं अतः उन्हें सरल बनाने की दृष्टि से परिशिष्ट हैं। परिशिष्ट की योगावली के द्वारा सरलता से ग्रहों की दशा तथा अन्तर फल ज्ञात हो जाता है। साथ ही इसको और भी उपयोगी बनाने के लिए सविस्तार, सोदाहरण, ससारणी, फलित ज्योतिष संबंधी जिज्ञासाओं के उत्तर आदि सभी बातें दी गई हैं। मूल्य ८ रु०

कालचक्र

फलित ज्योतिष में अनेक नक्षत्र-दशा पद्धतियां हैं। उनमें चार प्रसिद्ध हैं: विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी और कालचक्र। इन चारों की दशा का आधार चन्द्रनक्षत्र है। कालचक्र दशा भी चन्द्रनक्षत्र की दशा है। यह दशा प्रत्येक चन्द्र नक्षत्र के प्रत्येक चरण से आरम्भ होती है। इस दशा का उल्लेख तथा दशा आनयन की रीति बृहद्पाराशर होराशास्त्र तथा जातक पारिजात में है पर कोई ऐसी टीका नहीं थी जिसके आधार पर सही फलादेश किया जा सके। लेखक ने अनेक कुण्डलियों पर कालचक्र दशा का उपयोग किया और उसे मारक तथा अरिष्ट प्रसंग में उपयोगी पाया। इसमें लेखक ने हिन्दी टीका मात्र ही नहीं दिया है अपने अनुभव तथा उदाहरण भी दि हैं। मूल्य ३.००

रमल प्रश्नोत्तरी

इस प्रश्नोत्तरी के सम्बन्ध में यह कथा है कि नेपोलियन महान् इसका प्रयोग किया करता था इसीलिये इस पद्धति को Napolean's oraculum कहा जाता है। इस प्रश्नोत्तरी में प्रायः सभी सामान्य जिज्ञासाओं का उत्तर सन्निहित है। मूल्य रु० १.५०

—:o:—

आचार्य रजनीश

समन्वय, विश्लेषण और संसिद्धि

ले. डा. रामचन्द्र प्रसाद, पटना विश्वविद्यालय, पटना मूल्य ७.५०

इस पुस्तक में जीवन के आनन्द तथा आत्मा के रहस्य को जानने का सरल मार्ग मिलेगा। आचार्य जी के रहस्यपूर्ण विचारों को समझने के लिए यह कृति अतीव उपयोगी है।

विषयक्रम I औपनिषद दर्शन, जैन और कृष्णमूर्ति, बाइबिल आत्मज्ञान, धर्म, प्रेम
II मैं कौन हूँ ? ज्ञान और अहिंसा और अहंकार, अहंकार, सत्य और शून्यता।
III संसिद्धि और परिणति

सचित्र ज्योतिष शिक्षा-द्वितीय खण्ड (गणित)

बृहत्काय ग्रन्थ के ८७१ पृष्ठ तथा आठ भिन्न प्रकार के नक्शों सहित मूल्य रु. २५.०० फलित ज्योतिष में कुण्डली का फल बताने के लिये यह परमावश्यक है कि शुद्ध कुण्डली बनाई जाये। प्रस्तुत खंड में गणित द्वारा शुद्धतापूर्वक पूरी जन्म-पत्रिका बनाना बताया गया है और प्रत्येक गणित करने की सोदाहरण रीति देकर पूरी गणित क्रिया भी दी गई है। लग्न, ग्रह, संधियों को स्पष्ट करने की पूर्ण रीति दी गई है। लग्न और दशम स्पष्ट करने के लिये सारणियां बना दी गई हैं। इसके सहारे बिना गुरु के कोई भी चलित कुण्डली बना सकता है।

इन सब के अतिरिक्त विंशोपका बल निकालना, दृष्टिसाधन करना और दृष्टि साधन करने की सारणी भिन्न-भिन्न प्रकार के होरा द्रेष्कोण आदि वर्ग साधन करना और उनकी कुण्डलियां बनाना, दशवर्ग पर से पारिजात आदि संज्ञा जानना, अष्टक वर्ग साधन कर उनके भिन्न २ चक्र और कुण्डलियां बनाना, इष्ट-कष्टबल, उच्चबल, चेष्टाबल उच्चरश्मि चेष्टा, रश्मि साधन, इष्ट कष्ट दृष्टि साधन, शुभ-अशुभ अनेक प्रकार के आवश्यक चक्र साधन करना इसमें दिया गया है अर्थात् जन्मपत्रिका बनाने के लिये जिसकी आवश्यकता है ऐसा कोई विषय नहीं रह गया है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी पंचांग से ग्रह साधन करना, नक्षत्र काल निकालना तथा उससे लग्न और भाव निकालना आदि भी दिया गया है।

इसके अन्य खण्ड—फलित खंड, वर्षफल खड, गणित खंड, प्रश्न खंड, मुहूर्त खण्ड और संहिता खण्ड—प्रेस में हैं।

ज्योतिष-जगत

ले. पं. दुर्गादत्त शर्मा। यह पुस्तक सुबोध भाषा में वैज्ञानिक ढंग से लिखी गई है। प्रत्येक विषय को बड़े सरल तरीके से समझाया गया है जिससे साधारण व्यक्ति भी ज्योतिष का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इसमें नक्षत्र, योग, करण, राशि-चक्र, स्थिति, प्राच्य एवं पाश्चात्य, नाम तथा चिह्न, नक्षत्रों द्वारा राशिचक्र का विभाजन, १२ राशि परिचय, ग्रह परिभाषा, गुण स्वभाव के आधार पर प्रकार, प्रभाव, अवस्थाएं, ग्रह परिचय द्वादशभाव, संज्ञा, विभिन्न नाम तथा उनके विचारणीय विषय, सूर्य आदि सभी ग्रहों को द्वादशभावस्थ फल, जन्म लग्न फल; १२ राशियों का पृथक्-पृथक् लग्न फल—जैसे जातक का स्वभाव एवं प्रकृति सम्भावित व्यवसाय, मित्र, पत्नी, लग्न, भाग्योन्नति, कारक वर्ष एवं मारक ग्रह, संभावित रोग, उदाहरणार्थ कुंडली, द्वादशभाव फलविचार आदि सभी विस्तार से जो भी संभावित फल हो सकते हैं पृथक्-पृथक् भाव दिए गए हैं। मूल्य २.५० रु.

ज्योतिष-रहस्य-गणित खण्ड

—लेखक गुप्त और अज्ञात। मूल्य केवल रु. ५.००

विषयसूची—कुण्डली निर्माण और मुहूर्त काल साधन, सूक्ष्मनवांश एवं शुभ षड्वर्ग काल बोधक सारणी, देशकाल सुबोधिनी तालिका, विदेशकाल सुबोधिनी तालिका, मध्यम अयनांश सारणी, स्पष्ट अयनांश सारिणी, काशी की लग्न सारणी और सर्वत्र उपयोगी सारणी, सांपातिक काल कोष्ठक, षड्वर्ग बलसाधन, त्रिभागीय महादशान्तरदशाकोष्ठक, वर्ष प्रवेश सारणी, ग्रहदृष्ट्यादि विवरणचक्र, राशि-शील चक्र, जन्म चंद्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशासाधन सारणी, दशा, अन्तर, प्रत्यन्तर्दशा सारणी, विंशोत्तरी दशा की प्रत्येक अन्तर-दशा में भुक्त समय कोष्ठक लग्न सारणियों का विवरण, सर्वंघातचक्र, उत्तर और मध्यभारत की छः निरयण लग्न सारणियां, बंबई-नई दिल्ली की निरयण लग्न सारणी, काशी की चार सारणी, अक्षांश २ से ५५ की चरसारणी, स्पष्ट मध्याह्न, सूर्योदयास्त एवं दिनमानादि साधन, सूर्यक्रांति और बेलान्तर कोष्ठक लाघवांक कोष्ठक, राशियों का परस्पर शुभाशुभ योग, ग्रहस्पष्टीकरण सारणियां विकलांत सूक्ष्म ग्रह-स्पष्टीकरण, इष्टकाल पर विकलांत सूक्ष्म ग्रहस्पष्टीकरण की सारणियां, लग्न परिवर्तन तालिका, होडाचक्र।

दशाफलविचार

श्री जगजीवनदास गुप्त। भारतीय ज्योतिष के अन्तर्गत ग्रहों के दशा-अन्तर्दशा फलादेश को क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित करने का यह प्रथम प्रयास है। इस पुस्तक में भिन्न-भिन्न भावगत और राशिगत ग्रहों की महादशा का फल सरल और सुगम रीति से उपस्थित किया गया है; ग्रहों की अन्तर्दशा के फलों का निर्णय करने की अष्टसूत्री विधि इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक दी गई है। अन्य प्रकरणों के साथ-साथ गोचर प्रकरण अतीव उपयोगी है। इसमें सूर्यादि नव ग्रहों के गोचर फलादेश के कुछ महत्त्वपूर्ण नियम-सूत्र दिए हैं। गोचर शनि के फल-विचार में साढेसाती और कण्टक शनि के प्रभाव का हम सूक्ष्म अध्ययन पाते हैं।

मूल्य १.५०

ज्योतिष के प्रकांड विद्वान श्री चन्द्रदत्त पंत के अद्भुत ग्रंथ

चन्द्र हस्त विज्ञान

प्रस्तुत पुस्तक में हस्त-रेखा के साथ-साथ ग्रह योगों की दृष्टि से संपूर्ण जीवन वृत्तान्त आधुनिक ढंग पर द्वादश ग्रह-योगों के आधार पर, भाग्य, हृदय, मस्तिष्क, आयु, स्वास्थ्य, विवाह, संतान आदि रेखाओं के सम्मिलित सहयोग से यश, कीर्ति, नौकरी, धन-सम्पत्ति, संतान, अकल्पित लाभ, प्रेम की

भावार्थबोधिनी फलदीपिका

दक्षिण भारत में कई सौ वर्ष पूर्व सुविख्यात तपस्वी मंत्रेश्वर विरचित फलदीपिका मूल संस्कृतमें है। इसकी व्याख्यायें अंग्रेजी, गुजराती, तमिल, मलयालम आदि भाषाओं में हो चुकी हैं। हिन्दी में प्रथम बार विस्तृत हिन्दी व्याख्या सहित पुस्तक पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। भावार्थरत्नाकर नाम दक्षिण भारतीय फलित ग्रन्थ के ४५० योग भी व्याख्याकार ने इसी पुस्तक में दे दिये हैं। इसलिये यह अत्यन्त उपयोगी पुस्तक हो गई है।

पृष्ठ ६७९ मू. १५.००

त्रिफला (ज्योतिष)

फलित विषयक तीन प्राचीन ग्रन्थों (१) भुवलोक शतक, (२) शतमंजरी राजयोग तथा (३) बेड़ाजातक हिन्दी व्याख्या सहित उपलब्ध नहीं थे। मूल ग्रन्थ भी अप्राप्य हैं। विद्वान् लेखक ने मूल संस्कृत सहित विशद हिन्दी-व्याख्या में दुरूह ज्योतिष के मूलभूत सिद्धान्तों का प्रतिपादन के विषय को पाठकों के हृदयंगम कराने का सफल प्रयास किया है। शीघ्र ही तैयार हो जायेगा।

सुगम ज्योतिष प्रवेशिका

प्राचीन विचार के सज्जन तो सदैव से ही ज्योतिष में विश्वास रखते चले आए हैं पर आज का नवयुवक पढ़ा-लिखा समाज भी ज्योतिष की ओर आकृष्ट हो रहा है। परन्तु यह शास्त्र संस्कृत के दुरूह ग्रंथों में निबद्ध होने के कारण जन-साधारण के लिए अप्राप्य है। अनुवादित ग्रंथों में जैसी सुगमता होनी चाहिए वैसी होती नहीं। प्रस्तुत पुस्तक में अनेक शास्त्रों का मंथन कर उनका सार संग्रह प्रस्तुत किया गया है। इसके चार भाग हैं: १--जातक विचार, २-वर्षफल विचार, ३--प्रश्न विचार और ४-मुहूर्त विचार। अब तक हिन्दी भाषा में ऐसी कोई पुस्तक नहीं थी जिसमें इन चारों विषयों का मार्मिक ज्ञान सरल हिन्दी में कराया गया हो। इसमें प्रामाणिकता के लिए संस्कृत के श्लोक भी दे दिए गए हैं। कतिपय विषय बिलकुल नवीन दिए गए हैं और सभी विषयों पर नवीन दृष्टिकोण से प्रकाश डाला गया है। वैताल शास्त्रीजी के विचार भी दिए गए हैं। भावार्थ सारिणी भी जो अब तक हिन्दी में दृष्टिगोचर नहीं थी दी गई है। इसकी सहायता से एक साधारण ज्योतिष का ज्ञान रखनेवाला भी एक दिन में ही ५० जन्म कुण्डलियां शुद्ध-शुद्ध तथा प्रामाणिक तैयार कर धन तथा यश दोनों साथ-साथ कमा सकता है। तृतीय संस्करण पृष्ठ सं. ३३४। मूल्य सिर्फ ६-५०

ज्योतिष में स्वर-विज्ञान का महत्व

--ले. केदारनाथ जोशी : भविष्य ज्ञान के लिए फलित ज्योतिष की अनेकविध सारणियों में स्वर-विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र की एक सर्वमान्य पद्धति है जिसमें मनुष्य के नाम के अनुसार भविष्य का ज्ञान किया गया है। इस ग्रंथ में ज्योतिष की सरलतम विधि सारणियों को दृष्टिपथ में रखते हुए उसके विभिन्न अंगों और उपांगों के विश्लेषण किए गए हैं। इसमें तीन विभाग हैं। प्रथम में स्वर साधन की पृष्ठ भूमि एवं उदाहरण स्वरूप दिए गए प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध व्यक्तियों के नामों के आधार पर उनकी प्रक्रियाओं का तर्क-सम्मत विश्लेषण, परिचय, दूसरे विभाग में प्रमाण स्वरूप दिए गए उक्त सभी ३० या इससे भी अधिक व्यक्तियों के नामों के सभी स्वर उनके साधन तथा कारणकार्य संबंध को स्पष्ट किया गया है। साथ ही साथ इस संबंध में शंकाओं का समाधान भी किया गया है। तृतीय भाग में भारत, नेपाल, चीन और पाकिस्तान चार राष्ट्रों तथा भारत की राजधानी दिल्ली आदि के भविष्य का फलाफल दिया गया है अंत में दो परिशिष्ट भी हैं जिनमें मानव जीवन के साथ ज्योतिष के संबंध और ज्योतिष शास्त्र की अटूट परम्परा का भी परिचय कराया गया है। मूल्य ३ रु०

शकुन विज्ञान

--ले. पं. हीरालाल : शकुन विद्या विशारदों का यह अनुभव है कि शुभाशुभ कर्मों के विपाक से प्रति क्षण प्रत्येक मानव जो शुभाशुभ फल भोगता है उसे शकुन द्वारा पहले ही जान सकता है। पश्चात् धार्मिक अनुष्ठानों से अशुभ का प्रतिकार और शुभ का परिष्कार कर सुख सम्पत्ति से समृद्ध हो सकता है। इसलिए शकुन विद्या आज भी प्रकाश स्तम्भ बनी हुई है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने शकुन प्रदीप, शकुन शास्त्र तथा वास्तु निर्माण के सम्बन्ध में विद्वत्तापूर्वक लिखा है। भाषा इतनी सरल है कि साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी इसे समझ सकता है। इसके पढ़ने से आने वाले शुभाशुभों का आपको पूर्व ही ज्ञान हो जाता है और आप उससे लाभान्वित हो जाते हैं। परीक्षा के समय अगर आने वाले प्रश्नों का ज्ञान परीक्षार्थियों को हो जाता है तो उनके लिए वरदान हो जाता है वैसे ही प्रस्तुत पुस्तक जीवन परीक्षा के पूर्व ही प्रश्नोत्तर सहित सर्वसाधारण के लिए एक अनुपम देन है। मूल्य ४-५० रु० जिल्द वाली ५-००

श्री बी. एल. ठाकुर कृत

सचित्र ज्योतिष शिक्षा प्रथम भाग

इस पुस्तक के अध्ययन से ज्योतिषसम्बन्धी बहुत-सी महत्वपूर्ण मुख्य बातें ज्ञात हो जाती हैं जैसे किसी का जन्म सम्वत्, मास, पक्ष, दिन, समय आदि न ज्ञात हो तो केवल कुण्डलीचक्र को ही देखकर सभी बातें बताई जा सकती हैं या बिना पंचांग के तिथि, नक्षत्र, करण, वार, सूर्य, चन्द्र, स्पष्ट आदि किस प्रकार बताए जा सकते हैं समझाया गया है और अनन्त वर्षों की जंत्री देकर जंत्री बनाने की युक्ति भी बताई गई है। अंत में फलित संबंधी मुख्य-मुख्य बातें बताई गई हैं। डिमाई आठ पेजी : पृष्ठ सं० ३००। मूल्य ९रु०

वर्मा एलोपैथिक निघंटु (अर्थात् मेटेरिया मेडिका)

सुप्रसिद्ध लेखक डा. रामनाथ वर्मा। प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान् लेखक ने अपने दीर्घकालीन अनुभवों के आधार पर पाश्चात्य औषधियों को तैयार करने की भिन्न-भिन्न विधियां नाप तौल (ग्रेन, ड्राम, औंस, पौंड, मिनिम, सी.सी, किलोग्राम, स्टोन आदि) ब्रिटिश फार्माकोपिया में वर्णित औषधियों के भिन्न-भिन्न रूप एसिटा, ऐसिड्स, एक्सट्रैक्टस, डिकोक्शन्स, लिनिमेन्टस, स्पिरिट्स, टिंचर्स, सीरप्स इत्यादि) एम्प्यूल्स, बाथ्स, कैप्स्यूल्स, डूश, एनिमा, आइस बैग, पिग्मेन्ट्स इत्यादि का वर्णन, औषधियों को शरीर में प्रविष्ट करने के लिए भिन्न-भिन्न तरीके, औषधियों की मात्रा निश्चित करना, परस्पर विरोधी गुण रखने वाली औषधियां, विस्फोटक संयोग, औषधियों की सेवन विधि, बच्चों के नुस्खे, बच्चों के लिये भिन्न२ औषधियों की मात्रा, तुलनशीलता, अंगों पर प्रभाव, भांति २ के लोशन तैयार करना आदि, सभी को एक स्थान पर संकलित कर गागर में सागर भर दिया है और नवीनतम आविष्कारों तथा अनुभवों को जोड़कर इसकी उपयोगिता और बढ़ा दी गई है। इतनी उपयोगी होने के कारण ही यह इसका छठा संस्करण है। १५ रु.

वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा—सुप्रसिद्ध लेखक डा. रामनाथ वर्मा

उपसर्ग—जन्परोग—वातरोग अर्थात् नाड़ी संस्थान के रोग—मांस पेशियों के रोग—श्वासोच्छ्वास के अंगों के रोग—हृदय के रोग—रक्तवाहिनियों के रोग—मुंह, कंठ-मूल ग्रन्थि और कंठ के रोग—भूख पैदा करने वाली ग्रंथियों के रोग—जीभ के रोग—आमाशय के रोग—अंत्र रोग—यकृत रोग—क्लोमग्रंथि के रोग—उदरकला के रोग—रक्त रोग—प्लीहा रोग—लसीका ग्रन्थियों तथा वाहिनियों के रोग—प्रणाली विहीन ग्रंथियों के रोग—मूत्रयन्त्र के रोग—चर्मरोग—अस्थियों और संधियों के रोग—रोग जिनका संबंध परिपोषण और संवर्द्धन से है—नेत्र रोग—कर्ण रोग—मसूड़ों और दांतों के रोग—स्त्री रोग—गर्भावस्था के रोग—स्त्री रोग २—बाल रोग—विविध रोग—पुरुषों के जननेन्द्रिय के रोग। मूल्य रु. १२.००

व्याधि विज्ञान : डा. आशानन्द पञ्चरत्न : दो भागों में पृ. सं. ११००। निदान-विषयक इस अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ में पाश्चात्य एवं पौर्वात्य मतानुसार चिकित्सा, तुलनात्मक अध्ययन वैद्य बन्धुओं तथा एलोपैथिक डाक्टरों के लिए समान रूप से उपयोगी है। दो भागों का मूल्य २२ रु०

सूचीवेध विज्ञान : रमेशचन्द्र वर्मा : इसमें शरीर विज्ञान, रोग और जीवाणुओं का विस्तृत परिचय, विशोधन कार्य, इंजेक्शन लगाने की संपूर्ण विधियों और सूचीवेध से होने वाले उपद्रव तथा उनकी चिकित्सा के साथ १००० से अधिक इंजक्शनों का भी विस्तृत वर्णन है। मूल्य ७.५० रु.

हिन्दी माडर्न मेडिकल ट्रीटमेंट : ए.एल. गुजराल : लेखक ने अपनी अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद कर हिन्दी भाषा-भाषी विद्यार्थियों को एलोपैथिक चिकित्सा के नवीनतम आविष्कारों तथा आधुनिकतम चिकित्सा प्रणाली से परिचित कराया है। मूल्य २० रु०

हृदय परीक्षा : रमेशचन्द्र वर्मा : हृदय की व्याधियों और आधुनिक प्रणाली तथा उपकरणों से उनकी परीक्षा का विस्तृत वर्णन, चित्रों सहित विषयको अच्छी तरह समझाया गया है। मूल्य २.००

ज्योतिष संबंधी अनुपम प्रकाशन

ज्योतिष कलानिधि श्री गोपेश कुमार ओझा के अद्वितीय ग्रंथ

अंकविद्या (ज्योतिष)

अंकविद्या (ज्योतिष) : क्राउन आठ पेजी, सं० २००। अंग्रेजी में अंकविद्या पर अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं पर हिन्दी में इनका पूर्ण अभाव है, यद्यपि इसका ज्ञान भारतवर्ष में अनादि काल से चला आ रहा है। ज्योतिष के अन्तर्गत 'अंक' से फलादेश करने की पद्धति शुद्ध भारतीय है। इसी कारण अंक विद्या के मुख्य-मुख्य सिद्धान्तों को अनेक संस्कृत तथा अंग्रेजी के ग्रंथों से संग्रह कर यह पुस्तक तैयार की गई है। इसमें जन्म की अंग्रेजी तारीख से जीवन के शुभाशुभ वर्ष, दिन, घंटे आदि निकालने के जो सुगम सिद्धान्त बताए गए हैं उन्हें साधारण पढ़ा-लिखा मनुष्य भी समझकर लाभ उठा सकता है। अंक से प्रश्न-विचार तथा जन्मकुण्डली एवं हस्तरेखा से अंकविद्या का सामंजस्य ऐसा विषय है जो प्रत्येक ज्योतिषी और ज्योतिष-प्रेमी को जानना आवश्यक है। कम पढ़ा-लिखा भी व्यक्ति इस पुस्तक के द्वारा अंकों के जोड़ द्वारा किसी भी व्यक्ति के जीवनभर के शुभाशुभ तथा स्वभाव आदि बता सकता है। मूल्य सिर्फ ४ रु०

हस्त रेखा विज्ञान

हस्त रेखा विज्ञान : क्राउन आठ-पेजी, पृष्ठ सं. ५६०। हस्तरेखा शास्त्र पर, हस्त-रेखा तथा शरीर-लक्षण संबंधी संस्कृत, हिन्दी और प्राकृत में मिलती सभी पुस्तकों के गंभीर अध्ययन के बाद ही यह पुस्तक लिखी गई है। इसमें हस्त रेखा के सभी विषयों पर भारतीय तथा पाश्चात्य मत के आधार पर बहुत ही सुन्दर विवेचन किया गया है। विषय को सुस्पष्ट करने के लिए अनेक चित्र तथा भाषा को सरल और रोचक रखा गया है। हाथ की बहुत-सी सूक्ष्म और जटिल रेखाओं को समझाने का बड़ा परिश्रम किया गया है। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण खण्ड शरीर लक्षण है जिसमें कोई ऐसा अंग उपांग नहीं छोड़ा गया है जिसकी पूरी जानकारी न दी गई हो। स्थान स्थान पर संस्कृत तथा अन्य भाषाओं से प्रमाण देकर उपादेयता और भी बढ़ा दी गई है। इस अकेले पुस्तक के अध्ययन और मनन से साधारण पाठक भी अच्छा ज्योतिषी थोड़े समय में ही हस्त रेखा का पूर्ण ज्ञाता बनकर आशातीत लाभान्वित हो सकता है। मूल्य १२ रु० मात्र।

जातकादेशमार्ग [चन्द्रिका]

यह प्राचीन ग्रन्थ कई सौ वर्ष पूर्व दक्षिण भारत में लिखा गया था। इसकी विस्तृत व्याख्या छप रही है। मूल श्लोक भी साथ दिये हैं। संज्ञा, विवेक, अरिष्ट, अरिष्टभंग, आयुर्विभाग, आयुर्योग, मरण निर्णय, योग, अष्टकवर्ग, भावविचार, भावफल, दशाफलहारछर, भार्या विचार, आनुकूल्य, पुत्रचिन्ता, संतानचिन्ता, मिश्र प्रकरण।

मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड जवाहर नगर दिल्ली-७

अत्यन्त उपयोगी एलोपैथिक तथा यूनानी के प्रकाशन

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान : एलोपैथिक तथा आयुर्वेदिक : ४९० पृष्ठ डा. आशानन्द पञ्चरत्न (प्रथम भाग) : इसमें एलोपथिक तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा संबंधी विषयों का तुलनात्मक रूप से रोगों का निदान एवं सम्प्राप्ति तथा चिकित्सा भी साथ-साथ दी गई है। एतावत आविष्कृत एन्टी वायटिक्स औषधियों और इंजेक्शनों का भी समावेश है। मू. १०.००

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र : (A Text Book of Modern Medicine) : श्री धर्मदत्त वैद्य : १५०० पृष्ठ : एलोपैथिक पद्धति से चिकित्सा का ज्ञान कराने के लिए आधुनिकतम आविष्कारों के साथ हर रोगों के कारण, लक्षण, चिकित्सा विस्तार के साथ दिये गये हैं। मूल्य ३६.०० रु०

कफ परीक्षा : रमेशचन्द्र वर्मा : विकृति विज्ञान का ज्ञान कराने वाला हिन्दी में प्रथम ग्रंथ। १३ चित्रों सहित कफ की सम्पूर्ण परीक्ष्य विधियों पर प्रकाश डाला गया है। श्लेष्मा की भौतिक, रासायनिक और अणुवीक्षणीय परीक्षा पद्धति का विस्तृत वर्णन है। मूल्य १.२५ रु

क्लीनिकल मेडिसिन : श्री अत्रिदेव गुप्त : दो भाग। पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र की प्रसिद्ध पुस्तक शैवल की 'क्लीनिकल मेडिसिन', मजूमदार की 'बेड साइड मेडिसन,' और चेम्बरलेन की 'क्लिनिक' आदि प्रामाणिक ग्रंथों के आधार पर आयुर्वेदीय संहिताओं के तुलनात्मक बहुमूल्य उद्धरणों के साथ भारतीय दृष्टिकोण से लिखा गया सर्वोत्तम ग्रंथ। द्वितीय संस्करण मूल्य २५.०० रु०

नव्य-जन-स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य विज्ञान : डा. मुकुन्द स्वरूप वर्मा : पृ. सं. ४३२ : प्रस्तुत पुस्तक में जन-स्वास्थ्य-संबंधी सभी प्रश्नों पर विचार किया गया है और स्वास्थ्य के प्रत्येक विषय पर प्रकाश डाला गया है। मूल्य ८ रु०

मलेरिया : मनमोहन धूप : मलेरिया रोग के कारण, भेद और विकास के वर्णन के साथ-साथ अचूक चिकित्सा भी बतलाई गई है। मलेरिया चिकित्सा में नवीनतम औषधियों का उपयोग तथा उनके गुण दोष का भी उल्लेख किया गया है। मूल्य २.२५

मानव शरीर रचना : डा० मुकुन्द स्वरूप वर्मा। ग्रे के एनाटमी आदि ग्रन्थों के आधार पर भारतीय दृष्टिकोण पर लिखी गई आयुर्वेदिक तथा मेडिकल कालेजों के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ। अनेक चित्रों सहित पहला भाग मूल्य २८ रु०

पाश्चात्य द्रव्यगुण विज्ञान (मेटीरिया मेडिका) प्रथम खण्ड ले. डा. आर. एस. सिंह तथा डा. बी. एन. सिंह

विषयानुक्रमणिका

पूर्वार्द्ध : १ सामान्य द्रव्यगुणविज्ञानीय २ सामान्य द्रव्य विज्ञानीय ३ मान परिभाषा ४ औषध शक्ति मानकीकरण ५ फार्माकोपियल एवं नान फार्माकोपियल योग ६ द्रव्य-गुण कर्मविधि ७ भेषजप्रयोग विधि ८ योगीपधविज्ञानीय ९ भेषज कल्पना एवं औषध भोजनविज्ञानीय।

उत्तरार्द्ध : १ क्षार तथा क्षारीय मृदा एवं अम्लविज्ञानीय-क्षार तथा क्षारीय मृदा २ अम्ल। जल एवं इलेक्ट्रोलाइट संतुलन ३ धातुविज्ञानीय ४ उपधातुविज्ञानीय ५ तंत्रिकातंत्र पर कार्य करने वाली औषधियां—केन्द्रीय तंत्रिकायंत्र पर उत्तेजक क्रिया करने वाली औषधियां—प्रमस्तिष्क—उत्तेजक (सेरिब्रल स्टिमुलेंट्स) औषधियां—मानसिक क्रियोत्तेजक या मानसिक—चेष्टोत्तेजक—मेडुला उत्तेजक—सुषम्नोत्तेजक औषधियां—उल्लासकद्रव्य—सार्वदैहिक संज्ञाहर औषधियां—अनुतप्त् सार्वदैहिकसंज्ञाहर औषधियां—अन्तः शिरामार्ग द्वारा प्रयुक्तसंज्ञाहर द्रव्य—वेदनाहर एवं ज्वरहर औषधियां—निद्रायक एवं शामक औषधियां—मनः प्रशान्तक औषधियां—आक्षेपहर एवं अपस्मारोघी औषधियां—पेशियों पर कार्य करने वाली औषधियां।

पृष्ठ संख्या ७६२+९४+१६ वृहत्काय ग्रन्थ का मूल्य रु. ३०.००

पाश्चात्य द्रव्यगुण विज्ञान : (दूसरा भाग) : डा. राम सुशील सिंह। बड़े आकार के १०२८ पृष्ठ। इसमें अधिक से अधिक एलोपैथिक, आयुर्वेदिक तथा यूनानी द्रव्यों का विस्तृत, सचित्र, तुलनात्मक एवं सभी दृष्टि से ऐसा सर्वांगीण हृदयग्राही एवं उद्बोधक विवरण दिया गया है जो अंग्रेजी व किसी अन्य भाषा में किसी एक ही मेटीरिया मेडिका में उपलब्ध नहीं है। मूल्य ३०.०० रु०

यूनानी चिकित्सा विधि : (यूनानी तिब्ब का फार्माकोपिया) हकीम मनसाराम शुक्ल : हकीम अजमल खां, उनके परिवार तथा दिल्ली के अन्य हकीमों के नित्य उपयोग में आने वाले अद्भुत एवं चमत्कारी नुस्खों का संग्रह। साथ ही साथ इसमें प्रत्येक रोगों का खुलासा तथा पथ्य भी दिया गया है। मूल्य ५.००

यूनानी चिकित्सा सागर : हकीम मनसाराम शुक्ल : प्रस्तुत पुस्तक में संसार प्रसिद्ध हकीम अजमल खां तथा अन्य प्रसिद्ध हकीमों के सभी गुप्त नुस्खों का संग्रह। मूल्य १० रु०

वर्मा एलोपैथिक गाइड : डा. रामनाथ वर्मा : पृ. सं. ७४०। एलोपैथिक प्रणाली से शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों, उनके कार्य, रचना, रक्त संचार, नाड़ी परीक्षा, पाखाना, मूत्रादि परीक्षा, विटामिन्स, औषधियों को शरीर में प्रविष्ट करने के भिन्न-भिन्न मार्ग, इंजेक्शन, मुख्य-मुख्य रोग और अनुभूत नुस्खे, नवीनतम औषधियों तथा चिकित्सा संबंधी आविष्कार, औषधियों के गुण दोष, प्रयोग, उपचार आदि दिए गए हैं। इसकी लोक-प्रियता इसी से साबित होती है कि इसके अब यह आठवां संस्करण तैयार हो गया है। मूल्य १४.००

वर्मा एलोपैथिक योगरत्नाकर : डा. रामनाथ वर्मा : पृ. सं. ७००। इस पुस्तक में डाक्टरी चिकित्सा में नित्य प्रयोग में आने वाले आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के समग्र नुस्खों, योगों, पेटेन्ट, साधारण औषधियों तथा इन्जेक्शनों का संग्रह है। मूल्य १३.००

मोतीलाल बनारसीदास बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

हमारे अत्यन्त उपयोगी आयुर्वेद के प्रकाशन

अष्टांग हृदय : लालचन्द्र वैद्य कृत सरल हिन्दी व्याख्या सहित। सम्पूर्ण। बड़े ८४० पृष्ठ, पक्की कपड़े की जिल्द। मूल्य सिर्फ १५ रु०

आयुर्वेद चिकित्सा मार्ग दर्शिका (आयुर्वेदिक गाइड) : आयुर्वेद की अनेक पुस्तकों के रचयिता अत्रिदेव विद्यालंकार। यह रचना शुद्ध आयुर्वेद-प्रणाली से चिकित्सा करने वाले प्रत्येक वैद्य के लिए मार्ग-प्रदर्शक है। वैद्यों को सदैव पास रखने वाली पुस्तिका का मूल्य सिर्फ ५ रु०

चरक संहिता : श्री जयदेव विद्यालंकार कृत। बड़े आकार में १२३३ पृष्ठ। दो जिल्दों में, अत्यन्त प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद सहित मूल्य ३० रु०। इसकी उपयोगिता इसी से प्रमाणित हो जाती है कि थोड़े समय में ही इसके सात संस्करण हो गए हैं।

चिकित्सा तत्त्व दीपिका : पं. महावीर प्रसाद पाण्डेय। इसके चिकित्सा विषयक ज्ञान, रोगों के सम्प्राप्ति लक्षण, साध्यासाध्यता, उपक्रम तथा प्रयोग उपयोगी और सारगर्भित आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथों से लेकर सरल भाषा में दिए गए हैं। मूल्य दो भागों का १८.५० रु०

द्रव्य गुण विज्ञान (पूर्वार्द्ध) सुप्रसिद्ध आचार्य यादव जी कृत सरल हिन्दी में आयुर्वेद के छात्रों की सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। पृष्ठ सं. १८० मूल्य ४.००

नाड़ी दर्शन : श्री ताराशंकर मिश्र वैद्य। पृ. सं. १७२। इसमें सरल हिन्दी में चरक, सुश्रुत तथा आधुनिक विज्ञान पर आधारित नाड़ी संबंधित सभी विषयों पर संपूर्ण प्रकाश डाला गया है। नया परिवर्द्धित संस्करण मूल्य ३.५०

भाव प्रकाश : (सम्पूर्ण) : सर्वांग सुन्दरी भाषा टीका सहित। टीकाकार पं. लालचन्द्र जी वैद्य। बड़े आकार के १००० पृष्ठ। दो जिल्दों में मूल्य २५ रु०। हिन्दी अनुवाद द्वारा इस विशाल ग्रंथको पढ़कर साधारण जन भी हर प्रकार के रोगों का इलाज कर सकता है।

भाव प्रकाश (निघंटु) : (हरीतक्यादि)। पं. विश्वनाथ द्विवेदी कृत ललितार्थकरी टीका सहित। पृ. सं. ७००। प्रस्तुत ग्रन्थ भावप्रकाश में से वनस्पति-शास्त्र व तत्समवर्गों को लेकर सरल और सुबोध हिन्दी में सर्व-साधारण के लाभार्थ तयार किया गया है। अपनी उपयोगिता के कारण ही कुछ ही समय में इसके सात संस्करण हो गए हैं। मूल्य ९ रु०

भैषज्य रत्नावली : मू. ले. गोविन्द दास : नरेन्द्रनाथ मित्र द्वारा परिवर्धित तथा संशोधित. अनु. जयदेव विद्यालंकार। बड़े आकार के ८४० पृष्ठ। परिवर्धित तथा संशोधित सातवां संस्करण। मूल्य १२.०० रु०

मेघ विनोद : मेघ मुनि प्रणीत : सौदामिनी भाषाभाष्य। भाष्यकर्ता श्री नरेन्द्रनाथ शास्त्री। ६५० पृष्ठ, तृतीय सं.। हर प्रकार की बीमारी के ऊपर अनुभव से आजमाए बढ़िया तथा सस्ते नुस्खे जो सभी जगह आसानी से उपलब्ध हैं, दिये गये हैं। मूल्य ६ रु०

रस तरंगिणी : मूल ले. पं. सदानन्द। पं. हरिदत्त शास्त्री कृत संस्कृत टीका तथा पं. धर्मानन्द जी द्वारा हिन्दी अनुवाद। इसमें स्वर्ण, ताम्र, वंग, लौह, सीसा, पारद, गंधकादि का व्यापक तथा विस्तृत वर्णन किया गया है। अपनी विशेषता के कारण सात संस्करण हाथोंहाथ निकल गए। मूल्य १२.००

रसरत्न समुच्चय : श्री धर्मानन्द जी द्वारा विस्तृत हिन्दी टीका तथा अत्रिदेव विद्यालंकार द्वारा संशोधित। बड़े आकार के ५६६ पृष्ठ। भारतीय रस शास्त्र-संबंधी अनुपम ग्रंथ। मूल्य १० रु०

रसामृत : श्री यादव जी त्रिकम जी। रस शास्त्र के विद्यार्थियों तथा चिकित्सकों के लिए सरल से सरल तरीके से लिखा गया एक मार्गदर्शक ग्रंथ। मूल्य ५.०० रु०

राजयक्ष्मा : सो. द्वारकानाथ : आयुर्वेदीय सम्बोधपरक प्रबंध मूल्य १.००

वैद्यावतंस : लोम्बिराज प्रणीत : पं. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी कृत हिन्दी टीका १.५०

सुश्रुत संहिता : सम्पूर्ण : अनु० अत्रिदेव विद्यालंकार। बड़े आकार के ८२० पृष्ठ : प्रस्तुत पुस्तक आयुर्वेद का अत्यन्त प्राचीनतम शल्य चिकित्सा परक ग्रन्थ है जिसमें आठों अंगोंका विवरण शल्य कर्म को प्रधानता देकर किया गया है प्रथम मूल देकर उसका सरल एवं प्रांजल हिन्दी भाषा में अनुवाद दिया गया है। मूल्य १८ रु०

सुश्रुत संहिता : शारीर स्थान : डा. जे. डी. शर्मा। आयुर्वेदिक शारीरशास्त्र पर उठाई गई शंकाओं का वैज्ञानिक समाधान। मूल्य ५.००

अपक्व भोजन

तेहरान (इरान) के एक मुसलमान सज्जन इस पुस्तक के मूल लेखक अंग्रेजी में हैं। उन्होंने सारी उमर मांस आदि खाया और उनकी हालत ऐसी हो गई कि दुनियां की सभी प्रसिद्ध बीमारियां उन्हें थीं और उनसे थोड़ी दूर भी चलना कठिन हो गया। लाचारी खोजते २ उन्होंने कच्ची सब्जी भाजी का इस्तेमाल किया और उनकी सब बीमारियां दूर हो गईं, वह पहाड़ की चढ़ाई चढ़ने लग गये, फिर उन्होंने पूरी खोज और छान-बीन के बाद यह पुस्तक लिखी और डाक्टरों को चैलेंज भी किया। ऐसी उपयोगी पुस्तक का हम सरल हिन्दी अनुवाद जनता के उपकार के लिये छाप रहे हैं। प्रतीक्षा करें शीघ्र ही तैयार हो जायेगी।

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता बंगलो रोड जवाहर नगर (पो. बा. १५८६) दिल्ली-७

... १९७२ से सन् २१०१ तक की निरयण मेष संक्रान्तियों की तारीखें ...

इस कोष्ठक में दी गई संक्रान्ति की तारीखें और वार अंग्रेजी पद्धति के अनुसार हैं। यदि संक्रान्ति काल रात्रि के १२ बजे के बाद और स्थानीय सूर्योदय से पहिले हो तो उसे भारतीय पद्धति के अनुसार पिछले वार और तारीख में समझना चाहिए।

मेषसंक्रान्ति का वारेश ही वर्ष का मन्त्री होता है, अतः इस कोष्ठक से आगामी १३० वर्षों के मन्त्री भी ज्ञात होते हैं। ईस्वी सन् में ५७ जोड़ने से वि. संवत् बन जाता है।

निरयण मेष संक्रान्ति अप्रै.				निरयण मेष संक्रान्ति अप्रै.				निरयण मेष संक्रान्ति अप्रै.				निरयण मेष संक्रान्ति अप्रै.			
ई. सन्	ता.	वार	घ. मि.	ई. सन्	ता.	वार	घ. मि.	ई. सन्	ता.	वार	घ. मि.	ई. सन्	ता.	वार	घ. मि.
१९७२	१३	गु.	१३। १	२००५	१४	गु	०। ५	२०३८	१४	बु.	११।११	२०७१	१४	म.	२२।१७
१९७३	१३	शु.	१९।१०	२००६	१४	शु.	६।१५	२०३९	१४	गु.	१७।२०	२०७२	१४	गु.	४।२६
१९७४	१४	र.	१।१९	२००७	१४	श.	१२।२४	२०४०	१३	शु.	२३।२९	२०७३	१४	शु.	१०।३५
१९७५	१४	च.	७।२८	२००८	१३	र.	१८।३३	२०४१	१४	र.	५।३९	२०७४	१४	श.	१६।४५
१९७६	१३	म.	१३।३८	२००९	१४	मं.	०।४२	२०४२	१४	च.	११।४८	२०७५	१४	र.	२२।५४
१९७७	१३	बु	१९।४७	२०१०	१४	बु.	६।५१	२०४३	१४	म.	१७।५७	२०७६	१४	म.	५। ३
१९७८	१४	गु.	१।५६	२०११	१४	गु.	१३। २	२०४४	१४	गु.	०। ६	२०७७	१४	बु.	११।१२
१९७९	१४	श.	८। ५	२०१२	१३	शु.	१९।११	२०४५	१४	शु.	६।१५	२०७८	१४	गु.	१७।२१
१९८०	१३	र.	१४।१४	२०१३	१४	र.	१।२०	२०४६	१४	श.	१२।२५	२०७९	१४	शु.	२३।३१
१९८१	१३	च.	२०।२५	२०१४	१४	च.	७।२९	२०४७	१४	र.	१८।३४	२०८०	१४	र.	५।४०
१९८२	१४	बु.	२।३४	२०१५	१४	म.	१३।३८	२०४८	१४	म	०।४३	२०८१	१४	च.	११।४९
१९८३	१४	गु.	८।४३	२०१६	१३	बु.	१९।४८	२०४९	१४	बु.	६।५२	२०८२	१४	म.	१७।५८
१९८४	१३	शु.	१४।५२	२०१७	१४	शु.	१।५७	२०५०	१४	गु.	१३। १	२०८३	१५	गु.	०। ८
१९८५	१३	श.	२१। १	२०१८	१४	श.	८। ६	२०५१	१४	शु	१९।११	२०८४	१४	शु.	६।१७
१९८६	१४	च.	३।११	२०१९	१४	र	१४।१५	२०५२	१४	र	१।२१	२०८५	१४	श.	१२।२६
१९८७	१४	म.	९।२०	२०२०	१३	च.	२०।२४	२०५३	१४	च	७।३०	२०८६	१४	र.	१८।३६
१९८८	१३	बु.	१५।२९	२०२१	१४	बु.	२।३४	२०५४	१४	म	१३।३९	२०८७	१५	म.	०। ४
१९८९	१३	गु.	२१।३८	२०२२	१४	गु.	८।४३	२०५५	१४	ब	१९।४८	२०८८	१४	बु.	६।५४
१९९०	१४	श.	३।४७	२०२३	१४	शु.	१४।५२	२०५६	१४	शु.	१।५८	२०८९	१४	गु.	१३। ३
१९९१	१४	र.	९।५७	२०२४	१३	श.	२१। १	२०५७	१४	श.	८। ७	२०९०	१४	शु.	१९।१२
१९९२	१३	च.	१६। ६	२०२५	१४	चं.	३।१०	२०५८	१४	र.	१४।१६	२०९१	१५	र.	१।२२
१९९३	१३	मं.	२२।१५	२०२६	१४	मं.	९।२०	२०५९	१४	चं.	२०।२५	२०९२	१४	च.	७।३२
१९९४	१४	गु.	४।२४	२०२७	१४	बु.	१५।२९	२०६०	१४	बु.	२।३४	२०९३	१४	म.	१३।४१
१९९५	१४	शु.	१०।३३	२०२८	१३	गु.	२१।३८	२०६१	१४	गु	८।४४	२०९४	१४	बु.	१९।५०
१९९६	१३	श.	१६।४३	२०२९	१४	श.	३।४७	२०६२	१४	शु.	१४।५३	२०९५	१५	शु.	१।५९
१९९७	१३	र.	२२।५२	२०३०	१४	र.	९।५६	२०६३	१४	श.	२१। २	२०९६	१४	श.	८। ९
१९९८	१४	म.	५। १	२०३१	१४	च.	१६। ७	२०६४	१४	च.	३।११	२०९७	१४	र.	१४।१८
१९९९	१४	ब.	११।१०	२०३२	१३	म.	२२।१६	२०६५	१४	म	९।२०	२०९८	१४	च.	२०।२७
२०००	१३	गु.	१७।१९	२०३३	१४	गु.	४।२५	२०६६	१४	ब	१५।३०	२०९९	१५	बु.	२।३६
२००१	१३	शु.	२३।२९	२०३४	१४	शु.	१०।३४	२०६७	१४	ग	२१।३९	२१००	१५	गु.	८।४५
२००२	१४	र.	५।३८	२०३५	१४	श.	१६।४३	२०६८	१४	श	३।४८	२१०१	१५	शु.	१४।५५
२००३	१४	च.	११।४७	२०३६	१३	र.	२२।५३	२०६९	१४	र	९।५७				
२००४	१३	म.	१७।५६	२०३७	१४	म.	५। २	२०७०	१४	च.	१६। ६				

आचार्य विकाशचन्द्र सूरिजी द्वारा प्राप्त जैनपर्व-निर्णय

वीर सं. २४९७-९८, आत्म सं. ७५-७६, शाके १८९३, विक्रम संवत् २०२८

सन् १९७०-७१	तिथि	तारीख
श्री वृद्धिविजय (बूटेराय) जी म० स्वर्ग दिन और श्री विजयानंदसूरि, आत्मारामजी म. का जन्मदिन	चैत्र सुद १	शनि २७- ३-७१
,, सिद्धचक्र आंबिल ओली शुरु	चैत्र सुद ७	शुक्र. २- ४-७१
,, महावीर स्वामी जन्मदिन (जयंति)	चैत्र सुद १३	गुरु. ८- ४-७१
आंबिल ओली पूर्ण चैत्र पूर्णिमा-मि. का मेला	चैत्र सुद १५	शनि. १०-४-७१
,, ऋषभदेव वर्षीतप पारणा.	वैशाख सुद ३	मंगल २७-४-७१
,. विजयानंदसूरि (आत्माराम जी) म. स्वर्ग दिन	ज्येष्ठ सुद ८	मंगल. १- ६-७१
,, चौमासी अट्ठाई प्रारंभ	आषाढ़ सुद ७	बुध. ३०- ६-७१
,, ,, चौमासी चौदस.	आषाढ़ सुद १४	बुध. ७- ७-७१
,, चौमासी अट्ठाई सम्पूर्ण.	आषाढ़ सुद १५	गुरु. ८- ७-७१
,, नेमनाथ भगवान का जन्म दिवस.	श्रावण सुद ५	मंगल. २७-७-७१
,, पर्युषणपर्व अट्ठाई प्रारंभ	भाद्रपद वद १३	बुध. १८- ८-७१
,, कल्पसूत्र गृहस्थापना रात्रि जागरण	भाद्रपद वद ३०	शुक्र. २०- ८-७१
,, कल्पसूत्र वाचना प्रारंभ	भाद्रपद सुद १	शनि. २१-८-७१
,, महावीर जन्म वाचना	भाद्रपद सुद १	रवि. २२- ८-७१
,, संवत्सरी पर्व.	भाद्रपद सुद ४	बुध. २५- ८-७१
,, जगद्गुरु विजयहीरसूरि स्वर्गदिन	भाद्रपद सुद ११	बुध. १- ९-७१
,, युगवीर आ. श्री. विजयवल्लभ सूरि स्वर्ग दिन	आसो. वद ११	बुध. १५- ९-७१
,, सिद्धचक्र आंबिल ओली प्रारंभ	आसो. सुद ६	रवि. २६- ९-७१
,, सिद्धचक्र आंबिल ओली सम्पूर्ण.	आसो. सुद १५	सोम. ४-१०-७१
,, महावीर प्रभु निर्वाण दीपावली पर्व.	कार्तिक वद १५	मंगल १९-१०-७१
,, गौतम स्वामी केवल ज्ञान वीर स. २४९८	कार्तिक सुद १	बुध. २०-१०-७१
,, भाई दूज श्री विजय वल्लभ सूरि जन्म दिवस	कार्तिक सुद २	गुरु. २१-१०-७१
,, ज्ञान (सौभाग्य) पंचमी	कार्तिक सुद ५	रवि. २४-१०-७१
,, चौमासी अट्ठाई प्रारंभ	कार्तिक सुद ६	सोम. २५-१०-७१
,, चौमासी चौदस.	कार्तिक सुद १४	सोम. १-११-७१
,, चौमासी अट्ठाई पूर्ण कार्तिक पूर्णिमा	कार्तिक सुद १५	मंगल २-११-७१
,, हस्तिनापुर शौरीपुर का मेला	,, ,,	,,
,, मौन एकादशी १५ (कल्याणक दिन)	मगसर सुद ११	रवि. २८-११-७१
,, पोष दशमी श्री पार्श्वनाथ जन्म दिन.	पोष वद १०	रवि. १२-१२-७१
,, मेरुत्रयोदशी ऋषभदेव मोक्ष दिन.	माघ वद १३	शुक्र. १४- १-७२
,, चौमासी अट्ठाई आरंभ.	फागुण सुद ७	सोम २१- २-७२
,, चौमासी अट्ठाई पूर्ण कांगड़ा तीर्थ मेल	फागुण सुद १५	मंगल. २९- २-७२
ऋषभदेव जन्मदिन वर्षीतप की शुरुआत	चैत्र वदी ८	बुध ८- ३-७२

सायन और निरयण स्पष्ट-ग्रहः—इस पंचांग में दिए गए स्पष्ट ग्रह अन्य भारतीय पंचांगों के ग्रहों की भान्ति निरयण हैं। उदाहरण के रूप में—यदि भारतीय पंचांग में किसी समय निरयण स्पष्ट सूर्य ३ रा. १० अं. १४ क. १५ वि. लिखा हो, तो समझना चाहिए, कि उस समय सूर्य क्रान्ति वृत्त में पौष्णान्त बिन्दु से ३ रा. १० अं. (९०+१० =१०० अं.) और १४ क. १५ वि. आगे है। यदि हम उस समय सूर्य के सायन राशि आदि (वसन्त सम्पात से दूरी) जानना चाहते हैं तो हमें ३ रा. १० अं. १४ क. १५ वि. में अयनांश (वसन्त सम्पात) और पौष्णान्त बिन्दु के बीच का अन्तर) जोड़ना होगा। इसी प्रकार सायन स्पष्ट ग्रह को निरयण स्पष्ट बनाने के लिए अयनांश उसमें से घटाने होंगे —यह स्पष्ट ही है।+

निरयण संक्रान्तियों की तारीखें आगे २ क्यों होती जा रही हैं?—पौष्णान्त बिन्दु (निरयण मेषारम्भ बिन्दु) अयन, चलन के कारण उत्तरोत्तर ५० वि. प्रति वर्ष आगे २ खिसकता जा रहा है, अतः सभी वृष आदि निरयण राशियों के प्रारम्भ बिन्दु भी उत्तरोत्तर आगे २ प्रतिवर्ष ५० वि. की ही गति से खिसकते जा रहे हैं। आज से लगभग ५०० वर्ष बाद निरयण मेषारम्भ बिन्दु सायन वृषारम्भ बिन्दु (क) पर होगा, निरयण वृषारम्भ बिन्दु सायन मिथुनारंभ बिन्दु 'ख' पर होगा—आदि २। उस समय (५०० वर्ष बाद) सायन मेष आदि राशियां निरयण मेष आदि राशियों से पूरी एक-एक राशि पीछे होंगी। उस समय २१ अप्रै. को जब सूर्य सायन वृष में प्रविष्ट होगा (अर्थात्—सायन वृष संक्रान्ति होगी) तब सूर्य निरयण मेष राशि में प्रविष्ट माना जाएगा अर्थात्—निरयण मेष संक्रान्ति होगी), इसी प्रकार उस समय २२ मई को जब सूर्य सायन मिथुन में प्रविष्ट होगा, तब सूर्य निरयण वृष राशि में प्रविष्ट माना जाएगा (अर्थात्—निरयण वृष संक्रान्ति होगी)...आदि २। इस प्रकार निरयण मेष वृष आदि संक्रान्तियां, जो आजकल क्रमशः १३ अप्रै. १४ मई आदि को होती हैं, लगभग ५०० वर्ष बाद क्रमशः २१ अप्रै. २२ मई आदि को होंगी। इसी भान्ति सभी निरयण संक्रान्तियों की तारीखें उत्तरोत्तर आगे २ बढ़ती जा रही हैं। गणित से स्पष्ट है—प्रत्येक निरयण संक्रान्ति मध्यम मान से प्रति ७१ वर्षों में १-१ तारीख आगे २ होती जा रही है,* अर्थात् लगभग सवा दो हजार वर्षों में निरयण संक्रान्तियां १-१ अंग्रेजी महीना आगे २ होती जाती हैं, और लगभग ४॥ हजार वर्षों में २ मास या १ ऋतु आगे खिसकती जा रही हैं। इस भान्ति लगभग २६ हजार वर्षों में प्रत्येक निरयण संक्रान्ति प्रत्येक ऋतु में से गुजर जाएगी।

निरयण मेष संक्रांतियों की तारीखों में इस अन्तर का परिणाम:—निरयण संक्रान्तियों के अनुसार ही सौर मास और चान्द्र मासों के नामों का निर्णय होता है। निरयण मेष संक्रान्ति से सौर वैशाख प्रारम्भ होता है, निरयण वृष संक्रान्ति से सौर ज्येष्ठ प्रारम्भ होता है—आदि २। किंच जिस शुक्लादि चान्द्र मास में निरयण मेष संक्रान्ति होती है, वह शुक्लादि चैत्र मास होता है, जिस शुक्लादि चान्द्र मास में निरयण वृष संक्रान्ति होती है, वह शुक्लादि वैशाख मास होता है—आदि २। हम पहिले बतला चुके हैं—कोई भी निरयण संक्रान्ति अयन चलन के कारण कालक्रम से किसी भी ऋतु में हो सकती है। इससे यह सिद्ध होता है। कि—सौर और चान्द्र चैत्र आदि मासों की वे ऋतुएं, जो आजकल उपलब्ध होती हैं, कालान्तर में नहीं रहेंगी। अयनांश की वृद्धि के कारण प्रत्येक सौर एवं चान्द्र मास भविष्य में एक-एक करके प्रत्येक ऋतु में अनिवार्य रूप से पड़ेगा, जिसके परिणाम स्वरूप हमारे शरत्पूर्णिमा, शारद-नवरात्र, वसन्त-पंचमी आदि पर्व भी, जो साक्षात् ऋतुओं से ही सम्बद्ध हैं, अपनी २ ऋतुओं में नहीं पड़ेंगे। इस समस्या के समाधान का एक मात्र उपाय सायन गणित ही है।

विगत वर्षों की वैशाखी (निरयण मेष संक्रान्ति) की तारीखें:—लगभग ५वीं शताब्दी में ('सूर्य सिद्धान्त' के निर्माण के समय) जब कि—पौष्णान्त बिन्दु वसन्त सम्पात पर ही था, निरयण संक्रान्ति भी २२ मार्च (New Style date) को ही हुआ करती थी। धीरे २ अयन चलन के कारण प्रति ७१ वर्षों में १-१ दिन आगे बढ़ती हुई यह वैशाखी आज १३-१४ अप्रैल को हो रही है। इस २०वीं शताब्दी में सूर्यसिद्धान्त' की गणित तथा भारतीय पद्धति के अनुसार सन् १९००, १९०१, १९०४, १९०५, १९०८, १९०९, १९१२, १९१६, १९२०, १९२४, १९२८, १९३२, १९३६, तथा १९४० में वैशाखी १२ अप्रै. को होती रही है। ध्यान रहे—भारतीय पद्धति के अनुसार वार सूर्योदय से बदलता है, अंग्रेजी पद्धति के समान अर्धरात्रि से नहीं। अतः यदि संक्रान्ति रात्रि के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले हुई तो भारतीय पंचांगकार उसे पिछले वार और पिछली अंग्रेजी तारीख को ही लिखते हैं।

आगामी १३० वर्षों की निरयण मेष संक्रान्तियां:—आगामी १३० वर्षों (ई. सन् १९७२ से २१०१ तक) की निरयण मेष संक्रान्तियों की तारीखें वार और काल (भा.स्टैं.टा.) को मैंने स्वयं दृश्य गणितानुसार निकाल कर यहां कोष्ठक में दिया है। संक्रांति काल में कहीं २ कुछेक मिनटों की स्थूलता सम्भव है। इस कोष्ठक को देखने से स्पष्ट है, कि—कुछ वर्षों तक लीप-इयर और लीप-इयर के आगे आने वाले दो वर्षों में मेष संक्रान्ति १३ अप्रै. को और लीप इयर से पूर्ववर्ती वर्ष में १४ अप्रै. को होगी। संक्रान्ति की तारीख के परिवर्तन के समय यह नियम सर्वत्र लागू होता है।

अब आगे ई. सन् २१०० में सर्व प्रथम १५ अप्रै. को मेष संक्रान्ति भारतीय पंचांगों में लिखी जाएगी।

+ लगभग सभी भारतीय पंचांगों में निरयण स्पष्ट ग्रह ही होते हैं, अतः इन पंचांगों में अक्सर 'निरयण' शब्द का प्रयोग नहीं करते, 'निरयण स्पष्ट ग्रहों' को केवल 'स्पष्ट ग्रह' ही लिख देते हैं। यही बात संक्रान्तियों के लिए भी है, 'निरयण मेष संक्रान्ति, 'निरयण वृष संक्रान्ति'—आदि न लिख कर केवल 'मेष संक्रान्ति' आदि ही लिख दिया जाता है।

*निरयण सौर वर्ष सायन सौर वर्ष (अंग्रेजी कैलेण्डर के वर्ष) से २०.४ मि. बड़ा है। अतः ७१ निरयण सौर वर्षों में १ दिन (७१×२०.४१=१४४८.४ मिनट= लगभग १ दिन) बढ़ जाता है। अर्थात् अंग्रेजी कैलेण्डर के ७१ वर्षों में जितने दिन होते हैं, ७१ निरयण सौर वर्षों में उससे १ दिन अधिक होता है।

इस प्रकार यह समझ लेना चाहिए, कि—क्रान्तिवृत्त में स्थित सभी तारे प्रति वर्ष लगभग ५० वि. की गति से पश्चिम से पूर्व की ओर धीरे २ खिसक रहे हैं। यदि आज कोई तारा वसन्त सम्पात में है तो वह ५० वि. वार्षिक गति से धीरे २ A, क, B, ख आदि बिन्दुओं (चित्र देखें) में से गुजरता हुआ लगभग २६ हजार वर्ष बाद क्रान्ति वृत्त का पूरा चक्कर काट कर पुनः वसन्त सम्पात पर पहुँच जाएगा। अथवा यूं कहिए,—धीरे २ प्रति वर्ष ५० वि. की गति से पीछे (पश्चिम) की ओर हटते २ वसन्तसम्पात और शरत्सम्पात—दोनों २६ हजार वर्ष बाद पुनः क्रान्तिवृत्त का उल्टा पूरा चक्कर लगाकर उन्हीं तारों पर आ जाएंगे, जिन तारों पर आज वे हैं। तारों का या सम्पातों का यह वार्षिक चलन "अयन चलन" कहलाता है।✂

अयनांश :—क्रान्तिवृत्त पर एक बिन्दु (स्थान) है, जिसे पौष्णान्त बिन्दु या रेवत्यन्त बिन्दु कहते हैं। यह बिन्दु चित्रा तारे से १८० अंश पर है (चित्र देखें—चित्रा तारा शरत्संपात से आगे G बिन्दु के पास क्रान्तिवृत्त से लगभग २ अंश दक्षिण की ओर है।) भारतीय ज्योतिष में इस पौष्णान्त बिन्दु को निरयण मेष राशि का आरम्भ बिन्दु (स्थान) माना जाता है* अर्थात्—चित्रा तारा से १८० अंश पर क्रान्तिवृत्त में जब सूर्य आता है, तब भारतीय ज्योतिषी कहते हैं, कि—सूर्य निरयण मेष के प्रारम्भ में आ गया है। यह पौष्णान्त बिन्दु आजकल वसन्त सम्पात से लगभग २३ अं. २७ क. आगे 'A' बिन्दु पर है (चित्र देखें)। अयन चलन के कारण अन्य सभी तारों के साथ साथ ज्यों २ चित्रा तारा ५० वि. प्रति वर्ष पूर्व की ओर खिसकता जाता है, त्यों २ पौष्णान्त बिन्दु भी प्रति वर्ष ५० वि. आगे खिसकता जाता है। वसन्त सम्पात से पौष्णान्त बिन्दु का अन्तर ही 'अयनांश' कहलाता है। आजकल अयनांश (अर्थात्—वसन्त सम्पात से पौष्णान्त बिन्दु का अन्तर) २३ अं. २७ क. के लगभग है।

कुछ विद्वानों के मत में पौष्णान्त बिन्दु चित्रा तारे से लगभग १७७ अंश आगे है। पौष्णान्त बिन्दु की स्थिति के बारे में कई अन्य मत भी हैं। इन विभिन्न मतों के अनुसार अयनांश भी भिन्न २ होंगे। मैंने यहां चित्र में पौष्णान्त बिन्दु चित्रा तारे से १८० की दूरी पर माना है। इसके अनुसार जो अयनांश होंगे वे "चित्रापक्षीय अयनांश" कहलाते हैं। चित्रा पक्षीय अयनांश ही भारत के ९९ प्रतिशत पंचांगों में प्रयुक्त होते हैं।

निरयण सौर वर्ष :—पौष्णान्त बिन्दु से चलकर सूर्य क्रान्ति वृत्त का पूरा चक्कर लगाकर जितने समय में पुनः पौष्णान्त बिन्दु पर पहुँच जाता है, वह निरयण सौर वर्ष (Sidereal Year) कहलाता है। यह वर्ष ३६५ दिन ६ घं. ९.२ मि. का होता है, जो सायन सौर वर्ष से २०.४ मि. बड़ा है।☙

निरयण सौर वर्ष सायन सौर वर्ष से २०.४ मि. इसलिए बड़ा है क्योंकि—सायन सौर वर्ष में सूर्य जितना चलता है, निरयण सौर वर्ष में उसे उससे लगभग ५० वि. अधिक चलना पड़ता है। ५० वि. चलने में सूर्य को २०.४ मिनट लगते हैं।

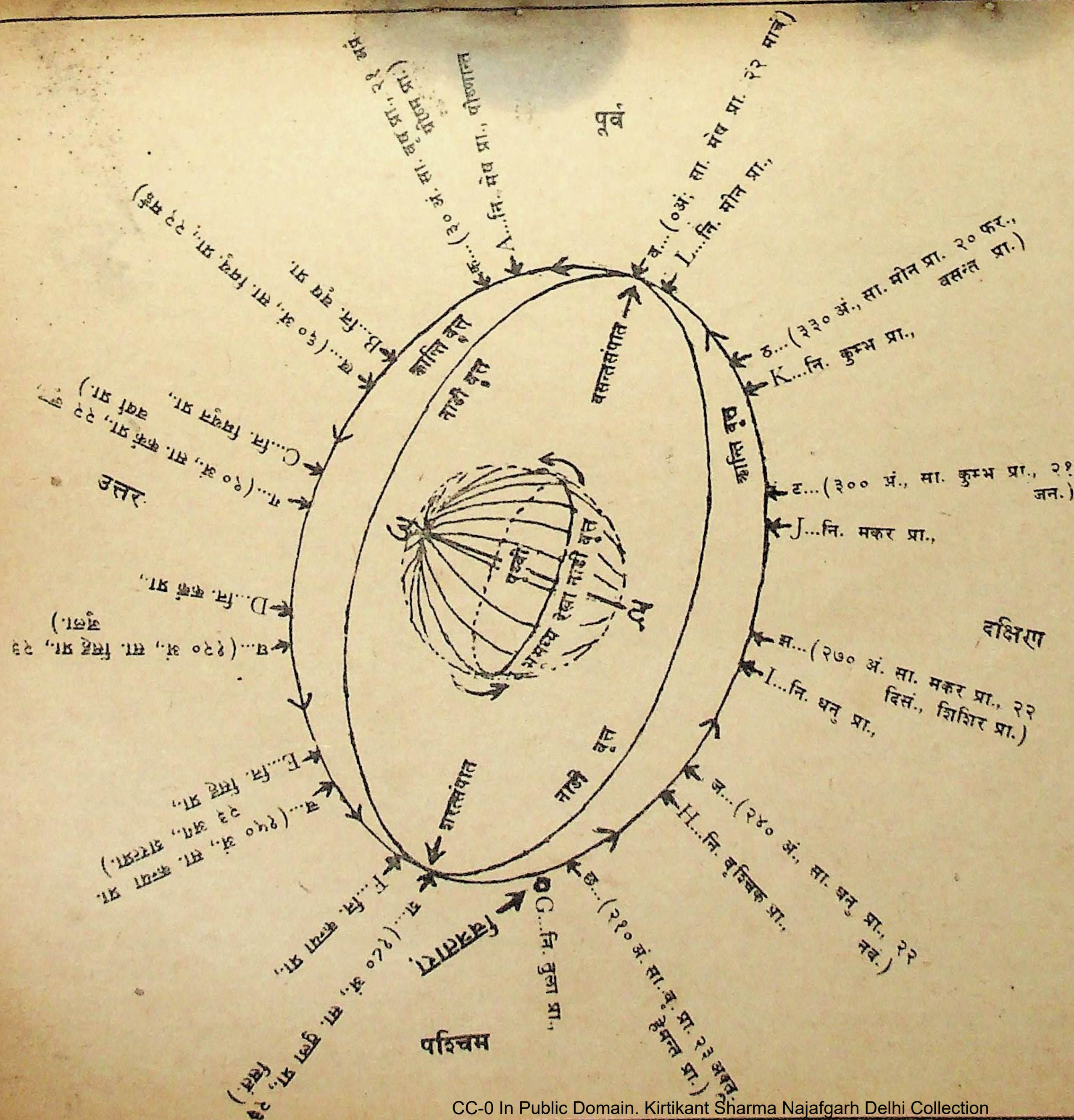
निरयण राशियां :—पौष्णान्त बिन्दु निरयण मेष का प्रारम्भ बिन्दु है। वहां से आगे क्रान्ति वृत्त ३०-३० अंशों के अन्तर पर शेष निरयण वृष आदि राशियों के प्रारम्भ बिन्दु हैं। चित्र में निरयण मेष आदि के प्रारम्भ बिन्दु (A, B, C, आदि) आजकल के अयनांश के अनुसार अंकित किए गए हैं। अयन-चलन के कारण पौष्णान्त बिन्दु (A) जितना आगे खिसकता जाएगा, ये निरयण वृषादि के सभी प्रारम्भ बिन्दु (B, C, D, आदि) भी उतना उतना आगे २ खिसकते जाएंगे। जैसा कि पहिले बतला चुके हैं—आजकल अयनांश २३ अं. २७ क. के लगभग हैं। चित्र में भी निरयण मेषारम्भ बिन्दु (पौष्णान्त) को वसन्त सम्पात से २३ अं. २७ क. आगे दिखलाया गया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि—आजकल निरयण मेषारम्भ बिन्दु (A) सायन वृषारम्भ बिन्दु (क) से ६ अं. ३३ क. पीछे (पहिले) है,—इसी प्रकार शेष सभी निरयण वृष आदि राशियों के प्रारम्भ बिन्दु (B.C. आदि क्रमशः सायन मिथुन आदि राशियों के प्रारम्भ बिन्दुओं (ख, ग आदि) से ६ अं. ३३ क. पहिले पड़ते हैं। दूसरे शब्दों में यूं कहिए कि—आजकल निरयण मेषादि राशियों के प्रारम्भ बिन्दु (A, B, C आदि सायन मेषादि राशियों के प्रारम्भ बिन्दु (A.B.C. आदि) सायन मेषादि राशियों के प्रारम्भ बिन्दुओं (व, क, ख आदि) से लगभग २३ अं. २७ क. बाद (आगे) पड़ते हैं।

निरयण, सायन—अब पाठक 'सायन' और 'निरयण' शब्द समझ सकते हैं। 'सायन' का अर्थ है "जिसमें अयनांश मिले हुए हैं"। निरयण का अर्थ है—"जिसमें अयनांश मिले हुए नहीं हैं"। चित्र देखने से स्पष्ट है—सायन मेष-वृष आदि के ०, ३०, ६० आदि अंश वसन्त सम्पात से गिने गए हैं, पौष्णान्त और वसन्त सम्पात के मध्य स्थित अयनांश इनमें जुड़े हुए हैं, जब कि निरयण मेष आदि राशियों की गणना में ऐसी बात नहीं है, वहां अयनांश छोड़कर पौष्णान्त (A) बिन्दु से मेष आदि राशियों की गणना की गई है। भारत के लगभग सभी पंचांगों में निरयण राशियों का ही प्रयोग होता है।

✂कुछ प्राचीन भारतीय सिद्धान्त ग्रन्थों के अनुसार वसन्त सम्पात और शरत्सम्पात दोनों ज्यादा से ज्यादा २७ अंश पूर्व की ओर और २७ अं. पश्चिम की ओर खिसकते हैं, अर्थात् २७ अंश पूर्व की ओर ५० वि. वार्षिक गति से चलकर ये दोनों सम्पात पुनः अपने प्रारम्भ (मूल) स्थान पर आकर फिर २७ अं. पीछे (पश्चिम) की ओर जाते हैं: और वहां से फिर मूल स्थान पर पहुँच कर २७ अंश पूर्व की ओर जाकर पुनः मूल-स्थान पर लौट आते हैं। दोनों सम्पात इसी प्रकार आगे पीछे चलते रहते हैं। इस सिद्धान्त को अयन दोलन सिद्धान्त कहते हैं। आधुनिक उच्च भौतिक शास्त्रीय अनुसन्धानों में इस सिद्धान्त का खण्डन कर दिया है। हमने अपने "शास्त्र शुद्ध पंचांग निर्णय" में इस सिद्धान्त का गणितनिर्देशपूर्वक खण्डन किया है।

*निरयण सायन शब्दों का स्पष्टीकरण आगे किया गया है।

☙सूर्यसिद्धान्त में निरयण सौर वर्ष की लम्बाई ३६५ दि. ६ घं. १२.६ मि. दी गई है, जो शुद्ध लम्बाई से ३.४ मि. ज्यादा है।



अं.––अंश
प्रा––प्रारम्भ
नि.––निरयण
सा.––सायन
द.––दक्षिणध्रुव
उ.––उत्तर ध्रुव

इस चित्र का अध्ययन करते समय इस चित्र को इस प्रकार रखें कि चित्र में अंकित 'पूर्व' शब्द पूर्व दिशा में और 'पश्चिम' शब्द पश्चिम दिशा में हो। इस प्रकार रखने पर 'दक्षिण' दक्षिण दिशा में और 'उत्तर' उत्तर दिशा में स्वतः हो जाएंगे।

इस चित्र में दिखाए गए च, क, ख, ग, घ, च, श, छ, ज, झ, ट और ठ बिन्दुओं पर जब सूर्य पहुंचता है तब क्रमशः राष्ट्रीय चैत्रादि मास (Indian Calendar Reform Committee द्वारा प्रचालित मास) प्रारम्भ होते हैं।

स्पष्टता के लिए यों समझिए,—यदि पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का प्रभाव नक्षत्र मण्डल तक हो जाए और वायु आदि का विक्षोभ न हो तो इस नाडीवृत्त की परिधि के किसी भी बिन्दु से छोड़ा गया पत्थर बिल्कुल भूमध्य रेखा पर ही गिरेगा। यह नाडी वृत्त सारे आकाश को दो भागों में विभक्त करता है—(१) उत्तर गोल (नाडी वृत्त से उत्तर की ओर का आकाश), (२) दक्षिण गोल (नाडी-वृत्त से दक्षिण की ओर का आकाश), (चित्र भी देखें)। सूर्य या कोई ग्रह अथवा नक्षत्र नाडी वृत्त से जितने अंश उत्तर में होता है, भू-मध्य रेखा पर रहने वाले लोगों को भी वह उतने ही अंश उत्तर की ओर झुका दीखता है, इसी प्रकार वह (सूर्य, नक्षत्र या ग्रह) नाडीवृत्त से जितने अंश दक्षिण की ओर होता है भूमध्य रेखा-वासियों को भी वह उतने ही अंश दक्षिण की ओर झुका दीखता है। यह नाडीवृत्त क्रान्तिवृत्त (सूर्य के मार्ग) को दो स्थानों पर काटता है (देखें—चित्र)—एक 'व' बिन्दु पर, दूसरे 'श' बिन्दु पर। इन दो बिन्दुओं को क्रमशः वसन्त सम्पात और शरत्सम्पात कहा जाता है। ये दोनों सम्पात क्रान्तिवृत्त को १८०-१८० अंशों के समान दो भागों में विभक्त करते हैं। चित्र देखने से स्पष्ट है—आधा क्रान्तिवृत्त दक्षिण गोल में और आधा उत्तर गोल में है। सूर्य वसन्त-सम्पात पर आने के बाद उत्तर गोल में और शरत्सम्पात पर आने के बाद दक्षिण गोल में आ जाता है। वसन्त सम्पात पर आने के बाद सूर्य का नाडीवृत्त से उत्तर की ओर अन्तर बढ़ता जाता है और 'ग' बिन्दु पर (वसन्त सम्पात से ९० अंश=३ राशि आगे) वह परम (लगभग २३ अं. २७ क.) हो जाता है। तदनन्तर 'ग' बिन्दु से आगे सूर्य का नाडीवृत्त से उत्तर की ओर अन्तर घटने लगता है, और 'श' बिन्दु (शरत्सम्पात) पर वह शून्य हो जाता है। इसी प्रकार 'श' से चलकर सूर्य का नाडीवृत्त से दक्षिण की ओर अन्तर 'झ' बिन्दु (वसन्त सम्पात से २७० अंश—९ राशि आगे, अथवा शरत्सम्पात से ३ राशि आगे) तक बढ़ता जाता है। 'झ' बिन्दु पर भी यह अन्तर लगभग २३ अं. २७ क. होता है। 'झ' से आगे सूर्य का नाडी वृत्त से दक्षिण की ओर अन्तर घटने लगता है और 'व' बिन्दु (वसन्त सम्पात) पर वह पुनः शून्य हो जाता है। इस प्रकार सूर्य नाडीवृत्त से उत्तर एवं दक्षिण की ओर अधिक से अधिक २३ अं. २७ क. जाता है। 'ग' बिन्दु से सूर्य दक्षिण की ओर और 'झ' बिन्दु से उत्तर की ओर हटना शुरू हो जाता है, अतः ग बिन्दु को दक्षिणायन बिन्दु और 'झ' बिन्दु को उत्तरायण बिन्दु कहा जाता है।

सायन सौर वर्ष :—सूर्य को वसन्त सम्पात से चलकर पूरे क्रान्ति वृत्त का पूरा चक्कर लगाकर पुनः वसन्त-सम्पात पर आने में जितना समय लगता है उसे सायन सौर वर्ष या ऋतु वर्ष (Tropical Year) कहते हैं। इस वर्ष में ३६५ दिन ५ घं. ४८.८ मि. होते हैं। अंग्रेजी कैलेण्डर (Gregorian Calender) का वर्ष✾सायन सौर वर्ष ही है।

सायन राशियां :—वसन्त सम्पात से लेकर पूरे क्रान्ति वृत्त को ३०-३० अंशों के बराबर बराबर, बारह भागों में विभाजित किया गया है, जिन्हें क्रमशः सायन मेष, सायन वृष आदि राशियों के नाम से पुकारा जाता है। अर्थात्—'व' (वसन्त-सम्पात) से सायन मेष प्रारम्भ होता है, इससे आगे ३० अंश पर 'क' बिन्दु पर सायन वृष और ६० अंश पर सायन मिथुन—इत्यादि। (चित्र देखें) ※ क्योंकि सायन सौर वर्ष और अंग्रेजी कैलेण्डर के वर्ष की लम्बाई एक ही है, अतः इन सायन मेषादि राशियों के प्रारम्भ बिन्दुओं (क, ख, ग आदि) पर सूर्य के पहुँचने की तारीखें, जो चित्र में लिखी हैं, प्रतिवर्ष यही रहती हैं। अर्थात्—प्रति वर्ष सूर्य २२ मार्च को 'व' (वसन्त सम्पात) पर होता है, २१ अप्रैल को 'क' (सायन वृषारम्भ बिन्दु पर होता है, २२ मई को 'ख' (सायन मिथुनारम्भ बिन्दु) पर होता है—आदि २।卐

ऋतुएं :—भारतीय ज्योतिष में दो-दो मासों की ६ (वसन्त आदि) ऋतुएं वर्ष में मानी जाती हैं। वसन्त ऋतु तब प्रारम्भ होती है जब सूर्य सायन मीन राशि के प्रारम्भ बिन्दु 'ठ' पर होता है और बसन्त ऋतु तब समाप्त होती है जब सूर्य सायन वृष के प्रारम्भ बिन्दु 'क' पर होता है। इस प्रकार बाकी वर्षा आदि ऋतुएं भी चित्रानुसार होती हैं। अर्थात्—वसन्त ऋतु हमेशा २० फर. से २१ अप्रैल तक रहती है, २१ अप्रै. से ही ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ होकर २२ जून तक रहती है—इस प्रकार शेष सभी ऋतुओं के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखें भी प्रतिवर्ष निश्चित हैं, जो चित्रों में दिखाई गई हैं।

अयन चलन :—वसन्त सम्पात और शरत्सम्पात—दोनों का आकाशस्थ नक्षत्रों (तारों) से कोई सम्बन्ध नहीं है। आज ये सम्पात जिन नक्षत्रों के नीचे हैं, अगले वर्ष वे नक्षत्र इनसे लगभग ५०-५० विकला आगे की ओर खिसक जाते हैं। अर्थात्—आज सायन मेषारम्भ बिन्दु (वसन्त सम्पात) में बैठा सूर्य ऊपर सुदूर आकाशस्थ जिस तारे के नीचे होता है अगले वर्ष वसन्त सम्पात में आने पर वह (सूर्य) उस तारे से लगभग ५० वि. पीछे होगा, यही बात शरत्सम्पात में बैठे सूर्य के लिए भी है। इसका कारण यह है—कि—सारा तारा मण्डल नाडीवृत्त के सापेक्ष लगभग ५० वि. आगे (पूर्व की तरफ) खिसक रहा है। स्पष्टता के लिए यों समझिए,—क्रान्तिवृत्त में या क्रान्ति वृत्त के आसपास रहने वाले तारे आज वसन्त सम्पात या शरत्सम्पात से जितनी दूरी पर हैं, वे एक वर्ष बाद उनसे उतनी दूरी पर नहीं रहेंगे। वसन्त सम्पात से पीछे (शरत्सम्पात से आगे) रहने वाले तारे १ वर्ष बाद लगभग ५० वि. वसन्त सम्पात के पास आ जाते हैं और शरत्सम्पात से इतना ही आगे चले जाते हैं। इसी प्रकार वसन्त सम्पात से आगे (पूर्व में) शरत्सम्पात से पीछे रहने वाले तारे एक वर्ष में वसन्त सम्पात से लगभग ५० वि. आगे और शरत्सम्पात के इतना ही समीप हो जाते हैं ❀ (चित्र देखकर समझिए)।

✾जनवरी, फरवरी आदि मासों वाला वर्ष

※इन राशियों को सायन क्यों कहते हैं—यह आगे स्पष्ट हो जाएगा।

卐इन अंग्रेजी तारीखों में एक तारीख का अन्तर लीप इयर के कारण कभी २ रहता है, परन्तु यह अन्तर अस्थायी होता है।

❀वास्तविकता यह है, कि—तारामण्डल नहीं, अपितु वसन्त-सम्पात और शरत्सम्पात—दोनों ही प्रतिवर्ष लगभग ५०-५० वि. की समान गति से नक्षत्रों के सापेक्ष पीछे की ओर खिसकते जा रहे हैं, जिससे सभी तारे इन सम्पातों से प्रति वर्ष ५०-५० वि. पूर्व की ओर खिसकते नजर पड़ते हैं।

१४ अप्रैल को वैशाखी क्यों ?

(आकाश में राशियों की स्थिति, सूर्य की गति आदि खगोल सम्बन्धी जटिल सिद्धान्तों का बालबोध शैली में विवेचन)

लेखक—प्रियव्रत शर्मा

(विगत लगभग ३० वर्षों से वैशाखी (निरयण मेष संक्रान्ति) लगातार १३ अप्रैल को ही होती आ रही है। इस वर्ष (सं. २०२८ में) यह १४ अप्रैल को होगी। सर्वसाधारण जनता में मेष संक्रान्ति की तारीख में यह अन्तर कुछ शङ्का पैदा कर सकता है। अनेक लोगों को यह भी कहते सुना है कि वैशाखी की तारीख स्थायी रूप से १३ अप्रैल ही है; परन्तु ऐसी बात नहीं है। प्रत्येक संक्रान्ति की अंग्रेजी तारीख मध्यमान से लगभग प्रत्येक ७१ वर्षों में एक तारीख आगे खिसक जाती है—यह बात सायन एवं निरयण पद्धति का ज्ञान रखने वाले ज्योतिषी समझते हैं। प्रस्तुत लेख में—"भारतीय पंचांगों में लिखी जाने वाली (निरयण) संक्रान्तियां किस प्रकार और क्यों आगे २ खिसक रही हैं"—इसका सरलतम बाल बोध शैली में विवेचन किया गया है। निरयण संक्रान्तियों की तारीखों में इस परिवर्तन को समझने के लिए आकाश में राशियों की स्थिति, सूर्य की गति आदि खगोल सम्बन्धी ज्ञान की आवश्यकता है, इसलिए पाठकों को प्रारम्भ से ही ये खगोल सम्बन्धी सिद्धान्त यहां विस्तारपूर्वक समझाए गए हैं। सरलता और स्पष्टता के लिए संक्षेप की उपेक्षा की गई है। किसी कठिन बात को अनेक शैलियों से घुमा फिरा कर समझाने का पूरा प्रयत्न किया गया है। सरलता के लिए शीर्षक पद्धति अपनाई गई है। लेखक की प्रतिज्ञा है कि इस लेख एवं इस लेख में दिए गए चित्र के परिशीलन से ज्योतिषानभिज्ञ पाठक को भी पाश्चात्य और भारतीय ज्योतिष के मूलभूत सिद्धान्तों का पर्याप्त ज्ञान हो जाएगा। अतः उन सभी पाठकों से जो ज्योतिष में रुचि रखते हैं, अनुरोध है—वे इस लेख को दत्तचित्त होकर आद्योपान्त अवश्य पढ़ें। इस लेख में ज्योतिष एवं भूगोल सम्बन्धी सूक्ष्म कुछ उन आंकड़ों तथा सिद्धान्तों की उपेक्षा कर दी गई है जिनके बिना सूर्य की गति आदि से सम्बन्ध रखने वाले सिद्धान्त सर्व साधारण पाठक को सरलता पूर्वक समझ में आ सकें।)

पृथ्वी का अक्षभ्रमण—हमारी पृथ्वी अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती हुई लगभग २४ घण्टों में पूरा एक चक्कर लगाती है। 卐 जिसके कारण हमें पृथ्वी के चारों ओर आकाशस्थ सभी नक्षत्र (तारे) पूर्व से पश्चिम की ओर चलते दीख पड़ते हैं। ये नक्षत्र लगभग स्थिर हैं, ये अपने २ स्थानों से प्रायः विचलित नहीं होते। सभी तारों को प्रतिदिन देखिए—ये तारे पृथ्वी के अक्ष भ्रमण के कारण पूर्व से पश्चिम की ओर चलते अवश्य दीख पड़ते हैं, परन्तु ये अपनी २ जगह नहीं छोड़ते, अर्थात्—जो तारा जिस तारे से जितनी दूरी पर जिस दिशा में है, वह उससे उतनी ही दूरी पर उसी दिशा में रहता है। उदाहरण के रूप में सप्तर्षि तारों को देखिए—उन सातों तारों की परस्पर स्थिति में कोई अन्तर नहीं आता। पृथ्वी के इसी अक्ष भ्रमण के ही कारण सूर्य चन्द्र आदि ग्रह भी, जो नक्षत्रों से कहीं नीचे हैं, पृथ्वी के चारों ओर लगभग २४ घण्टों में पूर्व से पश्चिम की ओर नक्षत्रों के साथ ही घूमते दीख पड़ते हैं।

卐 चित्र देखें—उ द पृथ्वी का अक्ष है, जो पृथ्वी के केन्द्र से गुजरने वाली रेखा है पृथ्वी इस उ द अक्ष पर चारों ओर इस प्रकार घूमती है, जिस प्रकार कातने की तकली पर लगा सूत का गोला घूमता है। पृथ्वी के इस भ्रमण को 'अक्ष भ्रमण' कहते हैं।

सूर्य की दैनिक गति और क्रान्ति वृत्त—सूर्य प्रतिदिन पूर्व में चढ़कर पश्चिम में अस्त होता है। यह सूर्य की अपनी गति के कारण नहीं अपितु, जैसा कि ऊपर बतला चुके हैं, यह पृथ्वी के अक्ष भ्रमण के कारण है। यदि किसी प्रकार हमें दिन में भी तारे दिखाई पड़ सकें तो हमें पता चलेगा कि सूर्य प्रतिदिन १ अंश पूर्व की ओर खिसक जाता है। अर्थात्—सूर्य आज जिस तारे के नीचे दिखाई देता है, कल वह उस तारे से लगभग १ अंश पूर्व की ओर खिसका होगा है। क्योंकि—दिन में तारे दिखाई नहीं पड़ते, अतः सूर्य की गति के ज्ञान के लिए सर्वसाधारण के लिए एक आसान तरीका बतलाते हैं—प्रातः काल लगभग ४ बजे पूर्व क्षितिज में कोई तारा पुंज देखिए। उसे प्रतिदिन प्रातः उसी वक्त देखते रहिए। आप कुछ दिनों में देखेंगे कि वह तारा पुंज जो पहिले दिन पूर्व क्षितिज से कुछ ही ऊपर था, अब वह उससे बहुत ऊपर है। तीन मास बाद वह तारा पुञ्ज प्रातः ४ बजे ही आपके सिर पर होगा। इसी प्रकार वह उत्तरोत्तर पश्चिम की ओर बढ़ता दीखेगा। इससे स्पष्ट है कि सूर्य का उस तारा पुञ्ज से पूर्व की ओर अन्तर बढ़ता जा रहा है, दूसरे शब्दों में सूर्य पूर्व की ओर आगे चल रहा है और एक वर्ष बाद सूर्य आकाश का पूरा चक्कर लगाकर उसी तारा पुञ्ज से आकर मिल जाएगा। सूर्य जिस गोल मार्ग से आकाश में पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ नजर आता है उसे हम 'क्रान्ति वृत्त' कहते हैं (देखें चित्र)। 卐

नाड़ी वृत्त—भूगोल पर बनी भूमध्य रेखा (Equator) के बिल्कुल ऊपर पृथ्वी के चारों ओर सुदूर नक्षत्रों तक विस्तृत एक वृत्त की कल्पना की गई है जिसे नाडीवृत्त (Celestial Equator) कहते हैं। यह नाडी वृत्त पृथ्वी पर बनी भूमध्य रेखा का ही बड़ा रूप है। भूमध्य रेखा और नाडी वृत्त दोनों एक ही धरातल में हैं।

卐 वास्तविकता यह है कि—सूर्य स्थिर है और पृथ्वी चलती है। अक्ष पर भ्रमण करती हुई पृथ्वी लगभग वृत्ताकार मार्ग में (जिस का व्यासार्ध लगभग ९॥ करोड़ मील है) सूर्य के चारों ओर लगभग १ अंश पश्चिम से पूर्व की ओर खिसक जाती है, जिससे पृथ्वी पर रहने वाले हम लोगों को स्थिर सूर्य भी प्रतिदिन लगभग १ अंश पश्चिम से पूर्व की ओर चलता नजर आता है। पृथ्वी की इस लगभग १ अंश दैनिक गति के कारण सूर्य जिस वृत्त में चलता नजर आता है उसे क्रान्तिवृत्त कहते हैं। ज्योतिष में नया प्रवेश पाने वाले पाठकों को पृथ्वी के स्थान पर सूर्य को गतिमान मानना सुविधाजनक है, अतएव हमने यहां पृथ्वी की जगह सूर्य को ही गतिशील माना है। भारतीय ज्योतिष में भी ऐसा ही माना गया है।

(अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त वि. सं. २०२८)

यहां अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों की सूची दी जा रही है, साथ २ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण इन मुहूर्त्तों में विवाह नहीं हो सकते।

वैशा. कृ. ३ बु. अनु. संक्रान्ति
" " ४ गु. मू. परिघार्ध
" " ६ श. उ.षा. }
" " ७ र. उ.षा. } भौमयुति
" " ७ र. श्रव. रेखा ५, तिथिक्षय,
" " ९ चं. धनि. }
" " १० मं. धनि. } राहुयुति
" " १२ गु. उ.भा. शुक्रयुति,
वैशा. शु. ४ . रोहि. लग्नाभाव
" " ४ बु. मृग. }
" " ५ गु. मृग. } भौमवेध
" " ९ चं. मघा. लग्नाभाव, मृत्यपं.,
" " १० मं. मघा मृत्यु पं.,
" " १० बु. उ.फा. भद्रा.,
" " १३ श. स्वा. लग्नाभाव
" " १४ र. स्वा. लग्नाभाव, व्यती., भद्रा
ज्ये. कृ. २ बु. अनु. लग्नाभाव
" " ३ गु. मू. मासान्त
" " ४ शु. मू. संक्रान्ति
" " ६ र. उ.षा. लग्नाभाव,
" " ६ र. श्रव. }
" " ७ चं. श्रव. } भौमयुति
" " ७ चं. धनि }
" " ८ मं. धनि. } राहुयुति
" " १० गु. रेव. लग्नाभाव
" " १२ शु. अश्वि. शुक्रयुति,
ज्ये. शु. १ मं. रोहि. क्षीण चन्द्र मृत्यु पं.,
" " १ मं. मृग. मृत्यु पं.,
" " २ बु. मृग. मत्यु पं., लग्नाभाव,
" " ६ र. मघा }
" " ७ चं. मघा } भौमवेध
" " ८ मं. उ.फा. लग्नाभाव,
" " ११ शु. हस्त व्यतीपात

ज्ये. शु. ११ शु. चि. व्यती., भद्रा, लग्नाभाव
ज्ये. शु. १२ श. चित्रा लग्नाभाव
" " १४ मं. अनु. भद्रा.,

आषा. कृ. त्रयोदश दिनात्मक पक्ष

आषा. शु ५ र. मघा }
" " ५ चं. मघा } राहुवेध
" " ७ बु. हस्त, भद्रा, लग्नाभाव परिघार्ध
८ गु. हस्त, परिघार्ध लग्नाभाव
" " १२ चं. अनु. मृत्यु पं., लग्नाभाव
" " १३ मं. मूल }
" " १४ बु. मूल } सूर्यवेध
" " १५ गु. उ.षा. वैधृति
श्राव. कृ. १ शु. श्रव. }
" " २ श. श्रव. } राहुयुति
" " २ श. धनि. }
" " ३ र. धनि. } भौमयुति
" " ७ बु. उ.भा. भद्रा, लग्नाभाव,
" " ७ बु. रेव., लग्नाभाव, मृत्यु पं.,
" " ८ गु. रेव. मासान्त,
" " ८ गु. अश्वि. मासान्त
" " ९ शु. अश्वि. संक्रान्ति,
" " ११ र. रोहि. मृत्यु पं., लग्नाभाव
श्राव. शु. २ श. मघा }
" " ३ र. मघा } राहुवेध
" " ४ चं. उ.फा. परिघार्ध लग्नाभाव
" " ५ मं. हस्त., मृत्यु पं.,
" " ६ बु. चित्रा. लग्नाभाव
" " ७ गु. स्वा. भद्रा
" " ११ मं. मूलवैधृति, शुक्रवार्धक्य
श्राव. शु. १४ गु. से कार्त्ति. कृ. ११ गु. तक शुक्रास्त

कार्त्ति. शु. ६ चं. मूल, लग्नाभाव
" " ८ बु. उ.षा. भद्रा नक्षत्रान्त.
" " ८ बु. श्रव. }
" " ९ गु. श्रव. } राहुयुति
" " ९ गु. धनि. }
" " १० शु. धनि } भौमयुति
" " १३ चं. अश्वि. लग्नाभाव,
" " १५ मं. अश्वि. लग्नाभाव, भद्रा

मार्ग कृ. ३ शु. रोहि. भद्रा,
" " ४ श. मृग. मृत्यु पं.,
" " ८ बु. मघा }
" " ९ ग मघा } राहुवेध
" " १० ु. उ.फा. वैधृति,
" " ११ श. हस्त, लग्नाभाव,
" " १२ र. चित्रा क्षीण चन्द्र,

मार्ग. शु. २ श. मू. चन्द्रकर्त्तरी
" " ३ र. मू. चन्द्रकर्त्तरी
" " ५ मं. उ.षा. धनु में कर्त्तरी, मीन में क्रान्ति साम्य,
" " ५ मं. श्रव. }
" " ६ बु. श्रव. } राहुयुति
" " ६ बु. धनि. गुरु वार्द्धक्य

मार्ग शु. ९ श. से पौष शु. ६ तक गु अस्त

सूर्य धनु में

माघ शु. १ चं. श्रव. राहुयुति
" " ५ शु. रेव. }
" " ७ श. रेव. } भौमयुति,
" " ७ श. अश्वि. }
" " ८ र. अश्वि. } चन्द्रकर्त्तरी
" " १० मं. रोहि. लग्नाभाव,
" " ११ बु. मृग. भद्रा. लग्नाभाव,

फाल्गु. कृ. १ चं. मघा }
२ मं. मघा } सूर्यराहुवेध
" " ३ बु. उ.फा. मृत्यु पं.

फाल्गु. कृ. ६ श. स्वाती भद्रा,
१० गु. मूल लग्नाभाव,
" " ११ शु. मूल मृत्यु पं.,
" " १२ श. उ.षा. मासान्त
फाल्गु. शु. ५ श. अश्वि. भौमयुति,
" " ७ चं. रोहि. वैधृति,

होलाष्टक

चैत्र कृ. २ गु. हस्त, भुजंग पात,
" " ३ शु. हस्त, भुजंगपात,
" " ३ शु. चित्रा मृत्यु पंचक, सूर्यवेध
" " ४ श. चित्रा सूर्यवेध,
" " ५ र. स्वा. मिथुन में कत्तरी,
" " ६ चं. अनु. }
" " ७ मं. अनु.. } भौमवेध
" " ८ बु. मूल लग्नाभाव
" " १० शु. उ.षा. }
" " ११ श. उ.षा. } राहुयुति
" " १२ र. श्रव. मृत्यु पं., मासान्त
" " १२ र. धनि. मृत्यु पं., मासान्त

(कोष्ठकों में दिए गए घं. मि. (भा. स्टै. टा.) के हैं)

द्विरागमन मुहूर्त्त (सं. २०२८)

वैशा. कृ. ५शु. (वै. प्र. ३) मूल (१२ घं. १२ मि. बाद)
" " ११ बु. (वै. प्र. ८) शत.,
वैशा. शु. ५ गु. (वै. प्र. १६) मृग. (७ घं. २६ मि. तक)
" " ६ शु. (वै. प्र. १७) पुन. (७ घं. ४५ मि. बाद)
" " ११गु. (वै. प्र. २३) उ. फा. (९ घं. २५ मि. बाद)
" " १२ शु. (वै. प्र. २४) हस्त,
ज्ये. कृ. २ बु. (वै. प्र. २९) अनु. (८ घं. ४५ मि. तक)
मार्ग. श. १ शु. (मार्ग. प्र. ४) अनु. (८ घं. ५६ मि. से १२ घं. ४८ मि. तक)
" " ४ चं. (मार्ग. प्र. ७) उ.षा. (१७ घं. ६ मि. बाद)
फाल्गु. शु. २ बु. (फा. प्र. ४) शत. (१२ घं. ७ मि. तक)
" " ३ गु. (फा. प्र. ५) उ. भा., (१० घं. ६ मि. बाद)
चैत्र कृ. १ बु. (फा. प्र. १८) उ.फा.
" " २ गु. (फा. प्र. १९) हस्त..

सूचना—विवाह दिन से १६ दिन के भीतर उपरोक्त मुहूर्त्त के बिना ही द्विरागमन हो सकता है। यदि नव विवाहिता वधू का द्विरागमन दीपावली के दिन दीपकों के प्रकाश में हो तो घर में सुख व लक्ष्मी की वृद्धि होती है ॥

यज्ञोपवीतमुहूर्त्त (सं. २०२८)

यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि ब्राह्मणादि जातियों में पदा हुए बालक प्रायः स्वजातियुक्त-गुण ९० प्रतिशत वीर्यगत-प्रभाव के कारण जन्म से ही साथ लाते हैं। यदि यज्ञोपवीतादि-वैदिक संस्कार वर्णोचित आयु एवं शुभ मुहूर्त्त में किए जायें तो उनमें उस सत्य शक्ति का क्रमशः विकास होता है।

चैत्र शु. २र. (चैत्र प्र. १५) अश्वि. (१० घं. २९मि. तक)
" " ५ बु. (चैत्र प्र. १८) रोहि.
" " १२बु. (चैत्र प्र. २५) पू.फा. (९ घं. ३४ मि. बाद)
शा. शु. ३ मं. (वै. प्र. १४) रोहि. अभिजित् में (सामवेदियों के लिए)
" " ५ गु. (वै. प्र. १६) आर्द्रा अभिजित् में,
" " १०बु. (वै. प्र. २२) पू. फा.
" " १२ शु. (वै. प्र. २४) हस्त, अभिजित् में,
ज्ये. शु. ३ गु. (ज्ये. प्र. १४) आर्द्रा, ल. ५, अभिजित्,
" " १० गु. (ज्ये. प्र. २१) हस्त, ल. ५, अभिजित्,
माघ शु. २ मं. (माघ प्र. ५) धनि. अभिजित् में (सामवेदियों के लिए)

यज्ञोपवीतमुहूर्त्त (क्रमागत)

माघ शु. ४ गु. (माघ प्र. ७) पू.भा. (१० घं. २५ मि. से ११ घं. १० मि. तक) लग्न चिन्त्य
" " ५ शु. (माघ प्र. ८) उ.भा. (८ घं. २३ मि. तक)
" " ११ बु. (माघ. प्र. १३) रोहि. (९ घं. ५ मि. तक)
फाल्गु.कृ. ५शु. (माघप्र. २२) हस्त अभिजित् में ल. १२ (शु.दा.)
फाल्गु. शु. २ बु. (फा. प्र. ४) शत. (१२ घं. ७ म. तक)
" " ३ गु. (फा. प्र. ५) पू. भा. (१० घं. ६ मि. तक)
" " ३ गु. (फा. प्र. ५) उ.भा. अभिजित् में
चैत्र कृ. २ गु. (फा. प्र. १९) हस्त अभिजित् में
" " ५ र. (फा. प्र. २२) स्वा., अभिजित् में

विशेष—आवश्यकता में चन्द्र बल देखकर किसी सत्तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है। ऋषितर्पण का दिन (श्राव. शु. १५) भी यज्ञोपवीत लेने के लिए शुभ माना जाता है।

गृहारम्भ मुहूर्त्त (सं० २०२८)

वैशा. शु. १२ शु. (वै. प्र. २४) हस्त, अभिजित् में,
" " १३ श. (वै. प्र. २५) चित्रा, अभिजित् में,
ज्ये. शु. १० गु. (ज्ये. प्र. २१) हस्त, अभिजित् में,
" " १२ श. (ज्ये. प्र. २३) चित्रा, स्वा., ल. ५, अभिजित्
कात्ति. शु. १३ चं. (का. प्र. १६) रेव., (१० घं. २५ मि. तक)
माघ शु. ११ बु. (माघ प्र. १३) रोहि. (९ घं. ५ मि. तक)
" " १२गु (माघ.प्र.१४) मृग. (११ घं. ५७मि.तक)
चैत्र कृ. १बु. (फा. प्र. १८) उ.फा. (११ घं. ३० मि.तक)
" " २ गु. (फा. प्र. १९) हस्त, अभिजित् में
" " ४श. (फा. प्र. २१) स्वा. (१६ घं. ३० मि. बाद),

—गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सं. २०२८)—

वैशा. शु. ७ श. (वै. प्र. १८) पुष्य, अभिजित् में (पुराने घर में प्रवेश)
" " ११ गु. (वै. प्र. २३) उ. फा. (१५ घं. ४४मि.बाद
" " १३ श. (वै. प्र. २५) चित्रा, अभिजित् में,
ज्ये. शु. १२ श. (ज्ये. प्र. २३) चित्रा, स्वा., लग्न ५, अभिजित्
माघ शु. ५ शु. (माघ प्र. ८) उ.भा., अभिजित् में,
" " ११ बु. (माघ प्र. १३) रोहि. (९ घं. ५ मि.तक)
" " १२ गु. (माघ प्र. १४) मृग. ११ घं. ५७ मि.तक अभिजित् में

फाल्गु. कृ. ९ बु. (माघ प्र. २७) अनु. (११ घं. ३३ मि. से १३ घं. ७ मि. तक)

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सं. २०२८)

वैशा. शु. ६ शु. (वै. प्र. १७) पुन., अभिजित् में,
" " ७ श. (वै. प्र. १८) पुन. पुष्य,
" " १२ शु. (वै. प्र. २४) हस्त, अभिजित् ल. ३,
" " १३ श. (वै. प्र. २५) चित्रा, ल. ३, अभि.,
ज्ये. कृ. ५ श. (ज्ये. प्र. २) उ.षा. अभिजित् में.
" " ६ र. (ज्ये. प्र. ३) उ.षा. (९ घं. ५६ मि. तक)
ज्ये. शु. २ बु. (ज्ये. प्र. १३) मृग., ल. ५,
" " ५ श. (ज्ये. प्र. १६) पुष्य, अभिजित् में,
" " १०गु. (ज्ये. प्र. २१) हस्त, ल. ५, अभि.,
" " १२ श. (ज्ये. प्र. २३) चित्रा. स्वा.,
" " १३ र. (ज्ये. प्र. २४) स्वा; अभिजित् में,
माघ शु. ५ शु. (माघ प्र. ८) उ.भा. अभिजित् में,
" " ११ बु. (माघ प्र. १३) रोहि. (९ घं. ५ मि. तक)
" " १२ गु. (माघ प्र. १४) मृग. (११ घं. ५७ मि. तक) अभिजित् में
फाल्गु. कृ. ५ शु. (माघ प्र. २२) हस्त. ल. १२ अभिजि.,
" " ६ श., (माघ प्र. २३) चित्रा ल. १२, अभि;
" " ८ चं. (माघ प्र. २५) स्वा.,
" " ९ बु. (माघ प्र. २७) अनु. (११ घं. ३३ मि. से १३ घं. ७ मि. तक)
फाल्गु. शु. २ बु. (फा. प्र. ४) शत. (१२ घं. ७ मि. तक)
" " ३ गु. (फा. प्र. ५) उ. भा. अभिजित् में

अभिजिन्मुहूर्त्त—नित्य मध्याह्न संधिकाल की एक घटी अर्थात् स्थानीय (लोकल) ११ बजकर ४८ मिनट से १२ बजकर १२ मिनट दुपहर तक अभिजित् मुहूर्त्त रहता है। इस मुहूर्त्त में अनेक दोष निवारण की शक्ति है, अतः कोई शुभलग्न न बनता हो तो उपनयनादि इस अभिजिन्मुहूर्त्त में करना शुभ है। यथा—"अभिजित्सर्वदेशेषु मुख्य-दोष विनाशकृत्। मध्येदिने गते भानौ मुहूर्त्तोऽभिजिताह्वयः॥ नाशयत्यखिलान्दोषान् पिनाकी त्रिपुरं यथा॥"

चार स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त—(१) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा। (२) अक्षय तृतीया (वैशा.शुक्ल तृतीया) (३) विजयादशमी (आश्वि. शुक्ल दशमी) (४) दीपावली (प्रदोष के समय) ये चार स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त कहलाते हैं। ग्रामीण पंजाबी जनता इन्हें "अणपुच्छ मुहूर्त्त" कहती है। इनमें कोई भी काम करने के लिए लग्न आदि देखने की आवश्यकता नहीं होगी।

शुद्ध विवाह मुहूर्त (सं. २०२८) क्रमागत

ज्येष्ठ शु. ९ बु. (ज्ये. प्र. २०) उ.फा. ।।।।ऽ रो ऽ।।। दि. ल. ५, गोधू., ९, १२, (चं.दा.),
" " १० ग. (ज्ये. प्र. २१) हस्त ।।।।।।ऽ।। दि. ल. ५,
" " १२ श. (ज्ये. प्र. २३) स्वा. ऽ सू ।।।।ऽ अ ।।।। दि.ल. ५ (११ घं. २० मि. बाद)
" " १३ र. (ज्ये. प्र. २४) स्वा. ऽ सू ।।।।।।। दि. ल. ५ (१२ घं. ११ मि. तक)
" " १४ चं. (ज्ये. प्र. २५) अनु. ।।ऽ गु ।ऽ बु.शु. ऽ नृ ।ऽ।। ल. ११, १२ (शु.दा.),
" " १५ बु. (ज्ये. प्र. २७) मूल ।।।।ऽ सू ऽ चो ऽऽ।। ल. गोधू. ११, १२ (शु. दा.)

आषा. शु. ६ मं. (आषा. प्र. १५) उ.फा. ।ऽ।।।ऽ नृ. ऽऽ।। ल. १२ (चं. दा.,),
" " ७ बु. (आषा. प्र. १६) उ.फा. ।ऽ।।।।ऽऽ।। दि.ल. ५ (१० घं. २७ मि. तक),
" " ८ गु. (आषा. प्र. १७) चित्रा ।।।।।ऽ चो ऽ।।। ल. धूलि. मु. ११, १२ (चं. दा.),
" " ९ शु. (आषा. प्र. १८) चित्रा ।।।।।।ऽ।।। दि. ल. ५, ६,
" " ९ शु. (आषा. प्र. १८) स्वा. ।।।।।।।ऽ।। ल. ११,
" " १० श. (आषा. प्र. १९) स्वा. ।।।।।ऽ रो. ।ऽ।। दि.ल. ५, ६, गोधूलि,

देशाचार से केवल पंजाब एवं त्रिगर्त्त प्रदेशों के लिए

आषा. शु. ११ र. (आषा. प्र. २०) अनु. ऽ सू ऽऽ गु ।ऽ श ।।।।। ल. १२ (२३ घं. २५ मि. बाद)
श्राव. कृ. १ शु. (आषा. प्र. २५) उ.षा. ।।।।।ऽ रो. ।ऽ।। ल. गोधू.,
" " ६ मं. (आषा. प्र. २९) उ.भा. ऽ चं. ।।।।।ऽ।।। ल. धूलि मु., ११,
" " १२ चं. (श्राव. प्र. ४) रोहि. ।ऽ।।।ऽ अ ।ऽ।। दि. ल. ५ (८ घं. ३६ मि. तक)
" " १२ चं. (श्राव. प्र. ४) मृग. ।।।।।ऽ अ ऽ।।। दि. ल. ६ (पश्चात् क्षीण चन्द्रमा)
श्राव. शु. ५ मं. (श्राव. प्र. १२) उ.फा. ।।।।।।ऽऽ।। दि. ल. ५ (८ घं. ४४ मि. तक)
" " ६ बु. (श्राव. प्र. १३) हस्त ।।।।।ऽ अ ।।।ऽ दि.ल. ७, धूलि मु., १२ (चं.दा.)
" " ७ गु. (श्राव. प्र. १४) चित्रा ।।।।।।ऽऽ।। दि. ल. ५, ७, धूलिमु.,
" " ८ शु. (श्राव. प्र. १५) स्वाती ।ऽ।।।ऽ नृ. ।ऽ।। ल. धूलि मु. (१९ घं. १३ मि. तक क्रान्तिसाम्य),
" " ९ र. (श्राव. प्र. १७) अनु. ।।ऽ गु. ।।।।ऽ।। दि. ल. ६, ७, गोधू.,
" " १० चं. (श्राव. प्र. १८) अनु. ।।ऽ गु. ।।ऽ चो. ।ऽ।। दि.ल. ५ (८ घं. २० मि. तक),
कार्त्ति. शु. २ गु. (का. प्र. ५) अनु. ।।ऽ गु ।।ऽ नृ ।।।। ल. ६ (४ घं. ४० मि. बाद),
" " ३ शु. (का. प्र. ६) अनु. ।।ऽ गु ।।ऽ नृ ।।।। दि. ल. ९, ११, रा. ल. ६,
" " ५ र. (का. प्र. ८) मूल ।।।।।ऽ चो ऽऽ।। ल. धूलि मु., ६,
" " ७ मं. (का. प्र. १०) उ.षा. ।।।।।ऽ रो ऽऽ।। ल. धूलि. मु.,
" " १२ र. (का. प्र. १५) उ.भा. ऽ सू ।।।।ऽ नृ ऽ।।। ल. धूलि. मु.,
कार्त्ति. शु. १२ र. (का. प्र. १५) रेव. ।ऽ।।।।।।। ल. ६ (४ घं. ६ मि. बाद) चं. दा.,
" " १३ चं. (का. प्र. १६) रेव. ।ऽ।।।।।।। दि. ल. ९, धूलिमु.,

मार्ग. कृ. २ गु. (का. प्र. १९) रोहि. ।।ऽ श. ।ऽ बु.गु. शु. ऽ रो ।।।। ल. गोधू.,
" " ३ शु. (का. प्र. २०) मृग. ।।।।।।ऽ।।। ल. गोधू.
" " ११ श. (का. प्र. २८) उ.फा. ।ऽ।।।ऽ रो ऽऽ।। दि.ल. १२ (चं. दा.)
" " १२ र. (का. प्र. २९) हस्त ।।।।।।ऽ।ऽ दि. ल. ९, १२ (चं. दा.),

समस्त प्रदेशों के लिए

मार्ग शु. ४ चं. (मार्ग. प्र. ७) उ.षा. ।ऽ।।।ऽ चो ऽऽ।। ल. ६, ७,
माघ शु. १ चं (माघ प्र. ४) धनि. ।।।।।।।।।। ल. ९ (६ घं. ८ मि. बाद)
" " २ मं. (माघ प्र. ५) धनि. ।।।।।ऽ नृ ।।।। दि.ल. ११, (मेष में कर्त्तरी),
" " ४ गु. (माघ प्र. ७) उ.भा. ।।।।।ऽ चो ।।।। ल. ९,
" " ५ शु. (माघ प्र. ८) उ.भा. ।।।।।।।।।। दि. ल. ११, धूलिमुख, (मेष में कर्त्तरी)
" " ११ बु. (माघ प्र. १३) रोहि. ।।।।।ऽ अ ।ऽ।। दि.ल. ११ (९ घं. ५ मि. तक),
" " १२ गु. (माघ प्र. १४) मृग. ।।।ऽ बु. ।।ऽ।।ऽ दि. ल. ११, (मेष में कर्त्तरी),
फाल्गु. कृ. ४ गु. (माघ प्र. २१) उ.फा. ।।।।ऽ शु. ऽ अ ।ऽ।। ल. गोधू.,
" " ४ गु. (माघ प्र. २१) हस्त ।।।।।ऽ अ ऽऽ।। ल. ९,
" " ५ शु. (माघ प्र. २२) हस्त ।।।।।।ऽऽ।। दि.ल. १२ (चं. दा.), गोधू.,
" " ५ शु. (माघ प्र. २२) चित्रा ऽ चं. ।।ऽ शु. ।।।।।। ल. ९ (४ घं. ४५ मि. तक)
" " ६ श. (माघ प्र. २३) चित्रा ऽ चं. ।।ऽ शु. ।ऽ नृ ।।।। दि.ल. १२ (चं.दा.) धूलिमु.
" " ७ र. (माघ प्र. २४) स्वाती ।ऽ।।ऽ मं. ।।।।। ल. धूलिमु., ९,
" " ९ मं. (माघ प्र. २६) अनु. ।।।।ऽ श. ।।ऽ।। ल. धूलि. मु., ९,
" " ९ बु. (माघ प्र. २७) अनु. ।।।।ऽ श ऽ रो ।ऽ।।. दि.ल. ११ (७ घं. २५ मि. से ७ घं. ५६ मि. तक)
फाल्गु. शु. ३ गु. (फा. प्र. ५) उ.भा. ।।ऽ शु. ।।ऽ नृ ।।।ऽ ल. ९, (मिथुन में कर्त्तरी),
" " ४ शु. (फा. प्र. ६) रेव. ।ऽ।।।।ऽऽ।। ल. ९ (४ घं. ५४ मि. तक),
चैत्र कृ. १ बु. (फा. प्र. १८) उ.फा. ।।।।ऽ बु. ऽ रो. ।।।। ल. गोधू., ९. (मिथुन में कर्त्तरी)
" " ४ श. (फा. प्र. २१) स्वाती ।।।।ऽ शु. ऽ अ ।ऽ।। ल. गोधू. ९,
" " ९ गु. (फा. प्र. २६) मूल ।।ऽ गु. ।।।।ऽ।। दि. ल. १२,

निवेद्यम्—अत्र क्वचित्स्मृति-दृष्टि-दोषश्चेत्क्षन्तव्यं सुधीभिः
भृजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च।
लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

॥ श्री गणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ॥

खचर-गतिविधानामुद्गमानुद्गमाद्यान् विविध-वचन-जालांल्लोकयन् शास्त्र-सिद्धान् ।
सकल-भरत-भूमौ किञ्च पञ्चापदेशे कर-कलन-मुहूर्त्तान् संलिखामीह शुद्धान् ॥

सं० २०२८ में विवाहादि मुहूर्त्त

—समय शुद्धि—

(१) शुक्र अस्त—श्रावण शुक्ल १४ गु. (श्राव. प्र. २१) से कार्त्ति. कृ. ११गु. (आश्वि. प्र. २९) तक शुक्र अस्त रहेगा ।+

(२) गुरु अस्त—मार्ग. शु. ९ श. (मार्ग. प्र. १२) से पौष शु. ६ गु. (पौष प्र. ८) तक गुरु अस्त रहेगा ।*

(३) त्रयोदशदिनात्मक पक्ष— इस वर्ष आषा. कृष्ण पक्ष में दो तिथियां क्षीण हैं, जिससे यह पक्ष त्रयोदश दिनात्मक है । त्रयोदश दिन के पक्ष में धर्म शास्त्रानुसार सभी शुभ कृत्य वर्जित होते हैं ।

यहां क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है । सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है । भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित-प्रक्रिया निर्दिष्ट की है । कई पञ्चाङ्गकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है ।

इन मुहूर्त्तों में जहां युति, वेध, दग्धातिथि आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, वहां मुहूर्त्त लगा दिए गए हैं ।

नोट—(१) यदि साहों में विवाह का लग्न दिन में प्रातः का शुद्ध हो, तो बारात एक दिन पहले ही पहुँच जानी चाहिए, क्योंकि एक दिन पहिले पहुँच कर सायंकाल तक शान्ति-कृत्य आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी ।

(२) यदि गुरु, शुक्र के उदयानन्तर ५–७ दिन के भीतर विवाह-मुहूर्त्त बनता हो तो साहे चिट्ठी, माईयां, पेड़े माप-हस्तादि विवाहांगकृत्य का आरम्भ अस्त होने से पहिले ही से प्रारम्भ कर लेना चाहिए ।

विवाह के वेदोक्त नक्षत्र—अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा में चार विवाह के नक्षत्र-विशेष कात्यायन आर्ष-सूत्रोक्त होने से हम यजुर्वेदियों के लिये ग्राह्य हैं । अन्य ऋग्वेदी सामवेदियों के लिए अशुभ होने से ग्राह्य नहीं । प्रमाणार्थ देखिये—पारस्करगृह्य (कात्यायन) सूत्र—"उदगयने आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात् ।" ।१। त्रिषु उत्तरादिषु ।२। हरिहरभाष्य में इस सूत्र का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया है—"उत्तरा आदिर्येषां तानि उत्तरादीनि तेषु, कतिषु ? त्रिषु-त्रिषु—उ. फा., ह., चि. । उ. षा. श्र., ध. । उ. भा. रे., अश्विनी ।" इसी प्रमाण के अनुसार धर्मसिन्धु (निर्णय-सागर के छपे) पृष्ठ २१८ पर विवाह-नक्षत्र-निर्णय में वेद व्याख्याता आचार्य हरदत्त ने भी लिखा है—'चित्रा-श्रवण-धनिष्ठाऽश्विन्यधिकानि चत्वारि तत्रापि खलग्रहयुतं नक्षत्रं वर्ज्यम् ।'

*इस वर्ष (सं. २०२८ में) शुक्र के उदय के काल में अक्षांश भेद से भारत के नगरों में २५ दिन तक का अन्तर पाया जाएगा, जब कि अस्त की तारीख में ५–६ दिन का ही अन्तर होगा । कम अक्षांश वाले नगरों में शुक्रोदय पहिले और अधिक अक्षांश वाले नगरों में बाद में होगा । गिलगित (काश्मीर) में शुक्रोदय कन्याकुमारी से २५ दिन बाद होगा । ध्यान रहे—विभिन्न नगरों के शुक्रोदय की तारीखों में इतना अन्तर कभी कभी होता है ।

और भी देखिये—जैसे मंगलवार यजुर्वेदियों के यज्ञोपवीत मुहूर्त्त में अग्राह्य है (मरणञ्च भौमे) और वही मंगलवार सामवेदियों के यज्ञोपवीत में शुभ होने से ग्राह्य है । ऐसे ही इस नक्षत्र चतुष्टयी का भी विवाह में वेद व सूत्र भेद से ग्राह्याग्राह्य (शुभाशुभत्व) समझना चाहिए ।

उपरोक्त वेदोक्त प्रमाणानुसार अश्विनी आदि चार नक्षत्रों में भी विवाह मुहूर्त्त लिखे हैं, पूज्य विद्वज्जन भ्रम न करते हुए स्वीकार करें ।

मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम (रेल्वे टाईम) के अनुसार यह निर्देश कर दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहिले ही मुहूर्त्त में स्वीकार करें, ताकि सर्वसाधारण को भी यह पता चल सके कि इस लग्न को केवल इतने बजे तक या इतने बजे के बाद ही मुहूर्त्त में स्वीकार किया गया है ।

वि. सं. २०२८ में शुद्ध विवाह मुहूर्त

[लग्नों के आगे कोष्ठकों में दिए गए घं. मि. (भा. स्टैं. टा.) के हैं]

समस्त प्रदेशों के लिए

वैशा. कृ. ५ शु. (वै. प्र. ३) मूल ।।।।ऽ अ. ऽऽ।ऽ ल. गोधू., ८,
" " ९ चं. (वै. प्र. ६) श्रव. ऽ बु. गु. ऽ।।।ऽऽ।। ल. धूलि., ८
वैशा. शु. ३ मं. (वै. प्र. १४) रोहि. ऽ रा. ।।ऽ गु. ऽ नृ. ऽ।। ल. ११, १२,
" " ११ गु. (वै. प्र. २३) उ. फा. ।।ऽ शु. ।।ऽ।। ल. धूलिमु.,
" " ११ गु. (वै. प्र. २३) हस्त ऽ सू ऽ।।ऽ नृ ।।।। ल. ९, १२ (२२ घं. २० मि. बाद) चं. दा.,
" " १२ शु. (वै. प्र. २४) हस्त ऽ सू ऽ।।ऽ नृ ।।।। ल. धूलिमु., ९.
" " १२ शु. (वै. प्र. २४) चित्रा ।।।ऽ शु. ।ऽ।। ल. १२ चं. दा.,
" " १३ श. (वै. प्र. २५) चित्रा ।।।ऽ शु. ।ऽ।। ल. ९, ११ (३ घं. ० मि. तक),
ज्येष्ठ कृ. १ मं. (वै. प्र. २८) अनु. ।।ऽ गु. ।ऽ गु. ।ऽऽ।। ल. ११, १२ (कुम्भ से पहिले रोग पंचक, रेखा ५)
" " ५ श. (ज्ये. प्र. २) उ.षा. ।।।।।ऽऽ।। दि. ल. ५, गोधू., ९, १२,
" " १० गु. (ज्ये. प्र. ७) उ.भा. ।।।।।ऽऽ।। ल. धूलिमु. ९, ११ (शु. दा.),
" " १२ श. (ज्ये. प्र. ८) रेव. ।।।।ऽ चो ।ऽ।। ल. धूलि मु., ९,

केरल मत से प्रश्न के पिण्ड द्वारा शुभाशुभ फल

प्रश्नकर्त्ता के मुख से जो अक्षर निकले---उसी से प्रश्न पिण्ड बनावे। यदि प्रश्न में बहुत अक्षर बोले---अथवा अस्पष्ट (साफ नहीं) हो तो यदि प्रश्नकर्ता ब्राह्मण हो तो उससे किसी फूल का नाम, क्षत्रिय हो तो नदी का नाम, वैश्य हो तो देवता का नाम, यदि शूद्र हो तो किसी फल का नाम ग्रहण करावे ॥

॥ अथ स्पष्टार्थ चक्र (स्वर ध्रुवांक-चक्रम्) ॥

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
१२	२१	११	१८	१५	२२	१८	३२	२५	१९	२५

॥ अथ व्यञ्जन ध्रुवांक चक्रम् ॥

क्	ख्	ग्	घ्	ङ	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	ट्
१३	११	२१	३०	१०	१५	२१	२३	२६	२६	१०
ठ्	ड्	ढ्	ण्	त्	थ्	द्	ध्	न्	प्	फ्
१३	२२	३५	४५	१४	१८	१७	[illegible]	३५	२८	१८
ब्	भ्	म्	य्	र्	ल्	व्	श्	ष्	स्	ह्
२६	२७	८६	१६	१३	१३	३५	२६	३५	३५	१२

उदाहरण :---जैसे किसी ब्राह्मण ने प्रश्न किया तो उससे पुष्प का नाम ग्रहण करवाने से गुलाब का नाम लिया। ध्रुवांक के चक्रों से अंक ग्रहण किये जैसे (ग्=२१ उ=१५ ल्=१३ आ=२१ ब=२६ अ=१२) वर्ण और स्वर के सब ध्रुवों का योग किया तो १०८ यह प्रश्न-पिण्ड हुआ।

लाभ के प्रश्न विचार

लाभालाभ का प्रश्न हो तो प्रश्न-पिण्ड में ४२ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में लाभ, २ शेष में अल्प लाभ, ० शेष में हानि समझना।

जय-पराजय प्रश्न-विचार

जय पराजय प्रश्न-पिण्ड में ३४ जोड़ कर ३ से भाग देनेपर १ शेष में जय, २ में सन्धि, ० में पराजय कहना चाहिए।

सुख-दुःख प्रश्न-विचार

सुख-दुःख प्रश्न-पिण्ड में ३८ जोड़ कर २ से भाग देने पर १ शेष में सुख, ० शेष में दुःख समझना चाहिए।

गमन-प्रश्न विचार

गमन प्रश्न-पिण्ड में ३३ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में गमन, २ शेष में स्थिर और ० शेष में आधे रास्ते से ही लौटना पड़े।

जीवन-मरण विचार

जीवन-मरण प्रश्न-पिण्ड में ४० जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में जीवन, २ में कष्ट से जीवन, शून्य में मरण फल कहना चाहिए।

यात्रा-प्रश्न

यात्रा-सम्बन्धी प्रश्न-पिण्ड में ३९ जोड़ कर ३ से भाग देने से १ शेष में उत्तम यात्रा, २ में अल्प यात्रा तथा शून्य में यात्रा नहीं होती।

वर्षा-प्रश्न

वर्षा प्रश्न पिण्ड में ३२ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में पूर्ण वर्षा, २ में मध्यम और शून्य में वहां वर्षा नहीं होती।

गर्भ-विचार प्रश्न

गर्भ है या नहीं इस प्रश्न-पिण्ड में २६ जोड़ कर ३ से भाग देने पर १ शेष में गर्भ, २ में गर्भ-स्राव सन्देह, ० शेष में गर्भ नहीं है इस प्रकार समझ।

तेजी-मन्दी का प्रश्न

प्रश्न-पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में सस्ता (मन्दी), २ में समान और शून्य में तेजी समझना।

सत्यासत्य प्रश्न

यह बात सत्य है या असत्य ऐसे प्रश्न-पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में सत्य और शून्य में असत्य कहना।

पुत्र-कन्या जन्म-प्रश्न

प्रश्न-पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में पुत्र, २ में कन्या और शेष शून्य में गर्भ का अभाव व नपुंसक कहना।

विवाह-प्रश्न

प्रश्न पिण्ड में ८ से भाग देकर १ शेष में बिना यत्न से, २ में अधिक यत्न से, विवाह कहना। ३ शेष में विवाह नहीं हो। ४ शेष में कन्या का मरण, ५ में चाचा आदि का मरण, ६ में राजभय, ७ में वर-कन्या दोनों का मरण व श्वसुर का मरण, ८ याने ० शेष हो तो विवाह से सन्तान का मरण कहना

अथ कार्यसिद्धि-प्रश्न

प्रश्नकर्त्ता श्री देवी जी का स्मरण करके पंचदशी यंत्र पर अंगुली धरे। यदि १।५।९ पर धरे तो शीघ्र कार्य सिद्ध हो। ३।७ पर धरे तो सहारे से कार्य सिद्ध होवे। ४।६ पर धरे तो भी कार्य सिद्ध होवे। २।८ अंक पर अंगुली धरे तो कार्य सिद्ध नहीं होता है।

पंचदशी यन्त्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

क्या मुझे सांझा व्यापार में लाभ होगा ? (३१)

१ साझे में लाभ होगा।
२ साझे में लाभ कम होगा।
३ साझे में हानि का भय है।
४ लाभ होगा, परन्तु ठहर कर।
५ हानि का भय है।
६ लाभ होगा।
७लाभ होगा,परन्तु अन्त में गड़बड़ीकाभयहै
८ लाभ की आशा व्यर्थ है।
९ लाभ होगा, विश्वास रक्खो।

खोया पशु किधर मिलेगा ? (३२)

१ पशु दक्षिण में है। नहीं मिलेगा।
२ पश्चिम में गया है, मिलेगा।
३उत्तर-पश्चिमके कोणमेंगया है,नहींमिलेगा
४ उत्तर दिशा में ढूंढो, मिलेगा।
५ पूर्वकी ओर गयाहै, जल्दी ढूंढनेसेमिलेगा
६ उत्तर में ही मिलेगा।
७ पूर्वोत्तर कोण में गया है, मिलना कठिनहै।
८ दक्षिण में गया है, मिलेगा।
९ पश्चिम में गया है, खर्च से मिलेगा।

मेरा यह वर्ष कैसा है ? (३३)

१ यह वर्ष शुभ रहेगा।
२ वर्ष कष्टप्रद है।
३ वर्ष मध्यम है।
४ वर्ष अधिक कठिनाइयों वाला है।
५ वर्ष शुभ लाभप्रद है।
६ वर्ष साधारण है।
७ वर्ष शुभ है।
८ वर्ष हानिकर है, ग्रहशान्ति करो।
९ इस वर्ष भाग्यवृद्धि होगी।

कुश्ती लड़ने का फल (३४)

१ प्रभु का ध्यान कर जीतेगा।
२ सावधान, शत्रु प्रबल है।
३ मत लड़, गड़बड़ मचेगी।
४ लड़ाई-झगड़े का भय है।
५ कुश्ती कर जीतेगा।
६ मत घबड़ा, जीतेगा।
७ जीतने में शत्रु विघ्न करेंगे।
८ तेरे हारने का योग है।
९ विजय होगी।

वह प्राणी जीवित है या नहीं ? (३५)

१ जीवित नहीं।
२ वह जीवित है।
३ जीवित नहीं है।
४ जीवन में सन्देह है।
५ जीवित है।
६ जीवित नहीं।
७ जीवित है।
८ जीवित नहीं।
९ जीवित है।

यह व्यक्ति विश्वास-योग्य है कि नहीं (३६)

१ विश्वास-योग्य है।
२ कुछ विश्वास-योग्य कम है ?
३ विश्वास योग्य नहीं।
४ ईमानदार है।
५ भरोसा कर सकते हैं।
६ भरोसा मत करो।
७ विश्वास-पात्र है।
८ विश्वास-योग्य नहीं है।
९ विश्वास-पात्र है।

इस काम में लाभ है कि नहीं ? (३७)

१ इस काम से सुख-लाभ होगा।
२ इस काम में दुःख हानि होगी।
३ इस काम में हानि-लाभ समान।
४ इस काम में हानि दुःख होगा।
५ इसमें लाभ सुख है।
६ लाभ सुख मध्यम।
७ सुख लाभ होगा।
८ सावधान, हानि दुःख होगा।
९ सुख लाभ होगा।

मुझे यहां लाभ होगा या अन्य स्थान पर (३८)

१ अन्य स्थान पर जाओ, लाभ होगा।
२ इसी स्थान पर लाभ होगा, धैर्य करो।
३ अन्य स्थान पर जाना लाभप्रद है।
४ अन्य स्थान पर लाभ रहेगा।
५यहीं ठहरो,कुछ दिन बाद लाभ होनेलगेगा
६ यहीं पर ठहरो, दूसरी जगह भी कष्ट हो
७ यह स्थान मत छोड़ो, देर से लाभ है।
८ दूसरी जगह जाना ठीक है।
९ यहीं परिश्रम करो,ग्रहशान्ति से लाभहोगा

यह खबर झूठी है या सच्ची? (३९)

१ यह खबर ठीक सच्ची है :
२ यह बात झूठी है।
३ बात सच्ची है।
४ बात झूठी है।
५ बात सत्य है।
६ सत्य है।
७ कुछ कुछ सत्य है।
८ निराधार झूठी है।
९ सच्ची है।

मेरा आज का दिन अच्छा है या बुरा? (४०)

१ आज का दिन अच्छा है।
२ आज सावधान रहें।
३ अच्छा दिन है।
४ खराब है।
५ अच्छा दिन है।
६ अशुभ चिन्ताप्रद है।
७ शुभ दिन है।
८ बहुत ज्यादा खराब है।
९ मध्यम है।

इसे कोई रोग है या ग्रह-दोष या कोई और पीड़ा ? (४१)

१ कर्मजन्य शारीरिक कष्ट है।
२ रोग से ही पीड़ित है।
३
४ प्रेतपीड़ा है शान्ति करावें।
५ शत्रुकृत टोना आदि असर है।
६ ग्रहपीड़ा है, शान्ति करावें।
७ शत्रु ने कुछ कराया है, रामरक्षा पढ़ें।
८ रोग कष्टसाध्य है, शिवार्चन करें।
९ कर्मजन्य फल से विवश है।

क्या नलकूपादि लगाना ठीक है ? (४२)

१ शीघ्र जल मिलेगा।
२ खण्डित जल मिलेगा।
३ सुन्दर जल मिलेगा।
४ जल नहीं मिलेगा।
५ अमृत जल मिलेगा।
६ जल मिलेगा।
७ मिश्रित कम जल मिलेगा।
८ अभी जल नहीं मिलेगा।
९ जल कम वा क्षार मिलेगा।

इस व्यक्ति से मेरा कार्य सिद्ध होगा कि नहीं (४३)

१ इस व्यक्ति के द्वारा सफलता होगी।
२ इसके द्वारा कार्य सिद्ध नहीं होगा।
३ कार्यसिद्धि में सहायता मिलेगी।
४ इससे काम सिद्ध न होगा।
५ इसके द्वारा कार्य सिद्ध हो जाएगा।
६ यह दिल से काम नहीं करेगा।
७ बड़ी खुशामद से सिद्ध होगा।
८ इससे कुछ आशा न करो।
९ मिलो, कार्य बनेगा।

मुझे इस काम में सफलता मिलेगी कि नहीं? (४४)

१ सफलता की कम आशा है।
२ बड़े परिश्रम से सफलता होगी ॥।
३ सफलता मिलेगी।
४ सफल होना मुश्किल है।
५ सफल हो जाओगे, डटे रहो।
६ सफलता देर में मिलेगी।
७ किसी की सहायता से सफलता मिलेगी।
८ सफलता की आशा नहीं।
९ निराशा के बाद सफलता मिलेगी।

मकान बनाने में हानि-लाभ (१५)
१ मकान बनाओ सुख मिलेगा ।
२. अधिक दिनों में पूरा होगा ।
३ इस कार्य में लाभ नहीं, मत करो ।
४ द्रव्य का खर्च विशेष होगा ।
५ इस कार्य में शत्रु उपद्रव करेगा ।
६ मकान निर्बल खराब बनेगा ।
७ इस मकान से लाभ होगा ।
८ इस मकान पर सदा झगड़े रहेंगे ।
९ पृथ्वी का भाग पृथ्वी में रहेगा ।

इच्छा पूरी होगी, कि नहीं ? (१६)
१ इच्छा पूर्ण होगी ।
२ इच्छा पूण होगी ।
३ इच्छा पूर्ण होने में विघ्न ।
४ निष्फलता है ।
५ देर से होगी ।
६. इच्छा पूर्ति में विघ्न ।
७ इच्छा पूर्ण होगी ।
८ इच्छा पूर्ण न होगी ।
९ किसी की सहायता से पूर्ण होगी ।

दुकान करूं या नहीं (१७)
१ दुकान करने से लाभ अच्छा है ।
२ दुकान करने से लाभ नहीं ।
३ दुकान करो, लाभ बहुत होगा ।
४ दुकान से लाभ है, परन्तु खच बहुत होगा ।
५ दुकान मत करो, हानि है ।
६ लाभ-हानि समान है, न करो ।
७ लाभ अच्छा होगा, दुकान करो ।
८ दुकान में लाभ न होगा ।
९ दुकान में लाभ अच्छा होगा ।

खती करूं या नहीं फल (१८)
१ खेती में लाभ रहेगा ।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है ।
३ खेती को कीड़े का भय है ।
४ मनोकामना सिद्ध होगी ।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ ।
६ खेती करो पर सावधानी से ।
७ खेती में ओले का भय है ।
८ वायु के कारण कुछ हानि होगी ।
९ खेती में हानि रहेगी, मत करो ।

रोगी का प्रश्न फल (१९)
१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा ।
२ ग्रहदशा खराब है, शांति करो ।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है ।
४ चिन्ता न करो आराम होगा ।
५ रोगी की आबोहवा बदली करो ।
६ रोगी को पथ्य से रखो ।
७ चिन्ता न करो, कुछ दिन भारी हैं ।
८ आराम हो जायेगा, पर खर्च अधिक है ।
९ होनहार में किसी का वश नहीं चलता ।

संतान भाग्य में क्या है ? फल (२०)
१ संतान आपके भाग्य में नहीं ।
२ प्रेतशांति से होगी ।
३ संतान होगी कमजोर ।
४ अपने इष्टदेव की पूजा से ।
५ नेमव्रत से होगी ।
६ गया या पिहोए विधि से ।
७ होकर नष्ट होने का भय है ।
८ संतान की आशा छोड़ो ।
९ सप्ताह श्रवण से होगी ।

धर्म दीक्षा-फल (२१)
१ धर्म में प्रीति थोड़ी हो ।
२ धर्म में अधिक प्रीति हो ।
३ धर्म करते रोग हो ।
४ धर्म में यश बढ़े ।
५ धर्म से आकुलता हो ।
६ धर्म से नाम स्थिर रहे ।
७ धर्म करते मृत्यु हो ।
८ धर्म से वृत्ति उखड़े ।
९ धर्म-दीक्षा से शांति मिले ।

अनाज खरीद फल (२२)
१ अनाज में भारी लाभ होगा ।
२ नफा टोटा समान रहेगा ।
३ घाटा रहेगा ।
४ अन्न के खराब होने का भय है ।
५ साझी व्यापार न करें ।
६ देर से बिकेगा ।
७ अनाज में सवाये होंगे ।
७ बेचना ठीक है, लेना मत ।
९ प्रश्न फल अशुभ है ।

पुत्र गोद लेने का फल (२३)
१ गोद लेने से नाम रहेगा ।
२ यह लड़का वफादार नहीं ।
३ लड़का खर्च करायेगा ।
४ लड़का अच्छा नहीं है ।
५ अच्छी निभेगी ।
६ सावधानी से गोद लेना ।
७ बे-मुहब्बत निकलेगा ।
८ घर में अनबन रहेगी ।
९ सुखदाई नहीं है ।

तबादले का प्रश्न—(२४)
१ तबादला होगा ।
२ कुछ रुकावट के साथ होगा ।
३ तबादले में विघ्न आवे ।
४ तबादला अभी नहीं ।
५ तबादला होगा ।
६ तबादले में देर है ।
७ तबादला जरूर होवे ।
८ अभी ठहरो ।
९ देरी से होगा ।

कर्ज लेने देने का परिणाम क्या है ? (२५)
१ यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है ।
२ जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे ।
३ लेने देने का नतीजा खराब रहेगा ।
४ अन्त में मुश्किल होगी ।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया ।
६ इस जगह हानि-लाभ सम हैं ।
७ लेने देने में कोई हरज नहीं ।
८ अन्त समय अदालत में जाना होगा ।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा ।

गर्भ में क्या है ? फल (२६)
१ इस गर्भ की सुआशा नहीं ।
२ पुत्री का जन्म होगा ।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है ।
४ लड़की होगी पर आयु कम ।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे ।
६ पुत्र का जन्म होगा ।
७ दीर्घायु पुत्र होगा ।
८ कन्या जन्मेगी ।
९ जोड़े बालक होंगे ।

विवाह शादी का फल (२७)
१ विवाह देरी से होगा ।
२ विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं ।
३ विवाह न होगा ।
४ विवाह जरूर होगा ।
५ विवाह में रुकावटें होंगी ।
६ किसी की खुशामद करो ।
७ खर्च करो, काम बनेगा ।
८ थोड़ा विलम्ब से होगा ।
९ स्त्री गुण वाली मिलेगी ।

रोजगार प्रश्न फल (२८)
१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा ।
२ विशेष परिश्रम करने से रोजगार होगा ।
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो ।
४ जल मिट्टी, कोयला से लाभ होगा ।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी ।
६ दुश्मन नुकसान करेंगे, सावधान ।
७ रोजगार ठीक होने में देर है ।
८ खोटे ग्रह की दशा में अभी चुप रहो ।
९ जो विचारा है, वह पूर्ण नहीं होगा ।

चोरी गई का फल (२९)
१ वस्तु शीघ्र मिलेगी ।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा ।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा ।
४ चोर पक्का है, माल न मिलेगा ।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा ।
६ चोर ने तेरी वस्तु और को दे दी ।
७ माल आधा नष्ट हो गया ।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ो ।
९ चोर छोटी आयु का है माल मिलेगा ।

गुप्त चिन्ता का फल (३०)
१ मन की इच्छा पूर्ण होगी ।
२ काम बनने में कुछ देर है ।
३ काम का नतीजा खराब होगा ।
४ किसी का भरोसा न करो ।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा ।
६ मन की मन ही में रहेगी ।
७ तेरा दुष्ट से वाह पड़ा है ।
८ देरी से काम बनेगा ।
९ चिन्ता सच्ची है किसी की मदद को ।

सुगम प्रश्न विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब श्रद्धापूर्वक 'ॐ श्री कीर्ति भवान्यै नमः' इस मन्त्र को श्रद्धापूर्वक सात बार पढ़कर नीचे दिये गये चारों यन्त्रों पर क्रमशः अंगुली रक्खें। फिर यन्त्रों के उन चारों अङ्कों को, जिन पर अंगुली रक्खी गई हो, जोड़कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपनी अभीष्ट प्रश्नवाली उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकदमे का प्रश्न हो तो "मुकदमा का फल" वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो "नौकरी का फल" वाली उत्तरावली में....इत्यादि) अपना उत्तर देख। उदाहरण लीजिये—आपका प्रश्न मुकदमा के विषय में है कि जीत होगी या नहीं ? आपने चारों यन्त्रों में क्रमशः ४, ३, ७, एवं ९ पर अंगुली रक्खी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर ५ शेष बचा। अब आप अपना उत्तर "मुकदमे का फल" शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिये। उत्तर है— "विशेष खर्च करके जीत होगी"। यहाँ पर यह स्मरण रहे कि यदि शेष ० बचे तो उसे ९ समझें।

नोट—प्रश्न एक ही बार करना चाहिए बार-बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा

अंगुल रखने के लिये चार यन्त्र

यन्त्र सम्मुख

४	३	८
९	५	१
२	७	६

यन्त्र ऊर्ध्वमुख

६	१	८
७	५	३
२	९	४

यन्त्र अधोमुख

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यन्त्र विमुख

८	३	४
१	५	९
६	७	२

उत्तरावली

मित्र मिलाप फल (१)

१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सम्बन्ध प्रेमी है।
६ मित्र कष्टभय युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

पशु लेने का फल (४)

१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु मत खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम

विद्या परीक्षा का फल (७)

१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होवेगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देवेगी।
५ विद्या ही परम लाभकारी होवेगी।
६ उत्तीर्ण होने में सन्देह होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होवेगा।
८ विद्या से विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

मुकद्दमे का फल (२)

१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जावेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

लाभालाभ का फल (५)

१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से सवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

परदेशी प्रश्न फल (८)

१ परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते से लौट गया है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च में तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया।

यात्रा का फल (३)

१ गमन मत करो, लाभ नहीं।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूल कर भी मत जाओ, हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शकुनविचारके गमनकरो लाभ होगा
७ यात्रा पीड़ाकारक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा

नौकरी का फल (६)

१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी, धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, उचेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६ शत्रु रुकावट करेंगे यह ध्यान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)

१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से जय मिले।
८ सुलह हो जावेगी।
९ शत्रु के कारण धननाश होगा।

मंत्र सिद्ध करने का फल (१०)

१ इस साधना में उपद्रव होगा।
२ मन निश्चित चंचल होगा।
३ यह साधना शुभ नहीं।
४ साधना गुरुकृपा से पूर्ण होगी।
५ आरम्भ करने पर कष्ट होगा।
६ साधना सफल नहीं होगी।
७ देरी बाद सिद्धि होगी।
८ परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९ इस सिद्धि को खेल मत समझो।

क्रियाणा लेने का फल (११)

१ क्रियाणा लेने में अच्छा लाभ है।
२ क्रियाणा लेने में लाभ थोड़ा है।
३ क्रियाणा लेने में हानि है।
४ क्रियाणा लेने में हानि है, न लो।
५ क्रियाणा मत लो नुकसान है
६ क्रियाणा लेने में लाभ है।
७ क्रियाणा महंगा होगा।
८ लाभ न होगा, मत लो।
९ क्रियाणा लेने में लाभ होगा

बाग लगाने का फल (१२)

१ बाग लगाने से अच्छा लाभ है
२ बाग देर से फल देगा।
३ बाग लगाने में लाभ नहीं।
४ बाग अधिक रुपया खा जावेगा।
५ जंगली जन्तु बाग को नष्ट करेंगे।
६ बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७ बाग लाभप्रद होगा।
८ बाग लगाना कलह का मूल होगा।
९ मनोरथ सफल होगा।

शासक के दर्शन का फल (१३)

१. विचार छोड़ दो, कुछ लाभ नहीं।
२. राजा के दर्शन में हानि है।
३. राजा के दर्शन से मनोरथ पूर्ण होगा।
४. राजा का दर्शन विलम्ब में फल देगा।
५. लाभ हुआ चाहता है, बैरी रोकता है।
६. राजा के दर्शन में कोई लाभ नहीं है।
७. राजा आदर करे जगत् में नाम हो।
८. इस झगड़े में मत पड़ो पश्चात्ताप होगा।
९. राजा का दर्शन अफल होगा।

बन्ध-मोक्ष फल (१४)

१ खर्च करने से सत्य छूटेगा।
२ नहीं छूटेगा, कितनी ही कोशिश करो।
३ जल्दी छूटेगा देर नहीं होगी।
४ रुपया खर्च करने से छूटेगा।
५ धन खर्च करने से छूटेगा।
६ देर से छूटेगा, सत्य मानो।
७ सिफारिश से छूटेगा।
८ जल्दी छूट जायगा।
९ अभी नहीं छूटेगा।

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण) सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है, कि–बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुज्ञजन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रखे, स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन करे, शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न—राजा, हाथी, गौ, बैल, विप्र, देवता, अनेक बालक वृद्ध, गुरु, श्वेत वस्त्र वाली स्त्री, रत्न, इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल, पर्वत, सिंह, अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व-शिर का छेदन, अपना मरण, देव ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण प्राप्ति, दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा, कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश या तरक्की मिलेगी

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट जाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू, या सर्प के जल में पैर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी, पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊँ, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीख तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुब्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ, क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तरना, तालाब में तर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कष्टनिवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे, ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न में देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसको समझ लेना चाहिये कि हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जाएगा और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न—लाल वस्त्र पहिनना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का चढ़ना, अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, तेल, लोहा, मिलना, इससे संकट व मृत्यु हों। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य-हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग संकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र-कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट, गधे, भस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह-गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बंदर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत प्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्यु-कारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना बाघ, रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़ी महल-ध्वजा का गिरते देखना अशुभकष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इनके सिवा सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवा स्त्री" यह स्वप्न देखे, कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा। यदि स्वप्न में कोई कुत्ता प्रेम से आपके साथ खेलता दिखाई दे तो लाभ हो। यदि अपने को कैद में देखे तो दुःख से छूटे। बकरी को चरती हुए देखे तो शुभ दिन नजदीक समझे। तूफान देखे तो दुःख के अन्त की सूचना समझें। घर में आग लगी देखे तो जीवन में कोई विशेष-परिवर्तन हो। स्वप्न में बिडाल (बिल्ला) दिखाई दे तो किसी से ठगा जाय। दीपक बहुत टिमटिमाता दिखाई दे तो नीरोग व्यक्ति के लिए रोग की सूचना तथा रोगी व्यक्ति के लिए मृत्यु की सूचना देता है। मुंडित केश नर, भिक्षुक तथा सूखी नदी आदि का दिखाई देना भी रोग कष्ट एवं मृत्यु सूचक है।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थ-पूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मणभोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

अंग-स्फुरण-फलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फड़कना) स्त्री पुरुष दोनों के शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीव.धः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्वबुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल वा खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पात-फल-चक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्ष	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्धमहर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा का भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आ. दमीकिपशुहो	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिनअंधेरा	प्रजाक्षय	गृहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्र मंद पड़ें	देश क्षय	वनपशुगांव बसे	मनु. शून्य
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्णमंडल	राज्य नाश	घर उल्लू बोले	गृह शून्य
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	वांबी कबूतर-घर में बसे	गृहस्वा. न
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश		
रक्तमंडल	युद्ध हो	दुखीभूमिगोली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	रोगभय
स्त्री वैधव्य हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देखपड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तु मंहगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३दिन का पक्ष	प्रजानाश

अथ बारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं-विधिश्च । तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्पं	०	मृति	०	दूर्वा	गोमय	०	पातन

तदाताह्— रवौ भौम व्यतिपाते संक्रांतौ विधृतावपि। षष्ठयष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।

विशेषः—यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि से पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं।

काकस्पर्शादौ फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इष्ट कार्य नाश करता है। विशेषकर दक्षिण दिशा में कुयोग के समय इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा नवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृतच्छायापात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

काक विष्टा विचार—शिरसि—मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः–रोगः। भुजयोः–प्रियार्त्तिः। उदरे–शोकः। गुह्य–सन्तान कष्टम्। जंघयोः–वाहनपीड़ा। पादयोः–प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ, या पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किये हुए किसी के ऊपर काली बीठ कर देवे तो अशुभ जानो। और यदि किसी हरे भरे या फूले फले या पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ करदे तो शुभ जानो।

घर में उल्लू आदि— घर में उल्लू गिरे तो स्थान, मान, आयु की हानि हो। जंगली कबूतर घर में बसे—यह भी अशुभ है। शान्त्यर्थ हवन पूजन जप-दान आदि करना चाहिए।

अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन–प्रश्नकर्त्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे। यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिनमें देखे हुए को देखना) द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना) चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

सिद्ध होरा मुहूर्त

सूर्य की होरा—टेण्डर देने, नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है।

चन्द्र की होरा—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है।

मंगल की होरा—युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाइटी में जाना, मुकदमा के कार्यों में उत्तम होती है।

बुध की होरा—विद्या (कला काव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन लेख पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने के लिए शुभ होती है।

गुरु की होरा—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलन, कोष संग्रह, नवीन काव्य लेखन, प्रकाशन आदि अनेक शुभ कार्यों के लिए शुभ है।

शुक्र की होरा—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्य-वर्धक कार्य के लिए शुभ होती है।

शनि की होरा—द्रव्य संग्रह, भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्यों के लिए शुभ होती है।

सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए ज्योतिश्शास्त्र में होरा (क्षणवार) मुहूर्त पूर्ण फलदायक माना है। सात ग्रहों की सात ही होरा हैं। प्रत्येक वार को एक घन्टे की सूर्योदय के समय उसी वार की पहली होरा होती है। फिर दिन-रात के २४ घन्टों में २४ होरे व्यतीत होने से अगले वार के सूर्योदय के समय उसी वार के स्वामी की होरा आ जाती है। होरा का समय ढाई घटी, यानि एक घन्टा का होता है। दूसरे वार की होरा उसी वार के छठे छठे वार के क्रम से स्वामी की होती है। इसी प्रकार प्रत्येक घन्टे की होरा समझनी चाहिए।

निम्नलिखित चक्र द्वारा दिन-रात के जिस किसी घन्टे की अभीष्ट कार्य-सिद्धयर्थ ग्रह-होरा देखनी हो, सहज में ज्ञात हो सकेगी।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो २४
सू.	सू.	शु.	बृ.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	ब.
चं.	च.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.-	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बृ.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	ब	चं.	श.	बृ.
मं.	मं.	सू.	शु	.बु	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	ब.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बृ.	चं.	श.
बृ.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सु.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	ब.	चं.
श.	श.	ब	मं	सू.	श.	बृ.	चं.	श.	बृ.	मं.	सृ.	ब	च.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बृ.	चं.	श.	गु.	मं.	सृ.

उदाहरण—कल्पना करो, कि—आज मंगलवार है। आपने कार्य-सिद्धयर्थ किसी बड़े पुरुष से मिलने जाना है। तो इसके लिए उपरोक्त पंक्तियों में गुरु की होरा उत्तम होती है—ऐसा लिखा है। अतः उस दिन गुरु की होरा मालूम करनी है कि—किस-किस समय पर होता है। उपरोक्त चक्र में मंगलवार के सामने खाने में देखा तो उस दिन सातवें चौदहवें और अठारहवें घन्टे में गुरु की होरा मिली। अतः मंगलवार को स्थानीय सूर्योदय से छठे वा तेरहवें अथवा सत्रहवें घन्टे के बाद एक-एक घन्टे तक की गुरु की होरा में आपको बड़े व्यक्ति से मिलने जाना फलप्रद है। इसी प्रकार अन्य दिनों में अन्य

कार्यों के लिए भी [illegible] करना चाहिए। जिस वार को जो कार्य करना है, वह वार न मिले तो वह कार्य उस वार की होरा में कर सकते हैं। जैसे—दक्षिण में जरूरी यात्रा करनी है परन्तु उस दिन गुरुवार है। इस दिन दिक्शूल के कारण दक्षिण दिशा की ओरप्रस्थान अशुभ माना जाता है। ऐसी स्थिति में उस दिन गुरु की होरा छोड़कर शुक्र की होरा में जाएं तो शुभ रहेगा।

ठेकेदारों को टंडर देने का समय—सू. चं. बु. गु. शु. की होरा में टेंडर देना लाभप्रद रहता है।

सद्यः नई गद्दी-स्थापना वा नई बही लगाने का शुभ मुहूर्त—दीपमाला के दिन या जब भी समय नियत हो, प्रातः सूर्योदय के बढ़ते सूर्य में मध्याह्न तक मंगलवार ४।९।१४ तिथि तथा भद्रा को छोड़कर शुभ लाभ वा अमृत के चौघड़ियों में या शुभग्रहों की होरा में करें, मध्याह्नोत्तर उतरते सूर्य में नहीं।

सूर्यादि वारेषु कुयोग-सारिणी—

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सर्वकार्येषु वर्ज्या०	ति. ५ न. ह.	ति. ६ न. मृ	ति. ७ न. अ	ति. ८ न. अनु.	ति. ९ न. पु.	ति. १० न. रे.	ति. ११ न. रो.
मृत्युयोगः (अधम तिथयः)	१।६।११	२।७ १२	१।६।११	३।८ १३	४।९। १४	२।७ १२	५।१०।१५
क्रकच योगः	ति. १२	ति. ११	ति. १०	ति. ९	ति. ८	ति. ७	ति.६
दग्धा तिथिः	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य तिथिः	४	६	७	२	८	९	७
हुताशन तिथिः	१२	६	७	५	९	१०	११
रव्या जन्मति	७	१४	१०	१२	९	८	१५
दग्ध नक्षत्र	भ	चि	उषा	घ.	उफा.	ज्ये.	रे.
कुलिकमुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेलामुहूत	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघंटकमुहूर्त	१०	८	६	४	२	१४	८
कण्टकमुहूर्त	६	४	२	१४	१२	१०	१२
दुर्मुहूर्त	१४	९।१२	४।७	८	६	९	।१२
यमघण्टयोगः	म	वि	आ.	मू.	कृ.	रो.	ह.

पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तेल, सात दिन पूर्व मैथुन,

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठा कर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त--चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३, अनु. श्र. ध. एषु भेषु रिक्तिथी शुभेऽहिन चन्द्रतारानुकूल्ये सति शुभ

यात्रा निवृत्तौ प्रवेश मुहूर्त--मृ. रे अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य, स्वा. श्र. ध. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु १।२। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः। वि. कृ. पू. ३ भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि। ४।९।१४।६।१२।८।३० तिथयः सू. मं. वारौ. १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है—विशेषः--प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति ॥

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः
मे..	क.	कु.	सि.	म.	मि.	ध	वृष.	मीन	सिंह	ध.	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बु.	श.	श.	वृ.	शु.	शु.	मं.	वृ.	शु.	घातवार
म.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे	स.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि	मि.	मेष	स्त्रीचं.घात
का.	मा	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	बै.	ज्ये.	आ.	श्राव.	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	बृ.	प्री.	सु.	गं	वृद्धि	बै.	गं	व्या.	व.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	"
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	"

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन, रोगादि कार्यों में घातचन्द्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है।

"घाततिथिघतिवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्यकर्मसु शोभनम् ॥"

वाम दक्षिण निर्देश

अग्रिम चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथांगविभागे पल्ली-(छिपकली, कोढ़ किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भूमध्ये	राज्य संबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहु लाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्य लाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुज	नृप तुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धि नाशः
कटिभागे	अश्व लाभः	वाममणिबंधे	कांति नाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्री नाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरण
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्य लाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धन लाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यृक्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनी, रो. मू. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्ध दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया-पात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्का फलम्—छिक्काप्रायः सबदिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींकि पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे ॥१॥ सम्मुख छीक लड़ाई भारे। छींक दाहिनी द्रव्य बिनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी। नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई। ऐसे छींक बिचारे भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

यात्रा में प्रथम बार अपशकुन होवे तो ११ स्वास तक ठहर कर चले द्वितीय बार १६ स्वास तक ठहरे और तीसरी बार के अपशकुन में कदापि न जावे।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठ तश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः ॥ एक नाक दो छींक काम बनें सब ठीक ॥

यात्रा में अशुभ शकुन

गवन समय जो स्वान। फरफराय दे कान। एक सूद्र दो वैस असार।
तीन विप्र औ छत्री चार। सनमुख आवै जो नौ नार। कहै भड्डरी अशुभ विचार ॥
स्वान धुनै जो अंग, अथवा लोटै भूमि पर। तौ निज कारज भंग, अतिहि कुसगुन जानिये ॥

यात्रा में काल-ज्ञान	
शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
सोमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे

सम्मुखे नेष्ट :पृष्ठे शुभः

योगिनी-वास चक्रम्

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैर्ऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तरे	ईशा०	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बांये की शुभ,युद्ध यात्रा की बांये ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को,अर्द्ध रात्रिमें उत्तर को और मध्या ह्नकालमें दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामुहूर्त गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे, गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकालः सप्तपञ्च (५७) अरुणोदयः अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

चन्द्र-वास चक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि०	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके-घट्यात्मक-चन्द्र-वास चक्रम्

पू.	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिये। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा-करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिदोषं, यामयायार्द्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः।

सर्वाङ्ग-सिद्धि योगः—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयदशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नर्ऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण क्रमेण स्थान विधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेउ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र खट्टे फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व रक्खे। अथवा सब लोग मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख दें।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, सम्भव हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करे। अशुभ मुहूर्त में यात्रा करने पर हानि का भय रहता है। यदि यात्रा का मुहूर्त शुभ न हो और यात्रा भी न टाली जा सकती हो तो चतुर्घटिका या होरा मुहूर्त देख यात्रा करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्तम्

घटी	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
३॥	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ल.
७॥	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का	उ.
११।	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.
१५	रो.	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.
१८॥।	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.
२२॥	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.
२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का.
३०	श.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ल.

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी फल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बांये दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रातःकाल। विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गोरीकन्या, धोबी, कार्यसिद्ध वाक्य, सजलपूर्णघट, यात्रा पश्चाद्रिक्त घट, यात्रा समय देखने में शुभ हैं। अशुभ शकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, सन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार युद्ध, कुटुम्बकलह, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, छिक्का, दुष्ट-वाणी, दुखिया का रोना, भैंस पर सवार, नंगा मनुष्य यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद।

राजदैवज्ञोक्तम् आवश्यके यात्रामुहूर्तचक्रम्

पौ०	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी, का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठा कर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त--चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३, अनु. श्र. ध. एषु भेषु रक्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्रतारानुकूल्ये सति शुभ

यात्रा निवृत्तौ प्रवेश मुहूर्त--मृ. रे अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य, स्वा. श्र. ध. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु १।२। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः। वि. कृ. पू. ३ भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि। ४।९।१४।६।१२।८।३० तिथयः सू. मं. वारौ. १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है—विशेषः--प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति॥

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः
मे..	कं.	कु.	सि.	म.	मि.	ध	वृष.	मीन	सिंह	ध.	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.	घातवार
म.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ध.	व.	मि	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि	मि.	मेष	स्त्रीचं.घात
का.	मा	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	बै.	ज्ये.	आ.	श्राव.	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	गं	वृद्धि	वै.	गं	व्या.	व.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	"
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	"

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन, रोगादि कार्यों में घातचन्द्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है।

"घाततिथिघतिवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्यकर्मसु शोभनम्॥"

वाम दक्षिण निर्देश

अग्रिम चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथांगविभागे पल्ली-(छिपकली, कोढ़ किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भूमध्ये	राज्य संबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहु लाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्य लाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुज	नृप तुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धि नाशः
कटिभागे	अश्व लाभः	वाममणिबंधे	कांति नाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्री नाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरण
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्य लाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धन लाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यृक्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनी, रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्ध दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया-पात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्का फलम्—छिक्काप्रायः सबदिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छीकि पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे॥१॥ सम्मुख छीक लड़ाई भारे। छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी। नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई। ऐसे छींक विचारे भाई॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

यात्रा में प्रथम बार अपशकुन होवे तो ११ स्वास तक ठहर कर चले द्वितीय बार १६ स्वास तक ठहरे और तीसरी बार के अपशकुन में कदापि न जावे।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठ तश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः॥ एक नाक दो छींक काम बनें सब ठीक॥

यात्रा में अशुभ शकुन

गवन समय जों स्वान। फरफराय दे कान। एक सूद्र दो वैस असार।
तीन विप्र औं छत्री चार। सनमुख आवै जो नौ नार। कहै भड्डरी अशुभ विचार॥
स्वान घुनै जो अंग, अथवा लोटै भूमि पर। तो निज कारज भंग, अतिहि कुसगुन जानिये॥

यात्रा में काल-ज्ञान	
शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे
सम्मुखे नेष्टः पृष्ठे शुभः	

योगिनी-वास चक्रम्

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैर्ऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तरे	ईशा०	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बांये की शुभ, युद्ध यात्रा की बांये ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामुहूर्त गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे, गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकालः सप्तपञ्च (५७) अरुणोदयः अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

चन्द्र-वास चक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके-

घटचात्मक-चन्द्र-वास चक्रम्

पू.	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिये।

कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्---सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा-करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिदोषं, यामयायार्द्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः।

सर्वाङ्क-सिद्धि योगः---शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयदशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नर्ऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण क्रमेण स्थान विधानम्---यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेउ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र खट्टे फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व रक्खे। अथवा सब लोग मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख दें।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तु---यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करे। अशुभ मुहूर्त में यात्रा करने पर हानि का भय रहता है। यदि यात्रा का मुहूर्त शुभ न हो और यात्रा भी न टाली जा सकती हो तो चतुर्घटिका या होरा मुहूर्त देख यात्रा करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्तम्

घटी	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
३॥	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ल.
७॥	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का	उ.
११।	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.
१५	रो.	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.
१८॥	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.
२२॥	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.
२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का.
३०	श.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ल.

सूचना---यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी फल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभ शकुनानि---मृग बांये दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रातःकाल। विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गौरीकन्या, धोबी, कार्यसिद्ध वाक्य, सजलपूर्णघट, यात्रा पश्चाद्रिक्त घट, यात्रा समय देखने में शुभ हैं। अशुभ शकुनानि---वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, सन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार युद्ध, कुटुम्बकलह, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, छिक्का, दुष्ट-वाणी, दुखिया का रोना, भैंस पर सवार, नंगा मनुष्य यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद।

राजदैवज्ञोक्तम् आवश्यके यात्रामुहूर्तचक्रम्

पौ०	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

हवन में शाकल्य-विचार—तिल का आधा चावल, चावल का आधा यव, यव का आधा शक्कर और सब का आधा घृत, असमर्थता में यथाशक्ति घृत लेना चाहिये।

पापग्रहमुखे हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शांति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्ताम्रधोमुखीम् ॥ गोमूत्र-मधुगन्धाद्यर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गद्विगुणां कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

यथा—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना फिर ८ से भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना। राशि के अनुसार अपने से उच्च वर्ण की राशि का नौकर रखना निषिद्ध है, समान वर्ण प्रीतिकारक है।

भूमि का लेन-देन—गुरु, शुक्रवार १, ५, ६, ११, १५, तिथि मृग. पुन. ऽश्ले. म., पू. फा., वि., ऽनु., मूल, पू. षा., उ. भा. नक्षत्र में घर-जमीन का सौदा करना शुभ है।

हल-प्रवहण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा.पु. श्र. ध. श. म. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठचष्टमीरहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम् सूर्य-भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने					बीजवपने राहुचक्रम् राहु नक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शभ	अशभ	शभ	अशभ	शभ	अशभ

बीज वपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. एषु भषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा) द्युपादस्थे भूमौ संजायते रजः।
तस्मादिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्न भक्षण मुहूर्तः—मृ. र. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चत्र को छोड़कर सू. बु. गु. शुक्रवार शुभ हैं।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. र. नक्षत्र में गौ लेना, बेचना। अन्य पशु पुन. पूर्वा ३. ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभ-फल सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हानि करे घर आया)

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापन चक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	क्वाथकर्म नेष्ट	सुख शुभ	फलम्

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. पुष्य, अश्वि. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामा रहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है। **तृणकाष्ठादिसंग्रहनिषेधः**—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कम कुम्भ, मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए।

सिंगी (फस्त) लगाने का मुहूर्त।

कृष्ण पक्ष में रिक्ता तिथि एवं क्रूरवार को सिंगी (फस्त) और जोंक लगवाना रोगी के लिए आरोग्यप्रद होता है।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त

धनि, अश्वि., हस्त., चित्रा., अनु., पुष्य., ज्ये., पुन., एवं रेवती नक्षत्र में शनि की होरा में मशीनरी चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल और जन्म नक्षत्र को छोड़ कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़ कर शुभ तिथियों में, भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

अथ यात्रा मुहूर्तः— दिग्द्वारलग्नानि

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले.म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या। तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमन-कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।११	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	म० म०

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८वें लग्नेश हो। अन्यच्च, यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देव-दर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूल-ज्ञानाय चक्रम्

पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर.	ईशा.
चं. श.	चं.श.	गुरु	सू.शु.	सू.शु.	भौम	मं.	बु.श.

नक्षत्र-शूल चक्रम्

दिशा पू.	दः	प	उ.
नक्ष. ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूल-परिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य-दैत्येज्य-दिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा। गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि माषान्भुक्त्वा शनिवारे शूले यच्छेन्न दोषभाक् ॥२॥

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठ दिग्भाग: शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भ सूर्य:	मी. मेष वृष	मि. क. सिंह	कर्क तुला वृश्चिक	धनु मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य:	सिं. कं. तु.	वृश्चि.ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भ सूर्य:	मि. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु
खातविद्याज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम् सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति:
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

नलकूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त---अनु. ह. तीनों, उ., रो. ध. श. म. पू. षा., रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अ.भ.कृ. मध्यजल	पूर्व पुन.पु.श्ले. जलाभाव	आग्नेय म.पूफा.उफा. मध्यजलम्
उत्तर पूभा.उभा.रे. मिष्टजलम्	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण ह.चि.स्वा. जलाभाव
वायव्य श्र.ध.श. क्षारजलम्	पश्चिम मू.पू.उषा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि.अनु.ज्ये. बहुजलम्

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे । देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे ।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिवे ॥
मातृभैरव वाराहनारसिंह त्रिविक्रमा: ।
महिषासुर हन्त्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ।

अश्वि० रो० मृ० पुष्य०, ह० चि० स्वा० अनु० श्र० ध० श० उत्तरा० ३, रे० एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८ १०।११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयो: नीचनिर्बलास्तादि-रहितकाले, कर्तु: सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२ । ५ । ८ । ११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभै:, ६ । ११ सेन्दुभि: पापै: पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या ।

देवताविशेषेणलग्नम्---सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्य: स्त्रियां हरि: । एवं वेधाश्चरे क्षुद्राद्यं गदेव्य: स्थिरेऽखिला: ॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तम: ।

॥ श्री रामायणादि कथा प्रारम्भ का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र से दिननक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि २४ तक मृत्यु, राजभय, २७ तक मोक्षप्रद होता है। शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वक देवप्रीत्यर्थं शुक्ल पक्ष में और पितृ व प्रेतशान्त्यर्थं कृष्णपक्ष में करे।

वास्तुशान्ति मुहूर्त---श्र० ध० मृ० अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३. पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदान पुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम् ।

अग्नि का वास किस लोक में है---जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना पुन: ४ का भाग देना यदि पूरा भाग लग जाय (०शेषरहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राण-हानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहा
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष:---यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चोलापनीताद्यखिलव्रतेषु । दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् । महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा । नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोरग्रहास्ते भूमिकम्पम् । केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ । देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधी: ॥ दुर्गभंगे गृहे वाऽपि विवाद: शत्रुविग्रहे । शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत् ॥

सूर्यनक्षत्रात्कूप-नल चक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल

गणना क्रम---मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्---वारिवाहे वारिहानि: । गणनाक्रम---पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई. मध्ये वारिवाह: ।

हवन में शाकल्य-विचार—तिल का आधा चावल, चावल का आधा यव, यव का आधा शक्कर और सब का आधा घृत, असमर्थता में यथाशक्ति घृत लेना चाहिये।

पापग्रहमुखे हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्ति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम्॥ गोमूत्र-मधुगन्धाद्यरचितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गद्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्॥

यथा—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना फिर ८ से भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना। राशि के अनुसार अपने से उच्च वर्ण की राशि का नौकर रखना निषिद्ध है, समान वर्ण प्रीतिकारक है।

भूमि का लेन-देन—गुरु, शुक्रवार १, ५, ६, ११, १५, तिथि मृग. पुन. ऽश्ले. म., पू. फा., वि., ऽनु., मूल, पू. षा., उ. भा. नक्षत्र में घर-जमीन का सौदा करना शुभ है।

हल-प्रवहण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा.पु. श्र. ध. श. म. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठ्यष्टमीरहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम् सूर्य- भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने					बीजवपने राहुचक्रम् राहु नक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीज वपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा) वृषपादस्थे भूमौ संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्॥

नवान्न भक्षण मुहूर्तः—मृ. र. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चत्र को छोड़कर सू. बु. गु. शुक्रवार शुभ हैं।

गो आदि पशु लेने का मुहूर्त—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. र. नक्षत्र में गौ लेना, बेचना। अन्य पशु पुन. पूर्वा ३. ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभ-फल सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हानि करे घर आया)

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापन चक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	क्वाथकर्म नेष्ट	सुख शुभ	फलम्

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. पुष्य, अश्वि. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामा रहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है। **तृणकाष्ठादिसंग्रहनिषेधः**—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कम कुम्भ, मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए।

सिंगी (फस्त) लगाने का मुहूर्त।

कृष्ण पक्ष में रिक्ता तिथि एवं क्रूरवार को सिंगी (फस्त) और जोंक लगवाना रोगी के लिए आरोग्यप्रद होता है।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त

धनि, अश्वि., हस्त., चित्रा., अनु., पुष्य., ज्ये., पुन., एवं रेवती नक्षत्र में शनि की होरा में मशीनरी चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल और जन्म नक्षत्र को छोड़ कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़ कर शुभ तिथियों में, भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले.म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या। तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमन-कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

दिग्द्वारलग्नानि

१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।११	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	म० म०

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८वें लग्नेश हो। अन्यच्च, यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देव-दर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूल-ज्ञानाय चक्रम्								नक्षत्र-शूल चक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋं.	पश्चि.	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिशा पू.	द.	प	उ.
चं. श.	चं.श.	गुरु	मू.शु.	सू.शु.	भौम	मं.	बु.श.	नक्ष. ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूल-परिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य-दैत्येज्य-दिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा। गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि माषान्भुक्त्वा शनिवारे शूले यच्छेन्न दोषभाक्॥२॥

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठ दिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भ सूर्यः	मी. मेष वृष	मि. क. सिंह	कर्क तुला वृश्चिक	धनु मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिं. कं. तु.	वृश्चि.ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भ सूर्यः	मि. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु
खातविद्याज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्
सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्
सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

नलकूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त——अनु. ह. तीनों, उ., रो. ध. श. म. पू. षा., रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-नल चक्रम्			सूर्यभात्तडागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल	वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

गणना क्रम——मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्——वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रम——पूर्व आग्नेय द० न० प० वा० उ० ई. मध्ये वारिवाहः।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अ.म.कृ. मध्यजल	पूर्व पुन.पु.श्ले. जलाभाव	आग्नेय म.पूफा.उषा. मध्यजलम्
उत्तर पूभा.उभा.रे. मिष्टजलम्	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण ह.चि.स्वा. जलाभाव
वायव्य श्र.ध.श. क्षारजलम्	पश्चिम मू.पू.उषा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि.अनु.ज्ये. बहुजलम्

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे ।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरव वाराहनारसिंह त्रिविक्रमाः ।
महिषासुर हन्त्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ।

अश्वि० रो० मृ० पुष्य०. ह० चि० स्वा० अनु० श्र० ध० श० उत्तरा० ३, रे० एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८ १०।११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२ । ५ । ८ । ११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभैः, ६।११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ने देवप्रतिष्ठा कार्या ।

देवताविशेषेणलग्नम्——सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः । एवं वेवाश्वरे क्षुद्राद्य गदेव्यः स्थिरेऽखिलाः ॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ।

॥ श्री रामायणादि कथा प्रारम्भ का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र से दिननक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि २४ तक मृत्यु, राजभय, २७ तक मोक्षप्रद होता है। शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वक देवप्रीत्यर्थं शुक्ल पक्ष में और पितृ व प्रेतशान्त्यर्थं कृष्णपक्ष में करे।

वास्तुशान्ति मुहूर्त——श्र० ध० मृ० अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३. पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदान पुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम् ।

अग्नि का वास किस लोक में है——जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना यदि पूरा भाग लग जाय (०शेषरहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहा
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः——यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु । दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् । महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा । नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोरग्रहास्ते भूमिकम्पम् । केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ । देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्गभंगे गृहे वाऽपि विवादः शत्रुविग्रहे । शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत् ॥

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सच हैं ।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्त:—४।९।१४ तिथि हो, मं. श: वार हो, कृ. आर्द्रा. ध. अ. श्ले. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा, इ. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है ।

गृहादि निर्माण में आय विचार

ग्रामभात् वासकर्तुर्नक्षत्र यावद् गणना कार्या स्थान-नक्षत्र-फलम्		
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःर्नैःस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ स्वान, ५ वृषभ, ६ गदर्भः, ७ हस्ती, ८(०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है, और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणा कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवे। प्रातःकाल उसको देखें। यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथवी की शुभाशुभपरीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक न निकले अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख बाल निकले तो मकान बनानेवाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. गु. शु. श. वारों में, रो. मृ. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेध रहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति।
द. कुक्षौ	४	लाभः शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः—पुष्य. उ. ३ रो. म. आश्ले. पू. षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं वि. बु. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

प्रसुप्त-भूमि-ज्ञानम्—'संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय। दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथवी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात्: ५।११।७।६।२।१०एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूप-विचारः

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नैं.	प.	उ.	वा.
अर्थहानिः	सुपुष्टिः	सुप्राप्तिः	पुत्रनाशः	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारौ तिथिसंप्रयुक्तौ वेदाहृतं तद्गणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेष सलिलं च स्वग। त्रिशून्यशेषभुवि संस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः

अथ चुल्लिचक्रविचारः

सूर्य के नक्षत्र से ४ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद : ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा तंदूर बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.) कार्तिकमासयोः ॥ (यहां चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३. अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामा रहित तिथियों में चं. बृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यक ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ में चन्द्रमा न हो, चौथा ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो, चन्द तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश शंखध्वनि मंगल गान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर, अथवा अग्नि [illegible] इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मु. मू. रे. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः--द्विरागमः षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथि-नियोगो न वारशुद्धयादि विचारणीयम् ॥

शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः--जिस दिशा में शुक्र उदय हो, वह दिशा 'सम्मुख' होती है। अथवा मेष, सिंह, धनु में शुक्र हो तो पूर्व में वृष, कन्या मकर में हो तो दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुंभ में हो तो पश्चिम में, कर्क, वृश्चिक, मीन में हो तो उत्तर में शुक्र का वास माना जाता है। ऐसे सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि युवति वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाहसम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः--सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः--राजते वाऽथ सौवर्णे कांस्य-पात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता-फलान्वितम्। महाश्वेतगवा युक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथमस्त्रीसंगम मुहूर्त--रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद कमरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे। मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य--स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे, आदर-सत्कार करे। विशेष गुप्त बात न कहे। और विशेषा-धिकार भी न दे, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक दो हो सकती हैं। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशु-पक्षियों में भी तोता, चिड़ा तथा बंदर आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववध्वाः पाक-कर्म मुहूर्तः--द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र.ध.श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवास्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणविधारण मुहूर्तः--ह. चि. स्वा. अनु. धनि. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतनवस्त्र सौवर्णरत्नरजत-दन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूड़ीचक्रम्--सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ। ३ शुभ। ४ शुभ। ७ अशुभ। २ अशुभ। १ शुभ। २. शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ वार भी हो।

वस्त्रधारणे विशेषः--विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालेन समर्पितम्। निन्द्येऽपि विष्ण्य-वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।

भूषण-घट्टन मुहूर्त--ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ॥

दुकान खोलने का मुहूर्तः--ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३, पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़ कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृहात्पितृगृहागमन मुहूर्तः--पूर्वा ३ भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं. बु. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्तः--भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३. ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्र--सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र अभिजित् सहित गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान फल	आसन सौख्य	मुख विक्रयनाश	अग्नि अर्थनाश	नैर्ऋत सुख	सन्मुख महाश्रेष्ठ	वायव्य चौर भय	ईशान सर्वहानि	मध्य शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी)--मुहूर्तः--अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामा रहित-तिथौ. र. बु. बृ. शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशी-शयोनिमैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही)--पत्रारम्भ-मुहूर्तः--अश्वि. रो. मू. पुन. पु. उत्तरा ३, ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. बृ. श. वारेषु शुभयुते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभाव च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगः शुभः स्यात्।

द्रव्यप्रयोग मुहूर्तः--पुन. स्वा. मृग. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभ ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिये वर्जित काल--मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुध वार को धन नहीं देना चाहिए। कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

ईंट के भट्ठा--में आग देने या ईंट बनाने में मंगल रवि और शनैश्चर वार शुभ माने जाते हैं।

श्रीकाशीनाथ-मते क्रयविक्रय मुहूर्तः--पुष्य., पू. भा., अनु. श्र.ह. म. स्वा. उत्तरा.३, आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने का नक्षत्र--रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि., वारों में बुध और रवि श्रेष्ठ माने गये हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः--पू. फा. पू. षा. पू. भा. वि. कृ. श्ले. म. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

नोट--बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। पट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

लग्न भंग-योगाः--व्यये शनिः केऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः । लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरुसमौ) ॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदा लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ पंगवन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः, बादरायणः--मासशून्याह्वयास्तारा राशयो दधिरादयः । गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः ॥

कर्तरी दोषः—लग्नस्य पृष्टाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः ॥ "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः--पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरीदोषौ चैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमे दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न ॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह ॥ अपवादान्तरम्--उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति गली गुरुः । केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश-ग्रहोद्भवाः । ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी ॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षति-ष्यर्क्षसम्भवाः । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रलग्ना-देकादशालये । सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत ॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः ॥ स्मरण रहे, कि-पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३			
६	३	६	२	२	२	६	६	३		
८	११	११	३	३	४	८	८	८	स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविशोपकाधिकम् ।
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विशोपकाबलम्

अथ गोधूलिलग्नविचारः--लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । तदा वै सर्वं वर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन संध्या समय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चै. बै. में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर ज्येष्ठ आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर श्रा. भा. अश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्यदोषः—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । **तथा गो-धूलिके** त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः । "अस्तं याते गुरुदिवस सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूय अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त में पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्णचाण्डालादि जातीनां विवाहमुहूर्तः—कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां वामे योगे चापि धिष्ण्यं निषिद्धम् । संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायुः प्राप्तये शौनकाद्याः ॥

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानम् चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च---सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः । **वध** तिथि-मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः ।

वधू प्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है । ५ वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढ़त्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ॥ रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३, पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और च. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियों में ५। ८। ११लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है ।

वधू-प्रवेशस्य समयमाह--वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ॥

विवाहतःप्रथमवर्षे वधूनिवासफलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के १४ में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	विवाहित
०	मृ.	अ	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ	पातदूषित नक्षत्र
पुन	आ	म	आ	मू	श्र	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये	
श	ज्ये	ज्ये	चि	श	ध	उषा	ध	श	सि	ध	
पूफा	ध	पुष्य	पूभा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उफा	म	
चि	म	ह	०	स्वा	ह	पूषा	मू	ऽनु	०	पूषा	
मू.	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मृ	स्वा	

हर्षण, वघृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्रय मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की विशेष करके वर्जित है।

४ वेधदोष चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि.	उषा.	श्रवण.	रे.	उभा.	ह.	म.	पुन.	म.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और बीच के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। वह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

५ जामित्र दोष चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उ. फा.	ह.	स्वा	ऽनु	मू.	उ. षा.	उ. भा.	रे.	वि. न.
अनु	ज्ये.	ध.	पू. भा.	उ. भा.	अ.	मृ.	मृ.	पुन.	उ. फा.	ह.	ग्रहनक्षत्र

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने, पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं, याने १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

७ एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्यके नक्षत्र से विवाहका नक्षत्र अभिजित् सहित गिननेसे विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

८ उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें २३वें २४वें और २५वें नक्षत्रपर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९ स्थूलक्रांतिसाम्यदोषचक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	कं०	तु०
सिंह०	मि०	ध०	वृश्चि०	मी०	कुं०

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हों तो स्थूल क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चंद्रमा में वा सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमामें। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य का निर्णय महापात गणितसे करना चाहिए।

६ बाणज्ञानाय सुलभचक्रम्

बाण नाम	गतांशाः राशौ	प्रति ५ कर्म	वार-समयपरत्वेन अर्कस्य वर्ज्याः	वर्ज्याः	वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्ध	रवौ	रात्रौ	त्याज्यम्
वह्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव	वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा	त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ	वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः	वर्ज्यम्

१० दग्धातिथिदोषः

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं तो विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजंग क्रान्तिसाम्यञ्च वाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

लत्तादिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बांगर)-जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त), एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्। ॥ उपग्रहर्क्षे कुरुबाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त अवधस्थान) कलिगवंगेषु (जगन्नाथ-पुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च त्यजेद लत्ताभं त्यजेद् सिद्धं किल सर्वदेशे ॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः ॥

विशेषपरिहार—चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः' पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः ॥

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥ **अत्यावश्यके वेधपरिहारः**—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्न व कृत्स्नतः (नारदः) ॥ अतोन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमम् ॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वशिष्ठः) ॥ अथ पापग्रहेण भुक्त-भोग्यक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः। भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभा-शुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥ **अस्यापवादः**—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। **जामित्रपरिहारः**—(व्यवहार-समुच्चये)—स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगः। हृत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम् ॥ मुहूर्तचिन्तामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः ॥

विवाहे लग्न-शुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं. पाप	०	०	रा.	०	चं. शु. लग्नेशः	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेशः	०	०	०	श.	त्याज्याः
चं.	कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च				चं		चं.	विद्धंभञ्च				गोधूली त्याज्या

लग्न-गण्डान्त—कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न गण्डान्त होता है। वह भी जन्म में भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासः—विवाहशुद्धौ-मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तरम्। त्याज्योऽर्कौ धनुषश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥१॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥२॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़कर वर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करो।

अथ ज्येष्ठ विचारः—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिकासूर्य को छोड़ कर दानादिपूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट् मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करले और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले। वहां छः मास का विचार नहीं है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—साहे चिट्ठी (कुंकुम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण से ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास, कुलवालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त अन्यत्र दिये गये हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी-दिन वर की राशि में सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या की राशि से चन्द्र गुरु देखिए बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ठ हो तो विवाह नहीं बनेगा ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु० सू० चं०) शुद्धि प्रथम देखें। "झष-चाप-कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ अत्यावश्यकता में "द्विरर्च्यौ द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यःअरिलाभादिगोऽपि चेत्॥ (रणवीर ज्यो.. नि.)

(बृ०)। तुलाराशौ अपूज्यरविः—घमं वी धन गतो दिवाकरस्तौलिराशि जनितस्य शोभतः। आवश्यके पूज्य रवि परिहारः— गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहाः॥ (मु० प्र० सा०)।

विवाहादौ त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः— १०।६।३।१
श्रेष्ठगुरुः—९।५।११।२।७
नेष्टगुरुः—४।८।१२
श्रेष्ठरविः—३.६।१०।११

{ ध. मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ठ गुरु भी श्रेष्ठ है।

पूज्यरविः—२।५।९
विशेष पूज्य रवि—१।७
नेष्टरविः—४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८ पूज्यचन्द्रः—१२
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।९।१०।११

कन्या-वरयोः तैलादि-लापने (बन्न) दिन संख्या

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैलादि ला.	७	५	९	९	५	७	७	९	५	९	५	७

अथ विवाहे तिथिवारनक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३, म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेध-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहित-तिथिषु कात्यायन मते अश्वि. चि.श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भ मुहूर्त—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहले ६।६।९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना पीसना, कूटना, मंगलकलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्व कार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रांन्तिसाम्य और दग्धातिथि— इन दसदोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के बिवाह मुहूर्त लग्न दिये हुये है। इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेडी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

लत्तादोष-ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्ननक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२ वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

ग्रह-मेलापक-विचार—वर की कुण्डली में जन्म लग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाए तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए और दोनों का पंचम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादि-दोषजां कन्यामच्युत विवाहादिशान्ति विधाय दारयोग्यायायुष्यते वराय दद्यात्।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन-सनातथा ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन नास्तिक, आजीविका से रहित अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह, संसार से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल, लम्बी व पतली, झगड़ालू अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

वाग्दान—कुड़माई—सगाई से पहले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक, तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारिणी से विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिएं;–(१) दारिद्र्य, (२) मृत्यु, (३) वैषम्य, (४) व्यभिचार, (५) सन्तान का अभाव।

वर-वरण-मुहूर्त—उ ३, रो. कृ. पू. ३, रिक्ता अमावस्या को छोड़कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगाये। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत करे और वर के मुख में एक छुवारा या मीठा, (गुड़, बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े "तस्मिन् कालेऽग्निसाक्षिके स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे। अव्यंगेऽप्रतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्या-वरण मुहूर्त—उ.पा., स्वा., श्र., पूर्वा. ३, अनु., ध., कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुद्ध समय देखकर वस्त्रालंकार फलपुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिए।

विवाहकालनिर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवें। तद्यथा "मासत्रया-दूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गपराशराद्याः॥" द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है। वसिष्ठः—"दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः॥"

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवें जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधू की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण(—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार निर्दोष शुद्ध नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या संकल्प के समय "वरस्य पञ्चवर्षे कन्या, कन्यायाः नवमे वरः" बोलते हुए नाम बदल लेते हैं। ऐसे नाम बदलना व्यर्थ है अतः पहिले सारिणी आदि देखें।

प्रयोगचक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्यसिद्धिः
मुखे	३	सुमन्त्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनादर्यः
चरण	४	साधनाद्धितः

मंत्र-दीक्षा मुहूर्त—अधिक मास रहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्ण पक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष. मि. सिंह. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११ वें पापग्रह हों तब मंत्रदीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सतीर्थ पर, सूर्यचन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय मास तथा पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. २।६।७।१०।१३।१५ तिथि, (अथवा या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा) र. श्रो. ग. उ. अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामि नक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होने पर गुरु शुक्र के उदय में शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे लग्ने शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

मेलापक सारिणी

कन्याराशि	[illegible]	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या	
	भानि	अ १	भ १	कृ १	कृ ।।।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ।।।	पुन १	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा १	उफा ।।।	ह १
मेष	अ १	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -८	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० +५	२४ ५+	१८॥ ३५	०॥ ३६	१०॥ २३६
मेष	भ १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ -८	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ५
मेष	कृ १	२६॥	२८ १	२८ २	१८ ३४	१० ०१६४	१६॥ ४	१९॥	१९॥ १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ५
वृष	कृ ।।।	१९ ४	१९ १४	१९ ३०	२८ ३	१८॥ २३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+
वृष	रो १	२३॥ -४	२३॥ -४	१९ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+
वृष	मृ ॥	२३॥ -४	१८॥ ३४	१८॥ -८	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१९ ३	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+
मिथुन	मृ ॥	२६॥	१७॥ ३	२१॥	१९ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ३०	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४
मिथुन	आ १	१८॥ ३	२०॥	२१॥ ३	१९ +१४	२४ +४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३
मिथुन	पुन ।।।	१८॥ ३	२५॥	२२॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ४०	१५॥ -८	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३
कर्क	पुन १	२२॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ ३	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ १२४	२०॥ २०	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३
कर्क	पु १	२६॥	२०॥ ३	२६॥	२१	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२१ ०	१८॥ +४	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥
कर्क	श्ले १	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	१९ ३१	२१	१२॥ ४	१२॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०१५२	१५॥ १४२	१७॥ १३	१९॥ १	१९॥
सिंह	म १	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	१॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१९॥ -२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३६२	२० १	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४
सिंह	पूफा १	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ १	२६॥	२५॥ -२	२२॥ +२४	१६॥ ३४	१६॥ -११६	३० -१	२८ १	३४ ०	२४ ०४	२७॥ ०४
सिंह	उफा १	२५॥ ३५	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ १	१५॥ १	१४॥ ३०	२५॥ ५+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ १	१६ ३४	१५ ०३४
कन्या	उफा ।।।	२१ ३१	२१ १	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ १	२३॥ १	१७॥ १	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ १	२७ ३०
कन्या	ह १	१९ २३६	१८॥ ६	२९ १	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३०	२८॥ १	२३॥ १	१८॥ १	२६॥	२४॥	१६ +८	२०॥ ८+	१५ ३४	२६ १	२८ ३
कन्या	चि १	१२॥ १	८॥ १३६	१८॥ १	२३ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	१८ १	२२ १	२४॥	१९॥	११॥ १	२५॥	२०॥ +८	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७

कन्याराशि	[illegible]	कन्या	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	चि ॥	चि ॥	स्वा १	वि ।।।	वि १	अ १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा १	उषा ।।।	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ।।।	पूभा १	उभा १	रे १
मेष	अ १	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	२३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२०	२६	२०	१९॥	२४॥ ३	२५॥ ३	२४॥ ३४	२३॥ ५+	२६ ४०
मेष	भ १	३॥ १३६	१३ १३	२८	२९ -१	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ १६	१२॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १२३	२॥ १३२	१२॥ -१	२३ -२	२२॥ २५+	१६॥ ३०	२५॥ ४०
मेष	कृ १	१७॥ ५	२७	१४ ३	१९ ३	१६॥ ३६	१९॥ -६	२५॥ -२	२५ ५+	१९ १२५	१९॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ ९	१७॥ १७	१९॥ १६	१०॥ ३४
वृष	कृ ।।।	२३ ५+	२० -६	९ ३६	१४ ३६	२४॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ ४५	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
वृष	रो १	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ २१६	१४॥ ३१	२२॥	२३॥ १	१३॥ १२	१२॥ ६	१९ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२०	२६	२७	१९ ३
वृष	मृ ॥	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -२	१७ -२	२३॥	२१॥ ३	२४॥	११॥ ६	१०॥ २५	१३॥ २६	२१॥ २५+	२२ ५+	१२ ३५	२३॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ ॥	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१४॥ ५+	१३ ६	१३ ३५	१४ ६	२३	२० ३	२५ ५+	१०॥ -२६	२४॥ -६	२० ३६	२२ ३५	२१ ५+	२३॥ ५+	२४	[illegible] ३	२६
मिथुन	आ १	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१० १६	५ ३३	१५ ३३	२८	२७	२४॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१५ १५+	१५ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६
मिथुन	पुन ।।।	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ २६	६ ३५	[illegible]	२७	२७	२४॥ -६	२२॥ -६	१३॥ -६	१८॥ -५	१३ ३५	१९ ३५	१७॥ ३	२३॥	२६
कर्क	पुन १	१९॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कर्क	पु १	१९॥ ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कर्क	श्ले १	२४॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिंह	म १	१९॥ ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिंह	पूफा १	६॥ १३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिंह	उफा १	१२॥ १४२	१९ १२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या	उफा ।।।	२४॥ १२+	१९ १२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या	ह १	२८ ०	२० ०८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या	चि १	२८ ३	१९ ३४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

विंशतिचतुर्योग – रोहिण्यार्द्रामघान्तानां पृथ्यश्ववणोप्ययम , बहिर्बृहस्पत्यवमतेषा नाडीदोषो न विद्यते न वीने [illegible] एकराशीश्वरे यदि , नाडीदोषो न वक्तव्य सर्वथा यत्नतो बुधैः ॥

मेलापक सारिणी

	वर	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
कन्या	भांश	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।	चि ।।	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
तुला	चि ।।	२२	२० २२	२८	२२ ५+	१८॥ ११	२०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	१९ ३	२५	२४॥	२०॥ १२	१७॥ १२	१०॥ १२६	२० ४.	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२३॥ ४-	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२२ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १५१२	१२ ६
	स्वा १	२० ३+	२८	१२ ३	१२ ३६	१४ ३६	२४ -६	२६ ५+	२६ १५	२० १५	२७॥	२४	२३ ३	१२॥ ३	२४	२७॥	२५॥ ४	२७॥ ४+	२१ ६.	२८	२८ ३	२० ०३	६ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१२ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	१२ ३६
	वि ।।।	२२	२२ २	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -२	१८॥ ५+	२२ १५	२० ५+	२०॥	२०॥	२७ ३	१७॥ ३	१८॥ २	१७॥ १२	१४॥ १६२	१८॥ ६.	२६ ४.	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२६॥ ४	२७	२१ ०१	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि ।	१६॥ ५+	१८॥ १६	१४॥ ३५	१९॥ ३	१३॥ १३	२१॥	१२ ६	१४॥ १६	१३॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२२ ६	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४+	१५॥ ४२	७॥ १३४	११ १३	१२ ३	२५	२८	२५॥	१९॥ १	१२ १५	१८ १५२	१४॥ ३५
	अनु १	२३॥ ४	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१९॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	६॥ ३६	२०॥ ६	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	३० ३५	२६ ५+
	ज्ये १	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२९॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	१९॥ ५३	१९ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १२	११ १३	१२ ३	२४	२४ ४	१९॥ ४	१९ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२१०	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० +५
धनु	मू १	१९॥ ३५	१९ १५	२५ ५+	१९॥ ६	२२॥ १६	२२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९॥ १५३	१३ ३१	१२ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१३॥ +२४	१३ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	२१॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१९॥ १३	२४॥ १	२६
	पूषा १	२५॥ +५	२७॥ ३५	१९॥ -१२	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१९ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा ।	२४ ५+	२५॥ ५+	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२ ५+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	११ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३
मकर	उषा ।।।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -९	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१४	१६॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र १	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९॥ -६	२२॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५+	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२९॥	३३॥ ३
	ध ।।	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२३	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	११ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४२	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२२॥ ४२
कुंभ	ध ।।	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५.	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	२१ ३	२५	२२॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १६	१८ +४	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १६	६॥ १३४	१३॥ ४२
	शत १	२४॥ ३	२७॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६॥	२८ ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१९ ६	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	१०॥ १३६	१०॥ २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२३॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३.	२९ ०१३	८ १३४०	१४॥ १४	१५॥ ४
	पूभा ।।।	१७॥ ३	२४॥ ५+	१९॥ -१	२१ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	२२ १३	१५ १३	२१॥	२९॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२० -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९॥ ४२
मीन	पूभा ।	१४॥ ३४	२१॥ ४२	१६॥ -१४	१९ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२३॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१३॥ १६	१९ -१५	२५ +५	९॥ १३५	१२ १३	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	१८॥ १	१९॥ १२	७ १३४	१५ ३४	२८ १	३३ ०	३०॥ +२
	उभा १	२३॥ ४+	१५॥ ३४	८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	३६ ५	११ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२	२ १३६	१९ ६	११॥ १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२२॥ ३	२२॥	२२॥	२२॥	१४॥ १३	५॥ १३४	२४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३६	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	१९.	१२ ६	१० ३६	४ ३६	२०॥ ३५	२६ ५+	२२ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२३॥ १	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२९॥ +२	३३	२८ १

बिना पैक के विवाह —[illegible] व दोषविधि । [illegible]

योनि-नाड्यादि-ज्ञान चक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटी के म. घ.
.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	१	पू फा.	पू. फा	५०
.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
ा.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
ा.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारुण	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
न.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
ष्य	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	१	ज्ये.	ज्ये.	२०
श्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्षणदारुण	चक्र	५	ध.	अनु.	१२
.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
त.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
ा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
ा.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
नु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारुण	कुंडल	१	पुष्य.	पु.	१४
.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारुण	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ.	आ.	२४
षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
त.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.	१०
	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
ा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा.	१६
ा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा	१०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
ड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनि, नाड़ी, गण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं।

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्त शास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ी दोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रखा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिह्न (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं हैं वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिलें तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्—षडष्टके ताम्र सुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्मम- धांकके। रौप्यं कांस्यमथैक नाड़ि-युजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत्।

अपवाद—न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धो नव पञ्चमे वा, राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, ग्रहमैत्री और योनि मिलती हो तो इसका भी दोष नहीं।

भूम्युपवेशन मुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल तीनों उत्तरा रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के कमनी का द्विसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

मंत्र मन्त्र—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुःप्रमाणं कलं निक्षिपस्व हरिप्रिये। इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखे, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११वें में कन्या का भद्रादि-दोष रहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पू. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी किसी के मत से जन्म-नक्षत्र अनु. शत-तारका और स्वाती अशुभ हैं॥

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६वें दिन, ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुभ हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हानिया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तर ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे, ५ वें, ७ वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—'यथा-कुलवसंतः' इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल—शनि, रवि, भौमवार, हजामत से नौवें दिन, सन्ध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३ तिथियां, संक्रांति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन ... के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण ... की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी किसी आचार्य का है, कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी जैसे नट, भांड आदि। किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह०, अश्वि, पुष्य, अभि श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा. चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में वृष, कर्क, तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म., आर्द्रा, पुन, हस्त, चि., स्वा., श्र. ध., शत., अश्विनी, मू. तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. में तीनों पूर्वा, भ. कृ. वि. आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीन पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र बृ., श. ये वार, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मृ., मू. रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोग बाण को छोड़कर मध्याह्न के पहले शुभ है। गु. ग. चं. और लग्नेश ६।८ वें स्थान में, चं. गु. १२वें स्थान में और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्ण-चंद्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है।

योनि-नाड्यादि-ज्ञान चक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटी के म. घ.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू फा.	पू. फा	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पुष्य	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूँगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य.	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	कृ.	कृ.	१०
ध	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पू.भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा.	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा	३०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनि, नाड़ी, गण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं।

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्त शास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ी दोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहाँ कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रखा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिह्न (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं हैं वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिलें तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्—दद्यर्के ताम्रं सुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्मक-षीकूके। रौप्यं कांस्यमथैक नाड़ि-भुजि धौस्वर्णादि दत्वोद्वहेत्।

अपवाद—न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धो नव पञ्चमे वा, राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है. ग्रहमैत्री और योनि मिलती हो तो इसका भी डर नहीं

भूम्युपवेशन मुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के कधनी का डि्सूत्र बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

मंत्र मन्त्र—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुःप्रमाणं कलं निक्षिपस्व हरिप्रिये। इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११वें में कन्या का भद्रादि-दोष रहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पू. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मष वश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी किसी के मत से जन्म-नक्षत्र अनु. शत-तारका और स्वाती अशुभ हैं॥

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६वें दिन, ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि.पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुभ हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हानिया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तर ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे, ५ वें, ७ वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—'यथा-कुलधर्मतः' इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल—शनि, रवि, भौमवार, हजामत से नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३ तिथियां, संक्रांति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगा के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी किसी आचार्य का है, कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी जैसे नट, भांड आदि किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह०, अश्वि, पुष्य, अभि श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा. चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में वृष, कर्क, तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म., आर्द्रा, पुन, हस्त, चि., स्वा., श्र. ध., शत., अश्विनी, मू. तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. में तीनों पूर्वा, भ. कृ. वि. आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीन पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र बृ., श. ये वार, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस)और जिसमें दान हो, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (गर्भाज्जिनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र.,ध., मू., मृ. रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है सू. चं. बृ. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोग बाण को छोड़कर मध्याह्न के पहले शुभ है। सू. गु. चं. और लग्नेश ६।८ वें स्थान में, चं. शु. १२वें स्थान में और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्ण-चंद्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है।

योनि-नाड्यादि-ज्ञान चक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटी के म. घ्र.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू फा.	पू. फा	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पुष्य	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य.	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
ध	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पू.भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा.	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा	३०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनि, नाड़ी, गण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं।

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्त शास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ी दोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रखा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिह्न (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं हैं वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिलें तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषशमनम्—दद्यात् ताम्रं सुवर्णं मष्टरिपुके गोयुग्मम् [illegible] । रौप्यं कांस्यमथैक नाड़िभुजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत्।

अपवाद—न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धो नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, ग्रहमैत्री और योनि मिलती हो तो इसका भी दोष नहीं

भूम्युपवेशन मुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल तीनों उत्तरा: रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के कधनी का ब्रिसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

मंत्र मन्त्र—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुःप्रमाणं कलं निक्षिपस्व हरिप्रिये! इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखे, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११वें में कन्या का भद्रादि-दोष रहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पू. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों. दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी किसी के मत से जन्म-नक्षत्र अनु. शत-तारका और स्वाती अशुभ हैं॥

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६वें दिन, ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि.पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुभ हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हानिया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तर ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे, ५ वें, ७ वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—'यथा-कुलधर्मतः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल—शनि, रवि, भौमवार, हजामत से नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३ तिथियां, संक्रांति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन [illegible] के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और [illegible] की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी किसी आचार्य का [illegible] है, कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी जैसे नट, भांड आदि किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह०, अश्वि, पुष्य, अभि श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा. चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष, कर्क, तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म., आर्द्रा, पुन, हस्त, चि., स्वा., श्र. ध., शत., अश्विनी, मू. तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. में तीनों पूर्वा, भ. कृ. वि. आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सौन पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र; सूय, बुध, चन्द्र बृ., श. ये बार, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (गर्भाज्जिनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र.,ध., मू., मृ. रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोग बाण को छोड़कर मध्याह्न के पहले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८ वें स्थान में, चं. शु. १२वें स्थान में और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्ण-चंद्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है।

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो, वह शास्त्र-सम्मत शुभ-मुहूर्त में करे, तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ-तिथियां—१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। शुभ-नक्षत्र—तीनों उत्तरा, मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श. । शुभ-लग्न—जब लग्न और ४. ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ-ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से समरात्रि हो।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिये मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभ-काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन। सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२ लग्नों क अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १, लग्नों की आधी घड़ी, ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधन तारा, जन्म नक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा-नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वधृतियोग, माता,पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघ योग का आधा भाग, उत्पात से हत-नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमय का लग्नेश	चंद्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चंद्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु.ह.मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में जब लग्न से १,४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३. ६, ११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमन्त-संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छः या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है।

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार— बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तन-पान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्ताभा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. मृ. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती, तीनों उत्तरा, रा. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. भू. ह. मृ. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चत्र, पौष या अधिक मास में मास पूरा होने पर भी जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकर्म का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को, मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा, रो. ह. अश्विनी पुष्य, अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हो तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म-दिन से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३०, इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१०. इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४।५।६।७।९। १०।११वें शुभ ग्रह हों ३।६।११वें पापग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमणमुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुन. ह. मू. पु. अनु. श्र. र. ध. नक्षत्रों में भौम शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करे। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

सर्वशुभ कार्यों के लिए वर्जित काल—जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु शुक्र का अस्त तथा इनका बाल-वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्ध याम, महापात, विष्कम्भ और वज्रयोग के आदि की ३ घड़ियां, परिघयोग का आधा भाग, शूल योग के आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदि की ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां, ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्य-रात्रि से पहले और पीछे के दस दस पल का काल, पापग्रह का नवांशक ग्रहण के पहले के ३ दिन, उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन ३ दिन या ५ मुहूर्त) वर्जित हैं, स्वराशि से ४।८।१२वां चन्द्रमा तथा पापग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश भी वर्जित हैं।

सब शुभ कार्यों के लिए साधारणतः शुभ मुहूर्त—अपने जन्म लग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११वीं राशि लग्न में हो, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हो, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभ कार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है।

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म—बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान—इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुण्डनसंस्कार, देवतास्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्वदेवतीर्थदर्शन संन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन चातुर्मास्य याग, कर्णवेध, विद्यारम्भ, इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिए॥ सीमन्तजात-कादीनि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः॥

गुरु शुक्र का बाल्यवृद्धत्व—शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल होता है। इसी प्रकार पश्चिमास्त में प्रथम ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का होता है। एक आचार्य का मत है, कि-आवश्यक कर्म में गुरु-शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन और वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथम युवति-संगारामकूपा-दिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय॥

द्वादशचन्द्रप्रशंसा—गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना चाहिए ?

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप-दर्शने	सर्वसत्कार्ये	संग्रामे	विद्याभ्यासे	विवाहे चोत्सवे	यात्रायां	लोहपत्रे दीक्षायां	पापकर्मणि	क्रूर-कृत्ये	एषु कृत्येषु

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः

वध बंध विषाग्न्यस्त्र च्छेदनो-च्चाटनादि यत्। तुरंगमहि-षोष्ट्रादि कर्म विष्ट्यां तु सिद्ध्यति॥ न कुर्यान्मंगलं विष्ट्यां जीवितार्थी कदा-चन। कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्र सर्वतो नाशमाप्नुयात्॥ आवश्यके परिहारः— दिवा-परार्द्धजा विष्टिःपूर्वार्द्धोत्था यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषि-तम्॥

भद्राया मुखपुच्छ...

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथ्यादि...
प.	आ.	उ.	न.	ई.	द.	वा.	पू.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघटी५कृष्णे शुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्ले शुभम्

गुर्वादित्यविचारः—एकर्क्षे गुर्वर्क्षे व्रतबन्धोद्वाहकान्यः सर्वे। न शुभफलदाश्च गदिता अस्तमिते ज्येजनयंदः प्रोक्तः, (भृगुः)॥ एकराशौ गुरौ सूर्ये न विवाहः कदाचन। ऋक्षान्तरे गुरौ सूर्ये तदा दोषो विनश्यति॥ सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन। मेषस्थिते दिवा-नाथे सिंहज्ये च शुभप्रदः॥ आवश्यके परिहारः—सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टइति मुहूर्तचिन्तामणौ॥ नीचराशी-मकरे च गतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकग-तस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता॥ यात्रोद्वाहौ प्रतिष्ठाञ्च गृहचूड़ाव्रतादिकम्। वर्जयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे॥ अपवादः—अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेव च। नीचस्थितेऽपि वागीशे माससेकं विवर्जयेत्॥ अन्यच्च-वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे)।

ताराबलविचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वंतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलं। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु॥ ताराऽपवादः—पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरेः चरमोऽशुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परम मित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

(पृष्ठ ११२ का शेष) यदि पाँचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उनमें से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल, दृष्टि, अधिकार यह तीनों समान हों तो मन्थेश ही वर्षेश होगा। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा॥ फल—वर्षेश ६।८।१२ वें अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

ग्रहाणां दृष्ट्यादि चक्रम्

	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
ग्रहाणां एकपाददृष्टिः	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०
द्विपाददृष्टिः	५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९
त्रिपाददृष्टिः	४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८
सम्पूर्णदृष्टिः	७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७
ग्रहाणां वर्षाणि	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२
नेष्टग्रहस्य वर्षे दानोपाय साधनानि	हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	ध्वजा दान	ध्वजा दान
विंशोत्तरीनक्षत्राणि	कृ.उ.फा. उ.षा.	रो.ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आश्लेषा ज्ये. रे.	पुन. वि. पू. भा.	भ.पू.फा. पू. षा.	पुष्य.अ. उ.भा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. मू. अश्वि.
विंशोत्तरीवर्षाणि	६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७
मित्र-ग्रहाः	चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र.रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.
समग्रहाः	बु.	मं. श. बृ. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	रा.श.	मं. गु.	गु.	गु.	०
शत्रुग्रहाः	श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु.शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०
उच्चराशयः परमोच्चांशाः	मेष १०	वृष ३	मकर १८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धन १५
नीचराशयः नीचांशाः	तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क १८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५
स्वगृहाणि	सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. क.	ध.मी.	वृष.तु.	म. कुं.	कन्या	मीन
मूलत्रिकोण	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद
पुं. स्त्री. नपुंसक	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष
आकार	चतुरस्र	व. स्थूल	चतुष्को	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
समय	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य
धातु	सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद
सौम्यादि	उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप
गुण	सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम
चरादि	स्थिर.	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी
रस	तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय
भूमि	पशु	जलभू..	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर
पित्तादि	पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु
अवस्था	वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध
रंग	[illegible]	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र
धात्वादि	[illegible]	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
स्थान	[illegible]	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर

वर्ष प्रवेश सारणी

गत वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
वा.	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५
घ.	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९
प.	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गत वर्ष	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४
वा.	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४
घ.	१४	३०	४५	१	१६	१२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८
प.	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१
वि.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गत वर्ष	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१
वा.	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३
घ.	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७
प.	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

अथ त्रिपताकीचक्रम्–तिरछी और खड़ी [illegible] खींचकरके उनके कोण परस्पर मिलाकर त्रिपताका[illegible] करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का [illegible] रखकर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो. अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है, कि गत वर्षों में एक युक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्मराशि से चन्द्रमा होता है, एक युक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्मस्थान से होते हैं, परंतु राहु केतु को विपरीत जानना। फल—यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से संताप, शनैश्चर-भौम के वेध से शरीर पीड़ा होती है। शुभ ग्रहों के वेध से जय सौख्य लाभ होता है, शुभाशुभ ग्रहों का वेध देखकर वर्ष का फल कहे ॥

सूचना-वेध सिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्ष मान से ८॥ पल कम है। अतः सूक्ष्म नवीन मानसे वर्ष प्रवेश कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८॥से गुणा करके पलात्मक फल को सारिणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म-वर्ष-मानानुसारी इष्ट होगा।

वर्षफल-साधनप्रकार–(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करनाहो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष जाने। स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्) इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे जो सारिणी में वारादि अंक वे उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्षप्रवेश होता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्टसूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिलें उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार पीछे लिखी स्वदेशीय लग्नसारिणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्मसमय के स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जबकि जन्म और वर्षप्रवेश का सामयिक गणित एक ही करण ग्रंथ से किया हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थानकी स्वदेशीय सारिणीसे वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्ष पत्र अशुद्ध होगा। मुन्थानयनप्रकारः—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना, यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है

त्रिराशिपति चक्रम्

मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राशयः		
सू	शु	श	शु	बृ	चं	बु	मं	श	मं	बृ	चं	दि.	ल.	प.
बृ	चं	बु	मं	स	शु	श	शु	श	मं	बृ	चं	रा.	ल.	प.

अथ हर्षबलम्

स्थानबल—सूर्य लग्न से ९, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु. ५, श. १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। स्वोच्चबल–सू. १।५, चं० २।४। मं० १।८।१०, बु० ३।६, गु० ९।१२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष स्त्री बल–स्त्रीग्रह (चं०, बु० शु० श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू० मं० बृ०) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल–दिन के वर्षेष्ठ में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं। मित्रशत्रुज्ञान—जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रहसे ३।५।९।११ इन स्थानोंपर जो ग्रह हों उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वें तो सम, १।४।७।१०वें हों तो शत्रु

वर्षेशनिर्णये दृष्टि ज्ञानम्–९।५ वें ४५ कला, ३रे ४० कला, ११ वें १० कला, ४।१० वें १५, और १।७ वें पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती है

अथ वर्षेश निर्णय–जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश। ४, समयेश ५, दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राका स्वामी और रात्रिमें हो तो चन्द्र राशिका स्वामी इन पांचों अधिकारियोंमें से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा. (शेष पृष्ठ ११३पर)

मुद्दा दशा चक्र विधि

जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के ९ घटा दे, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़े, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है ॥

मुद्दादशा क्रमः

शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	गुरु	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा

मं.	पिं.	धान्या	भ्र.	उ.	सि.	सं.
४	७१	६	१२	२	३	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशाज्ञान-चक्रम्

सूर्यदशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७				राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९				बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशाः वर्ष २०			
कृ.उ.फा.उ.षा				रो. ह. श्रवण.				मृ. चि. ध.				आ. स्वा. श.				पुन. वि. पू. भा				पु. ऽनु उ. भा.				श्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अश्वि.				पू.फा. पूषा. भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्र	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	वृ.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	वृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	वृ.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा.	०	१०	२४	वृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	र.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
वृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	र.	०	९	१८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	वृ.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	र.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	वृ.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	वृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	वृ.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशयोर्ज्ञानार्थं चक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४			भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			संकटा व. ८			दशा तथा वर्ष-
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल			बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेश ग्रहाः
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि. श.			आश्ले. ऽनु पूभा			म. म.ज्ये. उभा			कृ. पू.फा.मू.रे.			रो उ.फा.पू.षा.			मृ. ह. उषा			जन्म नक्षत्र
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०	
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०	
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

अन्तर्दशा मासादि
शुभदशा—मं. धा. भ. सि.
नेष्टदशा—पि. भ्रा. उ. सं.

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग के पलों से भाग देवें। लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्धांक घटी, फिर शेष को ६०से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में घटाने से भोग्य दशा होगी।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थग्रहफलबोधचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	पृ मी:	धनलाभः	हानिः	कष्टम्	शत्रुनाशः	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभः	हर्षः	शत्रुनाशः	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदयः	विजयः	धनला.	व्ययः
भौमः	व्रणः	धननाशः	जय.	व्यसनं	दुर्गतिः	शत्रुनाशः	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदय।	राज्यला.	धनला.	विरो.
बुधः	सौख्यम्	धनलाभः	सुखम्	द्रव्यलाभः	पुत्रलाभ।	कलहः	धनलाभः	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विघ्नः
गुरुः	सुखम्	धनलाभः	जयः	वाहू. ला.	पुत्रप्रा	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	राज्यला.	धनला.	शोक।
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुखला.	धनलाभ	शत्रुभीतिः	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोद.	मानला.	क्षमला	व्यय।
शनिः	[illegible]	पीड़ा	धनलाभः	दुःखम्	पुत्रभी.	जयः	स्त्रीकष्टम्	रोगः	भाग्यहा.	धनहाः	धनला.	चिन्ता
राहुः	शिरोर्तिः	राजभी.	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश।	शत्रुनाशः	रोगभीः	कष्टम्	धर्महा.	विजयः	सुलाभः	व्याधिः
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभः	शोक।
[illegible]	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सम्प्राप्तिः	कष्टम्	व्यसनम्	दुःखम्	भाग्योद	राज्यप्रा.	लाभः	कष्टम्

हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध नगरों का सूर्योदयास्त काल (भा. स्टै. टा.)

महीना तारीख	शिमला, सोलन सू. उ. घं. मि.	शिमला, सोलन सू. अ. घं. मि.	रामपुर सू. उ. घं. मि.	रामपुर सू. अ. घं. मि.	मण्डी, कुल्लू सुन्दर नगर सू. उ. घं. मि.	मण्डी, कुल्लू सुन्दर नगर सू. अ. घं. मि.	चम्बा सू. उ. घं. मि.	चम्बा सू. अ. घं. मि.	धर्मशाला काँगड़ा सू. उ. घं. मि.	धर्मशाला काँगड़ा सू. अ. घं. मि.	बिलासपुर सू. उ. घं. मि.	बिलासपुर सू. अ. घं. मि.
जन. १	७।१९	५।३०	७।१८	५।२७	७।२२	५।२९	७।२७	५।३१	७।२६	५।३०	७।२२	५।३१
७	७।२०	५।३५	७।१९	५।३२	७।२३	५।३४	७।२८	५।३५	७।२७	५।३४	७।२३	५।३६
१३	७।२०	५।४०	७।१९	५।३७	७।२२	५।३९	७।२७	५।४०	७।२६	५।३९	७।२३	५।४१
१९	७।१९	५।४५	७।१८	५।४२	७।२१	५।४५	७।२६	५।४६	७।२५	५।४५	७।२२	५।४६
२५	७।१७	५।५०	७।१६	५।४७	७।१९	५।५०	७।२४	५।५१	७।२३	५।५०	७।२०	५।५१
३१	७।१४	५।५६	७।१२	५।५३	७।१५	५।५६	७।२१	५।५७	७।२०	५।५६	७।१७	५।५७
फ़र. ६	७।१०	६। १	७। ८	५।५८	७।११	६। १	७।१६	६। ३	७।१५	६। २	७।१२	६। २
१२	७। ५	६। ६	७। ३	६। ३	७। ६	६। ६	७।११	६। ९	७।१०	६। ८	७। ७	६। ७
१८	७। ०	६।११	६।५८	६। ८	७। १	६।११	७। ६	६।१४	७। ५	६।१३	७। २	६।१२
२४	६।५४	६।१६	६।५२	६।१३	६।५५	६।१६	६।५९	६।१९	६।५८	६।१८	६।५६	६।१७
मार्च २	६।४७	६।२०	६।४५	६।१७	६।४८	६।२०	६।५२	६।२३	६।५१	६।२२	६।४९	६।२१
८	६।४०	६।२४	६।३८	६।२१	६।४१	६।२४	६।४५	६।२८	६।४४	६।२७	६।४२	६।२५
१४	६।३३	६।२८	६।३१	६।२६	६।३४	६।२९	६।३७	६।३२	६।३६	६।३१	६।३५	६।३०
२०	६।२५	६।३२	६।२३	६।३०	६।२६	६।३३	६।२९	६।३६	६।२८	६।३५	६।२७	६।३४
२६	६।१८	६।३६	६।१५	६।३४	६।१८	६।३७	६।२२	६।४१	६।२१	६।४०	६।१९	६।३८
अप्रै १	६।१०	६।४०	६। ७	६।३८	६।१०	६।४१	६।१४	६।४६	६।१३	६।४०	६।११	६।४२
७	६। ३	६।४४	६। ०	६।४२	६। ३	६।४५	६। ६	६।५०	६। ५	६।४९	६। ४	६।४६
१३	५।५६	६।४८	५।५३	६।४६	५।५६	६।४९	५।५९	६।५४	५।५८	६।५३	५।५७	६।५०
१९	५।४९	६।५२	५।४६	६।५०	५।४९	६।५३	५।५२	६।५८	५।५१	६।५७	५।५०	६।५४
२५	५।४३	६।५६	५।४०	६।५४	५।४३	६।५७	५।४५	७। २	५।४४	७।०	५।४४	६।५८
मई १	५।३७	७। ०	५।३५	६।५८	५।३८	७। १	५।३९	७। ६	५।३८	७। ४	५।३९	७। २
७	५।३२	७। ४	५।२९	७। ३	५।३२	७। ६	५।३३	७।११	५।३२	७।०९	५।३३	७। ७
१३	५।२७	७। ८	५।२४	७। ७	५।२७	७।१०	५।२८	७।१५	५।२७	७।१४	५।२८	७।११
१९	५।२३	७।१२	५।२०	७।११	५।२३	७।१४	५।२४	७।१९	५।२३	७।१८	५।२४	७।१५
२५	५।२०	७।१६	५।१७	७।१५	५।२०	७।१८	५।२१	७।२३	५।२०	७।२२	५।२१	७।१९
३१	५।१८	७।१९	५।१५	७।१८	५।१८	७।२१	५।१९	७।२६	५।१८	७।२५	५।१९	७।२२
जून ६	५।१७	७।२२	५।१४	७।२१	५।१७	७।२५	५।१८	७।३०	५।१७	७।२९	५।१८	७।२५
१२	५।१७	७।२५	५।१४	७।२४	५।१६	७।२७	५।१७	७।३२	५।१६	७।३२	५।१८	७।२८
१८	५।१७	७।२७	५।१४	७।२६	५।१७	७।२९	५।१८	७।३५	५।१७	७।३४	५।१८	७।३०
२४	५।१८	७।२८	५।१५	७।२७	५।१८	७।३१	५।१९	७।३६	५।१८	७।३५	५।१९	७।३१
३०	५।२०	७।२९	५।१७	७।२८	५।२०	७।३१	५।२१	७।३७	५।२०	७।३६	५।२१	७।३२
जुला. ६	५।२३	७।२८	५।२०	७।२७	५।२३	७।३०	५।२४	७।३६	५।२३	७।३५	५।२४	७।३१
१२	५।२६	७।२७	५।२३	७।२६	५।२६	७।२९	५।२७	७।३५	५।२६	७।३४	५।२७	७।३०
१८	५।२९	७।२५	५।२६	७।२४	५।२९	७।२७	५।३०	७।३३	५।२९	७।३२	५।३०	७।२८
२४	५।३२	७।२२	५।३०	७।२१	५।३३	७।२४	५।३४	७।३०	५।३४	७।२९	५।३४	७।२५
३०	५।३६	७।१८	५।३३	७।१७	५।३६	७।२०	५।३८	७।२६	५।३७	७।२५	५।३७	७।२१
अग. ५	५।४०	७।१३	५।३७	७।१२	५।४०	७।१५	५।४२	७।२१	५।४१	७।२०	५।४१	७।१६
११	५।४४	७। ८	५।४१	७। ६	५।४४	७। ९	५।४६	७।१४	५।४५	७।१४	५।४५	७।१०
१७	५।४८	७। २	५।४५	७। ०	५।४८	७। ३	५।५०	७। ८	५।४९	७। ७	५।४९	७। ४
२३	५।५१	६।५५	५।४९	६।५३	५।५२	६।५७	५।५४	७।१	५।५३	७। ०	५।५३	६।५७
२९	५।५४	६।४८	५।५२	६।४६	५।५५	६।५०	५।५८	६।५४	५।५७	६।५३	५।५६	६।५०
सित. ४	५।५८	६।४१	५।५५	६।३९	५।५९	६।४२	६। २	६।४६	६। १	६।४५	६। ०	६।४३
१०	६। १	६।३३	६। ०	६।३१	६। ३	६।३४	६। ६	६।३८	६। ५	६।३७	६। ४	६।३५
१६	६। ५	६।२६	६। ४	६।२४	६। ७	६।२७	६। ९	६।३०	६। ८	६।२९	६। ६	६।२८
२२	६। ८	६।१८	६। ७	६।१६	६।१०	६।१९	६।१३	६।२२	६।१२	६।२१	६।११	६।२०
२८	६।१२	६।१०	६।११	६। ८	६।१४	६।११	६।१७	६।१४	६।१६	६।१३	६।१५	६।१२
अक्तू. ४	६।१६	६। ३	६।१४	६। १	६।१७	६। ४	६।२१	६। ७	६।२०	६। ६	६।१८	६। ५
१०	६।२०	५।५६	६।१७	५।५३	६।२०	५।५६	६।२५	५।५९	६।२४	५।५८	६।२२	५।५७
१६	६।२४	५।४९	६।२१	५।४६	६।२४	५।४९	६।२९	५।५२	६।२८	५।५१	६।२५	५।५०
२२	६।२९	५।४२	६।२६	५।३९	६।२९	५।४२	६।३४	५।४५	६।३३	५।४४	६।३०	५।४३
२८	६।३३	५।३६	६।३०	५।३३	६।३३	५।३६	६।३९	५।३९	६।३८	५।३८	६।३४	५।३७
नव. ३	६।३८	५।३१	६।३५	५।२८	६।३८	५।३१	६।४४	५।३३	६।४३	५।३२	६।३९	५।३२
९	६।४४	५।२७	६।४०	५।२४	६।४३	५।२७	६।४९	५।२८	६।४८	५।२७	६।४४	५।२८
१५	६।४८	५।२३	६।४६	५।२०	६।४९	५।२३	६।५५	५।२४	६।५४	५।२३	६।५०	५।२४
२१	६।५४	५।२०	६।५१	५।१८	६।५४	५।२१	७। ०	५।२२	६।५९	५।२१	६।५५	५।२२
२७	६।५८	५।१९	६।५६	५।१६	६।५९	५।१९	७। ५	५।२०	७। ४	५।१९	७। ०	५।२०
दिस. ३	७। ३	५।१८	७। १	५।१५	७। ५	५।१८	७।१०	५।१९	७। ९	५।१८	७। ५	५।१९
९	७। ८	५।१८	७। ६	५।१५	७।१०	५।१९	७।१५	५।२०	७।१४	५।१९	७।१०	५।१९
१५	७।१२	५।१९	७।१०	५।१७	७।१४	५।२०	७।१९	५।२१	७।१७	५।२०	७।१४	५।२१
२१	७।१५	५।२२	७।१३	५।१९	७।१७	५।२२	७।२२	५।२३	७।२०	५।२२	७।१७	५।२३
२७	७।१७	५।२५	७।१६	५।२२	७।२०	५।२५	७।२५	५।२६	७।२३	५।२५	७।२०	५।२६
३१	७।१९	५।२८	७।१८	५।२५	७।२२	५।२८	७।२७	५।२९	७।२५	५।२९	७।२२	५।३०

हिमाचल-प्रदेश के अन्य नगरों का सूर्योदयास्त काल—शिमला के सूर्योदयास्त काल में १½ मिनट घटाने से कोटखाई का और १½ मिनट जोड़ने से कालका का. धर्मशाला के सूर्योदयास्त में ३ मि. घटाने से बनाखी का और १ मिनट घटाने से पालमपुर का, मण्डी के सूर्योदयास्त में २ मि. जोड़ने से ऊना का. १ मि. जोड़ने से जोगिन्दर नगर का और २ मि. जोड़ने से हमीरपुर का तथा चम्बा के सूर्योदयास्त में १ मि. जोड़ने से डलहौजी का सूर्योदय एवं सूर्यास्त-काल बन जाता है। तिथ्यादि पंचांग के साथ दिए गए चण्डीगढ़ के सूर्योदयास्त काल में से २ मि. घटाने से नाहन का सूर्योदयास्त काल प्राप्त होगा।

सूचना—ऊपर कोष्ठक में दिए गए सूर्योदयास्त-काल किरण-वक्री-भवन संस्कार से संस्कृत हैं, और ये सूर्य-बिम्ब के ऊर्ध्व बिन्दु (शीर्ष) के उदयास्त बतलाते हैं, अतः लग्न-साधन के लिए इस कोष्ठक से प्राप्त सूर्योदय में ४ मिनट जोड़कर सूर्य-केन्द्रोदयात् इष्ट बनाना चाहिए। तिथ्यादि के साथ दिए गए ... के सूर्योदय में ४ मि. जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों में सूर्य के उदय एवं अस्त (भा. स्टै. टा.)

तारीख	कलकत्ता		गोहाटी		वाराणसी		मद्रास		नागपुर		दिल्ली		जम्मू		जयपुर		बम्बई	
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जून ३०	४।५६	१८।२३	४।३६	१८।१७	५।१२	१८।५१	५।४७	१८।३८	५।३७	१८।५८	५।२९	१९।२१	५।२९	१९।३८	५।३६	१९।२४	६। ६	१९।१८
जुला. ५	४।५८	१८।२४	४।३७	१८।१७	५।१४	१८।५१	५।४९	१८।३८	५।३८	१८।५८	५।३०	१९।२१	५।३१	१९।३८	५।३८	१९।२४	६। ८	१९।१८
१०	५। ०	१८।२३	४।३९	१८।१७	५।१६	१८।५०	५.५०	१८।३८	५।४०	१८।५८	५।३३	१९।२०	५।३३	१९।३७	५।४०	१९।२३	६। ९	१९।१८
१५	५। २	१८।२३	४।४२	१८।१६	५।१८	१८।४९	५।५१	१८।३८	५।४२	१८।५७	५।३५	१९।१९	५।३५	१९।३६	५।४३	१९।२२	६।११	१९।१८
२०	५। ४	१८।२१	४।४४	१८।१४	५।२१	१८।४८	५।५३	१८।३८	५।४४	१८।५६	५।३८	१९।१७	५।३८	१९।३४	५।४६	१९।२०	६।१३	१९।१७
२५	५। ६	१८।२०	४।४७	१८।१२	५।२३	१८।४६	५।५४	१८।३७	५।४६	१८।५४	५।४०	१९।१५	५।४१	१९।३१	५।४८	१९।१८	६।१५	१९।१६
३०	५। ८	१८।१७	४।४९	१८।१०	५।२५	१८।४३	५।५५	१८।३६	५।४८	१८।५२	५।४३	१९।१२	५।४५	१९।२८	५।५१	१९।१५	६।१६	१९।१४
अग. ४	५।१०	१८।१५	४।५१	१८। ७	५।२८	१८।४०	५।५६	१८।३४	५।५०	१८।५०	५।४६	१९। ८	५।४८	१९।२४	५।५४	१९।१२	६।१८	१९।१२
९	५।१२	१८।१२	४।५४	१८। ३	५।३०	१८।३७	५।५७	१८।३२	५।५१	१८।४७	५।४९	१९। ५	५।५१	१९।१९	५।५६	१९। ८	६।२०	१९। ९
१४	५।१४	१८। ८	४।५६	१७।५९	५।३२	१८।३३	५।५८	१८।३०	५।५३	१८।४४	५।५१	१९। ०	५।५४	१९।१४	५।५९	१९। ४	६।२१	१९। ६
१९	५।१६	१८। ४	४।५९	१७।५५	५।३४	१८।२९	५।५८	१८।२७	५।५५	१८।४०	५।५४	१८।५६	५।५८	१९। ८	६। १	१८।५९	६।२२	१९। ३
२४	५।१८	१८। ०	५। १	१७।५०	५।३७	१८।२४	५।५९	१८।२४	५।५६	१८।३६	५।५७	१८।५१	६। १	१९। ३	६। ३	१८।५५	६।२४	१८।५९
२९	५।१९	१७।५६	५। ३	१७।४५	५।३९	१८।१९	५।५९	१८।२१	५।५८	१८।३२	५।५९	१८।४५	६। ४	१८।५८	६। ५	१८।५०	६।२५	१८।५५
सितं. ३	५।२१	१७।५१	५। ५	१७।४०	५।४१	१८।१४	५।५९	१८।१७	५।५९	१८।२७	६। २	१८।४०	६। ७	१८।५२	६। ७	१८।४४	६।२५	१८।५१
८	५।२२	१७।४६	५। ७	१७।३५	५।४२	१८। ९	५।५९	१८।१५	६। ०	१८।२३	६। ४	१८।३४	६।१०	१८।४५	६।१०	१८।३९	६।२६	१८।४७
१३	५।२४	१७।४२	५। ९	१७।२९	५।४४	१८। ४	५।५९	१८।११	६। १	१८।१८	६। ६	१८।२८	६।१३	१८।३९	६।१२	१८।३३	६।२७	१८।४३
१८	५।२५	१७।३६	५।११	१७।२४	५।४६	१७।५८	५।५९	१८। ७	६। ३	१८।१३	६। ९	१८।२२	६।१६	१८।३२	६।१५	१८।२८	६।२८	१८।३८
२३	५।२७	१७।३१	५।१३	१७।१८	५।४८	१७।५३	५।५९	१८। ४	६। ४	१८। ९	६।११	१८।१६	६।१९	१८।२६	६।१६	१८।२२	६।२९	१८।३४
२८	५।२८	१७।२७	५।१५	१७।१३	५।५०	१७।४८	६। ०	१८। ०	६। ५	१८। ४	६।१४	१८।१०	६।२२	१८।१९	६।१८	१८।१६	६।३०	१८।२९
अक्तू. ३	५।३०	१७।२२	५।१८	१७। ७	५।५२	१७।४२	६। ०	१७।५७	६। ७	१७।५९	६।१६	१८। ४	६।२६	१८।१३	६।२१	१८।११	६।३१	१८।२५
८	५।३२	१७।१७	५।२०	१७। २	५।५४	१७।३७	६। ०	१७।५४	६। ८	१७।५५	६।१९	१७।५९	६।२९	१८। ७	६।२४	१८। ६	६।३२	१८।२१
१३	५।३३	१७।१२	५।२२	१६।५७	५।५७	१७।३४	६। ०	१७।५०	६।१०	१७।५०	६।२२	१७।५३	६।३२	१८। १	६।२६	१८। ०	६।३३	१८।१७
१८	५।३५	१७। ८	५।२५	१६।५२	५।५९	१७।२७	६। १	१७।४८	६।११	१७।४६	६।२५	१७।४८	६।३५	१७।५५	६।२९	१७।५५	६।३५	१८।१३
२३	५।३८	१७। ४	५।२८	१६।४७	६। २	१७।२३	६। २	१७।४५	६।१४	१७।४३	६।२८	१७।४३	६।३९	१७।५०	६।३२	१७।५१	६।३७	१८।१०
२८	५।४०	१७। १	५।३१	१६।४३	६। ५	१७।१९	६। ३	१७।४३	६।१६	१७।३९	६।३१	१७।३९	६।४३	१७।४५	६।३५	१७।४६	६।३८	१८। ७
नवं. २	५।४३	१६।५८	५।३४	१६।४०	६। ८	१७।१६	६। ४	१७।४१	६।१८	१७।३६	६।३५	१७।३५	६।४७	१७।४०	६।३८	१७।४२	६।४०	१८। ४
७	५।४६	१६।५५	५।३७	१६।३६	६।११	१७।१२	६। ६	१७।४०	६।२१	१७।३४	६।३९	१७।३१	६।५१	१७।३६	६।४१	१७।३९	६।४३	१८। २
१२	५।४९	१६।५३	५।४१	१६।३४	६।१४	१७।१०	६। ८	१७।३८	६।२४	१७।३२	६।४२	१७।२८	६।५६	१७।३२	६।४५	१७।३६	६।४५	१८। ०
१७	५।५२	१६।५१	५।४४	१६।३२	६।१८	१७। ८	६।१०	१७।३८	६।२७	१७।३१	६।४६	१७।२६	७। १	१७।२९	६।४९	१७।३४	६।४८	१७।५९
२२	५।५५	१६।५०	५।४८	१६।३०	६।२१	१७। ७	६।१२	१७।३८	६।३०	१७।३०	६।५०	१७।२४	७। ६	१७।२७	६।५३	१७।३३	६।५१	१७।५९
२७	५।५९	१६।५०	५।५२	१६।३०	६।२५	१७। ६	६।१५	१७।३८	६।३३	१७।२९	६।५४	१७।२३	७।१०	१७।२६	६।५७	१७।३३	६।५४	१७।५९
दिसं. २	६। २	१६।५०	५।५५	१६।२९	६।२९	१७। ६	६।१७	१७।३९	६।३६	१७।३०	६।५८	१७।२३	७।१४	१७।२६	७। ०	१७।३३	६।५७	१७।५९
७	६। ५	१६।५०	५।५९	१६।३०	६।३२	१७। ६	६।२०	१७।४०	६।३९	१७।३०	७। २	१७।२३	७।१८	१७।२६	७। ४	१७।३३	७। ०	१८। [illegible]
१२	६। ८	१६।५२	६। २	१६।३१	६।३५	१७। ७	६।२३	१७।४२	६।४३	१७।३२	७। ५	१७।२४	७।२१	१७।२७	७। ७	१७।३४	७। ३	१८। [illegible]
१७	६।११	१६।५३	६। ५	१६।३३	६।३९	१७। ९	६।२६	१७।४४	६।४६	१७।३४	७। ९	१७।२५	७।२४	१७।२८	७।१०	१७।३६	७। ६	१८। ३
२२	६।१४	१६।५६	६। ८	१६।३४	६।४१	१७।११	६।२८	१७।४६	६।४८	१७।३६	७।११	१७।२७	७।२७	१७।३०	७।१३	१७।३८	७। ९	१८। ५
२७	६।१६	१६।५८	६।१०	१६।३७	६।४३	१७।१४	६।३०	१७।४९	६।५०	१७।३८	७।१४	१७।३०	७।२९	१७।३३	७।१५	१७।४०	७।११	१८। ८

नोट—ये उदयास्त सूर्य केन्द्र के हैं। इनमें किरण-वक्री-भवन संस्कार समाविष्ट है। अतः लग्न साधनार्थ इष्ट-साधन के लिये सूर्योदय में लगभग २॥ मिनट जोड़ने पर एवं सूर्यास्त में लगभग २॥ मिनट घटाने का पर वास्तविक सूर्योदयास्त होते है।

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों में सूर्य के उदय एवं अस्त (भा० स्टै० टा०)

तारीख	कलकत्ता		गौहाटी		वाराणसी		मद्रास		नागपुर		दिल्ली		जम्मू		जयपुर		[illegible]	
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	[illegible]
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
जन. १	६।१८	१७। १	६।१२	१६।४१	६।४५	१७।१७	६।३३	१७।५२	६।५२	१७।४१	७।१५	१७।३४	७।३१	१७।३६	७।१७	१७।४३	७।१३	१८।११
६	६।२०	१७। ५	६।१३	१६।४४	६।४७	१७।२१	६।३५	१७।५५	६।५४	१७।४५	७।१६	१७।३७	७।३२	१७।३९	७।१८	१७।४६	७।१५	१८।१४
११	६।२०	१७। ८	६।१४	१६।४८	६।४७	१७।२४	६।३६	१७।५८	६।५५	१७।४८	७।१७	१७।४१	७।३२	१७।४३	७।१८	१७।५०	७।१६	१८।१७
१६	६।२१	१७।१२	६।१४	१६।५१	६।४७	१७।२८	६।३७	१८। ०	६।५५	१७।५१	७।१७	१७।४५	७।३१	१७।४८	७।१८	१७।५६	७।१६	१८।२०
२१	६।२०	१७।१५	६।१३	१६।५५	६।४७	१७।३२	६।३७	१८। ३	६।५५	१७।५४	७।१६	१७।४९	७।३०	१७।५३	७।१७	१७।५९	७।१६	१८।२४
२६	६।१९	१७।१८	६।१२	१६।५९	६।४५	१७।३५	६।३७	१८। ५	६।५४	१७।५७	७।१४	१७।५३	७।२८	१७।५८	७।१६	१८। ३	७।१६	१८।२६
३१	६।१८	१७।२२	६।१०	१७। ३	६।४३	१७।३९	६।३७	१८। ८	६।५३	१८। १	७।१२	१७।५७	७।२५	१८। २	७।१४	१८। ७	७।१५	१८।३०
फर. ५	६।१६	१७।२५	६। ७	१७। ७	६।४१	१७।४३	६।३६	१८।१०	६।५१	१८। ४	७। ९	१८। १	७।२२	१८। ७	७।११	१८।११	७।१३	१८।३२
१०	६।१३	१७।२८	६। ४	१७।१०	६।३८	१७।४६	६।३५	१८।१२	६।४९	१८। ७	७। ६	१८। ५	७।१८	१८।१२	७। ८	१८।१५	७।११	१८।३५
१५	६।१०	१७।३१	६। १	१७।१४	६।३५	१७।५०	६।३३	१८।१३	६।४६	१८।१०	७। २	१८। ९	७।१४	१८।१६	७। ४	१८।१८	७। ९	१८।३७
२०	६। ७	१७।३४	५।५७	१७।१७	६।३१	१७।५३	६।३१	१८।१५	६।४३	१८।१२	६।५७	१८।१३	७। ९	१८।२०	७। ०	१८।२१	७। ६	१८।३९
२५	६। ३	१७।३६	५।५३	१७।२०	६।२७	१७।५६	६।२९	१८।१६	६।३९	१८।१५	६।५३	१८।१६	७। ४	१८।२४	६।५६	१८।२४	७। ३	१८।४१
मार्च २(१)	५।५९	१७।३९	५।४८	१७।२३	६।२२	१७।५८	६।२६	१८।१६	६।३६	१८।१७	६।४८	१८।२०	६।५८	१८।२८	६।५२	१८।२७	६।५९	१८।४३
७(६)	५।५५	१७।४१	५।४३	१७।२६	६।१८	१८। १	६।२३	१८।१७	६।३१	१८।१८	६।४२	१८।२३	६।५२	१८।३१	६।४७	१८।३०	६।५६	१८।४५
१२(११)	५।५०	१७।४३	५।३८	१७।२८	६।१३	१८। ३	६।२०	१८।१८	६।२७	१८।२०	६।३७	१८।२६	६।४६	१८।३५	६।४२	१८।३३	६।५२	१८।४६
१७(१६)	५।४६	१७।४५	५।३३	१७।३१	६। ८	१८। ६	६।१७	१८।१८	६।२३	१८।२२	६।३०	१८।२८	६।४०	१८।३८	६।३६	१८।३५	६।४८	१८।४७
२२(२१)	५।४१	१७।४६	५।२७	१७।३३	६। २	१८। ८	६।१४	१८।१९	६।१८	१८।२४	६।२५	१८।३१	६।३४	१८।४१	६।३०	१८।३८	६।४३	१८।४९
२७(२६)	५।३६	१७।४८	५।२२	१७।३६	५।५७	१८।१०	६।१०	१८।१९	६।१३	१८।२५	६।१९	१८।३४	६।२७	१८।४४	६।२४	१८।४०	६।३९	१८।५०
अप्रै. १(०)	५।३१	१७।५०	५।१६	१७।३८	५।५२	१८।१२	६। ७	१८।१९	६। ९	१८।२७	६।१४	१८।३७	६।२१	१८।४८	६।१८	१८।४३	६।३५	१८।५१
६(५)	५।२७	१७।५२	५।११	१७।४०	५।४७	१८।१५	६। ४	१८।२०	६। ४	१८।२८	६। ८	१८।३९	६।१५	१८।५२	६।१३	१८।४६	६।३१	१८।५२
११(१०)	५।२२	१७।५४	५। ६	१७।४३	५।४२	१८।१७	६। ०	१८।२०	६। ०	१८।३०	६। २	१८।४२	६। ९	१८।५५	६। ९	१८।४९	६।२७	१८।५३
१६(१५)	५।१८	१७।५५	५। १	१७।४५	५।३७	१८।१९	५।५७	१८।२०	५।५६	१८।३१	५।५७	१८।४५	६। ३	१८।५८	६। ४	१८।५१	६।२३	१८।५५
२१	५।१३	१७।५७	४।५६	१७।४७	५।३२	१८।२१	५।५५	१८।२१	५।५२	१८।३३	५।५२	१८।४८	५।५७	१९। १	५।५९	१८।५३	६।१९	१८।५६
२६	५।१०	१७।५९	४।५२	१७।५०	५।२८	१८।२४	५।५२	१८।२२	५।४८	१८।३५	५।४७	१८।५१	५।५१	१९। ५	५।५४	१८।५६	६।१६	१८।५७
मई १	५। ६	१८। १	४।४८	१७।५२	५।२४	१८।२६	५।५०	१८।२३	५।४५	१८।३७	५।४३	१८।५४	५।४६	१९। ८	५।५०	१८।५९	६।१३	१८।५९
६	५। ३	१८। ४	४।४४	१७।५५	५।२०	१८।२९	५।४८	१८।२४	५।४२	१८।३९	५।३९	१८।५७	५।४१	१९।११	५।४६	१९। १	६।१०	१९। १
११	५। ०	१८। ६	४।४१	१७।५८	५।१७	१८।३१	५।४६	१८।२५	५।३९	१८।४१	५।३५	१९। ०	५।३७	१९।१५	५।४३	१९। ४	६। ८	१९। २
१६	४।५८	१८। ८	४।३८	१८। १	५।१४	१८।३४	५।४५	१८।२६	५।३७	१८।४३	५।३२	१९। ३	५।३४	१९।१८	५।४०	१९। ७	६। ६	१९। ४
२१	४।५६	१८।१०	४।३६	१८। ३	५।१२	१८।३७	५।४४	१८।२७	५।३५	१८।४५	५।३०	१९। ६	५।३२	१९।२१	५।३७	१९।१०	६। ४	१९। ६
२६	४।५४	१८।१३	४।३४	१८। ६	५।१०	१८।३९	५।४३	१८।२९	५।३४	१८।४७	५।२८	१९। ८	५।२८	१९।२५	५।३५	१९।१३	६। ३	१९। ८
३१	४।५३	१८।१५	४।३३	१८। ८	५। ९	१८।४१	५।४३	१८।३०	५।३३	१८।४९	५।२६	१९।११	५।२६	१९।२८	५।३३	१९।१५	६। २	१९।१०
जून ५	४।२३	१८।१७	४।३२	१८।१०	५। ९	१८।४४	५।४३	१८।३२	५।३३	१८।५१	५।२५	१९।१३	५।२५	१९।३१	५।३३	१९।१७	६। २	१९।१२
१०	४।५३	१८।१९	४।३२	१८।१३	५। ९	१८।४६	५।४३	१८।३३	५।३३	१८।५३	५।२५	१९।१६	५।२५	१९।३४	५।३३	१९।२०	६। २	१९-१३
१५	४।५३	१८।२०	४।३२	१८।१४	५। ९	१८।४८	५।४४	१८।३५	५।३३	१८।५५	५।२५	१९।१८	५।२५	१९।३६	५।३३	१९।२२	६। ३	१९।१५
२०	४।५४	१८।२२	४।३३	१८।१६	५।१०	१८।४९	५।४५	१८।३६	५।३४	१८।५६	५।२६	१९।१९	५।२६	१९।३७	५।३४	१९।२३	६। ४	१९।१६
२५	४।५५	१८।२३	४।३४	१८।१७	५।११	१८।५०	५।४६	१८।३७	५।३५	१८।५७	५।२५	१९।२०	५।२७	१९।३८	५।३५	१९।२४	६। ५	१९।१७

कोष्ठक में दी गई तारीख प्लुत-वर्ष (लीप इयर) में है।

नोट—१ उदयास्त सूर्य केन्द्र के हैं। इनमें किरणवक्रीभवन संस्कार समाविष्ट है। अतः लग्न साधनार्थ इष्ट साधन लिए सूर्योदय में लगभग २॥ मिनट जोड़ने पर एवं सूर्यास्त में लगभग २॥ मिनट घटाने पर वास्तविक सूर्योदय

पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी (भाग २ य

लग्न	उदय कालिक उत्तर क्रान्ति	अमृतसर	उज्जैन	उदयपुर	कलकत्ता	काशी	कांगड़ा	कुरुक्षेत्र	ग्वालियर	जम्मू	जयपुर	दिल्ली	नागपुर	पटना	पटियाला	पठानकोट	प्रयाग	बम्बई	मण्डी (हि.प्र.)	मद्रास	रोहतक	शिमला	श्रीनगर (का.)	हरिद्वार	हिसार	अस्त कालिक दक्षिण क्रान्ति
	अं.	मि.	मि.	मि	मि.	मि.	मि.	मि.	मि	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि	मि	मि	मि	मि	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	अं.
	०	+८	+५	+१३	−४६	−२५	+२	+१	−५	+८	+४	−१	−९	−३३	+२	+५	−२०	+१६	०	−१४	+१	−१	+८	−५	+४	०
	१	८	५	१३	४५	२४	२	१	५	८	४	१	८	३३	२	४	२०	१७	०	१२	१	१	८	५	५	१
सिंह	२	८	६	१४	४५	२४	२	१	४	७	५	१	७	३२	२	४	१९	१८	−१	११	१	१	७	५	५	२
	३	८	७	१४	४४	२३	२	१	४	७	५	१	७	३२	२	४	१८	१९	१	९	१	१	७	५	५	३
	४	८	७	१५	४३	२३	२	१	४	७	५	−१	६	३१	२	४	१८	२०	१	८	२	२	७	५	५	४
	५	८	८	१५	४२	२२	२	१	३	७	६	०	५	३१	२	४	१८	२१	१	६	२	२	६	५	५	५
	६	८	९	१६	४२	२२	१	१	३	७	६	०	४	३०	२	४	१७	२२	१	५	२	२	६	५	५	६
	७	८	९	१६	४१	२१	१	१	२	६	६	०	३	३०	२	४	१६	२३	१	३	२	२	६	५	५	७
	८	८	१०	१७	४०	२१	१	१	२	६	७	०	२	३०	२	३	१६	२४	१	−२	२	२	५	५	५	८
मीन	९	७	११	१८	४०	२०	१	१	२	६	७	०	२	२९	२	३	१६	२५	१	०	२	२	५	५	६	९
	१०	७	११	१८	३९	२०	१	१	१	६	७	+१	−१	२९	२	३	१५	२६	१	+१	२	२	५	५	६	१०
	११	७	१२	१९	३८	१९	१	१	−१	६	८	१	०	२८	२	३	१५	२७	१	३	३	२	५	५	६	११
	१२	७	१३	१९	३७	१९	१	१	०	६	८	१	+१	२८	२	३	१४	२८	१	४	३	२	४	५	६	१२
कर्क	१३	७	१३	२०	३६	१८	+१	१	०	५	८	१	२	२७	२	३	१४	२९	२	६	३	२	४	५	६	१३
	१४	७	१४	२०	३६	१८	०	१	+१	५	९	२	३	२७	२	३	१४	३०	२	७	३	२	३	४	६	१४
	१५	७	१५	२१	३५	१७	०	१	१	५	९	२	४	२६	२	२	१३	३१	२	९	३	२	३	४	७	१५
	१६	७	१५	२२	३४	१७	०	२	२	५	१०	२	५	२६	२	२	१३	३२	२	१०	३	२	३	४	७	१६
	१७	७	१६	२२	३३	१६	०	२	२	४	१०	२	६	२५	२	२	१२	३३	२	१२	४	२	२	४	७	१७
	१८	७	१७	२३	३३	१५	०	२	२	४	१०	२	७	२५	२	२	११	३५	२	१४	४	२	२	४	७	१८
मेष	१९	७	१८	२४	३२	१५	०	२	३	४	११	३	८	२४	२	१	११	३६	२	१५	४	२	२	४	७	१९
	२०	७	१८	२४	३१	१४	०	२	३	४	११	३	९	२४	२	१	१०	३७	३	१७	४	२	१	४	७	२०
मिथुन	२१	६	१९	२५	३०	१४	−१	२	४	४	११	३	१०	२३	२	१	१०	३८	३	१९	४	२	+१	४	७	२१
	२२	६	२०	२५	२९	१३	१	२	४	३	१२	३	११	२३	२	१	९	३९	३	२०	५	२	०	४	८	२२
वृष	२३	६	२१	२६	२८	१३	१	२	५	३	१२	३	११	२२	२	+१	९	४१	३	२२	५	२	०	४	८	२३
	२४	६	२२	२७	२७	१२	१	२	५	३	१३	४	१३	२१	२	०	८	४२	३	२४	५	२	−१	४	८	२४
	२५	६	२३	२८	२६	११	१	२	६	२	१३	४	१४	२१	२	०	८	४३	३	२६	५	२	१	४	८	२५
	२६	६	२४	२८	२६	११	१	२	६	२	१४	४	१५	२०	२	०	७	४४	३	२८	५	२	२	४	८	२६
	२७	६	२५	२९	२५	१०	२	२	७	२	१४	५	१६	२०	२	०	६	४६	३	३०	६	२	२	४	[illegible]	२७
	२८	६	२५	३०	२४	९	२	२	७	२	१५	५	१७	१९	२	−१	६	४७	४	३२	६	२	२	[illegible]	[illegible]	२८
	२९	६	२६	३१	२२	९	२	२	८	१	१५	५	१८	१८	२	१	५	४९	४	३४	६	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२९
	३०	+५	+२७	+३२	−२१	−८	−२	+२	+९	+१	+१६	+५	+२०	−१७	+२	−१	−४	+५०	−४	+३६	+६	−[illegible]	−४	−२	+९	३०

पंचाङ्ग परिवर्तन सारिणी (भाग १ म)

(लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल तथा सूर्य-चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन के लिए)

लग्न	उदयकालिक दक्षिण क्रान्ति	अमृतसर	उज्जैन	उदयपुर	कलकत्ता	काशी	कांगड़ा	कुरुक्षेत्र	ग्वालियर	जम्मू	जयपुर	दिल्ली	नागपुर	पटना	पटियाला	पठानकोट	प्रयाग	बम्बई	मंडी (हि. प्र.)	मद्रास	रोहतक	शिमला	श्रीनगर	हरिद्वार	हिसार	अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति
	अं.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	अं
	०	+ ८	+ ५	+१३	-४६	-२५	+२	+१	- ५	+८	+४	-१	- ९	-३३	+२	+ ५	-२०	+१६	०	-१४	+१	-१	+ ८	-५	+ ४	०
	१	८	४	१२	४७	२५	२	०	६	८	४	२	१०	३४	२	५	२१	१५	०	१५	१	१	८	५	४	१
	२	८	३	१२	४७	२५	३	०	६	८	३	२	११	३४	२	५	२१	१४	०	१७	+१	१	९	६	४	२
कुम्भ	३	८	३	११	४८	२६	३	०	६	८	३	२	१२	३५	२	५	२१	१३	०	१८	०	१	९	६	४	३
	४	९	२	१०	४९	२६	३	०	७	९	३	२	१२	३५	२	५	२२	१२	०	१९	०	१	९	६	४	४
	५	९	१	१०	५०	२७	३	०	७	९	२	२	१३	३६	२	५	२२	११	०	२१	०	१	१०	६	४	५
	६	९	+ १	९	५०	२७	३	०	८	९	२	२	१४	३६	२	६	२३	१०	०	२२	०	१	१०	६	४	६
	७	९	०	९	५१	२८	३	०	८	९	२	३	१५	३७	२	६	२३	९	०	२४	०	१	१०	६	३	७
	८	९	- १	८	५२	२८	३	०	९	९	१	३	१६	३७	२	६	२४	८	०	२५	०	१	११	६	३	८
कन्या	९	९	१	८	५३	२९	३	०	९	१०	१	३	१७	३८	२	६	२४	७	०	२७	०	१	११	६	३	९
	१०	९	२	७	५३	२९	४	०	९	१०	+१	३	१८	३८	२	६	२५	६	०	२८	-१	१	११	६	३	१०
	११	९	३	७	५४	३०	४	०	१०	१०	०	३	१८	३८	२	६	२५	५	+१	३०	१	१	१२	६	३	११
	१२	९	३	६	५५	३०	४	०	१०	१०	०	४	१९	३९	२	७	२६	४	१	३१	१	१	१२	६	३	१२
मकर	१३	९	४	५	५६	३१	४	०	११	१०	०	४	२०	३९	२	७	२६	३	१	३३	१	१	१२	६	३	१३
	१४	९	५	५	५६	३१	४	०	११	११	-१	४	२१	४०	२	७	२७	+ २	१	३४	१	१	१३	६	२	१४
	१५	१०	५	४	५७	३२	४	०	११	११	१	४	२२	४०	२	७	२७	०	१	३६	१	१	१३	६	२	१५
	१६	१०	६	४	५८	३२	४	०	१२	११	२	४	२३	४१	२	७	२८	- १	१	३८	२	१	१४	६	२	१६
	१७	१०	७	३	५९	३३	५	-१	१२	११	२	५	२४	४१	२	८	२८	२	१	३९	२	१	१४	७	२	१७
	१८	१०	८	२	६०	३४	५	१	१३	१२	२	५	२५	४२	१	८	२९	३	२	४१	२	१	१४	७	२	१८
तुला	१९	१०	८	२	६०	३४	५	१	१३	१२	३	५	२६	४२	१	८	२९	४	२	४३	२	१	१५	७	२	१९
	२०	१०	९	+ १	६१	३५	५	१	१४	१२	३	५	२७	४३	१	८	३०	५	२	४४	२	१	१५	७	१	२०
धनु	२१	१०	१०	०	६२	३५	५	१	१४	१२	३	६	२८	४४	१	८	३०	६	२	४६	३	१	१५	७	१	२१
	२२	१०	११	०	६३	६	५	१	१५	१२	४	६	२९	४४	१	८	३१	८	२	४८	३	१	१६	७	१	२२
वृश्चि.	२३	१०	१२	- १	६४	३६	५		१५	१३	४	६	३०	४५	१	९	३१	९	२	४९	३	१	१६	७	१	२३
	२४	१०	१३	२	६५	३७	६		१६	१३	५	६	३१	४५	१	९	३२	१०	२	५१	३	१	१७	७	१	२४
	२५	१०	१४		६६	३८	६		१६	१३	५	७	३२	४६	१	९	३३	११	२	५३	३	-१	१७	७	+ १	२५
	२६	११	१४	३	६७	३८			१७	१४	६	७	३३	४६	१	९	३३	१३	२	५५	४	०	१८	७	०	२६
	२७	११	१५	४	६८	३९	६	१	१७	१४	६	७	३४	४७	१	१०	३४	१४	३	५७	४	०	१८	७	०	२७
	२८	११	१६	५	६९	४०	६	१	१८	१४	७	८	३६	४८	१	१०	३५	१५	३	५९	४	०	१९	७	०	२८
	२९	११	१७	५	७०	४०		२	१९	१४	७	८	३७	४८	१	१०	३५	१७	३	६१	४	०	१९	७	०	२९
	३०	११	-१८	- ६	-७१	-४[illegible]	+७	२	-१९	+१५	-८	-८	- ३८	-४९	+१	+ १०	३६	-१८	+ ३	६३	-४	-०	२०	८	+०	३०

—:लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल तथा सूर्य-चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की पद्धतिः—

इस पञ्चाङ्ग में दी गई दैनिक लग्न सारिणी, सूर्य चन्द्र के उदयास्त एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल चण्डीगढ़ एवं रोपड़ (पंजाब) तथा इनके निकटवर्ती स्थानों के लिए हैं। इन पर से भारत के प्रमुख २४ नगरों के लग्न समाप्ति काल, तिथ्यादि समाप्ति काल तथा सूर्य चन्द्र के उदयास्त ज्ञात करने के लिए पृ० १०६-१०७ पर "पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी" दी गई है। इस सारिणी के आधार पर इन २४ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न की समाप्ति काल, तिथ्यादि समाप्ति काल एवं सूर्य चन्द्र के उदयास्त काल, अत्यन्त सरलता पूर्वक बिना किसी प्रकार के गणित के ज्ञात किए जा सकते हैं। विधियाँ नीचे दी जा रही हैं—

लग्न समाप्ति काल के परिवर्तन की विधि:—'पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी' (पृष्ठ १०६-१०७) में अभीष्ट नगर के नीचे एवं अभीष्ट लग्न (जो सारिणी के बाईं ओर सर्व प्रथम कालम में है) के आगे लिखे मिनटों को दैनिक लग्न सारिणी (पृष्ठ ८९ से ९४) में दिए गए अभीष्ट प्रविष्टे (हिन्दी सौर तारीख) को अभीष्ट लग्न के समाप्ति काल में चिह्नानुसार जोड़ने से अभीष्ट नगर में अभीष्ट प्रविष्टे को अभीष्ट लग्न का समाप्ति काल प्राप्त होगा। जैसे १ वैशाख (वैशाख प्रविष्टे १) को कलकत्ता में सिंह लग्न का समाप्ति काल जानना है। 'पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी' में कलकत्ता के नीचे एवं सिंह लग्न के आगे –४५ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें दैनिक लग्न सारिणी" में १ वैशाख को दिए गए सिंह के समाप्ति काल १६ घंटा २५ मिनट में से घटाने पर कलकत्ता में इस दिन सिंह लग्न का समाप्ति काल १५ घंटा ४० मिनट निकल आया।

सूर्योदयास्त के परिवर्तन की विधि:—अभीष्ट तारीख का सूर्योदय और तात्कालिक (सूर्योदयकालिक) सूर्यक्रान्ति इस पञ्चाङ्ग से ज्ञात करें। तदनन्तर "पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी" में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदयकालिक दक्षिण या उत्तर क्रान्ति (जो सारिणी के बाईं ओर दूसरे कालम में दी गई है) के आगे दिए गए मिनटों को इस पञ्चाङ्ग में दिए गए चण्डीगढ़ सूर्योदय में चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट तारीख अभीष्ट नगर में सूर्योदय काल ज्ञात होगा। जैसे बम्बई में १० मई को सूर्योदय काल ज्ञात करना है—इस पञ्चाङ्ग में १० मई को सूर्योदय ५ घं० ३६ मि० लिखा है। इस समय सूर्यक्रान्ति +१७ अंश (उत्तर क्रान्ति १७ अंश) है। सारिणी में उदयकालिक उत्तर क्रान्ति १७ अंश के आगे बम्बई के नीचे +३३ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें ५ घं० ३६ मि० में जोड़ने पर इस दिन बम्बई में सूर्योदय काल ६ घं० ९ मि० प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सूर्यास्तकालिक सूर्य की क्रान्ति से अभीष्ट तारीख को अभीष्ट नगर में सूर्यास्त काल जाना जा सकता है। सूर्यास्तकाल जानने के लिए सारिणी का प्रयोग करते समय क्रान्ति के अंश सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखने चाहिएँ। जैसे—बम्बई में १० मई को सूर्यास्त ज्ञात करना है। इस पञ्चाङ्ग में इस दिन सूर्यास्त काल ७ घं० २ मि० लिखा है। इस समय सूर्य क्रान्ति +१८ अंश (उत्तर क्रान्ति १८ अंश) है। सारिणी में अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति १८ अंश (जो सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में दिए गए हैं) के बाईं ओर बम्बई के नीचे –३ मिनट लिखे हैं। इन्हें इस पञ्चाङ्ग से उपलब्ध सूर्यास्त काल ७ घं० २ मि० में से घटाने पर १० मई को बम्बई में सूर्यास्त काल ६ घं० ५९ मि० आया।

चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की विधि—सूर्योदयास्त के परिवर्तन की तरह चन्द्रोदयास्त भी चन्द्रक्रान्ति के आधार पर परिवर्तित किए जा सकते हैं। यहाँ भी सूर्योदयास्त के परिवर्तन की भाँति चन्द्रोदय परिवर्तन के लिए उदयकालिक चन्द्रक्रान्ति को सारिणी के बाईं ओर दूसरे कालम में एवं चन्द्रास्त परिवर्तन के लिए अस्तकालिक चन्द्रक्रान्ति को सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखें।

जैसे—१३ अप्रैल १९७१ को मद्रास में चन्द्रोदय ज्ञात करना है। (इस दिन पञ्चाङ्ग में चण्डीगढ़ में चन्द्रोदय २१ घं. २३ मि. लिखा है। इसी समय चन्द्र क्रान्ति—२४ (दक्षिण क्रान्ति २४) है। सारिणी में मद्रास के नीचे एवं उदय-कालिक दक्षिण-क्रान्ति २४ के आगे—५१ मि. लिखा है। इस पञ्चाङ्ग में दिये चन्द्रोदय २१घं. २३मि. में से ५१मि. घटाने पर २० घं. ३२ मि. मद्रास में १३ अप्रैल १९७१ को चन्द्रोदयकाल हुआ। चन्द्रास्त-काल-परिवर्तन का उदाहरण भी लीजिए—१० अप्रै. १९७१ को इस वर्ष के पञ्चाङ्ग में चन्द्रास्त ५ घं. २५ मि. लिखा है। इस समय चन्द्र-क्रान्ति–८ (दक्षिण क्रान्ति ८ अंश) है। सारिणी में मद्रास के नीचे अस्तकालिका दक्षिण चन्द्र-क्रान्ति ८ के आगे–२ मि. लिखा है। चण्डीगढ़ के इस दिन के चन्द्रास्त ५ घं. २५ मि. में से २ मि. घटाने पर ५ घं. २३ मि. (भा. स्टै. टा.) १० अप्रैल को मद्रास में चन्द्रास्त का समय प्राप्त हुआ।

नोट—चन्द्रोदयास्त पृष्ठ ८४-८५ एवं चन्द्र-सूर्य क्रान्ति पृ. ८०-८१ पर देखें।

तिथ्यादि समाप्ति काल के परिवर्तन की विधि:—जिस दिन तिथि, नक्षत्र योग के समाप्ति काल को अभीष्ट नगरीय बनाना हो उस दिन की सूर्योदय कालिक सूर्य क्रान्ति ज्ञात करो। तदनन्तर सारिणी में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदय कालिक सूर्य क्रान्ति के आगे दिए गये मिनटों को घड़ी पल बनाकर चिह्न के विपरीत तिथ्यादि के समाप्ति काल में जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगरीय तिथ्यादि समाप्ति काल प्राप्त होंगे।

नोट:—इस पञ्चाङ्ग में सूर्य चन्द्र की दैनिक क्रान्ति दैनिक स्पष्ट ग्रहों के बाद दी गई है। क्रान्ति के साथ दिया गया + यह चिह्न उत्तर क्रान्ति एवं – यह चिह्न दक्षिण क्रान्ति को बतलाता है। इस पञ्चाङ्ग में दी गई क्रान्तियाँ ५घं. ३० मि प्रातः की है। इन्हें उदयकालिक या अस्तकालिक बनाने के लिए जबानी ही अनुपात बड़ी सरलता से किया जा सकता है।

स्थूल चन्द्रोदयास्त जानने की विधि:—तिथिप्रमाणेन हतं निशाखा: प्रमाणमानं च युतं भुजाभ्याम् ॥ कृष्णे सिते यास्तिथिभक्तनाड्यश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः ॥१॥ भावार्थ—जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घट्यादि को गुणे, शुक्लपक्ष की तिथि हो तो उन में २घटी जोड़ना, यदि कृष्ण पक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना, तदनन्तर उनमें १५ का भाग देकर दो फल घटीपलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चंद्रास्त होगा। यदि कृष्णपक्ष हो तो लब्ध घट्यात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो घट्यादि होवे, उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा।

॥ दशम लग्न-सारिणी ॥ (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
०	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	०	१७
वृषभ	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
२	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
वृश्चि.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
८	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४

नोट--हमारे यहां से समीपवर्ती जैसे चार्डगढ़, अरदचेला, पटियाला, नाभा, लुधियाना, मोगा, शिमला, होशियारपुर, जालन्धर आदि स्थानों में स्वरपान्तर होने के कारण चरान्तरसारिणी से दिनमानादि साधन के बिना भी काम चल सकता है।

अथ दशम लग्न साधनम्—
घुदलं हि प्रपातयेत् । दशमस्य भ[illegible]
सखांगने ॥१॥"

अथ—सूर्योदय से घटचादि इष्टकाल में से [illegible] हीन करना, जो शेष बचे वह दशमभाव का इष्ट हो[illegible] है (यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर घटाना)। इसी शदम भावेष्ट को जन्मकालीन इष्ट मानकर इस दशमलग्नसारिणी को जन्मकालीन इष्ट मानकर इस दशमलग्नसारिणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशमभाव सि[illegible] होता है। कभी-कभी दशमभाव में नवम या एकादश राशि भी हो जाती है। दशमभाव में ६ राशि युक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि युक्त करने से सप्तमभाव होता है।

भाव-साधनम्—"विलग्नतूर्य षड्भक्तं पंचवारं तनौ क्षिपेत् । एकद्वियुक्तास्ते व्यस्ता भावाः षट्षड्-युताः परे। ।२॥" अर्थ:—चतुर्थभाव में लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे, उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे, अर्थात् प्रथम बार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने से द्वितीयभाव की आरम्भ सन्धि होगी। फिर उसी आरम्भ संधि में षष्ठांश युक्त करने से दूसरा भाव होगा। इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५ बार षष्ठांश युक्त करने से चतुर्थ-भाव का आरम्भ संधि तक चारों भाव हो जावेंगे। इनके अनन्तर एक २ बढ़ाते हुए उत्क्रम से चतुर्थभाव की अचेरभ संधि से लग्न की विरा सन्धि तक १ से ५ पर्यंत केवल राशि स्था में युक्त करने से सन्धिरहित ६ भाव हो जावेंगे, अर्थात् चतुर्थभाव की आरम्भसन्धि में १ राशि युक्त करने से पंचमभाव की आरम्भसन्धि हो जावेगी तीसरे भाव में २ राशि युक्त करने से पंचम भाव होगा इसी प्रकार क्रमपूर्वक सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर शेष ६ भावों के साधन में उपर्युक्त सन्धिसहित (६), छः भावों में (६) छः राशि युक्त करने से सन्धिसहित द्वादशभाव होते हैं॥

॥ लग्न सारिणी ॥ (पलभा ७।१२)

अंश.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	
०	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	२०६
वृषभ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	
१	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	२४२
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	
२	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	२९९
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	
३	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२३	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	३४७
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	
४	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३५६
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	
५	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	३५०
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	
६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	३५०
वृश्चि.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	
७	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	३५६
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	
८	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	३४७
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	
९	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	२९९
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	२८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	
१०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	२४२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	६	१	१	१	२	२	२	२	२	
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	२०६

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४०, इ
राशि १ अंश १५के प्रमाण लग्नसारिणी में को
देखा तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घट्यादि ९।५मि
तो १७।५३ हुए। यह इष्टयुक्त किया हुआ लग्नसा
का कोष्ठक हुआ, इस इष्टकोष्ठकसे अल्पकोष्ठकसा
में देखा तो (१७।५१) तीन राशि ५ अंश के को
में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि ५ अंश लि
इसके नीचे सूर्य की कला५० विकला ४०युक्त किया
३।५।५०।४० हुआ, तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक१७।
और अल्पकोष्ठक १७।५१ का अन्तर किया तो प
हुआ, इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१और ऐष्य (आगे क
कोष्ठक१८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया
लब्ध ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा कि

११) २ (०।१०।५५ ६० ——— १२० ११० ——— १ ६० ——— ६० ६०५	तो १२० हुए, इनमें भाजक ११ का दिया तो लब्धि १० आई। शेष १० बचे को ६० से गुणा तो ६०० हुए, भाजक ११ का भाग दिया। तो

५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५
प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त
तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्ट लग्न

अथ लग्नपत्रात् सूक्ष्मलग्न साधनम्—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो, फिर सूर्य की राशि अंश [illegible] न सारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्प कोष्ठक के राशि अंश लेना। राशि अंश के नीचे स्पष्ट सूर्य की कला विकला युक्त करना। [illegible] इष्टयुक्त किये हुए कोष्ठक और अल्प कोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्ध जो [illegible] कला विकला आवें, वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्म स्पष्ट लग्न होता है ॥

लग्न-सारणी

(समस्त पंजाब एवं हिमाचल के लिये)

सायनार्क	दशम लग्न-सारणी		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		लग्न में अक्षांश कला-संस्कार (अक्षांश-कला)					
प. वि.	दशम लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	१०क. कला	२०क. कला	३०क. कला	४०क. कला	५०क. कला	६०क. कला
०।०	०।०।०	४८९	३।१२।५७	३८९	३।१३।२६	३८८	३।१३।५७	३८७	३।१४।२२	३८४	+५	+१०	+१५	+२०	+२५	३१
०।३०	०।८।९	४८८	३।१९।२६	३८३	३।१९।५४	३८२	३।२०।२४	३७९	३।२०।५३	३७७	५	१०	१५	२०	२५	२९
१।०	०।१६।१७	४८१	३।२५।४९	३८२	३।२६।१६	३७९	३।२६।४३	३७७	३।२७।१०	३७५	४	९	१३	१८	२२	२६
१।३०	०।२४।१८	४७३	४।२।११	३८०	४।२।३५	३७९	४।३।०	३७७	४।३।२५	३७२	४	८	१२	१६	२०	२४
२।०	१।२।११	४६४	४।८।३१	३७९	४।८।५४	३७७	४।९।१७	३७३	४।९।३७	३७४	४	७	११	१५	१८	२२
२।३०	१।९।५५	४५३	४।१४।५०	३८१	४।१५।११	३७७	४।१५।३०	३७५	४।१५।५१	३७२	+३	+६	+१०	+१३	+१६	२०
३।०	१।१७।२८	४४४	४।२१।११	३८२	४।२१।२८	३८१	४।२१।४५	३७९	४।२२।३	३७६	+३	+६	+९	+१२	+१५	+१७
३।३०	१।२४।५२	४३३	४।२७।३३	३८६	४।२७।४९	३८२	४।२८।४	३८०	४।२८।१९	३७६	२	५	८	१०	१२	१५
४।०	२।२।५	४२७	५।३।५९	३८८	५।४।११	३८५	५।४।२४	३८२	५।४।३६	३७२	२	४	६	८	१०	१२
४।३०	२।९।१२	४११	५।१०।२७	३९०	५।१०।३६	३८७	५।१०।४६	३८३	५।१०।५५	३८१	२	३	५	६	८	१०
५।०	२।१६।११	४२६	५।१६।५७	३९१	५।१७।३	३८८	५।१७।९	३८५	५।१७।१६	३८१	१	२	३	४	५	+६
५।३०	२।२३।७	४१३	५।२३।२८	३९२	५।२३।३१	३८९	५।२३।३४	३८६	५।२३।३७	३८३	+०	+१	+१	+२	+२	३
६।०	३।०।०	४१२	६।०।०	३९२	६।०।०	३८९	६।०।०	३८६	६।०।०	३८३	०	०	०	०	०	
६।३०	३।६।५२	४१७	६।६।३२	३९१	६।६।२९	३८८	६।६।२६	३८५	६।६।२३	३८१	−०	−१	−१	−२	−२	−३
७।०	३।१३।४९	४२०	६।१३।३	३९०	६।१२।५७	३८७	६।१२।५१	३८३	६।१२।४४	३८१	१	२	३	४	५	६
७।३०	३।२०।४९	४२६	६।१९।३३	३८८	६।१९।२४	३८५	६।१९।१४	३८३	६।१९।५	३७९	१	३	५	६	८	१०
८।०	३।२७।५५	४३४	६।२६।१	३८६	६।२५।४९	३८२	६।२५।३६	३८०	६।२५।२४	३७७	२	४	६	८	१०	१२
८।३०	४।५।०९	४४३	७।२।२७	३८२	७।२।११	३८१	७।१।५६	३७९	७।१।४१	३७६	−२	−५	−८	−१०	−१२	−१५
९।०	४।१२।३२	४५४	७।८।४९	३८१	७।८।३२	३७८	७।८।१५	३७५	७।७।५७	३७२	−३	−६	−९	−१२	−१५	−१७
९।३०	४।२०।६	४५३	७।१५।१०	३७९	७।१४।५०	३७६	७।१४।३०	३७५	७।१४।९	३७४	३	६	१०	१३	१६	२०
१०।०	४।२७।३९	४८३	७।२१।२९	३८०	७।२१।६	३७९	७।२०।४५	३७५	७।२०।२३	३७२	४	७	११	१५	१८	२२
१०।३०	५।५।४२	४८१	७।२७।४९	३८२	७।२७।२५	३७९	७।२७।०	३७७	७।२६।३५	३७५	४	८	१२	१६	२०	२४
११।०	५।१३।४३	४८७	८।४।११	३८३	८।३।४४	३८०	८।३।१७	३७९	८।२।५०	३७७	४	९	१३	१७	२२	२७
११।३०	५।२१।५०	४८९	८।१०।३४	३८९	८।१०।४	३९०	८।९।३६	३८७	८।९।७	३८४	−५	−१०	−१५	−२०	−२५	−२९
१२।०	६।०।०	४८९	८।१७।३	३९६	८।१६।३४	३९४	८।१६।३	३९३	८।१५।३१	३९१	−५	−१०	−१५	−२०	−२५	−३१
१२।३०	६।८।९	४८८	८।२३।३९	४०८	८।२३।८	४०६	८।२२।३६	४०५	८।२२।२	४०४	५	१०	१६	२१	२६	३२
१३।०	६।१६।१७	४८१	९।०।२७	४२१	८।२९।५४	४२०	८।२९।२१	४१८	८।२८।४६	४१७	५	१०	१६	२१	२७	३३
१३।३०	६।२४।१८	४७३	९।७।२८	४४०	९।६।५४	४४०	९।६।१९	४३९	९।५।४३	४३८	५	११	१७	२२	२८	३४
१४।०	७।२।११	४६४	९।१४।४८	४६२	९।१४।१४	४६३	९।१३।३८	४६२	९।१३।१	४६२	६	१२	१८	२४	३०	३५
१४।३०	७।९।५५	४५३	९।२२।३०	४८९	९।२१।५७	४८९	९।२१।२०	४८८	९।२०।४३	४८९	−६	−१२	−१८	−२४	−३०	−३६
१५।०	७।१७।२८	४४४	१०।०।३६	५२१	१०।०।३	५२२	९।२९।२८	५२५	९।२८।५२	५२६	−६	−१२	−१८	−२४	−३०	−३५
१५।३०	७।२४।५२	४३३	१०।९।१७	५५०	१०।८।४५	५५४	१०।८।१३	५५७	१०।७।३८	५६१	५	१०	१६	२१	२७	३३
१६।०	८।२।५	४२७	१०।१८।२७	५८१	१०।१७।५९	५९१	१०।१७।३०	५९९	१०।१६।५९	६००	५	१०	१५	१९	२४	२९
१६।३०	८।९।१२	४११	१०।२८।१२	६१७	१०।२७।५०	६२२	१०।२७।२५	६२९	१०।२६।५९	६३६	४	८	१२	१६	२०	२३
१७।०	८।१६।११	४२६	११।८।२९	६४१	११।८।१२	६४७	११।७।५४	६५५	११।७।३५	६६५	३	६	९	१२	१५	१८
१७।३०	८।२३।७	४१३	११।१९।८	६५२	११।१८।५९	६६१	११।१८।४९	६७१	११।१८।४०	६८०	−२	−३	−४	−६	−८	−९
१८।०	९।०।०	४१२	०।०।०	६५२	०।०।०	६६०	०।०।०	६७१	०।०।०	६८०	०	०	०	०	०	
१८।३०	९।६।५२	४१७	०।१०।५२	६३९	०।११।०	६४८	०।११।११	६५५	०।११।२०	६६५	+१	+२	+४	+५	+६	+८
१९।०	९।१३।४९	४२०	०।२१।३१	६१७	०।२१।४८	६२२	०।२२।६	६२९	०।२२।२५	६३६	३	६	९	१२	१५	१८
१९।३०	९।२०।४९	४२६	१।१।४८	५८९	१।२।१०	५९१	१।२।३५	५९५	१।३।१	६००	४	८	१२	१६	२०	२४
२०।०	९।२७।५५	४३४	१।११।२३	५५०	१।१२।१	५५४	१।१२।३०	५५७	१।१३।१	५६१	५	१०	१५	२०	२५	३०
२०।३०	१०।५।०९	४४३	१।२०।४३	५२१	१।२१।१५	५२२	१।२१।४७	५२५	१।२२।२२	५२६	+५	+११	+१७	+२२	+२८	३४
२१।०	१०।१२।३२	४५४	१।२९।२४	४८६	१।२९।५७	४८६	२।०।३२	४८८	२।१।८	४८९	+५	+११	+१७	+२३	+२९	+३५
२१।३०	१०।२०।६	४५३	२।७।३०	४६२	२।८।३	४६३	२।८।४०	४६४	२।९।१७	४६२	६	१२	१८	२४	३०	३६
२२।०	१०।२७।३९	४८३	२।१५।१२	४४०	२।१५।४६	४४०	२।१६।२४	४३७	२।१६।५९	४३८	६	१२	१८	२४	३०	३६
२२।३०	११।५।४२	४८१	२।२२।३२	४२१	२।२३।६	४२०	२।२३।४१	४१८	२।२४।१७	४१७	६	१२	१८	२४	३०	३५
२३।०	११।१३।४३	४८७	२।२९।३३	४०७	३।०।६	४०६	३।०।३९	४०५	३।१।१४	४०४	५	११	१६	२१	२७	३३
२३।३०	११।२१।५०	४८९	३।६।२०	३९७	३।६।५२	३९४	३।७।२४	३९३	३।७।५८	३९१	५	११	१६	२१	२७	३३
२४।०	०।०।०	४८९	३।१२।५७	३८९	३।१३।२६	३८८	३।१३।५७	३८७	३।१४।२२	३८४	+५	+१०	+१५	+२०	+२५	+३१

हिमाचल के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांशादि

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
ऊना	३१।३२	७६।१८	−२४।४८	नाहन	३०।३३	७७।२१	−२०।३६
कांगड़ा	३२।५	७६।१८	−२४।४८	पालम पुर	३२।७	७६।३५	−२३।४[illegible]
कुल्लू	३१।५८	७७।०	−२२।०	मण्डी	३१।४३	७६।५८	−२२[illegible]
कोटखाई	३१।८	७७।३६	−१९।३६	मनाली	३२।१५	७७।५	[illegible]
चम्बा	३२।२९	७६।१०	−२५।२०	रामपुर बुशहर	३१।२९	७७।४[illegible]	[illegible]
जोगिन्दर नगर	३१।५०	७६।४५	−२३।०	बिलासपुर	३१।१९	७६।५०	[illegible]
डलहौजी	३२।२८	७५।५५	−२६।२०	सुन्दरनगर	३१।३०	७६।५१	[illegible]
धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	−२४।२८	सोलन	३०।५५	७७।[illegible]	[illegible]
नालागढ़	३०।५७	७६।२२	−२४।३२	शिमला	३१।६	[illegible]	−१७[illegible]
				हमीरपुर	३१।४[illegible]	[illegible]	[illegible]

॥ लग्न सारिणी ॥ (पलभा ७।१२)

अंश.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	
०	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	२०६
वृषभ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	
१	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	२४२
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	
२	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	२९९
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	
३	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२३	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	३४७
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	
४	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३५६
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	
५	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	३५०
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	
६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	३५०
वृश्चि.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	
७	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	३५६
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	
८	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	३४७
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	
९	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	२९९
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	२८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	
१०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	२४२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	६	१	१	१	२	२	२	२	२	
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	२०६

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४०, इसकी राशि १ अंश १५के प्रमाण लग्नसारिणी में कोष्ठक देखा तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घट्यादि ९।५मिलाया तो १७।५३ हुए। यह इष्टयुक्त किया हुआ लग्नसारिणी का कोष्ठक हुआ, इस इष्टकोष्ठकसे अल्पकोष्ठकसारिणी में देखा तो(१७।५१) तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि ५ अंश लिए। इसके नीचे सूर्य की कला५० विकला ४०युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ, तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक१७।५३ और अल्पकोष्ठक १७।५१ का अन्तर किया तो पल२ हुआ, इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१और ऐष्य(आगे का) कोष्ठक१८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्ध ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया

११) २ (०।१०।५५ ६० ——— १२० ११० ——— १ ६० ——— ६० ६०५	तो १२० हुए, इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई। शेष १० बचे इस को ६० से गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया। तो लब्ध

५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५ को प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्ट लग्न हुआ

अथ लग्नपत्रात् सूक्ष्मलग्न साधनम्-जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो, फिर सूर्य की राशि अंश प्रमाण लग्न सारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्प कोष्ठक के राशि अंश लेना। राशि अंश के नीचे स्पष्ट सूर्य की कला विकला युक्त करना। तदनन्तर इष्ट किये हुए कोष्ठक और अल्प कोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्ध जो अंश क... आवें, वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्म स्पष्ट लग्न होता है ॥

...सयास्त काल ७ व० २ मि० में से घटाने पर १० मई को बम्बई में सूर्यास्त ...ल ६घं० ५९ मि० आया। | के समय सूर्यास्त के अनन्तर चंद्रास्त होगा। यदि कृष्णपक्ष हो तो लब्ध ... तदनन्तर ... हों तो ल...

लग्न-सारणी

(समस्त पंजाब एवं हिमाचल के लिये)

सार्वत्रिक इष्ट	दशम लग्न-सारणी		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३	
घ. मि.	दशम लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.	लग्न रा. अं. क.	अन्तर क.
०।०	०।०।०	४८९	३।१२।५७	३८९	३।१३।२६	३८८	३।१३।५७	३८७	३।१४।२९	३८४
०।३०	०।८।९	४८८	३।१९।२६	३८३	३।१९।५४	३८२	३।२०।२४	३७९	३।२०।५३	३७७
१।०	०।१६।१७	४८१	३।२५।४९	३८२	३।२६।१६	३७९	३।२६।४३	३७७	३।२७।१०	३७५
१।३०	०।२४।१८	४७३	४।२।११	३८०	४।२।३५	३७९	४।३।०	३७७	४।३।२५	३७२
२।०	१।२।११	४६४	४।८।३१	३७९	४।८।५४	३७७	४।९।१७	३७३	४।९।३७	३७४
२।३०	१।९।५५	४५३	४।१४।५०	३८१	४।१५।११	३७७	४।१५।३०	३७५	४।१५।५१	३७२
३।०	१।१७।२८	४४४	४।२१।११	३८२	४।२१।२८	३८१	४।२१।४५	३७९	४।२२।३	३७६
३।३०	१।२४।५२	४३३	४।२७।३३	३८६	४।२७।४९	३८२	४।२८।४	३८०	४।२८।१९	३७६
४।०	२।२।५	४२७	५।३।५३	३८८	५।४।११	३८५	५।४।२४	३८२	५।४।३६	३७९
४।३०	२।९।१२	४१९	५।१०।१७	३९०	५।१०।२६	३८७	५।१०।४६	३८३	५।१०।५५	३८१
५।०	२।१६।११	४१६	५।१६।५७	३९१	५।१७।३	३८८	५।१७।९	३८५	५।१७।१६	३८१
५।३०	२।२३।७	४१३	५।२३।२८	३९२	५।२३।३१	३८९	५।२३।३४	३८६	५।२३।३७	३८३
६।०	३।०।०	४१२	६।०।०	३९२	६।०।०	३८९	६।०।०	३८६	६।०।०	३८३
६।३०	३।६।५२	४१७	६।६।३२	३९१	६।६।२९	३८८	६।६।२६	३८५	६।६।२३	३८१
७।०	३।१३।४९	४२०	६।१३।३	३९०	६।१२।५७	३८७	६।१२।५१	३८३	६।१२।४४	३८१
७।३०	३।२०।४९	४२६	६।१९।३३	३८८	६।१९।२४	३८५	६।१९।१४	३८३	६।१९।५	३७९
८।०	३।२७।५५	४३४	६।२६।१	३८६	६।२५।४९	३८२	६।२५।३६	३८०	६।२५।२४	३७७
८।३०	४।५।९	४४३	७।२।२७	३८२	७।२।११	३८१	७।१।५६	३७९	७।१।४१	३७६
९।०	४।१२।२२	४५४	७।८।४९	३८१	७।८।२२	३७८	७।८।१५	३७५	७।७।५७	३७२
९।३०	४।२०।६	४५३	७।१५।१०	३७९	७।१४।५०	३७६	७।१४।३०	३७५	७।१४।९	३७४
१०।०	४।२७।३९	४८३	७।२१।२९	३८०	७।२१।६	३७९	७।२०।४५	३७५	७।२०।२३	३७२
१०।३०	५।५।४२	४८१	७।२७।४९	३८२	७।२७।२५	३७९	७।२७।०	३७७	७।२६।३५	३७१
११।०	५।१३।४३	४८७	८।४।११	३८३	८।३।४६	३८०	८।३।१७	३७९	८।२।५०	३७७
११।३०	५।२१।५०	४८९	८।१०।३४	३८९	८।१०।४	३९०	८।९।३६	३८०	८।९।७	३८४
१२।०	६।०।०	४८९	८।१७।३	३९६	८।१६।२४	३९४	८।१६।३	३९२	८।१५।३१	३९१
१२।३०	६।८।९	४८८	८।२३।३९	४०८	८।२३।८	४०६	८।२२।३६	४०५	८।२२।२	४०४
१३।०	६।१६।१७	४८१	९।०।२७	४२१	८।२९।५४	४२०	८।२९।२१	४१८	८।२८।४६	४१७
१३।३०	६।२४।१८	४७३	९।७।२८	४४०	९।६।५४	४४०	९।६।१९	४३९	९।५।४३	४३८
१४।०	७।२।११	४६४	९।१४।४८	४६२	९।१४।१४	४६३	९।१३।३८	४६२	९।१३।१	४६२
१४।३०	७।९।५५	४५३	९।२२।३०	४८६	९।२१।५७	४८६	९।२१।२०	४८८	९।२०।४३	४८९
१५।०	७।१७।२८	४४४	१०।०।२६	५२१	१०।०।३	५२२	९।२९।२८	५२५	९।२८।५२	५२६
१५।३०	७।२४।५२	४३३	१०।९।१७	५५०	१०।८।४५	५५४	१०।८।१३	५५७	१०।७।३८	५६१
१६।०	८।२।५	४२७	१०।१८।२७	५८५	१०।१७।५१	५९१	१०।१७।२०	५९५	१०।१६।५९	६००
१६।३०	८।९।१२	४१९	१०।२८।१२	६१७	१०।२७।५०	६२२	१०।२७।२९	६२९	१०।२६।५९	६३६
१७।०	८।१६।११	४१६	११।८।२९	६४१	११।८।१२	६४७	११।७।५४	६५५	११।७।३५	६६५
१७।३०	८।२३।७	४१३	११।१९।८	६५२	११।१८।५९	६६१	११।१८।४९	६७१	११।१८।४०	६८०
१८।०	९।०।०	४१२	०।०।०	६५२	०।०।०	६६०	०।०।०	६७१	०।०।०	६८०
१८।३०	९।६।५२	४१७	०।१०।५२	६३८	०।११।०	६४८	०।११।११	६५५	०।११।२०	६६५
१९।०	९।१३।४९	४२०	०।२१।३१	६१७	०।२१।४८	६२२	०।२२।६	६२९	०।२२।२५	६३६
१९।३०	९।२०।४९	४२६	१।१।४८	५८५	१।२।१०	५९१	१।२।३५	५९५	१।३।१	६००
२०।०	९।२७।५५	४३४	१।११।२३	५५०	१।१२।१	५५४	१।१२।३०	५५७	१।१३।१	५६१
२०।३०	१०।५।९	४४३	१।२०।४३	५२१	१।२१।१५	५२२	१।२१।४७	५२५	१।२२।२२	५२६
२१।०	१०।१२।२२	४५४	१।२९।२४	४८६	१।२९।५७	४८६	२।०।३२	४८८	२।१।८	४८९
२१।३०	१०।२०।६	४५३	२।७।३०	४६२	२।८।३	४६३	२।८।४०	४६४	२।९।१७	४६२
२२।०	१०।२७।३९	४८३	२।१५।१२	४४०	२।१५।४६	४४०	२।१६।२४	४३७	२।१६।५९	४३८
२२।३०	११।५।४२	४८१	२।२२।३२	४२१	२।२३।६	४२०	२।२३।४१	४१८	२।२४।१७	४१७
२३।०	११।१३।४३	४८७	२।२९।३२	४०७	३।०।६	४०६	३।०।३९	४०५	३।१।१४	४०४
२३।३०	११।२१।५०	४८९	३।६।२०	३९७	३।६।५२	३९४	३।७।२४	३९३	३।७।५८	३९१
२४।०	०।०।०	४८९	३।१२।५७	३८९	३।१३।२६	३८८	३।१३।५७	३८७	३।१४।२९	३८४

लग्न व अक्षांश कला-संस्कार

अक्षांश-कला १०क.	२०क.	३०क.	४०क.	५०क.	६०क.
कला	कला	कला	कला	कला	कला
+५	+१०	+१५	+२०	+२५	३१
५	१०	१५	२०	२५	२९
४	९	१३	१८	२२	२६
४	८	१२	१६	२०	२४
४	७	११	१५	१८	२२
+३	+६	+१०	+१३	+१६	२०
+३	+६	+९	+१२	+१५	+१७
२	५	८	१०	१२	१५
२	४	६	८	१०	१२
२	३	५	६	८	१०
१	२	३	४	५	+६
+०	+१	+१	+२	+२	३
०	०	०	०	०	
−०	−१	−१	−२	−२	−३
१	२	३	४	५	६
१	३	५	६	८	१०
२	४	६	८	१०	१२
−२	−५	−८	−१०	−१२	−१५
−३	−६	−९	−१२	−१५	−१७
३	६	१०	१३	१६	२०
४	७	११	१५	१८	२२
४	८	१२	१६	२०	२४
४	९	१३	१७	२२	२७
−५	−१०	−१५	−२०	−२५	−२९
−५	−१०	−१५	−२०	−२५	−३१
५	१०	१६	२१	२६	३२
५	१०	१६	२१	२७	३३
५	११	१७	२२	२८	३४
६	१२	१८	२४	३०	३५
−६	−१२	−१८	−२४	−३०	−३६
−६	−१२	−१८	−२४	−३०	−३५
५	१०	१६	२१	२७	३३
५	१०	१५	१९	२४	२९
४	८	१२	१६	२०	२३
३	६	९	१२	१५	१८
−२	−३	−४	−६	−८	−९
०	०	०	०	०	
+१	+२	+४	+५	+६	+८
३	६	९	१२	१५	१८
४	८	१२	१६	२०	२४
५	१०	१५	२०	२५	२९
+५	+११	+१७	+२२	+२८	३४
+५	+११	+१७	+२३	+२९	+३५
६	१२	१८	२४	३०	३६
६	१२	१८	२४	३०	३६
६	१२	१८	२४	३०	३५
५	११	१६	२१	२७	३३
५	११	१६	२१	२७	३३
+५	+१०	+१५	+२०	+२५	+३१

हिमाचल के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांशादि

नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
ऊना	३१।३२	७६।१८	−२४।४८	नाहन	३०।३३	७७।२१	−२०।३६
कांगड़ा	३२।५	७६।१८	−२४।४८	पालम पुर	३२।७	७६।३५	[illegible]
कुल्लू	३१।५८	७७।०	−२२।०	मण्डी	३१।४३	७६।५८	[illegible]
कोटखाई	३१।८	७७।३६	−१९।३६	मनाली	३२।१५	७७।५	[illegible]
चम्बा	३२।२९	७६।१०	−२५।२०	रामपुर बुशहर	३१।२९	[illegible]	[illegible]
जोगिन्दर नगर	३१।५०	७६।४५	−२३।०	बिलासपुर	३१।१९	७६।५०	[illegible]
डल्हौजी	३२।२८	७५।५५	−२६।२०	सुन्दरनगर	३१।३०	७६।५१	[illegible]
धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	−२४।२८	सोलन	३०।५५	[illegible]	[illegible]
नालागढ़	३०।५७	७६।२२	−२४।३२	शिमला	३१।६	[illegible]	[illegible]
				हमीरपुर	३१।४३	[illegible]	[illegible]

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० १)

पूर्व रेखांश अं० क०	सा०का० संस्कार सेकण्ड
८। ०	+ ४६
१०। ०	+ ४४
१२। ०	+ ४२
१४। ०	+ ४१
१६। ०	+ ४०
१८। ०	+ ३८
२०। ०	+ ३७
२२। ०	+ ३६
२४। ०	+ ३४
२६। ०	+ ३३
२८। ०	+ ३२
३०। ०	+ ३१
३२। ०	+ २९
३४। ०	+ २८
३६। ०	+ २७
३८। ०	+ २५
४०। ०	+ २४
४२। ०	+ २३
४४। ०	+ २१
४६। ०	+ २०
४८। ०	+ १९
५०। ०	+ १७
५२। ०	+ १६
५४। ०	+ १५
५६। ०	+ १३
५८। ०	+ १२
६०। ०	+ ११
६२। ०	+ १०
६४। ०	+ ८
६६। ०	+ ७
६८। ०	+ ६
७०। ०	+ ४
७२। ०	+ ३
७४। ०	+ २
७६।३०	०
७९। ०	- २
८१। ०	- ३
८३। ०	- ४
८५। ०	- ६
८७। ०	- ७
८९। ०	- ८
९१। ०	- १०
९३। ०	- ११
९५। ०	- १२
९७। ०	- १३
९९। ०	- १५
१०१। ०	- १६
१०३। ०	- १७

अयनांश सारिणी (भाग ३) (नूतन संस्कार)

उपकरण= निरयण राहु+ सारिणी १ म, द्वितीय से प्राप्त मध्यम अयनांश (—सायन राहु)

उप. रा.।अं	संस्कार वि.
०। ०	—०
०।१५	—५
१। ०	—९
१।१५	—१२
२। ०	—१५
२।१५	—१६
३। ०	—१७
३।१५	—१६
४। ०	—१५
४।१५	—१२
५। ०	— ९
५।१५	—५
६। ०	+०
६।१५	+५
७। ०	+९
७।१५	+१२
८। ०	+१५
८।१५	+१६
९। ०	+१७
९।१५	+१६
१०। ०	+१५
१०।१५	+१२
११। ०	+९
११।१५	+५

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० ४)

घं० मि०	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०
०	०। ०	०। १	०। २	०। २	०। ३	०। ४	०। ५	०। ६	०। ७	०। ७	०। ८	०। ९
१	०।१०	०।११	०।११	०।१२	०।१३	०।१४	०।१५	०।१६	०।१६	०।१७	०।१८	०।१९
२	०।२०	०।२१	०।२१	०।२२	०।२३	०।२४	०।२५	०।२५	०।२६	०।२७	०।२८	०।२९
३	०।३०	०।३०	०।३१	०।३२	०।३३	०।३४	०।३४	०।३५	०।३६	०।३७	०।३८	०।३९
४	०।३९	०।४०	०।४१	०।४२	०।४३	०।४४	०।४४	०।४५	०।४६	०।४७	०।४८	०।४८
५	०।४९	०।५०	०।५१	०।५२	०।५३	०।५३	०।५४	०।५५	०।५६	०।५७	०।५७	०।५८
६	०।५९	१। ०	१। १	१। २	१। २	१। ३	१। ४	१। ५	१। ६	१। ७	१। ७	१। ८
७	१। ९	१।१०	१।११	१।११	१।१२	१।१३	१।१४	१।१५	१।१६	१।१६	१।१७	१।१८
८	१।१९	१।२०	१।२०	१।२१	१।२२	१।२३	१।२४	१।२५	१।२५	१।२६	१।२७	१।२८
९	१।२९	१।३०	१।३०	१।३१	१।३२	१।३३	१।३४	१।३४	१।३५	१।३६	१।३७	१।३८
१०	१।३९	१।३९	१।४०	१।४१	१।४२	१।४३	१।४३	१।४४	१।४५	१।४६	१।४७	१।४८
११	१।४८	१।४९	१।५०	१।५१	१।५२	१।५३	१।५३	१।५४	१।५५	१।५६	१।५७	१।५७
१२	१।५८	१।५९	२। ०	२। १	२। २	२। २	२। ३	२। ४	२। ५	२। ६	२। ६	२। ७
१३	२। ८	२। ९	२।१०	२।११	२।११	२।१२	२।१३	२।१४	२।१५	२।१६	२।१६	२।१७
१४	२।१८	२।१९	२।२०	२।२०	२।२१	२।२२	२।२३	२।२४	२।२५	२।२५	२।२६	२।२७
१५	२।२८	२।२९	२।२९	२।३०	२।३१	२।३२	२।३३	२।३४	२।३४	२।३५	२।३६	२।३७
१६	२।३८	२।३९	२।३९	२।४०	२।४१	२।४२	२।४३	२।४३	२।४४	२।४५	२।४६	२।४७
१७	२।४८	२।४८	२।४९	२।५०	२।५१	२।५२	२।५२	२।५३	२।५४	२।५५	२।५६	२।५७
१८	२।५७	२।५८	२।५९	३। ०	३। १	३। २	३। २	३। ३	३। ४	३। ५	३। ६	३। ६
१९	३। ७	३। ८	३। ९	३।१०	३।११	३।११	३।१२	३।१३	३।१४	३।१५	३।१५	३।१६
२०	३।१७	३।१८	३।१९	३।२०	३।२०	३।२१	३।२२	३।२३	३।२४	३।२५	३।२५	३।२६
२१	३।२७	३।२८	३।२९	३।२९	३।३०	३।३१	३।३२	३।३३	३।३४	३।३४	३।३५	३।३६
२२	३।३७	३।३८	३।३८	३।३९	३।४०	३।४१	३।४२	३।४३	३।४३	३।४४	३।४५	३।४६
२३	३।४७	३।४८	३।४८	३।४९	३।५०	३।५१	३।५२	३।५२	३।५३	३।५४	३।५५	३।५६

अयनांश-सारिणी भाग (१ म)

ईस्वी सन्	अयनांश अं. क. वि.	ईस्वी सन्	अयनांश अं. क. वि.
१९२१	२२।४५।१३	१९५१	२३।१०।२
१९२२	२२।४६। ३	१९५२	२३।११।१
१९२३	२२।४६।५४	१९५३	२३।१२।
१९२४	२२।४७।४४	१९५४	२३।१२।५
१९२५	२२।४८।३४	१९५५	२३।१३।४
१९२६	२२।४९।२५	१९५६	२३।१४।३
१९२७	२२।५०।१५	१९५७	२३।१५।२
१९२८	२२।५१। ५	१९५८	२३।१६।१३
१९२९	२२।५१।५५	१९५९	२३।१७।
१९३०	२२।५२।४५	१९६०	२३।१७।५३
१९३१	२२।५३।३६	१९६१	२३।१८।४४
१९३२	२२।५४।२६	१९६२	२३।१९।३४
१९३३	२२।५५।१६	१९६३	२३।२०।२४
१९३४	२२।५६। ७	१९६४	२३।२१।१५
१९३५	२२।५६।५७	१९६५	२३।२२। ५
१९३६	२२।५७।४७	१९६६	२३।२२।५५
१९३७	२२।५८।३७	१९६७	२३।२३।४५
१९३८	२२।५९।२८	१९६८	२३।२४।३६
१९३९	२३। ०।१८	१९६९	२३।२५।२६
१९४०	२३। १। ८	१९७०	२३।२६।१६
१९४१	२३। १।५८	१९७१	२३।२७। ६
१९४२	२३। २।४९	१९७२	२३।२७।५७
१९४३	२३। ३।३९	१९७३	२३।२८।४७
१९४४	२३। ४।२९	१९७४	२३।२९।३७
१९४५	२३। ५।१९	१९७५	२३।३०।२७
१९४६	२३। ६।१०	१९७६	२३।३१।१८
१९४७	२३। ७। ०	१९७७	२३।३२। ८
१९४८	२३। ७।५०	१९७८	२३।३२।५८
१९४९	२३। ८।४१	१९७९	२३।३३।४८
१९५०	२३। ९।३१	१९८०	२३।३४।३९

अयनांश सारिणी (भाग २ य)

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	बि०	बि०	बि०	बि०	बि०	बि०	बि०	बि०	बि०	बि०
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० १)

सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०
	घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०
१९७२	६।३८।१०	१८८८	६।३९।३०	+१९००	६।३९।५४	१९१२	६।३६।१८	१९२४	६।३६।३९	१९३६	६।३७। ४	१९४८	६।३७।२४	१९६०	[illegible]
१९७३	६।४१।१०	१८८९	६।४२।२९	१९०१	६।३८।५७	१९१३	६।३९।१८	१९२५	६।३९।३९	१९३७	६।४०। ३	१९४९	६।४०।२४	१९६१	६।४०।४८
१९७४	६।४०।१२	१८९०	६।४१।३२	१९०२	६।३७।५९	१९१४	६।३८।२१	१९२६	६।३८।४२	१९३८	६।३९। ६	१९५०	६।३९।२७	१९६२	६।३९।५०
१९७५	६।३९।१५	१८९१	६।४०।३४	१९०३	६।३७। १	१९१५	६।३७।२४	१९२७	६।३७।४४	१९३९	६।३८। ८	१९५१	६।३८।३०	१९६३	६।३८।५३
१९७६	६।३८।१७	१८९२	६।३९।३७	१९०४	६।३६। ४	१९१६	६।३६।२७	१९२८	६।३६।४७	१९४०	६।३७।११	१९५२	६।३७।३३	१९६४	६।३७।५६
१९७७	६।४१।१६	१८९३	६।४२।३७	१९०५	६।३९। ३	१९१७	६।३९।२६	१९२९	६।३९।४६	१९४१	६।४०।१०	१९५३	६।४०।३३	१९६५	६।४०।५५
१९७८	६।४०।१९	१८९४	६।४१।४०	१९०६	६।३८। ५	१९१८	६।३८।२९	१९३०	६।३८।४९	१९४२	६।३९।१२	१९५४	६।३९।३५	१९६६	६।३९।५८
१९७९	६।३९।२२	१८९५	६।४०।४३	१९०७	६।३७। ७	१९१९	६।३७।३२	१९३१	६।३७।५२	१९४३	६।३८।१५	१९५५	६।३८।३८	१९६७	६।३९। ०
१९८०	६।३८।२४	१८९६	६।३९।४६	१९०८	६।३६। ९	१९२०	६।३६।३४	१९३२	६।३६।५६	१९४४	६।३७।१७	१९५६	६।३७।४१	१९६८	६।३८। ३
१९८१	६।४१।२३	१८९७	६।४२।४५	१९०९	६।३९। ९	१९२१	६।३९।३३	१९३३	६।३९।५५	१९४५	६।४०।१९	१९५७	६।४०।४०	१९६९	६।४१। ३
१९८२	६।४०।२६	१८९८	६।४१।४८	१९१०	६।३८।१२	१९२२	६।३८।३५	१९३४	६।३८।५८	१९४६	६।३९।१९	१९५८	६।३९।४३	१९७०	६।४०। ५
१९८३	६।३९।२९	१८९९	६।४०।५१	१९११	६।३७।१५	१९२३	६।३७।३८	१९३५	६।३८। १	१९४७	६।३८।२२	१९५९	६।३८।४५	१९७१	६।३९। ७

+ सन् १९०० प्लुतवर्ष (लीप इयर) नहीं था।

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० २)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	तारीख
	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	
१	०। ०। ०	२। २।१३	३।५२।३७	५।५४।५०	७।५३। ७	९।५५।२१	११।५३।३८	१३।५५।५०	१५।५८। ४	१७।५६।२१	१९।५८।३४	२१।५६।५०	१
२	०। ३।५७	२। ६। ९	३।५६।३३	५।५८।४७	७।५७। ४	९।५९।१७	११।५७।३४	१३।५९।४७	१६। २। ०	१८। ०।१७	२०। २।३१	२२। ०।४७	२
३	०। ७।५३	२।१०। ६	४। ०।३०	६। २।४३	८। १। ०	१०। ३।१४	१२। १।३१	१४। ३।४४	१६। ५।५७	१८। ४।१४	२०। ६।२७	२२। ४।४३	३
४	०।११।५०	२।१४। २	४। ४।२६	६। ६।४०	८। ४।५७	१०। ७।१०	१२। ५।२७	१४। ७।४०	१६। ९।५३	१८। ८।१०	२०।१०।२४	२२। ८।४०	४
५	०।१५।४६	२।१७।५९	४। ८।२३	६।१०।३६	८। ८।५३	१०।११। ७	१२। ९।२४	१४।११।३६	१६।१३।५०	१८।१२। ७	२०।१४।२०	२२।१२।३६	५
६	०।१९।४३	२।२१।५५	४।१२।१९	६।१४।३३	८।१२।५०	१०।१५। ३	१२।१३।२१	१४।१५।३३	१६।१७।४६	१८।१६। ३	२०।१८।१७	२२।१६।३३	६
७	०।२३।३९	२।२५।५२	४।१६।१६	६।१८।२९	८।१६।४६	१०।१९। ०	१२।१७।१७	१४।१९।२९	१६।२१।४३	१८।२०। ०	२०।२२।१३	२२।२०।३०	७
८	०।२७।३६	२।२९।४८	४।२०।१२	६।२२।२६	८।२०।४३	१०।२२।५६	१२।२१।१४	१४।२३।२६	१६।२५।४०	१८।२३।५७	२०।२६।१०	२२।२४।२७	८
९	०।३१।३२	२।३३।४५	४।२४। ९	६।२६।२२	८।२४।३९	१०।२६।५३	१२।२५।१०	१४।२७।२३	१६।२९।३७	१८।२७।५४	२०।३०। ६	२२।२८।२३	९
१०	०।३५।२९	२।३७।४२	४।२८। ५	६।३०।१९	८।२८।३६	१०।३०।४९	१२।२९। ६	१४।३१।२०	१६।३३।३३	१८।३१।५०	२०।३४। ३	२२।३२।२०	१०
११	०।३९।२५	२।४१।३८	४।३२। २	६।३४।१६	८।३२।३२	१०।३४।४६	१२।३३। ३	१४।३५।१६	१६।३७।३०	१८।३५।४७	२०।३८। ०	२२।३६।१६	११
१२	०।४३।२२	२।४५।३५	४।३५।५९	६।३८।१३	८।३६।२९	१०।३८।४२	१२।३६।५९	१४।३९।१३	१६।४१।२६	१८।३९।४३	२०।४१।५६	२२।४०।१३	१२
१३	०।४७।१८	२।४९।३२	४।३९।५६	६।४२। ९	८।४०।२५	१०।४२।३९	१२।४०।५६	१४।४३। ९	१६।४५।२३	१८।४३।४०	२०।४५।५२	२२।४४। ९	१३
१४	०।५१।१५	२।५३।२८	४।४३।५२	६।४६। ६	८।४४।२२	१०।४६।३५	१२।४४।५२	१४।४७। ६	१६।४९।१९	१८।४७।३६	२०।४९।४९	२२।४८। ६	१४
१५	०।५५।१२	२।५७।२५	४।४७।४९	६।५०। २	८।४८।१८	१०।५०।३२	१२।४८।४९	१४।५१। २	१६।५३।१६	१८।५१।३३	२०।५३।४५	२२।५२। २	१५
१६	०।५९। ८	३। १।२१	४।५१।४५	६।५३।५९	८।५२।१५	१०।५४।२८	१२।५२।४५	१४।५४।५९	१६।५७।१२	१८।५५।३०	२०।५७।४२	२२।५५।५९	१६
१७	१। ३। ४	३। ५।१८	४।५५।४२	६।५७।५५	८।५६।११	१०।५८।२५	१२।५६।४२	१४।५८।५५	१७। १। ९	१८।५९।२६	२१। १।३९	२२।५९।५६	१७
१८	१। ७। १	३। ९।१४	४।५९।३८	७। १।५२	९। ०। ८	११। २।२१	१३। ०।३८	१५। २।५२	१७। ५। ५	१९। ३।२२	२१। ५।३६	२३। ३।५३	१८
१९	१।१०।५७	३।१३।११	५। ३।३५	७। ५।४८	९। ४। ४	११। ६।१८	१३। ४।३५	१५। ६।४८	१७। ९। २	१९। ७।१९	२१। ९।३२	२३। ७।४९	१९
२०	१।१४।५४	३।१७। ८	५। ७।३१	७। ९।४५	९। ८। १	११।१०।१५	१३। ८।३२	१५।१०।४५	१७।१२।५८	१९।११।१५	२१।१३।२९	२३।११।४६	२०
२१	१।१८।५१	३।२१। ५	५।११।२८	७।१३।४१	९।११।५८	११।१४।१२	१३।१२।२९	१५।१४।४१	१७।१६।५५	१९।१५।१२	२१।१७।२५	२३।१५।४२	२१
२२	१।२२।४८	३।२५। १	५।१५।२५	७।१७।३८	९।१५।५५	११।१८। ८	१३।१६।२५	१५।१८।३८	१७।२०।५१	१९।१९। ८	२१।२१।२२	२३।१९।३९	२२
२३	१।२६।४४	३।२८।५८	५।१९।२२	७।२१।३४	९।१९।५१	११।२२। ५	१३।२०।२२	१५।२२।३४	१७।२४।४८	१९।२३। ५	२१।२५।१८	२३।२३।३५	२३
२४	१।३०।४१	३।३२।५४	५।२३।१८	७।२५।३१	९।२३।४८	११।२६। १	१३।२४।१८	१५।२६।३१	१७।२८।४४	१९।२७। १	२१।२९।१५	२३।२७।३२	२४
२५	१।३४।३७	३।३६।५१	५।२७।१५	७।२९।२८	९।२७।४४	११।२९।५८	१३।२८।१५	१५।३०।२७	१७।३२।४१	१९।३०।५८	२१।३३।११	२३।३१।२८	२५
२६	१।३८।३४	३।४०।४७	५।३१।११	७।३३।२४	९।३१।४१	११।३३।५४	१३।३२।११	१५।३४।२४	१७।३६।३७	१९।३४।५४	२१।३७। ८	२३।३५।२५	२६
२७	१।४२।३०	३।४४।४४	५।३५। ८	७।३७।२०	९।३५।३७	११।३७।५१	१३।३६। ८	१५।३८।२०	१७।४०।३४	१९।३८।५१	२१।४१। ४	२३।३९।२१	२७
२८	१।४६।२७	३।४८।४०	५।३९। ५	७।४१।१७	९।३९।३४	११।४१।४७	१३।४०। ४	१५।४२।१७	१७।४४।३१	१९।४२।४८	२१।४५। १	२३।४३।१८	२८
२९	१।५०।२३	३।५२।३७	५।४३। १	७।४५।१३	९।४३।३०	११।४५।४४	१३।४४। १	१५।४६।१४	१७।४८।२८	१९।४६।४५	२१।४८।५७	२३।४७।१४	२९
३०	१।५४।२०	. . .	५।४६।५८	७।४९।१०	९।४७।२७	११।४९।४१	१३।४७।५७	१५।५०।११	१७।५२।२४	१९।५०।४१	२१।५२।५४	२३।५१।११	३०
३१	१।५८।१६	. . . .	५।५०।५४		९।५१।२४		१३।५१।५४	१५।५४। ७		१९।५४।३८	. . .	२३।५५। ७	३१
												२३।५९। ३	३२

सांपातिक काल
(कोष्टक नं० १)

पूर्व रेखांश	सा०का० संस्कार
अं० क०	सेकण्ड
८। ०	+ ४६
१०। ०	+ ४४
१२। ०	+ ४२
१४। ०	+ ४१
१६। ०	+ ४०
१८। ०	+ ३८
२०। ०	+ ३७
२२। ०	+ ३६
२४। ०	+ ३४
२६। ०	+ ३३
२८। ०	+ ३२
३०। ०	+ ३१
३२। ०	+ २९
३४। ०	+ २८
३६। ०	+ २७
३८। ०	+ २५
४०। ०	+ २४
४२। ०	+ २३
४४। ०	+ २१
४६। ०	+ २०
४८। ०	+ १९
५०। ०	+ १७
५२। ०	+ १६
५४। ०	+ १५
५६। ०	+ १३
५८। ०	+ १२
६०। ०	+ ११
६२। ०	+ १०
६४। ०	+ ८
६६। ०	+ ७
६८। ०	+ ६
७०। ०	+ ४
७२। ०	+ ३
७४। ०	+ २
७६।३०	०
७९। ०	- २
८१। ०	- ३
८३। ०	- ४
८५। ०	- ६
८७। ०	- ७
८९। ०	- ८
९१। ०	- १०
९३। ०	- ११
९५। ०	- १२
९७। ०	- १३
९९। ०	- १५
१०१। ०	- १६
१०३। ०	- १७

अयनांश सारिणी (भाग ३)
(धूनन संस्कार)
उपकरण = निरयण राहु + सारिणी १ म, द्वितीय सें प्राप्त मध्यम अयनांश (= सायन राहु)

उप. रा.।अं	संस्कार वि.
०। ०	—०
०।१५	—५
१। ०	—९
१।१५	—१२
२। ०	—१५
२।१५	—१६
३। ०	—१७
३।१५	—१६
४। ०	—१५
४।१५	—१२
५। ०	— ९
५।१५	—५
६। ०	+०
६।१५	+५
७। ०	+९
७।१५	+१२
८। ०	+१५
८।१५	+१६
९। ०	+१७
९।१५	+१६
१०। ०	+१५
१०।१५	+१२
११। ०	+९
११।१५	+५

घं० मि०	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०
०	०। ०	०। १	०। २	०। २	०। ३	०। ४	०। ५	०। ६	०। ७	०। ७	०। ८	०। ९
१	०।१०	०।११	०।११	०।१२	०।१३	०।१४	०।१५	०।१६	०।१६	०।१७	०।१८	०।१९
२	०।२०	०।२१	०।२१	०।२२	०।२३	०।२४	०।२५	०।२५	०।२६	०।२७	०।२८	०।२९
३	०।३०	०।३०	०।३१	०।३२	०।३३	०।३४	०।३४	०।३५	०।३६	०।३७	०।३८	०।३९
४	०।३९	०।४०	०।४१	०।४२	०।४३	०।४४	०।४४	०।४५	०।४६	०।४७	०।४८	०।४८
५	०।४९	०।५०	०।५१	०।५२	०।५३	०।५३	०।५४	०।५५	०।५६	०।५७	०।५७	०।५८
६	०।५९	१। ०	१। १	१। २	१। २	१। ३	१। ४	१। ५	१। ६	१। ७	१। ७	१। ८
७	१। ९	१।१०	१।११	१।११	१।१२	१।१३	१।१४	१।१५	१।१६	१।१६	१।१७	१।१८
८	१।१९	१।२०	१।२०	१।२१	१।२२	१।२३	१।२४	१।२५	१।२५	१।२६	१।२७	१।२८
९	१।२९	१।३०	१।३०	१।३१	१।३२	१।३३	१।३४	१।३४	१।३५	१।३६	१।३७	१।३८
१०	१।३९	१।३९	१।४०	१।४१	१।४२	१।४३	१।४३	१।४४	१।४५	१।४६	१।४७	१।४८
११	१।४८	१।४९	१।५०	१।५१	१।५२	१।५३	१।५३	१।५४	१।५५	१।५६	१।५७	१।५७
१२	१।५८	१।५९	२। ०	२। १	२। २	२। २	२। ३	२। ४	२। ५	२। ६	२। ६	२। ७
१३	२। ८	२। ९	२।१०	२।११	२।११	२।१२	२।१३	२।१४	२।१५	२।१६	२।१६	२।१७
१४	२।१८	२।१९	२।२०	२।२०	२।२१	२।२२	२।२३	२।२४	२।२५	२।२५	२।२६	२।२७
१५	२।२८	२।२९	२।२९	२।३०	२।३१	२।३२	२।३३	२।३४	२।३४	२।३५	२।३६	२।३७
१६	२।३८	२।३९	२।३९	२।४०	२।४१	२।४२	२।४३	२।४३	२।४४	२।४५	२।४६	२।४७
१७	२।४८	२।४८	२।४९	२।५०	२।५१	२।५२	२।५२	२।५३	२।५४	२।५५	२।५६	२।५७
१८	२।५७	२।५८	२।५९	३। ०	३। १	३। २	३। २	३। ३	३। ४	३। ५	३। ६	३। ६
१९	३। ७	३। ८	३। ९	३।१०	३।११	३।११	३।१२	३।१३	३।१४	३।१५	३।१५	३।१६
२०	३।१७	३।१८	३।१९	३।२०	३।२०	३।२१	३।२२	३।२३	३।२४	३।२५	३।२५	३।२६
२१	३।२७	३।२८	३।२९	३।२९	३।३०	३।३१	३।३२	३।३३	३।३४	३।३४	३।३५	३।३६
२२	३।३७	३।३८	३।३८	३।३९	३।४०	३।४१	३।४२	३।४३	३।४३	३।४४	३।४५	३।४६
२३	३।४७	३।४८	३।४८	३।४९	३।५०	३।५१	३।५२	३।५२	३।५३	३।५४	३।५५	३।५६

अयनांश सारिणी (भाग २ य)

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०
										४
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	८
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	१२
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१६
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	२०
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२५
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२९
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	३३
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३७
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	४१
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४६
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	५०
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	

अयनांश-सारिणी भाग (१ म)

ईस्वी सन्	अयनांश अं. क. वि.	ईस्वी सन्	अयनांश अं. क. वि.
१९२१	२२।४५।१३	१९५१	२३।१०।२१
१९२२	२२।४६। ३	१९५२	२३।११।११
१९२३	२२।४६।५४	१९५३	२३।१२। ३
१९२४	२२।४७।४४	१९५४	२३।१२।५३
१९२५	२२।४८।३४	१९५५	२३।१३।४३
१९२६	२२।४९।२५	१९५६	२३।१४।३३
१९२७	२२।५०।१५	१९५७	२३।१५।२३
१९२८	२२।५१। ५	१९५८	२३।१६।१३
१९२९	२२।५१।५५	१९५९	२३।१७। ३
१९३०	२२।५२।४५	१९६०	२३।१७।५३
१९३१	२२।५३।३६	१९६१	२३।१८।४४
१९३२	२२।५४।२६	१९६२	२३।१९।३४
१९३३	२२।५५।१६	१९६३	२३।२०।२४
१९३४	२२।५६। ७	१९६४	२३।२१।१५
१९३५	२२।५६।५७	१९६५	२३।२२। ५
१९३६	२२।५७।४७	१९६६	२३।२२।५५
१९३७	२२।५८।३७	१९६७	२३।२३।४५
१९३८	२२।५९।२८	१९६८	२३।२४।३६
१९३९	२३। ०।१८	१९६९	२३।२५।२६
१९४०	२३। १। ८	१९७०	२३।२६।१६
१९४१	२३। १।५८	१९७१	२३।२७। ६
१९४२	२३। २।४९	१९७२	२३।२७।५७
१९४३	२३। ३।३९	१९७३	२३।२८।४७
१९४४	२३। ४।२९	१९७४	२३।२९।३७
१९४५	२३। ५।१९	१९७५	२३।३०।२७
१९४६	२३। ६।१०	१९७६	२३।३१।१८
१९४७	२३। ७। ०	१९७७	२३।३२। ८
१९४८	२३। ७।५०	१९७८	२३।३२।५८
१९४९	२३। ८।४१	१९७९	२३।३[illegible]
१९५०	२३। ९।३१	१९८०	[illegible]

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० १)

सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०
	घं०मि०सें०		घं०मि०सें०		घं०मि०सें०		घं०मि०सें०		घं०मि०सें०		घं०मि०सें०		घं०मि०सें०		घं०मि०सें०
१९७२	६।३८।१०	१८८८	६।३९।३०	+१९००	६।३९।५४	१९१२	६।३६।१८	१९२४	६।३६।३९	१९३६	६।३७। ४	१९४८	६।३७।२४	१९६०	[illegible]
१९७३	६।४१।१०	१८८९	६।४२।२९	१९०१	६।३८।५७	१९१३	६।३९।१८	१९२५	६।३९।३९	१९३७	६।४०। ३	१९४९	६।४०।२४	१९६१*	६।४०।[illegible]
१९७४	६।४०।१२	१८९०	६।४१।३२	१९०२	६।३७।५९	१९१४	६।३८।२१	१९२६	६।३८।४२	१९३८	६।३९। ६	१९५०	६।३९।२६	१९६२	६।३९।[illegible]
१९७५	६।३९।१५	१८९१	६।४०।३४	१९०३	६।३७। १	१९१५	६।३७।२४	१९२७	६।३७।४४	१९३९	६।३८। ८	१९५१	६।३८।३०	१९६३	६।३८।५३
१९७६	६।३८।१७	१८९२	६।३९।३७	१९०४	६।३६। ४	१९१६	६।३६।२७	१९२८	६।३६।४७	१९४०	६।३७।११	१९५२	६।३७।३३	१९६४	६।३७।५६
१९७७	६।४१।१६	१८९३	६।४२।३७	१९०५	६।३९। ३	१९१७	६।३९।२६	१९२९	६।३९।४६	१९४१	६।४०।१०	१९५३	६।४०।३३	१९६५	६।४०।५५
१९७८	६।४०।१९	१८९४	६।४१।४०	१९०६	६।३८। ५	१९१८	६।३८।२९	१९३०	६।३८।४९	१९४२	६।३९।१२	१९५४	६।३९।३५	१९६६	६।३९।५८
१९७९	६।३९।२२	१८९५	६।४०।४३	१९०७	६।३७। ७	१९१९	६।३७।३२	१९३१	६।३७।५२	१९४३	६।३८।१५	१९५५	६।३८।३८	१९६७	६।३९। ०
१९८०	६।३८।२४	१८९६	६।३९।४६	१९०८	६।३६। ९	१९२०	६।३६।३४	१९३२	६।३६।५६	१९४४	६।३७।१७	१९५६	६।३७।४१	१९६८	६।३८। ३
१९८१	६।४१।२३	१८९७	६।४२।४५	१९०९	६।३९। ९	१९२१	६।३९।३३	१९३३	६।३९।५५	१९४५	६।४०।१६	१९५७	६।४०।४०	१९६९	६।४१। २
१९८२	६।४०।२६	१८९८	६।४१।४८	१९१०	६।३८।१२	१९२२	६।३८।३५	१९३४	६।३८।५८	१९४६	६।३९।१९	१९५८	६।३९।४३	१९७०	६।४०। ५
१९८३	६।३९।२९	१८९९	६।४०।५१	१९११	६।३७।१५	१९२३	६।३७।३८	१९३५	६।३८। १	१९४७	६।३८।२२	१९५९	६।३८।४५	१९७१	६।३९। ७

+ सन् १९०० [illegible] (लीप इयर) नहीं था ।

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० २)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	तारीख
	घं०मि०सें०	घं०मि०सें०	घं०मि०सें०	घं०मि०सें०	घं०मि०सें०	घं०मि०सें०	घं०मि०सें०	घं०मि०सें०	घं०मि०सें०	घं०मि०सें०	घं०मि०सें०	घं०मि०सें०	
१	०। ०। ०	२। २।१३	३।५२।३७	५।५४।५०	७।५३। ७	९।५५।२१	११।५३।३८	१३।५५।५०	१५।५८। ४	१७।५६।२१	१९।५८।३४	२१।५६।५०	१
२	०। ३।५७	२। ६। ९	३।५६।३३	५।५८।४७	७।५७। ४	९।५९।१७	११।५७।३४	१३।५९।४७	१६। २। ०	१८। ०।१७	२०। २।३१	२२। ०।४७	२
३	०। ७।५३	२।१०। ६	४। ०।३०	६। २।४३	८। १। ०	१०। ३।१४	१२। १।३१	१४। ३।४४	१६। ५।५७	१८। ४।१४	२०। ६।२७	२२। ४।४३	३
४	०।११।५०	२।१४। २	४। ४।२६	६। ६।४०	८। ४।५७	१०। ७।१०	१२। ५।२७	१४। ७।४०	१६। ९।५३	१८। ८।१०	२०।१०।२४	२२। ८।४०	४
५	०।१५।४६	२।१७।५९	४। ८।२३	६।१०।३६	८। ८।५३	१०।११। ७	१२। ९।२४	१४।११।३६	१६।१३।५०	१८।१२। ७	२०।१४।२०	२२।१२।३६	५
६	०।१९।४३	२।२१।५५	४।१२।१९	६।१४।३३	८।१२।५०	१०।१५। ३	१२।१३।२१	१४।१५।३३	१६।१७।४६	१८।१६। ३	२०।१८।१७	२२।१६।३३	६
७	०।२३।३९	२।२५।५२	४।१६।१६	६।१८।२९	८।१६।४६	१०।१९। ०	१२।१७।१७	१४।१९।२९	१६।२१।४३	१८।२०। ०	२०।२२।१३	२२।२०।३०	७
८	०।२७।३६	२।२९।४८	४।२०।१२	६।२२।२६	८।२०।४३	१०।२२।५६	१२।२१।१४	१४।२३।२६	१६।२५।४०	१८।२३।५७	२०।२६।१०	२२।२४।२७	८
९	०।३१।३२	२।३३।४५	४।२४। ९	६।२६।२२	८।२४।३९	१०।२६।५३	१२।२५।१०	१४।२७।२३	१६।२९।३७	१८।२७।५४	२०।३०। ६	२२।२८।२३	९
१०	०।३५।२९	२।३७।४२	४।२८। ५	६।३०।१९	८।२८।३६	१०।३०।४९	१२।२९। ६	१४।३१।२०	१६।३३।३३	१८।३१।५०	२०।३४। ३	२२।३२।२०	१०
११	०।३९।२५	२।४१।३९	४।३२। २	६।३४।१६	८।३२।३२	१०।३४।४६	१२।३३। ३	१४।३५।१६	१६।३७।३०	१८।३५।४७	२०।३८। ०	२२।३६।१६	११
१२	०।४३।२२	२।४५।३५	४।३५।५९	६।३८।१३	८।३६।२९	१०।३८।४२	१२।३६।५९	१४।३९।१३	१६।४१।२६	१८।३९।४३	२०।४१।५६	२२।४०।१३	१२
१३	०।४७।१८	२।४९।३२	४।३९।५६	६।४२। ९	८।४०।२५	१०।४२।३९	१२।४०।५६	१४।४३। ९	१६।४५।२३	१८।४३।४०	२०।४५।५२	२२।४४। ९	१३
१४	०।५१।१५	२।५३।२८	४।४३।५२	६।४६। ६	८।४४।२२	१०।४६।३५	१२।४४।५२	१४।४७। ६	१६।४९।१९	१८।४७।३७	२०।४९।४९	२२।४८। ६	१४
१५	०।५५।१२	२।५७।२५	४।४७।४९	६।५०। २	८।४८।१८	१०।५०।३२	१२।४८।४९	१४।५१। २	१६।५३।१६	१८।५१।३३	२०।५३।४५	२२।५२। २	१५
१६	०।५९। ८	३। १।२१	४।५१।४५	६।५३।५९	८।५२।१५	१०।५४।२८	१२।५२।४५	१४।५४।५९	१६।५७।१२	१८।५५।३०	२०।५७।४२	२२।५५।५९	१६
१७	१। ३। ४	३। ५।१८	४।५५।४२	६।५७।५५	८।५६।११	१०।५८।२५	१२।५६।४२	१४।५८।५५	१७। १। ९	१८।५९।२६	२१। १।३९	२२।५९।५६	१७
१८	१। ७। १	३। ९।१४	४।५९।३८	७। १।५२	९। ०। ८	११। २।२१	१३। ०।३८	१५। २।५२	१७। ५। ५	१९। ३।२२	२१। ५।३६	२३। ३।५३	१८
१९	१।१०।५७	३।१३।११	५। ३।३५	७। ५।४८	९। ४। ४	११। ६।१८	१३। ४।३५	१५। ६।४८	१७। ९। २	१९। ७।१९	२१। ९।३२	२३। ७।४९	१९
२०	१।१४।५४	३।१७। ८	५। ७।३१	७। ९।४५	९। ८। १	११।१०।१५	१३। ८।३२	१५।१०।४५	१७।१२।५८	१९।११।१५	२१।१३।२९	२३।११।४६	२०
२१	१।१८।५१	३।२१। ५	५।११।२८	७।१३।४१	९।११।५८	११।१४।१२	१३।१२।२९	१५।१४।४१	१७।१६।५५	१९।१५।१२	२१।१७।२५	२३।१५।४२	२१
२२	१।२२।४८	३।२५। १	५।१५।२५	७।१७।३८	९।१५।५५	११।१८। ८	१३।१६।२५	१५।१८।३८	१७।२०।५१	१९।१९। ८	२१।२१।२२	२३।१९।३९	२२
२३	१।२६।४४	३।२८।५८	५।१९।२२	७।२१।३४	९।१९।५१	११।२२। ५	१३।२०।२२	१५।२२।३४	१७।२४।४८	१९।२३। ५	२१।२५।१८	२३।२३।३५	२३
२४	१।३०।४१	३।३२।५४	५।२३।१८	७।२५।३१	९।२३।४८	११।२६। १	१३।२४।१८	१५।२६।३१	१७।२८।४४	१९।२७। १	२१।२९।१५	२३।२७।३२	२४
२५	१।३४।३७	३।३६।५१	५।२७।१५	७।२९।२८	९।२७।४४	११।२९।५८	१३।२८।१५	१५।३०।२७	१७।३२।४१	१९।३०।५८	२१।३३।११	२३।३१।२८	२५
२६	१।३८।३४	३।४०।४७	५।३१।११	७।३३।२४	९।३१।४१	११।३३।५४	१३।३२।११	१५।३४।२४	१७।३६।३७	१९।३४।५४	२१।३७। ८	२३।३५।२५	२६
२७	१।४२।३०	३।४४।४४	५।३५। ८	७।३७।२०	९।३५।३७	११।३७।५१	१३।३६। ८	१५।३८।२०	१७।४०।३४	१९।३८।५१	२१।४१। ४	२३।३९।२१	२७
२८	१।४६।२७	३।४८।४०	५।३९। ५	७।४१।१७	९।३९।३४	११।४१।४७	१३।४०। ४	१५।४२।१७	१७।४४।३१	१९।४२।४८	२१।४५। १	२३।४३।१८	२८
२९	१।५०।२३	३।५२।३७	५।४३। १	७।४५।१३	९।४३।३०	११।४५।४४	१३।४४। १	१५।४६।१४	१७।४८।२८	१९।४६।४५	२१।४८।५७	२३।४७।१४	२९
३०	१।५४।२०	. . . .	५।४६।५८	७।४९।१०	९।४७।२७	११।४९।४१	१३।४७।५७	१५।५०।११	१७।५२।२४	१९।५०।४१	२१।५२।५४	२३।५१।११	३०
३१	१।५८।१६	. . . .	५।५०।५४		९।५१।२४		१३।५१।५४	१५।५४। ७		१९।५४।३८	. . .	२३।५५। ७	३१
												२३।५९। ३	३२

अक्षांशादि सारिणी

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
पोरबन्दर	२१।३७	६९।४९	–५०।४४	रतलाम	२३।३१	७५। ७	–२९।३२
फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	–११।३२	रत्नगिरि	१७। ८	७३।१९	–३६।४४
फरीदकोट	३०।४०	७४।५७	–३०।१२	रामेश्वरम्	९।१७	७९।२२	–१२।३२
फिरोजपुर	३०।५५	७४।४०	–३१।२०	रावलपिण्डी (पा.)	३३।३७	७३। ६	– ७।३६
बड़ौदा	२२। ०	७३।३०	–३६। ०	राजमहेन्द्री (आंध्र)	१७।१०	८१।४८	– २।४८
बम्बई	१९। ०	७२।५४	–३८।२४	रिवाड़ी	२८।१२	७६।४०	–२३।२०
बरेली	२८।२२	७९।२७	–१२।१२	रेवा (वि.प्र.)	२४।३१	८१।१९	– ४।४४
बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३२	–११।५२	रायपुर (म. प्र.)	२१।१५	८१।४१	– ३।१६
बर्दवान	२३।१६	८७।५२	+२१।२८	राजकोट	२२।१८	७०।५६	–४६।१६
बहावलपुर	२८।२४	७१।४७	–४२।५२	रोहतक	२८।५४	७६।३८	–२३।२८
बिलासपुर (म. प्र.)	२२। ५	८२।१३	– १। ८	रोपड़ (पंजाब)	३०।५७	७६।३०	–२४।००
बीकानेर	२८। १	७३।२२	–३६।३२	लखनऊ	२६।५५	८०।५९	– ६। ४
बीजापुर	१६।५०	७५।४७	–२६।५२	लायलपुर (पा.)	३१।४४	७३। ५	– ७।४०
बंगलौर	१२।५८	७७।३८	–१९।२८	लाहौर (पा.)	३१।३७	७४।२६	– २।१६
भटिण्डा	३०।११	७५। ०	–३०। ०	लुधियाना	३०।५५	७५।५४	–२६।२४
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	–२०। ०	शिकारपुर (सिंध)	२७।५७	६८।४०	–५५।२०
भागलपुर (बि.)	२५।१४	८६।५९	–१७।५६	शिमला	३१। ६	७७।१३	–२१। ८
भोपाल (म.भा.)	२३।१६	७७।३६	–१९।३६	श्रीनगर (का)	३४। ६	७४।५१	–३०।३६
भूटान (स्टेट)	२७।३०	९०। ०	+३०। ०	सरगोधा (पा.)	३२। २	७२।४०	– ९।२०
मद्रास	१३। ४	८०।१७	– ८।५२	सहारनपुर	२९।५८	७७।२३	–२०।२८
मथुरा	२७।२८	७७।४१	–१९।१६	सियालकोट (पा.)	३२।३१	७४।३६	– १।३६
मालेरकोटला	३०।३१	७५।५९	–२६। ४	सतारा (बम्बई)	१७।४२	७४। २	–३३।५२
मियांवाली (पा.)	३२।३५	७१।३३	–१३।४८	सागर (म.प्र.)	२३।५०	७८।४५	–१५। ०
मिण्टगुमरी (पा.)	३०।५८	७३।२१	– ६।३६	सूरत	२१।१२	७२।५२	–३८।३२
मुल्तान (पा.)	३०।१२	७१।३१	–३३।५६	सोलन (हि.प्र.)	३०।५५	७७। ९	–२१।२४
मुजफ्फरपुर (बि.)	२६। ७	८५।२७	+११।४८	हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	–१७। ८
मणिपुर (स्टेट)	२४।४४	९३।५८	+४५।५२	हिसार	२९।१०	७५।४६	–२६।५६
मुरादाबाद	२८।५१	७८।४९	–१४।४४	हैदराबाद (सिंध.)	२५।२५	६८।३८	–५५।२८
मेरठ	२९। १	७७।४५	–१९। ०	हैदराबाद (द.)	१७।२०	७८।३०	–१६। ०
मसूर (स्टेट)	१२।१८	७६।४२	–२३।१२	होशियारपुर	३१।३२	७५।५७	–२६।१२
मण्डी (हि.प्र.)	३१।४३	७६।५८	–२२। ८	होशंगाबाद (म. प्र.)	२२।४६	७७।४५	–१९। ०

कुछ विदेशीय नगरों के अक्षांशादि

नगर देश	अक्षांश	रेखांश	भारतीय स्टै.टा. से बेशीय स्टै.टा. का अन्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	मि. से.
[illegible] (अफगा.)	उ.३४।३०	पू. ६९।१८	– १। ०	+३।१२
कन्दहार "	उ.३१।३७	पू. ६५।३०	– १। ०	– ८। ०
क्वेटा (बिलोचि.)	उ.३०।१२	पू. ६७। ०	– ०।३०	–३२। ०
माण्डले (ब्रह्मा)	उ.२१।५९	पू. ९६। ८	+ १। ०	– ५।२८
रंगून (ब्रह्मा)	उ.१६।४५	पू. ९६।१३	+ १। ०	– ५। ८
सिंगापुर (मलाया)	उ. १।१७	पू.१०३।५१	+ २। ०	–३४।३६
बगदाद (इराक)	उ.३३।२०	पू. ४४।२७	– २।३०	– २।१२
मक्का (अरब)	उ.२१।२५	पू. ३९।५४	– २।३०	–२०।२४
तेहरान (ईरान)	उ.३५।४१	पू. ५१।२५	– २। ०	– ४।२०
काहिरा (मिस्र)	उ.३०। २	पू. ३१।१५	– ३।३०	+५। ०
जेनेवा (स्विट्जर पू.)	उ.४६।१३	पू ६। ७	– ४।४०	–३५।३२
जेरुशलम (इजरा.)	उ.३१।४६	पू. ३५।१४	– ३।३०	+२०।५६
न्यूयार्क (अमेरिका)	उ.४०।४३	प. ७४। ०	–१०।३०	+४।००
वाशिंगटन "	उ.३८।५५	प. ७७। ४	–१०।३०	– ८।१६
बर्लिन (पू.जर्मनी)	उ.५२।३२	पू. १३।२५	– ४।३०	– ६।२०
बुडापेस्ट (हंगरी)	उ.४७।२९	पू. १९। ३	– ४।३०	+१६।१२
लन्दन (इंगलैण्ड)	उ.५१।३०	प. ०। ५	– ५।३०	– ०।२०
ग्रीनविच "	उ.५१।३०	०। ०	– ५।३०	०। ०
ल्हासा (तिब्बत)	उ.२९।४०	पू. ९१। ५	०। ०	+३४।२०
लिस्बन (पुर्तगाल)	उ.३८।४४	प. ९। ९	– ५।३०	–३६।३६
ढाका (पू. पाकि.)	उ.२३।४३	पू. ९०।२६	+ ०।३०	+ १।४४
कराची (प. पाकि.)	उ.२४।५१	पू. ६७। ४	– ०।३०	–२१।४४
नैरोबी (केन्या)	द. १।१८	पू. ३६।५२	– २।३०	–३२।३२
मोम्बासा "	द. ४। ०	पू. ३९।४०	– २।३०	–२१।२०
म्वांजा (टांगानिका)	द. २।३५	पू. ३२।५६	– २।३०	–४८।१६
मोशी "	द. ३।२१	पू. ३७।२०	– २।३०	–३०।४०
टोकियो (जापान)	उ.३५।४०	पू.१३९।४५	+ ३।३०	+१।[illegible]
पेरिस (फ्रांस)	उ.४८।५०	पू. २।२०	– ४।३०	[illegible]
मास्को (रूस)	उ.५५।४५	पू. ३७।३७	– २।३०	–१०। ८
रोम (इटली)	उ.४१।५५	पू. १२।२८	– ४।[illegible]	–२३।१२
हांगकांग (चीन)	उ.२२।१६	पू. ११४।१	+ २।[illegible]	–१४।२४
पेकिंग "	उ ३९।५५	पू.११६।२४	+ [illegible]३०	

उपलब्ध सवारा ...
काल ६घं० ५९मि० आया।

ध्यान दीजिए--इस सारिणी में दिये गये पाकिस्तानी शहरों के 'स्टैण्डर्ड अन्तर' पाकिस्तानी स्टै.टा.एवं लोकल (स्थानीय) टाईम का अन्तर है। पाकिस्तान बनने से पूर्व यह अन्तरभिन्न था।

अक्षांशादि सारिणी

रेखांश-- ग्रीन्विच से अभीष्ट नगर का अंशात्मक पूर्वापरान्तर,
स्टैण्डर्ड अन्तर---वर्तमान स्टैण्डर्ड टाइम का स्थानीय टाईम से अन्तर,

पाकिस्तान बनने से पूर्व काल के लिए, कराची, लाहौर आदि किसी भी पाकिस्तानी शहर का मिनटादि 'स्टैण्डर्ड अन्तर' उस नगर के रेखांश एवं ८२ अंश ३० के अंशादि अन्तर को ४से गुणा करने पर प्राप्त होगा।

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिनट से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अकोला (म. रा.)	२०।४२	७७। २	-२१।५२	कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	-१९।४४	झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	-२५।१२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	-३१।१२	कुम्भकोणम	१०।५८	७९।२५	-१२।२०	झांसी	२५।२७	७८।३७	-१५।३२
अटक (पा.)	३३।५३	७२।१७	-४०।५२	कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	-२६।३२	झेलम (पा.)	३२।३५	७३।४७	-३४।५२
अमृतसर	३१।३७	७४।४८	-३०।४८	कोलम्बो (सीलोन)	६।५६	७९।५६	-१०।१६	ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	-२२। ०
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	-२२।३२	कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	-३२।५६	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	-२६।४०
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	- १। ४	कोचीन बंदर	९।५८	७६।१७	-२४।५२	डिबाई	२८।१२	७८।१५	-१७। ०
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	-११।२०	खंभात	२२।१९	७२।३६	-३९।३६	डेरा इस्माइलखां (पा.)	३१।५१	७०।५६	-४६।१६
अलवर	२७।३४	७६।३८	-२३।२८	गया	२४।४९	८५। १	+१०। ४	डेरागाजीखां (पा.)	३०। ४	७०।४९	-४६।४४
अहमदनगर	१९। ५	७४।४८	-३०।४८	ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	-१७।२०	ढाका (पा.)	२३।४३	९०।२६	+३१।४४
अहमदाबाद	२३। २	७२।३८	-३९।२८	गाजीपुर (यू. पी.)	२५।३४	८३।३५	+ ४।२०	तलागंग	३२।५६	७२।२८	-४०। ८
अलीगढ़ (यू.पी)	२७।५४	७८। ६	-१७।३६	गिलगित	३५।५५	७४।२२	-३२।३२	त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	-१४।५६
आगरा (")	२७।१०	७८। ५	-१७।४०	गुजरात (पा.)	३२।३६	७४। ५	-३३।४०	दरभंगा	२६।१०	८५।५७	+१३।४८
आजमगढ़ (")	२६। ५	८३।१२	+ २।४८	गुजरांवाला (पा.)	३२।१०	७४।१४	-३३। ४	द्वारिका	२२।१४	६९। १	-५३।५६
आबू	२४।४०	७२।४५	-३९। ०	गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	-२८।१२	दार्जिलिंग	२७। ३	८८।१८	+२३।१२
इटावा	२६।४७	७९। २	-१३।५२	गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	+३।३६	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	-२१।१२
इन्दौर	२२।४४	७५।५०	-२६।४०	गोवा	१५।३०	७३।५७	-३४।१२	देहरादून	३०।१९	७८। ४	-१७।४४
उज्जैन	२३। ९	७५।४३	-२७। ८	चम्बा	३२।२९	७६।१०	-२५।२०	धौलपुर	२६।४२	७७।५३	-१८।२८
उदयपुर (मेवाड़)	२४।३५	७३।४२	-३५।१२	चण्डीगढ़	३०।४४	७६।५२	-२२।३२	नडियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	-३८।२०
एलिचपुर (म.रा.)	२१।१८	७७।३३	-१९।४८	चीरापूञ्जी	२५।१७	९१।४७	+३७। ८	नसीराबाद (राज.)	२६।१८	७४।४६	-३०।५६
औरङ्गाबाद (हैद.)	१९।५३	७५।२३	-२८।२८	छतरपुर (वि.प्र.)	२४।५४	७९।३८	-११।२८	नागपुर	२१। ९	७९। ९	-१३।२४
कठूआ (काश्मीर)	३२।१७	७५।३६	-२७।३६	छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	+ ८।४४	नाभा	३०।२५	७६। ९	-२५।२४
कपूरथला	३१।२३	७५।२५	-२८।२०	जलपाइगुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२५। ४	नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	-३४।३२
करनाल	२९।४२	७७। २	-२१।५२	जम्मू	३२।४४	७४।५४	-३०।२४	नासिक	२०। २	७३।५०	-३४।४०
कराची (पा.)	२४।५१	६७। ४	-६१।४४	जबलपुर	२३।१०	७९।५९	-१०। ४	नैनीताल	२९।२३	७९।३०	-१२। ०
कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	+२३।३६	जयपुर	२६।५५	७५।५२	-२६।३२	पटना (बिहार)	२५।३७	८५।१३	+१०।५२
काठमाण्डू (नैपा.)	२७।४२	८५।१२	+१०।४८	जालन्धर	३१।१९	७५।१८	-२८।४८	पटियाला	३०।२०	७६।२५	-२४।२०
कानपुर	२६।२७	८०।२४	- ८।२४	जामनगर	२२।२७	७०। ७	-४९।३२	पठानकोट	३२।१७	७५।४२	-२७।१२
कालाबाग (पा.)	३२।५८	७१।३६	-४३।३६	जीन्द	२९।१९	७६।२३	-२४।२८	प्रयागराज	२५।२८	८१।५४	- २।२४
काशी	२५।२०	८३। ०	+ २। ०	जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	-४७।३६	पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५३	-१०।२८
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	-२४।४८	जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	-४६।१२	पुञ्छ (का)	३३।५१	७४। ८	-३३।२८
कांकरोली	२५। २	७३।५४	-३४।२४	जोधपुर	२६।१८	७३। ४	-३७।४४	पूना	१९। ०	७३।५५	-३८।२०
कुरुक्षेत्र	३०। ०	७६।४८	-२२।४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पेशावर (पा.)	३४। २	७१।३७	-४३।३२

नगर का रेखांश ८२°।३०' से अधिक या कम होने पर स्टैण्डर्ड अन्तर क्रमशः धन या ऋण होगा।

लग्न-साधन का उदाहरण—यहां हम १५ जुला. १९६९ को भा. स्टै. टा. के अनुसार प्रातः १० घं. ४५ मि. पर चम्बा (हिं. प्र.) में लग्न स्पष्ट करेंगे—

'अक्षांशादि सारिणी' में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १० क. (पूर्व) एवं स्टैण्डर्ड अन्तर—२५ मि. २० से है। १० घं. ४५ मि. में से स्टैण्डर्ड अन्तर के मि. से. घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीय मध्यम काल हुआ। सांपातिक काल कोष्ठक नं. (१) से सन् १९६९ का सां. का. (६ घं. ४१ मि. २ से.) लिया, इसमें कोष्ठक नं. (२) से लिया गया १५ जुला. का सां. का. (१२ घं. ४८ मि. ४९ से.) जोड़ा तो १९ घं. २९ मि. ५१ से. हुआ। चम्बा के रेखांश ७६ अं. १० क. के लिए कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार तो ० है। अतः १९ घं. २९ मि. ५१ से० में चम्बा का स्थानीय मध्यम काल १० घं. १९ मि. ४० से. जोड़ा और योग फल में कोष्ठक नं. (४) से स्थानीय मध्यम काल के १० घं. १९ मि. से उठाए गए १ मि. ४२ से. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुआ। क्योंकि यहां घण्टे २४ से ज्यादा हैं अतः २४ घण्टे घटाएं तो ५ घं. ५१ मि. १३ से. हमारा अभीष्ट साम्पातिक काल हुआ।

इसी दिन (१५ जुला. १९६९ को) अयनांश जानने के लिए 'अयनांश सारणी भाग १ म' से सन् १९६९ के आगे लिखा अयनांश २३ अं. २५ क. २६ वि. प्राप्त किया, इसमें 'अयनांश सारणी भाग २' से प्राप्त की गई १५ जुला. की २७ वि. जोड़ने पर २३ अं. २५ क. ५३ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ। "अयनांश सारणी भाग ३" का उपयोग स्वल्पान्तर होने के कारण छोड़ दिया गया है।

अब ऊपर स्पष्ट किए गए सां. का. द्वारा लग्न-सारणी की सहायता से इस प्रकार लग्न स्पष्ट करेंगे—

पृ. १०२ पर दी गई लग्न सारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न ५ रा. २३ अं. ३४ क. लिखा है, इसे अलग नोट किया। लग्न के ये राश्यादि ५ घं. ३० मि. सां. का. के हैं। हमें ५ घं. ५१ मि. १३ से. साम्पातिक काल के राश्यादि चाहिएं। अतः हमें ५ रा. २३ अं. ३४ क. में २१ मि. १३ से. (अथवा १२७३ सेकण्ड) का चालन देना है। लग्न सारणी में ३२ अक्षांश के नीचे ५ घं. ३० मि. सा. का. के आगे अन्तर की कलाएं ३८६ दी हैं। उन्हें १२७३ से गुणा करके १८०० से भाग देने पर लब्धि २७३ कला हुई। शेष ११३६ को ३० से भाग देने पर लब्धि ३८ वि. हुई। २७३ क. ३८ वि. (अर्थात् ४ अं. ३३ क. ३८ वि.) को ५ रा. २३ अं. ३४ क. में जोड़ने पर ५ रा. २८ अं. ७ क. ३८ वि. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २५ क. ५३ वि. घटा देने पर ५ रा. ४ अं. ४१ क. ४५ वि. फलितोपयोगी निरयण लग्न हुआ। हमने ३२ अक्षांश की लग्न सारणी से लग्न साधन किया है, परन्तु चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ कला है। अतः इस लग्न में हमें २९ कला (स्वल्पान्तर से ३० कला) का संस्कार देना है। इसके लिए लग्न सारणी के दाईं ओर "लग्न में अक्षांश कला संस्कार" वाले कोष्ठक में ३० कला के नीचे और सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे +१ कला प्राप्त हुई। इसे ५ रा. ४ अं. ४१ क. ४५ मि. में जोड़ने से ५ रा. ४ अं. ४२ क. ४५ वि. —यह हमारा अभीष्ट-कालिक सूक्ष्म निरयण-लग्न स्पष्ट हुआ।

ठीक इसी तरह इसी सां. का. (५ घं. ५१ मि. १३ से.) से पृ. १०२ पर 'लग्न सारणी' के साथ ही दी हुई 'दशम लग्न सारणी' से दशमलग्न स्पष्ट किया जाएगा। उदाहरण नीचे दिया गया है—

दशम-लग्न-साधन का उदाहरण—१५ जुला. १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. पर ही चम्बा में दशम-लग्न स्पष्ट करना है। इस समय सा. का. ५ घं. ५१ मि. १३से. है। पृ. १०२ पर दशम लग्न सारणी में सा. का. ५ घं. ३० मि. के आगे दशम लग्न २ रा. २३ अं. ७ क. दिया है। हमें ५ घं. ५१ मि. १३ से. साम्पातिक-काल का दशम लग्न चाहिए। अतः २ रा. २३ अं. ७ क. में २१ मि. १३ से. (१२७३ सेकण्ड) का चालन देना होगा। सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे दशम लग्न सारणी में अन्तर कलाएं ४१३ लिखी हैं, इन्हें १२७३ से गुणा करके १८०० का भाग देने पर लब्धि २९२ कला हुई। शेष १४९ को ३० से भाग देने पर लब्धि ५ विकला हुई। इन २९२ क. ५ वि. (४ अं. ५२ क. ५ वि.) को २ रा. २३ अं. ७ क. में जोड़ देने पर २ रा. २७ अं. ५९ क. ५ वि. सायन दशम लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २५ क. ५३ वि. घटाने पर २ रा. ४ अं. ३३ क. १२ वि. यह हमारा फलितोपयोगी अभीष्ट कालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान रहे, दशम-लग्न में 'अक्षांश कला-संस्कार' (जो लग्न में दिया जाता है) नहीं दिया जाता।

लग्न एवं भावों की सूक्ष्मता की सीमा?
लग्न एवं दशम लग्न को कला तक ही स्पष्ट करें

लग्न एवं दशम लग्न में विकला तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास व्यर्थ है। क्योंकि मध्यम-मान से एक मिनट में १५ कला (अथवा एक सैकण्ड में १५ विकला) का अन्तर लग्न एवं दशम में पड़ता है और हम जातक के जन्मादि के काल को समान्यतः एक मिनट तक की सूक्ष्मता से ज्ञात कर सकते हैं। अत्यधिक सूक्ष्मता से काल जानने का प्रयत्न करने पर भी काल में १०-१५ सैकण्ड की अशुद्धि रह ही जाती है, जिससे लग्न दशम में तीन चार कला की अशुद्धि का फिर भी रह जाना स्वाभाविक है। किन्तु हम अधिकतर अपने स्थान के रेखांश-अक्षांश की जगह ५-१० मील या इससे भी अधिक दूरी पर स्थित किसी प्रसिद्ध नगर के रेखांश-अक्षांश लेकर लग्नादि-साधन करते हैं, इससे भी लग्नादि में काफी अन्तर पड़ता है। ध्यान रहे, यदि रेखांश एक मील दूर के स्थल का लिया गया हो, तो भारत में लगभग १ कला की अशुद्धि लग्न-दशम में आती है। इसी प्रकार अक्षांश की स्थूलता का भी लग्नदशम पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। इससे स्पष्ट है, कि—लग्नदशम में कला तक की सूक्ष्मता पर ही सन्तोष करना चाहिए। वैसे तो यहां कला तक की सूक्ष्मता भी विश्वसनीय नहीं है, विकला तक की सूक्ष्मता की बात तो बहुत दूर है। हां, यदि काल लगभग ४ प्रतिसैकण्ड तक एवं रेखांश-अक्षांश विकला तक शुद्ध हों, तो लग्न दशम में विकलान्त सूक्ष्मता लाई जा सकती है, अन्यथा नहीं।

सूक्ष्म-लग्न एवं दशम-लग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि :—

यह मानना पड़ेगा, कि पाश्चात्य गणना-पद्धति सूक्ष्मता, सरलता एवं लाघव की दृष्टि से भारतीय गणना-पद्धति से कहीं आगे बढ़ चुकी है। हम चाहते हैं—हमारे पाठक इन पद्धतियों के आवश्यक ज्ञान से वञ्चित न रहें। यहां हम सूक्ष्म-लग्न एवं दशम-लग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधि दे रहे हैं। स्पष्ट-सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अपेक्षित सूक्ष्मता नहीं आ पाती, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य-ज्योतिषियों ने साम्पातिक-काल (Sidereal time) की पद्धति को अपनाया है। यहां हम "साम्पातिक काल क्या है ?" इस विषय में कुछ भी सैद्धान्तिक विवेचन न करते हुए इससे लग्न स्पष्ट करने की सर्व-साधारणोपयोगी विधि ही प्रस्तुत करते हैं :—

विधि:—सां० का० (साम्पातिक काल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण, जो इस पञ्चाङ्ग में दिए गए कोष्ठकों (सारिणियों) के बिना किसी परिश्रम के प्रस्तुत किये जा सकते हैं, प्रस्तुत कीजिए—

* (१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण) ⎫ ये तीनों उपकरण ९८ एवं
* (२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम) ⎬ ९९ पृष्ठस्थ 'अक्षांशादि
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर (+या −) ⎭ सारिणी" से उठाइए।

विशेष:—यदि "अक्षांशादि सारिणी" में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीय मध्यम काल—जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनटादि (या घण्टादि) को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का स्थानीय मध्यम काल' बन जाता है। '+' यह चिह्न जोड़ने की एवं'—' यह चिह्न घटाने की क्रिया को बतलाता है।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश :—पृ० १०१ पर अयनांश सारिणी को तीन भागों में दिया गया है। सारिणी के प्रथम भाग में से अभीष्ट ईस्वी सन् के आगे लिखे अंशादि अयनांश लें, और उनमें सारिणी के द्वितीय भाग में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का कलादि फल लेकर जोड़ दें। यह मध्यम अयनांश होगा। इसे स्पष्ट करने के लिए अयनांश सारिणी भाग ३ य की सहायता से सायन राहु (निरयण राहु + अयनांश-सारिणी १ म तथा २ य के फलों का जोड़) से संस्कार करें। सारणी नं. ३ की उपेक्षा की जा सकती है, क्योंकि यह संस्कार बहुत थोड़ा है।

* भारत के समस्त नगरों के अक्षांश उत्तर ही हैं।
* भारत के समस्त नगरों के रेखांश पूर्व ही हैं।

(६) इष्टकालिक साम्पातिक काल :—पृष्ठ १००-१०१ के चार कोष्ठक दिए गए हैं। इनके आधार पर इष्टकालिक सां० का० ... से बनाया जा सकता है—सां० का० कोष्ठक नं० (१) में से अभीष्ट सन् ... उठाएं। उसमें सां० का० कोष्ठक नं० (२) से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख ... इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक ... तारीख का) सां० का० लेकर जोड़ें। इसमें सां० का० कोष्ठक नं० (३) से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सेकण्डात्मक संस्कार उठाकर चिह्नानुसार जोड़ें या घटाएं। इस प्रकार मिले सां० का० के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीय मध्यम समय, (जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा-मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में स्थानीय समय के घण्टा-मिनटों द्वारा सां० का० कोष्ठक नं० (४) से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से घण्टादि इष्ट सां० का० होगा। यहां यदि घण्टे २४ से अधिक हों तो उनमें से २४ घटाकर शेष ही ग्रहण करना चाहिए।

(इस पञ्चाङ्ग में दिये गये सां० का कोष्ठकों से सन् १८८८ से सन् १९८३ तक का सां० का० जाना जा सकता है।)

इस प्रकार ऊपर बतलाए गए ६ उपकरण तैयार हो जानेपर नीचे लिखी विधि से सारणी द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट कीजिए—

पृ. १०२ पर ३०, ३१, ३२, ३३ अक्षांशों वाले नगरों के लग्न स्पष्ट करने के लिए लग्न-सारणी दी गई है, जो पंजाब-हिमाचल प्रदेश के समस्त नगरों एवं हरियाणा जम्मू-काश्मीर के अनेक नगरों के लिए उपयोगी हैं। ऊपर दी गई विधि से ज्ञात किए गए अभीष्ट साम्पातिक-काल के घण्टा मिनटों को इस लग्न सारिणी के बांई ओर वाले पहले कालम में देखें। इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो रा. अं. क. लिखे हैं, उन्हें अलग नोट करें। क्योंकि सारणी के पहले कालम में ३०-३० मि. के अन्तर पर साम्पातिक काल दिया गया है। अतः सम्भव है, कि अभीष्ट साम्पातिक काल वहां पूरा पूरा न मिले, ऐसी दशा में वहां अभीष्ट साम्पातिक-काल के बिल्कुल समीप वाले परन्तु उससे कम सां० का० के आगे लिखे रा. अं. क. को नोट करें और उसके आगे सारिणी में ही दिए गए अन्तर की कलाओं को भी उठा लें। सां० का० के शेष मिनट एवं सेकण्डों को सपिण्डित करके (सेकण्ड बनाकर) उन्हें सारिणी से उठाई गई अन्तर कलाओं से गुणा करके १८०० से भाग दें। लब्धि कला होगी। जो शेष बचे उसे ३० से भाग देने पर लब्धि विकला होगी। इन कला-विकलाओं को सारणी से प्राप्त किए गए रा. अं. क. में जोड़ने पर इष्ट कालिक सायन लग्न होगा। इसमें से उस दिन का अयनांश (जिस को ज्ञात करने की विधि ऊपर दी गई है) घटा देने से फलितोपयोगी निरयण लग्न बन जाएगा। ठीक इसी प्रकार जिस साम्पातिक-काल से लग्न स्पष्ट किया है, उसी सां०का० से पृष्ठ १०२ वाली सारणी में ही दी गई दशम-लग्न-सारणी द्वारा सायन-दशम लग्न स्पष्ट करके उसमें से भी अयनांश घटा देना चाहिए। दशम-लग्न-सारणी सभी अक्षांश वाले प्रदेशों के लिए एक सी ही होती है।

ध्यान रहे, ऊपर दी गई विधि में लग्न-स्पष्ट करने के लिए अभीष्ट नगर के अक्षांशों के केवल अंशों का ही उपयोग किया गया है, अक्षांशों की कलाओं का नहीं। शुद्ध-सूक्ष्म लग्न प्राप्त करने के लिए इसी सारणी में अभीष्ट साम्पातिक-काल के आगे अक्षांश की कलाओं के नीचे दी गई कलाओं को उपरोक्त स्पष्ट निरयण-... में चिह्न के अनुसार जोड़ना या घटाना जरूरी है।

दैनिक लग्नसारिणी देखने की रीति

दैनिक लग्न सारणी में जो घण्टा मिनट लिखे हैं वे रेल्वे (भा. स्टै.) टा. के हैं। यहां रात के १ को १ लिखा गया है और दिन के १ को १३ तथा २ को १४ एवं ३ को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा गया है। जैसे—वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है, तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४९ सिंह है, याने मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खत्म होकर कन्या लग्न शुरू हो गया, जिसका समाप्तिकाल १८।०९ अर्थात् शाम के ३ बज कर ९ मिनट पर है। लग्न की सन्धि में एक-दो मिनट का कहीं-कहीं अन्तर हो सकता है।

—दैनिक लग्न-सारणी से लग्न के भुक्त अंशों का ज्ञान—

अपने अभीष्ट भा. स्टै. टा. में से गत-लग्न के समाप्ति-काल के घण्टा मिनट टा कर जो शेष बचे, उसके मिनट बनाकर उन्हें ३० से गुणा करके वर्तमान लग्न के निरयण स्वोदय के मिनटों से (जो नीचे दिए गए हैं) भाग दें। जो लब्धि आए वह वर्तमान लग्न के भुक्त अंश होंगे।

—लग्नों के निरयण स्वोदयों के मिनट—

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
निरयण स्वोदय मिनट	९४	११५	१३४	१४२	१४०	१४०	१४२	१४०	१२४	१०२	८६	८२

दैनिकलग्न-सारणी से लग्न का नवमांश ज्ञात करना

अपने अभीष्ट भा. स्टै. टा. के घन्टा-मिनटों में से 'दैनिक-लग्न-सारणी में दिए गए गत-लग्न के समाप्ति काल के घं. मिनटों को घटा कर जो शेष बचें उसके मिनट बनाएं। फिर नीचे दी गई लग्न नवमांश सारणी में वर्तमान लग्न के नीचे उन मिनटों से नवमांश ज्ञात करें। जैसे—चण्डीगढ़ में वैशाख प्रविष्टा ५ को दिन के १२ बज कर ३५ मिनट पर वर्तमान लग्न कर्क है, इस समय कर्क का वर्तमान नवमांश ज्ञात करने के लिए गत लग्न मिथुन के समाप्ति काल ११ घं. २७ मि. को १२ घं. ३५ मि. में से घटाने पर शेष १ घं. ८ मि. (मि. ६८) प्राप्त हुए। नीचे सारणी में वर्तमान लग्न कर्क नीचे ६३ मिनट पर चौथे नवमांश की एवं ७९ मिनट पर पांचवें नवमांश की समाप्ति लिखी है, अतः स्पष्ट है शेष ६८ मिनट पर कर्क लग्न का पांचवां (वृश्चिक का) नवमांश है।

लग्न नवमांश ज्ञानसारिणी—

	लग्न	मे. मि.	वृ. मि.	मि. मि.	क. मि.	सि. मि.	क. मि.	तु. मि.	वृ. मि.	ध. मि.	म. मि.	कुं. मि.	मी. मि.
१ला	नवमांश समाप्त	१० (मे)	१३ (म)	१५ (तु)	१६ (क)	१६ (मे)	१६ (म)	१६ (तु)	१६ (क)	१४ (म)	११ (म)	९ (तु)	९ (क)
२रा	” ”	२१ (वृ)	२६ (कुं)	३० (वृ)	३२ सि.	३१ (वृ)	३१ (कुं)	३२ (वृ)	३१ सि.	२८ (वृ)	२२ (कुं)	१९ (वृ)	१८ सि.
३रा	” ”	३१ मि	३९ मी	४५ (ध)	४८ (क)	४७ मि.	४७ मी.	४८ (ध)	४७ (क)	४१ मि	३४ मी	२८ (ध)	२७ (क)
४वां	” ”	४२ (क)	५१ (मे)	६० (म)	६३ (तु)	६२ (क)	६२ (मे)	६३ (म)	६२ (तु)	५५ (क)	४५ (मे)	३८ (म)	३६ (तु)
५वां	” ”	५२ सि.	६४ (वृ)	७५ (कुं)	७९ (वृ)	७८ सि.	७८ (वृ)	७९ (कुं)	७८ (वृ)	६९ सि.	५६ (वृ)	४७ (कुं)	४६ (वृ)
६वां	” ”	६३ (क)	७६ मि.	९० मी	९४ (ध)	९३ (क)	९३ मि.	९४ मी	९३ (ध)	८२ (क)	६८ मि.	५७ मी.	५५ (ध)
७वां	” ”	७३ (तु)	८९ (क)	१०५ (मे)	११० (म)	१०८ (तु)	१०८ (क)	११० (मे.)	१०८ (म)	९६ (तु)	७९ (क)	६६ (मे)	६४ (म)
८वां	” ”	८४ (वृ)	१०२ सि.	१२० (वृ)	१२६ (कुं)	१२४ (वृ)	१२४ सि.	१२६ (वृ)	१२४ (कुं)	११० (वृ)	९० सि.	७६ (वृ)	७३ (कुं)
९वां	” ”	९४ (ध)	११५ (क)	१३५ मि.	१४२ मी	१४० (ध)	१४० (क)	१४२ मि.	१४० मी	१२४ (ध)	१०२ (क)	८६ मि.	८२ मी

(कोष्ठों में दी गई राशियां नवमांश की राशियां हैं।)

सूचना—श्री मार्तण्ड पञ्चांग में दी गई दैनिक-लग्न-सारणियां चण्डीगढ के लिए बनाई गई हैं। परन्तु इन्हें सामान्यतया लग्न के समाप्तिकाल एवं नवमांश-ज्ञान के लिए दिल्ली, समस्त पञ्जाब, हरियाणा, हि. प्र., जम्मू-काश्मीर के किसी भी नगर के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। इसी पञ्चांग में अन्यत्र दी हुई 'पञ्चाङ्ग-परिवर्तन-सारणी' की सहायता से भारत के प्रसिद्ध २४ नगरों में पर्याप्त सूक्ष्मता से लग्न-समाप्ति-का[illegible] जा सकता है।

	(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०													(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०											
तिथि	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	तिथि	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२	१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८	२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४	३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०	४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६	५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२	६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८	७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४	८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०	९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६	१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२	११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८	१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४	१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०	१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५	१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११	१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७	१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३	१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९	१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५	२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२३
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१	२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७	२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३	२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९	२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५	२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१	२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७	२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३	२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९	२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५	३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
१	९।२३	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५८	७।१८
२	९।१८	११।०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।.१	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	[illegible]	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४६	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४२	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम [illegible] ३० मि०

ता०	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१४	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अक्षांश [illegible]

ता०	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	[illegible]
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	[illegible]
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।२	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(५) भाद्रपद मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथु.	कर्क
१	८।१७	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२६	१।२०	३।३४	५।५६
२	८।१३	१०।३३	१२।५४	१५।१४	१७।१८	१९।०	२०।२६	२१।४८	२३।२२	१।१६	३।३०	५।५२
३	८।९	१०।२९	१२।५०	१५।१०	१७।१४	१८।५६	२०।२२	२१।४४	२३।१८	१।१२	३।२६	५।४८
४	८।५	१०।२५	१२।४६	१५।६	१७।१०	१८।५२	२०।१८	२१।४०	२३।१४	१।८	३।२२	५।४४
५	८।१	१०।२१	१२।४२	१५।२	१७।६	१८।४८	२०।१४	२१।३६	२३।१०	१।४	३।१८	५।४०
६	७।५७	१०।१७	१२।३८	१४।५८	१७।२	१८।४४	२०।१०	२१।३२	२३।६	१।०	३।१४	५।३६
७	७।५३	१०।१३	१२।३४	१४।५४	१६।५८	१८।४०	२०।६	२१।२८	२३।२	०।५६	३।१०	५।३२
८	७।४८	१०।८	१२।२९	१४।४९	१६।५३	१८।३५	२०।१	२१।२३	२२।५७	०।५१	३।५	५।२७
९	७।४४	१०।४	१२।२५	१४।४५	१६।४९	१८।३१	१९।५७	२१।१९	२२।५३	०।४७	३।१	५।२३
१०	७।४०	१०।०	१२।२१	१४।४१	१६।४५	१८।२७	१९।५३	२१।१५	२२।४९	०।४३	२।५७	५।१९
११	७।३६	९।५६	१२।१७	१४।३७	१६।४१	१८।२३	१९।४९	२१।११	२२।४५	०।३९	२।५३	५।१५
१२	७।३२	९।५२	१२।१३	१४।३३	१६।३७	१८।१९	१९।४५	२१।७	२२।४१	०।३५	२।४९	५।११
१३	७।२८	९।४८	१२।९	१४।२९	१६।३३	१८।१५	१९।४१	२१।३	२२।३७	०।३१	२।४५	५।७
१४	७।२४	९।४४	१२।५	१४।२५	१६।२९	१८।११	१९।३७	२०।५९	२२।३३	०।२७	२।४१	५।३
१५	७।१९	९।३९	१२।०	१४।२०	१६।२५	१८।६	१९।३२	२०।५४	२२।२८	०।२२	२।३६	४।५८
१६	७।१५	९।३५	११।५६	१४।१६	१६।२०	१८।२	१९।२८	२०।५०	२२।२४	०।१८	२।३२	४।५४
१७	७।११	९।३१	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५८	१९।२४	२०।४६	२२।२०	०।१४	२।२८	४।५०
१८	७।७	९।२७	११।४८	१४।८	१६।१२	१७।५४	१९।२०	२०।४२	२२।१६	०।१०	२।२४	४।४६
१९	७।३	९।२३	११।४४	१४।४	१६।८	१७।५०	१९।१६	२०।३८	२२।१२	०।६	२।२०	४।४२
२०	६।५९	९।१९	११।४०	१४।०	१६।४	१७।४६	१९।१२	२०।३४	२२।८	०।२	२।१६	४।३८
२१	६।५५	९।१५	११।३६	१३।५६	१६।०	१७।४२	१९।८	२०।३०	२२।४	२३।५८	२।१२	४।३४
२२	६।५०	९।१०	११।३१	१३।५१	१५।५५	१७।३७	१९।३	२०।२५	२१।५९	२३।५३	२।७	४।२९
२३	६।४६	९।६	११।२७	१३।४७	१५।५१	१७।३३	१८।५९	२०।२१	२१।५५	२३।४९	२।३	४।२५
२४	६।४२	९।२	११।२३	१३।४३	१५।४७	१७।२९	१८।५५	२०।१७	२१।५१	२३।४५	१।५९	४।२१
२५	६।३८	८।५८	११।१९	१३।३९	१५।४३	१७।२५	१८।५१	२०।१३	२१।४७	२३।४१	१।५५	४।१७
२६	६।३४	८।५४	११।१५	१३।३५	१५।३९	१७।२१	१८।४७	२०।९	२१।४३	२३।३७	१।५१	४।१३
२७	६।३०	८।५०	११।११	१३।३१	१५।३५	१७।१७	१८।४३	२०।५	२१।३९	२३।३३	१।४७	४।९
२८	६।२६	८।४६	११।७	१३।२७	१५।३१	१७।१३	१८।३९	२०।१	२१।३५	२३।२९	१।४३	४।५
२९	६।२२	८।४२	११।३	१३।२३	१५।२७	१७।९	१८।३५	१९।५७	२१।३१	२३।२५	१।३९	४।१
३०	६।१८	८।३८	१०।५९	१३।१९	१५।२३	१७।५	१८।३१	१९।५३	२१।२७	२३।२१	१।३५	३।५७
३१	६।१४	८।३४	१०।५५	१३।१५	१५।१९	१७।१	१८।२७	१९।४९	२१।२३	२३।१७	१।३१	३।५३

(६) आश्विन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८।३४	१०।५६	१३।१५	१५।२०	१७।२	१८।२७	१९।५०	२१।२३	२३।१८	१।३२	३।५३	६।१४
२	८।३०	१०।५२	१३।११	१५।१६	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१९	२३।१४	१।२८	३।४९	६।१०
३	८।२६	१०।४८	१३।७	१५।१२	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१५	२३।१०	१।२४	३।४५	६।६
४	८।२२	१०।४४	१३।३	१५।८	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।११	२३।६	१।२०	३।४१	६।२
५	८।१८	१०।४०	१२।५९	१५।४	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१।७	२३।२	१।१६	३।३७	५।५८
६	८।१४	१०।३६	१२।५५	१५।०	१६।४२	१८।७	१९।३०	२१।३	२२।५८	१।१२	३।३३	५।५४
७	८।१०	१०।३२	१२।५१	१४।५६	१६।३८	१८।३	१९।२६	२०।५९	२२।५४	१।८	३।२९	५।५०
८	८।६	१०।२८	१२।४७	१४।५२	१६।३४	१७।५९	१९।२२	२०।५५	२२।५०	१।४	३।२५	५।४६
९	८।२	१०।२४	१२।४३	१४।४८	१६।३०	१७।५५	१९।१८	२०।५१	२२।४६	१।०	३।२१	५।४२
१०	७।५८	१०।२०	१२।३९	१४।४४	१६।२६	१७।५१	१९।१४	२०।४७	२२।४२	०।५६	३।१७	५।३८
११	७।५४	१०।१६	१२।३५	१४।४०	१६।२२	१७।४७	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१३	५।३४
१२	७।५०	१०।१२	१२।३१	१४।३६	१६।१८	१७।४३	१९।६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।९	५।३०
१३	७।४६	१०।८	१२।२७	१४।३२	१६।१४	१७।३९	१९।२	२०।३५	२२।३०	०।४४	३।५	५।२६
१४	७।४२	१०।४	१२।२३	१४।२८	१६।१०	१७।३५	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३।१	५।२२
१५	७।३८	१०।०	१२।१९	१४।२४	१६।६	१७।३१	१८।५४	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५७	५।१८
१६	७।३३	९।५५	१२।१४	१४।१९	१६।१	१७।२६	१८।४९	२०।२२	२२।१७	०।३१	२।५२	५।१३
१७	७।२९	९।५१	१२।१०	१४।१५	१५।५७	१७।२२	१८।४५	२०।१८	२२।१३	०।२७	२।४८	५।९
१८	७।२५	९।४७	१२।६	१४।११	१५।५३	१७।१८	१८।४१	२०।१४	२२।९	०।२३	२।४४	५।५
१९	७।२१	९।४३	१२।२	१४।७	१५।४९	१७।१४	१८।३७	२०।१०	२२।५	०।१९	२।४०	५।१
२०	७।१७	९।३९	११।५८	१४।३	१५।४५	१७।१०	१८।३३	२०।६	२२।१	०।१५	२।३६	४।५७
२१	७।१३	९।३५	११।५४	१३।५९	१५।४१	१७।६	१८।२९	२०।२	२१।५७	०।११	२।३२	४।५३
२२	७।९	९।३१	११।५०	१३।५५	१५।३७	१७।२	१८।२५	१९।५८	२१।५३	०।७	२।२८	४।४९
२३	७।५	९।२७	११।४६	१३।५१	१५।३३	१६।५८	१८।२१	१९।५४	२१।४९	०।३	२।२४	४।४५
२४	७।१	९।२३	११।४२	१३।४७	१५।२९	१६।५४	१८।१७	१९।५०	२१।४५	२३।५९	२।२०	४।४१
२५	६।५७	९।१९	११।३८	१३।४३	१५।२५	१६।५०	१८।१३	१९।४६	२१।४१	२३।५५	२।१६	४।३७
२६	६।५३	९।१५	११।३४	१३।३९	१५।२१	१६।४६	१८।९	१९।४२	२१।३७	२३।५१	२।१२	४।३३
२७	६।४९	९।११	११।३०	१३।३५	१५।१७	१६।४२	१८।५	१९।३८	२१।३३	२३।४७	२।८	४।२९
२८	६।४५	९।७	११।२६	१३।३१	१५।१३	१६।३८	१८।१	१९।३४	२१।२९	२३।४३	२।४	४।२५
२९	६।४१	९।३	११।२२	१३।२७	१५।९	१६।३४	१७।५७	१९।३०	२१।२५	२३।३९	२।०	४।२१
३०	६।३७	८।५९	११।१८	१३।२३	१५।५	१६।३०	१७।५३	१९।२६	२१।२१	२३।३५	१।५६	४।१७
३१	६।३३	८।५५	११।१४	१३।१९	१५।१	१६।२६	१७।४९	१९।२२	२१।१७	२३।३१	१।५२	४।१३

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(३) आषाढ़ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

ता०	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	७।४०	१०।२	१२।२२	१४।४२	१७।४	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५८	३।३२	५।२६
२	७।३६	९।५८	१२।१८	१४।३८	१७।०	१९।२०	२१।२४	२३।६	०।३२	१।५४	३।२८	५।२२
३	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।३४	१६।५६	१९।१६	२१।२०	२३।२	०।२८	१।५०	३।२४	५।१८
४	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।१६	२२।५८	०।२४	१।४६	३।२०	५।१४
५	७।२४	९।४६	१२।६	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।१२	२२।५४	०।२०	१।४२	३।१६	५।१०
६	७।२०	९।४२	१२।२	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।८	२२।५०	०।१६	१।३८	३।१२	५।६
७	७।१६	९।३८	११।५८	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।४	२२।४६	०।१२	१।३४	३।८	५।२
८	७।१२	९।३४	११।५४	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।०	२२।४२	०।८	१।३०	३।४	४।५८
९	७।८	९।३०	११।५०	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२०।५६	२२।३८	०।४	१।२६	३।०	४।५४
१०	७।४	९।२६	११।४६	१४।६	१६।२८	१८।४८	२०।५२	२२।३४	०।०	१।२२	२।५६	४।५०
११	७।०	९।२२	११।४२	१४।२	१६।२४	१८।४४	२०।४८	२२।३०	२३।५६	१।१८	२।५२	४।४६
१२	६।५७	९।१९	११।३९	१३।५९	१६।२१	१८।४१	२०।४५	२२।२७	२३।५३	१।१५	२।४९	४।४३
१३	६।५३	९।१५	११।३५	१३।५५	१६।१७	१८।३७	२०।४१	२२।२३	२३।४९	१।११	२।४५	४।३९
१४	६।४९	९।११	११।३१	१३।५१	१६।१३	१८।३३	२०।३७	२२।१९	२३।४५	१।७	२।४१	४।३५
१५	६।४५	९।७	११।२७	१३।४७	१६।९	१८।२९	२०।३३	२२।१५	२३।४१	१।३	२।३७	४।३१
१६	६।४१	९।३	११।२३	१३।४३	१६।५	१८।२५	२०।२९	२२।११	२३।३७	०।५९	२।३३	४।२७
१७	६।३७	८।५९	११।१९	१३।३९	१६।१	१८।२१	२०।२५	२२।७	२३।३३	०।५५	२।२९	४।२३
१८	६।३३	८।५५	११।१५	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।२१	२२।३	२३।२९	०।५१	२।२५	४।१९
१९	६।२९	८।५१	११।११	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।१७	२१।५९	२३।२५	०।४७	२।२१	४।१५
२०	६।२५	८।४७	११।७	१३।२७	१५।४९	१८।९	२०।१३	२१।५५	२३।२१	०।४३	२।१७	४।११
२१	६।२१	८।४३	११।३	१३।२३	१५।४५	१८।५	२०।९	२१।५१	२३।१७	०।३९	२।१३	४।७
२२	६।१८	८।४०	११।०	१३।२०	१५।४२	१८।२	२०।६	२१।४८	२३।१४	०।३६	२।१०	४।४
२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१६	१५।३८	१७।५८	२०।२	२१।४४	२३।१०	०।३२	२।६	४।०
२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१२	१५।३४	१७।५४	१९।५८	२१।४०	२३।६	०।२८	२।२	३।५६
२५	६।६	८।२८	१०।४८	१३।८	१५।३०	१७।५०	१९।५४	२१।३६	२३।२	०।२४	१।५८	३।५२
२६	६।२	८।२४	१०।४४	१३।४	१५।२६	१७।४६	१९।५०	२१।३२	२२।५८	०।२०	१।५४	३।४८
२७	५।५८	८।२०	१०।४०	१३।०	१५।२२	१७।४२	१९।४६	२१।२८	२२।५४	०।१६	१।५०	३।४४
२८	५।५४	८।१६	१०।३६	१२।५६	१५।१८	१७।३८	१९।४२	२१।२४	२२।५०	०।१२	१।४६	३।४०
२९	५।५०	८।१२	१०।३२	१२।५२	१५।१४	१७।३४	१९।३८	२१।२०	२२।४६	०।८	१।४२	३।३६
३०	५।४६	८।८	१०।२८	१२।४८	१५।१०	१७।३०	१९।३४	२१।१६	२२।४२	०।४	१।३८	३।३२
३१	५।४२	८।४	१०।२४	१२।४४	१५।६	१७।२६	१९।३०	२१।१२	२२।३८	०।०	१।३४	३।२८
३२	५।३८	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।३०	३।२४

(४) श्रावण मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

ता०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।२९	३।२४	[illegible]
२	७।५५	१०।१५	१२।३५	१४।५७	१७।१७	१९।२१	२१।३	२२।२९	२३।५१	१।२४	३।१९	५।३३
३	७।५१	१०।११	१२।३१	१४।५३	१७।१३	१९।१७	२०।५९	२२।२५	२३।४७	१।२०	३।१५	५।२९
४	७।४७	१०।७	१२।२७	१४।४९	१७।९	१९।१३	२०।५५	२२।२१	२३।४३	१।१६	३।११	५।२५
५	७।४३	१०।३	१२।२३	१४।४५	१७।५	१९।९	२०।५१	२२।१७	२३।३९	१।१२	३।७	५।२१
६	७।३९	९।५९	१२।१९	१४।४१	१७।१	१९।५	२०।४७	२२।१३	२३।३५	१।८	३।३	५।१७
७	७।३५	९।५५	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९।१	२०।४३	२२।९	२३।३१	१।४	२।५९	५।१३
८	७।३०	९।५०	१२।१०	१४।३२	१६।५२	१८।५६	२०।३८	२२।४	२३।२६	०।५९	२।५४	५।८
९	७।२६	९।४६	१२।६	१४।२८	१६।४८	१८।५२	२०।३४	२२।०	२३।२२	०।५५	२।५०	५।४
१०	७।२२	९।४२	१२।२	१४।२४	१६।४४	१८।४८	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४६	५।०
११	७।१८	९।३८	११।५८	१४।२०	१६।४०	१८।४४	२०।२६	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४२	४।५६
१२	७।१४	९।३४	११।५४	१४।१६	१६।३६	१८।४०	२०।२२	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३८	४।५२
१३	७।१०	९।३०	११।५०	१४।१२	१६।३२	१८।३६	२०।१८	२१।४४	२३।६	०।३९	२।३४	४।४८
१४	७।६	९।२६	११।४६	१४।८	१६।२८	१८।३२	२०।१४	२१।४०	२३।२	०।३५	२।३०	४।४४
१५	७।२	९।२२	११।४२	१४।४	१६।२४	१८।२८	२०।१०	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
१६	६।५७	९।१७	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।२३	२०।५	२१।३१	२२।५३	०।२६	२।२१	४।३५
१७	६।५३	९।१३	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।१९	२०।१	२१।२७	२२।४९	०।२२	२।१७	४।३१
१८	६।४९	९।९	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।१५	१९।५७	२१।२३	२२।४५	०।१८	२।१३	४।२७
१९	६।४५	९।५	११।२५	१३।४७	१६।७	१८।११	१९।५३	२१।१९	२२।४१	०।१४	२।९	४।२३
२०	६।४१	९।१	११।२१	१३।४३	१६।३	१८।७	१९।४९	२१।१५	२२।३७	०।१०	२।५	४।१९
२१	६।३७	८।५७	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।३	१९।४५	२१।११	२२।३३	०।६	२।१	४।१५
२२	६।३३	८।५३	११।१३	१३।३५	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।७	२२।२९	०।२	१।५७	४।११
२३	६।२९	८।४९	११।९	१३।३१	१५।५१	१७।५५	१९।३७	२१।३	२२।२५	२३।५८	१।५३	४।७
२४	६।२४	८।४४	११।४	१३।२६	१५।४६	१७।५०	१९।३२	२०।५८	२२।२०	२३।५३	१।४८	४।२
२५	६।२०	८।४०	११।०	१३।२२	१५।४२	१७।४६	१९।२८	२०।५४	२२।१६	२३।४९	१।४४	३।५८
२६	६।१६	८।३६	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४२	१९।२४	२०।५०	२२।१२	२३।४५	१।४०	३।५४
२७	६।१२	८।३२	१०।५२	१३।१४	१५।३४	१७।३८	१९।२०	२०।४६	२२।८	२३।४१	१।३६	३।५०
२८	६।८	८।२८	१०।४८	१३।१०	१५।३०	१७।३४	१९।१६	२०।४२	२२।४	२३।३७	१।३२	३।४६
२९	६।४	८।२४	१०।४४	१३।६	१५।२६	१७।३०	१९।१२	२०।३८	२२।०	२३।३३	१।२८	३।४२
३०	६।०	८।२०	१०।४०	१३।२	१५।२२	१७।२६	१९।८	२०।३४	२१।५६	२३।२९	१।२४	३।३८
३१	५।५६	८।१६	१०।३६	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२४	१।२०	३।३४

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	७।३४	६।२९	११।४३	१४।५	१६।२५	१८।४५	२१।७	२३।२७	१।३१	३।१३	४।३९	६।१
२	७।३०	६।२५	११।३९	१४।१	१६।२१	१८।४१	२१।३	२३।२३	१।२७	३।९	४।३५	५।५७
३	७।२६	६।२१	११।३५	१३।५७	१६।१७	१८।३७	२०।५९	२३।१९	१।२३	३।५	४।३१	५।५३
४	७।२२	६।१७	११।३१	१३।५३	१६।१३	१८।३३	२०।५५	२३।१५	१।१९	३।१	४।२७	५।४९
५	७।१८	६।१३	११।२७	१३।४९	१६।९	१८।२९	२०।५१	२३।११	१।१५	२।५७	४।२३	५।४५
६	७।१४	६।९	११।२३	१३।४५	१६।५	१८।२५	२०।४७	२३।७	१।११	२।५३	४।१९	५।४१
७	७।१०	६।५	११।१९	१३।४१	१६।१	१८।२१	२०।४३	२३।३	१।७	२।४९	४।१५	५।३७
८	७।६	६।१	११।१५	१३।३७	१५।५७	१८।१७	२०।३९	२२।५९	१।३	२।४५	४।११	५।३३
९	७।२	५।५७	११।११	१३।३३	१५।५३	१८।१३	२०।३५	२२।५५	०।५९	२।४१	४।७	५।२९
१०	६।५८	५।५३	११।७	१३।२९	१५।४९	१८।९	२०।३१	२२।५१	०।५५	२।३७	४।३	५।२५
११	६।५४	५।४९	११।३	१३।२५	१५।४५	१८।५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३३	३।५९	५।२१
१२	६।५०	५।४५	१०।५९	१३।२१	१५।४१	१८।१	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२९	३।५५	५।१७
१३	६।४६	५।४१	१०।५५	१३।१७	१५।३७	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२५	३।५१	५।१३
१४	६।४२	५।३७	१०।५१	१३।१३	१५।३३	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२१	३।४७	५।९
१५	६।३८	५।३३	१०।४७	१३।९	१५।२९	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१७	३।४३	५।५
१६	६।३४	५।२९	१०।४३	१३।५	१५।२५	१७।४५	२०।७	२२।२७	०।३१	२।१३	३।३९	५।१
१७	६।३०	५।२५	१०।३९	१३।१	१५।२१	१७।४१	२०।३	२२।२३	०।२७	२।९	३।३५	४।५७
१८	६।२६	५।२१	१०।३५	१२।५७	१५।१७	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२३	२।५	३।३१	४।५३
१९	६।२२	५।१७	१०।३१	१२।५३	१५।१३	१७।३३	१९।५५	२२।१५	०।१९	२।१	३।२७	४।४९
२०	६।१८	५।१३	१०।२७	१२।४९	१५।९	१७।२९	१९।५१	२२।११	०।१५	१।५७	३।२३	४।४५
२१	६।१४	५।९	१०।२३	१२।४५	१५।५	१७।२५	१९।४७	२२।७	०।११	१।५३	३।१९	४।४१
२२	६।१०	५।५	१०।१९	१२।४१	१५।१	१७।२१	१९।४३	२२।३	०।७	१।४९	३।१५	४।३७
२३	६।६	५।१	१०।१५	१२।३७	१४।५७	१७।१७	१९।३९	२१।५९	०।३	१।४५	३।११	४।३३
२४	६।२	४।५७	१०।११	१२।३३	१४।५३	१७।१३	१९।३५	२१।५५	२३।५९	१।४१	३।७	४।२९
२५	५।५८	४।५३	१०।७	१२।२९	१४।४९	१७।९	१९।३१	२१।५१	२३।५५	१।३७	३।३	४।२५
२६	५।५४	४।४९	१०।३	१२।२५	१४।४५	१७।५	१९।२७	२१।४७	२३।५१	१।३३	२।५९	४।२१
२७	५।५०	४।४५	९।५९	१२।२१	१४।४१	१७।१	१९।२३	२१।४३	२३।४७	१।२९	२।५५	४।१७
२८	५।४६	४।४१	९।५५	१२।१७	१४।३७	१६।५७	१९।१९	२१।३९	२३।४३	१।२५	२।५१	४।१३
२९	५।४२	४।३७	९।५१	१२।१३	१४।३३	१६।५३	१९।१५	२१।३५	२३।३९	१।२१	२।४७	४।९
३०	५।३८	४।३३	९।४७	१२।९	१४।२९	१६।४९	१९।११	२१।३१	२३।३५	१।१७	२।४३	४।५
३१	५।३४	४।२९	९।४३	१२।५	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२७	२३।३१	१।१३	२।३९	४।१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७।२८	९।४३	१२।४	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२६	२३।३०	१।१२	२।३८	४।१	५।३४
२	७।२४	९।३९	१२।०	१४।२१	१६।४१	१९।३	२१।२२	२३।२६	१।८	२।३४	३।५७	५।३०
३	७।२०	९।३५	११।५६	१४।१७	१६।३७	१८।५९	२१।१८	२३।२२	१।४	२।३०	३।५३	५।२६
४	७।१६	९।३१	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।५५	२१।१४	२३।१८	१।०	२।२६	३।४९	५।२२
५	७।१२	९।२७	११।४८	१४।९	१६।२९	१८।५१	२१।१०	२३।१४	०।५६	२।२२	३।४५	५।१८
६	७।८	९।२३	११।४४	१४।५	१६।२५	१८।४७	२१।६	२३।१०	०।५२	२।१८	३।४१	५।१४
७	७।४	९।१९	११।४०	१४।१	१६।२१	१८।४३	२१।२	२३।६	०।४८	२।१४	३।३७	५।१०
८	७।०	९।१५	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।३९	२०।५८	२३।२	०।४४	२।१०	३।३३	५।६
९	६।५६	९।११	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।३५	२०।५४	२२।५८	०।४०	२।६	३।२९	५।२
१०	६।५२	९।७	११।२८	१३।४९	१६।९	१८।३१	२०।५०	२२।५४	०।३६	२।२	३।२५	४।५८
११	६।४७	९।२	११।२३	१३।४४	१६।४	१८।२६	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५७	३।२०	४।५३
१२	६।४३	८।५८	११।१९	१३।४०	१६।०	१८।२२	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५३	३।१६	४।४९
१३	६।३९	८।५४	११।१५	१३।३६	१५।५६	१८।१८	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।४९	३।१२	४।४५
१४	६।३५	८।५०	११।११	१३।३२	१५।५२	१८।१४	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४५	३।८	४।४१
१५	६।३१	८।४६	११।७	१३।२८	१५।४८	१८।१०	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४१	३।४	४।३७
१६	६।२७	८।४२	११।३	१३।२४	१५।४४	१८।६	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३७	३।०	४।३३
१७	६।२३	८।३८	१०।५९	१३।२०	१५।४०	१८।२	२०।२१	२२।२५	०।७	१।३३	२।५६	४।२९
१८	६।१९	८।३४	१०।५५	१३।१६	१५।३६	१७।५८	२०।१७	२२।२१	०।३	१।२९	२।५२	४।२५
१९	६।१५	८।३०	१०।५१	१३।१२	१५।३२	१७।५४	२०।१३	२२।१७	२३।५९	१।२५	२।४८	४।२१
२०	६।११	८।२६	१०।४७	१३।८	१५।२८	१७।५०	२०।९	२२।१३	२३।५५	१।२१	२।४४	४।१७
२१	६।७	८।२१	१०।४२	१३।३	१५।२३	१७।४५	२०।४	२२।८	२३।५०	१।१६	२।३९	४।१२
२२	६।२	८।१७	१०।३८	१२।५९	१५।१९	१७।४१	२०।०	२२।४	२३।४६	१।१२	२।३५	४।८
२३	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५५	१५।१५	१७।३७	१९।५६	२२।०	२३।४२	१।८	२।३१	४।४
२४	५।५४	८।९	१०।३०	१२।५१	१५।११	१७।३३	१९।५२	२१।५६	२३।३८	१।४	२।२७	४।०
२५	५।५०	८।५	१०।२६	१२।४७	१५।७	१७।२९	१९।४८	२१।५२	२३।३४	१।०	२।२३	३।५६
२६	५।४६	८।१	१०।२२	१२।४३	१५।३	१७।२५	१९।४४	२१।४८	२३।३०	०।५६	२।१९	३।५२
२७	५।४२	७।५७	१०।१८	१२।३९	१४।५९	१७।२१	१९।४०	२१।४४	२३।२६	०।५२	२।१५	३।४८
२८	५।३८	७।५३	१०।१४	१२।३५	१४।५५	१७।१७	१९।३६	२१।४०	२३।२२	०।४८	२।११	३।४४
२९	५।३४	७।४९	१०।१०	१२।३१	१४।५१	१७।१३	१९।३२	२१।३६	२३।१८	०।४४	२।७	३।४०
३०	५।३०	७।४५	१०।६	१२।२७	१४।४७	१७।९	१९।२८	२१।३२	२३।१४	०।४०	२।३	३।३६
३१	५।२६	७।४१	१०।२	१२।२३	१४।४३	१७।५	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	[illegible]	३।३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न [illegible] समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
शिमला (हि.प्र.)	३१। ६	७७।१३	—२१। ८	सांगली (म.)	१६।५२	७४।३६	—३१।३६	सीकर (रा.)	२७।३६	७५।१२	—२९।१२	हनुमान गढ़ (रा.)	२९।३५	७४।२१	—३२।३६
शिलांग (आ.)	२५।३४	९१।५४	+३७।३६	सांगानेर (रा.)	२६।४९	७५।४९	—२६।४४	सीतापुर (उ.प्र.)	२७।३२	८०।४३	— ७। ८	हरदोई (उ.प्र.)	२७।२३	८०।१०	— ९।२०
श्रीनगर (का.)	३४। ६	७४।५१	—३०।३६	साम्भर (रा.)	२६।५४	७५।१३	—२९। ८	सुन्दर नगर (हि.प्र.)	३१।३२	७६।५३	—२२।२८	हरिद्वार (उ.प्र.)	२९।५८	७८।१३	—१७। ८
श्रीमाधोपुर (रा.)	२७।२५	७५।३२	—२७।५२	सिकन्दराबाद (आं.)	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	सूरत (गु.)	२१।१२	७२।५२	—३८।३२	हाथरस (उ.प्र.)	२७।३६	७८। ६	—१७।३६
संगरूर (पं.)	३०।१२	७५।५३	—२६।२८	सिन्दरी (रा.)	२५।३३	७१।५५	—४२।२०	सूरतगढ़ (रा.)	२९।१९	७३।५७	—३४।१२	हापुड़ (उ.प्र.)	२८।४३	७७।५०	—१८।४०
सतारा (म.)	१७।४२	७४। २	—३३।५२	सिन्दरी (बं.)	२३।४५	८६।४२	+१६।४८	सोजत (रा.)	२५।५९	७३।४२	—३५।१२	हांसी (ह.)	२९। ६	७६। ०	—२६। ०
सनावर (पं.)	३०।१८	७६।३०	—२४। ०	सिरसा (ह.)	२९।३२	७५। ४	—२९।४४	सोनहाट (म.प्र.)	२३।२९	८२।३०	— ०। ०	हिसार (ह.)	२९।१०	७५।४६	—२६।५६
सरदार शहर (रा.)	२८।२७	७४।३२	—३१।५२	सिरोही (रा.)	२४।५३	७२।५४	—३८।२४	सोमनाथ (गु.)	२१। ४	७०।२६	—४८।१६	हुबली (क.)	१५।२०	७५।१२	—२९।१२
सरहिन्द (पं.)	३०।३८	७६।२५	—२४।२०	सिलीगुड़ी (बं.)	२६।४२	८८।२५	+२३।४०	सोलन (हि.प्र.)	३०।५५	७७। ९	—२१।२४	हैदराबाद (आं.)	१७।२०	७८।३०	—१६। ०
सवाईमाधोपुर (रा.)	२६। ०	७६।३०	—२४। ०	सिवाना (रा.)	२५।३६	७२।२७	—४०।१२	हजारी बाग (बि.)	२३।५९	८५।२५	+११।४०	होशंगाबाद (म.प्र.)	२२।४६	७७।४५	—१९। ०
ससाराम (बि.)	२४।५७	८४। ३	+ ६।१२	सिहोरा (म.प्र.)	२३।२९	८०। ९	— ९।२४	हमीरपुर (उ.प्र.)	२५।५८	८०।१२	— ९।१२	होशियारपुर (पं.)	३१।३२	७५।५७	—२६।१२
सहारनपुर (उ.प्र.)	२९।५८	७७।३३	—१९।४८	सिहभूम (बि.)	२२।२४	८५।३०	+१२।००	हमीरपुर (हि.प्र.)	३१।४१	७६।३१	—२३।५६	होसुर (ता.)	१२।४४	७७।५२	—१८।३२
सागर (म.प्र.)	२३।५०	७८।४५	—१५। ०												

राजस्थान के नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
अकलेरा	२४।२३	७६।३६	२३।३६	एरिनपुरा	२५। ९	७३। ६	३७।३६	खेड़ब्रह्मा	२४। ५	७३। ३	३७।४८	चोमू	२७। ९	७५।४७	२६।५२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	३१।१२	ओसिया	२६।४३	७२।५५	३८।२०	खेरवाड़ा	२४। ०	७३।३५	३५।४०	छबरा	२४।४०	७६।५०	२२।४०
अनूपगढ़	२९। ७	७३। ६	३७।३६	करौली	२६।३०	७७। १	२१।५६	गंगानगर	२९।४९	७३।५०	३४।४०	छोटी सादड़ी	२४।२४	७४।४२	३१।१२
अमेट	२५।२०	७३।५९	३४। ४	कांकरोली	२५। ४	७३।५४	३४।२४	गंगापुर (भीलवाड़ा)	२५।१३	७४।१६	३२।५६	जयपुर	२६।५५	७५।५२	२६।३२
अलवर	२७।३४	७६।३८	२३।२८	कामन	२७।३९	७७।१६	२०।५६	गंगापुर (टोंक)	२६।२९	७६।४९	२२।५६	जसरासर	२७।४५	७३।५०	३४।४०
अलीगढ़	२५।५८	७६। ७	२५।३०	किशनगढ़	२६।३४	७४।५२	३०।३२	गिराब	२६। २	७०।३५	४७।४०	जसवन्तपुरा	२४।४८	७२।३०	४०। ०
आबू	२४।४०	७२।४५	३९। ०	कुशालगढ़	२३।१०	७४।२७	३२।१२	गागरिया	२५।५४	७०।४२	४७।१२	जहाजपुर	२५।३८	७५।१२	२९।१२
आबू रोड	२४।२९	७२।४७	३८।५२	कुचामन	२७। ९	७४।५२	३०।३२	गूढ़ा	२५।१२	७१।४८	४२।४८	जाएल	२७।१५	७४।१२	३३।१२
आमेर	२६।५९	७५।५२	२६।३२	कूरी	२६।४२	७०।४०	४७।२०	घोटारू	२७।१८	७०। ४	४९।४४	जालोर	२५।२२	७२।३८	३९।२८
आसपुर	२३।५८	७४। ३	३३।४८	केकड़ी	२५।५६	७५।१०	२९।२०	चाम्पू	२६।३३	७५।५५	२६। ४	जैसलमेर	२६।५५	७०।५४	४६।२४
आहोर	२५।२३	७२।५२	३८।३२	कोटरा	२४।२२	७३।१०	३७।२०	चारनवाला	२७।५३	७२।१०	४१।२०	जोधपुर	२६।१८	७३। ४	३७।४४
इन्द्रगढ़	२५।४४	७६।१२	२५।१२	कोटा	२५।१०	७५।५२	२६।३२	चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४०	३१।२०	जोधासर	२८। ७	७३।५०	३४।४०
उतारली	२९। ६	७१।५८	४२। ८	कोलायत	२७।५०	७३।५७	३८।१२	चिराबा	२८।१५	७५।३८	२७।२८	झालरापाटन	२४।३३	७६।१०	२५।२०
उदयपुर	२४।३५	७३।४१	३५।१६	खण्डेला	२७।३९	७५।३२	२७।५२	चीलो	२७।२२	७३।३०	३६। ०	झालावाड़	२४।३६	७६। ९	२५।२४
एकलिंगजी	२४।४३	७३।४६	३४।५६	खुईआला	२७। ९	७०।२५	४८।२०	चूरू	२८।१९	७५। १	२९।५६	झुंझुनु	२८। ६	७५।२५	२८।२०

राजस्थान के नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
टाडगढ़	२५।४२	७४। ०	३४। ०
टोडाराय सिंह	२६। ०	७५।२६	२८। ४
टोंक	२६।११	७५।५०	२६।४०
डीग	२७।२८	७७।२०	२०।४०
डीडवाना	२७।२४	७४।३४	३१।४४
डूंगरपुर	२३।५०	७३।४३	३५। ८
डेगाना	२६।५०	७४।१८	३२।४८
तिजारा	२७।५५	७६।५०	२२।४०
थाना कस्बा	२५।१३	७७।२०	२०।४०
थाना गाजी	२७।२५	७६।१६	२४।४४
दान्ता	२४।१२	७२।४७	३८।५२
देओरा	२६।३०	७०।४८	४७।१२
देवू	२६।४७	७२।२०	४०।४०
देवलिया	२४। ३	७४।४३	३१। ८
देवली	२५।४६	७५।२५	२८।२०
देवीकोट	२६।४२	७१।१२	४५।१२
देशनोके	२७।४८	७३।२१	३६।३६
देसुरी	२५।२०	७३।३७	३५।३२
धौलपुर	२६।४२	७७।५३	१८।२८
नरैना	२६।५०	७४।११	३३।१६
नवलगढ़	२७।५१	७५।१८	२८।४८
नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	३०।५६
नागौर	२७।११	७३।४४	३५। ४
नाचना	२७।२६	७१।४५	४३। ०
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५०	३४।४०
निम्बाहेड़ा	२४।३७	७४।४५	३१। ०
नीम का थाना	२७।४४	७५।४८	२६।४८
नोखा	२७।३५	७३।२६	३६। ४
नैनवा	२५।४४	७५।५७	२६।१२
नोहर	२९।११	७४।४६	३०।५६
पचपदरा	२५।५५	७२।२१	४०।३६
प्रतापगढ़	२४। २	७४।४७	३०।५२
पर्वतसर	२६।५२	७४।४७	३०।५२
पल्लू	२८।५६	७४।१३	३३। ८
पाली	२५।४६	७३।२०	३५।४०

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
पिपलोदा	२३।३५	७४।५०	३०।४०
पिरावा	२४।१३	७६। ३	२५।४८
पिलानी	२८।२३	७५।३५	२७।४०
पीपार रोड	२६।२७	७३।२७	३६।१२
पुनासर	२७। २	७३। २	३७।५२
पुष्कर	२६।३०	७४।३३	३१।४८
पूगल	२८।३१	७२।४७	३८।५२
प्रसाद	२४।११	७३।४२	३५।१२
फतेहपुर	२८। ०	७५। ०	३०। ०
फलोदी	२७। ६	७२।२२	४०।३२
फुलेरा	२६।५२	७५।१६	२८।५६
बड़ी सादड़ी	२४।२५	७४।२८	३२। ८
पोखरन	२६।५५	७१।५५	४२।२०
बनस्थली	२६।२३	७५।५०	२६।४०
बयाना	२६।५४	७७।१७	२०।५२
बान्दनवाड़ा	२६। ६	७४।४२	३१।१२
बस्वा	२७। ६	७६।३२	२३।५२
बान्दीकुई	२७। ३	७६।३६	२३।४४
बाड़मेर	२५।४५	७१।२५	४४।२०
बाड़ी	२६।३९	७७।३६	१९।३६
बाप	२७।२२	७२।२२	४०।३२
बारन	२५। ६	७६।३०	२४। ०
बांसवाड़ा	२३।३०	७४।२४	३२।२४
बाली	२५।५०	७४। ५	३३।४०
बालोतरा	२५।४९	७२।१६	४१। ४
बिरसलपुर	२८।१०	७२।१५	४१। ०
बिलारा	२६।१०	७३।४२	३५।१२
बीकानेर	२८। १	७३।२०	३६।४०
बुन्दी	२५।२७	७५।४०	२७।२०
ब्यावर	२६। ६	७४।२०	३२।४०
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	२०। ०
भवारी	२५।४३	७२।५२	३८।३२
भंवरगढ़	२५। ६	७६।५०	२३।४०
भाद्रा	२९।१५	७५।२०	२८।४०
भीनमाल	२५। ०	७२।१६	४०।४४

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
भीम	२५।३९	७४। ६	३३।२४
भीलवाड़ा	२५।२१	७४।४०	३१।२०
मकराना	२७। ३	७४।४३	३१। ८
मण्डलगढ़	२५।१२	७५। ६	२९।२४
महलां	२६।५०	७५।३०	२८। ०
महाजन	२८।४८	७३।५६	३४।१६
मांगरोल	२५।२०	७६।३०	२४। ०
मारवाड़-जंक्शन	२५।४३	७३।४५	३५। ०
मालपुरा	२६।१८	७५।२५	२८।२०
मावली	२४।४७	७३।५८	३४। ८
मेड़ता	२६।३९	७४। ६	३३।३६
मेड़तारोड	२६।४३	७३।५५	३४।२०
मियालजर	२६।१८	७०।२२	४८।३२
मुकन्दबाड़ा	२४।४९	७५।५९	२६। ४
मुनबाओ	२५।४३	७०।१५	४९। ०
मोदरी	२४।२५	७३।२५	३६।२०
मोहनगढ़	२७।१७	७१।१८	४४।४८
रतनगढ़	२८। ५	७४।३९	३१।२४
राजगढ़	२८।३९	७५।२६	२८।१६
रानीवाड़ा	२४।४५	७२।१३	४१। ८
रामगढ़ (जयपुर)	२७।१५	७५।१०	२९।२०
रामगढ़ (जैसलमेर)	२७।२२	७०।३०	४८। ०
रामदेवरा	२७। ०	७१।५२	४२।३२
रायसिंह नगर	२९।३२	७३।२७	३६।१२
रिखभदेव	२४। ४	७३।४०	३५।२०
रींगस	२७।२१	७५।३४	२७।४४
रूप नगर	२६।४८	७४।५४	३०।२४
रैनी	२८।४१	७५। ५	२९।४०
लछमनगढ़	२७।४५	७५। ४	२९।४४
लाठी	२७। ३	७१।३०	४४। ०
लाडनूं	२७।३९	७४।२३	३२।२८
लालसोट	२६।३४	७६।२३	२४।२८
लूनी	२६। ०	७३।५२	३८।३२
लोहारिया	२३।४८	७४।१५	३३। ०
शाहगढ़	२७। ८	६९।५३	५०।१२

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
शाहपुरा (जयपुर)	२७।२३	७५।५८	२६। ८
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	२५।४०	७४।५०	३०।४०
शेओ	२६।११	७१।१५	४५। ०
शेरगढ़ (जोधपुर)	२६।२५	७२।२१	४०।३६
शेरगढ़ (झालावाड़)	२४।४०	७६।३२	२३।५२
श्री गंगानगर	२९।४६	७३।५०	३४।४०
श्री डूंगरगढ़	२८। ६	७४। १	३३।५६
श्री माधोपुर	२७।२५	७५।३२	२७।५२
श्री मोहनगढ़	२७।१७	७१।१२	४५।१२
सम	२६।५०	७०।३१	४७।५६
समदरी	२५।४९	७२।३५	३९।४०
सरदार शहर	२८।२७	७४।३०	३२। ०
सरवार	२६। २	७४।५५	३०।२०
सरूप सर	२९।२२	७३।३७	३५।३२
सवाई माधोपुर	२५।५८	७६।२५	२४।२०
सहारा	२५।१५	७४।१६	३२।५६
सागवाड़ा	२३।४१	७४। १	३३।५६
सांगानेर	२६।४९	७५।४९	२६।४४
सांगोद	२४।५५	७६।२१	२४।३६
सांचोर	२४।४०	७१।५०	४२।४०
साम्भर	२६।५४	७५।१०	२९।२०
सादूलपुर	२८।३८	७५।२४	२८।२४
सिन्दरी	२५।३३	७१।५५	४२।२०
सिरमुटरा	२६।३१	७७।२२	२०।३२
सिरोही	२४।५३	७२।५४	३८।२४
सिवाना	२५।३६	७२।२७	४०।१२
सूरतगढ़	२९।१९	७३।५७	३४।१२
सीकर	२७।३६	७५। ९	२९।२४
सुजानगढ़	२७।४२	७४।३०	३२। ०
सोजत	२५।५६	७३।४२	३५।१२
हनुमानगढ़	२९।३५	७४।२१	३२।३६
हिन्दौन	२६।४३	७७। १	२१।५६

दिल्ली के अक्षांश आदि

नगर, उपनगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर, उपनगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
आजादपुर	२८।४३	७७।११	२१।१६	दौलतपुर	२८।४४	७७। ६	२१।३६
ओखला	२८।३४	७७।१८	२०।४८	नई दिल्ली	२८।३६	७७।१२	२१।१२
कालका जी	२८।३३	७७।१५	२१। ०	नांगलोई	२८।४०	७७। २	२१।५२
किशनगढ़	२८।३१	७७। ८	२१।२८	नांगलोई जाट	२८।४१	७७। ४	२१।४४
खिचड़ीपुर	२८।३७	७७।१६	२०।४४	नजफगढ़	२८।३७	७६।५६	२२। ४
जगतपुर	२८।४४	७७।१४	२१। ४	नानाखेड़ी	२८।३१	७६।५६	२२। ४
जफरपुर	२८।४०	७७। १	२१।५६	पालम	२८।३५	७७। ५	२१।४०
तुगलकाबाद	२८।३१	७७।१६	२०।५६	बादली	२८।४५	७७। ६	२१।२४
दिल्ली कैण्ट	२८।३६	७७। ८	२१।२८	बाबरपुर	२८।४१	७७।१७	२०।५२
दिल्ली (पुरानी)	२८।३८	७७।१२	२१।१२	महरौली	२८।३१	७७।११	२१।१६
दिल्ली विश्व-विद्यालय	२८।४२	७७।१३	२१। ८	शकूरपुर	२८।४१	७७। ६	२१।२४
				शाहदरा	२८।४०	७७।१८	२०।४८
देवली	२८।३०	७७।१४	२१। ४	सफदरजंग	२८।३७	७७।१३	२१। ८

हरियाणा के अक्षांश आदि

नगर, उपनगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर, उपनगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
अगरोहा	२९।२१	७५।३८	२७।२८	घाटासेर	२७।५८	७६। ३	२५।४८
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	२२।३२	चण्डी मन्दिर (कैण्ट)	३०।४२	७६।५२	२२।३२
अलीपुर	२९। ८	७५।५३	२६।२८				
उगाला	३०।११	७६।५९	२२। ४	चरखी दादरी	२८।३७	७६।१८	२४।४८
करनाल	२९।४२	७७। २	२१।५२	चिलकाणा	२९।१२	७६।५९	२२। ४
कलानौर	२८।५१	७६।२४	२४।२४	जगाधरी	३०।१०	७७।१८	२०।४८
कालका	३०।५०	७६।५६	२२।१६	जाखल	२९।४८	७५।५०	२६।४०
कुरुक्षेत्र	२९।५९	७६।५०	२२।४०	जींद	२९।१९	७६।१९	२४।४४
केसरी	३०।१४	७६।५४	२२।२४	झज्जर	२८।३७	७६।३९	२३।२४
कैथल	२९।४८	७६।२६	२४।१६	झांसा	३०। ७	७६।४४	२३। ४
कैरू	२८।४१	७५।५२	२६।३२	टोहाना	२९।४२	७५।५४	२६।२४
खतौली	३०।३६	७६।५८	२२। ८	डोहा	२७।४०	७६।५६	२२।१६
गुड़गांव	२८।२७	७७। ४	२१।४४	तोशाम	२८।५२	७५।५४	२६।२४
गोरखपुर	२९।२६	७५।४०	२७।२०	थाना बास	२७।५१	७६। ९	२५।२४
गोहाना	२९। ८	७६।४२	२३।१२	थानेसर	२९।५८	७६।५६	२२।१६
गौरोटा	२७।५६	७७।२५	२०।२०	दादरी	२८।३४	७७।३३	१९।४८
घरौण्डा	२९।३३	७६।५८	२२। ८	दुजाना	२८।४१	७६।३७	२३।३२

हरियाणा के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
घोलेरा	२७।५५	७६। ४	२५।४४	भिवानी	२८।४८	७६। ८	२५।२८
नरवाणा	२९।३७	७६। ७	२५।३२	मनसादेवी	३०।४३	७६।५१	२२।३६
नांगल चौधरी	२७।५३	७६। ७	२५।३२	मनीमाजरा	३०।४२	७६।५२	२२।३२
नांगल दुर्गु	२७।५३	७६। ३	२५।४८	महेन्द्रगढ़	२८।१७	७६। ९	२५।२४
नाथूसिरी कलां	२९।२२	७५। ८	२९।२८	मानपुर	२७।५९	७७।१७	२०।५२
नारनौल	२८। ३	७६।१४	२५। ४	माहम	२८।५७	७६।१८	२४।४८
नारायणगढ़	३०।२९	७७। ८	२१।२८	मुलाना	३०।१७	७७। ३	२१।४८
नाहर	२८।२३	७६।२३	२४।२८	मोहाना	२९। ३	७६।५२	२२।३२
नीलोखेड़ी	२९।५१	७६।५५	२२।२०	यमुनानगर	३०। ७	७७।१८	२०।४८
नूरपुर	३०।१३	७६।४७	२२।५२	रजाबाद	२९।३४	७५।३२	२७।५२
नूह	२८। ७	७७। १	२१।५६	राम्रौली	२७।४२	७६।५६	२२।१६
पंचकूला	३०।४२	७६।५२	२२।३२	रादौर	३०। १	७७। ८	२१।२८
पटौदी	२८।१८	७६।४८	२२।४८	रायपुर राणी	३०।३६	७७। २	२१।५२
पलवल	२८। ६	७७।२०	२०।४०	रिवाड़ी	२८।१२	७६।४०	२३।२०
पानीपत	२९।२३	७७। ०	२२। ०	रिवासा	२८।४८	७५।५७	२६।१२
पावरा	२९।२४	७५।४८	२६।४८	रोड़ी	२९।४४	७५।१२	२९।१२
पिंजोर	३०।५०	७६।५४	२२।२४	रोहतक	२८।५४	७६।३८	२३।२८
पिपली	२९।५८	७६।५३	२२।२८	लाडवा	२९।५९	७७। ५	२१।४०
पिहोवा	२९।५७	७६।३७	२३।३२	लोहारी	२९।२२	७६।५१	२२।३६
पुण्डरी	२९।४५	७६।३३	२३।४८	लोहारू	२८।२७	७५।४९	२६।४४
पूना हाणा	२७।५२	७७।१२	२१।१२	शादीपुर जुलाना	२९। ७	७६।२३	२४।२८
फतेहाबाद	२९।३१	७५।२८	२८। ८	शाहाबाद	३०।१०	७६।५२	२२।३२
फरीदाबाद	२८।२६	७७।१९	२०।४४	सफीदों	२९।२५	७६।४०	२३।२०
फिरोजपुर झिरखा	२७।४७	७६।५७	२२।१२	साढौरा	३०।२३	७७।१३	२१। ८
बड़ा उचाणा	२९।२७	७६।११	२५।१६	सिरसा	२९।३२	७५। ४	२९।४४
बरवाला	२९।२२	७५।५४	२६।२४	सिवानी	२८।५५	७५।३७	२७।३२
बल्लभगढ़	२८।२१	७७।१९	२०।४४	सोनीपत	२८।५९	७७। १	२१।५६
बहादुरगढ़	२८।४१	७६।५६	२२।१६	हसनपुर	२७।५८	७७।३०	२०। ०
बाल समन्द	२९। ५	७५।२९	२८। ४	हांसी	२९। ६	७६। ०	२६। ०
बास	२९। ६	७६।१२	२५।१२	हिसार	२९।१०	७५।४६	२६।५६
बुटाणा	२९।११	७६।३८	२३।२८	होडल	२७।५३	७७।२२	२०।३२
भट्टू कलां	२९।२३	७५।२१	२८।३६				
भाणा	२९।४०	७६।३१	२३।५६				
भादसों	२९।५५	७६।५८	२२। ८				

पंजाब के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अकालगढ़	२९।५०	७५।५३	२६।२८	जगरांव	३०।४७	७५।२९	२८। ४	बंगा	३१।११	७५।५९	२६। ४	मोरिण्डा	३०।४८	७६।३०	२४। ०
अजनाला	३१।५१	७४।४८	३०।४८	जण्डियाला	३१।३६	७५। ३	२९।४८	बटाला	३१।४८	७५।१२	२९।१२	मोहाली	३०।४३	७६।४२	२३।१२
अमरगढ़	३०।२८	७६। १	२५।५६	जलालाबाद	३०।३७	७४।१५	३३। ०	बनूड़	३०।३३	७६।४३	२३। ८	मौड़	३०। ५	७५।१५	२९। ०
अमलोह	३०।३७	७६।१४	२५। ४	जालन्धर	३१।१९	७५।३४	२७।४४	बरनाला	३०।२३	७५।३३	२७।४८	राजपुरा	३०।२९	७६।३६	२३।३६
अमृतसर	३१।३७	७४।५५	३०।२०	जीरा	३०।५८	७४।५९	३०। ४	बरेटा	२९।५१	७५।४१	२३।१६	रामपुरा फूल	३०।१७	७५।१४	२९। ४
अटारी	३१।३६	७४।३५	३१।४०	जिजों	३१।२१	७६। ९	२५।२४	बलाचौर	३१। ३	७६।१८	२४।४८	रायकोट	३०।३९	७५।३६	२७।३६
अबोहर	३०। ६	७४।११	३३।१६	जैतो	३०।२८	७४।५३	३०।२८	बसी	३०।३५	७६।५०	२२।४०	राहों	३१। ३	७६। ७	२५।३२
अहमदगढ़	३०।४१	७५।५०	२६।४०	टाण्डा उरमर	देखें	उरमर	टाण्डा	बसी पठाणां	३०।४०	७६।२३	२४।२८	रूपनगर	३०।५७	७६।३२	२३।५२
आनन्दपुर साहेब	३१।१५	७६।३१	२३।५६	डबवाली	२९।५८	७४।४५	३१। ०	बुढ़लाडा	२९।५६	७५।३४	२७।४४	रोपड़	देखें	रूपनगर	
उरमर टाण्डा	३१।४२	७५।३८	२७।२८	डकाला	३०।१३	७६।२१	२४।३६	बेला	३०।५६	७६।२३	२४।२८	रौणी	३०।३६	७६। ५	२५।४०
ककराला	३०। ४	७६। ७	२५।३२	डेरा बाबा नानक	३२। २	७५। ४	२९।४४	बोरास	३०।३६	७६।३२	२३।५२	लुधियाना	३०।५५	७५।५४	२६।२४
कपूरथला	३१।२३	७५।२३	२८।२८	तपा	३०।१९	७५।२१	२८।३६	ब्यास	३१।३१	७५।१८	२८।४८	शार्दूल गढ़	२९।४२	७५।१४	२९। ४
करतारपुर	३१।२७	७५।३०	२८। ०	तरन तारन	३१।२७	७४।५८	३०। ८	भटिण्डा	३०।११	७५। ०	३०। ०	संगरूर	३०।१२	७५।५३	२६।२८
कादियाँ	३१।४९	७५।२३	२८।२८	तलवण्डी भाई	३०।५१	७४।५६	३०।१६	भवानीगढ़	३०।१९	७६। २	२५।५२	संघोल	३०।४७	७६।२३	२४।२८
कादौं	३०।४७	७६। ३	२५।४८	दसूआ	३१।४९	७५।३८	२७।२८	भाखड़ा डैम	३१।२४	७६।३०	२४। ०	सनौर	३०।१८	७६।२८	२४। ८
कीरतपुर साहेब	३१।११	७६।३४	२३।४४	दीना नगर	३२। ९	७५।२८	२८। ८	भादसों	३०।३१	७६।१५	२५। ०	समराला	३०।५१	७६।११	२५।१६
कुराली	३०।५०	७६।३५	२३।४०	दोराहा मण्डी	३०।४९	७६। २	२५।५२	भीखी	३०। ५	७५।३४	२७।४४	समाना	३०। ९	७६।१२	२५।१२
कोट कपूरा	३०।३६	७४।५४	३०।२४	धारीवाल	३१।५७	७५।१९	२८।४४	भुच्चो	३०।१३	७५। ६	२९।३६	सरहिन्द	३०।३८	७६।२२	२४।३२
खण्ट	३०।४८	७६।२५	२४।२०	धुरी	३०।२२	७५।५२	२६।३२	भैणी आला	३०।५२	७६। ४	२५।४४	साधुगढ़	३०।३५	७६।२७	२४।१२
खन्ना	३०।४२	७६।१३	२५। ८	नकोदर	३१। ७	७५।२९	२८। ४	भैणी की माली	३०।५६	७६। २	२५।५२	सुनाम	३०। ८	७५।४८	२६।४८
खमाणों कला	३०।५०	७६।२०	२४।४०	नंगल डैम	३१।२३	७६।२१	२४।३६	मजीठा	३१।४६	७४।५७	३०।१२	सुल्तानपुर	३१।१२	७५।१२	२९।१२
खरड़	३०।४५	७६।३७	२३।३२	नवां शहर	३१। ७	७६। ८	२५।२८	मण्डी गोबिन्दगढ़	देखें	गोबिन्दगढ़ मंडी		सोहाणा	३०।४२	७६।४२	२३।१२
खेमकरण	३१। ८	७४।३४	३१।४४	नाभा	३०।२२	७६। ८	२५।२८	मलकाणा	२९।५६	७५। २	२९।५२	होशियारपुर	३१।३२	७५।५७	२६।१२
गंगुवाल	३१।१७	७६।२८	२४। ८	नूरपुर बेदी	३१। ९	७६।२९	२४। ४	मलोट	३०।१३	७४।२९	३२। ४				
गढ़दिवाला	३१।४४	७५।४५	२७। ०	नौगावां	३०।४४	७६।२६	२४।१६	माच्छीवाड़ा	३०।५५	७६।११	२५।१६				
गढ़शंकर	३१।१३	७६। ८	२५।२८	पटियाला	३०।२०	७६।२५	२४।२०	मादपुर	३०।५१	७६। ७	२५।३२				
गुरदासपुर	३२। २	७५।२७	२८।१२	पट्टी	३१।१७	७४।५१	३०।३६	मानकी	३०।४८	७६।१३	२५। ८				
गोइन्दवाल	३१।२२	७५। ८	२९।२८	पठानकोट	३२।१७	७५।४२	२७।१२	मानसा	२९।५९	७५।२३	२८।२८				
गोबिन्दगढ़ मण्डी	३०।४०	७६।१८	२४।४८	फगवाड़ा	३१।१४	७५।४६	२६।५६	मालेर कोटला	३०।३१	७५।५२	२६।३२				
घड़ुआं	३०।४७	७६।३३	२३।४८	फरीदकोट	३०।४०	७४।४०	३१।२०	मुकेरियां	३१।५७	७५।३७	२७।३२				
घनौर	३०।२१	७६।३७	२३।३२	फाजिल्का	३०।२५	७४। ४	३३।४४	मुक्तसर	३०।२९	७४।३१	३१।५६				
चण्डीगढ़	३०।४५	७६।५०	२२।४०	फिरोजपुर	३०।५५	७४।४०	३१।२०	मुबारिकपुर	३०।३७	७६।५१	२२।३६				
चमकौर साहेब	३०।५५	७६।२४	२४।२४	फिल्लौर	३१। १	७५।४७	२६।५२	मोगा	३०।४८	७५।१०	२९।२०				

—: दुनियाँ के कुछ देशों के स्टैं० टा० का भारतीय स्टैं० टा० से अन्तर :—

देश या प्रदेश के आगे लिखे घं० मि० को उस देश या प्रदेश के स्टैं० टा० में धन (+) ऋण (—) चिह्न के विपरीत घटाने या जोड़ने से उस समय का भा० स्टैं० टा० ज्ञात हो जायेगा।

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं.टा. का भा. स्टैं.टा. से अन्तर (घं. मि.)
अदन	— २।३०
अफगानिस्तान	— १।००
अर्जेण्टाइना	— ८।३०
आस्ट्रेलिया: कैपिटल टैरिटरी, विक्टोरिया, न्यू साउथ वेल्स, क्वीन्स लैण्ड, तस्मानिया	+ ४।३०
साउथ आस्ट्रेलिया, नार्दन टैरिटरी, ब्रोकन हिल एरिया	+ ४। ०
प. आस्ट्रेलिया	+ २।३०
आस्ट्रिया	— ४।३०
बेल्जियम	— ४।३०
बर्मा	+ १। ०
कनाडा	
न्यू फाउण्ड लैण्ड	— ९। ०*
एटलांटिक टाईम (A.T.)	— ९।३०*
ईस्टर्न टाईम (E.T.)	—१०।३०*
सैन्ट्रल टाईम (C.T.)	—११।३०*
माउण्टेन टाईम (M.T.)	—१२।३०*
पैसिफिक टाईम (P.T.)	—१३।३०*
सिलोन	०। ०
चीन	+ २।३०
कोलम्बिया	—१०।३०
क्यूबा	—१०।३०*
चैकोस्लावाकिया	— ४।३०
डेन्मार्क	— ४।३०
इजिप्ट (मिस्र)	— ३।३०*
इथोपिया	— २।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं.टा. का भा. स्टैं.टा. से अन्तर (घं. मि.)
फिनलैण्ड	— ३।३०
फ्रांस	— ४।३०
जर्मनी	— ४।३०
घाना	— ५।३०
ग्रीस	— ३।३०
हाँग काँग	+ २।३०
हंगरी	— ४।३०
इन्डोनेशिया	
सुमात्रा, जावा, बाली, बांगका, बिलीटान	+ १।३०
बोर्नियो, सेलीबिस, टिमोर, फ्लोर्स	+ २।३०
आरु, केई, टनिम्बर, मोलुक्कास प० इरियन	+ ३।३०
ईरान (पर्शिया)	— २। ०
इराक	— २।३०
आयरलैंड (उ.)	— ५।३०*
इजरायल	— ३।३०
इटली, सिसिली	— ४।३०*
जापान	+ ३।३०
जार्डन	— ३।३०
केन्या	— २।३०
कोरिया	+ ३।३०
कुवैत	— २।३०
मलयेशिया गणतन्त्र	
मलाया	+ २। ०
सरवक	+ २।३०
मारिशस	— १।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं.टा. का भा. स्टैं.टा. से अन्तर (घं. मि.)
मैक्सिको	
सैन्ट्रल टाईम (C.T.)	—११।३०
माउण्टेन टाईम (M.T.)	—१२।३०
पैसिफिक टाईम (P.T.)	—१३।३०
नीदर लैण्ड्स (हालैण्ड)	— ४।३०
न्यूजीलैण्ड	+ ६।३०
पाकिस्तान	— ०।३०
बंगला देश	+ ०।३०
फिलिप्पाइन गणतन्त्र	+ २।३०
पोलैण्ड	— ४।३०*
पुर्तगाल	— ४।३०*
राडेशिया, न्यासालैण्ड	— ३।३०
रोमानिया	— ३।३०
सऊदी अरब	
जेद्दा	— २।३०
बहरान, कतर	— १।३०
सिंगापुर	+ २। ०
सोमाली लैण्ड, सोमालिया	— २।३०
साऊथ अफ्रीकन गणतन्त्र	— ३।३०
स्पेन	— ४।३०
सूडान	— ३।३०
स्वीडन	— ४।३०
स्विट्जरलैण्ड	— ४।३०
सीरिया	— ३।३०*
थाईलैण्ड (स्याम)	+ १।३०
टर्की	— ३।३०*
युगाण्डा	— २।३०
इंग्लैण्ड	— ५।३०*
अमेरिका (U.S.A.)	
ईस्टर्न टाईम (E.T.)	—१०।३०*
सैन्ट्रल टाईम (C.T.)	—११।३०*

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं.टा. का भा. स्टैं.टा. से अन्तर (घं. मि.)
अमेरिका	
माउण्टेन टाईम (M.T.)	—१२.३०*
पैसिफिक टाईम (P.T.)	—१३।३०*
रूस (U.S.S.R.)	
मास्को,	— २।३०
'ब्लैक सी, से कैस्पियन सी' तक	— १।३०
स्वेर्दलोवस्क, प. कजक	— ०।३०
ओम्स्क, पू. कजक	+ ०।३०
क्रस्नोयार्स्क न्यू साईबेरिया	+ १।३०
इर्कुत्स्क	+ २।३०
याकुत्स्क, चितिन्स्क द. सकलिन	+ ३।३०
खबरोव्स्क, ब्लाडिवोस्तक उ. सखलिन	+ ४।३०
मगदन	+ ५।३०
पेत्रोपव्लोव्स्क	+ ६।३०
वियतनाम	
उत्तरी	+ १।३०
दक्षिणी	+ २।३०
वेनेजुएला	— ६।३०
युगोस्लाविया	— ४।३०
नेपाल	०। ०
सिक्कम	०। ०
भूटान	०। ०

* इन स्थलों पर Summer time (ग्रीष्मकालीन समय) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय स्टै. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।
जिन देशों में Summer time प्रचलित है वहाँ गर्मी के दिनों में घड़ियाँ एक घण्टा आगे कर दी जाती हैं। इसी 'एक घण्टा आगे किये गए' टाईम को Summer time कहा जाता है।

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं श्रम साध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीय-काल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश-रेखांश की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए किंच भिन्न-भिन्न अक्षांशों की लग्न सारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्न सारणी का ही प्रयोग होता है। आगे १२५ पृष्ठ पर हमने साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्ट-कालिक सूर्य की जरूरत नहीं होती, जब कि प्राचीन विधि में इन सबकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न-साधन विधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदय काल ज्ञात कीजिए। सूर्योदय काल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्ट कालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पञ्चांग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कीजिए। अब इस अक्षांश वाली लग्न सारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए :—

आगे २६, ३०, ३१ अक्षांशों की तीन लग्न सारणियां दी गई हैं जो दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में इष्ट कालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को सहायक सारणी (जो आगे दी गई है) के बाईं ओर पहले कालम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाइन में जो पल लिखे हों उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्ट काल के घड़ी पल भी जोड़ दीजिए। इसे हम "अभीष्ट घड़ी पल" कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी पल" यदि ६० घड़ी से अधिक हों तो उनमें से ६० घड़ी घटाकर शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी पलों" के बराबर (बराबर न मिले तो उनसे कुछ कम) घड़ी पल लग्न सारणी में ढूंढिए जिन्हें "सारणीस्थ घड़ी पल" कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी पलों" के बाईं ओर लग्न सारणी के पहले कालम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ी पलों का "सारणीस्थ घड़ी पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी पलों" और "अभीष्ट घड़ी पलों" का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाइन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला-विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि-अंशों में जोड़ दें। अब इसमें आगे दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण—मान लीजिए—वि० सं० २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को ५८ घ० ४५ प० इष्ट पर शिमला (हि० प्र०) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा०, २ अंश ३७ क० ४७ वि० है। शिमला के अक्षांश ३१ अं० ६ क० (उत्तर) हैं, अतः ३१ अक्षांश वाली लग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० (मेष) राशि के आगे २ अंश के नीचे २ घ० ५५ प० हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में २ घ० ५५ प० के दाईं ओर ३ अंश के नीचे ३ घ० २ प० लिखे हैं। इनका २ घ० ५५ प० से अन्तर ७ पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कालम में लिखे हुए ७ पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की ३७ क० ४७ वि० नहीं मिली। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर ३४ क० १७ वि० देखें जिनके बिल्कुल ऊपर ४ पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे २ घ० ५५ प० में जोड़ा और इष्ट काल के घ० प० भी इसमें जोड़े तो ६१ घ० ४४ प० (६० घड़ी घटाने पर १ घ० ४४ प०) 'अभीष्ट घड़ी पल' हुए। लग्न सारणी में 'अभीष्ट घड़ी पल' १ घ० ४४ प० नहीं हैं, अतः इस से कुछ कम १ घ० ४० प० सारणी में देखे जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कालम में ११ राशि और बिल्कुल ऊपर की लाइन में २१ अंश लिखे हैं। इन ११ रा० २१ अं० को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी पलों" (१ घ० ४० प०) के दाईं ओर २२ अंश के नीचे १ घ० ४६ प० का १ घ० ४० प० से अन्तर ६ प० "सारणीस्थ अन्तर" है। "अभीष्ट घड़ी पल" (१ घ० ४४ प०) और "सारणीस्थ घड़ी पल" (१ घ० ४० प०) का अन्तर ४ पल है। "सहायक सारणी" की ऊपर वाली लाइन में लिखे गए ४ पल के नीचे "सारणीस्थ अन्तर के बराबर ६ पल के आगे ४० क० ० वि० लिखा है। इन्हें ११ रा० २१ अं० में जोड़ने पर ११ रा० २१ अं० ४० क० ० वि० हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि० सं० २०२६ के आगे +१ कला लिखा है। इसे चिह्नानुसार ११ रा० २१ अं० ४० क० ० वि० में जोड़ने पर ११ रा० २१ अं० ४१ क० ० वि० निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्न साधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्य स्पष्ट जानने की आवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सबकी आवश्यकता रहती है।

दशम साधन विधि—इष्ट काल के घ० प० में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिन-मान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह 'नतकाल' होगा। नतकाल के घ० प० को इष्ट के घ० प० समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्न सारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए, जैसे कि ऊपर लग्न सारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्न सारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशम लग्न साधन का उदाहरण:-वि. सं २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क, ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ ५९ प. है. अत: दिनार्ध १६ घ. ० प हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प० में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ.४५ प. नतकाल हुआ. जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है।

दशमलग्न सारिणी में स्पष्ट सूर्य की० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारिणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर(३ अं के नीचे)४ घ. ६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प 'अभीष्ट घड़ी पल" हुए। "दशम लग्न सारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घ. प." धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे है अत: ८ रा. १६ अ. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अ. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। "सारणीस्थ घड़ी पल" ४६।४२ और 'अभीष्ट घड़ी पल" ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० प. के आगे ५ प के नीचे ३० क. ० वि. मिली. इन्हे अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२९ के आगे दिया गया. अयनांश संस्कार + १ क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अ. ३१ क. ० वि. निरयण दशम लग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल → ↓	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.
६	१०। ०	२०। ०	३०। ०	४०। ०	५०। ०	६०। ०							
७	८।३४	१७। ९	२५।४३	३४।१७	४२।५१	५१।२६	६०। ०						
८	७।३०	१५। ०	२२।३०	३०। ०	३७।३०	४५। ०	५२।३०	६०। ०					
९	६।४०	१३।२०	२०। ०	२६।४०	३३।२०	४०। ०	४६।४०	५३।२०	६०। ०				
१०	६। ०	१२। ०	१८। ०	२४। ०	३०। ०	३६। ०	४२। ०	४८। ०	५४। ०	६०। ०			
११	५।२७	१०।५५	१६।२२	२१।४९	२७।१६	३२।४४	३८।११	४३।३८	४९। ५	५४।३३	६०। ०		
१२	५। ०	१०। ०	१५। ०	२०। ०	२५। ०	३०। ०	३५। ०	४०। ०	४५। ०	५०। ०	५५। ०	६०। ०	
१३	४।३७	९।१४	१३।५१	१८।२८	२३। ५	२७।४२	३२।१९	३६।५६	४१।३३	४६।१०	५०।४७	५५।२३	६०। ०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला
२०१०	+१७	२०१६	+१२	२०२२	+७	२०२८	+२	२०३४	—३	२०४०	—८
२०११	+१७	२०१७	+१२	२०२३	+७	२०२९	+१	२०३५	—४	२०४१	—९
२०१२	+१६	२०१८	+११	२०२४	+६	२०३०	+१	२०३६	—४	२०४२	—९
२०१३	+१५	२०१९	+१०	२०२५	+५	२०३१	०	२०३७	—५	२०४३	—१०
२०१४	+१४	२०२०	+९	२०२६	+४	२०३२	—१	२०३८	—६	२०४४	—११
२०१५	+१३	२०२१	+८	२०२७	+३	२०३३	—२	२०३९	—७	२०४५	—१२

दुनिया के किसी भी नगर में सूक्ष्म लग्न-दशम जानने के लिए हमारी "गणक मार्त्तण्ड" पुस्तक की प्रतीक्षा करें जो शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। इस पुस्तक में दुनिया के सभी प्रसिद्ध नगरों(लगभग ७ हजार नगरों) के अक्षांश रेखांश तथा अन्य अनेक लग्नोपयोगी सारणियों के साथ सभी अक्षांशों की सूक्ष्मतम शुद्ध लग्न सारणियां दी गई हैं, जिनकी मदद से लग्न आदि सभी भाव बिना गुणा भाग के जुबानी ही तुरन्त जाने जा सकते हैं।

लग्न सारणी (अक्षांश २९ उत्तर)

(पलभा ६।३२।६)

अंश—		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष ०	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष १	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मिथुन २	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
कर्क ३	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०
सिंह ४	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
कन्या ५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तुला ६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृश्चिक ७	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४८	५९
धनु ८	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
मकर ९	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२४	३२
कुम्भ १०	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३२	४०	४८	५६	४	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मीन ११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार क, जीन्द, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए

लग्न सारणी (अक्षांश ३० उत्तर)

(पलभा ६।५५।४२)

अंश—		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष ०	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष १	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३७	४६	५५	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मिथुन २	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
कर्क ३	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिंह ४	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
कन्या ५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तुला ६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२२
वृश्चिक ७	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०
धनु ८	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
मकर ९	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	३०	३८
कुम्भ १०	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	३	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मीन ११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, जगा, श्रीगंगानगर, भटिण्डा, हनुमानगढ़, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए।

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर)

(पलभा ७।१२।२७)

अंश →		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष ०	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष १	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मिथुन २	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
कर्क ३	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिंह ४	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
कन्या ५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तुला ६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७
वृश्चिक ७	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	प.	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु ८	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मकर ९	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कुम्भ १०	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४५	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६
मीन ११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

कपूरथला, चण्डीगढ़, जालन्धर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष ०	घ.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
	प.	३८	४७	५६	५	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३
वृष १	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
	प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मिथुन २	घ.	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
	प.	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
कर्क ३	घ.	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
	प.	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिंह ४	घ.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
	प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
कन्या ५	घ.	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
	प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तुला ६	घ.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
	प.	३८	४७	५६	५	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृश्चिक ७	घ.	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
	प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु ८	घ.	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
	प.	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
मकर ९	घ.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
	प.	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कुम्भ १०	घ.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मीन ११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
	प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि दे रहे हैं। स्पष्ट-सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिर्विदों ने 'साम्पातिककाल' (*Sidereal Time*) की पद्धति को अपनाया है। यहां हम "साम्पातिककाल क्या है"—इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक-विवेचन न करते हुए, इसस लग्न स्पष्ट करने की सर्व-साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं।

विधि :—सा.का. (साम्पातिककाल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजे), जो इस पचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों) से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते हैं, तैयार करें—

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर (+ या —)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी' से उठाइये।

विशेष—यदि "अक्षांशादि सारणी" में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

ध्यान रहे—भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही हैं।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीय मध्यमकाल—जिस समय लग्नस्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड-टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो वहां) के स्टैण्डर्ड-अन्तर के मिनटादि (या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का "स्थानीयमध्यमकाल" बन जाता है। '+' यह चिन्ह जोड़ने की एवं '—' यह चिन्ह घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है।

जैसे—चण्डीगढ़ में दोपहर के १२ घं. ५७ मि. (भा. स्टै. टा.) पर स्थानीयमध्यमकाल जानने के लिए हम (भा. स्टै. टा.) में से चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर—२२ मिनट ३२ सैकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सैं. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१ सितं. १९४२ ई. से १५ अक्तू. १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थीं। अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे—सन् १९४४ की २० अग. को कोई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन के १२ बजकर ४५ मि. पर पैदा हुआ। इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्मकाल भा.स्टै.टा. के अनुसार ११ घं. ४५ मि. मानना होगा।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश—आगे दो [नं. (१) और नं. (२)] अयनांश-सारणियां दी गई हैं। अयनांशसारणी नं. (१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखे अंशादि अयनांश लें और 'अयनांशसारणी' सारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें;—यह अयनांश होगा।

जैसे—१५ जुलाई १९९९ ई. को अयनांश जानने के लिए "अयनांशसारणी" नं. (१) में से सन् १९९९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३ अं. ५१ क. २६ वि. प्राप्त किया। इसमें "अयनांशसारणी" नं. (२) से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोड़ने पर २३ अं. ५१ क. ५३ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल—आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गए हैं। इनके आधार पर 'इष्टकालिक साम्पातिककाल' इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है—

सा. का. कोष्टक नं. (१) में से अभीष्ट सन का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीपईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सा. का. लेकर जोड़ें। इसमें सा. का. कोष्ठक नं. (३) से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठाकर चिन्हानुसार जोड़ें या घटाएं। इस प्रकार मिले सा. का. के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल (जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा-मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा-मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं. (४) से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का. बन जाएगा। इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घ से अधिक हो तो उसमें से २४ घंटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण—यहां हम १५ जुलाई १९९९ को भा.स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १० घं. ४५ मि पर चम्बा (हि.प्र.) में सां.का. स्पष्ट करेंगे। अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १० क. (पूर्व) एवं स्टैं. अन्तर—२५ मि. २० सैं. है। स्टैण्डर्डअन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे ४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ। सां.का. कोष्ठक नं. (१) से सन् १९९९ ई. का सां.का. (६ घं. ४१ मि. २ सैं.) लिया। इससे कोष्ठक नं. (२) से लिया गया १५ जुला. का सां.का. (१२ घं. ४८ मि.४९ सैं.) जोड़ा तो १९ घं. २९ मि. ५१ सैं. हुआ। चम्बा के रेखांश ७६ अं. १० क. के लिए कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार तो ० है। अब १९ घं. २९ मि. ५१ सैं. में चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १० घं. १९ मि. ४० सैं. जोड़ा तो २९ घं. ४९ मि. ३१ सैं. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (४) से स्थानीयमध्यमकाल के १० घं. २० मि. से उठाए गए १ मि. ४२ सैं. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ सैं. हुए। यहां घण्टे २४ से अधिक हैं अतः २४ घं. घटाएं तो ५ घं ५१ मि. १३ सैं. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन तीन बातों को भी ध्यान में रखें :—

[१] यदि धन (+) चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.) के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल ४ घ. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में २४ मि. जोड़ कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें। जैसे—कलकत्ता में २ जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बजकर ५५ मि.) भा.स्टै.टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है। कलकत्ता का रेखांश

८८ अं. २४ क. (पूर्व) और स्टैं अन्तर + २३ मि. ३६ सै. है । स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए २३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि, ३६ सै. हुए । यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है, अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ सै. स्थानीय-मध्यमकाल हुआ । अब सां.का. बनाने के लिए कोष्ठक नं. (१) से १९७४ के आगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ सै. में कोष्ठक नं. (२) से लिए गए २ जन के ० घं. ३ मि. ५७ सै. जोड़ने पर ६ घं. ४४ मि. ९ सै. हुए । इसमें कोष्ठक नं० (३) से कलकत्ता के रेखांश ८८ से प्राप्त—८ सै. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ सै. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं. २ मि. ३७ सै. हुए । इसमें कोष्ठक नं. (४) से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ सै. जोड़ने पर ७ घं. २ मि. ४० सै. हुए । क्योंकि स्टैं. टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अतः उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि, ४० सै. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

[२] सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें, कि यदि स्टैं. टा. से (—) ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड़ कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा. का. कोष्ठक नं. (४) का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे—जयपुर में १५ मार्च १९७० को ० घं. १५ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व) और स्टैं. अं.—२६ मि. ३२ सै. है । यहां स्टैं. टा. के घं मि. से स्टैं. अं. ज्यादा है, अतः स्टैं.टा. में २४ घं जोड़ कर स्टैं. अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ सै. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं. (१) से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ सै. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ सै. जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ सै. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ सै. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ सै. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था, अतः यहाँ साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (४) का प्रयोग हम नहीं करेंगे । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११ घं. १६ मि. २२ सै. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए ।

[३] जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं—लीपइयर (२९ फरवरी वाले साल) में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सा. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" को प्रयोग में लाना चाहिए । जैसे—मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है । "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१)" में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ सै. लिये । क्योंकि हमारा सन् लीपइयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च) फरवरी के बाद की भी है, इसलिए "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं. ५१ मि. ४५ सै.) ही लेंगे और इन्हें ही ६ घं. ३७ मि. १७ सै. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे—यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" से १० फर. के घं. मि. सै. ही उठाने होंगे ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधि :—

ऊपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं ओर वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश-कला लिखी है, उन्हें अलग नोट कर लें । क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अतः अधिकतर यही सम्भव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मि. न मिलें, और यह भी अधिकतर सम्भव है कि आपको अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम) सा. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम (अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखी लग्न की अंश-कलाएं नोट करें—यह "स्थूलतम लग्न" है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३० मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) । ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सा. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें "स्थूलतम लग्न" में जोड़ देने से "स्थूललग्न" बन जाएगा । अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह "३ अक्षांशों की लग्नगति" ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश-कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें "३ अक्षांशों की लग्नगति" की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें "३ अक्षांशों की लग्नगति" के धन-ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा ।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :—लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न) दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात्—दशम स्पष्ट करने के लिए अक्षांशों की जरूरत नहीं होती ।) अभीष्ट सां. का. के घं.मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न) की अंश-कलाएं उठा लें । यह "स्थूलदशमलग्न" है । सां. का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें 'स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा ।

लग्नसाधन का उदाहरण :—चम्बा (हि. प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सा. का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. हैं । लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि.के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह "स्थूलतम लग्न" है । लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि.के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का. ६ घं ० मि. के आगे १८० अं. ० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६ अं. २६.क. (=३८६ क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सा. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सां. का. के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मि० की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७०क. (= ४ अं. ३०क.) मिलीं । इन्हें "स्थूलतमलग्न" में जोड़ने पर १७८

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिए) [भाग १ ख]

साम्पातिक काल	सभी स्थानों के लिए	अक्षांश ८° (उ.)	अक्षांश ११° (उ.)	अक्षांश १४° (उ.)	अक्षांश १७° (उ.)	अक्षांश २०° (उ.)
	दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
घ मि	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क
०।०	०।०	९३।१२	९४।२३	९५।४०	९६।५६	९८।१४
०।३०	८।१०	१००।३	१०१।१५	१०२।२७	१०३।४१	१०४।५७
१।०	१६।१७	१०६।५४	१०८।६	१०९।१३	११०।२४	१११।३६
१।३०	२४।१८	११३।४७	११४।५३	११५।५९	११७।५	११८।१४
२।०	३२।११	१२०।४३	१२१।४५	१२२।४७	१२३।५०	१२४।५२
२।३०	३९।५५	१२७।४५	१२८।४३	१२९।४०	१३०।३६	१३१।३२
३।०	४७।२८	१३४।५४	१३५।४५	१३६।३६	१३७।२७	१३८।१८
३।३०	५४।५१	१४२।१०	१४२।५५	१४३।३९	१४४।२२	१४५।६
४।०	६२।५	१४९।३३	१५०।१०	१५०।४६	१५१।२३	१५१।५८
४।३०	६९।१२	१५७।३	१५७।३१	१५८।०	१५८।२७	१५८।५५
५।०	७६।११	१६४।३८	१६४।५८	१६५।१७	१६५।३६	१६५।५४
५।३०	८३।७	१७२।१८	१७२।२८	१७२।३८	१७२।४७	१७२।५७
६।०	९०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०
६।३०	९६।५३	१८७।४२	१८७।३२	१८७।२२	१८७।१३	१८७।३
७।०	१०३।४९	१९५।२२	१९५।२	१९४।४३	१९४।२४	१९४।६
७।३०	११०।४८	२०२।५७	२०२।२९	२०२।०	२०१।३३	२०१।५
८।०	११७।५५	२१०।२७	२०९।५०	२०९।१४	२०८।३७	२०८।२
८।३०	१२५।९	२१७।५०	२१७।५	२१६।२१	२१५।३८	२१४।५४
९।०	१३२।३२	२२५।६	२२४।१५	२२३।२४	२२२।३३	२२१।४२
९।३०	१४०।५	२३२।१५	२३१।१७	२३०।२०	२२९।२४	२२८।२७
१०।०	१४७।४९	२३९।१७	२३८।१५	२३७।१३	२३६।१०	२३५।८
१०।३०	१५५।४२	२४६।१३	२४५।७	२४४।१	२४२।५४	२४१।४६
११।०	१६३।४३	२५३।९	२५१।५७	२५०।४७	२४९।३६	२४८।२४
११।३०	१७१।५०	२५९।५७	२५८।४५	२५७।३३	२५६।१९	२५५।३
१२।०	१८०।०	२६६।४८	२६५।३५	२६४।२०	२६३।४	२६१।४६

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अक्षांश ८° (उ.)	अक्षांश ११° (उ.)	अक्षांश १४° (उ.)	अक्षांश १७° (उ.)	अक्षांश २०° (उ.)
	दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
घ मि.	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क
१२।०	१८०।०	२६६।४८	२६५।३५	२६४।२०	२६३।४	२६१।४६
१२।३०	१८८।१०	२७३।४१	२७२।२७	२७१।११	२६९।५३	२६८।३३
१३।०	१९६।१७	२८०।३९	२७९।२५	२७८।६	२७६।५०	२७५।२९
१३।३०	२०४।१८	२८७।४३	२८६।३०	२८५।१५	२८३।५७	२८२।३५
१४।०	२१२।११	२९४।५७	२९३।४६	२९२।३३	२९१।१६	२८९।५५
१४।३०	२१९।५५	३०२।२१	३०१।१४	३००।४	२९८।५०	२९७।३२
१५।०	२२७।२८	३०९।५७	३०८।५६	३०७।५१	३०६।४२	३०५।२८
१५।३०	२३४।५१	३१७।४९	३१६।५४	३१५।५५	३१४।५३	३१३।४५
१६।०	२४२।५	३२५।५४	३२५।७	३२४।१७	३२३।२३	३२२।२५
१६।३०	२४९।१२	३३४।१२	३३३।३५	३३२।५५	३३२।१२	३३१।२६
१७।०	२५६।११	३४२।४१	३४२।१५	३४१।४८	३४१।१८	३४०।४५
१७।३०	२६३।७	३५१।१८	३५१।५	३५०।५१	३५०।३६	३५०।१९
१८।०	२७०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०
१८।३०	२७६।५३	८।४१	८।५५	९।९	९।२४	९।४१
१९।०	२८३।४९	१७।१९	१७।४५	१८।१२	१८।४२	१९।१५
१९।३०	२९०।४८	२५।४८	२६।२५	२७।५	२७।४८	२८।३५
२०।०	२९७।५५	३४।६	३४।५३	३५।४३	३६।३७	३७।३५
२०।३०	३०५।९	४२।११	४३।६	४४।५	४५।७	४६।१५
२१।०	३१२।३२	५०।२	५१।४	५२।९	५३।१८	५४।३२
२१।३०	३२०।५	५७।३९	५८।४६	५९।५६	६१।१०	६२।२८
२२।०	३२७।४९	६५।३	६६।१४	६७।२७	६८।४४	७०।५
२२।३०	३३५।४२	७२।१७	७३।३०	७४।४५	७६।३	७७।२५
२३।०	३४३।४३	७९।२१	८०।३५	८१।५१	८३।१०	८४।३१
२३।३०	३५१।५०	८६।१९	८७।३३	८८।४९	९०।७	९१।२७
२४।०	०।०	९३।१२	९४।२३	९५।४०	९६।५६	९८।१४

अं ४ क. "स्थूल लग्न" हुआ। अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क हुआ. यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है, अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और अम्बा के अक्षांश ३२ अं. २६ क. का अन्तर २६ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गतिकलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्नगति धन है अतः इसे "स्थूललग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायनलग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर १५४ अं. ३६ क. (=५ रा. ४ अं. ३६ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्नसाधन का उदाहरण :— १५ जुला. १९६६ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर ही अम्बा (हि. प्र.) में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय अम्बा में सां. का. ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे दशमलग्न ८३ अं ७ क. है, यह "स्थूलदशमलग्न" है। सारणी में सां. का. ५ घं ३० मि. और ६ घं. ० मि. के आगे दशमलग्न क्रमशः ८३ अं. ७ क एवं ९० अं. ० क. है। इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.—५ घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४ अं. ४९ क.) मिलीं। इन्हें "स्थूल दशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं ५६ क. सायनदशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क घटा देने पर ६४ अं. ३० क. (=२ रा. ४ अं. ३० क.) इष्टकालिक निरयण दशमलग्न हुआ।

ध्यान दें :—यहां हमने सां. का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझ कर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में सम्भव नहीं है; इस तथ्य का विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "[illegible]" में हमने किया है—वहां पढ़ें।

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिये) [भाग २ य]

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थानों के लिए दशम घं. क.	अक्षांश २३° (उ.) लग्न घं. क.	अक्षांश २६° (उ.) लग्न घं. क.	अक्षांश २९° (उ.) लग्न घं. क.	अक्षांश ३२° (उ.) लग्न घं. क.	अक्षांश ३५° (उ.) लग्न घं. क.
०।०	०।०	९९।३५	१००।१६	१०२।२६	१०३।५७	१०५।३४
०।३०	८।१०	१०६।१४	१०७।३४	१०८।५७	११०।२४	१११।५३
१।०	१६।१७	११२।४६	११४।४	११५।२२	११६।४१	११८।७
१।३०	२४।१८	११९।२२	१२०।३३	१२१।४५	१२३।०	१२४।१७
२।०	३२।११	१२५।५६	१२७।०	१२८।७	१२९।१७	१३०।२५
२।३०	३९।५५	१३२।३१	१३३।२९	१३४।२९	१३५।३०	१३६।३३
३।०	४७।२८	१३९।९	१४०।०	१४०।५२	१४१।४५	१४२।४०
३।३०	५४।५१	१४५।५०	१४६।३४	१४७।१८	१४८।४	१४८।५०
४।०	६२।५	१५२।३४	१५३।१०	१५३।४७	१५४।२४	१५५।१
४।३०	६९।१२	१५९।२२	१५९।५०	१६०।१७	१६०।४६	१६१।१४
५।०	७६।११	१६६।१३	१६६।३२	१६६।५०	१६७।९	१६७।२८
५।३०	८३।७	१७३।६	१७३।१५	१७३।२५	१७३।३४	१७३।४४
६।०	९०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०
६।३०	९६।५३	१८६।५४	१८६।४५	१८६।३५	१८६।२६	१८६।१६
७।०	१०३।४९	१९३।४७	१९३।२८	१९३।१०	१९२।५१	१९२।३२
७।३०	११०।४८	२००।३८	२००।१०	१९९।४३	१९९।१४	१९८।४६
८।०	११७।५५	२०७।२६	२०६।५०	२०६।१३	२०५।३६	२०४।५९
८।३०	१२५।९	२१४।१०	२१३।२६	२१२।४२	२११।५६	२११।१०
९।०	१३२।३२	२२०।५१	२२०।०	२१९।८	२१८।१५	२१७।२०
९।३०	१४०।५	२२७।२९	२२६।३१	२२५।३१	२२४।३०	२२३।२८
१०।०	१४७।४९	२३४।४	२३३।०	२३१।५३	२३०।४५	२२९।३५
१०।३०	१५५।४२	२४०।३८	२३९।२७	२३८।१५	२३७।०	२३५।४३
११।०	१६३।४३	२४७।११	२४५।५६	२४४।३८	२४३।१७	२४१।५३
११।३०	१७१।५०	२५३।४६	२५२।२६	२५१।३	२४९।३६	२४८।७
१२।०	१८०।०	२६०।२५	२५९।१	२५७।३४	२५६।३	२५४।२६

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थलों के लिए दशम घं. क.	अक्षांश २३° (उ.) लग्न घं. क.	अक्षांश २६° (उ.) लग्न घं. क.	अक्षांश २९° (उ.) लग्न घं. क.	अक्षांश ३२° (उ.) लग्न घं. क.	अक्षांश ३५° (उ.) लग्न घं. क.
१२।०	१८०।०	२६०।२५	२५९।१	२५७।३४	२५६।३	२५४।२६
१२।३०	१८८।१०	२६७।१०	२६५।४३	२६४।१२	२६२।३९	२६१।५४
१३।०	१९६।१७	२७४।३	२७२।३४	२७१।०	२६९।२१	२६७।३३
१३।३०	२०४।१८	२८१।९	२७९।३९	२७८।२	२७६।१९	२७४।२९
१४।०	२१२।११	२८८।३०	२८६।५९	२८५।२२	२८३।३६	२८१।४५
१४।३०	२१९।५५	२९६।९	२९४।४०	२९३।४	२९१।२०	२८९।२९
१५।०	२२७।२८	३०४।१०	३०२।४७	३०१।१२	२९९।२८	२९७।३८
१५।३०	२३४।५१	३१२।३३	३११।१५	३०९।४८	३०८।१३	३०६।२५
१६।०	२४२।५	३२१।२२	३२०।१३	३१८।५६	३१७।३०	३१५।५४
१६।३०	२४९।१२	३३०।३५	३२९।३९	३२८।३६	३२७।२५	३२६।४
१७।०	२५६।११	३४०।९	३३९।३०	३३८।४५	३३७।५४	३३६।५५
१७।३०	२६३।७	३५०।०	३४९।४०	३४९।१६	३४८।४९	३४८।१९
१८।०	२७०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०
१८।३०	२७६।५३	१०।०	१०।२०	१०।४४	११।११	११।४१
१९।०	२८३।४९	१९।५१	२०।३०	२१।१५	२२।६	२३।५
१९।३०	२९०।४८	२९।२५	३०।२१	३१।२४	३२।३५	३३।५५
२०।०	२९७।५५	३८।३८	३९।४७	४१।४	४२।३०	४४।६
२०।३०	३०५।९	४७।२७	४८।४५	५०।१२	५१।४७	५३।३२
२१।०	३१२।३२	५५।५०	५७।११	५८।४८	६०।३२	६२।२९
२१।३०	३२०।५	६३।५१	६५।२०	६६।५६	६८।४०	७०।३४
२२।०	३२७।४९	७१।३०	७३।१	७४।३८	७६।२४	७८।१९
२२।३०	३३५।४२	७८।५१	८०।२१	८१।५८	८३।४१	८५।३१
२३।०	३४३।४३	८५।५६	८७।२६	८९।०	९०।३९	९२।२९
२३।३०	३५१।५०	९२।५०	९४।१७	९५।४८	९७।२४	९९।६
२४।०	०।०	९९।३५	१००।१६	१०२।२६	१०३।५७	१०५।३४

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. १.

सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.	सन्	सा. का. घं. मि. से.
१९३६	६।३७।४	१९४३	६।३८।१५	१९५०	६।३९।२७	१९५७	६।४०।४०	१९६४	६।३७।५६	१९७१	६।३९।७	१९७८	६।४०।१९	१९८५	६।४१।३२
१९३७	६।४०।१	१९४४	६।३७।१७	१९५१	६।३८।३०	१९५८	६।३९।४३	१९६५	६।४०।५५	१९७२	६।३८।१०	१९७९	६।३९।२२	१९८६	६।४०।३५
१९३८	६।३९।६	१९४५	६।४०।१६	१९५२	६।३७।३३	१९५९	६।३८।४५	१९६६	६।३९।५७	१९७३	६।४१।१०	१९८०	६।३८।२४	१९८७	६।३९।३८
१९३९	६।३८।८	१९४६	६।३९।१९	१९५३	६।४०।३३	१९६०	६।३७।४७	१९६७	६।३९।०	१९७४	६।४०।१२	१९८१	६।४१।२३	१९८८	६।३८।४०
१९४०	६।३७।११	१९४७	६।३८।२२	१९५४	६।३९।३५	१९६१	६।४०।४७	१९६८	६।३८।३	१९७५	६।३९।१५	१९८२	६।४०।२६	१९८९	६।४१।३९
१९४१	६।४०।१०	१९४८	६।३७।२५	१९५५	६।३८।३८	१९६२	६।३९।५०	१९६९	६।४१।२	१९७६	६।३८।१७	१९८३	६।३९।२९	१९९०	६।४०।४१
१९४२	६।३९।१२	१९४९	६।४०।२४	१९५६	६।३७।४१	१९६३	६।३८।५३	१९७०	६।४०।५	१९७७	६।४१।१६	१९८४	६।३८।३२	१९९१	६।३९।४४

*साम्पातिक काल कोष्ठक नं. २

ता	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	ता
↓	घ मि से	घ मि से	घ मि से	घ मि से	घ मि से	घ मि से	घ मि से	घ मि से	घ मि से	घ मि से	घ मि से	घ मि से	↓
१	०।०।०	२।२।१३	३।५२।३७	५।५४।५०	७।५३।७	९।५५।२१	११।५३।३८	१३।५५।५०	१५।५८।४	१७।५६।२१	१९।५८।३४	२१।५६।५०	१
२	०।३।५७	२।६।९	३।५६।३३	५।५८।४७	७।५७।४	९।५९।१७	११।५७।३४	१३।५९।४७	१६।२।०	१८।०।१७	२०।२।३१	२२।०।४७	२
३	०।७।५३	२।१०।६	४।०।३०	६।२।४३	८।१।०	१०।३।१४	१२।१।३१	१४।३।४४	१६।५।५७	१८।४।१४	२०।६।२७	२२।४।४३	३
४	०।११।५०	२।१४।२	४।४।२६	६।६।४०	८।४।५७	१०।७।१०	१२।५।२७	१४।७।४०	१६।९।५३	१८।८।१	२०।१०।२४	२२।८।४०	४
५	०।१५।४६	२।१७।५९	४।८।२३	६।१०।३६	८।८।५३	१०।११।७	१२।९।२४	१४।११।३६	१६।१३।५०	१८।१२।७	२०।१४।२०	२२।१२।३६	५
६	०।१९।४३	२।२१।५५	४।१२।१९	६।१४।३३	८।१२।५०	१०।१५।३	१२।१३।२१	१४।१५।३३	१६।१७।४६	१८।१६।३	२०।१८।१७	२२।१६।३३	६
७	०।२३।३९	२।२५।५२	४।१६।१६	६।१८।२९	८।१६।४६	१०।१९।०	१२।१७।१७	१४।१९।२९	१६।२१।४३	१८।२०।०	२०।२२।१३	२२।२०।३०	७
८	०।२७।३६	२।२९।४८	४।२०।१२	६।२२।२६	८।२०।४३	१०।२०।५६	१२।२१।१४	१४।२३।२६	१६।२५।४०	१८।२३।५७	२०।२६।१०	२२।२४।२७	८
९	०।३१।३२	२।३३।४५	४।२४।९	६।२६।२२	८।२४।३९	१०।२६।५३	१२।२५।१०	१४।२७।२३	१६।२९।३७	१८।२७।५४	२०।३०।६	२२।२८।२३	९
१०	०।३५।२९	२।३७।४२	४।२८।५	६।३०।१९	८।२८।३६	१०।३०।४९	१२।२९।६	१४।३१।२०	१६।३३।३३	१८।३१।५०	२०।३४।३	२२।३२।२०	१०
११	०।३९।२५	२।४१।३९	४।३२।२	६।३४।१६	८।३२।३२	१०।३४।४६	१२।३३।३	१४।३५।१६	१६।३७।३०	१८।३५।४७	२०।३८।०	२२।३६।१६	११
१२	०।४३।२२	२।४५।३५	४।३५।५९	६।३८।१३	८।३६।२९	१०।३८।४२	१२।३६।५९	१४।३९।१३	१६।४१।२६	१८।३९।४३	२०।४१।५६	२२।४०।१३	१२
१३	०।४७।१८	२।४९।३२	४।३९।५६	६।४२।९	८।४०।२५	१०।४२।३९	१२।४०।५६	१४।४३।९	१६।४५।२३	१८।४३।४०	२०।४५।५२	२२।४४।९	१३
१४	०।५१।१५	२।५३।२८	४।४३।५२	६।४६।६	८।४४।२२	१०।४६।३५	१२।४४।५२	१४।४७।६	१६।४९।१९	१८।४७।३७	२०।४९।४९	२२।४८।६	१४
१५	०।५५।१२	२।५७।२५	४।४७।४९	६।५०।२	८।४८।१८	१०।५०।३२	१२।४८।४९	१४।५१।२	१६।५३।१६	१८।५१।३३	२०।५३।४५	२२।५२।२	१५
१६	०।५९।८	३।१।२१	४।५१।४५	६।५३।५९	८।५२।१५	१०।५४।२८	१२।५२।४५	१४।५४।५९	१६।५७।१२	१८।५५।३०	२०।५७।४२	२२।५५।५९	१६
१७	१।३।४	३।५।१८	४।५५।४२	६।५७।५५	८।५६।११	१०।५८।२५	१२।५६।४२	१४।५८।५५	१७।१।९	१८।५९।२६	२१।१।३९	२२।५९।५६	१७
१८	१।७।१	३।९।१४	४।५९।३८	७।१।५२	९।०।८	११।२।२१	१३।०।३८	१५।२।५२	१७।५।५	१९।३।२२	२१।५।३६	२३।३।५३	१८
१९	१।१०।५७	३।१३।११	५।३।३५	७।५।४८	९।४।४	११।६।१८	१३।४।३५	१५।६।४८	१७।९।२	१९।७।१९	२१।९।३२	२३।७।४९	१९
२०	१।१४।५४	३।१७।८	५।७।३१	७।९।४५	९।८।१	११।१०।१५	१३।८।३२	१५।१०।४५	१७।१२।५८	१९।११।१५	२१।१३।२९	२३।११।४६	२०
२१	१।१८।५१	३।२१।५	५।११।२८	७।१३।४१	९।११।५८	११।१४।१२	१३।१२।२९	१५।१४।४१	१७।१६।५५	१९।१५।१२	२१।१७।२५	२३।१५।४२	२१
२२	१।२२।४८	३।२५।१	५।१५।२५	७।१७।३८	९।१५।५५	११।१८।८	१३।१६।२५	१५।१८।३८	१७।२०।५१	१९।१९।८	२१।२१।२२	२३।१९।३९	२२
२३	१।२६।४४	३।२८।५८	५।१९।२२	७।२१।३४	९।१९।५१	११।२२।५	१३।२०।२२	१५।२२।३४	१७।२४।४८	१९।२३।५	२१।२५।१८	२३।२३।३५	२३
२४	१।३०।४१	३।३२।५४	५।२३।१८	७।२५।३१	९।२३।४८	११।२६।१	१३।२४।१८	१५।२६।३१	१७।२८।४४	१९।२७।१	२१।२९।१५	२३।२७।३२	२४
२५	१।३४।३७	३।३६।५१	५।२७।१५	७।२९।२८	९।२७।४४	११।२९।५८	१३।२८।१५	१५।३०।२७	१७।३२।४१	१९।३०।५८	२१।३३।११	२३।३१।२८	२५
२६	१।३८।३४	३।४०।४७	५।३१।११	७।३३।२४	९।३१।४१	११।३३।५४	१३।३२।११	१५।३४।२४	१७।३६।३७	१९।३४।५४	२१।३७।८	२३।३५।२५	२६
२७	१।४२।३०	३।४४।४४	५।३५।८	७।३७।२०	९।३५।३७	११।३७।५१	१३।३६।८	१५।३८।२०	१७।४०।३४	१९।३८।५१	२१।४१।४	२३।३९।२१	२७
२८	१।४६।२७	३।४८।४०	५।३९।५	७।४१।१७	९।३९।३४	११।४१।४७	१३।४०।४	१५।४२।१७	१७।४४।३१	१९।४२।४८	२१।४५।१	२३।४३।१८	२८
२९	१।५०।२३	३।५२।३७	५।४३।१	७।४५।१३	९।४३।३०	११।४५।४४	१३।४४।१	१५।४६।१४	१७।४८।२८	१९।४६।४५	२१।४८।५७	२३।४७।१४	२९
३०	१।५४।२०		५।४६।५८	७।४९।१०	९।४७।२७	११।४९।४१	१३।४७।५७	१५।५०।११	१७।५२।२४	१९।५०।४१	२१।५२।५४	२३।५१।११	३०
३१	१।५८।१६		५।५०।५४		९।५१।२४		१३।५१।५४	१५।५४।७		१९।५४।३८		२३।५५।७	३१
३२												२३।५९।३	३२

*लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं. २ को प्रयोग में लाइए।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. ३

पूर्व रेखांश →	३०°	३६°	४२°	४८°	५४°	६०°	६६°	७२°	७८°	८४°	९०°	९६°	१०२°	१०८°
सा. का. संस्कार (सेकण्ड)	+३१	+२७	+२३	+१९	+१५	+११	+७	+३	—१	—५	—९	—१३	—१७	—२१

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. ४

मि. → / घं. ↓	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.
०	०। ०	०। १	०। २	०। २	०। ३	०। ४	०। ५	०। ६	०। ७	०। ७	०। ८	०। ९
१	०।१०	०।११	०।११	०।१२	०।१३	०।१४	०।१५	०।१६	०।१६	०।१७	०।१८	०।१९
२	०।२०	०।२१	०।२१	०।२२	०।२३	०।२४	०।२५	०।२५	०।२६	०।२७	०।२८	०।२९
३	०।३०	०।३०	०।३१	०।३२	०।३३	०।३४	०।३४	०।३५	०।३६	०।३७	०।३८	०।३९
४	०।३९	०।४०	०।४१	०।४२	०।४३	०।४४	०।४४	०।४५	०।४६	०।४७	०।४८	०।४८
५	०।४९	०।५०	०।५१	०।५२	०।५३	०।५३	०।५४	०।५५	०।५६	०।५७	०।५७	०।५८
६	०।५९	१। ०	१। १	१। २	१। २	१। ३	१। ४	१। ५	१। ६	१। ७	१। ७	१। ८
७	१। ९	१।१०	१।११	१।११	१।१२	१।१३	१।१४	१।१५	१।१६	१।१६	१।१७	१।१८
८	१।१९	१।२०	१।२०	१।२१	१।२२	१।२३	१।२४	१।२५	१।२५	१।२६	१।२७	१।२८
९	१।२९	१।३०	१।३०	१।३१	१।३२	१।३३	१।३४	१।३४	·३५	१।३६	१।३७	१।३८
१०	१।३९	१।३९	१।४०	१।४१	१।४२	१।४३	१।४३	१।४४	१।४५	१।४६	१।४७	१।४८
११	१।४८	१।४९	१।५०	१।५१	१।५२	१।५३	१।५३	१।५४	१।५५	१।५६	१।५७	१।५७
१२	१।५८	१।५९	२। ०	२। १	२। २	२। २	२। ३	२। ४	२। ५	२। ६	२। ६	२। ७
१३	२। ८	२। ९	२।१०	२।११	२।११	२।१२	२।१३	२।१४	२।१५	२।१६	२।१६	२।१७
१४	२।१८	२।१९	२।२०	२।२०	२।२१	२।२२	२।२३	२।२४	२।२५	२।२५	२।२६	२।२७
१५	२।२८	२।२९	२।२९	२।३०	२।३१	२।३२	२।३३	२।३४	२।३४	२।३५	२।३६	२।३७
१६	२।३८	२।३९	२।३९	२।४०	२।४१	२।४२	२।४३	२।४३	२।४४	२।४५	२।४६	२।४७
१७	२।४८	२।४८	२।४९	२।५०	२।५१	२।५२	२।५२	२।५३	२।५४	२।५५	२।५६	२।५७
१८	२।५७	२।५८	२।५९	३। ०	३। १	३। २	३। २	३। ३	३। ४	३। ५	३। ६	३। ६
१९	३। ७	३। ८	३। ९	३।१०	३।११	३।११	३।१२	३।१३	३।१४	३।१५	३।१५	३।१६
२०	३।१७	३।१८	३।१९	३।२०	३।२०	३।२१	३।२२	३।२३	३।२४	३।२५	३।२५	३।२६
२१	३।२७	३।२८	३।२९	३।२९	३।३०	३।३१	३।३२	३।३३	३।३४	३।३४	३।३५	३।३६
२२	३।३७	३।३८	३।३=	३।३९	३।४०	३।४१	३।४२	३।४३	३।४३	३।४४	३।४५	३।४६
२३	३।४७	३।४८	३।४८	३।४९	३।५०	३।५१	३।५२	३।५२	३।५३	३।५४	३।५५	३।५६

अयनांश सारणी नं. १

ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश
मन्	अं. क. वि	मन्	अं. क. वि.	मन्	अं. क. वि.
१९२१	२२।४५।१३	१९४५	२३। ५।१९	१९६९	२३।२५।२६
१९२२	२२।४६। ३	१९४६	२३। ६।१०	१९७०	२३।२६।१६
१९२३	२२।४६।५४	१९४७	२३। ७। ०	१९७१	२३।२७। ६
१९२४	२२।४७।४४	१९४८	२३। ७।५०	१९७२	२३।२७।५७
१९२५	२२।४८।३४	१९४९	२३। ८।४१	१९७३	२३।२८।४७
१९२६	२२।४९।२५	१९५०	२३। ९।३१	१९७४	२३।२९।३७
१९२७	२२।५०।१५	१९५१	२३।१०।२१	१९७५	२३।३०।२७
१९२८	२२।५१। ५	१९५२	२३।११।११	१९७६	२३।३१।१८
१९२९	२२।५१।५५	१९५३	२३।१२। २	१९७७	२३।३२। ८
१९३०	२२।५२।४५	१९५४	२३।१२।५२	१९७८	२३।३२।५८
१९३१	२२।५३।३६	१९५५	२३।१३।४२	१९७९	२३।३३।४८
१९३२	२२।५४।२६	१९५६	२३।१४।३२	१९८०	२३।३४।३९
१९३३	२२।५५।१६	१९५७	२३।१५।२३	१९८१	२३।३५।२९
१९३४	२२।५६। ७	१९५८	२३।१६।१३	१९८२	२३।३६।१९
१९३५	२२।५६।५७	१९५९	२३।१७। ३	१९८३	२३।३७। ९
१९३६	२२।५७।४७	१९६०	२३।१७।५३	१९८४	२३।३८। ०
१९३७	२२।५८।३७	१९६१	२३।१८।४४	१९८५	२३।३८।५०
१९३८	२२।५९।२८	१९६२	२३।१९।३४	१९८६	२३।३९।४०
१९३९	२३। ०।१८	१९६३	२३।२०।२४	१९८७	२३।४०।३०
१९४०	२३। १। ८	१९६४	२३।२१।१५	१९८८	२३।४१।२०
१९४१	२३। १।५८	१९६५	२३।२२। ५	१९८९	२३।४२।११
१९४२	२३। २।४९	१९६६	२३।२२।५५	१९९०	२३।४३। १
१९४३	२३। ३।३९	१९६७	२३।२३।४५		
१९४४	२३। ४।२९	१९६८	२३।२४।३६		

अयनांश सारणी न. २

तारीख →	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख →	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

इस पंचांग में जो पहिले दैनिकलग्नसारणी दी गई है वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) बतलाती है। इसी सारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है — दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्ति काल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे— मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्तिकाल जाना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्न सारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास के आगे, मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मि. में जोड़ने पर १२ घं. १९ मि. मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्ति काल (भा. स्टै. टा.) बन गया।

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	−१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	−२	−५	−६	−६	−३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	−१	−४	−८	−११	−१२	−१२	−९	−६	−२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+१६	+४	−१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	−१	−४	−८	−११	−१३	−१३	−९	−६	−२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	−१	−८	−१३	−११	−४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	−२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१९	+२२	+२०	+१४	+५	−३	−१०	−१५	−१३	−६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	−१	−२	−२	−२	−१	−१	०
कलकत्ता	−३२	−२८	−३०	−३६	−४५	−५३	−६०	−६५	−६३	−५९	−४७	−४०
कांगड़ा	०	−१	−१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	−६	−५	−६	−९	−१३	−१७	−२३	−२७	−२३	−१६	−१५	−११
काशी	−१५	−१३	−१४	−१८	−२४	−२९	−३४	−३७	−३६	−३१	−२५	−२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	−१	−१	−१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	−५	−८	−७	−२	+४	+९
गढ़वाल	+४	+४	+४	+२	०	−२	−४	−५	−५	−३	−१	+१
गंगानगर	+३	−२	−२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	−१८	−१७	−१८	−२१	−२५	−२९	−३४	−३६	−३५	−३१	−२७	−२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	−४	−९	−१३	−१६	−१५	−११	−६	−२
चम्बा	−१	−३	−१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	−३	−५	−४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+५	+५	+४	+३	+१	०	−१	−१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	−६	−११	−१६	−१९	−१८	−१३	−७	−२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	−१	−३	−५	−६	−६	−४	−२	०
देहरादून	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−६	−५	−५	−५
नागपुर	+८	+११	+१०	+३	−७	−१७	−२६	−३१	−२९	−२०	−११	−२
नाभा	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+१	+१	+१

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धन मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
नैनीताल	−८	−७	−८	−९	−१०	−१२	−१३	−१४	−१४	−१२	−११	−९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	−२४	−२२	−२३	−२७	−३२	−३८	−४२	−४५	−४४	−३६	−३४	−२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	−११	−९	−१०	−१४	−१९	−२४	−२९	−३१	−३१	−२६	−२१	−१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	−४	−१०	−८	+३	+१४	+२५
बरेली	−६	−६	−६	−८	−१०	−१२	−१४	−१५	−१५	−१३	−११	−९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	−१६	−३२	−४०	−३७	−२२	−६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	−२	−४	−६	−८	−९	−९	−७	−५	−३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	−२	−६	−९	−११	−११	−७	−४	०
भुवनेश्वर	−१८	−१४	−१६	−२४	−३४	−४४	−५४	−५८	−५७	−४८	−३७	−२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	−१	−८	−१५	−२०	−१८	−११	−४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	−११	−२७	−४३	−५१	−४८	−३१	−१५	०
मथुरा	+३	+५	+३	+१	−२	−६	−९	−१०	−१०	−७	−४	०
मण्डी (हि.प्र.)	−२	−३	−३	−२	−१	०	+२	+२	+२	+१	०	−१
मालेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	−१	०	−१	−२	−३	−५	−६	−७	−७	−५	−४	−२
रोपड़	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	−३	−३	−३	−१	+१	+२
लखनऊ	−९	−८	−९	−१२	−१५	−१९	−२३	−२५	−२४	−२०	−१७	−१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	−२	−२	−२	−२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−२
श्रीनगर (क.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	−१	−१	−१	−२	−२	−३	−४	−४	−४	−३	−३	−२
हरिद्वार	−४	−४	−४	−५	−५	−६	−७	−७	−७	−६	−६	−५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+५
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	−२	−१७	−२८	−३५	−३३	−२२	−९	+३
होशियारपुर	+३	+१	+१	+२	+१	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

अथ महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान-चक्रम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७				राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९				बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
कृ.उ.फा.उ.षा				रो.ह.श्रवण				मृ.चि.ध				आ.स्वा.श.				पुन.वि.पू.भा				पु.अनु.उ.भा				श्ले.ज्ये.रे				म.मू.अश्विनी				पू.फा.पू.षा.भ			
जन्मभ्येऽन्तरम्				जन्मभ्येऽन्तरम्				जन्मभ्येऽन्तरम्				जन्मभ्येऽन्तरम्				जन्मभ्येऽन्तरम्				जन्मभ्येऽन्तरम्				जन्मभ्येऽन्तरम्				जन्मभ्येऽन्तरम्				जन्मभ्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
सू	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७	रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा.	१	०	१८	बृ.	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
मं	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श	२	१०	६	बु	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श	१	१	९	बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७	के	१	०	१८	शु	२	८	०	सू	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
श	०	११	१२	बु.	१	५	०	के	०	४	२७	शु.	३	०	०	सू	०	९	१८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०	सू.	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
के	०	४	६	शु.	१	८	०	सू	०	४	६	चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु	२	१०	०
शु	१	०	०	सू.	०	६	०	चं	०	७	०	मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ.	२	६	१२	श	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थं चक्रमिदम्

मङ्गला व १			पिङ्गला व २			धान्या व ३			भ्रामरी व ४			भद्रा व ५			उल्का व ६			सिद्धा व ७			संकटा व ८			दशा तथा वर्ष
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मङ्गल			बुध			शनि			शुक्र			राहु			दशेश ग्रह
आर्द्रा चि श्र			पुन स्वा ध			पुष्य वि श			श्ले अनु पू.भा			म ज्ये उ.भा			पू मू रे			अ उ.फा पू.षा			ह भ कृ उषा			जन्म नक्षत्र
म	०	१०	पिं	१	१०	धा	३	०	भ्रा	५	१०	भ	८	१०	उ	१२	०	सि.	१६	१०	स.	२१	१०	अन्तर्दशा मासादि शुभदशा—म.धा.भ.सि. नेष्टदशा—पि.भ्रा.उ.स.
पि	०	२०	धा	२	०	भ्रा	४	०	भ	६	२०	उ.	१०	०	सि	१४	०	स.	१८	२०	म.	२	२०	
धा.	१	०	भ्रा	२	२०	भ	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	स	१६	०	म.	२	१०	पि.	५	१०	
भ्रा	१	१०	भ	३	१०	उ	६	०	सि	९	१०	स	१३	१०	म	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
भ	१	२०	उ	४	०	सि	७	०	स	१०	२०	म	१	२०	पि	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
उ	२	०	सि	४	२०	स.	८	०	म	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
सि.	२	१०	स.	५	१०	मं	१	०	पि	२	२०	धा	५	०	भ्रा.	८	०	भ	११	२०	उ.	१६	०	
स	२	२०	म	०	२०	पि	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्त-भोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें. भयात के पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग के पलों से भाग देवें। लब्धांक वर्ष, होगा। फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, और भभोग के पलों से भाग दें। लब्धांक मास होगा। फिर ३० से गुणाकर करके भभोग के पलों से भाग दें, लब्धांक दिन होगें। तत्पश्चात् ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें. लब्धांक घटी, होगी। फिर शेष को ६० से गुणा कर भभोग के पलों से भाग दें लब्धि पल होगी। यह वर्षादि दशा का भुक्त

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ-ग्रहफलबोध चक्रम्

ग्रहा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृप भी:	धनलाभ:	हानि:	कष्टम्	शत्रुनाश:	पीडा	कष्टम्	धर्मनाश:	सुखम्	धनला.	पीडा
चन्द्र	पीडा	धनलाभ:	हर्ष:	शत्रुनाश:	सुखम्	पीडा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय:	विजय:	धनला.	व्यय
भौम	रुज	धननाश:	जय:	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश:	स्त्रीकष्टम्	पीडा	पुण्योदय:	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभ:	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ:	कलह:	धनलाभ:	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रह
गुरु	मस्तम्.	धनलाभ:	जय:	लाह. ला.	पुत्रप्रा	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभ:	शत्रुभीति:	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	धनला.	व्यय
शनि	वातार्ति	पीडा	धनलाभ:	दु:खम्:	पुत्रप्रा.	जय:	स्त्रीकष्टम्	रोग:	भाग्यहा.	धनहा:	धनला.	चिन्ता
राहु	शिरोर्ति	राजभी.	सुखम्	दु:खम्:	बुद्धि नाश	शत्रुनाश:	रोगभी:	कष्टम्	धर्महा.	विजय:	सुलाभ:	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश:	पीडा	भाग्यना.	धनला.	लाभ	शोक:
जन्मरा	कष्टम्	यशोऽर्थ:	पुष्टि:	दु:खम्:	सुखाप्ति:	कष्टम्	आगमनम्	दु:खम्	भाग्योद.	राज्यप्रा:	लाभ	कष्टम्

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

इस प्रकार से जो पहिले दैनिकलग्नसारणी दी गई है वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) बतलाती है। इसी सारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है — दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्ति काल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे— मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्तिकाल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्न सारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास के आगे, मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मि. में जोड़ने पर १२ घं. १९ मि. मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न के समाप्ति काल (भा. स्टै. टा.) बन गया।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	−१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	−२	−५	−६	−६	−३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	−१	−४	−८	−११	−१२	−१२	−९	−६	−२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	−१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	−१	−४	−८	−११	−१३	−१३	−९	−६	−२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	−१	−८	−१३	−११	−४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	−२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	−३	−१०	−१५	−१३	−६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	−१	−२	−२	−२	−१	−१	०
कलकत्ता	−३२	−२८	−३०	−३६	−४५	−५३	−६०	−६५	−६३	−५६	−४७	−४०
कांगड़ा	०	−१	−१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	−६	−५	−६	−९	−१३	−१७	−२२	−२४	−२३	−१६	−१५	−११
काशी	−१५	−१३	−१४	−१८	−२४	−२९	−३४	−३७	−३६	−३१	−२५	−२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	−१	−१	−१	०	०	+१
कोटा	+१७	+१९	+१५	+११	+५	०	−५	−८	−७	−२	+४	+९
गुड़गाँव	+४	+४	+४	+२	०	−२	−४	−५	−५	−३	−१	+१
गंगानगर	+३	−२	−२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	−१८	−१७	−१८	−२१	−२५	−२९	−३४	−३६	−३५	−३१	−२७	−२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	−४	−९	−१३	−१६	−१५	−११	−६	−२
चम्बा	−१	−२	−१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	−३	−५	−४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+५	+५	+४	+३	+१	०	−१	−१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३३	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झाँसी	+३	+५	+४	०	−६	−११	−१६	−१९	−१८	−१३	−७	−२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	−१	−३	−५	−६	−६	−४	−२	०
देहरादून	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−६	−५	−५	−५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	−७	−१७	−२५	−३१	−२९	−२०	−११	−२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+३	+३	+३

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धन मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
नैनीताल	−८	−७	−८	−९	−१०	−१२	−१३	−१४	−१४	−१२	−११	−९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	−२४	−२२	−२३	−२७	−३२	−३८	−४२	−४५	−४४	−३६	−३४	−२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१३	+८
प्रयाग	−११	−९	−१०	−१४	−१९	−२४	−२९	−३१	−३१	−२९	−२१	−१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	−४	−१०	−८	+३	+१४	+२५
बरेली	−६	−६	−६	−८	−१०	−१२	−१४	−१५	−१५	−१३	−११	−९
बंगलोर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	−१६	−३२	−४०	−३७	−२२	−५	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	−२	−४	−६	−८	−९	−९	−७	−५	−३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	−२	−६	−९	−११	−११	−७	−४	०
भुवनेश्वर	−१८	−१४	−१६	−२४	−३४	−४४	−५४	−५८	−५७	−४८	−३७	−२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	−१	−८	−१५	−२०	−१८	−११	−४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	−११	−२७	−४३	−५१	−४८	−३१	−१५	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	−२	−६	−९	−१०	−१०	−७	−४	०
मण्डी (हि.प्र.)	−२	−३	−३	−२	−१	०	+२	+२	+२	+१	०	−१
मालेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	−१	०	−१	−२	−३	−५	−६	−७	−७	−५	−४	−२
रोपड़	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	−२	−३	−३	−१	+१	+२
लखनऊ	−९	−८	−९	−१२	−१५	−१९	−२३	−२५	−२४	−२०	−१७	−१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	−२	−२	−२	−२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−२
श्रीनगर (क.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+६	+५
सहारनपुर	−१	−१	−१	−२	−३	−३	−४	−४	−४	−३	−३	−२
हरिद्वार	−४	−४	−४	−५	−५	−६	−७	−७	−७	−६	−६	−५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+५
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	−५	−१७	−२८	−३५	−३३	−२१	−९	+७
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+१	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

अथ महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान-चक्रम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७			
कृ. उ.फा. उ.षा.				रो. ह. श्रवण				मृ. चि. ध.			
जन्मर्क्षेऽन्तरम्				जन्मर्क्षेऽन्तरम्				जन्मर्क्षेऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
सू	०	३	१८	च	०	१०	०	मं.	०	४	२७
च	०	६	०	मं	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा	१	६	०	गु.	०	११	६
रा	०	१०	२४	गु.	१	४	०	श	१	१	९
गु	०	९	१८	श.	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु.	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के.	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु	१	०	०	सू.	०	६	०	च	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९			
आ. स्वा. श.				पुन. वि. पू.भा.				पु. अनु. उ.भा.			
जन्मर्क्षेऽन्तरम्				जन्मर्क्षेऽन्तरम्				जन्मर्क्षेऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
गु.	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श.	२	१०	६	बु	२	३	६	के.	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु.	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	सू	०	११	१२
शु	३	०	०	सू.	०	९	१८	च.	१	७	०
सू	०	१०	२४	च	१	४	०	मं.	१	१	९
च	१	६	०	मं	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	गु	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अश्वि.				पू.फा. पू.षा. भ.			
जन्मर्क्षेऽन्तरम्				जन्मर्क्षेऽन्तरम्				जन्मर्क्षेऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु	२	१०	०	सू.	०	४	६	च.	१	८	०
सू.	०	१०	६	च.	०	७	०	मं.	१	२	०
च.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	गु.	२	८	०
रा.	२	६	१८	गु.	०	११	६	श.	३	२	०
गु.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थं चक्रमिदम्

मङ्गला व १			पिङ्गला व २			धान्या व ३			भ्रामरी व ४		
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मङ्गल		
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य वि. श.			अ. श्ले. अनु. पू.भा.		
म	०	१०	पि	१	१०	धा	३	०	भ्रा	५	१०
पि	०	२०	धा	२	०	भ्रा	४	०	भ	६	२०
धा.	१	०	भ्रा	२	२०	भ	५	०	उ.	८	०
भ्रा	१	१०	भ	३	१०	उ	६	०	सि	९	१०
भ.	१	२०	उ	४	०	सि	७	०	स.	१०	२०
उ	२	०	सि.	४	२०	स.	८	०	म.	१	१०
सि	२	१०	स.	५	१०	म.	१	०	पि.	२	२०
स	२	२०	म	०	२०	पि	२	०	धा.	४	०

भद्रा व ५			उल्का व ६			सिद्धा व ७			संकटा व ८			दशा तथा वर्ष
बुध			शनि			शुक्र			राहु			दशेश ग्रह
भ. म. ज्ये. उ.भा.			कृ. पू.फा. मू. रे.			रो. उ.फा. पू.षा.			मृ. ह. उ.षा.			जन्म नक्षत्र
भ	८	१०	उ	१२	०	सि.	१६	१०	स.	२१	१०	अन्तर्दशा मासादि शुभदशा—म.धा.भ.सि. नेष्टदशा—पि.भ्रा.उ.स.
उ.	१०	०	सि	१४	०	स.	१८	२०	म.	२	२०	
सि.	११	२०	स	१६	०	म	२	१०	पि.	५	१०	
स.	१३	१०	म	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
म	१	२०	पि	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
धा	५	०	भ्रा.	८	०	भ	११	२०	उ.	१६	०	
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्त-भोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें. भयात के पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग के पलों से भाग देवें। लब्धांक वर्ष, होगा। फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, और भभोग के पलों से भाग दें। लब्धांक मास होगा। फिर ३० से गुणाकर करके भभोग के पलों से भाग दें, लब्धांक दिन होगें। तत्पश्चात् ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दे, लब्धांक घटी, होगी। फिर शेष को ६० से गुणा कर भभोग के पलों से भाग दे लब्धि पल होगी। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा प्राप्त होती है।

अथ वर्षकुण्डल्यां लग्नादिभावस्थ-ग्रहफलबोध चक्रम्

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृप भी:	धनलाभ:	हानि:	कष्टम्	शत्रुनाश.	पीडा	कष्टम्	धर्मनाश:	सुखम्	धनला.	पीडा
चन्द्र	पीडा	धनलाभ:	हर्ष:	शत्रुनाश.	सुखम्	पीडा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय:	विजय:	धनला.	व्यय
भौम	व्रण	धननाश:	जय:	व्यसन	दुर्गति.	शत्रुनाश:	स्त्रीकष्टम्	पीडा	पुण्योदय:	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभ:	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ:	कलह	धनलाभ:	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रह
गुरु	सुतम्	धनलाभ:	जय:	वाह. ला.	पुत्रप्रा	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभ:	शत्रुभीति:	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	धनला.	व्यय
शनि	वार्तार्ति	पीडा	धनलाभ:	दु:खम्:	पुत्रप्री.	जय:	स्त्रीकष्टम्	रोग:	भाग्यहा.	धनहा:	धनला.	चिन्ता
राहु	शिरार्ति	राजभी.	सुखम्	दु:खम्:	बुद्धिनाश	शत्रुनाश:	रोगभी:	कष्टम्	धर्महा.	विजय:	सुलाभ:	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश:	पीडा	भाग्यना.	धनला.	लाभ	शोक:
मुन्था	लाभम्	यशोऽर्थ:	पुष्टि:	दु:खम:	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनम्	दु:खम्	भाग्योद.	राज्यप्रा:	लाभ	कष्टम्

मध्यमसिद्धान्तीय वर्ष-प्रवेश सारिणी

वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

वर्ष	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना— (वेधसिद्ध) वर्तमान मध्यमसिद्धान्तीय से वर्तमान में ८॥ पल कम है। अतः सूक्ष्म-वर्ष-प्रवेश-कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८॥ से गुणा करके पलात्मक फल को सारिणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्मवर्षमानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफल-साधन प्रकार—(१) अभीष्ट सवत (जिस संवत का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष (गताब्द) जानें। स्मरण रहे कि संवत् प्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछली संवत से करना (चैत्रादिनवसंवत्प्रवेशात् पूर्वम्?) इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारिणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घडी पल जोडने से वर्षप्रवेश कालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हो तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्ष प्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन वर्ष प्रवेश जानना। पंचांगों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता। वहां पर वार को ठीक जानें। इस इष्ट के अनुसार पीछे लिखी स्वदेशीय लग्न सारिणी से लग्न साधन करके वर्ष कुण्डली लगाना। **मुन्थासाधनप्रकार**:—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोडकर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना, यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटायें, ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी १ बचे तो सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा जानें।

दशा दिवानि—सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० यह दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ वर्ष बल देते हैं।

स्त्रीपुरुष बल—सू. ९।५, चं. २।४, मं. ९।८।१०, बु. ३।६, बृ. ९।१२।४, शु. २।७।१२, श. १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष स्त्री बल स्त्रीग्रह (चं. बु. श. शु.) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू. मं. बृ.)

४।५।६।१०।११।१२ के स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल—दिन के जन्म में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के जन्म में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे	वृ.	मि	क.	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राशि
सू.	शु.	श	शु.	गु.	च	बु.	म	श	म	गु.	चं.	दिवात्रिराशेश
बृ.	चं.	बु.	मं	सू.	शु.	श	शु.	श	म	बृ.	चं.	रात्रित्रिराशेश

वर्ष में दृष्टि-ज्ञान और फल

वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से पांचवें ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल—कार्य में शीघ्र सफलता, धन, पद लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है। उनसे प्रेम होता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। फल—कार्य कठिनता एवं गुप्त भाव से सफल हो पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल—शत्रुता उत्पन्न करे, मित्र से वैर, धन हानि, बनते काम को बिगाड़ना आदि फल होते हैं। ४-१० गुप्तशत्रु दृष्टि से देखते हैं। फल—कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णय:—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, राश्येश ५, दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान हो वही वर्षेश्वर होगा। यदि सबों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल, दृष्टि, अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिसमें वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा। फल—वर्षेश ६।८।१२ व अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखमय श्रीवृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग—वर्ष कुण्डली में लग्नेश-नवमेश या चतुर्थेश-दशमेश एक घर में हो या एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अथवा वर्ष-लग्नेश बली हो और वह मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली होगी।

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	[illegible] एकपाद दृष्टि
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्ण दृष्टि
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. च.	र. रा. श.	र. च. म	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु	मं. श. गु. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुं. स्त्री. नपुंसक
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	अतिस्थिर	चर	वर्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्व रस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
धनु	जलभू	[illegible]	श्मशान	वार्णी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़ें ३ और जोड़ें ८ से शेष करें तो मंगलादि योगिनी दशा होती है।

[illegible]		
[illegible]	०	१०
[illegible]	०.१५	३०
[illegible]	१	१०
[illegible]	१	२०
[illegible]	२	०
[illegible]	२	२०
[illegible]	२	३०

गर्भ योग—वर्ष कुण्डली में लग्नेश पाँचवें या सातवें पड़ा हो वा पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भयोग होता है।

मंथेश और चन्द्रमा बली होकर पाँचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्न लग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करना, फिर उसमें १२०(डेढ़ सौ) का भाग देना। लब्ध जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्न लग्न की राशि अंक मिलाना. यह गुणा का स्पष्ट लग्न जानना। और प्रश्नलग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्म लग्न पति के स्थान में प्रश्न लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जो हो वह लिखना। प्रश्न पत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष जानना। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग—यदि जन्म लग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्म नक्षत्र भी वर्ष में वही आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ नहीं तो अशुभ कष्ट भयप्रद होता है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ हो तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो, वह शास्त्र-सम्मत शुभ-मुहूर्त में करें, तो अवश्य सफल हो कर सुखप्रद होता है। गया-गोदावरी यात्रा में, नवरात्र कृत्य में एवं चातुर्मास्य व्रत में गुरु-शुक्रास्त का दोष नहीं होता। शुक्ल पक्ष की द्वितीया एवं कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा सर्व कार्यों में शुभ मानी है। प्रथम बार देव दर्शन एवं प्रथम तीर्थ यात्रा में गुरु-शुक्रास्त अवश्य विचार्य है।

चन्द्र-शुद्धि—अपनी राशि से ४, ८, १२वीं छोड़ अन्य राशियां हों तो चन्द्र-शुद्धि समझें। अभिषेक निषेक, यज्ञोपवीत तथा विवाह में द्वादशस्थ चन्द्र पुरुष को ग्राह्य है। कन्या को १२ चन्द्र का निषेध है।

तारा शुद्धि—अपने नक्षत्र से इष्ट दिन के नक्षत्र तक की संख्या में ९ का भाग देकर २।४।६।८ या ९ शेष बचे तो तारा शुद्धि समझें।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र**—तीनों उत्तरा, मृ.ह.अनु.रो.स्वा.श्र.ध.श.। **शुभ लग्न**—जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ १६ रात्रि तक सम रात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में कन्या होती है।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम है।

गर्भाधान के लिए अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रांति का दिन। सन्ध्या काल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी निधन तारा, जन्म नक्षत्र मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन व्यतिपात, वैधृति योग, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघ योग का आधा भाग, जन्म राशि से अष्टम लग्न पाप युक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री-पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल रखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमांत संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में, जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है।

सीमान्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषोमलमासस्य मौढ्यस्य गुरु-शुक्रयो: ॥

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णु पूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तन पान कराने या सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र-मृग. पुन. पु. श्र. रे. म. हों, तब स्तन पान कराना शुभ है। आगे अन्न-प्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिका पथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती, तीन-उत्तरा, रो., मृ., ह., स्वा अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि, गुरु और भौम वारों में, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य है अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री के जल पूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, श्र पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जल पूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जल पूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा रो. ह. अश्विनी पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ दिन शुभ वार में, मृ. रे चि. अनु ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।५।६।७।९।१० इन लग्नों में शुभ ग्रह से युक्त होने पर १।४ ११वें शुभ ग्रह हों ३।६।११वें पाप ग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण मुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुन. ह. मू. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम-शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे-चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

भूम्युपवेशन मुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन करके भौम के पूर्णबल में तीनों उत्तरा, रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में, ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिरलग्न में शुभदिन में बालक के करधनी का द्विसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बैठावें।

भूम्युपवेशन के लिए मन्त्र—"रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये! इति॥" इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखे, जिसको बालक ग्रहण करे, उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११वें में कन्या का भद्रादि-दोष रहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी किसी के मत से जन्म-नक्षत्र अनु. शत-तारका और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्ममास, जन्मनक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६वें दिन, ६वें ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों. ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों तुला, वृष, धनु. या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समयपर करने से मनुष्य के हानिया (आन्त्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या का नासिका छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत. स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिनके प्रथमप्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन को छोड़ कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ., रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांचमास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष में अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो "यथाकुलधर्मं वः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं, वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल शनि, रवि, भौमवार, हजामत से नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन, रात्रि में बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोज के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य से नियुक्त हैं वे रूपजीवी जैसे नट, भांड आदि किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह., अश्वि., पुष्य, अभि. श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा. चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों के बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क, तुला, और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र. ध. शत., अश्विनी, मू., तीनों उत्तरा, रो, पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हो, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. म. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ है।

सीने पिरोने (सूचि कर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र, सूर्य, बुध, चन्द्र, बृ. शु. ये वार, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक की गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, इन वर्षों में यदि न किया जाए तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृ., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेध रहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू. चं. बु, (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को; शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथी जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोग बाण को छोड़कर मध्यान्ह से पहले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश, ६।८ वें स्थान में, चं. शु. १२वें स्थान में, और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ है। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में, पापग्रह ३।६।११ स्थानों में, वृष या कर्क का सम्पूर्ण चन्द्रमा; लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक से उपनयन संस्कार के लिए समय शुद्धि न मिले। अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

योनि-नाड़्यादि-ज्ञान चक्र

[illegible] व्यापार (सांझेदारी) में परस्पर अशुभ षडष्टक तथा गण-दोष नहीं होना चाहिए।

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा वाले हैं	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू.फा.	पू.फा.
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व.	मध्य	तीक्ष्णदारुण	मणि	१	पूषा	पूषा.
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.
पुष्य	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व.	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारुण	चक्र	५	ध.	अनु.
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि	अश्वि.
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उषा	उषा
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूषा	पूषा
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	भ.	भ.
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा.	बलिनिभ	४	म.	आश्ले.
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारुण	कुंडल	३	पुष्य	पु.
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारुण	सिंहपुच्छ	११	पुन	पुन.
पू. षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ	आ.
उ. षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व.	सुलो.	चरचल	वामन	३	भ.	कृ.
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व.	अंध	चरचल	मर्दुल	४	आश्ले	वि.
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व.	मंद	चरचल	मर्दुल	१००	स्वा.	स्वा.
पू. भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा.
उ. भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक।

स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी और चतुर्थ मित्र समझना चाहिए।

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण→	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि→	१२।४।८	१।५।९	२।६।१०	३।७।११

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्त शास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिले उस में गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणों वाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या या चिन्ह भी है। उसका विवरण यह है, कि—नाड़ी दोष की जगह (३), गण महादोष की जगह (१), भकूट महादोष षड्टक में (६), नवपञ्चम में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रखा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया, वहां ऋण का (—) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिन्ह (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं है। वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष हैं इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इसमें अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १८ गुण से कम हों और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हों तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है।

नाड़ी-दोष-परिहार—यदि वर कन्या की राशि एक हो और जन्म नक्षत्र भिन्न हो, अथवा दोनों का जन्मनक्षत्र एक हो राशि भिन्न हो तो नाड़ीदोष एवं गणदोष नहीं होता। यदि दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरणभेद हो तो भी नाड़ीदोष नहीं होता। **आवश्यक दोष शान्ति**—द्विर्द्वादश दोष होने पर ताम्र-सुवर्ण, वर्णादि दोष में अन्न वस्त्र, सुवर्ण, नव पंचम में कांसी चांदी, अशुभ षडष्टक में गोमिथुन अथवा गाय अन्न वस्त्र सुवर्णादि का दान करने पर पाणिग्रहण करें। "गावोऽन्नं वस्त्रं हेम सर्वं दोषापहारकम्।—(बृह:)। महादोष एकनाड़ी हो तो अत्यावश्यकता में शान्त्यर्थ महामृत्युंजय का जप तथा कम से कम ११ रत्ती स्वर्ण की नाड़ी एवं गोदान करने पर ही पाणिग्रहण करें अन्यथा नहीं।

अपवाद—न वर्णवर्गो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे चांशनाथयोः। गणादि दौष्ट्येऽप्युद्वाहः पुत्रपौत्रप्रवर्धनः॥

मिलान के बिना ही विवाह—जो कन्या स्वयं वर का वरण करे, अथवा जहां वर-कन्या को परस्पर देखने से ही वर-कन्या के मन एवं नेत्रों को सन्तोषानुभूति हो, अथवा पुनर्भू एवं क्रीता—स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए गुण-ग्रह मैत्र्यादि विचार शास्त्र विहित नहीं है।

मेलापक सारिणी

कन्या / वर	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
जाति	अ १	भ १	कृ ।	कृ ॥।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ॥।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ॥।	ह १	चि ॥	चि ॥	स्वा १	वि ॥।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ॥।	श्र १	ध ॥	ध ॥	श १	पूभा ॥।	पूभा ।	उभा १	रे १
अ १	२८ ३	१६ ०	२७॥	१७॥ ४	२६॥ -४	२२॥ -४	१६॥	२६॥ १	१७॥ ३	२२॥ ३	१०॥	२७	२० +४	२७ २६+	१४॥ १५	९॥ १९	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६	१२॥ १५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	१८॥	१७॥ १	१९॥ १	१७॥ १४	२३॥ ४+	२४ ४+
भ १	२३	२८ ३	२८ ०१	१८ २४१	२६॥ -४	१७॥ ३४	१९॥ ३	२५॥	२६॥	१०॥	२२॥ ३	२७॥ १	१५ -१४	२७ ३५	१४ ५+	१९ ९	१०॥ ६	३॥ २३६	२२	२८	२१ -२	१९॥ -१५	१७॥ ३५	१९॥ -१६	१९॥ -१४	१७॥ ३५	२२॥ ५+	२७॥	२६	१० २३४	६॥ २२	२८॥ -१	२१ -२	२२॥ २४+	१९॥ ३४	२३ ४+
कृ ।	२६॥	२८ २	२८ ३	१८ ३४	१० ०१३४	१६॥ ४	१८॥	१८॥ १	१८॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१८॥ ३३	१९ १४	२० १९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कृ ॥।	१९ ४	१६ १४	१६ १४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२१	१६ ३	१२ ३	२१ १	२१ १	२० १५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रो १	२३॥ -४	२३॥ -४	१६ ३४१	२० ३१	२८ ३	१६ ०	२६॥ ०४४	२७ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२३॥ ६+	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मृ ॥	२६॥ -४	१७॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	२५	२८ ३	१८॥ ३४	२६॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१६ ३	२६	१६॥	१५॥ १	२४॥	२३ ६+	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मृ ॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
आ १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पुन ॥।	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पुन ।	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पु १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श्ले १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पूफा १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
उफा ।	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
उफा ॥।	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ह १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
चि ॥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
आदि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।।	चि ।।	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	श १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
कि ३॥	२२	१४/१३	२८	२३/१+	१८॥/१६	१०॥/३६	१२/३५	२०/१५	१८॥/५+	१९	११/३	२५	२४॥	१०॥/१३	१७॥/१२	१७॥/२२४	२०/४+	२०/३४	२८/३	२७॥/०	३६॥	२३॥/४	६॥/३४	२०॥/४	२७	११/१३	२१/१	२३.१/१	२५	२२/३	१८/१५	२६/५+	१८॥/१५	२२/१६	६/१६३२	[illegible]
[illegible] १	२६/१+	२८	१६/३	११/३६	१४/३६	२४/-६	२६/५+	२६/५+	२७/५+	२७॥	२६	१५½/३	२२॥/३	२४	२४॥	२४॥	२७॥/४४+	२१/४+	२८	२८/३	२०/०१	९/३४०	२१॥/४	१६॥/४	२७	२७	१८/३	२१॥/३	२३॥/६	२६	२१/५+	२२/५२	२५/५+	१८॥/६	१६/६	२१/१६
वि ३॥	२१	२२/१	२०/३	१५/३६	९/१३६	१७/-६	१८॥/५+	२०/१५	२०/५+	२०॥	२०॥	१७/३	१६॥/३	१८॥/१	१७॥/१२	१७॥/१४२	१८॥/४+	२६/४-	३३॥	१९/३	२८/३	१६/३४	१६/०४	२१॥/४	२७	२१/१	१३/१३	१५॥/१३	१५॥/३	२३॥	२४/५+	२६/५+	२०/१५	१३॥/१६	१२॥/१६३	७/३६
वि १	१६॥/१+	१६॥/२६	१४॥/२६	१९॥/३	१३॥/१३	२७	११/६	१२॥/१६	१२॥/६	१८/-५	१८/५-	१४॥/-३५	२४॥/३	२२॥/१	२१॥/१२	१७/१२	१८	२६	२२॥/४	७/३४	१५/३६	२८/३	२७/०	३१॥	२२॥/४+	१५॥/४१	७॥/१३४	११/१३	११/३	२५	२४	२५॥	१६॥/१	१६/१५	१८/१२३	१७/३८
अनु १	२३॥/६	१४॥/३६	१८॥/-६	२३॥	२७॥	२७/३	१०/३६	१५/२६	१७/६	२५/-२	१७/३५	२०/-५	२४॥	२०॥/३	२८	२४	२५	२१/३	६॥/३७	२०॥/४	१६/४	२८	२८/३	३१/०	१५॥/२४	१३॥/३४	२१॥/४+	२५	२६	१२/३	१२/३	२०	२४॥	३४/३+	१७/१५	२६/५+
ज्ये १	१०/२६	१७॥/१६	२४॥/-६	२८॥	२२॥/१	२६	१२/६	२/२१६२	४/६३	१९॥/४३	१६/५+	२५/-५	२१	२७॥/१	१५५/१३	११/१३	११/३	२४	१६॥/४	१४॥/४	१६/४	३१॥	३०	२८/३	१४/०२३४	१६॥/१४	१६॥/०४	२०/१	२०	२५	२४	१७/१	२०/१३	६॥/१३५	२०/३५	[illegible]
मू १	२१॥/३५	१६/१५	२५/५+	१८॥/६	२२॥/१६	१२॥/६	२१	१४/१३	१२/३	७॥/३६	१७॥/६	२३/६	२४/५+	१८/१५	१८॥/१५३	१३/३१	१३/३	२६	२६	२१	२६	२२॥/४+	१६॥/+२४	१९/३४	२८/३	२८/०१	१४॥/१	२३॥/१४	१४॥/४	१६/४	२८॥	२१॥/३	१४॥/१३	१६॥/१६	१७॥/१	२६
पूषा १	२५॥/-५	१७॥/३५	१९॥/-१३५	२४/१६२	१८॥	१०॥/१६	१६/३	२६	२७	२२॥/६	१४॥/२३६	१६॥/१६	१६/-१५	१७/३५	२५/५+	२८॥	२७	१२/१३	१२/१३	२७	२०/१	१६॥/-१४	१५॥/१४	१७॥/-१४	२७/१+	२८/३	३४/०	२२/-४	२३॥/४	३१/१३४	२४॥/२	२३॥/१	२८॥	२८॥	२२॥/३	३०॥
उषा १	२४/१	२५॥/२-	१९॥/१३५	९/१३६	१०/२३६	१६॥/२६	२५/२+	२६	२७	२२॥/६	२२॥/६	८॥/१६३	८॥/१५३	२४/५+	२५/५+	२८॥	२८॥	२०/१	२०/१	१६/३	१२/१३	८॥/१३४	२३॥/४+	१७॥/-१४	२५/-२	३५	२८/३	१६/३४	१५/०३४	१३/१०	२॥/१	२३॥/१	२८॥	२९॥	३॥	२२/३
उषाढ़ा	२७	२८॥	१५॥/१३	१२/१३५	१६/२३५	२२॥/२५+	१६॥/२६	२४॥/-६	२१॥/-६	२८	२८	१४/१३	४॥/१३६	२०/६	२१/६	२४/५+	२४/५	१५॥/१५	२२॥/-१	२१॥/३	१४॥/१३	१२/३१	२७	२१	१४॥/१४	२४/४	१७/३४	२८/३	२७/०३	२५॥/१+	१५॥/+१४	८॥/१+	२१॥/४+	२३॥	१३॥	३२॥/३
ध १	२८	२७	१४॥/३२	१२/३५२	१७/३५	२६/५+	२३/-६	१६॥/-६	२१॥/-६	२८	२८/२+	१४/३	७॥/३६	१८॥/६	२०/६	२३/५+	२४/५+	१६/५	२४	२२॥/३	१४॥/३	१२/३	२७	२१	१४/४	२२॥/४	१५/३४	२६/३	२८/३	२७/-०	१७/०४	१७॥/४+	२०॥/४+	२८॥	२६॥	३१
श ॥	२०	२१/१३२	२६	२३॥/+५॥	१५/१५	११/३५	८/३६	१६/१६	२४॥/-६	२२	१३/३	२७	१८॥/६	४॥/१३६	१०॥/१६	१६॥/१५	१७/५+	१५/३५	१६/३	२४	२८॥	२६	१२/३	२६	१७/४	६॥/३४१	१४॥/४१	२५॥/१	२७	२८/३	१७/३४	२३/०४	१७॥/१४	२४॥/१	१५/१३	२३॥/+२
भ ॥	१९॥	१०॥/१३२	२५॥	३०	२५॥/१	१७॥/३	११/३५	१८/१५	१७/+५	१२/६	४/३६	१८/६	२४॥	१०॥/१३	१८॥/१	१७॥/१६	१६/६+	१७/३६	१८/३५	२०/-५	२४॥/-४	२५	११/३	२५	२९॥	१५॥/१३	२७॥/१	१६॥/१४	१८/४+	१८/३४	२८/३	३३/०	२७॥/१	१६॥/१४	६॥/१३४	१३॥/४२
[illegible] १	१४॥/३	२०॥/१	२६॥	२१	२५/१	२६॥	२०/५+	१२/१३५	१२/३५	६॥/३६	२३/६	१६/६	२४॥	१९॥/१	११॥/१३	२०॥/१३६	२०॥/२३६	२५/६	२६/+५	२१/-२१	२६/४+	२३॥	२०	१८/३	२२॥/३	२४॥/१	२४॥/१	१७/१४	१७॥/४+	२४/४+	३३	२८/३	१६/०१	८/१३४०	१६॥/१४	१३॥/४
पूभा॥	१७॥/३	२४॥/२+	१६॥/-१	२४/-१	३०	३०	१३॥/५+	१७/३५	१७/३५	१२॥/३६	१९॥/६	१२/१६	२८॥/१	२४॥	१६॥/३	२५॥/१६	१४॥/३६+	१७॥/१६	१८॥/१५-	२६/५+	२०/-१५	२०॥/१	२६॥	११/१३	१५/१३	२४॥	२५॥	२३॥/+४	२३॥/-४	१८॥/-१४	२८/-१	१६/१३	२८/३	१६/१४	२२/०४	१६॥/४३
[illegible] १	१४॥/३४	१६॥/४२	१६॥/-१४	१६/१	२५	२५	२४	१७॥/३	१७॥/१	१७/१५	२५/५	१७॥/१५	१६॥/-१६	२२॥/६+	१४॥/१६	१६/६	१६/१	१८/१+	११/१६	१८॥/१	१२॥/१९	१९/-१५	२५/+५	८॥/१३५	१४/१२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	२४॥/१	१३॥/१४	७/१३४	१५/३४	२८/३	१६/०	३०॥/+
[illegible] १	१६॥/४+	१५॥/३६	१८॥/-१४	२१/१	२६	१८/३	१७/३	२५	२६॥	१६/५	१६/३५	२०/१५	२०॥/-१६	१५/१६	२६॥/६+	२७	२६	९/१३२	२/१३६२	१६/६	१६॥/१६२	१८/२३	१८/१३	२०/-१५	२४॥/-२	२६॥/३	२६॥	२८॥	२४॥	१४॥/१३	१२॥/१३४	१६/४	३३	२८/१	३३/०	[illegible]
१ १	२६/१+	२३॥/-४+	१०॥/१४	१३/३	१७/३	२६	२५	२७	२५	२४॥/६	२६/३	१३/३५	१२/३६	२२॥/६+	२२॥/६+	२४	२५	११	१२/६	१०/१६	४/१६	१०॥/१६	२१/१+	२६/+१+	२६	२८॥	२०॥/१	१६॥/१	२१॥/१	२२॥/-२	२४॥/४२	७॥/१२	१६॥/४२	२८॥/+२	३३	२८/१

भौम-मेलापक-विचार—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। यदि एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न से ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए और दोनों का पञ्चम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा—वैधव्ययोग वाली कन्या को शालिग्राम या कुम्भ से यथाविधि विवाह करके दीर्घायु वाले वर के साथ विवाह करे।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन, सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश वाला, द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन नास्तिक, आजीविका से रहित अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह वाला, संसार से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल लम्बी व पतली झगड़ालू अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे ८ किसी भी दोषवाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

गोत्र में विवाह निषेध—समान गोत्रप्रवर में विवाह से उत्पन्न सन्तान चाण्डाल होती है तथा वर-वधु जाति से च्युत हो जाते हैं तुल्यसपिण्ड मातृगोत्र या तुल्य पितृगोत्र का सम्बन्ध भाई-बहन का सा होता है।

वाग्दान—(कुड़माई सगाई) से पहले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—असपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए दोषा दिका मेलापक सारिणी से विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिए—(१) दारिद्र्य, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार (५) सन्तान का अभाव।

वर-वरण मुहूर्त—उ. ३, रो. कृ. पूर्वा ३, रिक्ता-अमावस्या को छोड़कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभलग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर या पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगाये। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को संस्कृत करे और वर के मुख में एक छुवारा या मीठा, (गुड़, बताशा) देकर यह मन्त्र पढ़े "तस्मिन् कालेऽग्नि सान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्या-वरण मुहूर्त—उ. षा., स्वा., ध., पूर्वा. ३, अनु., ध., कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फलपुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिए।

विवाह काल-निर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवें। तद्यथा "मासत्रया-दूर्ध्वमयुग्म वर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को कोई विशेष दोष नहीं लगता। वात्स्यः—रजस्वलायाः कन्यायाः गुरु-शुद्धिं न चिन्तयेत्। वशिष्ठः-तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहोमतः॥ विवाह लग्न के समय कन्या ऋतुमती हो तो—स्नापयित्वा तु तां कन्यामर्चयित्वा यथाविधिः। युञ्जानामाहुतिं हुत्वा ततः कर्माणि योजयेत्।

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवे जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधु की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हो तो आवश्यकता से कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (—) का चिह्न लिखा हो उसी स्थान में ऊपर गण संख्या भी १८ से अधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार निर्दोष शुद्ध नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या सम्बन्ध के समय "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्यायाः नवमे वरः" बोलते हुए नाम बदल लेते हैं। ऐसे नाम बदलना व्यर्थ है अतः पहिले सारिणी आदि देखें।

प्रयोग चक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्यसिद्धि.
मुखे	३	शुभत्रसिद्धिः
कण्ठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कटिद्वय	३	साधनार्थः
चरणे	४	साधनाढित

मंत्र-दीक्षा मुहूर्त—अधिकमास रहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की [illegible] तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की [illegible] तिथियों में, [illegible] में वृष मि. सिंह. क. तु. ध. मी. लग्न हो, लग्न से [illegible] में शुभग्रह हों, ३।६।११ में पापग्रह हों तब मन्त्रदीक्षा लेना उत्तम है। विशेष—सतीर्थ पर सूर्यचन्द्रग्रहण के [illegible] तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय मास तथा पञ्चाङ्गशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—चै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. मासों की २।६।७।१०।१३।१५ तिथियों में अथवा या निषि-द्धस्य देवस्य तस्यां वा) रो. मृ. पुन. पु. उ. ३, ह. स्वा. चि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वदेवांश नक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होने पर गुरु शुक्र के उदय में शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे, शिवस्य चरे, दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

लग्न-गण्डान्त—कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न-गण्डान्त होता है। यह भी कन्या में अशुभ होता है।

अथ विवाह मास:—(विवाहवृन्दो)-मीनार्केऽन्य बिना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। सौम्यो ऊर्जौ धनुषश्चान्ये मध्यमा: स्यु: करग्रहे॥ अर्थात् पाणिग्रहणं न केचित् केचित् वदन्तीत्यपरो विशेष:। उत्पातस्याचार एव प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥ केवलेन यदि गौरीकृतं वाग्दानादिषु च पाणिपीडनम्। तेन बोक्तमपरं स्याहुतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेध:—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन), जन्मनक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। आवश्यके परिहार:—कार्तं दिनं शुभदं वसिष्ठ: तज्जैव गर्गेरितमिदं तथापि:। तज्जन्मपक्षं दिन भागुरिश्च यते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना निषिद्ध है परन्तु अति आवश्यकता में ६ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप बनाकर जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करायें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करे।

अथ ज्येष्ठ विचार—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहिनों का विवाह एक साथ या छ: मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या व पुत्र के पीछे छ: मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करने और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले। वहां छ: मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभकार्यों में मरणाशौच—साहेचिट्ठी (कुंकुमपत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण में ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास कुलवालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिये गये हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि में सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या राशि से चन्द्र गुरु देखिए, बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि—गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा, ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु. सू. चं.) शुद्धि प्रथम देखें। "भव-चाप-कुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचर:। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु ॥ बृहस्पति: ॥ अत्यावश्यकता में "हिरण्यों द्वादशस्तुर्योऽष्टमश्चापि पूजार्चनात्। लब्धे दम्पत्योके ग्राह्य: चन्द्राद्दष्टमगो रवि:। नीचे ...कं त्याज्य: अरिष्टा चाविरोऽपि चेत्॥ (रणवीर ज्यो. नि)

शुक्रास्ती अनुकूल:रवि:—धर्म-धी-धन-गतो दिवाकरस्तोविराजि-अनितस्य लोचन:। आवश्यके पूज्यरवि-परिहार:—गार्ग्याङ्गिरोवत्स-वशिष्ठ गौतम-पराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयकन्यांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परत: शुभावह:। (मु०प्र०मा०)।

विवाहार्थे त्रिबल-शोधनम्	
पूज्यगुरु:—१०।६।३।१	क. मी. कर्क
श्रेष्ठगुरु:—६।५।११।२।७	राशि में
नेष्टगुरु:—४।८।१२	हो तो नेष्ट
श्रेष्ठरवि:—३।६।१०।११	गुरु भी
पूज्यरवि:—२।५।६	श्रेष्ठ है।
विशेष पूज्य रवि:—१।७	
नेष्टरवि:—४।८।१२	
नेष्टचन्द्र:—४।८	
श्रेष्ठचन्द्र:—१।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२	

कन्या-वरयो: तैलादि-साधन (कन्या)

दिन संख्या

राशि→	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.→	७	१०	५	१०	५	३	३	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३, म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्भेषु-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षय-रहित-तिथिषु कात्यायन-मते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम् ॥ विवाह में विशेष कर लग्न और नक्षत्र की प्रधानता है।

सभी कार्यों में लग्नशुद्धि—जन्म राशि से आठवीं, बारहवीं राशि न हो तथा लग्न से आठवें बारहवें कोई ग्रह न हो तो लग्न शुद्धि समझें।

अथ विवाहाङ्ग मङ्गलारम्भ मुहूर्त—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहिले ३।६।९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पसीना, कूटना, मंगल कलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, मण्डप चढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोवा बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुद्ध होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि—इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इसवर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुये हैं। इन दसों दोषों में जो जिस मुहूर्त में है वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

(१) लत्तादोष-ज्ञानाव चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	फल
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लत्तनक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम्	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाश:	भयम्	मृत्यु:	भयम्	बन्धुनाश:	कार्यहानि:	कुलक्षय:	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष-ज्ञानार्थं चक्रम्

सा.	मू.	मघा	उफा	ह.	स्वा.	अनु	मू.	उषा	उभा.	रे	चि.	नक्षत्र
आर्द्रा पुन. श्ल. पुष्य चि. मू.	मू. आ ज्ये श. म. ह.	श. पू. ज्ये पुष्य ह. रे.	कृ आ वि पूफा उफा पूभा	भ मृ श पूफा स्वा म.	कृ भ श पुष्य ह रे	भ आ. उषा पूषा पूषा पूफा.	रो ज्ये ध ज्यो मू उभा	भ पुन श वि अनु उषा	भ श वि उफा. पूफा. मृ.	अ ज्ये ध श पूफा स्वा.		पीड़ित नक्षत्र

हर्षण वैधृति साध्य व्यतिपात गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र या स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्रय मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेधदोष चक्रम्

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

(५) जामित्र दोष चक्रम्

रो	मृ.	म.	उफा	ह.	स्वा	अनु	मू.	उ. षा.	उ. भा. रे.	विवाह नं.
अनु	ज्ये	श.	पू. भा.	उ. भा	अ	कृ	मृ.	पुन	उ ह. फा.	ग्रह नक्षत्र

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र है और नीचे ग्रह नक्षत्र है, याने १४वें नक्षत्र में रहे ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

(६) बाणदोष ज्ञानार्थं चक्रम्

बाण नाम	संक्रान्ताः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वाराः वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्ध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड; व्यतिपात, विष्कुम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हो और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वे, २२वें, २३वें, २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रान्तिसाम्य-दोष चक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	क०	तुला
सिंह०	म०	ध०	वृश्चि०	मी०	कु०

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हों तो स्थूल रूप से क्रान्ति-साम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है, जिसका निर्णय महापात गणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि योगः

६	२	४	६	८	१० सूर्य
१२	११	१	३	८	७ राशयः
२	४	६		८	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्य प्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

—कश्यप

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहन्तु कर्त्तो पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादि-दोषाणां परिहार वाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) वर्ज्ये, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र, बांगर) जांगले (फ़िरोज़पुर; भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।॥ उपग्रहं कुरु बाह्लीकेषु (आगरा प्रान्त) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्तितं भं त्याज्यंलुब्धिं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) यामित्रस्य च यामले (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेष-परिहार—विना गते पातविचित्रदेशे भैमे यथा मालवके निषिद्धा।

पौष्णश्रुतिश्वोत्तरदेशजातं सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युति-परिहार—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दाम्पत्योः श्रेयसे तदा॥ आवश्यके वेधपरिहारः—पादैक्ये मुख्यविद्धमभुक्तमेव कृत्स्नतः (नारदः)॥ ग्रह प्रथम चरण में हो तो दूसरे नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणपाद का त्याग किया जाता है। भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ अत्यापवादः—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते॥—एकार्गलोपग्रहपात-लत्ता-जामित्रकर्तयुदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ना लग्ने यथार्कोऽभ्युदये तु दोषाः॥ मु. चि.।

उच्चादुच्चगतश्च वै दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः स्थितो वाऽपि तन्मयान् दहनो यथा॥

विवाहे लग्न-शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
सर्व पाप	०	शु	रा.	०	चं. शु. लग्नेशः	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेशः	०	श.	०	श.	त्याज्याः

चं. मं.	कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च	चं.	म.	चं. शं.	विद्धभञ्च	गोधूली त्याज्याः

लग्न-भंग दोषा—व्यये शनि क्षेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ता: । लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽन्त्यगुरुसमौ) ॥ कर्णोत्तमं विषान्त्यांशौ विवाहो न शुभप्रद: । वर्गोत्तमश्चैवन्त्यांश: पुष्पीलादि वृद्धिद: ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगत: सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रद: ॥ पञ्चन्याविलग्नानां गौडमालवयोरेव त्याग:, बादरायण:—मासशून्याह्वयास्तारा रात्र्यो बधिरावध: । गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिता: ।

कर्तरी दोष—लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वो: सा कर्तरी स्यादृजु-वक्रगत्यो: । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्ति: ॥ इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषांञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहार:—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीच नवांशके शशिनि रि:फाष्टारिदोषोऽपि न ॥

दोषापवादा: ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहव: सन्ति गुणा: स्वल्पा: कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगणै: सह ॥ अपवादान्तरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरु: । केन्द्रसंस्थ: सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्न-षड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवा: । ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशग: शशी ॥ अब्दायनर्तु मा-सोत्था पक्षतिथ्यर्क्ष सम्भवा: । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रेलग्नादेकादशालये । सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत ॥ बलवान् केन्द्रग: सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । बुधं विहाय दैत्येज्य: सहस्रं लक्षमंगिरा ॥ स्मरण रहे, कि—पूर्वोक्त अपवाद-वाक्यों में सप्तम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

तारा शुद्धि—अपने जन्मनक्षत्र से अभीप्सित दिन के नक्षत्र तक की संख्या गिन कर ९ से भाग दें । यदि २, ४, ६, ८ या ९ शेष बचे तो तारा शुद्धि समझें ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	केतु	ग्रहा.	मुहूर्त गणपती
३ ६ ८ ११	२ ३ ११	३ ६ ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ४ ५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दश विंशो-पकाधिकम् ।
६।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	।।।		विंशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्न विचार—यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयक: । गोधूलिक: स विशेष: शेषा: धूलिमुखा: स्मृता: ॥ लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । । तदा वै सर्ववर्णानां लग्न गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्नं विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ मार्ग प्राप,

फाल्गुन में संध्या समय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर, वै. वै. में गौओं की धूलि से आकाश आच्छादित होने पर ज्येष्ठ आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रा. भा. अश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्य दोष:—कुलिक क्रान्तिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तथा गोधूलिके त्याज्य: पञ्चदोषैस्तु दूषित: । "अस्तं याते गुरुदिवस सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त—कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र, आयु, प्रीति लाभ देता है । ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं ।

पुनर्विवाहे (रोत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ सख्यक साभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्यु: । अत्र तिथि-मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीय: ।

वधू प्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वे वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है । ५ वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढ़त्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्रांति-तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ॥ रे. अश्वि रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३, पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और चं. ब. बृ. शु. श. इन वारों में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियों में ५। ८। ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधुप्रवेश शुभ है ।

वधू-प्रवेश-समय:—वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्त: राजप्रवेशो न निशि प्रशस्त: ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेश: सत्कीर्तिद: स्यात्त्रिविध: प्रवेश: ।

विवाहत: प्रथमे वर्षे वधू-निवास फलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षयमास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उसमास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के १४ में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हों तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्. तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. म. मृ. रे. चि. अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है । शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है ।

विशेष :—द्विरागमः षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु ।
न चात्र ऋक्षं न तिथिर्नयोगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम् ।

मतान्तरेण शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेध :—जिस दिशा में शुक्र उदय हो, वह दिशा 'सम्मुख' होती है । अथवा मेष, सिंह, धनु में शुक्र हो तो पूर्व में; वृष, कन्या, मकर में हो तो दक्षिण में; मिथुन, तुला, कुम्भ में हो तो पश्चिम में; कर्क, वृश्चिक, मीन में हो तो उत्तर में शुक्र का वास माना जाता है । ऐसे सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि युवति वधु जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता । यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है ।

नोट :—यात्रा के समय शुक्र की पूर्व-पश्चिम कपाल में स्थिति के अनुसार ही पूर्व पश्चिम समझें ।

विशेष :—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा । शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाऽथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः । शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शबिमुक्ताफलान्वितम् । महाश्वेतगवा युक्तं सामगाय निवेदयेत् ।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्तः—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि में प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे । मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे, आदर सत्कार करे । विशेष गुप्त बात न कहे । और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती । अपवाद में एक दो हो सकती हैं । प्रकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए । उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है । पशु-पक्षियों में भी तोता, चिड़ा तथा बन्दर आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं ।

नववध्वाः पाक-कर्म मुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं म. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहित तिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम् ।

सधवा-स्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषण विधारण मुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. धनि. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतनवस्त्र सौवर्णरत्नरजतदन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूड़ी चक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ । ११ तक श्रेष्ठ, १३ तक नेष्ट, २० तक श्रेष्ठ, २२ तक नेष्ट, २६ तक श्रेष्ठ, २७ तक नेष्ट । गुरुशुक्रोदय में शुभ वार भी हो ।

वस्त्रधारणे विशेष :—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालेन समर्पितम् ।
निन्द्येऽपि धिष्ण्य वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम् ।

भूषण घट्टन मुहूर्तः—ह. अ. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३, रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ॥

दुकान खोलने का मुहूर्त :—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३, पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभदशा भी चलती हो तो दुकान खोलना शुभ है । चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है ।

भर्तृगृहात्पितृगृहागमन मुहूर्तः—पूर्वा ३ भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु, च. ब. श. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्तः—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पु. ३ ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है ।

हट्ट चक्रः—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र अभिजित सहित गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जानें ।

गुरुपुष्य एवं रविपुष्य में व्यापार प्रारम्भ करना शुभ है । साझे व्यापार में गण दोष एवं अशुभ षडष्टक न हो, देव-राक्षस में बैर, अपने गण में परम प्रीति जानें ।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋत	मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवा क्रम (नौकरी) मुहूर्तः—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामा रहिततिथौ. र. बु. गु. शु. वारेषु शुभः । लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोनि-मैत्र्यां सत्यां शुभः ।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्तः—अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा ३, ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. वृ. श. वारेषु शुभयुते शुभ लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्र कोणगः शुभः स्यात् ।

द्रव्य प्रयोग मुहूर्तः—पुन. स्वा. मृग. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ६।५।८ शुद्ध रहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः । अन्यावसरे ६।४ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः ।

ऋण लेने के लिए वर्जित कालः—मंगलवार संक्राति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो । मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है । बुधवार को धन नहीं देना चाहिए । कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मूल नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं, या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

ईंट के भट्टा में आग देने का मुहूर्तः—शाम का समय शुभ चौघड़िया तथा मंगल रवि और शनैश्चर वार शुभ माने जाते हैं । बुधवार नई ईंट बनाने में विशेष शुभ है ।

श्रीकाशीनाथ-मते क्रय-विक्रय मुहूर्तः—पुष्य पू.भा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा ३, आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तम शकुनं विचार्य क्रय-विक्रयणं कार्यम् ।

वस्तु खरीदने का नक्षत्रः—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि., वारों में बुध और रवि श्रेष्ठ माने गये हैं ।

वस्तु बेचने का नक्षत्रः—पू.फा., पू.भा., पू.षा., वि. कृ. श्ले. म. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं ।

नोटः—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ६५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं । सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहाँ तक सच हैं।
नालिका (अर्वा) का मुहूर्त— ४।६।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो, कृ. आर्द्रा. श. श. स्वा. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा. ३. नक्षत्र हो. भद्रा होवे तो उत्तम है। लग्न में पाप ग्रह हो तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आयविचार

वास्तुकर्मसंस्थाने यावत् वत्सराः कार्या स्थान नक्षत्र फलम्		
मस्तक	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैःस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ:, ७ हस्ती, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि समसंख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है, और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं।

घर का नक्षत्र और व्ययज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणा कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें। यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

सूर्य राशि के अनुसार खात दिशा देख मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि दूसरी मिट्टी निकल आवे। अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर या काली ईंट निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन वृद्धि हो और जो हाड़ राख कोला बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. गु. शु. श. वारों में, रो. म. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श., रे वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व आयादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
प. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति।
द कुक्षौ	४	लाभः शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष—पुष्य. उ. ३ रो. म. आश्ले. पू. षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति वार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुध-वार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। चि. शू. वि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

प्रसुप्त-भूमि-ज्ञानम्—'संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम् नवम जोय। दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्कालावस्थाके क्रमात् ५।११।७।६।२।१०एताः पाटिका भूमिकर्मव्यवस्थं वर्जनीयाः। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।६।१२।१६।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी-शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूप-विचारः

मध्ये	ई.	पू.	आ.	द.	नै	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	पुष्टि	सुप्राप्तिः	पुत्रनाशः	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	सम्पत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारौ तिथिसंप्रयुक्तौ वेदाहुतं तद्गणकेन कार्यम्। एकाश्रिते च जलं हि नाशे ह्यशं च शेष सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्यशेषभुवि संस्थितं च मूर्धस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः॥

अथ चुल्लिचक्र विचारः

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गभ के नाशक। २ मुख के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा तंदूर, स्टोव, गैस, चूल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग) कार्तिकमासयोः॥ (यहाँ चान्द्रमास लेना)। उत्तरा ३., अनु., रो., मृ., चि., रे इन नक्षत्रों में रिक्तामा रहित तिथियों में च.बृ. शु. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में, अत्यावश्यकता में ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ में चन्द्रमा न हो, चौथा ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण-पुष्पमालायुक्त-कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में धन. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा शुभ ग्रह के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यरश्मि-वत्स-वास्तु-चक्र

देवालय की नींव खोदनी हो तो चैत्र. वैशा०, ज्ये० में आग्नेय, आषा., श्रा., भा. में ईशान, आश्वि. कार्ति., मार्ग. में वायव्य, पौ० माघ फा० में नैऋत्यकोण में शुभ है।

जलाशयारम्भ समय—वैशा. ज्ये. आषा. ईशान श्रा. भा. आश्वि. में वायव्य कार्तिक मार्ग. पौष में नैऋत्य, माघ फा. चैत्र में आग्नेय कोण में नींव खोदना।

गृहारम्भ समय—वैशाख में वायव्य, ज्येष्ठ श्रावण में नैऋत्य, भादों कार्तिक में आग्नेय, मार्ग, माघ, में ईशान, में और फाल्गुन में वायव्य कोण में नींव खोदना शुभ है।

द्वारशाखा (देहली) चक्रम्

सूर्यनक्षत्रात्

स्थानं.	भ:	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्

सूर्यभात्

५.	८	८	७
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों (उ., रो. ध. श. श., पू. षा., रे. पुष्य, मृ. नक्षत्र हों, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है। और जलाशयचक्र सूर्य राशि से देखें।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-जल चक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैऋत्य ३ अमृत जल

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

गणना क्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्, जल का कोष्ठ की "गृहमध्ये कूप विचार" से भूमि पर विचारें।

अर्धाष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्-वारिवाहे वारिहानि:। गण-नाक्रम—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाह:।

रोहिणीभात् क्षारी चक्रम्

ईशान श. भ. ह. मध्यजल	पूर्व पुन.पु.श्ले. जलाघात	आग्नेय म.पूफा.उफा. बध्य जलम्
उत्तर पूषा.उषा.रे. मिष्ठ जलम्	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्र जलम्	दक्षिण ह.चि.स्वा जलाभाव
वायव्य श्र.ध.श. क्षार जलम्	पश्चिम मू.पू.षा.उषा. अमृत जलम्	नैऋत्य वि.अनु.ज्ये बहुजलम्

जलाशयाराम देव-प्रतिष्ठा मुहूर्त

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादि-पञ्च मासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने॥
मातृभैरव वाराहनारसिंह त्रिविक्रमा:।
महिषासुर हन्त्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने॥

गुरु-शुक्र के अस्तादि रहित शुद्ध समय में शुक्लपक्ष उत्तरायण में रिक्ता-अमा. अनिमंगल तिथि वार छोड़ कर शुभ तिथि वारों में, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा एवं रेवती नक्षत्र में, स्थिर लग्न में केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तथा ३।६।११ में पापग्रह हों, कृष्णपक्ष में पंचमी तक देव-प्रतिष्ठा तथा जलाशय बाग आदि की प्रतिष्ठा भी शुभ है।

अपने अपने मास तिथि नक्षत्र में दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा के लिए शास्त्राज्ञा है। जैसे चतुर्दशी में शङ्कर की, चतुर्थी में गणेश की, भाद्रपद में कृष्ण की, आश्विन में देवी प्रतिष्ठा प्रशस्त है।

॥ श्री रामायणादि कथा प्रारम्भ का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र में दिन नक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि, २४ तक मृत्यु, राजभय २७ तक मोक्षप्रद होता है। शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वक देवप्रीत्यर्थ शुक्ल पक्ष में और पितृ व प्रेतशान्त्यर्थ कृष्णपक्ष में करे।

वास्तुशान्ति मुहूर्त—ध० श० मृ० अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३, पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सतिथौ बलिदान पुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिसदिन हवन करना हो उसदिन तिथि और बार की संख्या जोड़ कर एक और जोड़ना। पुन: ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए (० शेष रहे) अथवा ३ शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुख कारक होता है. शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुति ज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु०	शु०	श०	चं०	म०	गु०	रा०	के०	ग्रहा:
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष—यात्रा-विवाह-व्रत-गोचरेषु चौलोपनीतावखिलं व्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेऽन्दुर्कस्वराहुणा। नित्ये नैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्॥ दिग्दाहेऽप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतुनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले शान्तिकाकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधी:॥ दुर्भग गृहे चाऽपि विवादे सम्प्रियते। शान्तिकार्ये नृपक्षोभे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्॥

हवन में शाकल्य-विचार—तिल का आधा चावल, चावल का आधा यव, यव का आधा शक्कर और सब का आधा घृत, असमर्थता में यथाशक्ति घृत लेना चाहिये।

पापग्रहमुखे हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शांति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निर्दिष्टेत्तामघोमुखीम्॥ गोमूत्र-मधुगन्धाद्यैर्रचितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्॥

यथा—अपने नाम के 'अ' वर्गादिवर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना, फिर ८ से भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना। ऋणी नौकर रखना हितकर होता है। राशि के अनुसार अपने से उच्च वर्ण की राशि का नौकर रखना निषिद्ध है, समान वर्ण प्रीतिकारक है।

भूमि का लेन-देन—गुरु, शुक्रवार १,५,६,११,१५, तिथि, मृग. पुन. श्ले. म., पू. फा., वि., अनु., मूल, पू. षा., उ. भा. नक्षत्र में-घर जमीन का सौदा करना शुभ है।

हल-प्रवहण मुहूर्तः—मृ.रे.चि. अनु.रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि.स्वा. पु.श्र. ध.श.म.मू.वि.एषु भेषु रिक्तामावष्ठयष्टमीरन्ति सतिथौ शुभग्रहस्य वासरे,१।४।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयन-भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्				
सूर्य-भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने				
३	८	९	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

बीजवपने राहुचक्रम्								
राहु नक्षत्रात् दिनर्क्षं यावत् गणना कार्या								
८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीज बपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. र. स्वा. ध. एषु भेषु सतिथौ भौमातिरिक्त-वारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः। तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्

विशेषः-रवौ रौद्र (आर्द्रा) चपादस्थे भूमौ संजायतेरजः।

नवान्न भक्षण मुहूर्त:—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. चं. गु. शुक्रवार शुभ हैं।

गाय बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त

उ. फा. नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे। यदि वर्तमान नक्षत्र, उ. फा. नक्षत्र से चतुर्थ पंचम छब्बीसवां या सत्ताईसवां हो, तो गाय लेना अशुभ है। उ.फा. नक्षत्र से गणना करने पर उल्लिखित (४,५,२६,२७ वें) नक्षत्रों को छोड़कर शेष सभी नक्षत्रों में गायें लेनी शुभ है। भैंस लेने के लिए भी यही क्रम है, परन्तु वहां उ.फा. से न गिनकर सूर्य नक्षत्र से गणना करें, नक्षत्रों की शुभाशुभ व्यवस्था पूर्ववत् ही है। बैल खरीदना हो तो भी उ. फा. से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे, परन्तु यहां उ.फा. से तीसरे चौथे २६वें एवं २७वें नक्षत्र में बैल लेना अशुभ है, शेष नक्षत्रों में बैल लेना लाभदायक समझें।

"नौमी [illegible] चौथ चौपाया। मंगल हानि करे घर आया॥"

[illegible]आत्मकाष्ठादि (गुड़ [illegible] आदि) संस्थापन चक्रम्							
६	२	४	[illegible]	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक शुभ	[illegible] नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	स्थानकर्म नेष्ट	सुख शुभ	फलम्

लता-वृक्षावारोपण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३, रो ह- पुष्य, अश्वि-श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामा रहित शुभ तिथियों में और च. बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है **तृणकाष्ठाविसंग्रहनिषेधः**—तृणकाष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि काम कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करने चाहिए।

सिंगी (फस्त) लगाने का मुहूर्त—कृष्णपक्ष में रिक्ता तिथि एवं क्रूरवार को सिंगी (फस्त) और जोंक लगवाना रोगी के लिए आरोग्यप्रद होता है।

कुलदेवता-स्थापन मुहूर्त—शुभ वार, तिथि, अश्वि. रो. मृ. पुष्य, उफा. ह. चि. स्वा अनु. उषा. उभा. रे. नक्षत्र स्थिर लग्न भद्रादिदोष-रहित समय में शुभ है।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त—धनि., अश्वि., हस्त., चित्रा., अनु., पुष्य., ज्ये., पुन., एवं रेवती नक्षत्र में शनि की होरा में तथा मशीनरी चालू करने के लग्न में श. म. सू.च. शुभ स्थान में हों तब चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध सेवन का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे, चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल और जन्म नक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़ कर शुभ तिथियों में, भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. मृ. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा: रो. उत्तरा ३, पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या। तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्या-दिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमन-कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपदा दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

दिग्द्वारलग्नानि				
१।५।९	२।६।१०	३।७।१२	४।८।१२	शुभम्
२।२।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१	म०म०

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हो। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो। अन्यच्च, यात्रायामष्टम शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देव-दर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूल-ज्ञानाय चक्रम्						
पूर्व. आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय	उत्तर.	ईशा.
चं.श. च.श.	गुरु	सू.शु.	सू. शु.	भौम	मं.बु.	बु.श.

नक्षत्र-शूल चक्रम्				
दिशा	पू०	द.	प.	उ.
नक्ष.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ. फा.

दिक्शूल-परिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य दैत्येज्य-दिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥

आवश्यकता में दिक्शूल शान्त्यर्थ-रविवार को घृत, सोमवार को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरु को दधि शुक्र को यवान्न, शनि को उड़द तैलकी वस्तु खाकर जाए तो शुभ है।

रवियोग, सिद्धियोग, द्विपुष्कर योग, त्रिपुष्कर योग (सं. २०४२ वि.)

रवियोग (सं० २०४२ वि०)

प्रारम्भ तारीख		प्रारम्भ समय	समाप्त तारीख		समाप्त समय
सितं.	२७	१०।२६	सितं.	२८	१२।१६
अक्तू.	५	५।३१	अक्तू.	६	८। ८
,,	१६	१६।४४	,,	१७	१७।२१
,,	१८	१५।५४	,,	१९	१३।५६
,,	२१	१३। १	,,	२३	१४।३६
,,	२४	०।४०	,,	२४	१६।१५
,,	२६	२०।५३	,,	२७	२३।४१
नवं.	३	१७। १	नवं.	४	१८।५०
,,	१४	११। ६	,,	१४	२२।५४
,,	१६	२१।१६	,,	१७	२०।२०
,,	२०	२२।१४	,,	२३	२।५२
,,	२५	८।५३	,,	२६	१२। १
दिसं.	४	३। ५	दिसं.	५	३।२७
,,	१४	७।३६	,,	१५	५।५८
,,	१५	२२। ९	,,	१६	५। ८
,,	१७	४।५७	,,	१८	५।४१
,,	२०	६।३३	,,	२२	१५।२८
,,	२४	२१।४२	,,	२६	०।२८
सन् १९८६ ई०					
जन.	२	६। ४	जन.	३	८।४३
,,	१३	१४।४४	,,	१४	१४।५२
,,	१५	१५।४६	,,	१६	१७।३४
,,	१८	२२।५४	,,	२१	५। ८
,,	२३	१०।२४	,,	२४	४।४१
,,	२४	१२।१८	,,	२५	१३।३९
,,	३१	१३।२९	फर.	१	१२।२३
फर.	११	१।११	,,	१३	२।३१
,,	१४	४।३२	,,	१५	७। ६
,,	१७	१३।१३	,,	१९	१२।२०
,,	१९	१८।४८	,,	२०	२०।५२
,,	२२	२३। २	,,	२३	२३।११
मार्च	१	१६।४२	मार्च	२	१५।१६
,,	१२	११।११	,,	१३	१३। ४
मार्च	१३	१३। ४	मार्च	१४	१५।२७
,,	१५	१८।१५	,,	१६	२१।१९
,,	२०	५।३९	,,	२२	८।३१
,,	२४	८।२९	,,	२५	७।३०
,,	३१	१८।१३	अप्रै.	१	१६।४९

सिद्धियोग (सं० २०४२ वि०)

तारीख		समय	तारीख		समय
१९८५ ई.		घ. मि.	१९८५ ई.		घ. मि.
अप्रै.	६	१६। ९	अप्रै.	७	सू. उ.
मई	४	सू. उ.	मई	५	०।२३
,,	२३	१८।४४	,,	२४	सू. उ.
जून	११	सू. उ.	जून	१२	सू. उ.
,,	२०	०।४५	,,	२०	सू. उ.
जुला.	९	सू. उ.	जुला.	९	१५।२६
,,	१८	सू. उ.	,,	१८	८।२९
,,	२८	२१। ०	,,	२९	सू. उ.
अग.	२५	सू. उ.	अग.	२६	२।१०
सितं.	१४	०। ८	सितं.	१४	सू. उ.
,,	२२	सू. उ.	,,	२२	७।३३
अक्तू.	२	२३।२३	अक्तू.	३	सू. उ.
,,	११	१०।३७	,,	१२	सू. उ.
,,	२१	१३। १	,,	२२	सू. उ.
,,	३०	सू. उ.	,,	३१	सू. उ.
नव.	१८	सू. उ.	नव.	१८	२०।११
,,	२७	सू. उ.	,,	२७	१५। ५
सन् १९८६ ई०					
जन.	५	६।४०	जन.	५	सू. उ.
फर.	१	१२।२३	फर.	२	सू. उ.
,,	१२	१।११	,,	१२	सू. उ.
,,	२०	२०।५२	,,	२१	सू. उ.
मार्च	१	सू. उ.	मार्च	१	१६।४२
,,	११	६।५४	,,	१२	सू. उ.
,,	२०	सू. उ.	,,	२१	सू. उ.
अप्रै.	८	सू. उ.	अप्रै.	८	१०।२०

द्विपुष्कर योग (सं० २०४२)

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्त तारीख	समाप्त समय
१९८५ ई.	घ. मि.	१९८५ ई.	घ. मि.
२१ मई	१५।१३	२२ मई	सू. उ.
९ जून	०। ५	९ जून	०।२४
२४ जुला.	३।३९	२४ जुला.	सू. उ.
५ अक्तू.	२०।१०	६ अक्तू.	सू. उ.
८ दिसं.	२९।५५	८ दिसं.	२३। ०
सन् १९८६ ई०			
१ फर.	सू. उ.	१ फर.	१३।२३
१८ मार्च	सू. उ.	१८ मार्च	८।५७
५ अप्रै.	६।१२	५ अप्रै.	१५।१०

त्रिपुष्कर योग (सं० २०४२ वि०)

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्त तारीख	समाप्त समय
१९८५ ई.	घं. मि.	१९८५ ई.	घं. मि.
१६ अप्रै.	१३। ०	१७ अप्रै.	३।२३
२७ ,,	सू. उ.	२७ ,,	१४। ६

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्त तारीख	समाप्त समय
१९८५ ई.	घं. मि.	१९८५ ई.	घं. मि.
२५ जून	सू. उ.	२५ जून	१३।२१
२९ ,,	सू. उ.	२९ ,,	१७। २
१९ जुला.	३।४१	१४ जुला.	३।१२
१३ अग.	१६।४१	१४ अग.	सू. उ.
१८ ,,	१३। २	१९ ,,	सू. उ.
२७ ,,	सू. उ.	२७ ,,	१५।३६
३१ ,,	१५।४२	१ सितं.	५।१९
१५ अक्तू.	२२।२६	१६ अक्तू.	[illegible]
२० ,,	१३।१०	२० ,,	[illegible]
३० ,,	५।४९	३० ,,	सू. उ.
९ नवं.	६।१२	१० नवं.	६।२६
१८ दिसं.	२।४१	१८ दिसं.	सू. उ.
२१ ,,	सू. उ.	२१ ,,	१५।१६
सन् १९८६ ई०			
११ जन.	१५।२१	११ जन.	१६।४०
१६ फर.	१०। ७	१६ फर.	१२। ४
२५ ,,	२१।५६	२६ ,,	सू. उ.
२ मार्च	८।५५	२ मार्च	१५।१६

सर्वार्थ सिद्धियोग (सं. २०४२ वि.)

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्त तारीख	समाप्त समय
मार्च २४	सू. उ.	मार्च २४	१८।४९
(१९८५)		(१९८५)	
,, २६	सू. उ.	,, २८	३।२२
,, ३१	६।५८	अप्रै. १	६।३३
अप्रै. ६	१६। ९	,, ७	सू. उ.
,, ८	१०।५१	,, ९	सू. उ.
,, १३	७।२३	,, १४	सू. उ.
,, १८	१८।४१	,, १९	२१।४७
,, २३	सू. उ.	,, २३	६।५०
,, २४	सू. उ.	,, २५	सू. उ.
,, २८	सू. उ.	,, २८	१४।२४
मई ४	सू. उ.	मई ५	०।२३
,, ६	सू. उ.	,, ६	१९। ६
,, १०	१४।४७	,, ११	१५।३३
,, १४	२१।५१	,, १५	सू. उ.
,, १६	सू. उ.	,, १८	सू. उ.
,, २०	१२।४९	,, २१	सू. उ.
,, २२	सू. उ.	,, २२	१७।१२
,, २४	सू. उ.	,, २४	१९।४८
,, २९	१७।१८	,, ३०	सू. उ.
जून १	१३। ९	जून २	सू. उ.
,, ३	सू. उ.	,, ३	५।४६
,, ७	सू. उ.	,, ७	२३।५९
,, १३	सू. उ.	,, १३	१०।४८
,, १४	सू. उ.	,, १४	१३।५६
,, १७	सू. उ.	,, १८	सू. उ.
,, २१	१।३०	,, २२	सू. उ.
,, २६	सू. उ.	,, २६	२२।१४
जुला. ५	सू. उ.	जुला. ५	९।१८
,, ९	सू. उ.	,, ९	१५।२६
,, ११	सू. उ.	,, ११	२१।२८
,, १५	सू. उ.	,, १६	७। २
,, १८	सू. उ.	,, १९	सू. उ.
,, २८	२१। ०	,, २९	सू. उ.
अग. ४	२१।१९	अग. ५	सू. उ.

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्त तारीख	समाप्त समय
अग. १०	११।२२	अग. ११	सू. उ.
,, १२	सू. उ.	,, १२	१५।३६
,, १५	सू. उ.	,, १५	१६।४५
,, १८	१३। २	,, १९	सू. उ.
,, २३	४।५७	,, २३	सू. उ.
,, २५	सू. उ.	,, २६	२।१०
सितं. १	सू. उ.	सितं. २	सू. उ.
,, ३	१०। ८	,, ४	सू. उ.
,, ७	सू. उ.	,, ७	२२। ६
,, १५	सू. उ.	,, १६	सू. उ.
,, १९	११। ८	,, २०	सू. उ.
,, २९	सू. उ.	,, २९	१४।२६
अक्तू. २	२३।२३	अक्तू. ३	सू. उ.
,, ११	८।५४	,, १३	सू. उ.
,, १३	६।३९	,, १४	४। ४
,, १७	सू. उ.	,, १७	१७।२१
,, २०	१३।१०	,, २१	सू. उ.
,, २१	१३। १	,, २२	सू. उ.
,, २७	२३।४१	,, २८	सू. उ.
,, ३०	५।४९	,, ३१	सू. उ.
नवं. ४	१८।५०	नवं. ५	सू. उ.
,, ५	२०।११	,, ६	सू. उ.
,, ८	सू. उ.	,, ८	१६। ९
,, १०	सू. उ.	,, १०	१५।१३
,, १३	सू. उ.	,, १४	३।५४
,, १७	सू. उ.	,, १७	२०।२०
,, १८	सू. उ.	,, १८	२०।११
,, २३	२।५२	,, २३	सू. उ.
,, २४	सू. उ.	,, २५	सू. उ.
,, २६	१२। १	,, २७	सू. उ.
,, २७	सू. उ.	,, २८	सू. उ.
दिसं. २	०।४३	दिसं. ३	२।१०
,, ३	सू. उ.	,, ४	३।५५
,, २०	९।३३	,, २१	सू. उ.
,, २२	सू. उ.	,, २२	१५।२८

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्त तारीख	समाप्त समय
दिसं. २४	सू. उ.	दिसं. २६	०।२८
,, २८	४।५५	,, २८	सू. उ.
,, २९	सू. उ.	,, ३०	७।४४
,, ३१	सू. उ.	जन. १	सू. उ.
		(१९८६)	
जन. ५	६।४०	जन. ५	सू. उ.
,, ७	३।२१	,, ७	सू. उ.
,, ११	१६।४०	,, १२	सू. उ.
,, १६	१७।३४	,, १७	२०। ०
,, २१	५। ८	,, २१	सू. उ.
,, २६	सू. उ.	,, २६	१४।२९
फर. १	१२।२३	फर. २	सू. उ.
,, ३	६।५७	,, ३	सू. उ.
,, ८	२।१९	,, ९	१।१४
,, १२	१।११	,, १२	सू. उ.
,, १४	४।३२	,, १५	सू. उ.
,, १७	१३।१३	,, १८	सू. उ.
,, १९	सू. उ.	,, १९	१८।४८
,, २०	२०।५२	,, २१	२२।१७
,, २६	२०।५२	,, २७	सू. उ.
मार्च १	सू. उ.	मार्च १	१६।४२
,, ३	सू. उ.	,, ३	१३।५३
,, ७	६।३७	,, ८	६। ५
,, ११	६।५४	,, १२	सू. उ.
,, १३	सू. उ.	,, १३	१३।१४
,, १७	सू. उ.	,, १८	सू. उ.
,, २०	सू. उ.	,, २१	७।२६
,, २६	सू. उ.	,, २७	४।१३
अप्रै. ४	सू. उ.	अप्रै. ४	१४।५७
,, ८	सू. उ.	,, ८	१८।३४

रवियोग (सं० २०४२ वि०)

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्त तारीख	समाप्त समय
मार्च २७	०।५०	मार्च २८	३।२२
(१९८५)		(१९८५)	
,, ३०	६।३३	अप्रै. २	५।१८

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्त तारीख	समाप्त समय
अप्रै. ४	०।५९	अप्रै. ४	२२।१०
,, १०	७।२६	,, ११	६।४३
,, २३	६।५०	,, २४	९।२३
,, २५	११।३२	,, २६	१३। ८
,, २७	१२।५३	,, २७	१४। ६
,, २९	१३।५७	मई १	११। ३
मई ३	६। ९	,, ४	३।१७
,, ९	१४।४८	,, १०	७।११
,, १०	१४।४७	,, ११	१५।३३
,, २२	१७।१२	,, २३	१८।४४
,, २५	२०।२१	,, २६	२०।२१
,, २८	१८।४९	,, ३१	१३। ९
जून १	१०।४३	जून २	८।१२
,, ७	२३।५९	,, ८	११।१८
,, ९	०।५४	,, १०	२।३४
,, २१	१।३०	,, २२	०।१५
,, २२	१।५१	,, २३	१।४९
,, २४	१।२१	,, २५	०।३६
,, २६	२२।१४	,, २८	१८।५५
,, ३०	१५। ६	जुला. १	१३।१६
जुला. ८	१२।५५	,, ९	१५।२६
,, २१	७। ७	,, २२	६। ६
,, २३	४।४४	,, २४	३।३९
,, २६	०।५८	,, २७	१९।१६
,, २९	१९।५२	,, ३०	१८।५८
अग. ७	२।२१	अग. ८	५।२४
,, १९	११।१९	,, २०	९।२४
,, २१	७।५३	,, २२	६।२०
,, २४	३।४९	,, २५	२।१०
,, २८	२।३७	,, २९	१।५१
सितं. ५	१६।१६	सितं. ६	१९।२१
,, १७	१५।१७	,, १८	१३। ५
,, १९	११। ८	,, २०	९।३१
,, २२	७।३३	,, २४	७।२२
,, २६	८।५८	,, २७	१।१२

दैनिक उपयोग में आने वाले शुभ मुहूर्त निकालना सरल बात है

ज्योतिष कालशास्त्र है। शुभ काल (मुहूर्त) में किया गया कार्य निर्विघ्न रूप से शीघ्र ही सम्पन्न एवं सफल होकर सुख-समृद्धिकारक होता है—ज्योतिष की मुहूर्त-शाखा का यह सिद्धान्त है। मुण्डन, अक्षरारम्भ, उपनयन, विवाह, द्विरागमन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, देव प्रतिष्ठा आदि के मुहूर्तों का विस्तृत विवेचन पृ० १५० से १५४ पर दिया गया है। आभूषण, स्वर्ण, वस्त्र आदि खरीदना, पहनना, यात्रा आरम्भ करना, मुकद्दमा दायर करना, ग्रह-शान्त्यर्थ, रत्न धारण करना, किसी परीक्षा-प्रतियोगिता या नौकरी के लिए आवेदन-पत्र भरना आदि-आदि कार्यों के शुभ मुहूर्त जानने के लिए अब आपको किसी ज्योतिषी के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। अगले पृष्ठों पर हमने तीन शुभ योगों (सर्वार्थसिद्धि, रवि और सिद्धि योगों) के प्रारम्भ और समाप्त होने की तारीखें एवं समय (भा. स्टैं. टा.) दिया है। इन योगों के समय जो कार्य किए जाएं वे सफल होते हैं।

सर्वार्थसिद्धि आदि योगों के बारे में आवश्यक विवरण नीचे दिया जा रहा है—

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग

वारों का विशेष नक्षत्रों से सम्बन्ध होने पर 'सर्वार्थसिद्धि योग' बनते हैं। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, इस योग के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाए तो वह सफल होता है। यात्रा, गृह-प्रवेश, नूतन कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश यदि व्यतिपात, वैधृति, गुरु-शुक्रास्त, अधिक मास एवं वेध आदि का विचार संभव न हो तो सर्वार्थसिद्धि योगों का आश्रय लेना चाहिए। रविवार का हस्त, चन्द्रवार का मृगशिरा, मंगलवार का अश्विनी, बुधवार का अनुराधा, गुरुवार का पुष्य, शुक्रवार का रेवती और शनिवार का रोहिणी नक्षत्र से सम्बन्ध होने पर जो सर्वार्थसिद्धि योग बनता है, उसे 'अमृतसिद्धि योग' की विशेष संज्ञा दी है। अमृतसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गए हैं। ध्यान रहे—गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग (जिन्हें 'गुरु पुष्यामृत' भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि के समय नए घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें प्रयोग में लाइए। अमृतसिद्धि योगों को कोष्ठकों में दिया गया है। अमृतसिद्धि योग के समय जो वार है, उसे कोष्ठक के दाईं ओर लिखा गया है।

यद्यपि मुहूर्त-ग्रन्थों में गुरुवार वाले अमृतसिद्धि को छोड़कर शेष सभी सर्वार्थसिद्धि योगों में विवाह करने की भी आज्ञा है, परन्तु विशेष विवशता की स्थिति में ही इस योग में प्रणय आदि विवाह ही करना चाहिए—ऐसा हमारा मत है। इस योग में विवाह करने के लिए लग्न-शुद्धि अवश्य देख लेनी चाहिए।

गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग जिन्हें 'गुरु पुष्यामृत' कहा जाता है, अत्यन्त शुभ माने गए हैं।

रवि योग

रवि योग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भांति ही सभी शुभ कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। शास्त्रों का कथन है—रवि योग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की शक्ति रखता है ("कुयोग विध्वंस-कराः शुभेषु")। इस योग में वे सभी काम किए जा सकते हैं जो सर्वार्थसिद्धि योगों में किए जा सकते हैं।

सिद्धि योग

सिद्धि योग भी सर्वार्थसिद्धि और रवि योगों की भांति ही महत्त्वशाली है। सर्वार्थसिद्धि और रवि योगों में किए जाने वाले सभी कार्य इनमें भी किए जा सकते हैं। शास्त्रों का कहना है कि सिद्धि योग में यमघण्ट, विष आदि कुयोगों का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

त्रिपुष्कर और द्विपुष्कर योग

(बहुमूल्य चीजें खरीदने के लिए विशेष मुहूर्त)

यद्यपि पूर्वोक्त तीन, (सर्वार्थसिद्धि आदि) शुभ योगों में भी जमीन, गहने, हीरे-जवाहरात, कार, ट्रक, ट्रैक्टर, टेलीविजन, आभूषण, घोड़ा, गाय-भैंस आदि बहुमूल्य चीजें खरीदी जा सकती हैं, तथापि इसके लिए त्रिपुष्कर तथा द्विपुष्कर योग ज्यादा महत्वपूर्ण माने जाते हैं। यदि कोई चीज त्रिपुष्कर योग के समय खरीदी जाए तो वह निकट भविष्य में तिगुनी, द्विपुष्कर योग में खरीदी जाए तो दुगुनी हो जाती है। अतः इन योगों में बहुमूल्य चीजें खरीदिए या बैंक में रुपया जमा करवाइए। इन योगों में मुकद्दमा दायर करना तथा दवा खरीदना अच्छा नहीं समझा जाता।

इन योगों के समय अपनी कोई कीमती चीज बेचिए नहीं, अन्यथा आगे चलकर उससे तिगुनी या दुगनी बेचने की स्थिति पैदा हो सकती है। धन या अन्य सम्पत्ति के संचय के लिए ये योग अद्वितीय हैं।

यदि इन योगों में कोई चीज गुम हो जाए तो निकट भविष्य में उससे दुगुनी, तिगुनी हानि हो सकती है, अतः सावधान रहना चाहिए।

अशुभ योग

हुताशन, क्रकच, विष, काल वेला, यमघण्ट आदि कुछ योग अशुभ माने गये हैं। ये योग भी वार, नक्षत्र और तिथियों के योग (मेल) से बनते हैं। इन योगों में किया कार्य विफल होता है। मुहूर्त शास्त्रकारों का मत है कि जहां सर्वार्थसिद्धि रवि योग और सिद्धि नाम वाले शुभ योग हों वहां इन (हुताशन आदि) अशुभ योगों का कुप्रभाव नष्ट हो जाता है। यही कारण है हमने इन अशुभ योगों का प्रारम्भ और समाप्ति काल यहां नहीं दिया है।

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०४२ वि.)

नीचे अशुद्ध विवाह मुहूर्तों की सूची दी गई है। अशुद्ध मुहूर्त्त के सामने उस दोष का भी निर्देश किया गया है, जिसके कारण वहाँ विवाह करना वर्जित है।

मास	ति. वा.	तारीख १९८५ ई०	नक्षत्र	दोष
वर्षारम्भ से वैशा. कृ. ८ शु. तक मीनस्थ सूर्य				
वैशा. कृ.	१० र.	अप्रै. १४	श्रव.	लग्नाभाव
" "	१० र.	" १४	धनि.	भद्रा, मृत्यु लग्नाभाव
" "	११ चं.	" १५	धनि.	मृत्युबाण
" शु.	४ बु.	" २४	रो.	मृत्युबाण
" "	५ गु.	" २५	मृग.	लग्नाभाव
" "	१३ शु.	मई ३	चित्रा	ग्रहण से पहला दिन
" "	१३ शु.	" ३	स्वा.	" "
" "	१५ श.	" ४	स्वा.	चन्द्रग्रहण
❀ ज्ये. कृ. १ र. से ज्ये. कृ. ३ मं. तक ग्रहण दोष				
ज्ये. कृ.	४ बु.	मई ८	मूल	लग्नाभाव
" "	८ र.	" १२	धनि.	लग्नाभाव
" "	१० म.	" १४	उभा.	संक्रान्ति दिन
" "	११ बु.	" १५	रेव.	शुक्रयुति
" "	१२ गु.	" १६	रेव.	
" "	१२ गु.	" १६	अश्वि.	क्षीणचन्द्र
" शु.	१ चं.	" २०	रोहि.	लग्नाभाव
" "	६ र.	" २६	मघा	गुरु पाद वेध, लग्नाभाव
" "	७ चं.	" २७	मघा	भद्रा, लग्ना.
" "	११ गु.	" ३०	हस्त	भद्रा, लग्ना.
" "	११ गु.	" ३०	चित्रा	व्यतीपात, ल.
" "	१२ शु.	" ३१	स्वा.	ग्रहण नक्षत्र❀
" "	१३ श.	जून १	स्वा.	परिघार्ध, ग्रहण नक्षत्र
" "	१४ र.	" २	अनु.	राहुवेध
" "	१५ चं.	" ३	अनु.	
" "	१५ चं.	" ३	मूल	मृत्युबाण
आषा. कृ.	३ बु.	" ५	उषा.	भौमवेध
" "	४ गु.	" ६	उषा.	
" "	५ शु.	" ७	धनि.	वैधृति
" "	६ श.	" ८	धनि.	" विष्कंभ
" "	८ चं.	" १०	उभा.	लग्नाभाव
" "	१० बु.	" १२	उभा.	"

मास	ति. वा.	तारीख १९८५ ई०	नक्षत्र	दोष
आषा. कृ.	१० गु.	जून १३	रेव.	मासान्त
" "	११ शु.	" १४	रेव.	संक्रान्ति
" "	११ शु.	" १४	अश्वि.	
" शु.	४ श.	" २२	मघा	गुरु पाद वेध
" "	६ चं.	" २४	उफा.	व्यतीपात
" "	७ मं.	" २५	उफा.	व्यती., भद्रा
" "	७ मं.	" २५	हस्त	मृत्युबाण
" "	८ बु.	" २६	हस्त	मृत्यु परिघार्ध लग्ना.
" "	९ गु.	" २७	स्वा.	ग्रहण नक्षत्र ❀
" "	१० शु.	" २८	स्वा.	
" "	१२ श.	" २९	अनु.	राहुवेध
" "	१३ र.	" ३०	अनु.	
" "	१४ चं.	जुला. १	मूल	भौमवेध
" "	१५ म.	" २	मूल	
प्र.श्रा. कृ.	२ गु.	" ४	उषा.	वैधृति
" "	२ गु.	" ४	श्रव.	वैधृति, मृत्यु क्रान्तिसाम्य
" "	३ शु.	" ५	श्रव.	भद्रा
" "	४ श.	" ६	धनि.	लग्नाभाव
" "	११ श.	" १३	रोहि.	शुक्रयुति
" "	१२ र.	" १४	रोहि.	
श्रावण अधिकमास				
द्वि.श्रा. शु.	१ श.	अग. १७	मघा	क्षीणचन्द्र
" "	२ चं.	" १९	उफा.	लग्नाभाव
" "	३ चं.	" १९	हस्त	भद्रा, लग्ना.
" "	४ म.	" २०	हस्त	लग्नाभाव
" "	६ बु.	" २१	चित्रा	लग्नाभाव
" "	६ बु.	" २१	स्वा.	ग्रहणनक्षत्र❀ केतुयुति
" "	७ गु.	" २२	स्वा.	
" "	७ गु.	" २२	अनु.	राहुवेध
" "	८ शु.	" २३	अनु.	
" "	९ श.	" २४	मूल	शुक्र पादवेध
" "	११ चं.	" २६	उषा.	मृत्युबाण, लग्नाभाव

मास	ति. वा.	तारीख १९८५ ई०	नक्षत्र	दोष
द्वि.श्रा. शु.	१२ मं.	अग. २७	उषा.	मृत्युबाण
" "	१२ मं.	" २७	श्रव	सूर्यवेध
" "	१३ बु.	" २८	श्रव.	
" "	१३ बु.	" २८	धनि.	भौमवेध
" "	१४ गु.	" २९	धनि.	
भाद्र कृ.	१ श.	" ३१	उभा.	भुजंगपात
" "	२ र.	सित. १	उभा.	
" "	३ चं.	" २	उभा.	
" "	४ मं.	" ३	रेव.	कन्या में क्रांतिसाम्य
" "	४ मं.	" ३	अश्वि.	सूर्यवेध
" "	५ बु.	" ४	अश्वि.	
" शु	१ र.	" १५	उफा.	मासान्त
" "	१ र.	" १५	हस्त	
" "	२ चं.	" १६	हस्त	संक्रान्ति
" "	२ चं.	" १६	चित्रा	
" "	३ मं.	" १७	स्वा.	ग्रहण नक्षत्र केतुयुति
" "	४ बु.	" १८	स्वा.	
" "	५ गु.	" १९	अनु.	राहुवेध
" "	६ शु.	" २०	अनु.	
" "	९ र.	" २२	मूल	अल्पकाल
" "	११ मं.	" २४	उषा.	नक्षत्रान्त
" "	१२ बु.	" २५	श्रव.	लग्नाभाव
" "	१३ गु.	" २६	धनि.	लग्नाभाव
" "	१५ श.	" २८	उभा.	सूर्यवेध
आश्विन कृ. (श्राद्ध) पक्ष				
आश्वि. शु.	२ म.	अक्तू. १५	स्वा.	ग्रहण नक्षत्र, केतुयुति
" "	३ बु.	" १६	अनु.	राहुवेध
" "	४ गु.	" १७	अनु.	
" "	५ शु.	" १८	मूल	मृत्युबाण
" "	६ श.	" १९	मूल	लग्नाभाव
" "	९ मं.	" २२	धनि.	भुजंगपात
" "	१० बु.	" २३	धनि.	

मास	ति. वा.	तारीख १९८५ ई०	नक्षत्र	दोष
आश्वि. शु.	१३ श.	अक्तू. २६	रेव.	भौमवेध
" "	१४ र.	" २७	रेव.	भौमवेध
" "	१४ र.	" २७	अश्वि.	भद्रा
" "	१५ चं.	" २८	अश्वि.	ग्रहण दिन
कार्ति. कृ. १ मं. से कार्ति. कृ. ३ गु. तक ग्रहणदोष				
कार्ति. कृ.	३ गु.	नवं. १	रोहि.	परिघार्ध, ल.
" "	१० गु.	" ८	उफा.	वैधृति
" "	११ श.	" ९	उफा.	वैधृ., विष्कं., लग्नाभाव
" शु.	१ बु.	" १३	अनु.	राहुवेध, शनि.
" "	२ गु.	" १४	मूल	मृत्युबाण
" "	३ शु.	" १५	मूल	मासान्त
" "	५ श.	" १६	उषा.	भुजंगपात
" "	६ र.	" १७	उषा.	
" "	६ र.	" १७	श्रव.	मृत्युबाण
" "	१० गु.	" २१	उभा.	भौमवेध
" "	११ शु.	" २२	उभा.	
भीष्म पंचक				
मार्ग. कृ.	६ मं.	दिसं. ३	मघा	वैधृति, भद्रा
" "	८ गु.	" ५	उफा.	लग्नाभाव
" "	९ शु.	" ६	हस्त	लग्नाभाव
" "	१० श.	" ७	चित्रा	लग्नाभाव
" "	११ र.	" ८	स्वा.	केतुयुति
" "	१२ चं.	" ९	स्वा.	
" शु.	१ गु.	" १२	मूल	भुजंगपात
" "	२ शु.	" १३	मूल	
" "	३ श.	" १४	उषा.	मासान्त
" "	४ र.	" १५	श्रव.	संक्रान्ति

धनुःस्थ रवि, शुक्रास्त, गुरुअस्त, एवं मीनस्थरवि

❀ वैशाख शु. १५ शनिवार को खग्रास चन्द्र ग्रहण का नक्षत्र। खग्रास ग्रहण का नक्षत्र छः मास तक वर्जित रहता है। ग्रहण से पहला दिन ग्रहण वाला दिन और ग्रहण दिन के बाद के तीन दिन शुभ कृत्यों में वर्जित रहते हैं।

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०४२ वि.) (सन् १९८५ ई.)

राशि	लड़का	लड़के के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	लड़की के लिए पूज्य गुरु
कन्या	मई १५, २१, २२, २८, २९, ३१, जून ६, ७, ११, १२, २३, २६, २७, जुला. ५, ८, ९, १० (रेवती), सितं. १७, २३, २४, २५, अक्तू. २१, २२, २५, २६, नवं. १, २, ६, ७, ९, १८, १९, २८, २९, दिसं. ४, ६, ७, ८।	१५ मई से १३ जून, १७ सितं. से १४ नवं.	अप्रै. २३, २४, २९, ३०, मई १, २, ९ (२०।४७ बाद), १०, ११, १५, २१, २२, २८, २९, ३१, जून ६, ७, ११, १२, २३, २६, २७, जुला. ५, ८, ९, १० (रेवती), अग. १८, २०, सितं. २, ६, ७, ८, १७, २३, २४, २५, अक्तू. २१, २२, २५, २६, नवं. १, २, ६, ७, ९, १८, १९ २८, २९, दिसं. ४, ६, ७, ८।	
तुला	अप्रै. २४, २९, ३०, मई १, २, ९ (२०।४७ तक), जून २३, २६, २७, जुला. ३, ५, ८, ९, १०, ११, अग. १८, २०, २५, सितं. २८ (११।१२ बाद), अक्तू. २०, २५, २६, नवं. १ (२५।१७ बाद), २, ६, ७, ९, १९, २९, दिसं. ४, ६, ७, ८।	१४ अप्रै. से १३ मई; १५ जून से १४ जुला., १७ अक्तू. से १४ दिसं.	अप्रै. २४, २९, ३०, मई १, २, ९, (२०।४७ तक), १५, २२, २८, २९, ३१, जून ४, ११, १२, २३, २६, २७, जुला. ३, ५, ८, ९, १०, ११, अग. १८, २०, २५. सितं. २, ८(११।१२ बाद), १७, २१, अक्तू. २०, २५, २६, नवं. १(२५।१७ बाद), २, ६, ७, ९, १९, २९, दिसं. ४, ६, ७, ८।	पूज्य
वृश्चि.	अप्रै. २३, २९, ३०, मई १, २, ९, १०, ११, १५, २१, २८, २९, ३१, जून ४, ६, ७, ११, १२, अग. १८, २०, २५, सितं. २, ६, ७, ८, (११।१२ तक), १७, २१, २३, २४, २५, नवं. १८, २८, दिसं. ४, ६, ७, ८।	१५ मई से १३ जून, १७ जुला. से १५ अग., १६ नवं. से १४ दिसं.	अप्रै. २३, २९, ३०, मई १, २, ९, १०, ११, १५, २१, २८, २९, ३१, जून. ४, ६, ७, ११, १२. २३, २६, २७, जुला. ३, ८, ९, १०, ११, अग. १८, २०, २५, सितं. २, ६, ७, ८ (११।१२ तक), १७, २१, २३, २४, २५, अक्तू. २०, २१, २२, २५, २६, नवं. १ (२५।१७ तक), ६, ७, ९, १८, २८, दिसं. ४, ६, ७, ८।	पूज्य
धनु	अप्रै. २३, २४, २९, ३०, मई १, २, ९, १०, ११, २१, २२, २८, २९, ३१, जून ४, ६, ७, २३, २६, २७, जुला. ३, ५, १० (अश्वि.), ११, अग. १८, २०, २५, सितं. ६, ७, ८, १७, २१, २३, २४, २५, अक्तू. २०, २१, २२, नवं १, २, ६, ७, ९।	१४ अप्रै. से १३ मई, १५ जून से १४ जुला., १७ अग. से १५ सित.	अप्रै. २३, २४, २९, ३०, मई १, २, ९, १०, ११, २१, २२, २८, २९, ३१, जून ४, ६, ७, २३, २६, २७, जुला. ३, ५, १० (अश्वि.), ११, अग. १८, २०, २५, सितं. ६, ७, ८, १७, २१, २३, २४, २५, अक्तू. २०, २१, २२, नवं. १, २, ६, ७, ९, १८, १९, २८, २९, दिसं. ४, ६, ७, ८।	
मकर	मई १५, २१, २२, २८, २९, ३१, जून ४, ६, ७, ११, १२, २६, २७, जुला. ३, ५, ८, ९, १० (रेव.), सितं. १७, २१, २३, २४, २५, अक्तू. २०, २१, २२, २५, २६, नवं. १, २, ९, १८, १९, २८, २९, दिसं. ६(९।१ बाद), ७, ८।	१५ मई से १३ जून, १७ जुला. से १५ अग., १७ सितं से १५ अक्टू.	अप्रै. २३, २४, मई १, २, ९, १०, ११, १५, २१, २२, २८, २९, ३१, जून ४, ६, ७, ११, १२, २६, २७, जुला. ३, ५, ८, ९, १० (रेवती), अग. १८, २०, २५, सितं. २, ६, ७, ८, १७, २१, २३, २४, २५, अक्तू. २०, २१, २२, २५, २६, नवं. १, २, ९, १८, १९, २८, २९, दिसं. ६ (९।१ बाद), ७, ८।	पूज्य
कुम्भ	अप्रै. २४, २९, ३०, मई ९, १०, ११, जून २३, २७ (९।२७ बाद), जुला. ३, ५, ८, ९, १०, ११, अग. २० (२०।४३ बाद), २५, सितं. २, ८, (११।१२ बाद), अक्तू. २०, २१, २२, २५, २६, नवं. १ (२५।१७ बाद), २, ६, ७, १८, १९, २९, दिसं ४, ६, (९।१ तक)।	१५ जून से १४ जुला., १७ अग. से १५ सितं., १७ अक्टू. से १४ नव.	अप्रै. २४, २९, ३०, मई ९, १०, ११, १५, २२, ३१, जून ४, ६, ७, ११, १२, २३, २७ (९।२७ बाद), जुला. ३, ५, ८, ९, १०, ११, अग. २० (२०।४३ बाद), २५, सितं. २, ८ (११।१२ बाद), १७, २१, २३, २४, २५, अक्तू. २०, २१, २२, २५, २६, नवं. १ (२५।१७ बाद), २, ६, ७, १८, १९, २९, दिसं. ४, ६ (९।१ तक)।	पूज्य
मीन	अप्रै. २३, २९, ३०, मई १, २, ९, १०, ११, १५, २१, २८, २९, जून ४, ६, ७, ११, १२, अग. १८, २० (२०।४३ तक), २५, सितं. २, ६, ७, ८, (११।१२ तक), २१, २३, २४, २५, नवं. १८, १९, २८, दिसं. ४, ६, ७, ८।	१४ अप्रै. से १३ मई, १७ जुला. से १५ अग., १७ सितं से १५ अक्टू. १६ नवं. से १४ दिसं	अप्रै. २३, २९, ३०, मई १, २, ९, १०, ११, १५, २१, २८, २९, जून ४, ६, ७, ११, १२, २३, २६, २७ (९।२७ तक), जुला. ३, ५, ८, ९, १०, ११, अग. १८, २०(२०।४३ तक), २५, सितं. २, ६, ७, ८ (११।१२ तक) २१, २३, २४, २५, अक्तू. २०, २१ २२, २५, २६, नवं. १(२५।१७ तक), ६, ७, ९, १८, १९, २८, दिसं. ४, ६, ७, ८।	

सं. २०४२ में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०४२ में कुल कितने विवाह मुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्त्तों में त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषी लोगों को छुटकारा देने के लिए यहां नीचे "त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक" दे रहे हैं। सं. २०४२ के शुद्ध विवाह मुहूर्त्त इस पंचाग में पृ. १५१ पर दिए गए हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख वाले विवाह मुहूर्त्त में किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबल-शुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए "त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक" में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाह मुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं—यह कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है कि अमुक राशि वाले लड़के और लड़कियों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों को हो सकता है। लड़का-लड़की की राशियों वाले कालमों में जो-जो तारीखें समान रूप से मिलती हों उन तारीखों में उस लड़के और लड़की का विवाह हो सकता है जैसे—मकर राशि वाले लड़के और धनु राशि वाली लड़की का विवाह सं. २०४२ में सितं. के महीने में किन-किन तारीखों को हो सकता है—यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें। लड़के वाले कालम में मकर के आगे सितं. की केवल १७, २१, २३, २४, २५ तारीखें हैं। जबकि लड़की वाले कालम में धनु के आगे सितं. की ६, ७, ८, १७, २१, २३, २४, २५ तारीखें हैं। इस लिए यह समझना चाहिए कि सितं. में इन दोनों का विवाह सिर्फ १७, २१, २३, २४, २५ तारीखों को ही हो सकता है, क्योंकि सितं. की केवल यही तारीखें दोनों में एक सी मिलती हैं। उपरोक्त प्रकार से विवाह की तारीखों का निश्चय करके पृ. १५१ पर दिए गए शुद्ध विवाह-मुहूर्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ, अष्टम, द्वादशस्थ गुरु को नेष्ट न मानकर पूज्य मानना चाहिए।

(यहां दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदय से आरम्भ होकर सूर्योदय पर समाप्त होने वाली हैं।)

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०४२ वि.) (२२ मार्च १९८५ ई. से ९ अप्रैल १९८६ ई. तक के लिए) (कोष्ठकों में भा.स्टै.टा. दिया गया है)

राशि	लड़का	लड़के के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	लड़की के लिए पूज्य गुरु
मेष	अप्रै. २३, २४, २९, ३०, मई १, २, ९, १०, ११, १५, २१, २२, २८, २९, ३१, जून ४, ६, ७, ११, १२, २३, २६, २७, जुला. ३, ५, ८, ९, १०, ११, अग. १८, २०, २५, सितं. २, ६, ७, ८, १७, २१, २३, २४, २५, अक्तू. २०, २१, २२, २५, २६, नवं. १, २, ६, ७, ९।	१४ अप्रै. से १३ जून, १७ अग. से १५ सितं., १७ अक्तू. १५ नवं.	अप्रै. २३, २४, २९, ३०, मई १, २, ९, १०, ११, १५, २१, २२, २८, २९, ३१, जून ४, ६, ७, ११, १२, २३, २६, २७, जुला. ३, ५, ८, ९, १०, ११, अग. १८ २०, २५, सितं. २, ६, ७, ८, १७, २१, २३, २४, २५, अक्तू. २०, २१, २२, २५, २६, नवं. १, २, ६, ७, ९, १८, १९, २८, २९, दिसं ४, ६, ७, ८।	पूज्य
वृष	मई १५, २१, २२, २८, २९, ३१, जून ६, ७, ११, १२, २६, २७, जुला. ५, ८, ९, १०, ११, सितं १७, २३, २४, २५, अक्तू. २१, २२, २५, २६, नवं. १, २, ९, १८, १९, २८, २९, दिसं. ६(९।१ बाद), ७, ८।	१५ जून से १४ जुला., १७ सितं से १५ अक्तू., १६ नव. से १४ दिस.	अप्रै. २३, २४, मई १, २, ९ (२०।४७ बाद), १०, ११, १५, २१, २२, २८, २९, ३१, जून ६, ७, ११, १२, २६, २७, जुला. ५, ८, ९, १०, ११, अग. १८, २०, सितं. २, ६, ७, ८, १७, २३, २४, २५, अक्तू. २१, २२, २५, २६, नवं. १, २, ९, १८, १९, २८, २९, दिसं. ६ (९।१ बाद) ७, ८।	
मिथुन	अप्रै. २३, २४, २९, ३०, मई ९ (२०।४७ तक), जून २३, २७ (९।२७ बाद), जुला. ३, ५, ८, ९, १०, ११, अग. २० (२०।४३ बाद), २५ सितं. २, ६, ७, ८, अक्तू. २०, २५, २६, नवं. १, २, ६, ७, १९, २८, २९, दिसं. ४, ६ (९।१ तक)।	१५ जून से १५ अग., १७ अक्तू. से १४ नव.	अप्रै. २३, २४, २९, ३०, मई ९ (२०।४७ तक), १५, २१, २२, ३१, जून ४, ११, १२, २३, २७, (९।२७ बाद), जुला. ३, ५, ८, ९, १०, ११, अग २० (२०।४३ बाद), २५, सितं. २, ६, ७, ८, १७, २१, अक्तू. २०, २५, २६, नवं. १, २, ६, ७, १९, २८, २९, दिसं. ४, ६ (९।१ तक)।	पूज्य
कर्क	अप्रै. २३, २४, २९, ३०, मई १, २, ९, १०, ११, १५, २१, २२, २८, २९, जून ४, ६, ७, ११, १२, अग. १८, २०, (२०।४३ तक), २५, सितं. २, ६, ७, ८, २१, २३, २४, २५, नवं. १८, २८, २९, दिसं. ४, ६, ७, ८।	१७ जुला. से १५ सितं., १६ नवं. से १४ दिसं.	अप्रै. २३, २४, २९, ३०, मई १, २, ९, १०, ११, १५, २१, २२, २८, २९, जून ४, ६, ७, ११, १२, २३, २६, २७ (९।२७ तक), जुला. ३, ८, ९, १०, ११, अग. १८, २०(२०।४३ तक), २५, सितं. २, ६, ७, ८, २१, २३, २४, २५, अक्तू. २०, २१, २२, २५, २६, नवं. १, २, ६, ७, ९, १८, २८, २९, दिसं ४, ६, ७, ८।	
सिंह	अप्रै. २३, २४, २९, ३०, मई १, २, ९, १० (अश्वि.), ११, २१, २२, २८, २९, ३१, जून ४, ६, ७, २३, २६, २७, जुला. ३, ५, १० (अश्वि.), ११, अग. १८, २०, २५, सितं. ६, ७, ८, १७, २१, २३, २४, २५, अक्तू २०, २१, २२, नवं. १, २, ६, ७, ९।	१४ अप्रै. से १५ मई, १७ अग. से १५ अक्तू.	अप्रै. २३, २४, २९, ३०, मई १, २, ९, १० (अश्वि.), ११, २१, २२, २८, २९, ३१, जून ४, ६, ७, २३, २६, २७, जुला. ३, ५, १० (अश्वि.), ११, अग. १८, २०, २५, सितं. ६, ७, ८, १७, २१, २३, २४, २५, अक्तू. २०, २१, २२, नवं. १, २, ६, ७, ९, १८, १९, २८, २९, दिसं. ४, ६, ७, ८।	पूज्य

आषा. शु. ९	गु.	आषा. १४	जून २७	चित्रा	६।७ तक (काली प्रतिष्ठा)
,, ,, ९	गु.	,, १४	,, २७	चित्रा	६।७ बाद
मार्ग. कृ. १	गु.	मार्ग. १३	नव. २८	रोहि.	
,, ,, २	शु.	,, १४	,, २९	मृग.	
,, ,, ५	चं.	,, १७	दिसं. २	पुष्य	
,, ,, १०	श.	,, २२	,, ७	हस्त	११।३२ तक
मार्ग. शु. ५	चं.	पौष २	,, १६	धनि.	

मुण्डन मुहूर्त (सं. २०४२ वि०)

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	काल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ११	च.	वैशा. ३	अप्रै.'८५ १५	शत.	१०।३९ बाद
वैशा. शु. ५	गु.	,, १३	,, २५	मृग.	१०।२० तक
ज्ये. कृ. १३	शु.	ज्ये. ४	मई १७	अश्वि.	
ज्ये. शु. २	बु.	,, ९	,, २२	मृग.	१६।० तक
,, ,, ४	शु.	,, ११	,, २४	पुन.	८।२५ बाद
,, ,, ११	गु.	,, १७	,, ३०	हस्त	७।१४ तक
आषा. कृ. ५	शु.	,, २५	जून ७	श्रव.	६।१५ तक, १३।४५ बाद
,, ,, १०	बु.	,, ३०	,, १२	रेव.	७।४२ से १८।१२ तक
आषा. शु. २	गु.	आषा. ७	,, २०	पुन.	
,, ,, ३	शु.	,, ८	,, २१	पुष्य	१३।० तक

* अक्षरारम्भ मुहूर्त (सं. २०४२ वि०)

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	काल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. कृ. १२	गु.	ज्ये. ३	मई १६'८५	रेव.	
ज्ये. शु. ३	गु.	,, १०	,, २३	आर्द्रा	७।४७ तक
,, ,, ४	शु.	,, ११	,, २४	पुन.	८।२५ बाद
,, ,, १२	शु.	,, १८	,, ३१	चित्रा	११।५७ तक
आषा. कृ. ५	शु.	,, २५	जून ७	श्रव.	१३।४५ बाद
,, ,, १०	बु.	,, ३०	,, १२	रेव.	७।४२ से १८।१२ तक
आषा. शु. २	गु.	आषा. ७	,, २०	पुन.	

* विद्यारम्भ मुहूर्त (सं. २०४२ वि०)

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	काल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ५	गु.	वैशा. १३	अप्रै.'८५ २५	मृग.	१०।२० तक
,, ,, ५	गु.	,, १३	,, २५	आर्द्रा	११।३२ बाद
ज्ये. कृ. ४	बु.	,, २६	मई ८	मूल	१३।१८ से १४।२२ तक
,, ,, ४	बु.	,, २६	,, ८	पू.षा.	१५।३४ बाद
,, ,, ५	गु.	,, २७	,, ९	पू.षा.	१३।३६ तक
ज्ये. कृ. १२	गु.	ज्ये. ३	मई १६	रेव.	
,, शु. ३	बु.	,, ९	,, २२	मृग.	१६।० तक
,, ,, ३	गु.	,, १०	,, २३	आर्द्रा	७।४५ तक
,, ,, ४	शु.	,, ११	,, २४	पुन.	८।२५ से १८।३६ तक
,, ,, ११	गु.	,, १७	,, ३०	हस्त	७।१४ तक
,, ,, १२	शु.	,, १८	,, ३१	चित्रा	११।५७ तक
आषा. कृ. ३	बु.	,, २३	जून ५	पू.भा.	१४।५२ तक
,, ,, ५	शु.	,, २५	,, ७	श्रवण	६।१५ तक, १३।४५ बाद
,, ,, १०	बु.	,, ३०	,, १२	रेवती	७।४२ से १८।१२ तक
आषा. शु. २	गु.	आषा. ७	,, २०	पुन.	
,, ,, ३	शु.	,, ८	,, २१	पुष्य	१३।० तक

विपणि (दुकान) खोलने के मुहूर्त (सं. २०४२ वि०)

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	काल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १३	बु.	वैशा. ५	अप्रै. १७'८५	उ.भा.	१५।४४ बाद
वैशा. शु. ५	गु.	,, १३	,, २५	मृग.	१०।२० तक
,, ,, ७	श.	,, १५	,, २७	पुष्य	१६।१ बाद
,, ,, ८	र.	,, १६	,, २८	पुष्य	६।५० से १३।१२ तक
ज्ये. कृ. ५	गु.	,, २७	मई ९	उ.षा.	१४।४८ बाद
,, ,, ६	शु.	,, २८	,, १०	उ.षा.	१०।५२ तक
,, ,, ११	बु.	ज्ये. २	,, १५	उ.भा.	
,, ,, १२	गु.	,, ३	,, १६	रेवती	
,, ,, १३	शु.	,, ४	,, १७	अश्वि.	
ज्ये. शु. १	च.	,, ७	,, २०	रोहि.	१८।४६ बाद
,, ,, २	बु.	,, ९	,, २२	मृग.	१६।० तक
,, ,, ५	श.	,, १२	,, २५	पुष्य	
,, ,, १०	बु.	,, १६	,, २९	उ.फा.	१६।६ तक
,, ,, १०	बु.	,, १६	,, २९	हस्त	१७।१८ बाद
,, ,, ११	गु.	,, १७	,, ३०	हस्त	७।१४ तक
,, ,, १२	शु.	,, १८	,, ३१	चित्रा	११।५७ तक
आषा. कृ. १०	बु.	,, ३०	जून १२	उ.भा.	६।३० तक
,, ,, १०	बु.	,, ३०	,, १२	रेव.	७।४२ से १८।१२ तक
आषा. शु. ३	शु.	आषा. ८	,, २१	पुष्य	१३।० तक

* बच्चे को वर्णमाला (अ, आ, इ, ई आदि अक्षरों) का परिचय कराना जिस समय प्रारम्भ करते हैं उस समय "अक्षरारम्भ मुहूर्त" का प्रयोग होता है। जब किसी विशेष विद्या (गणित, विज्ञान आदि) का अध्ययन प्रारम्भ करना होता है तब विद्यारम्भ मुहूर्त का प्रयोग होता है।

चार स्वयंसिद्ध मुहूर्त

(१) चैत्रशुक्ल प्रतिपदा (२) अक्षय (वैशा. शु.) तृतीया, (३) विजयादशमी, (४) दीपावली (प्रदोष समय)

ये 'चार स्वयं-सिद्ध मुहूर्त' कहलाते हैं। ग्रामीण पंजाबी जनता इन्हें 'अणपुछ मुहूर्त' कहती है। इन मुहूर्त्तों में विवाहादि के अतिरिक्त कोई भी शुभकार्य करने के लिए नक्षत्रादि देखने की आवश्यकता नहीं होती।

उपनयन मुहूर्त (सं. २०४२ वि०)

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	काल (भा. स्टैं. टा.)
वैशा. शु. ३	मं.	वैशा. ११	अप्रै.'८५ २३	रोहि.	६।५० बाद (सामवेदियों के लिए)
,, ,, ५	गु.	,, १३	,, २५	मृग.	१०।२० तक
,, ,, ५	गु.	,, १३	,, २५	आर्द्रा	११।३२ बाद
ज्ये. शु. २	बु.	ज्ये. ६	मई २२	मृग.	
,, ,, ४	शु.	,, ११	,, २४	पुन.	८।२५ बाद(क्षत्रिय, वैश्यों के लिए)
,, ,, ११	गु.	,, १७	,, ३०	हस्त	७।१४ तक
,, ,, १२	शु.	,, १८	,, ३१	चित्रा	११।५७ तक
आषा. शु. २	गु.	आषा. ७	जून २०	पुन.	(क्षत्रिय, वैश्यों के लिए)
,, ,, ३	शु.	,, ८	,, २१	पुष्य	
फाल्गु. शु. १०	शु.	चैत्र ८	मार्च (१९८६) २१	पुष्य	७।२६ बाद

उपनयन में विशेष—अत्यावश्यकता में चन्द्र-बल देखकर सत्तीर्थ पर बिना उपनयन मुहूर्त के भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है। ऋषितर्पण (श्राव. शु. पूर्णिमा) का दिन भी यज्ञोपवीत लेने के लिए शुभ माना जाता है।

गृहारम्भ मुहूर्त (सं. २०४२ वि०)

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	काल (भा.स्टैं.टा.)
कार्त्ति. शु. ११	श.	मार्ग. ८	नवं.'८५ २३	रेव.	७।२२ बाद
मार्ग. कृ. १	गु.	,, १३	,, २८	रोहि.	१६।४५ तक
,, ,, २	शु.	,, १४	,, २९	मृग.	

गृह प्रवेश मुहूर्त (सं. २०४२ वि.)

ज्ये. कृ. ११	बु.	ज्ये. २	मई'८५ १५	उ.भा.	१७।१६ तक
ज्ये. शु. १०	बु.	,, १६	,, २९	उ.फा.	१६।६ तक
,, ,, ११	गु.	,, १७	,, ३०	चित्रा	२७।४६ बाद
,, ,, १२	शु.	,, १८	,, ३१	चित्रा	११।५७ तक
प्र.श्रा. कृ. ११	श.	श्रावा. ३०	जुला. १३	रोहि.	२७।१२ बाद
द्वि.श्रा. शु. ११	च.	भाद्र ११	अग. २६	उ.षा.	२५।४५ बाद
कार्त्ति. शु. ११	श.	मार्ग. ८	नवं. २३	रेव.	७।४२ से २११४ तक
मार्ग. कृ. ९	शु.	मार्ग. २१	दिसं. ६	उ.फा.	२४।३४ से २५।१० तक

मार्ग. शु. ८	गु.	पौष ५	दिसं. १९	उ.भा.	७।३५ से २०।१६ तक
,, ,, ९	शु.	,, ६	,, २०	रेव.	२२।२६ से २४।४६ तक
फाल्गु. शु. ७	च.	चैत्र ४	मार्च'८६ १७	रोहि.	२३।१० तक
,, ,, ७	च.	,, ४	,, १७	मृग.	२४।२२ बाद

सात्त्विक देव (श्रीराम, कृष्ण, विष्णु आदि), जलाशय (तालाब, बावड़ी आदि) एवं उपवन की प्रतिष्ठा के मुहूर्त (सं. २०४२ वि०)

चैत्र शु. २	श.	चैत्र १०	मार्च'८५ २३	रेव.	
,, ,, ६	बु.	,, १४	,, २७	रोहि.	
,, ,, ६	गु.	,, १५	,, २८	मृग.	
,, ,, ८	श.	,, १७	,, ३०	पुन.	६.६३ से ८।२० तक
वैशा. शु. ४	बु.	वैशा. १२	अप्रै. २४	रोहि.	७।३ तक (गणेश प्रतिष्ठा)
,, ,, ५	गु.	,, १३	,, २५	मृग.	१०।२० तक
,, ,, ७	श.	,, १५	,, २७	पुन.	
,, ,, ८	र.	,, १६	,, २८	पुष्य	६।५० बाद
ज्ये. कृ. ६	शु.	,, २८	मई १०	उ.षा.	१०।५२ तक
,, ,, ७	श.	,, २९	,, ११	श्रव.	७।११ तक
ज्ये. शु. २	बु.	ज्ये. ६	,, २२	मृग.	
,, ,, ४	शु.	,, ११	,, २४	पुन.	८।२५ बाद
,, ,, ५	श.	,, १२	,, २५	पुष्य	
,, ,, ११	गु.	,, १७	,, ३०	हस्त	७।१४ तक
,, ,, १२	शु.	,, १८	,, ३१	चित्रा	
,, ,, १४	र.	,, २०	जून २	अनु.	८।१२ बाद (शिव प्रतिष्ठा)
आषा. कृ. ४	गु.	ज्ये. २४	जून ६	उ.षा.	गणेश प्रतिष्ठा
,, ,, १०	बु.	,, ३०	,, १२	रेव.	७।४२ बाद
आषा. शु. २	गु.	आषा. ७	,, २०	पुन.	
,, ,, ३	शु.	,, ८	,, २१	पुष्य	
फाल्गु. शु. ७	च.	चैत्र ४	मार्च'८६ १७	रोहि.	
,, ,, १०	शु.	,, ८	,, २१	पुष्य	७।२६ बाद
चैत्र कृ. ९	गु.	,, २१	अप्रै. ३	उ.षा.	१०।४४ तक (दुर्गा प्रतिष्ठा)
,, ,, ९	गु.	,, २१	,, ३	उ.षा.	१०।४४ बाद

तामस देव (श्रीकाली, भैरव आदि) प्रतिष्ठा मुहूर्त (सं. २०४२ वि०)

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	काल (भा.स्टैं.टा.)
आषा. शु. ८	बु.	आषा. १२	जून'८५ २६	हस्त	११।२२ तक
,, ,, ८	बु.	,, १२	,, २६	हस्त	११।२२ बाद (काली प्रति.)

शुद्ध विवाह मुहूर्त तथा द्विरागमन मुहूर्त (सं. २०४२ वि.)

तिथि	वार	प्रवि.		तारीख १९८५	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
माघ शु. १०	चं.	आश्वि.	८	सितं.२३	उ.षा.	।।।।ऽज्यो.।ऽ।।	ल. गोधू., ४(च.गु.दा.) (कर्क लग्न में चोर बाण नहीं है)
,, ,, ११	मं.	,,	९	,, २४	श्रव.	।।ऽअ.।।।।।।	दि.ल. ९(१३।२१ तक) (श.दा.), रा.ल. ४(२५।५४बाद)(चं.गु.दा.)
,, ,, १२	बु.	,,	१०	,, २५	धनि.	ऽसू.श.।।।ऽरो. ऽ।।।	दि.ल. ९(श.दा.), गोधू.
आश्वि. शु. ७	र.	कार्ति.	४	अक्टू.२०	उ.षा.	।।।।।।ऽ।।	दि.ल. १०(१३।१० से १४।१२ तक) (रा.दा.)
,, ,, ८	चं.	,,	५	,, २१	उ.षा.	।।।।।।ऽ।।	दि.ल. ९(११।४९ तक) (म.श.दा.)
,, ,, ८	चं.	,,	५	,, २१	श्रव.	।।ऽगु.।।नृ.।।।।	दि.ल. ११, रा.ल ४ (गु.शु.चं.दा.)
,, ,, ९	मं.	का.	६	,, २२	श्रव.	।।ऽगु.।।।।।।	दि.ल ९(१२।१८ तक) (मं.श.दा.)
,, ,, १२	शु.	,,	९	,, २५	उ.भा.	ऽसू.।।ऽशु.।ऽरो. ऽ।।।	ल. ४(२५।० तक), गु.शु.दा.)
,, ,, १३	श.	,,	१०	,, २६	उ.भा.	ऽसू.।।ऽशु.।।ऽ।।।	दि.ल ९(मं.श.दा.), १० (रा.दा.), ११, गोधू.
कार्ति. कृ. ३	शु.	,,	१६	नवं. १	मृग.	।।।।ऽज्यो.ऽऽ।।	दि.ल. १०(रा.दा.), ११, गोधू., ४ (गु.शु.दा.), ५
,, ,, ४	श.	,,	१७	,, २	मृग.	।।।।।ऽऽ।।	दि ल. ९(मं.श.चं.दा.)
,, ,, ८	बु.	,,	२१	,, ६	मघा	।।ऽगु.।ऽअ.ऽऽ।।	ल. ४(गु.दा.)
,, ,, ९	गु.	,,	२२	,, ७	मघा	।।ऽगु.।।ऽऽ।।	दि.ल. ११(१४।१३ बाद) (चं.दा.) गोधू.
,, ,, ११	श.	,,	२४	,, ९	हस्त	ऽश.।ऽमं.।।।ऽ।ऽ	ल. ४(गु.दा.), ५(शु.दा.)
कार्ति. शु. ७	चं.	मार्ग.	३	,, १८	श्रव.	।ऽगु.।।।ऽअ.।ऽ।।	दि.ल. ९(मं.श.दा.), ११, गोधू.
,, ,, ७	चं.	,,	३	,, १८	धनि.	।।।।ऽअ.ऽऽ।।	ल. ४(गु.चं.दा.)
,, ,, ८	मं.	,,	४	,, १९	धनि.	।।।।।।ऽऽ।।	ल. गोधू.

तिथि		वार	प्रवि.	तारीख १९८५		विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
मार्ग. कृ.	२	शु.	मार्ग.१४	नवं.	२९	मृग.	।।।।ऽनृ.ऽ।।।	दि ल. ९(चं.मं.श.दा.), ११, गोधू.
,, ,,	७	बु.	,, १९	दिसं.	४	मघा	ऽच.रा.ऽ।ऽगु. ।।ऽ।।।	ल. ६(२६।१५ तक) (श.दा.)
,, ,,	९	शु.	,, २१	,,	६	उ.फा.	।।।।ऽअ.ऽऽ।।	दि.ल. ९(श.दा.), १० (मं.रा.दा.), गोधू., ४ (गु.दा.), ५
,, ,,	१०	श.	,, २२	,,	७	हस्त	।।।।।।ऽ।ऽ	दि.ल. ९(श.दा.), १० (११।३.२ तक)(मं.रा.दा.), रा.ल. ५(२२।३१ से २३।४५ तक)(सिंह लग्न में दग्धा नहीं है)
,, ,,	११	र.	,, २३	,,	८	चित्रा	ऽशु.।ऽ।।ऽनृ.ऽऽ।।	दि.ल. ९(श.दा.), १० (मं.रा.दा.), अति आवश्यकता में (रेखा ५)

द्विरागमन मुहूर्त (सं० २०४२ वि०)

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख १९८५ ई.	नक्षत्र	काल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ.	१३ बु.	वैशा. ५	अप्रै. १७	उ.भा.	१५।८४ बाद
वैशा. शु.	५ गु.	,, १३	,, २५	मृग.	१०।२० तक
,, ,,	११ बु.	,, १९	मई १	उ.फा.	१५।२५ बाद
,, ,,	१२ गु.	,, २०	,, २	उ.फा.	७।३५ तक
ज्येष्ठ कृ.	५ गु.	,, २७	,, ९	उ.षा.	१४।४८ बाद
कार्ति. शु.	७ च.	मार्ग. ३	नवं. १८	श्रव.	
,, ,,	११ शु.	,, ७	,, २२	उ.भा.	
मार्ग. कृ.	१ गु.	,, १३	,, २८	रोहि.	१६।४५ तक
,, ,,	२ शु.	,, १४	,, २९	मृग.	
,, ,,	५ च.	,, १७	दिसं. २	पुष्य	
मार्ग. शु.	१ गु.	,, २७	,, १२	मूल	१२।२२ बाद
,, ,,	२ शु.	,, २८	,, १३	,,	८।३५ तक

सभी प्रदेशों के लिए

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	विवरण
मार्ग. कृ. १	गु.	मार्ग.१३	नवं. २८	रोहि.	।।।ऽमृ.।।ऽ।।	दि.ल. १०(रा.दा.), ११
,, ,, १	गु.	,, १३	,, २८	मृग.	।।।।।ऽ।।।	ल. ४(गु.दा.), ५

द्विरागमन में विशेष—विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के उपरोक्त मुहूर्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहिता वधू का द्विरागमन दीपावली के दिन दीपकों के प्रकाश में हो तो घर में सुख व लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

वि. सं. २०४३ में गुरु-शुक्रास्त :—सं. २०४३ वि. में कार्तिक कृ. एकादशी से कार्तिक शु. नवमी तक शुक्र और चैत्र कृ. तृतीया से वर्षान्त तक गुरु अस्त रहेगा।

शुद्ध-विवाह मुहूर्त (सं. २०४२ वि.)

तिथि		वार	प्रवि.	तारीख १९८५	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
ज्ये.	कृ.	५ गु.	वैशा. २७	मई ९	उ.षा.	।S।।।।।।S	ल. गोधू., ९(श.दा.), १२ कुंभ लग्न में दग्धा दोष का परि. नहीं)
,,	,,	६ शु.	,, २८	,, १०	उ.षा.	।S।।।।।।S	दि.ल. ४(१०।५२ तक) (गु. चं. दा)
,,	,,	६ शु.	,, २८	,, १०	श्रव.	।।Sगु.।।Sरो।S।।	न. ९(२२।५० बाद) (श.दा.), ११, १२
,,	,,	७ श.	,, २९	,, ११	श्रव.	।।Sगु.।।Sरो.।S।।	दि.ल. ४(गु चं.दा.)
,,	,,	७ श.	,, २९	,, ११	धनि.	Sबु.शु.श.।।।।।S।।	ल.गोधू., ९ श.दा.), ११, १२
,,	,,	११ बु.	ज्ये. २	,, १५	उ.भा.	।।।।।SS।।	दि.ल. ४(गु दा)
ज्ये.	शु.	२ म.	,, ८	,, २१	रोहि.	।।Sमं.।।Sचो.।।।।	दि.ल. ४(गु.दा.)
,,	,,	२ मं.	,, ८	,, २१	मृग.	।।Sमं.।।Sचो.S।।।	ल. गोधू., १०(शु.रा.दा.), ११, १२
,,	,,	२ बु.	,, ९	,, २२	मृग.	।।Sमं.।।S।।।	दि.ल. ४(गु.दा.)
,,	,,	८ म.	,, १५	,, २८	उ.फा.	।।।Sशु.।Sनृ.S।।।	ल. १२(चं.दा.)
,,	,,	१० बु.	,, १६	,, २९	उ.फा.	।।।Sशु ।।S।।।	दि.ल. ४(गु.दा.)
,,	,,	१० बु.	,, १६	,, २९	हस्त	।।।।।।S।।	ल. गोधू., ९(श.दा.), १० (शु रा.दा.) १२(चं.दा.)
,,	,,	१२ शु.	,, १८	,, ३१	चित्रा	।S।।।Sचो.S।।।	दि.ल. ४(गु.दा.)
आषा.	कृ.	१ मं.	,, २२	जून ४	मूल	।S।।Sमं.Sअ.।।।।	ल.गोधू., १०(रा.दा.), ११ (२४।३२ तक) (शु.दा.)
,,	,,	४ गु.	,, २४	,, ६	श्रव.	।।।।।Sनृ.।S।।	न. ११(२३।५१ बाद) (शु.दा.), १२
,,	,,	५ शु.	,, २५	,, ७	श्रव.	।।।।।।।S।।	गोधू., (कर्क ल. में क्रां.सा.)
,,	,,	९ म.	,, २९	,, ११	उ.भा.	।।।।Sरो.SS।।	दि.ल. ४(गु.दा.), गोधू. १० (रा.दा.), ११(शु.दा.)
,,	,,	१० बु.	,, ३०	,, १२	रेव.	Sगु.।।।।।।S।।	दि.ल. ४(गु.दा.)
आषा.	शु.	५ र.	आषा. १०	,, २३	मघा	Sरा.।।Sगु.।Sरो. SS।।	दि.ल. ४ (७।४१ बाद) (गु.दा.) गोधू., ११ (चं.शु.दा.)
,,	,,	८ बु.	,, १३	,, २६	चित्रा	।।।।Sअ.S।।।	ल. २
,,	,,	९ गु.	,, १४	,, २७	चित्रा	।।।।Sअ.S।।।	दि.ल. ४, ५, गोधू., (१९।२८ से पहिले)

देशाचार से केवल पंजाब व द्विगर्त्त प्रदेशों के लिए

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख १९८५.	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
प्र.श्रा. कृ.	१ बु.	आषा. २०	जुला. ३	उ.षा.	Sशु.।।।Sमं.Sरो. ।।।।	दि.ल. ५(१०।२० बाद), ६(म.दा.)
,, ,,	३ शु.	,, २२	,, ५	धनि.	Sश.।।।।Sअ.।।।।	ल. १२(२३।५२ बाद) (श.दा.), २(२३।५२ तक मृत्यु बाण)
,, ,,	६ चं.	,, २५	,, ८	उ.भा.	Sचं.।।।।Sनृ.S।।।	दि.ल. ९(१२।५५ बाद) (मं.चं.दा.)
प्र.श्रा. कृ.	७ मं.	आषा. २६	जुला. ९	उ.भा.	Sचं.।।।।S।।।	दि.ल. ४(गु.दा.), ६ (११।२३ बाद), (चं.मं.दा.)
,, ,,	७ मं.	,, २६	,, ९	रेव.	Sगु.शु.।।।।।।S।S	ल. गोधू., ११, २
,, ,,	८ बु.	,, २७	,, १०	रेव.	Sगु.शु.।।।।Sचो. ।S।S	दि.ल.४(गु.दा.), ६ (मं.चं.दा.)
,, ,,	८ बु.	,, २७	,, १०	अश्वि.	।।।।।Sचो.SS।।	ल. गोधू., ११, १२(शु.दा), २
,, ,,	९ गु.	,, २८	,, ११	अश्वि.	।।।।।।SS।।	दि.ल. ४(गु.दा.), ५, गोधू.
द्वि.श्रा.शु.	२ र.	भाद्र ३	अग. १८	उ.फा.	।।।।।Sअ.S।।।	ल. १२(२१।४९ बाद) (चं.दा.), २(२१।४९ तक मृत्यु बाण)
,, ,,	४ मं.	,, ५	,, २०	चित्रा	।।।।।।SS।।	ल. १२(२०।४३ तक) (चं.दा.), २
,, ,,	१० र.	,, १०	,, २५	मूल	।।।Sशु.।Sरो.।S।S	दि.ल. ६(८।४० बाद), ८ (श.दा.) गोधू., १२
भाद्र. कृ.	३ चं.	,, १८	सितं. २	रेव.	Sगु.S।।।।।।।।	ल. २(शु.दा.), ४(गु. दा.)
,, ,,	७ शु.	,, २२	,, ६	रोहि.	।S।।।Sअ.।S।।	न. १२(१९।२१ बाद), ४(गु.दा.)
,, ,,	८ श.	,, २३	,, ७	रोहि.	।S।।।Sअ.।S।।	दि.ल. ६(७।१९ तक एवं ८।३१ बाद), गोधू., १२
,, ,,	८ श.	,, २३	,, ७	मृग.	Sशु.।।।।।SS।।	ल. ४(गु.दा.)
,, ,,	८ र.	,, २४	,, ८	मृग.	Sशु ।।।।।SS।।	दि.ल. ६, ९(च.दा.), गोधू., १२, २(२३।६ तक) (शु.दा.)
भाद्र शु.	३ मं.	आश्वि. २	,, १७	चित्रा	।।।।।।।S।।।	
,, ,,	८ श.	,, ६	,, २१	मूल	।।।।Sनृ.।S।S	दि.ल.६(१४।५तक)(श.दा.) व. गोधू.

विवाहादि मुहूर्त्त (सं० २०४२ वि०)

समय शुद्धि

शुक्रास्त :—चैत्र शु. ११ मं. (चैत्र प्रविष्टा २०, अप्रै. २ सन् १९८५) से चैत्र शु. १५ शु. (चैत्र प्रविष्टा २३, अप्रै ५ सन् १९८५) तक और मार्ग. शु. १४ गु. (पौष प्रविष्टा १२, दिसं २६ सन् १९८५) से माघ शु. ३ म. (माघ प्रविष्टा २९, फर. ११ सन् १९८६) तक शुक्र अस्त रहेगा।

गुरु अस्त :—माघ कृ. १४ श. (माघ प्रविष्टा २६, फर. ८ सन् १९८६) से फाल्गु. कृ. ३० चं. (फाल्गुन प्रविष्टा २७, मार्च १० सन् १९८६) तक गुरु अस्त रहेगा।

अधिक मास :—श्रावण अधिक मास है, अतः श्रावण प्रविष्टा १ से ३१ तक कोई शुभ कृत्य नहीं होगा।

अक्षांश भेद से भारत के विभिन्न प्रदेशों में गुरु-शुक्रोदयास्त

अक्षांश →	+१५°	+२५°	+३०°	+३५°
शुक्र पश्चिम में अस्त	१ अप्रै. '८५	२ अप्रै. '८५	२ अप्रै. '८५	३ अप्रै. '८५
शुक्र पूर्व में उदित	७ अप्रै. '८५	६ अप्रै. '८५	६ अप्रै. '८५	६ अप्रै. '८५
शुक्र पूर्व में अस्त	२८ दिसं. '८५	२७ दिसं. '८५	२६ दिसं. '८५	२४ दिसं. '८५
शुक्र पश्चिम में उदित	१४ फर. '८६	१३ फर. '८६	१२ फर. '८६	१२ फर. '८६
गुरु अस्त	९ फर. '८६	८ फर. '८६	८ फर. '८६	८ फर. '८६
गुरु उदित	६ मार्च '८६	९ मार्च '८६	११ मार्च '८६	१४ मार्च '८६

ध्यान रहे :—यहां विवाहादि मुहूर्तों में गुरु-शुक्रास्त की तारीखें पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., दिल्ली आदि की ही ली गई हैं। अन्य प्रान्तों के लिए विवाहादि मुहूर्तों का विचार करते समय अक्षांश के आधार पर उन प्रान्तों में उदयास्त की तारीखों का ध्यान रखना जरूरी है।

यदि गुरु-शुक्र के उदयानन्तर ५-७ दिन के भीतर ही विवाह-मुहूर्त्त बनता हो तो साहे चिट्ठी, मांडयां-हत्थ (माघ हस्त) आदि विवाहांगकृत्यों का प्रारम्भ गुरु-शुक्र के अस्त होने से पहले ही से कर लेना चाहिए।

विवाह के वेदोक्त नक्षत्र

अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा ये चार विवाह के नक्षत्र-कात्यायन आर्ष-सूत्रोक्त होने से हम यजुर्वेदियों के लिए ग्राह्य हैं। अन्य ऋग्वेदी सामवेदियों के लिए अशुभ होने से ग्राह्य नहीं।

प्रमाणार्थ देखिए—पारस्कर गृह्य (कात्यायन) सूत्र—"उदगयने आपूर्यमाणपक्षे कुमार्याः पाणिगृह्णीयात् ॥१॥ "त्रिषु-त्रिषु उत्तरादिषु ॥२॥" हरिहर भाष्य में इस सूत्र का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया है—"उत्तरा आदिर्येषां तानि उत्तरादीनि तेषु कतिषु ? त्रिषु-त्रिषु, उ.फा., ह., चि.। उ.षा., श्र., ध.। उ.भा., रे.; अश्विनी" इसी प्रमाण के अनुसार धर्मसिन्धु (निर्णय-सागर के छपे) पृष्ठ २१८ पर "विवाहे-नक्षत्र निर्णयः" में वेद-व्याख्याता आचार्य हरदत्त ने भी लिखा है—"चित्रा-श्रवण धनिष्ठाऽश्विन्यधिकानि चत्वारि, तत्रापि खलग्रहयुतं नक्षत्रं वर्ज्यम्।"

और भी देखिए—जैसे मंगलवार यजुर्वेदियों के यज्ञोपवीत मुहूर्त में अग्राह्य है—(मरणञ्च भौमे) और वही मंगलवार सा. वेदियों के यज्ञोपवीत में शुभ होने से ग्राह्य है। ऐसे ही इस नक्षत्र-चतुष्टयी का भी विवाह में वेद व सूत्र भेद से ग्राह्याग्राह्यत्व (शुभाशुभत्व) समझना चाहिए। उपरोक्त वेदोक्त प्रमाणानुसार अश्विनी आदि चार नक्षत्रों में भी विवाह-मुहूर्त लिखे हैं, पूज्य विद्वज्जन भ्रम न करते हुए स्वीकार करें।

मुहूर्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम (रेलवे टाईम) के अनुसार यह निर्देश कर दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त में स्वीकार करें।

यहां विवाह मुहूर्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की-राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित-प्रक्रिया निर्दिष्ट की है। कई पञ्चाङ्गकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है।

यहां दिए गए मुहूर्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि, अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, उन मुहूर्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं० २०४२ वि०)

सूचना :—(१) कोष्ठकों में भा. स्टैं. टा. के घं. मि. दिए गए हैं। (२) तारीख वाले कालम में दी गई तारीखें सूर्योदय पर समाप्त होने वाली हैं।

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख १९८५	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पुजा एवं अन्य विवरण
वैशा. शु.	३ मं.	वैशा. ११	अप्रै. २३	रोहि.	।।।।।।।।।।	दि.ल. ४ (गु.दा.), १० (शु.रा.दा.), ११(२६।४१ तक,
,, ,,	४ बु.	,, १२	,, २४	मृग.	ऽमं.।।।।ऽश्र.ऽऽ।।	ल. ११(२०।१६ तक मृत्यु बाण) १२(धनु लग्न में मृत्यु बाण है)
,, ,,	९ चं.	,, १७	,, २९	मघा	।।।ऽगु.।ऽचो.ऽ।।।	ल.९ (श.दा.), ११(चं.दा.)
,, ,,	१० मं.	,, १८	,, ३०	मघा	।।।ऽगु.।।ऽ।।।	ल.४(११।३७ तक)(गु.दा.)
,, ,,	११ बु.	,, १९	मई १	उ.फा.	।।।ऽबु.।ऽरो.ऽ।।।	ल. गोधू., १२(२०।२१ बाद) (च. दा.)
,, ,,	१२ गु.	,, २०	,, २	हस्त	ऽसू.ऽ।ऽगु.ऽगु ।।।।।	ल.गोधू., ९(२३।१ बाद) (श.दा.), १०(शु.रा.दा.), १२ (चं.दा.)

बिना शूल ले बावे बामे । राहु योगिनी पूठ ॥
सन्मुख लेवे चन्द्रमा । लावे लक्ष्मी लूट ॥

यात्रा से सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा. ३, अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽहनि चन्द्रताराकृत्ये सति शुभम्।

यात्रा निवृत्तौ प्रवेश मुहूर्त—म.रे.चि.अनु.रो.,उ. ३, ह.अ. पुष्य, स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु चं. बु. गु.शु.श. वारेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु ३।५।६।८।६।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।६ स्थानेषु शुभै: ३।६।११ स्थानेषु पापै: ४।८ शुद्धौ शुभ:। वि. कृ. पू. ३ भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा आश्ले, नक्षत्राणि ।४।६।१४।६।१२।८।३० तिथय: सू. मं. वारौ १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल का मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेष :—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्।
नवमे जातु नो कुर्याद्दिनेवारे तिथाविति ॥

घातचन्द्र, घातवार आदि का चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशय:
मे.	क.	कु.	सि	मं.	मि.	ध.	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	चं.	बु,	श.	ण	वृ.	शु.	शु.	म.	वृ.	शु.	घातवार
मं.	ह.	स्वा	अनु	मू.	श्र.	श	रे	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष	स्त्रीच.घात
का.	मार्ग	पौ.	माघ	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	अ.	श्राव	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ	प्री.	सु.	अ.गं.	वृद्धि	वैधृ.	गं.	व्या	व.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	६	६	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१०	११	१३	१४	१३	१५	,,

कार्य सिद्ध्यर्थ यात्रा में, युद्ध, विवाद, राजदर्शन, वाहन तथा रोगादि कार्यों में घातचन्द्र देखें। तीर्थयात्रा, विवाह एवं उपनयन आदि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं। "घात-तिथिर्घात-वार: घात-नक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्य कर्मसु शोभनम् ॥" कार, स्कूटर, बाईसाइकिल आदि की खरीद घातचन्द्र में वर्जित है।

छिपकली कोढ़-किरली गिरने का फल

अग्रिम चक्रोक्त सर्वफल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा है, वही फल सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथांग-विभागे पल्ली-(छिपकली कोढ़ किरली) पतन फलम्

स्थानम	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभ:	भ्रू मध्ये	राज्य सम्बन्ध:	वामपादे	नाश:
नासाग्रे	व्याधि:	वामकर्णे	बहु लाभ:	अधरोष्ठे	ऐश्वर्य लाभ:
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयो:	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृप तुल्यता
जानुद्वये	शुभागम:	हस्तयो:	वस्त्र लाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाश:
कटिभागे	अश्व लाभ:	वाममणिबंधे	कांति नाश:	नाभौ	बहुधनम
गुल्फद्वये	बन्धनम	दक्षिणपादे	गमनम	मुखे	मिष्ठान्न भोजनम
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाश:	पादमध्ये	स्त्री नाश:
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयो:	धन प्राप्ति:	पादान्ते	मृत्यु:
कण्ठे	शत्रुनाश:	उदरे	भूषणलाभ:	केशान्ते	मरण
जंघयो:	शुभम्.	स्कन्धयो:	विजय:	नखेषु	धान्य लाभ:
द. मणिबंधे	मनस्ताप:	हृदये	धनलाभ:	दक्षांगुष्ठे	धन लाभ:

पल्ली-पतने प्रशस्त वार-तिथ्यक्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनी. रो. मृ. पुन: उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक है। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्या:।

पल्लीपाते कर्त्तव्यं कर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पाप-ग्रह युक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया पात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्का फलम्—छिक्का प्राय: सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा—छींक सूघनी छल कर लीन्हीं पीन सरदी पास फल हीनी। छींकि पीठि की कुशल उबारे, बाईं कारज सब सवारे ॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भारे। छींक दाहिनी द्रव्य विनाशे ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी। नीची छींक होय भय कारी। अपनी छींक महा दुखदाई। ऐसे छींक विचारे भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहा ॥ सन्ध्या वन्दन जपादि के आरम्भ में भी छिक्का शुभ है। एक नाक दो छींक काम बने सब ठीक ॥

यात्रा में प्रथम बार अपशकुन होवे तो ११ स्वास तक ठहर कर चले द्वितीय बार १६ स्वास तक ठहरे और तीसरी बार के अपशकुन में कदापि न जावे। यदि एक कोस के बाद शुभाशुभ शकुन हो तो उसका कुछ फल न समझें।

यात्रा में काल ज्ञान

वार	दिशा
शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे

सम्मुखेनष्टः पृष्ठे शुभः

योगिनी-वास चक्रम्

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तरे०	ईशा०दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०,	८।३०तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ, युद्ध यात्रा की बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। कालशूल :—उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामुहूर्त गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे, गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकाल: सप्तपञ्च (५७) अरुणोदय:। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रात: शेषं सूर्योदयो भवेत्।

चन्द्र-वास चक्रम्

पूर्व	दक्षि.	पश्चि.	उत्तर
मेष सिंह धनु	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ	कर्क वृश्चि मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक यात्रायां घट्यात्मक चन्द्र-वास चक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	पू.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	१०	१०	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

... चन्द्रफलम् —सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पद:। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षय: ॥१॥ सर्वे दोषा:लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—करण-भगणदोषं, वारसङ्क्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं, यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थ:।

सर्वाङ्क सिद्धि योग:—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रखे क्रमश: ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्रअंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैऋत को मत जाओ हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है। नोट—श्वास खींचते हुए सवारी पर पैर रखें तो यात्रा सुरक्षित होती है।

वर्ण क्रमेण प्रस्थान विधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त पें किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाये तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेउ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र खट्टे फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व रखे। अथवा सब लोग मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख दें। प्रस्थान (पैता) रखने के दिन से तीन दिन के अन्दर ही चल देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पाँच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें। अशुभ मुहूर्त में यात्रा करने पर हानि का भय रहता है। यदि यात्रा का मुहूर्त शुभ न हो और यात्रा भी न टाली जा सकती हो तो चतुर्घटिका या होरा मुहूर्त देख यात्रा करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्तम्

घटी	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
३॥	शु.	च	का.	उ.	अ.	रो.	ला.
७॥	अ.	रो	ला.	श.	च.	का.	उ.
११।	च.	का	उ.	अ	रो.	ला.	श.
१५	रो.	ला	शु	च.	का.	उ.	अ.
१८॥	का.	उ.	अ	रो	ला.	शु.	च.
२२॥	ला.	शु.	च	का.	उ.	अ.	रो.
२६।	उ.	अ	रो	ला.	शु.	च.	का.
३०	श.	च.	का	उ.	अ	रो.	ला.

चतुर्घटिका मुहूर्त में चर लाभ अमृत शुभ है शेष अशुभ हैं।

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बांयते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रातःकाल। विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, शीशा, श्वेत वृषभ गोदधि सर्षप, कमल निर्मलवस्त्र, वाद्य, वैश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस दीप्ताग्नि, मत्स्य, रोदनरहित मृतक, मंगल गान, वेदध्वनि ससुतस्त्री, गोरी कन्या, धोबा, कार्यसिद्ध वाक्य, सजलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्त घट यात्रा समय देखने शुभ है। अशुभ शकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म अस्थि, इन्धन, सन्यासी, रिक्त-घट भैसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार-युद्ध, कटुम्बकलह, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन छिक्का, दुष्ट-वाणी, दुखिया का रोना, भैंस पर सवार, नंगा-मनुष्य, दक्षिण में गर्दभ शब्द, यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्त आवश्यक यात्रा मुहूर्त चक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौम्य	क्लेश	प्रीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भयं.	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

हवन में शाकल्य-विचार—तिल का आधा चावल, चावल का आधा यव, यव का आधा शक्कर और सब का आधा घृत, असमर्थता में यथाशक्ति घृत लेना चाहिये।

पापग्रहमुखे हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शांति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसी प्रतिमां कृत्वा निदधित्तामधोमुखीम्॥ गोमूत्र-मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय संपूज्य तत्र होमो विधीयते॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्॥

यथा—अपने नाम के 'अ' वर्गादिवर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना, फिर ८ से भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना। ऋणी नौकर रखना हितकर होता है। राशि के अनुसार अपने से उच्च वर्ण की राशि का नौकर रखना निषिद्ध है, समान वर्ण प्रीतिकारक है।

भूमि का लेन-देन—गुरु, शुक्रवार १,५,६,११,१५, तिथि, मृग. पुन. श्ले. म., पू. फा., वि., अनु., मूल, पू. षा., उ. भा. नक्षत्र में-घर जमीन का सौदा करना शुभ है।

हल-प्रवहण मुहूर्तः—मृ.रे.चि. अनु.रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि.स्वा. पु.श्र. ध.श.म.मू.वि.एषु भेषु रिक्तामावष्ठ्यष्टमीरहित सतिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयन-भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्य-भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने					राहु नक्षत्रात् दिनर्क्षं यावत् गणना कार्या								
३	८	६	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीज वपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. र. स्वा. ध. एषु भेषु सतिथौ भौमातिरिक्त-वारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेष:-रवौ रौद्रा (आर्द्रा) चपादस्थे भूमौ संजायतेरजः। तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्

नवान्न भक्षण मुहूर्त:—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. प. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. चं. गु. शुक्रवार शुभ हैं।

गाय बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त

उ. फा. नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे। यदि वर्तमान नक्षत्र, उ. फा. नक्षत्र से चतुर्थ पंचम छब्बीसवां या सत्ताईसवां हो, तो गाय लेना अशुभ है। उ.फा. नक्षत्र से गणना करने पर उल्लिखित (४,५,२६,२७ वें) नक्षत्रों को छोड़कर शेष सभी नक्षत्रों में गाय लेना शुभ है। बैल लेने के लिए भी यही क्रम है, परन्तु वहां उ.फा. से न गिनकर सूर्य नक्षत्र से गणना करे, नक्षत्रों की शुभाशुभ व्यवस्था पूर्ववत् ही है। बैल खरीदना हो तो भी उ, फा. से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे, परन्तु यहां उ.फा. से तीसरे चौथे २६वें एवं २७वें नक्षत्र में बैल लेना अशुभ है, शेष नक्षत्रों में बैल लेना लाभदायक समझें।

"नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हानि करे घर आया॥"

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापन चक्रम्							
६	३	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक शुभ	धनदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	बन्धायकर्म नेष्ट	सुख शुभ	फलम्

लता-वृक्षादारोपण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३, रो ह- पुष्य, अश्वि-श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामा रहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है तृणकाष्ठगृहसंग्रहनिषेधः—तृणकाष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि काम कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करने चाहिए।

सिंगी (फस्त) लगाने का मुहूर्त—कृष्णपक्ष में रिक्ता तिथि एवं क्रूरवार को सिंगी (फस्त) और जोंक लगवाना रोगी के लिए आरोग्यप्रद होता है।

कुलदेवता-स्थापन मुहूर्त—शुभ वार, तिथि, अश्वि. रो. मृ. पुष्य, उफा. ह. चि. स्वा अनु. उषा. उभा. रे. नक्षत्र स्थिर लग्न भद्रादिदोष-रहित समय में शुभ है।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त—धनि., अश्वि., हस्त., चित्रा., अनु., पुष्य., ज्ये., पुन., एवं रेवती नक्षत्र में शनि की होरा में तथा मशीनरी चालू करने के लग्न में श. म. शु.च. शुभ स्थान में हों तब चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध सेवन का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे, चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल और जन्म नक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़ कर शुभ तिथियों में, भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. मृ. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध, अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो, उत्तरा ३, पूर्वा ३. एषु भेषु मध्याः; भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले. म चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या। तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमन-कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

दिग्द्वारलग्नानि				
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।३।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	अधम
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१	म०ब०

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हों। अन्यच्च, यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों या मारक दशा हो तो समुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा या देव-दर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूल-ज्ञानाय चक्रम्							नक्षत्र-शूल चक्रम्			
पूर्व. आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय	उत्तर.	ईशा.	दिशा पू.	द.	प.	उ.
चं.श. ब.श.	गुरु	सू.शु.	सू. शु.	भौम	मं.बु.	बु.गु.	नक्ष. ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ. फा.

दिक्शूल-परिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य दैत्येज्य-दिवाकराणाम्। दिवा शशाङ्कार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥

आवश्यकता में दिक्शूल वारन्दर्भ-रविवार को घृत, सोमवार को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरु को दधि शुक्र को यवान्न, शनि को उड़द तैलकी वस्तु खाकर जाए तो शुभ है।

सूर्यराशि-वश-खात-ज्ञान

देवालय की नींव खोदनी हो तो और चैत्र. वैशा०. ज्ये० में आग्नेय, आषा., श्रा., भा. में ईशान, आश्वि. कार्ति., मार्ग. में वायव्य, पौ० माघ० फा० में नैऋत्यकोण में शुभ है।

जलाशयारम्भ समय—वैशा. ज्ये. आषा. ईशान, श्रा. भा. आश्वि. में वायव्य कार्तिक मार्ग. पौष में नैऋत्य, माघ फा. चैत्र में आग्नेय कोण में नींव खोदना।

गृहारम्भ समय—वैशाख में वायव्य, ज्येष्ठ श्रावण में नैऋत्य. भादों कार्तिक में आग्नेय, मार्ग, माघ, में ईशान, में और फाल्गुन में वायव्य कोण में नींव खोदना शुभ है।

द्वारशाखा (देहली) चक्रम्
सूर्यनक्षत्रात्

स्थाने.	न:	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्
सूर्यभात्

५.	८	८	७
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

नलकूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु.ह. तीनों [उ., रो. ध. श. म., पू. षा., रे. पुष्य, मृ. नक्षत्र हों, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है। और जलाशयखात सूर्य राशि से देखें।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-नल चक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैऋत्य ३ अमृत जल

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २. जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

गणना क्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्. जल का वास भी "गृहमध्ये कूप विचार" से भूमि पर विचारें।'

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्-वारिवाहे वारिहानि:। गणनाक्रम—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाह:।

रोहिणीभात् कूपे चक्रम्

ईशान अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व पुन.पु.श्ले. जलाभाव	आग्नेय म.पू.फा.उफा. मध्य जलम्
उत्तर पू.भा.उ.भा.रे. मिष्ठ जलम्	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्र जलम्	दक्षिण ह.चि.स्वा. जलाभाव
वायव्य श्र.ध.श. क्षार जलम्	पश्चिम मू.पू.षा.उषा. अमृत जलम्	नैऋत्य वि.अनु.ज्ये. बहुजलम्

जलाशयाराम देव-प्रतिष्ठा मुहूर्त

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठापुत्तरायणे।
माघादि-पञ्च मासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने॥
मातृभैरव वाराहनारसिंह त्रिविक्रमाः।
महिषासुर हन्त्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने॥

गुरु-शुक्र के अस्तादि रहित शुद्ध समय में शुक्लपक्ष उत्तरायण में रिक्ता-अमा. शनि-मंगल तिथि वार छोड़ कर शुभ तिथि वारों में, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा एवं रेवती नक्षत्र में, स्थिर लग्न में केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तथा ३।६।११ में पापग्रह हों, कृष्णपक्ष में पंचमी तक देव-प्रतिष्ठा तथा जलाशय बाग आदि की प्रतिष्ठा भी शुभ है।

अपने अपने मास तिथि नक्षत्र में दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा के लिए शास्त्राज्ञा है। जैसे चतुर्दशी में शङ्कर की, चतुर्थी में गणेश की, भाद्रपद में कृष्ण की, आश्विन में देवी प्रतिष्ठा प्रशस्त है।

॥ श्री रामायणादि कथा प्रारम्भ का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र में दिन नक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि, २४ तक मृत्यु, राजभय २७ तक मोक्षप्रद होता है। शुभवार-तिथ्यादि विचारपूर्वक देवप्रीत्यर्थ शुक्ल पक्ष में और पितृ व प्रेतशान्त्यर्थ कृष्णपक्ष में करे।

वास्तुशान्ति मुहूर्त—श्र० ध० मृ० अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३, पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सतिथौ बलिदान पुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिसदिन हवन करना हो उसदिन तिथि और वार की संख्या जोड़ कर एक ओर जोड़ना। पुन: ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए (० शेष रहे) अथवा ३ शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुख कारक होता है. शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुति ज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य. नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहा:
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष—यात्रा-विवाह-व्रत-गोचरेषु चौलोपनीताद्यखिल व्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्यराहुणा। नित्य-नैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्॥ दिग्दाहेऽप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतुना-मुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधी:॥ दुर्गभग गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्॥

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सच हैं।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्त— ४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो, कृ. आर्द्रा. भ. अ. श्ले. म. ज्ये. मू. चि. पूर्वा. ३. नक्षत्र हो. क्षय होवे तो उत्तम है। लग्न में पाप ग्रह हो तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आयविचार

आयव्ययात् वास्तुकर्तुर्नक्षत्रं आयम् गणना कार्या स्थान नक्षत्र फलम्

मस्तक	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैःस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ स्वान, ५ वृषभ, ६ गदर्भः, ७ हस्ती, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि समसंख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है, और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं।

घर का नक्षत्र और व्ययज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणा कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें। यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

सूर्य राशि के अनुसार खात दिशा देख मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि दूसरी मिट्टी निकल आवे। अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर वा काली ईंट निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख कोला बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु, गु. शु. श. वारों में, रो. म. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व आयादि का विचार नहीं करता।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्ष	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति।
द कुक्षौ	४	लाभः शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष—पुष्य. उ. ३ रो. म. आश्ले. पु. वा. इनमें से जिस पर वृहस्पति हो उस नक्षत्र में और वृहस्पति वार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। चि. बृ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

प्रसुप्त-भूमि-ज्ञानम्—'संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम् नवम जोय। दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथ्वी साय। तत्कालावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१०एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।६।१२।१६।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी-शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूप-विचारः

मध्ये	ई.	पू.	आ.	द.	नै	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्तिः	पुत्रनाशः	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारौ तिथिसंप्रयुक्तौ वेदाहृतं तद्गणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जलं हि नाशे द्वाभ्यां च शेष सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्यशेषभुवि संस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः॥

अथ चुल्लिचक्र विचारः

सूर्य के नक्षत्र से ९ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ मुख के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा तंदूर, स्टोव, गैस, चूल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग) कार्तिकमासयोः॥ (यहां चान्द्रमास लेना)। उत्तरा ३., अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामा रहित तिथियों में चं.बु. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में, अत्यावश्यकता में ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हो. ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ में चन्द्रमा न हो, चौथा ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण-पुष्पमालायुक्त-कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी है. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।